इकाई- 1 : हिन्दी गद्य का उद्‌भव और विकास

संरचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 उद्देश्य

1.2 भारतेन्दु युग और हिन्दी गद्य

1.3 द्विवेदी युगीन हिन्दी गद्य

1.4 प्रेमचन्द युग और गद्य

1.5 शुक्लोत्तर हिन्दी गद्य

1.6 हिन्दी उपन्यास : विकास और प्रवृत्तियाँ

1.7 उपन्यास के क्रमिक विकास के प्रमुख चरण

1.8 सारांश

1.9 अभ्यास प्रश्नावली

1.0 प्रस्तावना

विश्व के प्रत्येक भाषा के इतिहास में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है कि पहले पद्य का विकास होता है, तत्पश्चात गद्य का। संसार के सभी ग्रन्थ पद्य के रूप में ही मिलते हैं। हिन्दी भाषा का इतिहास भी इसी क्रम का आधार है। आधुनिक काल के प्रारम्भ से पहले हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास प्रमुखत: कविता के विकास का इतिहास है। आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी में पद्य रचनाओं का अभाव नहीं रहा है, कभी-कभी साहित्य रचनाएँ भी लिखी गई किन्तु गद्य साहित्य का पूरा ऐतिहासिक विकास आधुनिक काल में ही दिखाई देता है। हिन्दी भाषा का प्रारम्भ दसवीं शताब्दी से माना जाता है। उस समय तक अपभ्रंश से विभिन्न देशी भाषाओं का रूप विकसित होने लग गया था, किन्तु हिन्दी गद्य के प्राचीनतम उदाहरण चौदहवीं शताब्दी से पूर्व के प्राप्त नहीं होते हैं।

19वीं शताब्दी के समय तक हिन्दी गद्य का पर्याप्त विकास हो गया था। लगभग पचास वर्षों के प्रयास से हिन्दी गद्य का निर्माण और विकास तो हो गया था किन्तु उसका निश्चित स्वरूप अभी तक नहीं बन पाया है। विकास के इस दौर में हिन्दी गद्य के दो रूप सामने आये – एक हिन्दी गद्य उर्दू तथा फारसी भाषा के निकट का था। यह रूप सरकारी प्रयासों का परिणाम था तथा सरकार ने इसी रूप का समर्थन किया। हिन्दी गद्य का दूसरा स्वरूप संस्कृत तथा देशी भाषाओं के अत्यन्त निकट था। इसमें उर्दू तथा फ़ारसी का पूरी तरह से बहिष्कार किया गया था और इस गद्य का विकास स्वतंत्र प्रयत्नों से हुआ था जो हिन्दी भाषा की मौलिक प्रवृत्ति के अधिक निकट था। आगरा के राजा लक्ष्मणसिंह हिन्दी गद्य के कट्टर समर्थक रहे थे जिन्होंने कालिदास के सुप्रसिद्ध नाटक 'शकुन्तला' का हिन्दी में अनुवाद किया था। 19वीं शताब्दी के मध्य तक हिन्दी गद्य में विविध विषयों पर साहित्य-सृजन होने लग गया था। भारतेन्दु युग से गद्य के विकास का सही स्वरूप स्पष्टत: सामने आने लग गया।

1.1 उद्देश्य

यहाँ हम हिन्दी गद्य के उद्‌भव एवं विकास की जानकारी कर सकेंगे।

1.2 भारतेन्दु युग और हिन्दी गद्य

यह युग सन् 1850 से 1900 तक माना जाता है। इस युग में नवजागरण की चेतना स्वामी दयानन्द सरस्वती की देन मानी गई है। स्वामी जी ने राष्ट्र कल्याण को ध्यान में रखते हुए गद्य में अनेक ग्रंथ लिखे। सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी-गद्य में एक ऐसी रचना है जिसकी भाषा भी तत्सम है और शैली भी विकसित है। भारतेन्दु युग में ही गद्य के अन्तर्गत निबंध, नाटक, कहानी और समाचार-पत्र

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आदि विधाओं के माध्यम से गद्य का विकास हुआ। स्वयं भारतेन्दु ने अपने समय में गद्य को विकसित करने के लिये पुरजोर प्रयास किये। उन्होंने ही हिन्दी में नाटक-लेखन, कहानी-लेखन, समालोचना आदि के लेखकों को गद्य में लिखने के लिए पूरी तरह प्रोत्साहित किया। भारतेन्दु मण्डल के गद्य लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास, बद्री नारायण चौधरी, प्रेमचन्द, जगमोहनसिंह तथा राधाचरण गोस्वामी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भारतेन्दु युग के हिन्दी गद्य में सरलता और सम्प्रेषणीयता तो विद्यमान थी किन्तु व्याकरण की व्यवस्था ठीक नहीं थी, क्योंकि इस युग के लेखकों ने अपना ध्यान विषय-वैविध्य की ओर ही केन्द्रित किया, भाषागत परिष्कार की ओर नहीं। व्याकरण का विकास राष्ट्रीय जागरण के युग में हुआ। इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना के पश्चात ब्रिटिश शासन को हटा कर स्वतंत्र भारत का स्वप्न देखने वाले नेता अपनी आवाज बुलन्द करने लगे और यही वह समय था, जब भाषा के परिष्कार की ओर ध्यान दिया गया था। वस्तुतः, समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना से सम्बन्धित लेख, भाषण आदि उस समय विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगे। भाषा को व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध रूप प्रदान करने में सबसे अधिक योगदान तत्कालीन मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में दिया था।

1.3 द्विवेदी युगीन हिन्दी गद्य

द्विवेदी युग में गद्य का पर्याप्त विकास प्रारम्भ हो गया था। स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अथक प्रयत्न करके हिन्दी साहित्य को बढावा दिया। इन्हीं के नाम से इस युग को जाना जाने लगा। भाषा को परिष्कृत करने और इसे व्याकरण सम्मत बनाने के लिये द्विवेदी जी की भूमिका अविस्मरणीय मानी जाती है। भारतेन्दु युग में जितनी भी शैलियों का सुत्रपात हुआ था वे सभी शैलियाँ द्विवेदी युग में और अधिक विकसित और समुन्नत होती चली गईं। इस युग के गद्य को परिमार्जित, पुष्ट और व्याकरण सम्मत बनाने में गोविन्द नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, माधव प्रसाद मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, पद्मसिंह शर्मा, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', ब्रजरत्नदास और मन्नन द्विवेदी आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। द्विवेदी युग में भाषा न केवल परिष्कृत और व्याकरण सम्मत ही हुई अपितु उसकी अभिव्यंजना क्षमता भी बढ़ी। उच्च कोटि के समीक्षात्मक ग्रंथ भी इसी युग में लिखे गये।

1.4 प्रेमचन्द युग और गद्य

यद्यपि द्विवेदी युग हिन्दी गद्य पूर्णतः विकसित हो चुका था, तथापि उसे और अधिक विकसित करने में मुंशी प्रेमचन्द ने पर्याप्त योगदान दिया है। उन्हीं के प्रयासों से गद्य लोकप्रियता के शिखर की ओर निरन्तर अग्रसर होता रहा। प्रेमचन्द ने प्रारम्भ में उर्दू भाषा को अपनाया, तत्पश्चात जन-मन को आकर्षित करने के लिये हिन्दी के लोकव्यापी प्रभाव को समझ कर हिन्दी भाषा में लिखना प्रारम्भ कर दिया। प्रेमचन्द ने सच्चे कथाकार के रूप में हिन्दी गद्य को बढ़ावा दिया जिसके प्रमाण उनके द्वारा लिखे गये उपन्यास और कहानियाँ हैं। प्रेमचन्द की भाषा शैली राष्ट्रीयता भावात्मक एकता की दिशा में बहुत कारगर सिद्ध हुई। 'सेवा सदन' से लेकर अन्तिम उपन्यास 'गोदान' तक इनकी भाषा निरंतर शुद्ध, परिपक्व और परिष्कृत होती चली गई। प्रेमचन्द युग में ही हिन्दी गद्य जनमानस का अंग बन चुका था। इसी के साथ आचार्य शुक्ल ने भी हिन्दी गद्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था।

आचार्य शुक्ल ने अपने निबन्ध-लेखन और समीक्षा-लेखन द्वारा हिन्दी गद्य को पर्याप्त प्रौढ़ रूप प्रदान किया। उनका गद्य एक चिन्तन और मनीषी का गद्य है। गम्भीर विचार, गहन चिन्तन-मनन और मंथन के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य के छींटे शुक्लजी के गद्य में देखने को मिल जाते हैं। आचार्य शुक्ल के समकालीन गद्य लेखकों में श्यामसुन्दर दास, गुलाब राय, माखनलाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि, रामवृक्ष बेनीपुरी, राय कृष्णदास और राहुल-सांकृत्यायन आदि के नाम उत्कृष्ट गद्यकारों में गिने जाते हैं।

1.5 शुक्लोत्तर हिन्दी गद्य

शुक्लोत्तर हिन्दी गद्य को प्रौढ़ता प्रदान करने तथा समयानुकूल और अधिक परिष्कृत तथा रुचिवर्धक बनाने में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का योगदान विशिष्ट रहा है। उन्होंने सरल, सरस व प्रवाहपूर्ण गद्य प्रस्तुत किये। उनकी यह विशेषता थी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कि गम्भीर से गम्भीर विषय को उन्होंने सहजता से समझाया था। आचार्य ने अपने उपन्यास-लेखन, समालोचन-लेखन और निबन्ध लेखन को पर्याप्त पुष्ट, प्रौढ़ और परिमार्जित रूप प्रदान किया। संस्कृतनिष्ठ गद्यों में 'बाण भट्ट की आत्मकथा', पुनर्नवा और 'चारुचन्द्र' लेख प्रमुख हैं, सहज व सरल गद्य में 'अशोक के फूल', 'कुटज, 'विचार-प्रवाह' कल्पलता और विचार और वितर्क आदि मुख्य हैं। शुक्लोत्तर युग में गद्य व्यापक से व्यापकोत्तर होता चला गया। आज तो गद्य विधा इतनी व्यापक और विविध हो गई है कि .....। जहाँ एक ओर उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, निबन्ध और समालोचना जैसी गद्य विधाएँ विकसित हुई वहीं दूसरी ओर संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, आत्मकथा, फीचर, पत्र, यात्रावृत्त जैसी अनेक विधाएँ भी विकासोन्मुख है।

1.6 हिन्दी उपन्यास : विकास और प्रवृत्तियाँ

जब लिखने के लिये कुछ लिखा जाता है, तब 'गद्य' का निर्माण होता है और जब स्वयं लिख-लिख जाता है तो वह 'पद्य' होता है। अर्थात् गद्य प्रयत्न मूलक रचना है जिसमें व्यवस्था, संतुलन और वैचारिकता का विशेष महत्त्व होता है। पद्य में व्यवस्था और संतुलन तो अपेक्षित है किन्तु चिन्तन की मुक्तता और उनका मन चाहे ढंग से प्रसार अथवा अभिव्यंजन उस सीमा तक संभव नहीं है, जिस सीमा तक वह गद्य में यांत्रिक होता है। गद्य बीसवीं शताब्दी की उपलब्धि है। यही वह शताब्दी है जिसने मनुष्य को हृदय की अपेक्षा बुद्धि की ओर जाने की राह दिखाई है। हृदय-पक्ष दब तो नहीं गया किन्तु उस पर मस्तिष्क अवश्य हावी हो गया है। परिणाम स्वरूप सर्जकों का रुझान गद्य की ओर अधिक बढ़ गय। गद्य की जिन विधाओं को आज अधिक आत्मीयता और गौरव प्राप्त है, उनमें उपन्यास, कहानी, नाटक और निबन्ध को विशेषत: लिया जाता है।

आज जब हम आधुनिक हिन्दी गद्य के विविध रूपों का विचार करते हैं तो यह स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यास सर्वथा विलक्षण गद्य रूप है। इससे अधिक लचीला और बन्धन हीन कोई अन्य गद्य रूप हो ही नहीं सकता है। उपन्यास के माध्यम से हम जीवन का एक चित्र और युग की स्पष्ट छाप को अनुभव कर सकते हैं। उपन्यास की परिभाषाएँ तो अनेक विद्वानों ने दी है किन्तु किसी भी एक परिभाषा को पूर्ण नहीं माना जा सकता है, क्योंकि उपन्यास अथवा साहित्य के किसी भी रूप को परिभाषाबद्ध करने पर अनेक तत्त्व छूट जाते हैं अत: परिभाषाएँ विधा विशेष के लक्षण निर्धारण अथवा स्वरूप निर्धारण में सहायक तो हो सकती है, किन्तु उसकी समग्र विशेषताओं को शब्दों के चौखटे में बाँध नहीं सकती हैं।

अत: **'उपन्यास मनुष्य जीवन का स्पष्ट, यथार्थ और गद्यात्मक चित्र है। इसमें मानव-मन को प्रसादन प्रदान करने की अपरिमित शक्ति होती है और इसी के माध्यम से जीवन के विभिन्न संदर्भों में आज जीवन को विवेचित-विश्लेषित किया जाता है।'**

1.7 उपन्यास के क्रमिक विकास के प्रमुख चरण

1.7.1 प्रथम चरण : भारतेन्दु युग – हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत उपन्यास का आरम्भ अनुवादों से माना जाता है और यह सत्य भी है कि पहले पहल सन् 1850 के आस-पास के वर्षों में अनेक उपन्यासों के अनुवाद प्रकाशित हुए थे। ये अनुवाद उपन्यास के प्रस्थान बिन्दु नहीं माने जा सकते। वास्तव में हिन्दी का प्रथम **मौलिक उपन्यास श्रीनिवासदास द्वारा रचित 'परीक्षा गुरु'** है। इसकी रचना 1882 में हुई थी। यद्यपि इससे पूर्व श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सन् 1877 में 'भाग्यवती' शीर्षक से उपन्यासिका प्रकाशित की थी। यह नैतिक, उपदेश, व्यवहार, कुशलता और विनयशीलता के उद्देश्य से लिखी गई कृति है। स्वयं फिल्लौरी ने यह माना कि इसके पढ़ने से भारतखण्ड की स्त्रियों को गृहस्थ धर्म की शिक्षा मिलेगी।

गौस्वामी किशोरी लाल ने अपना पहला उपन्यास सन् 1889 में प्रस्तुत किया, जिसका नाम 'लवंग लता' था। इसके बाद 'कनक कुसुम', 'त्रिवेणी', 'प्राणयनी परिणय', 'सुख शर्बरी', 'लीलावती', 'कुसुम कुमारी', 'रजिया बेगम', 'प्रेममयी', 'तारा', 'चपला', 'मस्तानी', 'चन्द्रावली', 'हीराबाई', 'तिलस्मी शीशमहल' और 'जिन्दे की लाश' आदि अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए। इन उपन्यासों के साथ-साथ इसी युग में बंगला उपन्यासों के सर्वाधिक अनुवाद हिन्दी भाषा में हुए। बंकिमचन्द चटर्जी कृत 'दुर्गेश नन्दिनी' का गदाधर सिंह ने तथा राजसिंह, इन्दिरा, राधारानी और युगलोगुरीय का प्रताप नारायण मिश्र ने अनुवाद प्रस्तुत किया। इस प्रकार यह युग उपन्यास लेखन का तो प्रारम्भिक युग था ही, अनुदित उपन्यासों का भी विशेष युग कहा जा सकता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1.7.1.1 भारतेन्दुयुगीन उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ–

1. इस काल के उपन्यासों में आदर्शवाद, उपदेशात्मकता और नैतिक-बोध की प्रतिष्ठा का विशेष प्रयत्न दिखाई देता है।
2. भारतेन्दु युगीन जीवनधारा का यथार्थ रूप भी कतिप्य उपन्यासों में अभिव्यक्ति पा गया है जिनके अन्त में भारतीय आदर्श की प्रतिष्ठा की गई है।
3. इस काल के उपन्यासों में बंगला का प्रभाव देखा जा सकता है और साथ ही अनैतिकता का निषेध और नैतिकता की प्रतिष्ठा है।
4. इस युग के प्रारम्भिक उपन्यासों में सामाजिक सुधार भी प्रमुख लक्ष्य रहा है।
5. इस युग के उपन्यासों में तिलिस्मी, ऐयारी और जासूसी भी एक प्रमुख प्रवृत्ति रही है।
6. रहस्य रोमांच की प्रस्तुति के साथ-साथ वर्णनात्मकता इस युग के उपन्यासों की प्रमुख विशेषता मानी गई है।

1.7.2 द्वितीय चरण : द्विवेदी युगीन उपन्यास – द्विवेदी युग में जो उपन्यास साहित्य लिखा गया वह भारतेन्दु युग की तुलना में पर्याप्त समृद्ध खिाई देता है। इस युग के उपन्यासों में पाँच प्रकार की प्रवृत्तियाँ रही हैं–

द्विवेदी युगीन उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियाँ–

1. प्रथम प्रवृत्ति तिलिस्मी और ऐयारी उपन्यासों से सम्बंधित है। जिनका प्रारम्भ इसी युग में देवकी नन्दन खत्री द्वारा किया गया। उन्हीं की परम्परा पर हरिकृष्ण जौहर ने 'मायामहल', 'कमल कुमार', 'निराला नक़ाब पोश' और 'भयानक ख़ून' नामक उपन्यासों की रचना की। सन् 1905 में किशोरीलाल गोस्वामी ने 'शीशमहल' उपन्यास लिखा। 1908 में रामलाल वर्मा ने 'पुतली महल' की रचना की।

2. आलोच्य युग के उपन्यासों की दूसरी प्रवृत्ति जासूसी उपन्यासों से सम्बंधित है। इसी प्रवृत्ति को लेकर अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार आर्थर कानन डालर के उपन्यास 'ए स्टडी इन स्कालरलेट' को गोविन्दराम ने हिन्दी में रूपान्तरित किया। इसके अतिरिक्त 'सिरकटी लाश', 'चक्करदार चोरी', 'जासूस की भूल', 'इन्द्राजालिक जासूस' जैसे उपन्यासों की रचना की।

3. इस युग की तीसरी प्रवृत्ति उद्भुत घटना प्रधान उपन्यासों से सम्बंधित है। इस प्रकार के उपन्यास लेखन की प्रेरणा रेनाल्डस के द्वारा लिखे गये 'मिस्ट्रीज ऑफ़ द कोर्ट लंदन' से मिलो। लन्दन रहस्य इसी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। विट्ठलदास नागर ने 'क़िस्मत का खेल', बाँकेलाल चतुर्वेदी ने 'ख़ौफ़ नाक ख़ून' जैसे उपन्यास लिखकर अद्भुत घटना-प्रधान उपन्यासों की रचना की।

4. इस युग में ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की प्रवृत्ति भी मिलती है जिनमें ऐसे घटना प्रसंगों का वर्णन है, जो पाठकों के कौतुहल एवं रहस्य-रोमांच को तुष्टि प्रदान करते हैं। किशोरीलाल गोस्वामी ने 'तारा', 'सुल्ताना', 'रज़िया बेग़म', 'लखनऊ की क़ब्र' जैसे उपन्यास लिखे। गंगाप्रसाद ने 'नूरजहाँ', 'कुमार सेनापति' और 'हम्मीर' जैसे उपन्यासों की रचना की। इस क्षेत्र में किशोरीलाल गोस्वामी को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार माना है। उनके उपन्यास में मुहब्बत, इतिहास पुष्ट, सामाजिकता, राजनैतिक वातावरण और सांस्कृतिक स्मृतियाँ अंकन हैं।

5. द्विवेदी युगीन उपन्यास प्रवृत्ति की पाँचवी विशेषता यह है कि इसमें सामाजिक चेतना से युक्त उपन्यास भी लिखे गये हैं। लज्जाराम मेहता द्वारा लिखित 'आदर्श दम्पत्ति', 'बिगड़े का सुधार', 'आदर्श हिन्दू' तथा किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा रचित 'लीलावती', 'चपला', 'सौतिया डाह' और 'माधवी माधव' जैसे उपन्यासों को विशेष रूप से लिया गया। इन उपन्यासों में मद्यपान, वेश्यागमन, द्यूत क्रीड़ा, नारी की शोचनीय स्थिति, विदेशी सम्पति और प्रेम के बाजारुपन आदि का निरुपण किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इन उपन्यासों में सामाजिक सुधारवाद की प्रधानता थी। ये उपन्यासकार नैतिक बोध को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरि औध' का 'ठेठ हिन्दी की ठाठ' उपन्यास विशेष प्रभावशाली है। इसमें कुत्सित जीवन के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

असत् परिणामों को उद्घाटित कर नैतिक और सांस्कृतिक बोध को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। इसी युग से प्रेमचन्दयुगीन उपन्यास का श्रीगणेश हुआ था। प्रेमचन्द ने 'रूठी रानी' और 'प्रेमा' के साथ 'सेवासदन' जैसे उपन्यास लिखे।

1.7.3 तृतीय चरण : प्रेमचन्द युगीन उपन्यास – यह वह युग है, जिसमें प्रेमचन्द का लेखन परवान चढा। वे न केवल इसी युग के अपितु हिन्दी उपन्यास जगत् के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सर्जक माने गये हैं। सेवा वदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गवन, कर्मभूमि, गोदान जैसे अमर उपन्यासों की सृष्टि की गई। ये पहले उपन्यास लेखक हैं, जिन्होंने भारतीय जन-जीवन को यथार्थत: प्रस्तुत करते हुए उसे आदर्शोन्मुख दिशा प्रदान की। उनके उपन्यासों में ग्रामीण और नागरिक दोनों ही प्रकार के जीवन व्यापक धरातल पर अभिव्यक्त हुए हैं। 'गोदान' पूर्णतः यथार्थवादी उपन्यास है जिसमें भारतीय किसान जीवन की करुण त्रासदी प्रस्तुत की गई है। **प्रेमचन्द ने अंत में 'मंगल सूत्र' नामक एक और उपन्यास प्रारम्भ किया किन्तु वह पूरा नहीं हो पाया।**

प्रेमचन्द युग में ही जो दूसरे उपन्यासकार सामने आये उनमें जयशंकर प्रसाद का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है। प्रसादजी ने 'कंकाल' और 'तितली' नामक दो यथार्थपरक उपन्यास लिखे। इनके उपन्यासों में ग्राम्य जीवन का यथार्थ रूप तो अभिव्यक्त हुआ ही है, साथ ही भारतीय समाज का विश्वसनीय और ईमानदार चित्र भी देखने को मिलता है। प्रसादजी मूलत: कवि थे अत: उनके औपन्यासिक सृजन में भी कवित्व का रंग देखने को मिल जाता है। **उन्होंने अपना तीसरा उपन्यास 'इरावती' प्रारम्भ किया किन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका।** इसी युग में विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक ने 'माँ', 'भिखारिन' तथा 'संघर्ष' जैसे उपन्यास लिखे। ये सभी उपन्यास आदर्शपरक हैं। छायावादी युगीन प्रमुख कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला भी उपन्यास लेखन के लिये प्रवृत्त हुए, उन्होंने भी 'अप्सरा', 'अलका', 'निरुपमा', 'कुल्ली भाट' व 'चतुरी चमार' नामक उपन्यास लिखे। इन लेखकों में मुख्यत: सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक कथासूत्रों पर आधारित उपन्यासों की रचनाएँ की।

1.7.4 चतुर्थ चरण : प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास – इस युग में श्री वृन्दावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, प्रतापनारायण श्रीवास्तव जैसे लेखकों ने ऐतिहासिक युगों के प्रसिद्ध कथानकों का चयन करके अपने उपन्यास प्रस्तुत किये। इसी युग में यशपाल जैसे कथाकार ने राजनैतिक विचारधारा प्रधान उपन्यासों का सृजन किया। राधिका रमण प्रसादसिंह, ऊषा देवी, रामवृक्ष बेनीपुरी तथा उदयशंकर भट्ट जैसे लेखक इसी श्रेणी में आते हैं। प्रेमचन्दोत्तर युग में लिखे गये शैल्पिक उपन्यासों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

1. इस युग में कथानक का विस्तार कम हुआ था।
2. चरित्रों के स्थूल चित्रों के स्थान पर गहन विश्लेषण और आन्तरिक रहस्योद्घाटन की प्रवृत्ति का बढावा मिला।
3. वर्णनात्मक तथा सपाट कथन प्रणाली के स्थान पर नवीन पद्धतियों और शैलियों का प्रयोग अधिक हुआ।
4. कथ्य की स्थूलता कम हुई और सूक्ष्मता के विविध स्तरों का पर्याप्त विश्वसनीय विकास हुआ।
5. प्राचीन परम्पराओं के प्रति विद्रोह की भावना सामने आई तथा नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना का प्रयास हुआ।
6. आदर्शवाद और नैतिकवाद के स्थान पर भौतिकवादी दर्शन का प्रभाव बढ़ा।
7. भावुकता के स्थान पर वैचारिक चिन्तन को अधिक बढावा मिला।
8. सामाजिक यथार्थ की प्रवृत्ति में व्यापकता और गम्भीरता अधिक दिखाई देती है।

आँचलिकता की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के कारण भी प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास 'एक नई दिशा में' नई शैली की ओर बढ़ता गया।

1.7.5 पञ्चम चरण : स्वातन्त्र्योत्तर उपन्यास – प्रेमचन्द युग के पश्चात् विश्व के रंगमंच पर अनेक परिवर्तन देखने को मिले हैं। भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और स्वातन्त्र्योत्तर भारत में विकसित परिस्थितियों का रूप-स्वरूप नए ढंग से सामने आया। अंग्रेजों के जाने के बाद देश को न केवल आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा, बल्कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच जो

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

साम्प्रदायिक ऊँची दीवार बनी उसने वैमनस्य, घृणा, विद्वेष आदि की संभावनाएँ फैल गई। आजादी के बाद तो दंगे-फ़साद, लूट-मार, आगजनी आदि के साथ एक दूसरे सम्प्रदाय की महिलाओं की सरेआम अस्मत लूटी जाने जैसी दर्दनाक घटनाओं ने समूचे देश को एक ऐसी विप्लव की आग में झोंक दिया कि उभरने की कहीं कोई उम्मीद दिखाई नहीं दे रही थी। इन परिस्थितियों से प्रेरित होकर जो उपन्यास साहित्य सामने आया वह विभिन्न प्रकार के रंगों से रंगा हुआ आया। जिन रंगों में मानवतावादी उपन्यासधारा, स्वच्छन्दतावादी उपन्यास धारा, प्रगतिवादी उपन्यास चेतना, व्यक्तिवादी उपन्यास चेतना, स्वच्छन्दतावादी उपन्यास चेतना, प्रकृतिवादी उपन्यास चेतना, मनोविश्लेषणवादी उपन्यास चेतना, सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास चेतना, ऐतिहासिक चेतना से प्रेरित उपन्यासधारा और आंचलिकता से परिपूर्ण उपन्यासधारा। इन उपन्यासकारों में आजादी से पूर्व और बाद के लेखक भी हैं। इन उपन्यासकारों में सर्वश्री उदयशंकर भट्ट, देवेन्द्र सत्यार्थी, फणीश्वरनाथ रेणु, नागार्जुन, धर्मवीर भारती विष्णु प्रभाकर, नरेश मेहता, राजेन्द्र यादव आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

1.7.6 षष्टम चरण : साठोत्तर उपन्यास – हिन्दी उपन्यास के षष्टम-चरण में पहुँचते-पहुँचते एक नया रूप सामने आता है। इसे साठोत्तर उपन्यास की संज्ञा दी जाती है। सन् 1950 और 1960 के दशक में मध्यम वर्ग को चित्रित करने वाले उपन्यास प्राय: अन्तर्मुखी अभिव्यंजना से युक्त रहे। 1960 के बाद हिन्दी उपन्यासों में यथार्थता की कटुता से बच निकलने के स्थान पर उसका स्वतंत्र निरुपण करने की प्रवृत्ति दिखाई दी। परिणामत: साठोत्तर उपन्यासों में नग्न यथार्थ के चित्रण की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। साठोत्तर उपन्यास की जिन प्रवृत्तियों से हम परिचित होते हैं –

1. साठोत्तर उपन्यासों में आधुनिक बोध की भूमिका पर पात्रों का चित्रांकन हुआ है और व्यक्ति स्वातंत्र्य को महत्ता मिली है।

2. आलोच्य युग में यथार्थ की व्यापक स्वीकृति से प्रभावित होकर उपन्यासकार सूक्ष्म से सूक्ष्म मानवीय चिन्ताओं, उसकी सम-विषम परिस्थितियों का चित्रण करने की नवीन दिशा में अधिक अग्रसर हुआ।

3. साठोत्तर उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसमें कथाहीनता और कथायुक्तता दोनों ही प्रवृत्तियाँ बराबर चली। उपन्यास के वृक्ष पर विविध विषयों की अनेक शाखाएँ फूटीं जिससे महानगर, नगर, कस्बा, गाँव ही नहीं बल्कि ढाणी और आदिवासियों के जीवन भी उपन्यासों के विषय बन गये।

4. साठोत्तर उपन्यासों के विषय बाहरी परिस्थितियों से लेकर व्यक्तिमन, व्यक्ति सम्बन्धों और व्यक्ति के अन्दर के यथार्थ को सामने लाने में अधिक सक्रिय रहे हैं। मोहभंगवश पति-पत्नी के सम्बन्धों में आई दरारें, सम्बन्धों का नवीन रूप, अतिनिकटता का अजनबीपन, प्रेम के विविध रूप, सुराजि व नई पीढ़ी का संघर्ष, परिवार का विघटन, प्राचीन मान्यताओं पर आक्षेप आदि विविध विचरों को कथात्मक रूप देने का प्रयास इन उपन्यासों द्वारा किया है। 'बैसाखियों वाली इमारत', 'प्रतिध्वनियाँ', 'सत्तर पार के शिखर', 'टूटे हुए सूर्य बिम्ब', 'डाक बँगला' आदि महत्त्वपूर्ण उपन्यास इस युग की देन हैं। इसके अतिरिक्त कुलटा, शृंगार, दूसरा सूत्र, पतझड़ की आवाजें, ऋतुचक्र, महाभोज, एक और मुख्यमंत्री ऐसे ही उपन्यास है।

5. साठोत्तर उपन्यासों में चरित्रों का बदलता हुआ रूप भी एक महत्ती विशेषता है जिसे हम डॉ. देवराज, मृदुला गर्ग, रमेश बक्शी, मन्नू भण्डारी आदि के उपन्यासों में देख सकते हैं। 'प्रतिध्वनियाँ', 'चित्त कोबरा', 'अजय की डायरी', 'नदी बह चली', 'महाभोज' आदि उपन्यास इसी प्रकार के कहैं। इन उपन्यासों में जो चित्र उभरते हैं, वे निराश, व्यथित, क्षण विश्वासी, रुढ़िभेषज, स्वतंत्र चरित्र ही सामने आये हैं।

6. युगचेतना और विचार-सूत्र के क्षेत्र में भी पर्याप्त परिवर्तन इस युग में हुआ है। वैसे युग चेतना की अभिव्यक्ति तो अनेक उपन्यासों में हुई है, किन्तु अस्तित्ववादी विचारधारा साठोत्तर उपन्यासों की एक विशेषता रही है। विश्व में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनेक पुराने मूल्य टूटे हैं और नवीन मानव मूल्यों तथा जीवन दर्शन के प्रति क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। अज्ञेय द्वारा रचित उपन्यास 'अपने अपने अजनबी', निर्मल वर्मा का 'वे दिन' ऐसे ही उपन्यास हैं।

7. साढोत्तर उपन्यासों में कथ्य और विचारधारा को लेकर जो परिवर्तन हुआ है उसे हम स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में भी देख सकते हैं। मृदुला गर्ग के 'चित्त कोबरा' और 'उसके हिस्से की धूप' ऐसे ही उपन्यास हैं।

1.8 सारांश

वस्तुतः, साठोत्तर वर्षों में और विशेषकर आठवें और नवे दशक में लिखे जा रहे उपन्यास न केवल शैल्पिक धरातल पर अधिक आकर्षित करने वाले हैं अपितु कथ्य-चेतन के संदर्भ में भी विशिष्ट और नवीनता के लिये हुए हैं।

1.9 अभ्यास प्रश्नावली

1. हिन्दी गद्य के उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 2 : मन्नू भण्डारी

संरचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देश्य

2.2 सामान्य परिचय

2.3 महाभोज

2.4 'महाभोज' उपन्यास संक्षिप्त रूप में

2.5 मुख्यमंत्री दा साहब

2.6 सुकुल बाबू

2.7 दत्ता बाबू और दा साहब

2.8 त्रिलोचन सिंह

2.9 दा साहब और उनका भाषण

2.10 पुलिस अधिकारियों द्वारा बिससेर की मौत के सन्दर्भ में बयान

2.11 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

2.12 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

2.12.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

2.12.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

2.12.3 निबंधात्मक प्रश्न

2.13 सारांश

2.14 अभ्यास प्रश्नावली

2.0 प्रस्तावना

आधुनिक युग की लेखिका मन्नू भण्डारी रचित उपन्यास महाभोज एक उत्कृष्ट राजनैतिक उपन्यास है।

2.1 उद्देश्य

यहाँ हम मन्नू भण्डारी एवं महाभोज के बारे में जानकारी करेंगे।

2.2 सामान्य परिचय

हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोष के आदिनिर्माता श्री सुखसम्पति राय भण्डारी की सबसे छोटी पुत्री, नई कहानी आन्दोलन के समय की बहुचर्चित कहानीकार मन्नू भण्डारी का जन्म 1931 में मध्यप्रदेश के भानपुरा कस्बे में हुआ। लेखन संस्कार इन्हें पैतृक दाय के रूप में प्राप्त हुए। इन्होंने मध्यवर्गीय परिवार और विशेष रूप से इस संक्रमणकालीन परिवेश में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही स्त्री को चित्रित करने में विशेष सफलता प्राप्त की है। ईश्वर कभी-कभी कुछ संस्कारों को मानव जीवन में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बनाकर उसकी पूर्ति कर देता है। इनका विवाह सुप्रसिद्ध कहानीकार, नाटककार, निबन्धकार और अच्छे कवि के रूप में विख्यात राजेन्द्र यादव के साथ हुआ। उन्होंने कहा है कि 'रूढ़ीविद्रोह' कथानकों, भाव धरातलों का चयन, स्वानुभूति की प्रामाणिकता, भाषा की सहज प्रवाहमयता मन्नू की शक्ति भी है और सीमा भी है। मन्नू जी की प्रमुख रचनाएँ – 'मैं हार गई', 'एक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

फ्लेट सैलाब', 'यही सच है', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'त्रिशंकु', 'आपका बंटी', 'महाभोज' (उपन्यास) और 'बिना दीवारों के घर' इनका प्रमुख नाटक है।

सामान्यतया मन्नू भण्डारी को कहानी लेखिका के रूप में ही सर्वाधिक ख्याति प्राप्त हुई और कहा जाता है कि थोड़े समय में ही उन्होंने नये कहानीकारों में विशिष्ट स्थान पा लिया। हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में मन्नूजी का योगदान निर्विवाद रूप से महत्त्वपूर्ण रहा है और डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित वृहत्काय ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में डॉ. बच्चनसिंह ने यही कहा है कि ''मन्नू ने बड़ी ही ईमानदारी के साथ नारी के मन में उठने वाले भावों, स्थिति विशेष में पुरुष के मन में जगने वाली शंकाओं, ईर्ष्याओं आदि को अपनी कहानियों में चित्रित किया है।'' कहानी के सदृश्य ही मन्नू भण्डारी ने हिन्दी उपन्यास साहित्य की समृद्धि में भी अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है और उनकी सर्वप्रथम औपन्यासिक कृति 'एक इंच मुस्कान' है। सन् 1971 में प्रकाशित 'आपका बंटी' ही मन्नू भण्डारी का सर्वप्रथम स्वतंत्र उपन्यास है और अपने इस उपन्यास के द्वारा उन्होंने जो ख्याति प्राप्त की, वह कई उपन्यासों की रचना करने के बाद भी अनेक उपन्यासकारों को प्राप्त नहीं हो सकी। लगभग आठ वर्ष उपरान्त सन् 1979 में मन्नूजी का 'महाभोज' उपन्यास प्रकाशित हुआ और इसे हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों की परम्परा में उल्लेखनीय स्थान प्रदान किया जा सकता है।

मन्नू भण्डारी का बहुचर्चित उपन्यास 'महाभोज' है। यह उपन्यास राजनीतिक चेतना को केन्द्र में रखकर लिखा गया है और इससे लेखिका को बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई है।

2.3 महाभोज

राजनैतिक चेतना से युक्त उपन्यास 'महाभोज' साठोत्तर उपन्यासकार मन्नू भण्डारी द्वारा विरचित प्रशंसनीय कृति है जिसमें लेखिका ने समकालीन सभी राजनीतिक दाव पेचों एवं प्रजातंत्र में पनप रही स्वार्थनीति की सुन्दर व्यंजना की है। आज हमारे देश को आजादी मिले 55 वर्ष चुके हैं किन्तु उसका वास्तविक रूप आज तक भी हमें दिखाई नहीं दिया है। राजनीति ने हमारे प्रजातंत्र को क्या रूप दिया है, यह सर्वविदित है। इस लोकतंत्र की चुनाव प्रक्रिया एवं कानून व्यवस्था पूर्णतः अविश्वसनीय बन चुकी है। प्रस्तुत उपन्यास का समग्र कथानक राजनीति के बदलते हुए परिवेश पर आधारित है।

'महाभोज' का कथानक भारत के एक ऐसे गाँव सरोहा से सम्बंधित है, जहाँ कि अन्य अधिकांश गाँवों के समान सामन्ती सभ्यता का साम्राज्य है और जहाँ जमींदारों के निर्मम शोषण का शिकार किसान एवं मजदूर वर्ग निवास करता है। यदि किसान-मजदूर जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाते हैं तो उनकी झोंपड़ियों में आग लगा दी जाती है और उन्हें तबाह करके ही जमींदारों को संतोष होता है। 'महाभोज' उपन्यास का एक पात्र सेसेर अर्थात् बिसू जमींदारों के अत्याचारों के प्रमाण एकत्र कर दिल्ली तक पहुँचकर उनका यथार्थ रूप नेताओं के सामने रखना चाहता है, परन्तु दिल्ली पहुँचने से पूर्व ही उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है। संयोगवश बिसू की हत्या उस समय होती है जब उस इलाके में विधानसभा के लिए उपचुनाव होने वाला है और इसलिए बिसू की मौत रोजमर्रा की एक मामूली घटना न होकर राजनीति के अखाड़े में खेलने वालों के लिए मानो गिद्धों के लिए महाभोज का जुगाड़ कर जाती है। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि उक्त उपचुनाव वर्तमान मुख्यमंत्री दा साहब और भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुकुल बाबू के लिए इज्जत का प्रश्न बन जाता है, क्योंकि इस चुनाव में विजयी होकर सुकुल बाबू फिर से अपनी खोयी हुई प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं जबकि दा साहब अपने आदमी को जिताना चाहते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में चुनाव के क्षेत्र में ही बिसू की मौत का सत्तारूढ़ दल और विरोधी दल दोनों ही अपने-अपने ढंग से उपयोग कर सर्वसाधारण जनता को अपने पक्ष में करना चाहते हैं। इस प्रकार दोनों ही पक्ष जनता को बताने के लिए आतुर रहते हैं कि वे बिसू की मौत से सर्वाधिक दुःखी और चिन्तित हैं। चुनाव क्षेत्र की जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए दा साहब उच्चस्तरीय जाँच का आदेश देकर अपराधी को सजा दिलवाने का आश्वासन देते हैं और इस कार्य के लिए एस.पी. सक्सेना को भेजा जाता है। सक्सेना एक-एक करके कई व्यक्तियों के बयान खुद लिखते हैं और उनकी मानवीय संवेदना न्याय का पक्ष लेने के लिए बाध्य हो जाती है तथा वे समझ जाते हैं कि यह आत्महत्या का नहीं, वरन् हत्या का का मामला है। परन्तु डी.आई.जी. ने पहले से ही रिपोर्ट तैयार कर ली कि बिसू ने आत्महत्या की है। इस बीच दा साहब को ज्ञात हुआ कि सक्सेना द्वारा जिस ढंग से जाँच की

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जा रही है उसके कारण उसके पक्ष के लोग असंतुष्ट हैं और सुकुल बाबू को लाभ पहुँचने की स्थिति बनती जा रही है। अतएव उन्होंने डी.आई.जी. को अपने बंगले पर बुलाया और विस्तारपूर्वक चर्चा करने के पश्चात् संकेत किया कि उन्हें इस बात का संदेह है कि बिन्दा ने बिसू की हत्या की है तथा डी.आई.जी. को सारे मामले पर सावधानीपूर्वक विचार करने के लिए कहा। इस प्रकार बिसू की हत्या करने के जुर्म में बिन्दा को गिरफ्तार कर लिया जाता है और डी.आई.जी. सिन्हा को आई.जी. बना दिया जाता है तथा सक्सेना को सस्पेंड कर दिया जाता है। सत्तारूढ़ दल और विरोधी दल दोनों ही अपनी-अपनी विजय की उम्मीद करते हैं तथा बिसू की मौत को लोग भूल जाते हैं।

इससे स्पष्ट है कि 'महाभोज' की सम्पूर्ण कथा समकालीन राजनीतिक परिवेश पर आधारित है और लेखिका का यथार्थवादी दृष्टिकोण भी सराहनीय है। साथ ही वह राजनीति के विभिन्न पहलुओं को अंकित करने में भी पूर्ण सफल रही है और कथानक में उत्सुकता एवं रोचकता आदि गुण भी विद्यमान हैं, जिस कारण उपन्यास को एक बार पढ़ना आरम्भ करने के पश्चात् बिना पूर्ण किये छोड़ने का मन नहीं होता है।

2.4 'महाभोज' उपन्यास संक्षिप्त रूप में

इसमें किसी प्रकार की दो राय नहीं है कि लेखिका मन्नूजी की कलम चेतना नारी, प्रेम और सम्पूर्ण भावनाओं से ओत-प्रोत रही है। यह उनकी लेखनी का एक ऐसा संदर्भ है जिसने उन्हें न केवल अपनी अलग पहचान दी है, अपितु अच्छी शोहरत के साथ-साथ सुप्रसिद्ध कथाकार के सम्माननीय सिंहासन पर बिठाया है। प्रस्तुत उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जो राजनीति के संदर्भ और उससे सम्बंधित बोध को वाणी देता है। वैसे राजनीति और साहित्य सृजन का कोई मेल नहीं है किन्तु इन दोनों का किसी-न-किसी रूप में सम्बन्ध अवश्य रहा है और यह सम्बन्ध कोई नया नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक एवं अति प्राचीन है। यद्यपि स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीति अपने ही रूप में उभरी है किन्तु उसका व्यवस्थित और संतुलित रूप उसे नहीं मिल सका। आज हमारी राजनीति निरन्तर विकृत होती जा रही है और उसके धर्मनीति रूप ने स्वार्थनीति का रूप धारण कर लिया है जो भ्रष्टाचार व अवसरवादिता का प्रतीक बन गई है।

मन्नू भण्डारी कृत 'महाभोज' उपन्यास भी इसी राजनैतिक चेतना से मण्डित और वर्तमान राजनीति का सच्चा दस्तावेज है। ''यह उपन्यास हिन्दी की उपन्यास धारा में एक नये मोड़ की तरह है जो हिन्दी में आम तौर पर लिखे जाने वाले उपन्यासों से एकदम भिन्न प्रतीत होता है। हमारे देश के आज के राजनीतिक वातावरण की दुविधापूर्ण, झकझोर देने वाली सच्चाई का खुला ब्यौरा मन्नू भण्डारी के इस उपन्यास में पहली बार पढ़ने को मिलता है। इसे उपन्यास में गरीब खेतिहर मजदूरों और गाँव की अधिकांश जनता के निर्मम शोषण पर तुली राजनीति के दोगले अगुओं, उनके पिट्ठुओं और चमचों का वास्तविक एवं सटीक चित्रण हुआ है। विश्वास से कहा जा सकता है कि ''देश के अभावग्रस्त वर्गों को सदा से त्रस्त करते आये घिनौने आतंक से परदा उठाने वाला यह पहला साहसपूर्ण उपन्यास है। गरीबों के लिए झूठे आँसू बहाने में निपुण मगरमच्छनुमा नेताओं द्वारा लगाये गये खोखले नारों के पीछे के कुत्सित षड्यंत्रों और दमघोंटू स्थितियों की निर्भीक चीर-फाड़ इसमें हुई है।''

उपन्यास का प्रारम्भ सरोहा गाँव जो कि शहर से लगभग बीस मील दूर है, उसमें आगजनी की घटनाओं से हुआ है। भले ही उपन्यास के प्रारम्भ में बिसेसर की लाश का उल्लेख किया गया है, किन्तु इससे पहले की आगजनी की घटना से ही कथा का प्रारम्भ माना जा सकता है। पहले तो गाँव में जो घटनाएँ घटित होती थीं, उनका शहर से कोई सम्बन्ध नहीं माना जाता था, किन्तु अब स्थिति बदल गई है और इसी कारण गाँव में घटित घटनाएँ भी शहर में खलबली मचा देती हैं। एक महीने पूर्व गाँव की सरहद के पास वाले हरिजन टोला की झोंपड़ियों में आग लगा दी गयी थी और उनमें रहने वाले लोग भी जलकर राख हो गये थे। गाँव वालों ने थाने में रिपोर्ट करानी चाही, किन्तु थानेदार के छुट्टी पर होने के कारण रिपोर्ट नहीं लिखी जा सकी। परिणामस्वरूप गाँव वाले गुस्सा और नफरत लेकर तनावग्रस्त हो गये। जब यह समाचार शहर में पहुँचा तब वहाँ से बहुत से नेता, मंत्री और अखबारनवीस गाँव पहुँचे तथा उन्होंने अपने रुँधे हुए गले और गीली आँखों से दुःख प्रकट किया। लोगों को सान्त्वना प्रदान की और समाचार-पत्रों के संवाददाताओं ने राख हुई झोंपड़ियों के फोटो खींचकर अखबारों में प्रकाशित करा दिये।

सरोहा गाँव में हुई आगजनी की घटना यों ही समाप्त नहीं होती है। विरोधी दल के नेताओं ने विधानसभा में इस घटना को लेकर काफी हंगामा मचा दिया। मंत्रियों ने आत्मग्लानि में डूबकर अपने अवरुद्ध कण्ठों से दुःख व्यक्त करते हुए भविष्य में ऐसी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने का आश्वासन दिया। सत्तारूढ़ दल के विधायकों ने भी अपने ही मंत्रिमण्डल के लोगों से इस घटना पर विरोध व्यक्त किया। असंतोष और आक्रोश बढ़ता गया और पार्टी के माथे पर इस घटना को कलंक मानकर मुख्यमंत्री महोदय से त्यागपत्र की माँग की गई। उधर मुख्यमंत्री ने यह अनुभव किया कि उन्हें भी वास्तविक अपराधी का पता लगाकर उसे सजा दिलवानी चाहिए। ऐसा करके ही उनकी आत्मा भारमुक्त हो पायेगी और वे हल्का अनुभव करेंगे। अपना बड़प्पन दिखाने के लिए मुख्यमंत्री महोदय ने तुरन्त सरोहा गाँव के थाने के दोनों कांस्टेबलों को सस्पेंड कर दिया। बस्ती की आग अभी ठण्डी भी नहीं हो पाई कि एक दिन सरोहा गाँव में सुबह के समय एक गरीब युवक बिसेसर की लाश सड़क के किनारे पुलिया पर पड़ी हुई पायी गयी। बिसेसर भले ही कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नहीं था, एक साधारण व्यक्ति ही था, पर उसकी लाश को लेकर काफी हंगामा मचा। थानेदार ने भी बिना कोई ढील बरते तुरन्त मौके पर हाजिर होकर लोगों के बयान लिए और अन्ततः, बिसेसर की लाश पोस्टमार्टम के लिए शहर भेज दी गयी। बिसेसर की मृत्यु एक मामूली घटना थी, किन्तु इस समय यह मामूली घटना इसलिए महत्त्वपूर्ण हो गयी थी कि डेढ़ महीने पश्चात् ही वहाँ पर चुनाव होने वाला था। यह विधानसभा का उपचुनाव था और केवल एक सीट के लिए था। इसलिए भी घटना का महत्त्वपूर्ण होना स्वाभाविक था। चुनाव न होता तो ऐसी घटनाओं पर कोई ध्यान भी न देता। फिर इसलिए भी ध्यान देना पड़ा कि उसी क्षेत्र से पहले दस वर्ष तक मुख्यमंत्री रहे सुकुल बाबू भी विपक्ष के नेता रूप में चुनाव में खड़े थे।

2.5 मुख्यमंत्री दा साहब

दा साहब इस उपन्यास के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पात्र हैं जिनका व्यक्तित्व अपने आप में एक विशिष्ट स्थान रखता है। दा साहब वर्तमान में मुख्यमंत्री पद पर आसीन हैं। 'महाभोज' उपन्यास में मुख्यमंत्री के रूप में उनका व्यक्तित्व अतीव प्रभावशाली दिखाया गया है। उनका कक्ष भी विशिष्ट बताया गया है, जिससे आम व्यक्ति का प्रवेश वर्जित है, प्रत्येक व्यक्ति नहीं जा सकता। वहाँ तो वे ही लोग जा पाते हैं तो दा साहब के विश्वसनीय और स्नेहभाजन होते हैं। यही कारण है कि मुख्यमंत्री जब उस कमरे में होते हैं, तब अपने विश्वसनीय सहयोगियों और स्नेही व्यक्तियों से ही बात किया करते हैं। लखन उनका एक विश्वसनीय सहयोगी है इसलिए वह दा साहब के निजी कक्ष में बे-रोक-टोक जाता रहता है। लखनसिंह यद्यपि उपन्यास का गौण पात्र है किन्तु वह मुख्यमंत्री का स्नेहभाजन है, दसवीं कक्षा पास करने के बाद से ही वह दा साहब के साथ रह रहा है तथा उनकी सेवा करता रहता है। इस प्रकार से लखन दा साहब के संरक्षण में पला हुआ व्यक्ति है। उसे भी दा साहब ने सरोहा चुनाव क्षेत्र से प्रत्याशी बनाते हैं। लखन भले ही दा साहब का विश्वसनीय और संरक्षण प्राप्त व्यक्ति है, पर उसका स्वभाव दा साहब के स्वभाव के एकदम विपरीत है। वह स्वभाव से तेज है, छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित हो जाता है और बोलते समय आवेश में आकर हकलाने लगता है। दा साहब उसकी इन सभी बातों पर बुरा नहीं मानते हैं, हँसकर टाल देते हैं। उसे दा साहब के समक्ष कुछ भी और कैसे भी कहने की छूट प्राप्त है। लखन जब दा साहब से कहता है कि "अभी तो कुछ नहीं हुआ, बहुत मामूली-सी बात हुई है। सरोहा में बिसेसर नाम के एक आदमी को मरवा दिया गया है। लाश पुलिया पर पड़ी मिली है। असली बात तो तब होगी जब हरिजनों के सारे वोट सुकुल बाबू के नाम पड़ जायेंगे। सब लोगों का अनुमान है कि जोरावर का है यह काम।" ये बातें सुनकर भी दा साहब के चेहरे पर कोई विकार उत्पन्न नहीं हुआ। दा साहब मंजे हुए राजनीतिज्ञ थे, इसलिए उन्होंने लखन की बातें सुनकर कोई चिंता नहीं दिखाई और न वे इन सब बातों को सुनकर घबराये ही। हाँ, उन्होंने लखन से अवश्य पूछा कि घरेलू उद्योगों के लिए जो कार्यक्रम बनाया गया था उसका क्या हुआ ? लखन मानता था कि घरेलू उद्योगों के लिए आर्थिक सहायता की जो योजना बनाई गई है, उसने गाँव की स्थिति को कुछ सुधार दिया है। अतः इसी स्थिति में चुनाव हो जाते तो ठीक रहता। दा साहब ने भी कहा कि घरेलू उद्योग की इस योजना से उनकी गरीबी पर मरहम तो लगाया जा सकता है, किन्तु प्रियजनों के बिछुड़ने के दुःख नहीं। आदमी का वियोग जिस दिन पैसा पाकर दूर होने लगेगा, उस दिन इस दुनिया से इन्सानियत उठ जायेगी।

उन्होंने लखन को समझाया कि देखो, आवेश राजनीति का दुश्मन है। राजनीति में विवेक के साथ धैर्य भी होना चाहिए। अभी तो कोई बात नहीं है, पर जब तुम पद पर बैठोगे तब पद की जिम्मेदारी तुम्हें स्वयं ही सब कुछ सिखा देगी। लखन दा साहब की इन बातों को सुनकर भी शांत नहीं हुआ। उसने तो केवल यही कहा कि अब कोई पद पाना भूल जाइये, बिसेसर की मृत्यु वाली घटना को भुनायेंगे और हम सभी लोग टापते रह जायेंगे। दा साहब ने लखन को शांत करने के लिए यह भी कहा कि देखो, सुकुल बाबू के भाषण की बात तो तुम छोड़ दो, तुम तो यह करो कि मशाल नामक समाचार-पत्र जो कुछ छापता है, वह उल्टा-सीधा होता है अतः

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University)

उस पर ध्यान दो। दा साहब की बातें सुनकर लखन का मानस द्वन्द्वग्रस्त हो गया। वह यह नहीं जान पाया कि आखिर दा साहब चाहते क्या हैं। ये जिस सन्तई भाषा का प्रयोग करते हैं और जो वैराग्य धारण किए हुए हैं, उससे कुछ नहीं होने वाला है। दा साहब लखन के आन्तरिक द्वन्द्व को पहचान गये थे, अतः उन्होंने लखन को शर्बत पिलाया। इस पर भी जब स्थिति सँभलती नजर न आयी, तब वे मन ही मन कुछ सोचने लगे और शून्य में ताकने लगे। कुछ देर बाद उन्होंने अपनी नजरें लखन के चेहरे पर गड़ा दीं। लखन मन ही मन आत्मग्लानि का अनुभव कर रहा था और मन ही मन दा साहब को कोस रहा था। वह यह भी जानता था कि उसकी अपनी कोई योग्यता ऐसी नहीं है जिससे वह कुछ प्राप्त कर सके। वह तो दा साहब की कृपा से ही आगे बढ़ पाया है और बढ़ पायेगा।

दा साहब लखन के सामने कुछ समय तक मौन धारण किये रहे, किन्तु थोड़ी देर बाद उन्होंने अपना मौन त्याग दिया और फिर बातचीत करने लगे। उन्होंने कहा कि आज सवेरे ही उन्हें डी.आई.जी. से सूचना प्राप्त हुई है कि बिसेसर आठ महीने पहले ही जेल से छूटकर आया था। वह चार साल तक जेल में बन्द रहा। लखन दा साहब की बात सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। उसे पता नहीं था कि दा साहब इस दिशा में काफी सक्रिय हैं। दा साहब ने लखन के सामने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि वे चाहते हैं कि पुलिस बयानों और प्रमाणों के आधार पर स्वतंत्रतापूर्वक ईमानदारी से रिपोर्ट तैयार करे तथा ऊपर से यदि कोई आदेश थोपा गया तो न्याय नहीं होगा। इसके बाद दा साहब ने एक चुभती-सी नजर लखन पर डाली और सख्त आवाज में कहा कि ''अपनी आकांक्षाओं को थोड़ी लगाम दो लखन, वरना मेरे साथ चलना मुश्किल होगा।'' क्षण भर के लिए लखन सिटपिटा गया और दा साहब फोन उठाकर वित्तमंत्री से किसी योजना के सम्बन्ध में बातचीत करने लगे। वास्तव में लखन की कुछ ऐसी मानसिकता हो गयी थी कि वह बिसेसर की मौत को बहुत महत्त्वपूर्ण मान रहा था। इसलिए मन ही मन दा साहब को लेकर कुढ़ता और तिलमिलाता रहता था, पर दा साहब उसे समझाते रहते थे। दा साहब जो भी करते थे, वह सोच-समझकर करते थे। लखन की कही हुई बातें यथावत् रूप में मान लेना उनके वश की बात नहीं थी। जब दा साहब ने लखनसिंह को राजनीति की वर्तमान अनिवार्यता को उसी की शैली में समझाया तो लखन उत्साहित हो जाता है। वह यह जान जाता है कि दा साहब के लिए राजनीति धर्मनीति से कम नहीं है। गीता के उपदेश सुनकर लखन का मन शांत नहीं होता, किन्तु वह उनकी बात को काट भी नहीं पाता है। वह इस बात से भी उत्साहित होता है सुकुल बाबू की चुनावी मीटिंग नौ तारीख को है तो दा साहब उसके चार-पाँच दिन बाद ही अपनी ओर से मीटिंग रखने का प्रस्ताव रखते हैं, साथ ही लखन को यह भी कहते हैं कि गाँव में जब इतना बड़ा हादसा हो गया है तो हमें वहाँ अवश्य जाना चाहिए। बिसेसर के माँ-बाप को तसल्ली भी देनी चाहिए। लखन स्वीकार करता है कि यह ठीक है, क्योंकि आपके जाने से चुनाव पर भी बहुत असर पड़ेगा। गाँव में जो तनाव है, वह भी कम हो जायेगा। वैसे गाँव वाले अब पहले जैसे मूर्ख नहीं रह गये हैं।

2.6 सुकुल बाबू

बिना किसी रोक-टोक के दस बरस तक इस प्रांत के मुख्यमंत्री रहे हैं, पर पिछले चुनाव में उनकी पार्टी के साथ-साथ उन्हें पराजय भी सहन करनी पड़ी है और वे सत्ता-सुख से वंचित हो गये हैं। बिसेसर की मौत सुकुल बाबू को लाभदायक प्रतीत हुई है। उन्होंने अपनी हार को जीत में बदलने के लिए यही उपयुक्त और सही अवसर समझा है। पिछले चुनावों में हारकर भी मन से सुकुल बाबू ने अपनी हार को एक दिन के लिए भी स्वीकार नहीं किया है। इसलिए वे अब अपनी पहले वाली हार को जीत में बदलने का निश्चय कर चुके हैं। अपने निवास स्थान पर जमे हुए सुकुल बाबू सारे दिन सोचते रहे कि ''शाम के भाषण में कौन-कौन से मुद्दे उठाने हैं.....कितने वोट खोने हैं और कितने पाने हैं ? अभी तक हरिजनों के बूते पर ही तो चुनाव जीतते आये थे। पिछली बार इन लोगों ने आँख फेरी तो मुँह की खानी पड़ी। पर इस बार कैसे आँख फेरेंगे और आखिर क्यों फेरेंगे ? बिसू सारी जिन्दगी इन्हीं लोगों के लिए तो लड़ता रहा था। वे बिसू की मौत का हिसाब ही तो माँगेंगे सरकार से.....इस पर भी लोग उनके सुर में सुर नहीं मिलायेंगे ? जरूर मिलायेंगे और हरिजन का सुर मिल गया तो फिर से सुगम संगीत बजने लगेगा—कम से कम उनकी अपनी जिन्दगी में तो।'' वस्तुतः, सुकुल बाबू के भाषण की सूचना से सरोहा गाँव में फैला तनाव भरा सन्नाटा अवश्य टूट गया। जब तक गाँव में बिसू की लाश रही तब तक गाँव में खलबली मची रही और लोग अपने-अपने ढंग से विचार प्रकट करते रहे।

सरोहा गाँव के पूरब में जुम्मन पहलवान का एक बड़ा-सा अखाड़ा है और उसमें रात-दिन तीस-चालीस पट्ठे लाल लँगोट बाँधकर व्यायाम करते रहते तथा वहाँ दण्ड पेलना, लाठी भाँजना, मुद्गर घुमाना, कुश्ती लड़ना आदि कुछ-न-कुछ चला ही रहता।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शाम के समय लोग काम से लौटते हुए कुछ देर खड़े रहकर तमाशा जरूर देखते और यह अखाड़ा गाँववालो के मनोरंजन का केन्द्र होने के साथ-साथ आतंक का गढ़ भी था। जब कभी इस अखाड़े के पहलवान अपनी तेल पिलाई हुई लाठियाँ लेकर गाँव के गली-बाजारों में घूमते दिखाई देते हैं तब सारे गाँव वालों को साँप सूँघ जाता है और सबकी जीभ तालू से चिपक जाती है। इस प्रकार बिसू की लाश चीर-फाड़ के लिए शहर भेजते ही अखाड़े के ये लठैत गाँव में गश्त लगाने पहुँच गये और सब लोगों के मुँह से आहें भले ही निकलती रही हों, पर बिसू के हत्यारे का नाम तथा उसकी हत्या का कारण जानते हुए भी सबके मुँह सिल गये। बयान के समय बिसू के बाप ने भी किसी का नाम नहीं लिया और सब चुप ही रहे।

बिसेसर की मौत की घटना को भुनाने और चुनाव में विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से सुकुल बाबू सरोहा गाँव में जाकर चुनावी भाषण देते हैं। वे पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ठीक छः बजे गाँव में प्रवेश करते हैं। उनका भाषण सुनने के लिए जनता उमड़ पड़ती है। गाँव में पार्टी की ओर से स्वागत करने के लिए वहाँ पहले से ही कुछलोग तैयार थे, परन्तु माला न पहनाकर सूखे अभिवादनों से ही स्वागत हुआ, क्योंकि मौका ही शोक का था। मंच पर चढ़कर अभिवादन की मुद्रा में सुकुल बाबू ने हाथ जोड़े और उपस्थित जनसमुदाय को देखकर उनके चेहरे पर संतोष का भाव उभर आया। सुकुल बाबू विरोधी को काटने में बड़े निपुण रहे हैं। उन्होंने अपने भाषण में इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखा तथा भाषण के समय वे बीच-बीच में अपने कथन की प्रतिक्रिया जानने के लिए कुछ क्षण चुप रहकर भीड़ की ओर देख लेते थे। उन्होंने अपने आपको गाँव वालों का हमदर्द बताया तथा हरिजनों पर किए जाने वाले अत्याचारों का उल्लेख किया। इतना ही नहीं, सुकुल बाबू ने सरकार पर यह भी आरोप लगाया कि वह अत्याचारियों का साथ दे रही है। उन्होंने ऊँची आवाज में स्पष्ट कहा ''गाँठ बाँध लीजिए कि यह सरकार आप लोगों के लिए कुछ नहीं करने जा रही है। उसे लगाव आपसे नहीं, अपनी कुर्सियों से है और कुर्सियों का तकाजा यही है कि अभी ऐसी बातों को गोलमाल करके छोड़ दो। कुर्सी और इन्सानियत में बैर है। इन्सानियत की खाद पर ही कुर्सी के पाये अच्छी तरह जमते हैं।''

कुछ देर रुककर सुकुल बाबू ने पुनः कहा कि ''मुझे दा साहब से न्याय माँगना है। बातें और आश्वासन नहीं, नौ-नौ आदमियों को मारने वाला मुजरिम चाहिए, बिसू को मारने वाला हत्यारा चाहिए।'' तभी एक कोने में कुछ गोलमाल होने लगा था, परन्तु दूसरे कोने से नारे लगने लगे कि ''और धाँधली नहीं चलेगी, नहीं चलेगी, सुकुल बाबू जिन्दाबाद।'' इस प्रकार सुकुल बाबू के भाषण में कोई बाधा नहीं आयी और अन्त में यह तय किया गया कि अगले ही सप्ताह कोई दिन तय करके एक जुलूस दा साहब के यहाँ जायेगा, जिसका नेतृत्व सुकुल बाबू करेंगे। मजमा उखड़ने तक लोगों में काफी उत्तेजना आ गयी थी और सुकुल बाबू को लगा कि उनका तालमेल लोगों के साथ बैठ गया है। मंच से उतरे और चल पड़े। अचानक सुकुल बाबू को याद आया कि बिसू के घर तो गये ही नहीं, वहाँ जाना चाहिए। यह सोचकर वे जुलूस के रूप में बिसेसर के पिता हीरा के घर पहुँचे, किन्तु वहाँ जाना बेकार हो गया। बिसेसर के घर पर न तो हीरा मिला और न कोई और, केवल दो बच्चे मिले जिनसे केवल यही ज्ञात हो सका कि बिन्दा के साथ ददा और माँ दोपहर में शहर गये हैं और वे रात में लौटेंगे।

2.7 दत्ता बाबू और दा साहब

जब सुकुल बाबू पूरे जोश-खरोश के साथ भाषण दे रहे थे, तब दा साहब सचिवालय से लौटकर घर पर कुछ फाइलें देख रहे थे। उनका नित्य का यही नियम था। वे उन फाइलों को जो महत्त्वपूर्ण होती थीं, घर पर बैठकर ही देखते थे। अचानक 'मशाल' के सम्पादक दत्ता बाबू के आने की सूचना मिली। दत्ता बाबू ने दा साहब के कमरे में प्रवेश किया। दा साहब ने उनका स्वागत किया। वे संकोच में थे कि क्या कहें, अतः दत्ता साहब केवल यही कह सके कि ''वो आपने याद फरमाया था, कल लखन बाबू ने सूचना दी थी।'' दा साहब ने स्थिति को संभाल लिया और कहा कि हाँ भाई, याद आया मैंने ही मिलने के लिए बुलाया था। आप लोग भले ही भूल जायें, हमें तो सबका ख्याल रखना पड़ता है। दोनों में बातचीत होने लगी। दा साहब ने प्रजातंत्र के अन्तर्गत अखबार पर पाबंदी लगाना अशोभनीय बतलाया। दत्ता बाबू ने भी उसी स्वर में स्वर मिलाकर कहा कि ''मैं कहता हूँ काले अक्षरों में लिखा जायेगा उन शर्मनाक ज्यादतियों का इतिहास.....गला घोंटकर रख दिया था सबका।'' दत्ता को दा साहब ने अधिक नहीं बोलने दिया और कहा कि आप लोगों ने जो भूमिका अदा की, उसे किन अक्षरों में आप लिखेंगे। चापलूसी और जी-हुजूरी की भूमिका तो अखबारनवीसों की नहीं होती है। दत्ता बाबू की साँस भीतर ही खिंची रह गयी और उनकी ओर पैनी नजर से देखते हुए दा साहब ने कहा कि आपका अखबार तो अश्लीलता के आरोप पर बन्द हुआ था। दा साहब ने दत्ता बाबू से बहुत-सी बातें कीं, जिनका सारांश यही था कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अखबार पर पाबन्दी नहीं होनी चाहिए, वह प्रजातंत्र की सही और ईमानदार आवाज का प्रतीक होना चाहिए। आप लोग जैसा सुन लेते हैं, वैसा ही लिख देते हैं और कभी-कभी उसे अपनी कल्पना से और भी गहरा रंग दे देते हैं। इसी बीच में डी.आई.जी. के अनुसार घटना वाले दिन के सारे बयानों से नतीजा कुछ ऐसा निकल रहा है कि लड़के ने आत्महत्या की है और सुकुल बाबू के लोग दूसरे दिन से ही वहाँ चिल्लाते फिर रहे हैं कि हमें इस हत्या का जवाब चाहिए। अभी कोई घण्टा भर पहले सभा करके धुँधार भाषण दे दिया सुकुल बाबू ने। पुलिस की रिपोर्ट आयी नहीं, उनकी रिपोर्ट आ गयी। दत्ता बाबू के मन में अनेक विचार उत्पन्न हुए और उन्होंने इस बात के लिए खैर मनाई कि मशाल का नया अंक कल निकलेगा, पर इस बात के लिए चिन्ता हुई कि उसमें बिसेसर की हत्या का समाचार दिया गया है और वह भी हैडलाइन में। इसी बीच दा साहब ने पुन: गरीबों के प्रति संवेदना प्रकट की।

दत्ता बाबू की समझ में नहीं आ रहा था कि इन ऊँची-ऊँची बातों का समर्थन किस प्रकार किया जाये, परन्तु दा साहब को उनके समर्थन की आवश्यकता भी नहीं थी। उन्होंने गीता से प्राप्त सीख का उल्लेख करने के बाद आँख मूँदकर मन ही मन गीता को नमस्कार किया और कुछ देर बाद उक्त प्रसंग को स्थगित करके दत्ता बाबू से पूछा, ''अब तो किसी तरह की कोई पाबन्दी........कोई अंकुश तो नहीं महसूस होता आप लोगों को ? होता हो तो साफ कहिए। साफगोई का आदर करता हूँ मैं........पिछली सरकार ने कुछ अखबारों को विज्ञापन न देने का आदेश दे रखा था सरकारी महकमों में। सही बात कहने का साहस दिखलाया था उन अखबारों ने। उसी की सजा थी यह शायद। पर भाई मेरे, साहस को तो पुरस्कृत होना चाहिए। मैंने वे सारी पाबन्दियाँ हटा दी हैं। अखबारों पर किसी प्रकार की पाबन्दी हो, प्रजातंत्र की हत्या है।''

दत्ता बाबू के चेहरे पर श्रद्धा के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे और उन्होंने दा साहब की प्रशंसा करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया, परन्तु दा साहब ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। उन्होंने इसे अपना कर्त्तव्य मानते हुए चेतावनी के स्वर में कहा कि ''अब आप लोगों को पूरा कर्त्तव्य भी निभाना चाहिए अपने – देश के प्रति, समाज के प्रति और खास करके इस देश की गरीब जनता के प्रति।'' दा साहब ने उनसे पूछा, ''सरकारी विज्ञापन मिलने लगे.......कागज का कोटा मिल रहा है........?'' और दत्ता बाबू ने स्वीकार किया कि ''उसी में थोड़ी दिक्कत पड़ रही है।'' दा साहब ने उनसे कहा ''बतलाइये न अपनी दिक्कत। दिक्कत दूर करने के लिए तो मैं यहाँ बैठा हूँ।'' फाइल के पन्ने पलटते हुए दा साहब ने कहा ''जा सकते हैं अब आप, पर ध्यान रखिये, काम बहुत जिम्मेदारी से हो अब।'' अब नजरों को दत्ता बाबू के चेहरे पर टिकाकर और आवाज में हल्की-सी सख्ती लाकर उन्होंने कहा ''आपके साप्ताहिक के कुछ अंक देखे हैं मैंने। बात की असलियत पर उतना ध्यान नहीं रहता आपका। जासूसी किस्से कहानियों की तरह बहुत चटपटा और सनसनीखेज बनाकर छापते हैं आप बातों को। आगे से ऐसा न हो।''

दत्ता साहब ने दा साहब से विदा ली और मन ही मन निश्चय किया कि दा साहब बहुत ही भले आदमी हैं। अब उन्हें यह समझ में आ गया कि 'मशाल' का जो नया अंक निकलने वाला है, उसे नये सिरे से छपाकर प्रस्तुत करना चाहिए। मशाल का नया अंक निकला। उसमें पहला और अन्तिम पृष्ठ बदला गया, रात भर मेहनत की गयी। दत्ता बाबू ने जो नयी रिपोर्ट तैयार की और जो विवरण प्रस्तुत किये, वे दा साहब से हुई बातचीत के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किये गये थे। इस प्रकार मशाल का अंक नये तेवर के साथ समाने आया। यह ठीक था कि हैडलाइन बिसेसर की मौत की थी, पर उसमें एक लम्बा वक्तव्य भी दिया गया था। इसमें पुलिस की अभी तक की तहकीकात के आधार पर यह संकेत किया गया था कि बिसेसर की मौत का हादसा हत्या का नहीं, आत्महत्या का है। इसके साथ ही दत्ता साहब ने दो साहब के उस आदेश का हवाला भी दिया था, जिसमें उन्होंने पुलिस को गहरी छानबीन करके एक बेबाक रिपोर्ट तैयार करने की ताकीद की गयी थी। अखबार में सुकुल बाबू के भाषण को एक जिम्मेदार व्यक्ति का अनुत्तरदायित्वपूर्ण कार्य बतलाया गया था। साथ ही यह आरोप भी लगाया गया था कि एक साधारण-सी घटना को सुकुल बाबू ने केवल अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए मनमाने ढंग से विकृत करके लोगों में व्यर्थ ही तनाव बढ़ाने का निन्दनीय कार्य किया है।

2.8 त्रिलोचनसिंह

त्रिलोचनसिंह को लोग लोचन भैया के नाम से जानते हैं। यथा नाम तथा गुण थे। वे नाम के ही नहीं बल्कि देखने में भी वे जनता के प्रिय लोचन थे। जिस दिन सरोहा गाँव की हरिजन बस्ती में आग लगी थी, उस दिन से लोचन भैया की न केवल कोठी सुलग रही है, बल्कि लोचन भैया का मन ही सुलग रहा है। सुकुल बाबू के वजन पर कई योग्य व्यक्तियों के नामों की उपेक्षा करके

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

एक मामूली इन्सान लखन को उनके मुकाबले खड़ा किया गया है। इससे आग और अधिक भड़क उठी है। बिसेसर की मौत से भी लोचन भैया का मन लपटों में सुलग उठता है। पिछले सप्ताह से इसी कारण लोचन भैया यह कहते फिर रहे हैं कि ''बहुत बर्दाश्त कर लिया, अब तिल भर भी और नहीं सहा जा सकता है।'' लोचन भैया के साथ-साथ दा साहब के मंत्रिमण्डल से कुछ मंत्री व विधायक असंतुष्ट भी हैं और उनके इस असंतोष के अपने-अपने कारण हैं। वास्तविकता यह है कि असन्तोष का सिलसिला उसी दिन से शुरु हो गया था जिस दिन से मंत्रिमण्डल बना था, किन्तु परिस्थितियों को देखते हुए किसी ने भी अपना असन्तोष प्रकट नहीं किया था। अपने-अपने चेहरों पर सभी ने स्नेह, सद्भावना, संतोष एवं एकता के मुखौटे चढ़ा लिए थे और आदर्शों के लबादे ओढ़ लिये थे। परिणामस्वरूप कुछ विधायक असंतुष्ट रहने लगे थे। पिछली रात दो बजे तक लोचन भैया की कोठी पर असंतुष्टों की बातचीत चलती रही और यह लगता रहा कि कुछ नया घटित होने वाला है। लोचन भैया पार्टी अध्यक्ष अप्पा साहब को भी अपने असन्तोष को बतलाना चाहते थे। इसके लिए वे उनसे मिलने का समय माँग रहे थे।

लोचन भैया अप्पा साहब से मिलना चाहते थे, पर अप्पा साहब ने बता दिया था कि वे किसी काम से उधर ही आ रहे हैं, अत: ठीक नौ बजे वे उनसे मिलेंगे। अप्पा साहब समय के पाबन्द थे, अत: ठीक नौ बजे लोचन भैया के यहाँ पहुँच गये। अप्पा साहब ने बैठते ही कहा, ''रात बड़ी देर तक बैठक होती रही तुम्हारे यहाँ, बहुत उखाड़-पछाड़ वाली बैठक।'' लोचन भैया की समझ में नहीं आया कि यह प्रश्न था या आरोप ? फिर भी उन्होंने यह कहा कि ''इसी सन्दर्भ में मैं आपसे मिलना चाह रहा था।'' लोचन भैया ने कुछ देर रुककर यह बताया कि अन्तिम रूप से यह निर्णय लिया गया है कि अब हम लोग एक दिन के लिए भी दा साहब के मंत्रिमण्डल में नहीं रह सकेंगे और यह मंत्रिमण्डल अधिक दिनों तक नहीं रहेगा। अप्पा साहब ने असन्तुष्टों का नेतृत्व करने का आरोप लोचन भैया पर लगाया किन्तु वे विचलित नहीं हुए। उन्होंने आवेशपूर्ण वाणी में यही कहा कि ''सरे आम जिस तरह के जुल्म और ज्यादतियाँ हो रही हैं, उन सबके साझीदार हम हों तो हम पर लानत है। अत्याचारी को संरक्षण दो और पीड़ितों को कुचलो, क्या यही थे हमारे आदर्श, हमारे सिद्धान्त जिन्हें लेकर हम चले थे?'' लोचन के आवेश और चुनौती भरे स्वर से अप्पा साहब विचलित नहीं हुए। उन्होंने पार्टी की एकता और उसके हित को व्यक्तिगत स्वार्थ एवं हित से बढ़कर माना, परन्तु लोचन ने तमककर पूछ ही लिया कि ''कौन देख रहा है अपना स्वार्थ ?''

लोचन बाबू ठण्डे दिमाग से नहीं सोच पाते थे। यही कारण था कि अप्पा साहब की महत्त्वपूर्ण बातें भी वे सही ढंग से समझ नहीं पा रहे थे। जहाँ तक पार्टी की इमेज का प्रश्न था, उस विषय में उनका सोचना यह था कि मजदूरों को सरकारी रेट पर मजदूरी न मिलना, आदमियों का जिन्दाजला देना, दिन-प्रतिदिन बढ़ते अत्याचार, असुरक्षा और बिसू की मौत आदि घटनाओं से भी पार्टी की छवि बिगड़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में विधायक दल की बैठक बुलाकर शक्ति-परीक्षण की तारीख तय कर लेनी चाहिए। अप्पा साहब ने भी कहा कि स्वयं दा साहब भी विधायक दल की बैठक बुलाने का आग्रह कर रहे हैं, क्योंकि वे कुछ मंत्रियों को बर्खास्त करना चाहते हैं। वे मानते हैं कि सत्तापक्ष के कुछ लोगों के विरोधी व्यवहार से शासन चलाना मुश्किल हो रहा है। अप्पा साहब ने कहा कि मंत्रियों को बर्खास्त करने से मैंने दा साहब को अभी तक रोक रखा है। परन्तु लोचनजी, आप जिन लोगों के भरोसे पर त्यागपत्र दे रहे हैं, क्या उन पर पूरा विश्वास किया जा सकता है ? कहीं ऐसा न हो कि आप आवेश में त्यागपत्र दे दें और बाद में मुँह की खानी पड़े।

इसी संदर्भ में ही अप्पा साहब ने लोचन भैया को बहुत समझाया। उन्होंने बड़े स्नेह से और याचना भरे स्वर में लोचन के हाथ को सहलाया और कहा कि ''इस पार्टी को बनाने में तुम्हारा बहुत सहयोग रहा है। मैं यह भी जानता हूँ कि इस पार्टी में तुम्हारी बहुत आस्था है, बल्कि यह भी कह सकता हूँ कि इस पार्टी से तुम्हें मोह है। वैसे भी अपनी बनाई हुई चीज से मोह होता ही है। इसलिए कह रहा हूँ कि अपने इस निर्णय को कुछ समय के लिए स्थगित रखो। चुनाव के बाद जैसा आवश्यक होगा, वैसा कर लेंगे।'' निश्चय ही दा साहब को नये सिरे से अपने विधायकों का विश्वास प्राप्त करना होगा। जब लोचन ने अप्पा साहब की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया, तब उन्होंने पुन: यह भी कहा कि ''बात केवल मंत्रिमण्डल के टूटने तक की होती तो मैं कभी तुम्हारे पास इतना आग्रह करने नहीं आता, लेकिन इस समय नासमझी में उठाया गया तुम्हारा कदम पूरी पार्टी को ही ले डूबेगा।'' इस प्रकार लोचन बाबू ने अप्पा साहब की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, वे चुप्पी साधे रहे। हाँ, जब अप्पा साहब वहाँ से चल दिये तब लोचन बाबू कुछ देर वहीं खड़े-खड़े बहुत कुछ सोचते रहे।

Jeevan Vishwa Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्वास्थ्यमंत्री राव और विकासमंत्री चौधरी ने लोचन भैया से भेंट की तथा ध्यानपूर्वक अप्पा साहब से हुई बात का एक-एक शब्द सुना। वास्तव में ये दोनों मंत्री मंत्रिमण्डल गिराओ अभियान में लोचन के दायें-बायें हाथ बने हुए थे। राव ने लोचन से जानना चाहा कि उनका इरादा कहीं डगमगा तो नहीं रहा। इसके उत्तर में लोचन ने स्पष्ट कहा कि नहीं, मेरा इरादा जैसा था वैसा ही है। राव ने सुझाव दिया कि अब अधिक सोच-विचार में पड़ना उचित नहीं है। यदि आगजनी वाली घटना के बाद ही हम लोग अड़ जाते तो आज सरोहा चुनाव में हमारा आदमी खड़ा होता, परन्तु अनुशासन के नाम पर या पार्टी की एकता के नाम पर हमें दबा दिया जाता रहा है, पर अब चूकना उचित नहीं है। धीरे-धीरे और भी बहुत-सी बातें हुईं और इन दोनों मंत्रियों की बातों से लोचन के मन में उभर आये द्विविधा-द्वन्द्व अपने आप दूर हो गये और उन्होंन-उत्साहित होकर कहा कि ''ठीक है, मसविदा तैयार कर लेते हैं और अधिकसे अधिक लोगों के हस्ताक्षर करवाकर अप्पा साहब को दे देते हैं।'' राव ने सुझाव दिया कि ज्ञापन देने से पहले यदि हम लोग आपस में बिना किसी लाग-लपेट के बहुत साफ बात कर लेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा और राव की आँखों में एक धूर्तता झलक आयी। वास्तव में वह यह पूछना चाहता था कि जब नया मंत्रिमण्डल बनेगा तब उसे कौन-सा पद प्राप्त होगा। अनायास ही लोचन भैया को अप्पा साहब के कुछ वाक्य याद आ गये और उन्होंने पूछा कि लगता है आप लोग सारा हिसाब-किताब करने ही आये हैं, तो फिर अपनी कीमत भी बता दीजिये। राव और चौधरी दोनों ने स्पष्ट तो कुछ नहीं कहा, केवल ऐसा ही जताया कि मंत्रिमण्डल में उनकी जगह बहुत ऊँची होनी चाहिए। ऐसा आभास देकर राव और चौधरी दोनों वहाँ से चले गये।

पांडेजी दा साहब को स्पष्ट बता देते हैं कि लोचन बाबू के घर पर जो बैठक हुई है, वह आपके विरोध में है और पिचासी लोग लोचन बाबू का समर्थन कर रहे हैं। इस जानकारी का दा साहब पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने पाण्डेजी से यही कहा कि तुम सरोहा चुनाव क्षेत्र की जिम्मेदारी को ईमानदारी से निभाओ और सम्भालो। इधर की चिन्ता से अपने आपको परेशान करने की जरूरत नहीं है। पांडेजी ने दा साहब को यह भी बता दिया कि एक अलग दफ्तर की व्यवस्था करके इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि दा साहब की योजना का अधिक से अधिक लाभ हरिजनों और खेतिहर मजदूरों को मिले। दा साहब ने पांडेजी की ओर स्नेह और प्रशंसा से भीगी हुई नजर डाली और भीतर तक पुलकित हो गये। सुकुल बाबू की मीटिंग हो ही चुकी थी। इधर घरेलू उद्योग योजना गम्भीरता से चल रही थी। बहुत से स्वयंसेवक घर-घर जाकर इस विषय में लोगों को समझा रहे थे और फार्म भरवा रहे थे। वे स्वयंसेवक यह सूचना भी घर-घर जाकर दे रहे थे कि पन्द्रह तारीख को मुख्यमंत्री स्वयं आ रहे हैं।

2.9 दा साहब और उनका भाषण

मुख्यमंत्री दा साहब के सरोहा गाँव पहुँचने की तिथि नजदीक आ गयी थी, इसलिए गाँव में उनके स्वागत की जोर-शोर से तैयारियाँ की जा रही थीं। चारों ओर उत्साह ही उत्साह नजर आ रहा था। कुछ सादी वर्दी में और कुछ सरकारी वर्दी में पुलिस भी वहाँ काफी संख्या में मौजूद थी। उस दिन सुकुल बाबू के भाषण वाले दिन से दुगुना उत्साह लोगों में नजर आ रहा था, क्योंकि कुर्सी से उतरे हुए मंत्री और कुर्सी पर बैठे हुए मंत्री में अन्तर स्वाभाविक ही होता है। वहाँ पर झण्डियों और बड़े-बड़े पोस्टरों का अम्बार लगा हुआ था। ठीक समय से कुछ पूर्व ही दा साहब सरोहा गाँव में पहुँच गये, किन्तु वे सीधे मंच की ओर नहीं गये। दा साहब पहले बिसेसर के घर की ओर गये। गाड़ी वहाँ तक जा नहीं सकती थी, अतः हीरा को वहीं बुलाने की बात कही गयी किन्तु दा साहब ने इसे नहीं माना और वे गाड़ी से उतरकर पैदल ही सीधे हीरा के घर की ओर चल दिये। उनके साथ-साथ बहुत सारे लोग भी हो लिये। हीरा और दा साहब की मुलाकात हुई। वह दा साहब को यानी कि मुख्यमंत्री को अपने घर पर देखकर भौंचक्का रह गया। वह समझ नहीं पाया कि क्या करे क्या कहे ? दा साहब ने उसकी पीठ पर स्नेह से हाथ रखा तो उसकी आँखों से आँसू की बूँदें निकलीं और चेहरे पर पड़ी झुर्रियों में समा गयीं। दा साहब ने इतना ही कहा कि ''बहुत अफसोस हुआ बिसेसर का, पर हौसला रखो।'' ऐसा कहकर वे हीरा को अपनी गाड़ी के पास ले आये। उन्होंने हीरा को गाड़ी में बिठा लिया। वह न चाहते हुए भी गाड़ी में दा साहब की बगल में बड़े संकोच के साथ बैठ गया। वे उसे अपने साथ लेकर सीधे मंच पर जा पहुँचे। सारी उपस्थित भीड़ इस दृश्य को हर्ष के साथ देख रही थी और सभी यह अनुभव कर रहे थे कि दा साहब में कितना बड़प्पन है।

दा साहब मंच पर हीरा को अपने साथ ले गये, पाण्डेजी असमंजस की स्थिति में आ गये। उन्होंने भाषण प्रारम्भ करने से पहले यह कहा कि एक बहुत ही खेदजनक मौके वे यहाँ आये हैं। उन्होंने गाँववासियों की नाराजगी को स्वाभाविक माना और यही कहा कि जब आप लोग मुझे प्रेम और विश्वास देते हैं तो मैं उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता हूँ। अतः आप यदि आज मुझे नाराजगी दे

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

रहे हैं तो उसे भी मैं प्रसन्नता से ग्रहण करूँगा। कारण यह है कि आपकी नाराजगी मेरी गलती के कारण है और मेरी गलती पर आपका नाराज होना स्वाभाविक है। दा साहब ने स्पष्ट किया कि किसी के बहकावे में नहीं आना चाहिए। डी.आई.जी. साहब ने बड़ी बारीकी से जाँच की है और खुद सभी बयानों को सावधानीपूर्वक देखकर यही मत व्यक्त किया है कि बिसेसर ने आत्महत्या की है। सभा में खलबली मच गयी। पुलिस वाले लोग नौजवानों को शांत करते रहे, पर दा साहब ने सभी नौजवानों को बोलने का अवसर दिया। नौजवानों के गुस्से को भी दा साहब चुपचाप बर्दाश्त कर गये। उन्होंने घोषणा की कि शीघ्र ही एक बड़ा अफसर यहाँ आयेगा और नये सिरे से जाँच करेगा। इसी बीच बिन्दा वहाँ आ गया। वह भी दा साहब पर आक्रोश भरी वाणी में प्रहार करने लगा। बिन्दा ने जब दा साहब की सरकार पर आरोप लगाया, तब दा साहब ने यह कहकर स्थिति संभाल ली कि भाई, आप लोग यदि गवाही दें, यह हत्या का मामला है तो निश्चित रूप से कार्यवाही की जायेगी। बिन्दा फिर भी चिल्लाता रहा, यद्यपि बिन्दा की तैश भरी बात से मंच और सभा में खलबली मच गयी थी, पर दा साहब ने उस समय पूरी सौम्यता दिखाई और बिठाने का प्रयास किया। अचानक दा साहब की बात को बीच में ही काटकर बिन्दा चिल्लाया कि ''आप लोगों की बातें ही तो हम तीस साल से सुनते आ रहे हैं। पर क्या हुआ है आज तक ? पेट भरने के लिए अन्न नहीं, आपकी बातें खाली बातें.....केवल बातें ही। जैसे सुकुल बाबू वैसे आप।'' इतना कहकर बिन्दा ने एक ओर थूक दिया और दनदनाता हुआ वहाँ से चला गया। उसके चले जाने के तुरन्त बाद ही स्थिति को संभाल लिया गया।

तब दा साहब ने यह कहा कि मुझे ऐसे उत्साही नौजवान बहुत अच्छे लगते हैं। कम से कम वे अपनी बात को तो स्पष्ट रूप से कह देते हैं। मुझे तो अपनी घरेलू उद्योग योजना के लिए ऐसे ही युवकों की आवश्यकता है। मैं चाहता हूँ कि घरेलू उद्योग योजना को आप ही संभालें, आप लोग ही चलायें। ऐसी योजना के उद्घाटन के लिए मेरी आवश्यकता नहीं है। इसके उद्घाटन के लिए बिसेसर के पिता हीरा से अधिक सही आदमी कोई दूसरा नहीं हो सकता है। पांडेजी चौंके, किन्तु दा साहब ने स्पष्ट किया कि गरीबों का हितैषी तो बिसेसर ही था। जब उसके ही पिता के हाथों यह योजना का उद्घाटन होगा तो उसकी आत्मा को शांति मिलेगी। नारे बोले जाते रहे, पाण्डेजी, दा साहब और हीरा एक ट्रैक्टर में बैठकर जुलूस की शक्ल में घरेलू उद्योग योजना के दफ्तर पहुँच गये। मुख्यमंत्री के फण्ड से निकाले हुए पचास हजार रुपयों का एक चैक हीरा के हाथों से अस्थायी दफ्तर के एक अस्थायी अधिकारी को दिलवाया गया। पांडेजी ने अपने छोटे से भाषण में यह बात साफ कर दी कि विधानसभा में इस योजना के लिए जब बजट पास होगा तब होगा, अभी तो दा साहब ने अपने फन्ड से रुपया निकालकर योजना का शुभारम्भ कर दिया है। चारों ओर हर्ष-ध्वनि फैल गयी और दा साहब जिन्दाबाद के नारे गूँजने लगे। दूसरे ही दिन 'मशाल' अखबार का नया अंक प्रकाशित हुआ, जिसमें दा साहब, उनकी योजना और उनकी धैर्यपूर्वक व्यवहार-पद्धति की प्रशंसा की गयी। उसमें घरेलू उद्योग योजना की भी प्रशंसा की गयी। दा साहब ने जिस चालाकी से काम लिया, उससे उनका प्रभाव बढ़ गया और गाँव वालों की हमदर्दी भी उन्हें प्राप्त हो गयी।

2.10 पुलिस अधिकारियों द्वारा बिसेसर की मौत के संदर्भ में बयान

दा साहब के आदेश से एस.पी. सक्सेना बिसेसर की मौत की असलियत का पता लगाने के लिए सरोहा गाँव पहुँचते हैं। वे नये सिर से छानबीन करते हैं और लोगों के बयान लेते हैं। पहले दिन जोगेसर साहू, महेश बाबू, हीरा और बिन्दा के बयान होने वाले थे। सभी आ गये थे, बिन्दा नहीं आया था। सक्सेना साहब ने पहुँचकर गाँव के वातावरण का अध्ययन किया और पहले बयान लेने के लिए जोगेसर साहू को बुलाया गया। जोगेसर ने अपने बयान में कहा कि ''प्रातः लगभग साढ़े चार-पाँच बजे वह दिशा-फराकात के लिए गया था। तब पुलिया पर एक आदमी को लेटे हुए देखकर उसने उसे सावधान करना चाहा, लेकिन पास जाने पर पता लगा कि यह तो बिसू है और जब उसे जगाने के लिए छुआ गया, तब पता लगा कि वह मर गया है। जोगेसर ने बिसू को सिरफिरा और पागल बताया तथा यह भी कहा कि वह कुछ भी काम-धाम नहीं करता था। वह तो आवारों की तरह हरिजन टोला में घूमा करता था। एस.पी. सक्सेना ने पागल और आवारा शब्द को रेखांकित कर लिया। जोगेसर के मन में यह आया कि वह जोरावर का नाम ले दे, पर किसी भय से उसने ऐसा कुछ नहीं कहा। जोगेसर के बाद महेश शर्मा को बुलाया गया। महेश शर्मा गाँव में वर्ग-संघर्ष और जाति-संघर्ष से सम्बन्धित किसी रिसर्च प्रोजेक्ट पर काम करने दिल्ली से वहाँ आया हुआ था। वह उस गाँव का नहीं था। महेश ने बतलाया कि बिसेसर अधिक भावुक व्यक्ति था, सोचता बहुत था तथा प्रायः परेशान और दुःखी रहा करता था। वह गरीब था और आर्थिक ढाँचे की आलोचना किया करता था। जब गाँव में आगजनी हुई तब उस घटना से तो वह बहुत ही बौखला गया था। वह

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कहा करता था कि पूरे मामले को जान-बूझकर दबा दिया गया है और असली मुजरिम के खिलाफ कुछ नहीं किया गया है। केवल कांस्टेबल को सस्पेंड करने से कुछ नहीं होता है, वह तो निर्दोष था। सक्सेना साहब ने महेश से जानना चाहा कि वास्तव में बिसेसर की परेशानी क्या थी ? महेश ने बताया कि बिसेसर की परेशानी यह थी कि वह मजदूरों का हमदर्द था। वह उनके हित में सोचा करता था और उन पर होने वाले अत्याचारों को सहन नहीं करता था। वह हमसे भी कहा करता था कि आप जैसे पढ़े-लिखे लोग जब तक तमाशबीन बने रहेंगे, तब तक गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा। दिन भर बैठकर कागज पोतते रहना कोई अच्छी बात नहीं है, कुछ करना चाहिए।

थानेदार साहब चाहते थे कि सक्सेना साहब थोड़ा विश्राम कर लें, चाय पी लें, किन्तु सक्सेना साहब अपना कर्त्तव्य निभाना चाहते थे। अत: उन्होंने बयान देने के लिए बिसेसर के पिता हीरा को बुलवाया। हीरा लाठी टेकता हुआ अपने भाई के साथ आ गया। आते समय वह बहुत घबरा रहा था। थानेदार साहब ने तो नहीं, पर सक्सेना साहब ने उसे बहुत तसल्ली दी और ढाँढस बँधाया और कहा कि तुम्हें जो कुछ भी कहना हो, बिना किसी भय के कहो। हीरा बिसेसर की याद करके रोता रहा। सक्सेना साहब ने बीच-बीच में उसको पानी पिलवाया, समझाया और तब फिर बयान लेना शुरु किया। उन्होंने हीरा से बिसेसर की मित्रमण्डली के बारे में पूछताछ की, बिन्दा और उसकी पत्नी रुक्मा के बारे में प्रश्न पूछे तथा उसकी दोस्ती किस-किससे थी, इन सब बातों की जानकारी प्राप्त की। हीरा की बातचीत से यह पता लगा कि उसका लड़का पढ़ा-लिखा था, बड़ी-बड़ी ऊँची-ऊँची बातें करता था, वह सबका हमदर्द था और उन्हें हमेशा यही समझाया करता था कि उन्हें अपने अधिकार के लिए संघर्ष करना चाहिए और अत्याचार सहन नहीं करना चाहिए। हीरा ने यह भी बता दिया कि बिसेसर सोचता बहुत था, विचारों में खोया-खोया-सा रहता था और कोई ऐसा काम करना चाहता था, जिससे गरीबों का हित हो सके। पहले दिन केवल इन्हीं लोगों के बयान हुए किन्तु दूसरे दिन बिन्दा का बयान भी लिया गया।

पहले दिन तो बिन्दा आया नहीं था। दूसरे दिन जब वह बयान देने के लिए आया तब उसके साथ उसकी पत्नी रुक्मा भी थी। बिन्दा का बयान लेते समय सक्सेना साहब ने सभी को कमरे से बाहर कर दिया था। यहाँ तक कि थानेदार को भी कमरे से बाहर भेज दिया था। बिन्दा निर्भीक व्यक्ति था, उसकी आवाज बड़ी कड़क थी और जब वह बोलता था तब उसकी आँखों के डोरे सुर्ख हो जाते थे और कनपटी की नसें फड़कने लगती थीं। वह पुलिस से बिल्कुल नहीं डरता था। वह इतना निर्भीक था कि सक्सेना साहब के धमकाने पर भी नहीं डरा। उसने यहाँ तक कह दिया कि हमारे यहाँ के थानेदार तो जोरावर की रखैल जैसे हैं। अपने बयान में बिन्दा ने यह भी बताया कि बिसेसर ने आत्महत्या नहीं की है, उसे मरवाया गया है, उसकी हत्या की गयी है। बिन्दा ने गाँव में जोरावर और सरपंच के आतंक का उल्लेख किया और बताया कि जिस दिन उसकी मृत्यु हुई है, उस दिन उसने शाम को आठ बजे पुत्तन की दुकान पर चाय पी थी। उस समय दो अजनबी लोग भी वहाँ थे, किन्तु थानेदार ने पुत्तन का बयान नहीं लिया। बिन्दा के बयान से यह सिद्ध हो गया था कि बिसेसर ने आत्महत्या नहीं की है, बल्कि उसकी हत्या की गयी है ओर उसकी हत्या के पीछे कुछ बड़े लोगों का हाथ है। सक्सेना साहब ने बड़ी ईमानदारी से सारे बयान लिये और इसके आधार पर एक रिपोर्ट तैयार की। उन्होंने पुत्तन का बयान भी लिया।

इसी दौरान राव साहब और चौधरी साहब के प्रसंग के विवेचन के आधार पर पांडेजी यह स्पष्ट करते हैं कि राव और चौधरी अपने लिए कोई महत्त्वपूर्ण मंत्रालय चाहते हैं। यदि उन्हें कोई महत्वपूर्ण मंत्रालय दे दिया जाये तो वे दा साहब का साथ दे सकते हैं। दा साहब ने यह समाचार जानकर आश्चर्य प्रकट किया, परन्तु पांडेजी ने यह भी बता दिया कि मैंने उन लोगों को आपसे मिलने के लिए नौ बजे का समय दे दिया है। अब आपको तो कुछ न कुछ देना ही होगा। पांडेजी यह भी बतलाते हैं कि सक्सेना ने जो बयान लिये हैं, वे भी शुभ संकेत नहीं दे रहे हैं, उससे सारे गाँव का वातावरण खराब हो गया है। बिन्दा कुछ प्रमाण इकट्ठे करके दिल्ली जाने की सोच रहा है। चुनाव के समय यदि वे सारी बातें उभरेंगी तो उसका बुरा असर पड़ेगा। इसके बाद पांडेजी ने यह महत्वपूर्ण बात भी दा साहब के सामने रख दी कि चुनाव में खुद जोरावर खड़ा हो रहा है। इस समाचार को सुनकर दा साहब चौंक पड़े, क्योंकि उन्हें इसकी आशा न थी। दा साहब ने मन ही मन हिसाब लगा लिया कि जोरावर के खड़े होने से स्थिति बिगड़ जायेगी, फिर वह अपने पैंतीस प्रतिशत वोटों के बल पर तो जीतने से रहा। दा साहब ने कोई चिन्ता व्यक्त नहीं की, परन्तु यही कहा कि बस, वे तो लखन का ध्यान रखें और चुनाव माहौल बनाये रखें।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दा साहब ने ठीक नौ बजे अपने घर के दफ्तर में ही राव और चौधरी से भेंट की तथा बिना किसी भूमिका के एकदम सीधे ही बात शुरु की कि आप पाँच मंत्रियों ने त्यागपत्र देने का फैसला किया था, परन्तु उनमें से दो ने तो लिखित पत्र भेजकर अपना उक्त विचार त्याग दिया तथा उन्होंने उनके पात्र की ओर इशारा कर, अपनी नजरें राव के चेहरे पर गड़ाते हुए पूछा कि अब आप लोगों का क्या इरादा है? इस बात की कोई विशेष प्रतिक्रिया राव के चेहरे पर नहीं हुई, क्योंकि वह जानता था कि बापट एवं मेहता ने अपना कदम वापस खींच लिया है। उसने जानना चाहा कि उन्हें क्या दिया गया है।पर दा साहब ने क्रुद्ध होकर कहा ''लेन-देन की बात तो शायद आप सब लोग करने आये हैं, कीजिए।'' राव की आँखों की चमक बुझने-सी लगी और चौधरी उसका मुँह देखने लगा तथा किसी प्रकार साहस बटोरकर राव ने अपने विचार प्रकट करने का प्रयत्न किया, लेकिन दा साहब ने उसका सारा जोश ठण्डा कर दिया। उन्होंने बतलाया कि लोचन को मंत्रिमण्डल से अलग किया जा रहा है और यदि राव चाहे तो उसे शिक्षामंत्री का पद दिया जा सकता है तथा चौधरी जहाँ हैं, फिलहाल वहीं रहें, क्योंकि चुनाव के पहले मैं कोई परिवर्तन नहीं कर रहा। उन्होंने यह बात कुछ इस तरह कही कि उसमें समापन के साथ-साथ दोनों के लिए उठने का संकेत भी था और चौधरी का चेहरा तो एकदम ही बुझ गया तथा राव ने कहा कि ''कल तक सोच कर जवाब दूँगा।'' दोनों के जाने के बाद दा साहब ने अप्पा साहब को फोन किया कि लोचन की बर्खास्तगी के लिए राज्यपाल को पत्र भेज रहा हूँ और उनके एक बार पुनर्विचार करने की इच्छा के सम्बन्ध में दा साहब ने अन्तिम निर्णय सुना दिया कि मेरे लिए अनुशासन भंग करने वाले को साथ लेकर चलना मुश्किल होगा।

उपन्यास के अन्त में जोरावर दा साहब की कोठी पर पहुँचता है। दा साहब उसे देखकर आश्चर्य में डूब जाते हैं और बिना किसी झिझक के जोरावर के सामने अपनी बात को स्पष्ट करने लगते हैं। ठण्डी और सख्त आवाज में दा साहब ने कहा ''उधर बिसू ने आगजनी के दो प्रमाण जुटाये थे, उन्हें लेकर बिन्दा दिल्ली जाने वाला है, इधर सक्सेना ने सारे प्रमाण जुटा लिये हैं और तुम्हें चुनाव लड़ने की सूझ रही है। विधानसभा की जगह मुझे डर है कि कहीं तुम्हें जेल.....।'' जोरावर ने स्पष्ट किया कि वह तो बिना आपसे पूछे चुनाव में खड़ा नहीं होने वाला था और उस दिन भोजन करते समय भी दा साहब ने बातचीत के विषय को फाइल से ज्यादा इधर-उधर सरकने ही नहीं दिया तथा स्थिति की सारी भयंकरता को जोरावर के सामने खुलकर स्पष्ट किया। खाना खाकर चलने से पहले जोरावर ने दा साहब से फिर कहा कि आप यह मामला खुद देख लीजियेगा और यह आपकी जिम्मेदारी है कि हमारे साथ ऐसा-वैसा कुछ नहीं होना चाहिए। दा साहब ने उसे सख्त हिदायत दी कि तुम कुछ मत करना और उसके जाने के पश्चात् फाइल लेकर अपने निजी कमरे में आकर कुछ देर तक उसे उलट-पुलट कर देखते रहे। कुछ देर पश्चात् उन्होंने फोन पर रत्ती को आदेश दिया कि डी.आई.जी. सिन्हा को कह दिया जाए कि सुबह आठ बजे घर पर ही मिल लें।

दा साहब डी.आई.जी. से बात करने के लिए अपने घरेलू दफ्तर में अपने नियम के विरुद्ध सवेरे आठ बजे ही आकर बैठ गये थे। डी.आई.जी. आठ बजे आ गये और दा साहब ने बताया कि उन्होंने फाइल देख ली है। सक्सेना के लिए हुए बयान और सिन्हा की रिपोर्ट देख ली है। सिन्हा को उम्मीद थी कि दा साहब से उसे कोई प्रशंसात्मक टिप्पणी सुनने को मिलेगी, किन्तु दा साहब ने बात सक्सेना से शुरु करते हुए कहा कि पुलिस वालों में जैसी अन्तर्दृष्टि, व्यवहारकुशलता और व्यक्तित्व का ओज होना चाहिए वैसा सक्सेना में है नहीं। दा साहब ने यह भी कहा कि जब भी कभी सक्सेना को कोई महत्त्वपूर्ण काम सौंपा गया है तब उसका परिणाम असन्तोषजनक रहा है। इसी कारण उसे प्रमोशन के हर मौके पर इधर-उधर तबादला करके भेजा जाता है। इस बार भी सक्सेना ने सारोहा में सन्तोष दूर करने की जगह अपने व्यवहार से असन्तोष ही अधिक फैलाया है। यह कहकर दा साहब ने फाइल, जिसमें सक्सेना की रिपोर्ट थी, सिन्हा के सामने सरका दी और कहा कि ''प्रान्त की राजधानी में एस.पी. का पद कम महत्त्व का तो नहीं होता....तुम देख लेना।'' इसके बाद बिसेसर वाली फाइल के पृष्ठ उलटते हुए दा साहब ने स्वीकार किया कि तुम्हारी रिपोर्ट मेहनत से तैयार की गयी लगती है, पर जब मैंने सारे मामले का बहुत ध्यान से अध्ययन किया, तब मैं इसी नतीजे पर पहुँचा कि तुम्हारे मन में निष्कर्ष पहले से ही था और रिपोर्ट तुमने बाद में तैयार की। दा साहब ने सिन्हा का यह मत स्वीकार नहीं किया कि बिसेसर ने आत्महत्या की है। अत: कहा कि ''मैंने खुले दिमाग और तटस्थ दृष्टि से इस मामले पर विचार किया है तथा मेरा यही कहना है कि चतुर अपराधी ही सबसे अधिक आक्रामक मुद्रा अपनाता है। घटना वाले दिन बिन्दा का गाँव से अनुपस्थित होना और घटना के बाद उसका अतिरिक्त रूप से आक्रामक रवैया सन्देह के लिए बहुत गुंजाइश नहीं रह जाती?'' दा साहब के विचार सुनकर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सिन्हा को आश्चर्य नहीं हुआ और वे उनकी ओर बेझिझक देखते रहे तथा दा साहब ने पुनः कहा कि ''आश्चर्य है, सक्सेना या आपको यह बात सूझी तक नहीं। खैर, एक बार फिर सारे मामले पर नजर डालिए – खुले दिमाग और पैनी नजर से। मुझे बिसेसर के हत्यारे को पकड़ना है.....वचन दिया है मैंने गाँव वालों को ओर अब यह काम मैं आप पर छोड़ रहा हूँ।'' यह कहकर दा साहब बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए वहाँ से चल दिये और सिन्हा कुछ देर तक चुपचाप और विस्मय में खड़े रहे।

दा साहब कुशल राजनीतिज्ञ थे। वे जनता को भी तुष्ट करना चाहते थे और अपना लक्ष्य भी पूरा करना चाहते थे। उन्होंने ये दोनों काम सिन्हा साहब को संकेत से समझा दिये थे। परिणाम मनोनुकूल निकला। स्थिति यह हो गयी कि 'मशाल' नामक अखबार का नया अंक निकला। दा साहब ने उसे बड़े संतोष के साथ देखा और अनुभव किया कि गतसप्ताह में जितनी घटनाएँ घटित हुई हैं, उन सभी को अखबार में बड़े जिम्मेदारी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। मुख्य पृष्ठ पर असन्तुष्टों द्वारा मंत्रिमण्डल गिराने के प्रयास की ओर असफलता का उल्लेख कर लोगों की स्वार्थपरता एवं पदलोलुपता की कड़ी आलोचना की गयी है। अखबार में यह भी प्रकाशित हुआ कि लोचन बाबू की बर्खास्तगी को दा साहब का उचित, साहसिक एवं अभिनन्दननीय कदम कहा जा सकता है। 'मशाल' के बीच के पृष्ठ पर सुकुल बाबू की रैली का समाचार भी छपा था, किन्तु कोई तस्वीर नहीं थी। इतने पर भी यह स्वीकार अवश्य किया गया था कि इस प्रान्त के इतिहास में शायद ही इतनी बड़ी रैली कभी हुई हो तथा इसके लिए गृह-मंत्रालय एवं डी.आई.जी. पुलिस को धन्यवाद भी दिया गया था। 'मशाल' में तीसरा प्रमुख समाचार था ''दोस्ती की आड़ में बिसू की हत्या करने वाला बिन्दा गिरफ्तार'' और बड़े सनसनीखेज तथा रोचक ढंग से विस्तृत वर्णन करते हुए डी.आई.जी. की प्रशंसा की गयी थी तथा बाद में बधाई देते हुए यह सूचना भी प्रकाशित हुई थी कि आई.जी. के रिक्त स्थान को डी.आई.जी सिन्हा ने संभाल लिया है। इसके पश्चात् सरोहा चुनाव क्षेत्र में बढ़ती हुई सरगर्मियों के अनेक रोचक विचार देकर अन्तिम पृष्ठ पर तीन तस्वीरों के साथ घरेलू उद्योग योजना की तेजी से बढ़ती हुई गतिविधियों के उल्लेख के साथ-साथ योजना की प्रशंसा की गयी थी। दा साहब ने अखबार के सारे समाचारों को पढ़ा और उनके चेहरे पर संतोष की भावना के साथ-साथ एक दिव्य आभा भी चमक उठी। इसी बीच दा साहब की पत्नी जमना ने खुद ही नाश्ते की ट्रे लेकर प्रवेश किया और 'मशाल' अखबार की अत्यधिक प्रशंसा की।

उपन्यास के अन्त में यह स्थिति स्पष्ट हो जाती है कि हरिजनों के वोट लखन को मिलेंगे। लखन से पार्टी इत्यादि करने की अपील की जाती है, किन्तु जोरावर यह कहकर पार्टी का आयोजन खुद ही करने लगता है कि यह तो सूम है, कुछ नहीं करेगा। आज का खाना-पीना हमारी चौपाल पर होगा। बिन्दा की गिरफ्तारी और सक्सेना के तबादले की सूचना से जोरावर न केवल निश्चिन्त था, अपितु बेहद उत्साहित भी था। चुनाव की चर्चा में पांडेजी बताते हैं कि बिन्दा की गिरफ्तारी से पाँच प्रतिशत वोट कट जायेंगे, किन्तु जोरावर उनकी इस चिन्ता को भी यह कहकर दूर कर देता है कि ''तुम फिकर नहीं करो पांडेजी, जोरावर के रहते हुए कुछ भी गलत नहीं हो सकता। हमें मालूम है सुकुल बाबू को वोट देने वाले कौन हैं? तुम क्या सोचते हो, हमारे रहते वे लोग बूथ पर पहुंच पायेंगे? जोरावर के राज में ही वोट दे पायेंगे, जिन्हें जोरावर चाहेगा।'' अपने आई.जी. बनने की खुशी में सिन्हा एक शानदार पार्टी का आयोजन करते हैं, जिसमें बड़े-बड़े सरकारी अफसर, वकील और डॉक्टर शामिल होते हैं। गर्मागर्म खाने की महक, प्लेटों और चम्मचों की खनखनाहट, बातों, कहकहों और ठहाकों से सारा वातावरण महक उठता है। दा साहब 'मशाल' के सम्पादक दत्ता बाबू को शाबाशी देते हैं और उन्हें बधाई देते हुए उनके अखबार के कागज के डबल कोटे का परमिट भी दे देते हैं। दत्ता बाबू इससे अपने को जमीन से डेढ़ इंच ऊपर महसूस करते हैं। वे सारे प्रेस में मिठाई बाँटते हैं और पूरे उत्साह के साथ अपना अखबार निकालने लगते हैं। उधर सक्सेना को सस्पेंशन ऑर्डर मिल जाता है।

'महाभोज' उपन्यास के अन्त में यह संकेत दिया गया है कि रेल के सैकिण्ड क्लास के डिब्बे में सक्सेना की बगल में बैठी हुई रुक्मा अपने घुटनों में सिर दिये हुए सिसक रही है। सक्सेना की गोद में रखा हुआ ब्रीफकेस आगजनी और बिसेसर की मौत के प्रमाणों से भरी हुई फाइलों से ठुँसा हुआ है। इसी घटना के साथ उपन्यास समाप्त हो जाता है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि 'महाभोज' उपन्यास की सम्पूर्ण कथा आकर्षक, कौतूहलपूर्ण, सरल और स्पष्ट है। पूरे उपन्यास का कथानक राजनीतिक दाँव-पेचों और चालों से भरा हुआ होने के कारण अधिक रोचक बन पड़ा है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2.11 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

"आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गये, पर शहरी गाड़ियों से उठने वाली धूल के बादल कई दिनों तक मँडराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रूँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े-बड़े आश्वासन दिये। अख़बार नबीस आये तो दनादन तो उस राख के ढेर की ही फोटो खींच कर ले गये। दूसरे दिन अखबार में छाप कर घर-घर पहुँचा भी दिया – इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे ख़ुमारी की अँगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथा पढा, देखा। देखते ही विषाद की गहरी छाया पुत गई। चाय का घूँट भी कड़वा हो गया शायद। ढेर सारी सहानुभूति और दुःख से लिपट कर निकला – "औह, हॉरिबल.....सिम्पली इनह्यूमन! कब तक यह सब और चलता रहेगा ? त,....त,....त,....। और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँव वालों जिन्दगी की तरह अखबार भी रद्दी के ढ़ेर में जा पड़ा।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' से अवतरित है, जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने सरोहा गाँव के हरिजन टोला की झौंपड़ियों में लगी आग की स्थिति, नेताओं और पत्रकारों के आवागमन तथा उनकी दिखावटी सहानुभूति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या – जब सरोहा गाँव की हरिजन बस्ती में आग लगी और वह खबर जब शहर में पहुँची तो वहाँ से नेताओं, पत्रकारों और मंत्रियों का तांता-सा लग गया। एक ओर आग लगने से कच्ची बस्ती का धुँआ आसमान में घुमड़ने लगा और दूसरी ओर इन विशिष्ट व्यक्तियों के आगमन पर इनकी गाड़ियों से उत्पन्न धूल के बादल रह-हर मँडराने लगे। आग का धुँआ तो एक दिन में ही छँट गया किन्तु शहरी गाड़ियों से उठने वाले धूल के बादल कई दिनों तक मण्डराते रहे। अर्थात् आग तो शान्त हो गई किन्तु नेताओं व अन्य शहरीयों का आवागमन गाँव में जारी रहा। निश्चित ही इस दुर्घटना का प्रभाव शहर के लोगों पर भी पड़ा था। इन शहरी नेताओं, मंत्रियों और अखबार नवीसों ने इस घटना पर संवेदना प्रकट की। उनकी आँखें कुछ नम हुईं और गले भी थोड़े रुँध गये। आने वाले लोगों ने सरोहा गाँव की कच्ची बस्ती के लोगों को अनेक प्रकार के आश्वासन देकर उनका ढाँढस बँधाया। पत्रकारों ने जली हुई बस्ती के राख के ढेरों के अनेक प्रकार से फोटो खींचे और अलगे दिन उसे अखबार की सुर्खियों में प्रकाशित कर दिया। इन समाचारों को जब लोगों ने पढ़ा तो इनकी अलग-अलग मानसिक प्रतिक्रियाएँ हुईं। किसी ने प्रातःकालीन खुमारी के साथ अंगड़ाइयाँ लेते हुए इस घटना को पढ़ा तो किसी ने चाय की चुस्कियों के साथ दुःख जाहिर किया। किसी ने इसे अमानवीय घटना बताकर वेदना प्रकट की तो किसी ने इस घटना को वेदनायुक्त बताया कि उनकी चाय का स्वाद ही बिगड़ गया। अलग-अलग अंदाज में लोगों से दुःख और सहानुभूति के शब्दों से अपनी संवेदनाएँ व्यक्त की। कुछ लोग ऐसे भी थे जो इस घटना को पढते ही अवाक् रह गये और केवल इतना ही कहा कि यह सब और कब तक इसी तरह से चलता रहेगा। किन्तु जैसा कि हर रोज होता है वह अखबार और उसकी वेदना युक्त घटना खबर उसी प्रकार रद्दी के ढेर में गिर गई जैसे कि गाँव वालों की जिन्दगी रद्दी की तरह भावहीन चलती रहती है और कुछ ही समय बाद लोग इस खबर को भूल गये तथा रोजमर्रा की गतिशील गतिविधियों में बह गये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण कच्ची बस्ती की अग्नि दुर्घटना और विशिष्ट लोगों के वहाँ आगमन को बहुत ही सजीव ढंग से चित्रित किया है।

2. मंत्रियों व अन्य नेताओं की सहानुभूति को जो कि कृत्रिम व दिखावटी थी उसे व्यंग्यात्मक शिल्प में प्रस्तुत किया है।

3. यह भी स्पष्ट होता है कि घटना चाहे कितनी ही संगीन व दर्दनाक हो, वक्त निकलने के साथ साथ भुला दी जाती है।

4. अवतरण की भाषा यथार्थपरक है।

(2)

"बहुत आवेश में हो। दोष तुम्हारा नहीं, उम्र का है।" जरा भी विचलित हुये बिना दा साहब ने कहा और चुप हो गये। लखन टुकुर-टुकुर उनका चेहरा ताक रहा था। इस समय वह स्थिति का विश्लेषण चाहता है, अपनी उम्र और आवेश का नहीं।

आवेश राजनीति का दुश्मन है। राजनीति में विवेक चाहिए और धीरज। प्रवचननीय मुद्रा में दा साहब ने जीवन के अनुभवों से निचुड़ा हुआ वाक्य उछाला, फिर कुछ क्षण रुककर हौंसला बँधाते हुए बोले "आयेगा, पदपर बैठोगे तो पद की जिम्मेदारी स्वयं सब सिखा देगी।"

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' नामक उपन्यास से अवतरित है, जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी में दा साहब और लखनसिंह की वार्तालाप को प्रस्तुत किया है।

व्याख्या – लखनसिंह दा साहब से कहता है कि सरोहा गाँव में हुई आगजनी की घटना का अविलम्ब निपटारा होना चाहिये किन्तु दा साहब का कहना है कि क़ानून अनुमान पर नहीं बल्कि प्रमाण पर चलता है और पुलिस सबूत जुटाने में लगी हुई है। चूँकि लखन दा साहब का खास चमचा था इसलिये वह उनको आगाह भी करता है कि यदि हरिजन बस्ती की घटना में उन्होंने हस्तक्षेप नहीं किया जो हरिजनों के बहुसंख्यक वोट भी उनके हक में से चले जायेंगे। लखनसिंह आत्मग्लानि से भी भरा था, किन्तु दा साहब ने संयम और धैर्य का दामन थाम रखा था। लखन दा साहब से उस समय असंतुष्ट था और आवेश में भी। दा साहब ने लखन को क्रोध में देखकर उसे समझाना चाहा और कहने लगे कि ''आज तुम आवेश में हो और आवेश के रहते हुए मनुष्य का दिमाग सोचने-समझने में असमर्थ हो जाता है, आवेश में कभी भी कोई काम नहीं करना चाहिए। आवेश और क्रोध दोनों ही ठीक नहीं हैं। वैसे इस आवेश में तुम्हारा दोष नहीं है यह तो तुम्हारी उम्र का तक़ाजा है।'' दा साहब लखन को समझाते हुए अपने संयम में रहते हैं। उन्होंने संक्षेप में ही लखन को समझाने का प्रयास किया और चुप हो गये वह भी उनका चेहरा देखता रहा और स्थिति का विश्लेषण करता रहा। वैसे लखन यह सब सुनने के मूड में नहीं था। उसे इस समय अपनी उम्र और आवेश की कोई टिप्पणी नहीं सुननी थी। वह तो इस घटना को चुनाव से जोड़कर उसकी स्थिति का सही विश्लेषण सुनना चाहता था।

दा साहब उस समय अधिक कुछ नहीं बोले, बस उसके आवेश को शान्त करते हुए इतना ही कहा कि ''तुम इस समय आवेश में हो और आवेश राजनीति का पक्का दुश्मन होता है। जिस किसी को राजनीति में सफलता प्राप्त करनी हो उसे आवेश में नहीं रहना चाहिये क्योंकि राजनीति और आवेश का कोई मेल नहीं है। आवेश में विवेक कुण्ठित हो जाता है और धैर्य और अनुकूल नहीं रहता है। दा साहब ने अपने अनुभवयुक्त विचार व्यक्त करते हुए लखन को आश्वस्त किया और कहा कि ''समय आने पर तुममें भी संयम आयेगा जब तुम किसी अच्छे पद पर बैठोगे तब पद की जिम्मेदारी तुम्हें संयम भी सिखा देगी, धैर्य भी प्रदान करेगी और तुम्हारे व्यक्तित्व में एक प्रकार का विश्वास भी जाग्रत होगा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब के संतुलित और संयमित व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति हुई है।

2. लखन का उतावलापन और आवेशजनित व्यवहार में उसके युवकोचित मानसिकता प्रकट हुई है।

3. दा साहब का अनुभव स्पष्ट होता है।

4. अवतरण की भाषा परिष्कृत है और परिस्थिति तथा प्रसंग के अनुकूल है।

(3)

''स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं है कि विवेक को ही खा जाये। अख़बारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिये। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुँधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिये आदमी में। बड़ी हिम्मत और बूता चाहिये उसके लिये। इससे जो कतराता है वह दूसरों को नहीं अपने को ही छलता है।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' से अवतरित है जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने तीन दिन बाद होने वाली सुकुलजी की मीटिंग के मुद्दे पर होने वाली दा साहब और लखनसिंह के बीच वार्ता का स्पष्टीकरण किया है।

व्याख्या – लखनसिंह का यह मानना है कि तीन दिन बाद सुकुलजी की सरोहा गाँव में मीटिंग होने वाली है और सुकुल बाबू का भाषण जनता को सम्मोहित करने वाला है, यदि दा साहब इसी प्रकार संत मुद्रा में बैठे रहे तो उनकी पराजय सुनिश्चित है। बातों ही बातों में 'मशाल' नामक अखबार का भी मुद्दा छेड़ दिया जाता है जिस पर दा साहब कहते हैं कि ''तुम अखबार के खिलाफ जो भी कुछ बोल रहे हो वह गलत है, क्योंकि अखबार वाले तो वही छापते हैं, जो देखते हैं। अखबार के विरुद्ध जो तुम्हारी धारणा है वह मात्र तुम्हारा स्वार्थ है जो बढ़कर बोल रहा है।'' दा साहब ने लखन को समझाते हुए कहा कि ''देखो अपने स्वार्थ को इतनी छूट मत

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दो कि वह तुम्हारे विवेक को ही खा जाये।'' स्वार्थ परायण व्यक्ति विवेक से काम नहीं लेता है और विवेक स्वार्थ के सामने परास्त हो जाता है। दा साहब कहते हैं कि तुम 'मशाल' नामक अखबार पर अंकुश जगाने की बात कह रहे हो, वह उचित नहीं है, क्योंकि अखबारों को तो स्वतंत्र होना ही चाहिये। उन पर अंकुश लगाना ठीक नहीं है।

दा साहब लखन को समझाते हुए कहते हैं कि ''तुम यह क्यों भूल जाते हो कि अखबार ही हमारे सभी क्रियाकलापों का, हमारी बातों का वास्तविक दर्पण होते हैं।'' दर्पण कभी झूठ नहीं बोलता है। इसी प्रकार अखबार रूपी दर्पण पर अंकुश लगाने का कोई औचित्य नहीं है। दा साहब का मानना है कि दर्पण को स्पष्ट रखो, उस पर धूल मत जमने दो। व्यक्ति में फिर इतना साहस भी होना चाहिए कि वह दर्पण में अपनी छवि को देख कर वास्तविकता से मुक़ाबला कर सके। वास्तव में इसके लिये शक्ति व साहस दोनों की आवश्यकता होती है। अखबार दर्पण की भाँति सच्चाई जाहिर करता है और जो व्यक्ति इस सच्चाई से कतराता है, वह एक प्रकार से अपने आप को छल रहा है। अत: अखबारों की स्वतंत्रता पर रोक लगाने की बात को कभी मन में भी नहीं लाना चाहिये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में अखबारों की पूर्ण स्वतंत्रता पर मुख्यमंत्री दा साहब जैसे व्यक्ति ने अपना पूर्ण समर्थन व्यक्त किया है।

2. अखबारों को दर्पण बताकर मनुष्य को अपनी सच्चाई से न कतराने की बात कही है।

3. अवतरण में गहरी व्यंजना देखी जा सकती है, जो लेखिका की कला कौशल की प्रतीक है।

4. अवतरण की भाषा सरल और सहज है, साथ ही इसमें लाक्षणिकता और काव्यात्मकता भी पर्याप्त देखी जा रही है।

(4)

''आज पहली बार लखनसिंह को लग रहा है कि दा साहब को पूरी तरह जानना मुश्किल है। जितना वह जानता है, उस हिसाब से वे इतने निर्लिप्त नहीं रह सकते हैं। सारी घटना से.....जैसे वे इस समय दिखाई दे रहे हैं। और यदि नहीं हैं तो उसे कुछ बताते क्यों नहीं ? उनके चुनाव के दिनों में कैसे जान झोंककर काम किया था उसने। आज जब उसका मौका आया तो गाँधी बाबा बनकर बैठ गये।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' उपन्यास से अवतरित है, जिसमें लेखिका ने लखन की मानसिकता और दा साहब की गम्भीरता का वर्णन किया है।

व्याख्या – सिरोहा गाँव में बिसेसर की मृत्यु और हरिजन बस्ती में हुई आगजनी की घटनाओं से लखनसिंह निराश हो जाता है वह हताश भाव से दा साहब की अनुकूल प्रतिक्रिया का इन्तजार कर रहा है किन्तु दा साहब उसे बार-बार यही समझा रहे हैं कि पद के प्रलोभन में इतने अविवेकी मत बनो कि अच्छे-बुरे का निर्णय लेने में भी समर्थ न रहो। यह सब उचित नहीं है। दा साहब के ऐसे व्यवहार और सिद्धान्त पूर्ण तर्कों को सुनकर लखन सोचता है कि दा साहब को समझना बड़ा मुश्किल है। यदि वह यह जानता है कि मैंने दा साहब को अच्छी प्रकार से समझ लिया है, तो यह उसका भ्रम है। वह यह भी अच्छी तरह से जानता है कि उनके चुनाव क्षेत्र में आगजनी और हत्या जैसी घटना घटित हो गयी है, फिर भी वे उसके प्रति निश्चिन्त बने बैठे हैं यह जानते हुए भी कि उनकी यह निर्लिप्ति उन्हें हरा भी सकती है। ऐसा नहीं है, निश्चित ही दा साहब के मन में इन सबके प्रति हलचल भी अवश्य हो रही होगी भले ही वे संत स्वभाव बन कर बैठे हैं। लखन सोचता है कि मैंने उन्हें पहचाना नहीं है, तो वे अपनी सारी स्थिति बताते क्यों नहीं हैं। वह यह भी सोच रहा है कि उसने उनके चुनाव के दौरान अपनी जान झोंक कर उनके साथ काम किया किन्तु जब आज स्वयं मेरी बारी आई तो उनकी हर बात में सिद्धान्त, उसूल, आदर्श और न जाने क्या-क्या सामने आ रहे हैं और गाँधी बाबा बनकर धैर्य, संयम, विवेक आदि का पाठ पढ़ाने बैठे हुए हैं जबकि लखनसिंह उस समय इस प्रकार की बातें सुनने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं है। वह चाहता है कि इस समय केवल चुनाव की गोटी बिठाने वाली बात कही जाये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में लेखिका ने दा साहब के गंभीर और निर्लिप्त व्यक्तित्व को उजागर किया है।

2. लखनसिंह की चुनाव के प्रति चिन्ताजनक स्थिति और युवा मन की स्थिति को प्रकट किया गया है।

3. अवतरण की भाषा सहज, सरल और व्यंग्यात्मक है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(5)

"दा साहब केवल यह बात कहते ही नहीं, अमल में भी लाते हैं। उनके पूरे व्यक्तित्व में, उनकी हर बात और हर काम में एक जबरदस्त ठहराव है और इस ठहराव की वजह से ही वे शायद कुर्सी पर ठहरे हुए हैं, वरना पिछले दस महिनों में विरोधियों ने और उनके अपने दल के असंतुष्ट लोगों ने जैसी-जैसी तिकड़में की हैं कभी भी कलामंडी खा गये होते।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' उपन्यास से अवतरित है जिसमें लेखिका ने मुख्यमंत्री दा साहब के गम्भीर व्यक्तित्व और पदानुकूल चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्या – जब लखनसिंह सिरोहा गाँव में हुई दुर्घटनाओं के संदर्भ में उचित कार्यवाही के लिये दा साहब को उत्तेजित करता है और अपने मन में उत्पन्न तीव्र विचारों की पुष्टि करता है तो दा साहब उसे उत्तेजित न होने की प्रेरणा प्रदान करने वाली शिक्षा देते हैं जो लखन को कतई भी स्वीकार नहीं होती है।

वैसे दा साहब के व्यक्तित्व में यह खूबी है कि वे केवल बात ही नहीं कहते अपितु अमल भी करते हैं। और यह गुण स्वाभाविक भी है कि दा साहब जैसा कुशल राजनीतिज्ञ और मुख्यमंत्री पद पर आसीन व्यक्ति को यह आवश्यक भी है कि वह हर बात को सोच समझकर कहे और जो भी कहे उस पर अमल भी करे। दा साहब हर काम को पूर्ण सोच समझ कर अच्छे-बुरे की तुलना कर प्रारम्भ करते हैं। वैसे दा साहब के कार्य की शैली में एक जबरदस्त ठहराव है। और उनके व्यक्तित्व की इसी विशेषता के कारण वे पिछले दस सालों से मुख्यमंत्री जैसे राज्य के सर्वोच्च पद पर टिके हुए हैं। अगर दा साहब भी अपने निर्णयों में जल्दबाजी करते या लखन की तरह उत्तेजना में अविवेकी हो जाते तो वे आज तक इस कुर्सी पर टिकनहीं पाते। क्योंकि उनके अपने असंतुष्ट नेताओं और विपक्षी पार्टी के अनेक कुर्सी हिला देने वाले पैंतरों की वजह से वे भी कभी के उखड़ गये होते।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब के गम्भीर व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है।

2. राजनीति में कदम रखने के साथ व्यक्ति को एक कुशल और तीक्ष्ण बुद्धि वाला राजनीतिज्ञ बनना आवश्यक है, को भी स्पष्ट किया है।

3. भाषा सरल और दा साहब के पद के अनुरूप व्यक्तित्व को उजागर करने वाली है।

(6)

"देखो भाई! मेरे लिये राजनीति धर्मनीति से कम नहीं है। इस राह पर अगर मेरे साथ चलना है तो गीता का उपदेश गाँठ बाँध लो – निष्ठा से अपना कर्त्तव्य किये जाओ, बस! फल पर दृष्टि मत रखो।" फिर एक क्षण ठहर कर पूछा, "पढ़ते हो या नहीं? पढ़ा करो। चित्त को बड़ी शांति मिलती है।"

लखनसिंह का मन हुआ कि उठाकर कोई ऐसा वजनी जवाब दे कि पन्ने-पन्ने बिखर जायें गीता के। अपने चुनाव के दिनों में कैसे हाय तौबा मचा रखी थी। जीत गये तो अब गीता सूझ रही है। पर जब्त कर गया। ढिठाई भले ही करले, अशिष्टता करने की हिम्मत आज भी नहीं है।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' उपन्यास से अवतरित है जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने लखनसिंह और दा साहब के बीच हुई वार्ता और दोनों की स्वाभाविक स्थिति को प्रकट किया है।

व्याख्या – दा साहब अपने मुँह लगे व्यक्ति लखनसिंह को समझाते हुए कहते हैं कि 'राजनीति को कभी भी गलत नीति मत बनाओ। मेरे लिये तो राजनीति एक उच्च कोटि की धर्मनीति है। तुम्हें विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। यदि गाँव की जनता सुकुल बाबू को अपना वोट देती है तो मैं ही सबसे पहले उनका स्वागत करूँगा और वह स्वागत जनता का होगा क्योंकि मेरे लिये जनता का महत्त्व है। जब लखन को दा साहब की बात पसन्द नहीं आई तो वह बीच में ही उनकी बात काटने लगा किन्तु दा साहब थे एक खेले हुए खिलाड़ी। उन्होंने लखन को अवसर ही नहीं दिया और वह अपनी बात जुबान से निकाल ही नहीं पाया। दा साहब एक क्षण के लिये भी विघटित नहीं हुए। उन्होंने अपनी आवाज में स्नेह मिश्रित कर लिया और समझाते हुए कहने लगे कि यदि "राजनीति को धर्मनीति मान कर इस राहपर चलना है तो गीता के उपदेश की गाँठ बाँध लो और मेरे अनुसार बताये गये मार्ग पर चलोगे तो लाभ में रहोगे। मैं रोजाना गीता पढ़ता हूँ गीता के उपदेश अमृत तुल्य हैं। उनका अनुसरण करना चाहिए। "कर्मण्ये

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वाधिकारस्थे मा फलेषु कदाचिन'' अर्थात् निरन्तर कर्म करते रहो, फल की इच्छा कभी भी मत करो। इतना कहने पर दा साहब क्षण भर के लिये चुप हो गये और फिर उससे पूछने लगे, क्या तुम गीता नहीं पढते हो ? अगर नहीं पढते हो तो पढ़ा करो। इससे मन का भटकाव समाप्त हो जाता है और संयम स्वत: आ जाता है। लखनसिंह दा साहब के उपदेशों से ऊब गया था। वह सोचने लगा कि इनको ऐसा भारी-भरकम जवाब इस समय के अनुकूल दिया जाना चाहिये कि गीता के एक-एक पन्ने बिखरने लग जायें। वह यह सोचता है कि जब इन्होंने मुझे चुनाव में खड़ा कर ही दिया हैं तो विजयश्री मिलनी ही चाहिये और उसे पाने के लिये प्रयास भी किये जाने चाहिये। किन्तु दा साहब हैं कि चुनाव जीतने की योजना बनाने की बजाय गीता का उपदेश देने में लगे हुए हैं। वह यह भी सोचता है कि जब ये चुनाव मैदान में थे तो उसने उनके लिये भरसक प्रयास ही नहीं किया था, अपितु जी-जान झोंककर भी उनका साथ दिया था। वह बीच में बात काट कर यह सब कहना चाहता था, किन्तु उसकी हिम्मत नहीं हो सकी। ऐसा नहीं था कि वह उनसे डरता था बल्कि वह आज भी यह जानता था कि उन्हीं की कृपा से आज वह इतना आगे बढा है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब के विचारों की अभिव्यक्ति की गई है।

2. गीता का मूल मंत्र ''कर्म करो, फल की इच्छा नहीं'' की पुष्टि की गई है।

3. लखनसिंह की स्वार्थयुक्त मानसिकता का वर्णन किया गया है। वह चुनाव में विजयी बनने के उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता है।

4. प्रस्तुत अवतरण में सरल और परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है।

(7)

''उन्हें खुद लगने लगा कि राजनीति गुण्डागर्दी के निकट चली गई है। जिस देश में देव तुल्य राजनेताओं की परम्परा रही हो, वहाँ राजनीति का ऐसा पतन। कभी-कभी मन में एकदम वैराग्य जाग जाता है, पर राजनीति में जहाँ तक अपने को धँसा लिया, वहाँ वे निकल भी तो नहीं सकते। निकलने का सीधा अर्थ है – हार मान लेना। और जीवन में यही तो एक बात है जिसे कभी मान ही नहीं सकते हैं।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' के महत्त्वपूर्ण पात्र सुकुल बाबू की स्थिति को स्पष्ट करता है। राजनीति में आकर सुकुल बाबू ने सब कुछ देखा है, समझा है और वे राजनीति के अनुभवी खिलाड़ी बन गये हैं। सुकुल बाबू की इसी विशेषता को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्या – सुकुल बाबू अब स्वयं यह अनुभव करने लगे हैं कि राजनीति अब सही राजनीति नहीं रही। इसका समूचा तंत्र बिगड़ चुका है। अब तक यह सब ठीक-ठाक सा चल रहा था, किन्तु अब सब कुछ बिगड़ गया है।

क्योंकि अब इसमें कुछ गुण्डे तत्वों का प्रवेश हो गया है। सुकुल बाबू को सबसे बड़ी वेदना इस बात की है कि हमारे देश जैसी पवित्र राजनीति तो किसी भी देश की नहीं है। यहाँ तो देवताओं के समान नेताओं की शुद्ध आचरण वाली राजनीति रही है वह अब निरंतर पतन की ओर बढ़ती जा रही है। इस स्थिति को देखकर तो अब नफ़रत सी होने लगती है इससे। किन्तु अब कुछ भी नहीं किया जा सकता है, क्योंकि व्यक्ति जब एक बार राजनीति की राह में लम्बा निकल जाता है तो वह चाहते हुए भी पुन: नहीं आ सकता है। यदि कोई निकालने का प्रयास भी करता है तो उसका तात्पर्य है अपनी पराजय स्वीकार करना। अच्छा राजनीति के खेल का शातिर कभी भी अपनी हार स्वीकार नहीं कर सकता है। सुकुल बाबू ऐसे ही ऊँचे दर्जे के खिलाड़ी हैं जो अपनी हार किसी भी स्थिति में मानने को तैयार नहीं हैं। सुकुल बाबू हर हालत में जीत चाहते हैं चाहे इसके लिये उन्हें कुछ भी क्यों न करना पड़े।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण के माध्यम से लेखिका आज की राजनीति का रूप और सुकुल बाबू की स्थिति को प्रकट कर रही है।

2. राजनीति अपने आप में एक नीति होती है जिसे पवित्र होना चाहिये। जब यही नीति गन्दी बन जाती है तो फिर देश का सारा वातावरण ही गन्दा हो जाता है।

3. प्रस्तुत अवतरण में काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है।

4. राजनेताओं की विकृत मनोदशा का वर्णन किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(8)

"मजमा ठीक ही जुड़ गया का भाव चेहरे पर संतोष की हल्की-सी परत पोत गया। बस सारा आयोजन शांति से हो जाये और उसकी बात लोगों तक पहुँच जाये। इस घटना से लोगों के दिमाग उस जमीन जैसे हो रहे होंगे जो वर्षा के स्पर्श मात्र से फूट पड़ने को तैयार रहती है। आज वे ऐसी वर्षा करके जायेंगे कि फसल उनके हिस्से में ही पड़े। मन ही मन उन्होंने अपनी उँगली में पड़ेनीलम को प्रणाम किया और मत चूके चौहान के भाव से माइक संभाल लिया।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' उपन्यास से अवतरित है जिसमें लेखिका ने चुनाव जीतने के लिए सुकुल बाबू द्वारा आयोजित आम सभा से पूर्व सुकुल बाबू की स्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या – सुकुल बाबू में कुछ ऐसी खूबियाँ हैं जिनसे उनके व्यक्तित्व की सम्मोहन शक्ति और अधिक बढ़ जाती है, जिनमें समय की पाबन्दी उनका एक महत्त्वपूर्ण गुण है और जो समय का पाबन्द होता है वह अपने आप में कुछ अंशों में विजयी ही रहता है। सुकुलजी भी उनमें से एक थे। जिस दिन सुकुल बाबू ने अपनी मीटिंग की घोषणा की थी उस दिन वे निर्धारित समय पर सरोहा गाँव में प्रविष्ट हो गये। यद्यपि दिन भर से निर्धारित स्थान के आस-पास चहल-पहल बनी हुई थी किन्तु सुकुल साहब के आने पर सारा परिवेश अपने आप ही आम सभा के रूप में बदल गया। जो लोग समय के पाबन्द थे, वे सुकुल साहब से प्रसन्न हो गये और उन्होंने बिना किसी फूल-माला के सुकुल साहब का सामान्य स्वागत किया। सुकुल बाबू समय की नज़ाकत को पहचानते थे। वे भी गम्भीर मुद्रा में धीमी गति से मंच पर चढे और हाथ जोड़कर जनता जनार्दन का अभिवादन किया। उन्हें यह भय था कि जोरावर के लोग उनकी सभा में व्यवधान डाल सकते हैं किन्तु वे मन ही मन अनुमान लगा लेते हैं कि मजमा तो अब अच्छा-खासा जम गया है और वे जन-समूह के विस्तार को अपनी आँखों में समेट लेते हैं। जन समुदाय को देखकर उनके मन में संतोष हो जाता है और वे अपने आप में आश्वस्त होते हैं कि आज की सभा में यह भीड़ काफी अंशों तक पर्याप्त है। वे मंच पर खड़े होकर यह सोचते हैं कि जिस लक्ष्य को लेकर वे यहाँ तक आये हैं वह पूरा हो जाये और वे जो कुछ भी कहें उसे सब लोग ध्यान से शांति पूर्वक सुनें। वे यह सोच रहे हैं कि बिसेसर की हत्या की जमीन इस समय ऐसी बनी हुई है कि उसमें वर्षा का स्पर्श होते ही वह सब अंकुरित हो सकता है जिसे वे चाहते हैं। बस फिर क्या था, सुकुल बाबू ने सोच लिया कि आज वे अपने भाषणों में शब्दों की ऐसी वर्षा करेंगे कि सारी की सारी वोट रूपी फसल उनकी ही झोली में तैयार होकर गिर जायेगी। सुकुल बाबू ज्योतिष पर अटूट विश्वास करते थे और उन्हें इस बात का भी ज्ञान था कि कब कौन-सा नग पहनना चाहिये। उन्होंने अपनी उँगली में नीलम धारण कर रखा था जिसे उन्होंने मन ही मन प्रणाम किया और "मत चूकै चौहान" वाली कहावत को ध्यान में रखते हुए माइक संभाल लिया।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में सुकुल बाबू की मानसिकता का सुन्दर चित्रण किया है।

2. मत चूके चौहान और वर्षा के स्पर्श मात्र से फूट पड़ने को तैयार जैसी कहावतें अवतरण के अनुकूल बन गई हैं।

3. कुशल राजनेताओं के व्यक्तित्व को सुकुल बाबू के माध्यम से बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है।

4. प्रस्तुत अवतरण में भाषा की लाक्षणिकता और सम्प्रेषणता विद्यमान है।

(9)

"मैं मानता हूँ कि हमसे गलतियाँ हुई हैं। आपने दिखा दी और हमने मान ली। क्योंकि जनता कभी गलती नहीं करती है। इस सरकार ने आपकी सुख-शांति, उन्नति और समृद्धि के लिये बड़े-बड़े आश्वासन दिये.....हम आश्वास्त हुए, क्योंकि जनता के कल्याण में ही हमारा सुख है।"

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक "महाभोज" नामक उपन्यास से अवतरित है जिसमें लेखिका ने सुकुल बाबू के भाषण का चित्रण किया है।

व्याख्या – जिस समय सुकुल बाबू अपनी सभा को सम्बोधित कर रहे थे तो वहाँ काफी अच्छी खासी भीड़ थी। उस भीड़ को देखकर सुकुल बाबू को संतुष्टि भी मिली। सुकुल साहब काफी जोश में थे। चूंकि वे विपक्ष के नेता थे और अपने भाषण के द्वारा वे जनसमूह के मानस को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते थे। हरिजन बस्ती में हुई आगजनी और बिसेसर की हत्या की जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि "मैं जनता का आदमी हूँ इसलिये आप लोगों को मुझसे डरने की आवश्यकता नहीं है। सरकारी पक्ष के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उम्मीदवार ने जनता को भ्रमित कर रखा है। शासन तन्त्र बेगुनाहों पर अत्याचार कर रहा है। यह मुझसे सहन नहीं हो पा रहा है। वे अपनी वृत्तियों को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि जब मैं मुख्यमंत्री था तब मुझसे भी कुछ गलतियाँ हुई हैं और शासन करने वालों से गलतियाँ हो जाती हैं और जनता इन गलतियों का उत्तर चुनाव के समय देती है। आप लोगों ने भी हमें हमारी गलतियाँ बताई और हमने मानी।

जनता कभी भी गलती नहीं करती है। वह जिसे चाहती है, उसे चुनती है। आपने भी वैसा ही किया। किन्तु आपके द्वारा चुनी जाने वाली सरकार ने आपके सुख-चैन, उन्नति आदि के लिये अनेक आश्वासन दिये। आपको विश्वास था कि यह सरकार अपने सभी वादे पूरे करेगी। अब आप स्वयं सोच लीजिये। जनता के कल्याण में ही हमारा कल्याण है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में सुकुल साहब की चतुराई को स्पष्ट किया गया है।

2. सुकुल साहब में उचित अवसर को पहचानने की क्षमता को स्पष्ट किया है।

3. नेताओं द्वारा किये जाने वाले भाषणों पर जनता का रुझान होता है यह भी स्पष्ट किया है।

4. अवतरण की भाषा सरल और प्रभावपूर्ण है।

(10)

''मैं तो भाई कबीर के दोहे का कायल हूँ कि ''निन्दक नियरे राखिये'', प्रशंसक से निन्दक ज्यादा हितैषी होता है। हमेशा आपको सत्पथ पर रखता है। आदमी एक बार इस गुर को समझ ले तो हमेशा के लिये भटकने से बच जाये।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' उपन्यास से अवतरित है, जिसमें लेखिका ने दा साहब और दत्ता साहब की स्थिति को स्पष्ट किया है।

व्याख्या – ''दत्ता साहब एक अच्छे पत्रकार हैं। इस समय दत्ता साहब और दा साहब की वार्ता चल रही है। मुख्यमंत्री दा साहब ने दत्ता साहब को अपने आप इसलिये बुलाया है कि वे अपनी शालीन भाषा में यह बता दें कि सरकार सभी के लिये कुछ-न-कुछ कर रही है, अखबार वालों के लिये भी सरकार के मन में सहानुभूति है। बातों ही बातों में दा साहब यह भी बता देते हैं कि अखबार को स्वतंत्र ही रहना चाहिये। यदि स्वतंत्रता अखबारों को नहीं मिलेगी तो यह नियम के विरूद्ध होगा। दत्ता साहब दा साहब के सामने बैठे हुए उनकी हर बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे। उनको यह डर था कि मुख्यमंत्री जी कहीं ऐसा कुछ न कह दें कि वह दत्ता साहब के विरूद्ध पड़ रही हो। वे सकपका रहे थे। किन्तु दा साहब पक्के खिलाड़ी हैं, वे कहते हैं कि भाई! हम तो कबीर दास की पंक्ति के क़ायल है ''निन्दक नियरे राखिये''। प्रशंसकों से अधिक तो आलोचक अधिक प्रभावित होते हैं। उनकी आलोचना साबुन के समान होती है जो मन के मैल को दूर करने में सहायक होती है। निन्दक समय-समय पर कमियों की ओर संकेत करेगा और हम उन कमियों को दूर करने में जुट जायेंगे।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब के व्यक्तित्व के निरुपित किया गया है।

2. अवतरण की भाषा सहज और सरल है।

(11)

''हाई गरीबों की सब देते हैं, पर उनके हित की बात कोई नहीं सोचता। जनता को बाँट कर रखो.....कभी तो जात की दीवारें खींच कर, कभी वर्ग की दीवारें खींच कर जनता का बँटा-बिखरापन ही तो स्वार्थी राजनेताओं का शक्ति का स्रोत है। कुछ गलत कह रहा हूँ मैं?''

दत्ता बाबू ने बड़ी मुश्किल से थूक निगला। बेचारे समझ ही नहीं पाये कि किन शब्दों में दा साहब की इन ऊँची-ऊँची बातों का समर्थन करें।

पर दा साहब को उनके समर्थन की अपेक्षा भी नहीं थी। गहरी निष्ठा से उपजी हुई बातें बाहरी समर्थन की मोहताज नहीं होती। कभी-कभी पराकाष्ठा में दा साहब दार्शनिक हो जाते थे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

''लेकिन मैं क्यों किसी के विवेक-अविवेक पर टिप्पणी करूं ? बस अपने कर्त्तव्य पर चल सकूँ और अपनी आत्मा की आवाज को कभी अनसुना न करूं, यही बहुत है मेरे लिये। गीता से एक यही तो सीख ली है मैंने।''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' उपन्यास की दा साहब और पत्रकार दत्ता साहब की वार्तालाप का स्पष्टीकरण हैं। दा साहब शिक्षा देते हुए दत्ता साहब से कहते हैं कि पत्रकारों को वही कहना चाहिये जो सत्य हो।

व्याख्या – दा साहब की वार्ता समाप्त होने के बाद वे कहते हैं कि आप पत्रकार की हैसियत से सत्य का अनुसरण करें और मुझे वह सब बतायें कि सुकुल बाबू ने आम सभा में क्या कहा ? जो कुछ उन्होंने अपने भाषण में कहा वह सब सामने आना चाहिये। दत्ता साहब भी उनकी बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुए। वे मन ही मन सोचने लगे कि उनके अखबार का अंक तो तैयार हो चुका है किन्तु उसे शीघ्र ही जाकर बदलना होगा। दा साहब उन्हें यह भी समझा देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को चुनाव जीतने के लिये प्रयास करने ही चाहिये किन्तु वे प्रयास ऐसे नहीं होने चाहिये कि लोगों की शांति और सद्भावना की कीमत पर जुटाये गये हों। यदि कोई ऐसा करता है तो यह गरीबों की कब्र पर अपना महल खड़ा करने वाली बात है। दत्ता साहब उनकी इन बातों से और प्रभावित हुए तब दा साहब ने स्पष्ट कहा कि यह कैसी विडम्बना है कि सभी लोग गरीबी की दुहाई देते हैं किन्तु वास्तव में उनके भले की बात कोई नहीं सोचता है। प्रायः नेतागण जनता को आपस में बाँट देते हैं। तरह-तरह की बातें करके उन्हें भ्रमित कर देते हैं और अनेक प्रकार की दीवारें खड़ी कर देते हैं। कभी जाति-पाँति की दीवार, कभी गरीबी-अमीरी की दीवार। राजनेता जनता के इस बिखरेपन और उनके आपसी विभाजन को ही तो अपनी शक्ति का स्रोत मानते हैं। यह सब स्वार्थपूर्ण बातें अच्छी नहीं हैं।

दा साहब की बातें सुनकर दत्ता साहब चकित रह गये, उन्होंने बड़ी कठिनाई से अपने आपको सँभाला। वे आसानी से यह तय नहीं कर पाये कि किस तरह से वे दा साहब की इन ऊँची-ऊँची बातों का समर्थन करें। उधर दा साहब को केवल अपनी बात कहने से ही मतलब था। दत्ता साहब के समर्थन की उन्हें तनिक भी चिन्ता नहीं थी। वे जानते हैं कि जो बातें हृदय के गहनतल से निकलती हैं, वे पूरी निष्ठा से सामने आती हैं और उन्हें किसी समर्थन के मोहताज होने की आवश्यकता नहीं होती है। जब दा साहब पराकाष्ठा पर होते हैं तो वे दार्शनिक बन जाते हैं। वे कहते हैं कि मैं किसी के विवेक या अविवेक पर टिप्पणी करने में विश्वास नहीं करता हूँ। मैं स्वयं अपने कर्त्तव्य पर चलता हूँ और मेरी आत्मा के अन्दर से जो आवाज निकले उसे अनसुनी नहीं करना चाहता हूँ। यही मेरे लिये पर्याप्त है। मैं नियमित रूप से गीता का पाठक हूँ और उससे मैंने यही तो शिक्षा प्राप्त की है। लेखिका का तात्पर्य यह है कि दा साहब ने अपनी दार्शनिक बातों से दत्ता साहब का पूरी तरह से मन जीत लिया था।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब के दार्शनिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है।

2. दा साहब की मानवतावादी विचारधारा को स्पष्ट किया गया है। इनके प्रत्येक वाक्य में गरीबों के प्रति सहानुभूति और करुणा जैसे भावों की स्पष्टता दिखाई देती है।

3. दा साहब के आगे दत्ता साहब की बेचारगी को स्पष्ट किया गया है।

4. गरीबों की दुहाई, मुश्किल से थूक निगलना, जनता का बँटा-बिखरापन जैसे प्रयोग भाषा के प्रभावशाली बनाने वाले हैं।

(12)

''केवल लोचन भैया ही नहीं, दा साहब के मंत्रिमण्डल से और भी अनेक विधायक असंतुष्ट हैं और असंतोष के अपने-अपने कारण हैं। वैसे ईमानदारी की बात तो यह है कि असन्तोष का सिलसिला मंत्रिमण्डल बनने के पहले ही दिन से प्रारम्भ हो गया था परन्तु उस समय परिस्थिति की माँग ऐसी थी कि सबने अपने अपने चेहरों पर स्नेह, सद्भावना, संतोष और एकता के मुखौटे चढा लिये थे और आदर्शों के लबादे ओढ लिये थे। असंतोष भीतर अपने लिये और बाकी सब बातें बाहर दूसरों के लिये। घटनाएँ कुछ इस तरह से घटती रहीं कि मुखौटों पर दरार पर दरार पड़ने लगी और लबादों की चिथड़े बिखरने लगे। बिसू की मौत ने तो जैसे चकनाचूर ही कर दिया था इन मुखौटों को। इतने दिनों में कसमसाते सबके चेहरे सामने आते चले गये। अपने पूरे नंगेपन के साथ असंतोष से पुते हुए और कुछ भी कर गुजरने के लिये तत्पर। कल रात को दो बजे तक इन्हीं नंगे असंतुष्ट चेहरों की ऐसी आवा-जावी कोठी पर मची रही कि यहाँ पर कुछ महत्त्वपूर्ण घटने जा रहा हो और अब सचमुच घटा कर ही चलेंगे लोचन भैया। उनके भीतर पाँच साल पुराना लोचन जाग चुका है इस समय।''

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रसंग—प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''महाभोज'' उपन्यास से अवतरित है, जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने बताया कि दा साहब के मंत्रिमण्डल में अनेक लोग थे और परिस्थितिवश ऐसे लोगों की संख्या अधिक थी जो दा साहब से असंतुष्ट थे। असंतोष के अनेक कारण थे। अपना-अपना अलग कारण था और उनमें से कुछ कारण सामान्य और एक जैसे थे। विशेष कारणवश ये असंतुष्ट नेता अपनी भावना को व्यक्त नहीं कर पा रहे थे किन्तु अब ऐसा लगने लगा था कि ये सभी असंतुष्ट नेता विद्रोह पर उतारु होने जा रहे थे। उनमें से लोचन भैया भी एक हैं। प्रस्तुत अवतरण में लेखिका त्रिलोचन सिंह के नेतृत्व में असंतुष्ट विधायकों की स्थिति उनके कारणों को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्या—प्रस्तुत अवतरण में लेखिका ने बताया कि दा साहब के मंत्रिमण्डल में बहुत से ऐसे लोग हैं जो उनसे प्रसन्न नहीं हैं। सभी असंतुष्ट हैं किन्तु इस असंतोष के कारण अलग-अलग हैं। वैसे इस असंतोष का सिलसिला मंत्रिमण्डल के गठन के प्रारम्भ में ही प्रारम्भ हो चुका था। यह अलग बात थी कि सभी लोग एकता की आवश्यकता महसूस करने के कारण संगठित से दिखाई दे रहे थे। यह परिस्थितियों की मांग थी। यही कारण था कि दा साहब के मंत्रिमण्डल में शामिल सभी लोगों के चेहरों पर सद्भावना, प्रेम, संतोष और एकता का नक़ाब चढा हुआ था। यह असंतोष समय के साथ-साथ और अधिक बढता चला गया। एक के बाद एक ऐसी घटनाएँ घटित होती चली गई कि सबके मुखौटों पर दरारें पड़नी प्रारम्भ हो गई थीं। जब बिसेसर की मृत्यु हुई तब सभी असंतुष्ट नेताओं की स्थिति सामने आ गई और अन्य नेताओं के आदर्श चकना चूर हो गये। इन चेहरों के असली रूप के सामने आ जाने से सभी विधायकों का नंगापन उभर कर सामने आ गया। परिणामस्वरूप असंतुष्ट नेता इस समय कुछ भी करने के लिए उतारु थे। लोचन भैया के पास ये सभी नेता क्रम से आते जाते रहे। ऐसा लगने लगा कि यहाँ कोठी पर अब कुछ घटित होने वाला है।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में स्पष्ट किया है कि राजनीति में जो अन्दर ही अन्दर मतभेद होते हैं वे समयानुसार उभर कर सामने आते चले जाते हैं।

2. अवतरण की भाषा सहज सरल और अलंकृति से युक्त और प्रभावशाली है।

(13)

''लेकिन ठण्डे दिमाग से सोचते कैसे, लोचन बाबू का दिमाग तो इस समय भट्टी बना हुआ था, सो अप्पा साहब की इतनी महत्त्वपूर्ण बात भी उसमें भुन कर राख हो गई। उनके उठाये प्रश्नों को मन में उतारने की बजाय लोचन बाबू ने अपनी तरफ से उसी तर्ज का एक प्रश्न जड़दिया, ''मजदूरों को सरकारी-रेट पर मजदूरी न मिलना....आदमियों को जिन्दा जला दिया जाना...दिन पर दिन बढते हुए अत्याचार-असुरक्षा...बिसू की मौत....इन सब से तो चार चाँद लग रहे हैं व न पार्टी की इमेज पर ? पार्टी का ध्यान ही किसे रह गया है आज?''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'महाभोज' उपन्यास से अवतरित है। इस गद्यांश में लोचन बाबू की मानसिकता उनके अन्दर के आवेश और आक्रोश को सटीक शब्दावली द्वारा अभिव्यक्ति दी है।

व्याख्या—जब पार्टी अध्यक्ष अप्पा साहब लोचन बाबू से मिलते हैं औरलोचन बाबू अप्पा साहब को यह बताते हैं कि पार्टी में असंतोष व्याप्त है। पार्टी के एक सौ चालीस सदस्यों में से पिचासी सदस्य हमारे साथ हैं। अर्थात् जन समुदाय अब उनके साथ है अत: अब वे मुख्यमंत्री के विरूद्ध आवाज उठाना चाहते हैं। इस बात को सुनकर अप्पा साहब लोचन बाबू को समझाते हैं और ऐसे तर्क भी देते हैं जिससे पार्टी में एकता बनी रह सके। इतना ही नहीं बल्कि वे यहाँ तक कह देते हैं कि ''देखो लोचन ! तुम सब लोगों के असंतोष की बात तो उठती ही रहती है। यह कभी कभी नहीं बल्कि हर दूसरे तीसरे दिन की या रोजाना जैसी बात है और तुम क्या सोचते हो कि मैं असंतुष्ट नहीं हूँ परन्तु ऐसी संकट की घड़ी में मैं नहीं चाहता हूँ कि सभी का असंतोष उभर कर सामने आये। यदि हम लोगों ने ऐसा किया तो सारा मामला बिगड़ जायेगा, पार्टी हार ज येगी और सुकुल बाबू जीतकर सामने आ जायेंगे। हमें इस समय ठण्डे दिमाग से सोच-समझकर असंतोष और अविश्वास की बात सोचनी है।

लोचन बाबू पर अप्पा साहब की इस बात का कोई असर नहीं होता है कि वे ठण्डे दिमाग से कुछ सोचें ऐसा तो तभी संभव होता है जब उसका मानसिक संतुलन ठीक हो। जब स्वार्थ प्रबल हो जाता है तो पद और कुर्सी की ओर लालच भरी नजरें उठने लगती हैं तथा आवेश सामने आकर व्यक्ति के विवेक को कुण्ठित कर देता है। इसीलिये अप्पा साहब के सुझावों का लोचन बाबू पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

किसी भी प्रकार का असर नहीं हो रहा है। इस समय तो आवेश और अविवेक के कारण उनका दिमाग एक भट्टी की तरह से सुलग रहा है और अप्पा साहब की सारी बातें उस भट्टी में जाकर भस्म हो जाती हैं। ऐसे में लोचन बाबू एक बात और स्पष्ट कर देते हैं कि उस समय पार्टी की छवि या उसके सम्मान पर कोई भी ध्यान नहीं देता है। बस्तियों में आग लगाई जा रही है, लोगों को मौत के घाट उतारा जा रहा है, मजदूरों को उचित मेहनताना नहीं दिया जा रहा है। सभी लोग अपने-अपने स्वार्थों में लिप्त हैं और अपनी-अपनी मनमानी करने में लगे हुए हैं। लोचन बाबू अप्पा साहब से यह भी स्पष्ट कह देते हैं कि उस समय सभी लोग अपने-अपने स्वार्थ में लगे हुए हैं और पार्टी की छवि खराब करने में लगे हुए हैं ऐसे में हमें भी उनका विरोध करने में हर्ज ही क्या है ?

विशेष– 1. प्रस्तुत अवतरण में लोचन बाबू के वाक्कौशल उनके व्यक्तित्व और मानसिकता को व्यक्त किया है।

2. जलकर राख हो जाना, चार चाँद लगाना आदि का प्रयोग भाषा की लाक्षणिकता को व्यक्त करते हैं।

3. भाषा सरल, रोचक और प्रभावशाली है।

(14)

''अपनी कही बातें न कर पाने का क्षोभ साफ झलक रहा है लोचन बाबू के चेहरे पर भी, उनके स्वर में भी। पर अप्पा साहब पर कोई खास असर नहीं हुआ उस क्षोभी का। बड़े सहज स्वर में बोले, ''होता है कभी-कभी ऐसा भी। मंजिल तक पहुँचने के लिए हम सड़क बनाते हैं.....पर जब सड़क बन रही होती है, उस समय वही हमारा लक्ष्य होती है, वही हमारा केन्द्र। मंजिल पर पहुँचने का माध्यम तो वह बनने के बाद ही बनती है।''

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक मन्नू भण्डारी द्वारा रचित उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है जिसमें लोचन बाबू के क्षोभ और उसके कारण उनके बदले हुए स्वर को शब्दबद्ध किया गया है। लेखिका ने यह भी बताया है कि लोचन बाबू के क्षोभ का कोई प्रभाव अप्पा साहब पर नहीं पड़ा। वे सहज भाव से सारी बातों को सुनकर चुप हो गये। इसी संदर्भ में उपन्यास लेखिका यहाँ लोचन बाबू की स्थिति और अप्पा साहब की मानसिकता को अभिव्यक्त कर रही हैं।

व्याख्या– वास्तव में अप्पा साहब लोचन बाबू को काफी समझते हैं और पार्टी की एकता के नाम पर बड़ी संतुलित बातें करते हैं। वे पार्टी के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए भरसक प्रयास भी करते हैं, किन्तु लोचन बाबू ऐसी बातों पर कोई ध्यान नहीं देते। वे तो यही कहते हैं कि ''जैसे पार्टी के अस्तित्व को बनाये रखना ही हमारा लक्ष्य हो गया है। इस पार्टी के माध्यम से हमने कुछ बहुत बड़ी-बड़ी बातें करने के दावे भी तो किये थे, क्या हुआ उन सबका?'' यह कहकर लोचन बाबू यह भी सिद्ध कर देते हैं कि वे पार्टी की एकता और अस्तित्व के नाम से बहुत दुःखी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लोचन बाबू जो कहना चाहते हैं, उसे कह नहीं पा रहे हैं और अपनी मनोगत भावनाओं की अभिव्यक्ति न कर पाने के कारण उन्हें जो क्षोभ है, वह उनके चेहरे पर साफ झलक रहा है। उसी क्षोभ की स्थिति ने उनकी स्वर-लहरी को भी बेसुरा कर दिया है। इतने पर भी पार्टी अध्यक्ष अप्पा साहब पर लोचन बाबू के क्षोभ का कोई असर नहीं पड़ता है। वे तो बड़े सहज स्वर में यही कहते हैं कि चिन्ता नहीं करनी चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हम जिस सड़क का निर्माण करते हैं, वह सड़क हमें वहाँ पहुँचने नहीं देती है। यह सत्य है कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जो सड़क बनायी जाती है, उस सड़क पर ही पहले हमारा ध्यान अधिक होता है, वही हमारा केन्द्र भी होती है।

कहने का अभिप्राय यह है कि पहले व्यक्ति के सामने एक मंजिल होती है, फिर उस मंजिल तक पहुँचने के लिए मार्ग बनाया जाता है। जब मार्ग बन जाता है तब वही मार्ग मंजिल तक पहुँचने का माध्यम बनता है। ऐसी स्थिति में लक्ष्य के स्पष्ट हो जाने के बाद उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए बन रहे मार्ग पर ध्यान केन्द्रित होना आवश्यक है। जब सड़क बनती है तो हमारा सारा ध्यान बनती हुई सड़क पर होता है, क्योंकि वही सड़क यदि ठीक नहीं बनी तो हम लक्ष्य पर कैसे पहुँचेंगे। ऐसी स्थिति में सड़क हमारी चेतना के केन्द्र बिन्दु के रूप में उभरती है। जब सड़क बन जाती है तब वह माध्यम के रूप में काम में आने लगती है। इससे स्पष्ट होता है कि पहले उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए, तत्पश्चात् उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उपयुक्त माध्यम होना चाहिए, तभी हम सफलता का अनुभव कर पायेंगे। ऐसे उचित माध्यम से प्राप्त सफलता ही प्रीतिकर होती है। अतः पहले लक्ष्य पर, फिर माध्यम पर ध्यान देना चाहिए।

विशेष– 1. अवतरण के अन्तर्गत सरल भाषा-शैली का प्रयोग हुआ है। शैलीगत सहजता के कारण अवतरण का कथ्य पाठकों तक भली-भाँति सम्प्रेषित हो जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. गद्यांश के अन्त में आये तीन वाक्य काव्यात्मक बन पड़े हैं। ऐसे काव्यात्मक वाक्यों के विधान से लेखिका अपनी बात को स्पष्टता के साथ सम्प्रेषित करने में सफल हुई है।

(15)

''सारी बात का उपसंहार करते हुए अन्तिम बात कह दी लोचन बाबू ने। अप्पा साहब लोचन के चेहरे को देखते रहे फिर उन्होंने झुक कर अपनी छड़ी उठाई और दोनों हाथों से उसे पकड़ कर उसे यों ही जमीन पर ठोकते हुए बोले—''तुम जिन लोगों के भरोसे त्याग-पत्र देने जा रहे हो, उन पर विश्वास कर सकते हो इतना की और ज्यादा प्रलोभन मिलने पर भी वे तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे ? फेन्स पर बैठकर हर दिन अपना मोल-भाव करने वाले लोगों के बूते पर तुम यह निर्णय ले रहे हो.....मुझे डर है, तुम्हें कहीं मुँह की नहीं खानी पड़े।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''महाभोज'' से अवतरित है जिसमें अप्पा साहब लोचन बाबू को समझाते हैं कि इस समय एकजुट होकर हम सभी को चुनाव अभियान में लग जाना चाहिये और पार्टी के हाथ मजबूत करने चाहिये।

व्याख्या—अप्पा साहब लोचन बाबू को कहते हैं कि हमारे आपसी मतभेद इस समय हमें उभरने नहीं देने चाहिये। अप्पा साहब की बातों का लोचन बाबू पर कोई असर नहीं होता है। वे तो बार-बार यही कहते हैं कि हमें और अधिक नहीं दबाया जाये और हम पाँच मंत्री एक साथ आज त्यागपत्र देने के लिये तैयार हैं। आप में एकता की आड़ लेकर विचलित नहीं कर सकते। लोचन बाबू का निर्णयात्मक स्वर सुनकर अप्पा साहब कुछ भी नहीं बोल पाते हैं और वे लोचन के चेहरे को देखते रहते हैं और दोनों हाथों से छड़ी को यों ही जमीन पर पटक-पटक कर कहते हैं कि कुछ भी करने या कहने से पहले अच्छी तरह से सोच लो। अप्पा साहब यह भी जानते हैं कि लोचन बाबू जो भी सोच रहे हैं या कह रहे हैं वह तर्कसंगत निर्णय नहीं है। वे एक बार फिर कहते हैं कि इस समय जो लोग तुम्हारा साथ दे रहे हैं और जिनके बल-बूते पर तुम अपना त्याग-पत्र देने जा रहे हो क्या तुम उन पर अन्तिम क्षण तक विश्वास बनाये रख सकते हो ? इस समय तो ये लोग तुम्हारी बातों में आकर या पद के प्रलोभन में आकर तुम्हारा साथ दे रहे हैं। यदि इन्हीं लोगों को तुमसे ज्यादा प्रलोभन देने वाला कोई और मिल गया तो क्या तब भी ये लोग तुम्हारा साथ दे पायेंगे ? ये तो वे लोग हैं जो आये दिन अपना मोल-भाव कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं। अप्पा साहब कहते हैं कि ''मुझे तो यह डर है कि कहीं ऐसा न हो कि जिन लोगों के भरोसे पर तुम इतना बड़ा निर्णय ले रहे हो वे कहीं मौका पाकर तुम्हारा साथ न छोड़ दें। अतः तुम जो भी कह रहे हो और करने जा रहे हो उसका निर्णय काफी सोच समझ कर ही लो।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में अप्पा साहब के व्यक्तित्व की गंभीरता, उनकी विवेकपूर्ण मानसिकता और सोच समझकर कार्य करने की प्रवृत्ति को स्पष्ट किया है।

2. अवतरण के अन्तर्गत परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। इस भाषा में सहजता और सहज ग्राह्यता है अतः यह भाषा प्रभावपूर्ण है।

3. मुँह की खाना, छड़ी ठोकना, मोल-भाव करने वाले लोग आदि वाक्यों के प्रयोगों से भाषा की अर्थवत्ता स्पष्ट होती है।

(16)

''बताया गया कि आप लोग बहुत नाराज हैं। सुना तो लगा कि तब तो और भी जरूरी है कि अकेले आऊँ। आप लोगों की नाराजगी मुझ पर है तो मुझे ही झेलना चाहिये। दूसरों को इसमें साझीदार बनाना तो दूसरों के साथ अन्याय होगा। कुछ समय पहले आप लोगों ने अपना प्यार और विश्वास दिया था मुझे। मैंने सिर आँखों पर ही लिया था उसे। यदि आप आजअपनी नाराजगी देंगे तो उसेभी सिर आँखों पर ही लूँगा। मेरी गलती पर नाराज होना आपका अधिकार है और उसे झेलना मेरा कर्त्तव्य।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक मन्नू भण्डरी द्वारा रचित ''महाभोज'' उपन्यास से अवतरित है, जिसमें दा साहब का भाषण स्पष्ट किया गया है। वे सरोहा गाँव में अपनी चुनाव सभा को सम्बोधित कर रहे हैं।

व्याख्या—मुख्यमंत्री दा साहब अपनी सभा को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं कि मुझे पता चला है कि आप लोग मुझ-से बहुत नाराज चल रहे हैं। जैसे ही मुझे इस बात का ज्ञात न हुआ तो मैंने यह सोचा कि मुझे आपसे अकेले ही मिलने चलना चाहिए

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

और उसे मैंने उचित भी समझा, क्योंकि यदि आप मेरे क्रिया-कलापों और मेरे व्यवहार से असंतुष्ट हैं तो आपकी असंतुष्टि मुझे स्वयं ही झेलनी चाहिये। इसी भाव से प्रेरित होकर मैं आपके सामने हाजिर हुआ हूँ। मैं आपकी नाराजगी में किसी अन्य को इसका भागीदार बनाना चाहता हूँ तो यह आपके साथ अन्याय होगा। आपकी नाराजगी का जो रूप है, जो कारण है, आप कृपा करके मुझसे कहें। मैं उसे सुनने और झेलने के लिए तैयार हूँ।

दा साहब आगे स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि पिछले चुनाव में आपने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं उससे अभिभूत हो गया। आपके प्यार और आपके विश्वास का ही यह परिणाम है कि मैं इस लायक बना हूँ। मैंने आपके प्यार और आशीर्वाद को शिरोधार्य मानकर ग्रहण किया है और यदि आज मेरे किसी व्यवहार या मेरे किसी क्रियाकलाप से आप मुझसे नाराज हैं तो मैं उस नाराजगी को भी आपके प्यार की तरह शिरोधार्य मान कर चलूँगा। यह उचित भी है, क्योंकि आपके द्वारा दी जाने वाली हर भावना को चाहे वह प्रेम हो या नाराजगी दोनों को सम्मान के साथ ग्रहण करना चाहिये। यह आपका अधिकार है कि मैं यदि कोई गलती करता हूँ तो आप नाराज हो सकते हैं और आपकी नाराजगी को स्वीकार करना मेरा पुनीत कर्त्तव्य है।

विशेष – 1. अवतरण में दा साहब की शालीनता, भव्य व गरिमामय व्यक्तित्व उजागर हुआ है।

2. सिर आँखों पर रखना मुहावरा संदर्भ के अनुकूल है।

3. भाषा सरल और प्रभावशाली है।

(17)

"यह गरीब और अमीर का मामला नहीं, क़ानून का मामला है और क़ानून हाथ में लेने का मतलब है लालच और लालच मत दो। क़ानून हाथ में लेते ही आदमी बेताज का बादशाह हो जाता है। आप लोगों ने तो भोगा है उस बादशाह को। जब जिसकी मर्जी हुई उसी समय उठाया और जेल में। कोई मुक़दमा नहीं, कोई सुनवाई नहीं, कोई फैसला नहीं.....कोई सजा नहीं। क़ानून क़ब्जे में, पुलिस चंगुल में। जिसको चाहो, उठाओ, जिसको चाहो पटको।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास "महाभोज" से अवतरित है, इसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्पष्ट किया है कि जब दा साहब आम सभा को सम्बोधित कर रहे थे तो बीच-बीच में बिन्दा तीखी और कड़वी बातें कर रहा था, किन्तु दा साहब जरा भी उसकी इस क्रिया से विचलित नहीं हुए और उन्होंने अपना भाषण जारी रखा।

व्याख्या – दा साहब अपने गम्भीर व्यक्तित्व और शालीनता से जन समूह को सम्बोधित कर रहे थे कि बीच-बीच में बिन्दा जली-कटी बातें कर रहा था, किन्तु दा साहब जरा से भी विचलित नहीं हुए। वे बड़े धैर्य के साथ उसकी सारी बातें सुनते रहे। लेखिका ने दा साहब की इसी स्थिति को स्पष्ट करते हुए बताया कि – प्रशासन की लापरवाही को देखकर बिन्दा तहश में आकर बोलने लगा जिससे उपस्थित समुदाय में खलबली मच गई। बिन्दा सीधी और स्पष्ट भाषा में बहुत कुछ बोलने लगा – "गरीबों के पक्ष में तरह-तरह की बातें की जाती हैं तो फिर गरीबों के घरों में आग क्यों लगाई गई और ऐसा करने वालों को अभी तक पकड़ा क्यों नहीं गया ?" बिन्दा के शब्दों को सुनकर दा साहब जोश में नहीं आते हैं और बड़े धैर्य के साथ बिन्दा के द्वारा किये गये वार को सहन कर लेते हैं। इतना ही नहीं वे उसे समझाने के लहजे में कहते हैं, "तुम जो सोच रहे हो वह बात नहीं है, मामला ग़रीबी-अमीरी का नहीं बल्कि क़ानून का है। क़ानून को हाथ में लेने का अधिकार किसी को भी नहीं है। यदि मैं क़ानून को अपने हाथों में लूंगा तो वह पूर्णत: गलत होगा, क्योंकि जब व्यक्ति कानून हाथ में ले लेता है तो वह बेताज बादशाह बन जाता है।

दा साहब कहते हैं कि बेताज बादशाह बनकर व्यक्ति न जाने कितने अनुचित काम करने लग जाता है। आप तो अच्छी तरह से जानते हैं कि एक बार एक बेताज बादशाह ने क़ानून अपने हाथों में लेकर आप पर हुकूमत की थी, वह अपनी इच्छानुसार जब जिसे चाहता था, उठवा लेता था और जेल में ठूँस देता था। न तो किसी पर मुक़दमा चलता था और न किसी की फ़रियाद सुनी जाती थी, इतना ही नहीं, कोई फैसला नहीं कोई सजा नहीं। क़ानून उसके हाथों में था। कानून हाथ में रखने वाला व्यक्ति निरंकुश होता है और जो निरंकुश होता है उसके चंगुल में पुलिस रहती है। मैं ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ जो क़ानून को हाथ में लेकर निरंकुश बन जाऊँ और निर्दोषों को जेल में भर दूँ। क़ानून को हाथ में लेना एक बड़ी भूल होती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब की सहनशीलता और धैर्य प्रकृति को स्पष्ट किया है।

2. बेताज बादशाह से दा साहब का संकेत अंग्रेज हुकूमत से है।

3. अवतरण में सहज, सरल और सुबोध भाषा का प्रयोग किया गया है।

(18)

"इस बार देख लिया सबने कि जनता की एकता में बड़ा जोर है। तूफानी जोर। तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ों को जड़ सहित उखाड़ देता है। जब जनता एक हो जाती है तो बड़े-बड़े राज्य उलट देती है। फिका हुआ व्यक्ति ही इस बात को अच्छी तरह महसूस करता है। कुर्सी पर बैठना है तो जनता में फूट डालो.....कुर्सी बचानी है तो जनता में फूट डालो.....। जनता की एकता कुर्सी के लिये बहुत बड़ा खतरा है।"

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास "महाभोज" से लिया गया है, जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने बताया कि दा साहब, बिन्दा के जोश की कद्र करते हैं और इस भावना को उचित बताते हैं, वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि उनकी नजर में आलोचकों और विरोधियों का सम्मान है।

व्याख्या – दा साहब जनता जनार्दन को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि वे हर विरोधी और आलोचक का सम्मान करते हैं। उन्होंने कहा कि "सुकुल बाबू बहुत अच्छे व्यक्ति हैं परन्तु उन्होंने जो रवैया अपना रखा है वह आपसी द्वेष को बढावा देने वाला है क्योंकि स्वार्थ मनुष्य को अविवेक की ओर ले जाता है। सभी जानते हैं किजनता में यदि एकता है तो वह जो चाहे कर सकती है। इस बार तो जनता ने अपनी एकता का प्रदर्शन बहुत अच्छी प्रकार से किया है। यह एकता का जोर तूफानी है और जब तूफान आता है तो बड़े-बड़े दरख्तों को जड़से उखाड़ कर फैंक देता है। यही स्थिति जनता के तूफानी जोर की है। जब जनता की एकता का तूफान उठता है तो वह बड़े-बड़े राज्य को पलट सकता है। जनता की शक्ति को वही व्यक्ति अनुभव कर सकता है जो इस तूफान के वेग को सहन कर चुका हो। यह उचित नहीं है कि कोई व्यक्ति यदि कुर्सी पर बैठना चाहता है तो वह जनता में फूट डाले। अपनी कुर्सी को बचाये रखने के लिए फूट डालना मानवता नहीं है। क्योंकि मनुष्य को सदैव ऐसे काम करने चाहिये जिसमें सदैव एकता बनी रहे। समाज संतुलित और संगठित ढंग से आगे बढ़ता रहे। लोग यह मानते हैं कि यदि जनता में एकता हो जायेगी तो उसकी कुर्सी और वह स्वयं खतरे में पड़ जायेगा। यह बात कतई ठीक नहीं है और जो लोग इसे ठीक मानते हैं, वे स्वार्थी हैं, अवसरवादी हैं, अपनी कुर्सी को बचाये रखना चाहते हैं। दा साहब अपने विरोधियों की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि "मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह सत्य है, इस सत्य का आप सभी समझदारी से अनुभव करते हैं।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में जनता की एकता को तूफान बताकर दा साहब के यथार्थ भावों को स्पष्ट किया है।

2. वर्तमान राजनेताओं की स्वार्थ प्रेरित मनोवृत्ति और पद लोलुपता और स्पष्ट किया है और बताया है कि वे अपनी कुर्सी को बचाये रखने के लिये जनता के साथ कैसा भी व्यवहार कर सकते हैं।

3. अवतरण की भाषा सरल और प्रभावशाली है।

4. विचारात्मकता और गम्भीरता और सूत्रात्मकता भाषा में विद्यमान है।

(19)

"बहुत क्रोध और साहस है इस नौ-जवान में। मुझे बहुत अच्छा लगा है इसका यह तेवर। जिस गाँव के नौ-जवानों में यह गुण हो.....वहाँ किसी प्रकार का जोर, जुल्म और अन्याय चल ही नहीं सकता है। अपने गरीब भाइयों का हमदर्द लगता है। मुझे तो ऐसे निर्भीक और उत्साही नव-युवकों की आवश्यकता है इस योजना के लिये। मैं चाहता हूँ कि घरेलू उद्योग योजना को आप खुद ही संभालें, आप लोग ही चलायें। कितना बड़ा सपना था बापू का कि हमारा हर गाँव और हर ग्रामीण आर्थिकरूप से स्वतंत्र बने.....समर्थ बने। आज इस सपने की दिशा में पहला कदम बढाया है, परन्तु पूरा तो यह आप लोगों की मदद.....आप लोगों के सहयोग से ही होगा। मैंने पहल कर दी.....अब पूरा आप कीजिये।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास "महाभोज" से लिया गया है। दा साहब बिन्दा के साहस और जोश की कद्र करते हैं। अपनी उस स्थिति को संभालने का प्रयास करता है जिसे बिन्दा भड़काना चाहता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्याख्या – जिस समय दा साहब जनता को सम्बोधित कर रहे थे तो बिन्दा बीच-बीच में उनको जली-कटी सुनाकर जनता में खलबली पैदा कर रहा था। उसने कहा कि ''पिछले तीस वर्षों से आप लोगों की बातें सुनते और समझते आ रहे हैं। आप लोग जैसे-जैसे वायदे करते हैं, वैसा कुछ नहीं करते हैं। पेट भरने के लिए रोटी की आवश्यकता होती है, बातों की नहीं।'' और ना जाने क्या-क्या कहता हुआ एक ओर थूकते हुए सारी जन भीड़ को चीरता हुआ वहाँ से दनदनाता हुआ चला जाता है। दा साहब इस स्थिति को सँभालने का प्रयास करते हैं और कहते हैं कि ''मैं अनुभव कर रहा हूँ कि इस नौजवान में बहुत जोश और साहस है। मुझे इसके तेवर भी पसन्द आये। जिस गाँव में ऐसा नौ-जवान हो जो इस प्रकार दो टूक बातें करे, इतना साहस और जोश रखे इस गाँव में अन्याय और अत्याचार तो हो ही नहीं सकते हैं। अन्याय तो वे ही लोग सहन करते हैं जो दब्बू किस्म के व्यक्ति हों। अपनी बात कहने का सभी को पूरा-पूरा अधिकार होता है। दा साहब कहते हैं कि ''मुझे यह युवक गरीब भाइयों का हमदर्द प्रतीत होता है। वास्तव में हम जो योजना लेकर आये हैं उसे अच्छी तरह से क्रियान्वित करने के लिये तुम्हारे जैसे साहसी और निर्भीक लोगों की जरूरत है। जो घरेलु उद्योग योजना हमने तैयार की है उसे आप लोगों को ही चलाना है, आप को ही चलाना है। बापू ने बहुत बड़ा सपना देखा था कि हमारे देश में हर गाँव को और हर ग्रामीण को आर्थिक रूप से स्वतंत्र सहायता मिले। बापू के सपने को साकार करने के लिये ही हमने यह योजना बनाई है। यह योजना तभी पूरी होगी जब आप सभी इसमें पूरी-पूरी सहायता करोगे। हमारी योजना को चरम सोपान तक पहुँचाने का काम आप सब का है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में परिस्थितियों के अनुकूल आचरण करने वाले व्यक्तित्व के धनी दा साहब का चरित्र सामने आया है।

2. दा साहब विगत दस वर्षों से मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए जनता की नब्ज पहचानते हैं यह उनके चरित्र की अतिरिक्त विशेषता है।

3. अवतरण में उर्दू, फारसी मिश्रित हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ जो प्रभावशाली है।

(20)

''उसका कहना था कि पूरे का पूरा मामला जान-बूझकर दबा दिया गया है। झूठी तसल्ली देने के लिये बेचारे कॉंस्टेबल को सस्पेन्ड कर दिया गया। मामूली जुर्म करने वाला सजा पा गया और असली मुजरिम के खिलाफ कुछ भी नहीं.....कभी कुछ होगा भी नहीं।

एक क्षण ठहर कर बात पूरी की महेश ने, ''बस इसी को लेकर वह तिलमिला रहा था। उसका कहना था, वह थोड़े से आदमियों के मरने भर की ही बात नहीं है, महेश बाबू, समझ लीजिये की पूरी की पूरी बस्ती का हौसला ही मर गया है। आठ महिनों तक रात-दिन समझा-समझा कर इस लायक बना दिया था की छाती ठोक कर अपना हक मांग सके.....अब बहुत दिनों तक ये लोग अपना लड़ने का हौसला नहीं जुटा पायेंगे।''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से लिया गया है जिसमें दा साहब ने बिसेसर की हत्या की जाँच के लिये आदेश दिये हैं और एस.पी. सक्सेना जाँच के लिये गाँव में जाते हैं। वे लोगों के बयान लेते हैं जिनमें महेश बाबू भी है जो शहरी लिवास में हैं। वे देहली से रिसर्च प्रोजेक्ट के सिलसिले में गाँव आते हैं। उनका रिसर्च वर्ग संघर्ष और जाति संघर्ष है। महेश शर्मा बिसेसर के काफी निकट का व्यक्ति रहा है।

व्याख्या – महेश शर्मा देहली से ग्रामीण वर्ग-संघर्ष और जाति-संघर्ष के विषय क्षेत्र में गाँव आता है। बिसेसर से महेश शर्मा के ठीक-ठीक सम्पर्क रहते हैं क्योंकि वह अपने प्रोजेक्ट के विषय में उससे बातें करता रहता था। बिसेसर की चिन्तन धारा और विचारशीलता से महेश काफी प्रभावित था। महेश शर्मा बयान के दौरान यह बताता है कि बिसेसर एक सच्चा इन्सान था। उसे अन्याय पसन्द नहीं था, वह इस बात को भी पसन्द नहीं करता था कि दोषी व्यक्ति स्वतंत्र भ्रमण करे और निर्दोष को उसकी सजा मिले।

महेश शर्मा बताता है कि बिसेसर प्राय: कहा करता था कि आगजनी की जो घटना घटित हुई है उसे पूरी तरह से दबा दिया गया है। उसका मानना था कि सारा व्यवस्था-तंत्र और शासन-तंत्र ही विकृत हो चुका है। झूठी तसल्ली देने के लिये और गाँव

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वालों को गुमराह करने के लिये एक निर्दोष कान्स्टेबल को गिरफ्तार कर मुअत्तिल कर दिया गया जिससे की लोगों को यह लगे कि सरकार कुछ कर रही है। मामूली अपराधी को तो सजा दे दी किन्तु वास्तविक अपराधी को किसी प्रकार की सजा नहीं दी गई। बिसेसर इस बात से दुःखी था और हमेशा बेचैन रहता था। न्याय पाने के लिये हमेशा प्रयत्नरत रहता था। वह स्पष्ट कहता था कि थोड़े से आदमियों के मर जाने की चिन्ता इतनी नहीं जितनी की इस घटना की कार्यवाही नहीं किये जाने पर सारी की सारी जनता गर्त में जा रही है। बस्ती वाले सभी लोग निराश और हताश हो गये हैं और जो मर गये वे तो मर गये और जो जिन्दा हैं वे भी मरे हुए के समान हैं। बिसेसर यह भी कहता था कि उसने आठ महिनों तक प्रयास कर बस्ती वालों को समझाया कि वे अधिकार पाने के लिये संघर्ष करें। जब वे तैयार हो गये और उनकी मरी हुई चेतना पुनः जीवित हो गई तभी आगजनी की घटना घटित हो गई। अब जब न्याय नहीं मिल रहा है तो सभी बस्ती वालों के हौंसले पस्त हो गये हैं। ऐसी स्थिति में अब ऐसा नहीं लग रहा है कि ये लोग पुनः अपना हौसला जुटा पायेंगे।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में महेश शर्मा का चिन्तशील और स्पष्ट वक्ता का चरित्र सामने आया है।

2. बिसेसर सत्यवादी, न्यायप्रिय और जाग्रत चेतना वाला तथा अधिकारों के लिये संघर्ष करने वाला युवक था।

3. अवतरण की भाषा सरल, सहज और व्यावहारिक है।

(21)

"केवल नाराज ही नहीं, लड़ता था हमसे कि आप जैसे पढ़े-लिखे लोग तमाशबीन बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन दहाड़े इतना ज़ुल्म होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-अलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है?" एका एक महेश की आवाज भर्रा गई किन्तु जल्दी ही अपनी बात साधकर उसने अपनी बात पूरी की, "अपनी मजबूरी हम उसे कभी नहीं समझा सके।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास "महाभोज" से लिया गया है जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने गाँव में रिसर्च कर रहे महेश शर्मा के बयानों का खुलासा किया है क्योंकि बिसेसर और महेश शर्मा नजदीक ही थे।

व्याख्या – एस.पी. सक्सेना महेश शर्मा से बिसेसर के बारे में अधिक से अधिक जानना चाहते थे। महेश शर्मा बताता है कि "बिसेसर हमसे कई-कई बार यह कहकर लड़ता था कि आप जैसे पढ़े-लिखे लोग किसी बात को न जाने क्यों सही ढ़ंग से समझ नहीं पाते हैं।" यही कारण था कि वह हमसे अक्सर नाराज रहता था। वह कहता था कि आप जैसे पढ़े-लिखे लोग जब तक तमाशबीन बनकर बैठे रहेंगे तब तक इस देश में सत्य और न्याय की रक्षा नहीं होगी। गरीबों के अधिकारों की सुरक्षा में पढ़े-लिखे लोग ही अच्छी सहायता कर सकते हैं। और यदि पढ़े-लिखे लोग ही आगे नहीं आयेंगे तो कोई भी नहीं आयेगा। बिसेसर कहा करता था कि सारे लोग दिन भर बैठे कागजों को काला करते रहते हैं और दिन दहाड़े अत्याचार आये दिन होते रहते हैं। उन्हें देखकर कर भी हम तटस्थ बने बैठे रहते हैं। बिसेसर हमारे ऊपर खाली बैठे कागजों को पोतने का आरोप लगाया करता था। यह कहते-कहते महेश शर्मा की आवाज भर गई और गला रूँध गया किन्तु शीघ्र ही उसने अपने आप को संभाल लिया और अपनी बात को पूरा करते हुए कहा कि हम अपनी मजबूरी बिसेसर को नहीं समझा सके। अर्थात् हम यहाँ केवल प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं और न हम कुछ कर सकते हैं और न न्याय दिला सकते हैं। हमारी इन्हीं बातों से बिसेसर दुःखी था और अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुए हमसे लड़ने लगा था।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बिसेसर की सत्यता, न्यायप्रियता और साथ में उसकी मजबूरियाँ दर्शाई गई हैं।

2. महेश शर्मा की कुछ न कर पाने की मजबूरी को स्पष्ट किया गया है।

3. अवतरण की भाषा सरल, सहज है।

(22)

"का कहत, सरकार। हाँ, महतारी लड़त रही, छोटे-छोटे लरिकन का पेट काट के पढावा अउर अब न कछु करै न धरै। तब हिम्मत रही सरकार.....अब हाथ पाँव नहीं चालत है एही से महतारी बकत रही.....कोसती रही" फिर भर्राये गले और

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

रूँधी हुई आवाज में कहा "पर जबसे गवा है, आँखिन से आँसू नहीं टूटता। रोय-रोय केआधी होई गई है। सब दिन अपने को कोसत है—दैया रे। हमहिन लड़ि-लड़ि के अपने बिसू को मारि डाला। दुई-दुई रोटीन का तरसाइ दीन। बहुत कलपती है सरकार। बाहिकेर दुःख नहीं देखा जात।"

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य अन्यास "महाभोज" के अन्तर्गत है जिसमें बिसेसर की मौत के बाद एस.पी. सक्सेना के द्वारा लिये जाने वाले बयानों में बिसू के पिता हीरा का बयान प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या—एस.पी. सक्सेना द्वारा बिसेसर के पिता हीरा के बयानों में लेखिका मन्नू भण्डारी स्पष्ट करती है कि हीरा के पिता को बिसू की मौत का जितना सदमा पहुँचा उसकी माँ को उससे भी ज्यादा धक्का लगा है। हीरा अपने बयानों में कहता है कि "वह पढ़ा-लिखा था, वह पढ़ाई-लिखाई की बातों को समझता था और हम लोग उन बातों को समझ नहीं पाते थे। वह रात-दिन बेचैन रहता था। जब वह अपनी बेचैनी और दुःख के कारण जागता रहता तो हम उसके दुःख के कारण को समझ नहीं पाते थे। उसने गाँव में एक स्कूल भी खोला था, किन्तु उस स्कूल से उसे अधिक आमदनी नहीं हो पाती थी। जो कुछ वहाँ से मिलता था उससे पेट भी नहीं भरा जा सकता था, हम लोग उससे कुछ नहीं कहते थे। एक जवान बेटा निठल्ला बैठा रहे और बुजुर्ग माँ-बाप मेहनत करें उसे उसकी माँ सहन नहीं कर पाती थी। वह उससे लड़ती थी और कहती थी कि छोटे-छोटे बच्चों का पेट काट कर तुझे हमने पढ़ाया-लिखाया और जब पढ़-लिख गया तो कुछ करता-धरता क्यों नहीं है ? उसकी माँ उसे रोज कोसती रहती थी।

हीरा ने कहा कि जब से बिसू गया है तब से उसकी माँ निरन्तर रोती रहती है। उसकी आँखों के आँसू सूखते ही नहीं हैं। अब तो वह रोते-रोते इतनी कमजोर हो गई कि देखा भी नहीं जाता है। उसका शरीर आधा हो गया है, अब तो वह अपने को ही कोसती रहती है। वह कहती है कि मैंने ही अपने प्यारे बेटे बिसू को लड़-लड़कर मार दिया है। मैंने ही उसे इतना परेशान किया है कि रोटियों तक के लिये तरसा दिया। जब बिसू नहीं रहा तो सारा दोष अपन ही नजर आने लगा है। अन्त में हीरा कहता है कि सरकार अब तो मुझ से बिसू की माँ का हाल देखा नहीं जाता है।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में एस.पी. सक्सेना के द्वारा लिये जाने वाले बयानों में बिसेसर के पिता हीरा का और बिसेसर की माँ के कष्टों का मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

2. प्रस्तुत अवतरण में ग्रामीण भाषा का वह प्रयोग है जिसे ग्रामीण दैनिक जीवन में रोज-मर्रा के काम में लिया जाता है।

3. अवतरण में एक माँ की ममता का हृदयग्राही स्वाभाविक चित्रण किया है।

(23)

"अरे सरकार.....रोउती तो है ही बिटिया सादी के समय। महतारी का घर छोड़त करेजवा बहुत कसकत है, बिटियन का। फिर यही के तो महतारीउ नहीं रही, सरकार। बाप का घर वही देखत रही.....मोह तो होते हैं।"

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास "महाभोज" से अवतरित है जिसमें एस.पी. सक्सेना बिसेसर के पिता हीरा का बयान ले रहे हैं।

व्याख्या—बिसेसर रुक्मा को बहुत मानता था और दोनों के आपस में पवित्र सम्बन्ध थे। इससे पहले बिसेसर को जेल में डाला गया तो रुक्मा बिसू की माँ की तरह फूट-फूट कर रोई थी। उसने खाना-पीना छोड़ दिया था। जब सक्सेना साहब को इस स्थिति का पता चला तो वे इसका अलग ही अर्थ समझ गये थे इसीलिये वे पूछते हैं कि रुक्मा की शादी कब हुई और क्या उसने खुशी-खुशी शादी कर ली थी ? वास्तव में रुक्मा का पति भी बिसेसर का दोस्त ही था। हीरा कहता है कि जब लड़कियों की शादी होती है तो घर के मोह के कारण प्रायः रोती ही हैं। जब रुक्मा की शादी हुई तो वह भी बहुत रोयी थी। हर बेटी की माँ ऐसे समय में अपनी पुत्री को समझाती है किन्तु रुक्मा के साथ ऐसा नहीं हुआ, क्योंकि उसके माँ नहीं थी। जब रुक्मा की शादी हुई तब उसका घर छूट गया था जिसका रुक्मा को बहुत दुःख हुआ।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में लेखिका ने करुणा प्रधान और भावना प्रदान शैली का प्रयोग किया है।

2. भाषा प्रसंगानुकूल और भावानुकूल है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

''सक्सेना कुछ लिखने लगा और थानेदार मन ही मन भुनभुनाने लगा–बयान के नाम पर बू े से पुरान बँचवा रहा है। पिछले चार घण्टे से और उसने एक वाक्य बोला दिया तो इशारे से ऐसी लंगी लगायी कि आधी बात मुँह में ही घुटकर रह गयी। अपने ही हलके में गीदड़ बनाकर रख दिया इस ससुरे एस.पी. ने। ऐसे पुचकार-पुचकार कर बयान लोगे तो कही-अनकही सब कहेंगे ही ये लोग। गाँव वालों से पाला नहीं पड़ा लगता है इनका कभी। जानते नहीं कि जरा-सी शह मिलते ही सीधे खोपड़ी पर सवार होते हैं ये लोग। जूते की नोंक पर ही ठीक रहते हैं। अभी तो बिन्दा जाने और क्या गुल खिलायेगा।''

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से अवतरित है जिसमें उपन्यासकार मन्नू भण्डारी ने स्पष्ट किया है कि हीरा जो कुछ महसूस करता है वह सक्सेना साहब के सामने बयान के रूप में कह देता है।

व्याख्या–एस.पी. के निर्देश पर थानेदार को बयान लेने वाले स्थल से दूर कर दिया जाता है, परन्तु वह किसी-न-किसी बहाने पर थोड़ी देर बाद उस कक्ष में आ जाता है। सक्सेना साहब हीरा के बयान की प्रत्येक बात लिखते जा रहे हैं। सक्सेना साहब जब कुछ लिखने लगते हैं तो थानेदार मन ही मन भुनभुनाने लगता है। वास्तव में उसे सक्सेना साहब का सीधा, सरल और सहृदयतापूर्ण व्यवहार पसन्द नहीं आ रहा है। थानेदार यह अनुभव कर रहा है कि वास्तव में सक्सेना बयान नहीं ले रहे हैं, अपितु हीरा के मुख से उसके जीवन की पूरी कहानी सुन रहे हैं। चार घण्टे से लगातार यही सब चल रहा है। जब भी कभी हीरा कोई ऐसा वाक्य बोल देता है जो महत्त्वपूर्ण हो तब वह उसे तुरन्त लिख लेते हैं। थानेदार को गाँव वालों पर रौब डालने की आदत पड़ी हुई है, इसलिए उसे सक्सेनाजी का व्यवहार अप्रिय लग रहा है। वह सोच रहा है कि इन्होंने मुझे मेरे ही क्षेत्र में गीदड़ बनाकर रख दिया है। थानेदार वास्तव में यह कहना चाहता है कि यदि उसे छूट मिल जाती है तो वह सारे काम को दो घंटे में निपटा देता। पर क्या करें, वह विवश है।

थानेदार को सक्सेना का व्यवहार अच्छा नहीं लग रहा है। इसीलिए वह यह अनुभव कर रहा है कि यदि पुलिस का कोई बड़ा अफसर इन गाँव वालों से पुचकार-पुचकार करके या प्यार भरी भाषा में बयान लेता तो निश्चय ही वे लोग उन सभी बातों को उगल देंगे जो इन्हें नहीं कहनी चाहिए। हकीकत यह है कि थानेदार को एस.पी. साहब द्वारा लिये जा रहे बयान कम लग रहे हैं, अपितु कथा-कहानियाँ या किस्से जैसे अधिक लग रहे हैं। गाँव वालों से जब तक किसी व्यक्ति का पाला नहीं पड़ता है, तब तक वह उन्हें भोला-भाला समझता है। यही स्थिति यहाँ भी है। सक्सेना साहब के व्यवहार से गाँव वाले बहुत-सी कहनी-अनकहनी बातें कह रहे हैं और सक्सेना साहब उन्हें बड़े प्रेम से सुने जा रहे हैं। वास्तव में सक्सेना साहब यह नहीं समझते हैं कि गाँव वाले जरा भी शह पाकर सीधे सिर पर सवार हो जाते हैं। ये गँवार लोग हैं, इन्हें हमेशा जूते की नोंक पर रखना चाहिए। जूते की नोंक पर रहने से ही ये लोग ठीक रहते हैं, प्यार की भाषा से तो ये लोग सिर पर सवार हो जाते हैं। यह बात तो हीरा के साथ है, अभी जब बिन्दा बयान देगा तो न मालूम वह कौन-कौन-से रहस्यों को उद्घाटित कर देगा।

विशेष–1. अवतरण के अन्तर्गत थानेदार साहब की मानसिकता, उनकी विचारधारा और उनके आचार-व्यवहार वाली शैली को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है।

2. अवतरण की भाषा प्रसंगानुकूल है, विषयानुकूल है और सबसे बड़ी बात यह है कि वह सहज, सरल और व्यावहारिक है।

3. मन्नू भण्डारी ने इस अवतरण में कुछ अच्छे मुहावरों का प्रयोग भी किया है। गीदड़ बनाकर रख देना, पाला न पड़ना, खोपड़ी पर सवार होना, जूते की नोंक पर रखना और गुल खिलाना आदि ऐसे ही प्रयोग हैं। इन प्रयोगों से भाषा में लाक्षणिक सौन्दर्य भी आ गया है।

(25)

''सुना है आतंक जमाने वाला पुलिसी रवैया नहीं है तुम्हारा। बहुत अच्छी बात है, मैं कद्र करता हूँ इसकी, इसलिये तुम्हें सौंपा भी गया है, यह काम। एक बार फिर से बयान लो लोगों के और इस तरह पेश आओ कि हिम्मत और हौंसला जागे लोगों का और वे अपनी बातें कहें....बिना झिझक और डर के कहें। हमें लोगों का विश्वास जीतना है।''

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से अवतरित है जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने बताया कि बिसेसर की मौत होने पर एस.पी. सक्सेना को उसकी जाँच के लिये सरोहा गाँव में भेजा गया। इसके साथ ही दा साहब ने एस.पी. सक्सेना को अपने पास बुलाया, लेखिका मन्नू भण्डारी ने इसी प्रसंग की पुष्टि की है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

व्याख्या – जब बिसेसर की मौत की जाँच के लिये एस.पी. सक्सेना को नियुक्त किया जाता है तो दा साहब उसे अपने पास बुलाते हैं और कहते हैं कि पुलिस अधिकारियों का जनता पर रौब जमाने वाला रवैया होता है, परन्तु ऐसा सुना है कि तुम्हारा व्यवहार ऐसा नहीं है, मैं ऐसे स्वभाव की कद्र करता हूँ क्योंकि जनता पर रौब जमाना या उन्हें डराना-धमकाना अच्छी बात नहीं है। तुम्हें सरोहा गाँव में जाँच का काम सौंपा गया है। दा साहब ने कहा कि एक बार फिर सरोहा गाँव में जाकर लोगों के बयान वापस लो और इसी तरह से पेश आओ कि लोगों के मन में तुम्हारे प्रति आतंक न हो और वे अपनी बात तुम्हारे सामने पूरे-पूरे हौसले के साथ स्वतंत्रता पूर्वक कह सकें।

विशेष – 1. प्रस्तु अवतरण में दा साहब की राजनीतिक दूरदर्शिता एवं अवसर अनुकूल आचरण की विशेषता व्यक्त की है।

2. भाषा सरस, प्रसंगानुकूल और भावानुरूप है।

(26)

''जुर्म। एकाएक लपट-सी कौंधी बिन्दा की आँखों में, ''जुर्म की पहचान रह गई है आप लोगों को ? बड़े-बड़े जुर्म आप लोगों को जुर्म नहीं लगते हैं ? जिन्दा आदमियों को जला दो.....मार दो.....यह सब जुर्म नहीं है न आपकी नजरों में ? आँखों के डोरे सुर्ख हो गये और कनपटी की नसें तनने लगी बिन्दा की। रुक्मा ने उसके आवेश को कम करने के लिये कस कर उसकी बाँह पकड़ ली। भय से उसका चेहरा सर्द पड़ने लगा पर सक्सेना के चेहरे पर फिर भी कोई विकार नहीं आया।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से लिया गया है जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने सक्सेना एस.पी. और बिन्दा की बातचीत का वर्णन किया है। एस.पी. सक्सेना बिन्दा का बयान ले रहे हैं।

व्याख्या – वास्तव में बिन्दा गाँव का एक स्वाभिमानी व्यक्ति है। समझदार और हिम्मतवाला है। वह इतना स्पष्टवादी है कि उसे किसी का भय नहीं है और बात करने में जरा भी संकोच नहीं करता है। उसकी भाषा अक्खड़ है, वह उसी स्वाभाविक अंदाज में एस.पी. सक्सेना का जवाब देते हुए कहता है कि ''हीरा काका तो आज कल आपके समधी बने हुये हैं। तभी तो जिसे देखो वही, धोती की लाँग उठाये इधर चला आ रहा है। बिन्दा की भाषा ऐसी थी कि जिसे सुनकर हर कोई तिलमिला जाये, किन्तु एस.पी. सक्सेना पर उसकी बातों की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। सक्सेना केवल इतना कहते हैं कि ''बिन्दा तुम्हें यह अच्छी तरह से जान लेना चाहिये कि सरकारी बुलावे पर न आना एक प्रकार का जुर्म है। सक्सेना साहब के मुख से 'जुर्म' शब्द सुनकर बिन्दा के तेवर बदल जाते हैं और वह सीधी सपाट व तेज तर्रार भाषा में कहता है – आप जुर्म की बात कर रहे हैं। मेरी दृष्टि में तो आप 'जुर्म' की पहचान ही नहीं कर सकते हैं। आप बड़े-बड़े जुर्मों को मामूली घटना समझ के टाल देते हैं और आपको जब इच्छा होती है तब किसी भी छोटी से छोटी बात को जुर्म का रूप दे देते हो। आज स्थिति यह हो गई है कि आप पुलिस वालों को बड़े-बड़े अपराध भी अपराध नहीं लगते हैं और आप लोग उन पर पर्दा डाल देना चाहते हो क्योंकि अपराधियों से आपकी सांठ-गांठ रहती है।

आज कल तो कोई जिन्दा व्यक्तियों को जला दे, उन्हें मार दे तब भी वह आपकी नजर में अपराध नहीं है, आप लोग सभी मनमानी करते हैं, अपनी इच्छा के अनुसार काम करते रहते हैं और चाहते हैं कि अपराधी आपके पास आते रहें और आपकी शरण लेकर जेबें भरते रहें।'' ऐसा कहते हुए बिन्दा की कनपटी की नसें फड़कने लगीं और आँखें लाल होने लगी। उसे क्रोध आ गया। रुक्मा बिन्दा के साथ आई हुई थी। उसने जब बिन्दा को आवेश में आते हुए देखा तो कसकर उसकी बाँह पकड़ ली ताकि बिन्दा नियंत्रण में आ जाये। वह भयभीत हो गई थी और भय के कारण उसका चेहरा पीला पड़ गया किन्तु इन सब परिस्थितियों पर एस.पी. सक्सेना पर कोई प्रभावनहीं पड़ा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बिन्दा के तेज-तर्रार, अवेश युक्त और क्रोधी व्यक्तित्व का चित्रण हुआ है।

2. प्रस्तुत अवतरण में आँखें लाल होना, नसें तनना, चेहरा पीला पड़ना आदि मुहावरों का प्रयोग किया गया है।

3. सम्पूर्ण अवतरण में आवेशमय शैली का प्रयोग किया गया है। अन्तिम पंक्तियों में बिम्ब प्रधान भाषा शैली का प्रयोग किया गया है।

4. भाषा सरल किन्तु प्रभावशाली है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(27)

''बिन्दा की आँखों में फिर कुछ दहकने लगा और कनपटी की नसें फड़कने लगी, ''क्योंकि वह जिन्दा था। जिन्दा रहने का मतलब समझते हैं न आप ? लोग भूल गये हैं, जिन्दा रहने का मतलब, इसलिये पूछ रहा हूँ।'' एक क्षण रुका बिन्दा। सक्सेना एक टक उसका चेहरा देख रहे थे। उसके आवेश को देखते रहे और बिन्दा उसी रौष में कहता रहा – ''और जो जिन्दा हैं वे जी नहीं सकते अपने इस देश में। मार दिये जाते हैं, कुत्ते की मौत। जैसे बिसू को मार दिया गया, सोच-सोच कर ही दिमाक की नसें फटने लगती हैं।'' और सचमुच ही बिन्दा के दोनों हाथों से कसकर अपना सिर पकड़ लिया।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से लिया गया है जिसमें एस.पी. सक्सेना और बिन्दा के बीच वार्ता का वर्णन किया गया है। इसमें बिन्दा स्पष्ट शब्दों में कह देता है कि थानेदार जो कि जोरावर का रखैल है उसने रिपोर्ट तैयार कर ली है, दा साहब ने मान लिया है कि बिसेसर की आत्महत्या का मामला है और 'मशाल' नामक अखबार में भी छप गया है किन्तु मैं इस बात को मानने के लिये कतई भी तैयार नहीं हूँ। भले ही बिसेसर की हत्या की फाइल आपकी और कानून की नजर में बन्द हो गई हो। मैं इस बात को हरगिज मानने को तैयार नहीं हूँ कि बिसेसर ने आत्महत्या की है। जो व्यक्ति जिन्दगी से इतना प्यार करता हो, अपनी ही नहीं बल्कि सबकी जिन्दगी से.....फिर वह आत्महत्या भला कैसे कर सकता है ? वह मरा नहीं है बल्कि उसे मार दिया गया है। आखिर उसे मारने वाला कौन है ? इसी बात को उजागर करने के लिये बिन्दा के शब्दों को प्रस्तुत अवतरण में वाणी दी गई है –

व्याख्या – प्रस्तुत प्रसंगानुसार बिन्दा अपने बयान देता है और कहते-कहते उसकी आँखों में जैसे आग लगने लगती है और क्रोध व तनाव के कारण उसकी कनपटी की नसें फटने लगती हैं। बिन्दा जीवित था, उसकी अनुभूतियाँ जीवित थीं। वह जो अनुभव करता था उसे कहने की हिम्मत रखता था। उसने अपने जिन्दा रहने का सबूत देते हुए सक्सेना साहब से पूछा कि ''क्या आप जिन्दा रहने का मतलब समझते हो ? मेरी दृष्टि में आप भी नहीं समझते हो और अन्य लोग भी जिन्दा रहने का मतलब भूल गये हैं, इसीलिये मैं आपसे यह प्रश्न कर रहा हूँ। बिना यह कहना चाहता है कि व्यक्ति अपने अधिकारों के लिये जाग्रत रहता है, जो शोषण सहन नहीं कर सकता, अन्याय बर्दाश्त नहीं कर सकता, न्याय का पक्षधर होता है, वही जिन्दा है, जिस क़ौम में ये बातें नहीं होती हैं वह क़ौम भी मर जाती है।'' बिन्दा कुछ क्षणों के लिये रुक गया। सक्सेना साहब उसका आवेशयुक्त चेहरा देखते रहे। वे कुछ भी नहीं बोले और बिन्दा उसी प्रभावपूर्ण जोश में सब कुछ कहता रहा।

बिन्दा कहना चाहता था कि हमारे देश में हालत यह हो गई है कि सभी लोगों ने अपनी आत्मा को गिरवी रख दिया है, अपने स्वाभिमान को मिटा दिया है। यहां तक कि व्यक्ति सही ढंग से जो नहीं पा रहा है और जो जीवित रहता है उसे लोग कुत्ते की मौत मार डालते हैं, जैसे कि बिसेसर को मार दिया। बिसेसर जीवित था और वह जिन्दा रहता चाहता था। जब मैं रोज-रोज लोगों की हालत देखता हूँ तो मेरे इस दिमाग की नसें फटने लगती हैं। समझ में तो यह नहीं आता कि इस देश का आगे क्या होगा।'' ऐसा कहते हुए दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बिन्दा की मानसिकता और उसके आवेशज स्वभाव का यथार्थ रूप सामने आया है।

2. सम्पूर्ण अवतरण भावात्मक और विचारात्मक शैली में लिखा गया है जिसका एक-एक शब्द रेखांकित करने वाला है।

3. वर्तमान राजनीति और शासन तंत्र की स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

4. भाषा सरल किन्तु प्रभावशाली है।

(28)

''महीनों से क्या होता है साहब। यह तो मन मिलने की बात है। हमको तो खरा आदमी मिल जाये तो एक दिन में ही हम उसके गुलाम हो जायें। देखने को भी मिलता कहाँ है आजकल खरा आदमी ?'' फिर रुक्मा की ओर देखकर बोला – ''यह जो औरत है न साहब। बेहद बदजबान और बदमिजाज औरत है। कोई आदमी बर्दाश्त नहीं कर सकता है ऐसी औरत को, पर मैं करता हूँ। बर्दाश्त ही नहीं, आदर करता हूँ साहब। बाहर से भीतर तक कुन्दन की तरह खरी। बिसू की असली चेली है। परन्तु कैसी सहम गई है बिसू की मौत के बाद।''

Jainvishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से अवतरित है जिसमें एस.पी. सक्सेना साहब की वार्ता बिन्दा से हो रही है, वे बिन्दा और बिसेसर की दोस्ती के बारे में जानना चाहते हैं। यद्यपि वे हीरा से जान चुके हैं उनके बारे में फिर भी वे इस बात से स्पष्ट हो जाना चाहते हैं कि इतने कम समय में वे इतने क़रीब कैसे आ सकते हैं ?

व्याख्या – एस.पी. सक्सेना अपनी पैनी निगाहों का सहारा लेकर यह जानना चाहते हैं कि बिसेसर और उसकी इतनी जल्दी दोस्ती कैसे हो सकती है। बिन्दा इसके उत्तर में यह बताता है कि आत्मीय बनने के लिये लम्बी अवधि की आवश्यकता नहीं होती है। घनिष्टता का सम्बन्ध वर्षों और महिनों से नहीं होता है, इसका सम्बन्ध तो मन से होता है। जब दो व्यक्तियों के मन मिल जाते हैं तो वेपल भर में एक दूसरे के लिये जान छिड़कने को तैयार हो जाते हैं। कई बार देखा जाता है कि वर्षों तक साथ रहने पर भी लोग आत्मीय नहीं हो पाते हैं और कई बार कुछ घंटों में ही लोग एक दूसरे के इतने करीब आ जाते हैं कि.....। घनिष्टता मन से होती है, समय से नहीं।

बिन्दा ने कहा कि मैं तो उन व्यक्तियों में से हूँ कि यदि कोई खरा व्यक्ति मिल जाये तो एक दिन में ही उसकी गुलामी करने को तैयार हो जाता हूँ। बिसेसर ऐसा ही खरा आदमी था, परन्तु आजकल तो ऐसे लोगों का अकाल सा पड़ गया है।

अपनी बात कहते हुए बिन्दा ने रुक्मा की ओर इशारा किया – ''यह जो रुक्मा नाम की औरत है, यह बदजुबान और बदमिजाज औरत है। इसे कोई भी व्यक्ति आमतौर पर ऐसी औरत को बरदाश्त नहीं कर सकता है पर मैं इसे सहन करता हूँ। इसके लिये मेरी सहनशीलता अकारण नहीं हे बल्कि यह बाहर और अन्दर से बिल्कुल खरे सोने की तरह से है। इसके व्यवहार में न कोई मिलावट है और न इसके मन में किसी प्रकार का कपट ही है जिसकी वजह से मैं इसे न केवल सहन ही करता हूँ, अपितु उसका सम्मान भी करता हूँ। बिसेसर भी ऐसा ही था ओर यह उसी का आचरण करने वाली है। जब से बिसेसर की मृत्यु हुई है, तब से यह सहम गई है, अब तो ऐसा लगता है जैसे इसकी सारी शक्ति समाप्त हो गई हो और इसके जीने का उत्साह भी मर गया हो।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बिसेसर के खरे व्यक्तित्व की जानकारी दी गई है।

2. रुक्मा के व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हुए उसकी निष्कपट और स्पष्टवादिता का गुण प्रकट किया गया है।

3. प्रस्तुत अवतरण के माध्यम से बिन्दा, बिसेसर और रुक्मा तीनों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं।

4. भाषा सरल, रोचक और प्रभावशाली है।

(29)

''रुक्मा के आँसुओं ने जैसे बिन्दा के सारे तैश ओर आवेश को धो दिया। बहुत ही कातर स्वर में बोला, ''ऐसा आतंक आपने कहीं नहीं देखा होगा, साहब। लोगों के घर, जमीन और गाय-बैल ही रहन नहीं रखे गये हैं। जोरावर और सरपंच के यहाँ उनकी आवाज और जबान तक भी बन्धक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।'' उसकी आवाज में फिर आक्रोश घुलने लगा ओर कनपटी की नसें फड़कने लगीं। गुस्से में वह कह उठा, ''मन करता है फाबड़ा लेकर दो टुकड़े कर दूँ जोरावर के, फिर चाहे फांसी पर लटक जाऊँ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से अवतरित है, इसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने सक्सेना (एस.पी.) साहब से बातचीत करते समय बिन्दा की मनःस्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या – एस.पी. सक्सेना साहब से बातचीत के दौरान बिन्दा आवेश में आ जाता है, यद्यपि रुक्मा उसे नियंत्रण में लाने का प्रयास करती है किन्तु वह उसे झटकता हुआ अपनी बात अपने ढंग से कहता रहा। जब रुक्मा बिन्दा के सामने रोने लगती तो वह शान्त हो गया। विशेष बात यह है कि लेखिका मन्नू भण्डारी ने बिन्दा के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि जोरावरसिंह और गाँव का सरपंच अपनी सीमा से अधिक तानाशाह बना हुआ है। रुक्मा के आँसुओं का प्रवाह जब नहीं रुका तो बिन्दा भी उसके समक्ष पराजित-सा हो गया। बिन्दा के मन में जो अब तक आवेश था वह रुक्मा के आँसुओं से धुल-सा गया और वह भावुक होता चला गया और सक्सेना साहब से कहने लगा ''क्या बताऊँ सरकार! जैसा आतंक उस गाँव में जोरावर और सरपंच ने मचा रखा है, वैसा आपने कहीं भी नहीं देखा होगा।''

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बिन्दा ने कहा कि ''साहब ! आप यह ठीक प्रकार से जान लें कि जोरावर और सरपंच के आतंक का सिलसिला जारी है। उन्होंने अपनी अत्याचारी मनोवृत्ति के कारण लोगों के घर, खेत, खलिहान, गाय-बैल भी गिरवी रखे हुए हैं। उनका आतंक इतना फैल रहा है कि लोग उनके आगे अपनी जुबान तक नहीं खोल पाते हैं। ऐसा लगता है कि लोगों की आवाज तक उनके रहम रखी हुई हैं। किसी में इतनी भी हिम्मत नहीं है कि उनके आगे चूँ भी कर सके। ऐसा कहते-कहते बिन्दा पुन: आक्रोश में भर गया और उसकी कनपटी की नसें पुन: फड़कने लगीं और उसने सक्सेना साहब से स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि ''साहब ! अगर मेरा वश चले तो मैं फावड़ा लेकर जोरावर के शरीर के दो टुकड़े कर दूँ, फिर चाहे मुझे फाँसी ही क्यों न हो जाये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बिन्दा की वाणीगत स्वतंत्रता को स्पष्ट किया गया है और वह सत्य के लिये प्राण देने तक के लिये तत्पर रहता है।

2. अवतरण में जहाँ एक ओर आवेश युक्त भाषा का प्रयोग किया गया है वहीं दूसरी ओर अवतरण में काव्यात्मक भाषा को भी काम में लिया गया है।

(30)

''आदमी जब अपनी सीमा और सामर्थ्य को भूल कर कामना करने लगे तो समझ लो, पतन की दिशा में उसका कदम बढ़ रहा है। मूर्ख हैं दोनो। और चौधरी उसकी क्या औकात भला। जो मिला है उसके लायक भी नहीं है वह तो।''

''मैंने उन्हें नौ बजे आपसे मिलने के लिये कह दिया है।'' फिर भी एक क्षण रुककर बोले, ''लेकिन राम को जरूर कुछ-न-कुछ देना होगा, मैंने खूब बारीकी से सारी स्थिति देख ली है। बापट और मेहता के आ जाने के बाद भी हमारी स्थिति अधिक मजबूत नहीं हुई है बल्कि डावाडोल-सी रहती है। लोचन तो अपनी जगह एर अडिग है ही, उससे तो कोई बात ही नहीं हो सकती है। हाँ राव निकल आता है तो फिर लोचन के पाँव तले भी जमीन नहीं रहेगी।'' स्थिति शीशे की तरह साफ कर दी पाण्डे ने।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' के अन्तर्गत है जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्पष्ट किया है कि त्रिलोचन बाबू अपने कुछ विधायकों को साथ लेकर दा साहब के प्रति अविश्वास प्रस्ताव लाना चाहता है। उन्हें यह विश्वास है कि उन्हें वे अपने बल-बूते पर परास्त कर देंगे।

व्याख्या – जब त्रिलोचनसिंह अपने कुछ विधायकों के साथ मिलकर दा साहब के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव की तैयारी यह सोचकर करते हैं कि वे अकेले दा साहब का तख्ता पलट देंगे तो इस बात का अहसास दा साहब को भी पहले से है। दा साहब की तो यह एक विशेषता है कि वे ऐसी बातों से घबराते नहीं हैं बल्कि बिना किसी छद्म नीति से अपनी चतुराई के द्वारा ही वे ऐसे मामलों से निपटना जानते हैं। वे कर्म में विश्वास रखने वाले और सच्चाई व ईमानदारी को अधिक से अधिक बल व महत्त्व देने वाले हैं इसलिये वे असंतुष्ट नेताओं की षड्यंत्रकारी योजनाओं से विचलित नहीं होते हैं।

त्रिलोचन बाबू ने अपने साथ चार अन्य मंत्रियों के साथ मिलकर त्याग-पत्र देने की योजना बनाई है। इन लोगों में राव व चौधरी भी हैं। स्थिति यह बन गई कि राव और चौधरी दोनों ही दा साहब से मिल गये हैं तथा सारी बात उनके सामने स्पष्ट कर दी गई है, वैसे दा साहब कोई महत्त्वपूर्ण मंत्रालय इनको देने के पक्ष में नहीं थे और इस संदर्भ में उन्होंने पाण्डेजी से विचार विमर्श किये गये।

दा साहब ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सीमा व सामर्थ्य के अनुसार काम करना चाहिये और उसी के आधार पर उसे पद मिलना चाहिये। जब व्यक्ति अपनी सामर्थ्य और सीमा से अधिक पाने की लालसा करने लग जाता है तो समझ लो कि उसके कदम विनाश की दिशा में बढने लग गये हैं। दा साहब ने स्पष्ट किया है कि राव और चौधरी तो मूर्ख हैं। ये न तो अपनी योग्यता से परिचित हैं और न इन्हें अपनी मूर्खताओं का ही ज्ञान है जिसमें चौधरी की तो कोई औकात ही नहीं है। इस बात पर दा साहब के विश्वसनीय व्यक्ति पाण्डे बोले कि मैंने राव और चौधरी दोनों से कह दिया है कि नौ बजे उन्हें दा साहब से मिलवा दिया जायेगा। सत्य यह है कि राव को तो कुछ-न-कुछ देना ही होगा। पाण्डेजी ने दा साहब को स्पष्ट समझा दिया कि त्रिलोचन अपने निर्णय पर अडिग है। बापट और मेहता जैसे दो व्यक्ति यदि हमारे पक्ष में आ जाते हैं तो भी हमारी स्थिति मजबूत नहीं होगी बल्कि वह डाँवा-

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

डोल सी ही रहेगी। लोचन बाबू से कोई बात नहीं की जा सकती है, हाँ इतना अवश्य है कि यदि राव लोचन के चंगुल से निकल कर हमारे पक्ष में आ जाये तो निश्चित रूप से लोचन की स्थिति कमजोर हो जायेगी। वह अपने आपको अकेला और आधारहीन समझने लगेगा। आप इस बात को अच्छी तरह समझ लें। मैंने सारी स्थिति को आमने-सामने शीशे की तरह से रख दिया है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में राजनीति के दाव-पेचों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

2. पाण्डेजी का स्पष्टवादी और विश्लेषणवादी रूप स्पष्ट किया गया है।

3. अवतरण का यथा अनुकूल और राजनीति के दाव-पेचों से युक्त है।

(31)

''चाहूँ तो इन्क्वारी भी बिठा सकता हूँ कि रैली के नाम पर पानी की तरह बहाया जाने वाला यह रुपया कहाँ से आया ? पर नहीं यह घटियापन मैं नहीं करूँगा। राजनीति मेरे लिये स्वार्थ नीति नहीं है और चाहता हूँ कि मेरे साथ काम करने वाले लोग भी इस बात को अच्छी तरह समझ लें।''

राव का चेहरा बुझने लगा। पाँव केनीचे पुख्ता जमीन हुए बिना ऐसी धार नहीं आ सकती थी दा साहब की आवाज में। लगता हैअपना पक्ष पूरी तरह मजबूत कर लिया है दा साहब ने। तब क्या कहे वह ?

''तुमने अपनी माँग नहीं रखी ?'' बात को वापस लाइन पर ले आये दा साहब, पर राव सचमुच ही लाइन से उखड़ा हुआ महसूस कर रहे हैं। झिझकते हुए कहा, ''आप हमें हमारा ड्यू जरूर दीजिये।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''महाभोज'' से अवतरित है जिसमें मन्नू भाण्डारी ने स्पष्ट किया है कि जब मुख्यमंत्री दा साहब मिस्टर राव से बातचीत कर रहे थे तो कौन-कौन सी बातें उभर कर सामने आई हैं। दा साहब अपने ढंग से राव से बात करते हैं और वे यह भी स्पष्ट रूप से कह देते हैं कि तुम लोग अपने अविश्वास की या असंतोष की बातें करके अपने भाव क्यों बढा रहे हो ? राव यह जानता है कि दा साहब का रुख अपने अनुकूल नहीं है इसलिये अपनी ओर से कुछ न कहकर सुकुल बाबू की रैली की बात चला दी और कहने लगे कि सुकुल बाबू की रैली बहुत जोरदार है, हमें इस दिशा में भी कुछ करना चाहिये।

व्याख्या – दा साहब और राव की बातचीत के दौरान जब रैली की बात आ गई तो दा साहब कहते हैं कि यदि मैं चाहूँ तो रैली करने वालों के खिलाफ इन्क्वारी बिठा सकता हूँ। उसमें यह प्रश्न सहज ही उठाया जा सकता है कि रैली के नाम पर पानी की तरह बहाया जाने वाला रुपया कहाँ से आया है ? किन्तु राव ! तुम यह विश्वास करो कि मैं ऐसा घटिया कदम नहीं उठाऊँगा। क्योंकि मैं राजनीति को स्वार्थ-नीति का पर्याय नहीं बनाना चाहता। मैं तो राजनीति को धर्मनीति के रूप में स्वीकार करता हूँ। और यह भी जानता हूँ कि जो लोग मेरे साथ काम करें वे भी मेरी इस विचार-धारा को न केवल अपनायें बल्कि इसे जीवन में भी आत्मसात् करें।

दा साहब की बातें सुनकर राव का चेहरा बुझ गया। वह समझ गया कि दा साहब जो कह रहे हैं और उनकी आवाज में जो दृढ़ता है उससे स्पष्ट होता है कि उन्हें इस सम्बन्ध में पूरी-पूरी जानकारी है अत: इनके खिलाफ किसी प्रकार का कदम उठाया जाना उचित नहीं है। दा साहब ने राव से पूछा कि ''तुमने यह नहीं बताया कि तुम चाहते क्या हो, अर्थात् तुम्हारी माँग क्या है ?'' दा साहब की इस बात पर राव अपने आप को लाइन से उखड़ा हुआ महसूस करने लगा। उसे लगा कि यहाँ कोई भी अतिरिक्त माँग स्वीकार नहीं की जायेगी। इस लिये राव ने बड़े संकोच के साथ यह कहा कि ''मुझे कुछ नहीं करना है, मेरी कोई मांग नहीं है। मैं तो केवल यही चाहता हूँ कि मुझे मेरा ड्यू अवश्य मिल जाना चाहिये अर्थात् पूर्व में दिये गये आश्वासन के अनुसार मुझे मेरा पद मिलना चाहिये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में वर्तमान राजनीति की उठा-पटक, सौदेबाजी और राजनीतिज्ञों की महत्त्वाकांक्षा को व्यक्त किया गया है।

2. यह भी स्पष्ट किया गया है कि जो पक्के राजनीतिज्ञ होते हैं वे किसी भय या दबाव से कोई काम नहीं करते हैं।

3. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब के व्यक्तित्व की दृढ़ता और अपने क्षेत्र की शुद्धता का स्पष्टीकरण होता है।

4. चेहरा बुझना, पैरों तले पुख्ता जमीन होना, उखड़ा हुआ महसूस करना आदि वाक्यों से अवतरण सशक्त बन गया है।

5. भाषा, सरल, रोचक और भावानुकूल है।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(32)

''सुकुल बाबू की विधानसभा में जन-विधायक था तो उसने हवा का रुख भाँप लिया था और समझ लिया था कि जल्दी ही दिन पूरे होने वाले हैं अब सुकुल बाबू के। झट से त्याग पत्र दिया और विद्रोह की मुद्रा में खड़ा हो गया। बाद में विद्रोह की क़ीमत वसूल की और यहाँ शिक्षामंत्री बन गया। अब सुकुल बाबू से मोल भाव, हमसे विरोध चल रहा है, उसका जिसने सारे सिद्धान्त और आदर्श, सारा विद्रोह और विरोध मात्र अपना भाव बढ़ाने के लिये ही उसके लिये किसी तरह का सम्मान या सद्भाव नहीं रहता मेरे मन में।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से लिया गया है, जिसमें मन्नू भण्डारी ने स्पष्ट किया है कि दा साहब के समक्ष राव और चौधरी दोनों बैठे हुए हैं और वे कह रहे हैं कि यदि दा साहब को अपने पक्ष में करना है तो निश्चित रूप से वित्त विभाग और गृहविभाग अवश्य रूप में मिलना चाहिये। दा साहब उनकी बातें सुनकर पहले तो यह कहते हैं कि ''देखो! तुम लोग अभी बच्चे हो तुम्हें आदमी की अभी पहचान नहीं है।'' दा साहब दोनों को समझाते हैं।

व्याख्या—दा साहब मिस्टर राव और चौधरी को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तुम दोनों अभी राजनीति में बच्चे हो और उम्र में त्रिलोचन भी तुमसे बड़ा नहीं है पर आदर्शों को तिलांजलि देकर राजनीति के दाव-पेच खेलना उसे खूब आता है। इसी वजह से मेरे मन में उसके प्रति कोई भी सम्मान नहीं है।

दा साहब की बातें सुनकर राव के चेहरे पर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं हुई और उन्होंने बात को आगे बढ़ाया और कहा कि ''सुकुल बाबू की विधानसभा में जब त्रिलोचन विधायक था तब उसने हवा के रूख को भाँप लिया था और वह यह जान गया था कि उनके दिन अब पूरे होने वाले हैं। स्थिति को देखकर त्रिलोचन ने तुरन्त त्याग-पत्र दे दिया। त्याग-पत्र के साथ ही उसने विद्रोह की मुद्रा अपना ली। परिणाम स्वरूप सुकुल बाबू उसी के बल-बूते पर मेरे मंत्रिमण्डल में शिक्षामंत्री बन गया। प्रारम्भ में तो वह ठीक-ठाक चलता रहा किन्तु अब शायद मुख्यमंत्री पद पाने के लिये हमारा विरोध कर रहा है। सच्चाई तो यह है कि उसके पास कोई सिद्धान्त नहीं है और कोई आदर्श नहीं है वह आजकल जो खेल खेल रहा है उसमें भी उसे किसी प्रकार की सफलता नहीं मिलेगी।

दा साहब ने स्पष्ट किया है कि त्रिलोचन का मानस कुछ इस प्रकार का बन गया है कि वह वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट रहकर आदर्शों और सिद्धान्तों का समर्थक बनकर विद्रोह और विरोध के भाव लिये हुए अपना काम बनाने की धुन में है। केवल इसीलिये कि उसे केवल अपना भाव बढ़ाना है। आपकी वर्तमान स्थिति का मूल्य प्राप्त करना है। हो सकता है कि उसकी यह स्थिति उसे विजय दिला ले, किन्तु मेरे होते हुए यह संभव नहीं है। क्योंकि जो भी व्यक्ति अपना भाव बढ़ाने के लिये विद्रोह अपनाता है उस व्यक्ति केप्रति मेरे मन में किसी प्रकार के सम्मान का भाव नहीं रहता है।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में त्रिलोचन बाबू की मन:स्थिति को दा साहब के माध्यम से प्रकट किया गया है।

2. लेखिका ने दा साहब को एक सिद्धान्तवादी व आदर्शवादी बताने के लिये स्पष्ट किया है कि उन्हें भाव बढ़ाने के लिये विद्रोह करने वाले व्यक्ति को दा साहब बिल्कुल भी पसन्द नहीं करते हैं।

3. प्रस्तुत अवतरण की भाषा मूल चेतना के अनुसार सरल और प्रभावकारी है।

(33)

''कतई बुरा नहीं माना दा साहब ने राव की इस बात का, बल्कि हँसे। महज विनोद में लिपटी हँसी.....।'' अपने साथ रखकर हवा में खूब ऊँचे तक तो नहीं ले जा सकता, पर जहाँ तक ले जाता हूँ, वहाँ खड़े होने के लिये कम से कम पाँव के नीचे जमीन जरूर देता हूँ। मेरे साथ में चलने वालों को औंधे मुँह गिरने का खतरा कतई नहीं रहता है, अब तुम सोच लो।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' से लिया गया है, जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्पष्ट किया है कि दा साहब उत्पन्न परिस्थिति के संदर्भ में किसी प्रकार की प्रतिक्रिया प्रकट नहीं करते हैं। वे राव की सारी बातें सुनकर केवल विनोद भाव व्यक्त करते हैं और जो कुछ भी वे कहते हैं वह भावानुकूल ही कहते हैं।

व्याख्या—राव की मानसिकता भले ही कुछ-न-कुछ प्राप्त करने की हो किन्तु वे दा साहब से स्पष्ट रूप में कुछ भी नहीं कह पाते हैं, वे केवल यही कह पाते हैं कि उनको उनका हक़ प्राप्त होना चाहिये। दा साहब उनकी बात सुनकर हँसते हैं और कहते हैं कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

त्रिलोचन ने तुम्हें अपने साथ रखकर खूब ऊँचाई तक उड़ना सिखा दिया है। अभी तुम उड़ान मात्र की बात सोच रहे हो और तुम्हारे पैर जमीन पर नहीं टिक रहे हैं। तुम भी त्रिलोचन की तरह उड़ान भर कर अपनी स्वार्थसिद्धि करना चाहते हो, यह स्थिति व्यावहारिक नहीं है।

दा साहब ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि देखो भाई। मैं तुम लोगों को बहुत ऊँचाई तक ही नहीं ले जा सकता, किन्तु इतना अवश्य है कि जहाँ तक भी तुम्हें ले जाऊँगा उस ऊँचाई पर खड़े रहने के लिये तुम्हें पैरों के नीचे पुख्ता जमीन अवश्य प्रदान कर दूँगा। तुम्हें मेरे साथ रहते औंधे मुँह गिरने का कतई भी खतरा नहीं होगा अर्थात् मैं तुम्हें जो पद दूँगा इस पर चाहे जब तक मजबूती से खड़े रह सकते हो। अब यह तुम्हारे ऊपर निर्भर है कि तुम क्या सोचते हो और कैसे मेरा साथ देते हो। जो स्थायित्व तुम्हें मेरे साथ रहकर मिलेगा वह त्रिलोचन के साथ नहीं मिल पायेगा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दा साहब की राजनैतिक कुशलता, काम करने की प्रक्रिया और साथियों को साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

2. लेखिका ने अवतरण में दा साहब को एक कुशल राजनेता के रूप में प्रस्तुत किया है।

3. अवतरण की भाषा, सरल, सटीक और सार्थक है।

(34)

"आज तक वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो जरूर गये हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं पर छोड़कर भाग आये हैं।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास "महाभोज" से अवतरित है जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने स्पष्ट किया है कि सरोहा गाँव चुनाव काल के दौरान राजनीति के रंग में सारा वातावरण रंग जाता है। सभी नेतागण बिसेसर की मौत को लेकर अपना स्वार्थसिद्ध करने में लग जाते हैं।

व्याख्या – एस.पी. सक्सेना को मौत की जाँच के लिये नियुक्त किया जाता है किन्तु राजनीति के दबाव के कारण उन्हें हटाकर डी.आई.जी. पुलिस को यह काम सौंप दिया जाता है। उसके अनुसार बिन्दा को बिसेसर का हत्यारा मानकर उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है। एस.पी. सक्सेना को लापरवाही बरतने के कारण सस्पेंड कर दिया जाता है। इस घटना से सक्सेना साहब अपनी कमजोरी व ईमानदारी के संदर्भ में सोचते रहते हैं।

सक्सेना साहब सोचते हैं कि बिसेसर की मौत के अपराधी की खोज में वे सरोहा गाँव में डटे रहे और बिन्दा को भी सबसे मिलवाते रहे। किन्तु राजनैतिक दबाव के कारण असली अपराधी तो छूट गये और निर्दोष लोगों को पकड़ लिया है। सक्सेना साहब सोचने लगे कि जब भी निर्णय की स्थिति सामने आई तो वे अपने भीतर के आवेश को व्यक्त नहीं कर सके तथा बाहरी दबाव में आकर हमेशा दूसरों के सामने घुटने टेकते रहे। आजादी की जंग के अवसर पर जब वे युवक थे तो वे अपने मित्र दिनेश को स्वतंत्रता आन्दोलन में अपने साथ ले जाते थे। एक बार जब अंग्रेजों की ओर से गोलियाँ चलाई जाने लगी तो वे दिनेश को अकेला छोड़कर स्वयं भागकर आये थे। वर्तमान में भी वे अपना साथ देने वाले बिन्दा को नहीं बचा सके थे। इस बात से सक्सेना साहब को आत्मग्लानी हो रही है और वे स्वयं को अपराधी व लाचारी से ग्रस्त अनुभव कर रहे हैं।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में सक्सेना साहब की ईमानदारी व लाचारी की सुन्दर व्यंजना की गई है।

2. लेखिका ने दिनेश की घटना की ओर संकेत कर सक्सेना साहब की कमजोरियों को भी स्पष्ट किया है।

3. भाषा सरल, शैली प्रवाहपूर्ण और भावानुकूल है।

(35)

"रह सकता है कोई भी आदमी जीवित इस तरह ? नहीं रह सकते थे, तभी तो एक बहुत बड़ी क्रांति के एक छोटे से वाहक बने थे। पर कैसी हुई यह क्रांति ? कहीं से कुछ भी तो नहीं बदला। अब कहाँ से होगी दूसरी क्रांति और कौन करेगा उस क्रांति को जो सब कुछ बदल दे ? आज तो परिवर्तन का नाम लेने वाले की आवाज घोंट दी जाती है, उसे काट कर फैंक दिया जाता है। एक तरफ फिके गिने-चुने आदमियों के घुटे गले और रूँधी आवाजों से क्रांति का स्वर फूट सकेगा अब कभी ?"

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' से अवतरित है, जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने सामाजिक मौन क्रांति का स्वर व्यक्त करना चाहा है। प्रस्तुत अवतरण में उसी प्रसंग व उपन्यास के अंतिम अंश से सम्बंधित है।

व्याख्या – जिस बिसेसर की मृत्यु की छान-बीन से उपन्यास की कथा वस्तु प्रारम्भ हुई थी, वह तहक़ीकात के परिणामस्वरूप इस निर्णय पर पहुँचती है कि बिसेसर ने आत्महत्या नहीं की थी उसकी हत्या की गई थी और हत्या करने वाला उसका ही दोस्त 'बिन्दा' था। यह निष्कर्ष दा साहब की राजनीतिक कुशलता का परिणाम था। परिणाम यह होता है कि दा साहब का व्यक्ति ही था। परिणाम यह होता है कि दा साहब का व्यक्ति ही चुनाव में जीतता है। खुशियाँ मनाई जाती हैं, आयोजन किये जाते हैं। सर्वत्र दा साहब की रीति-नीति और प्रभाव की चर्चा होती है। अन्त में दा साहब त्रिलोचन बाबू को अपने मंत्रिमण्डल से बर्खास्त कर देते हैं।

लेखिका ने स्पष्ट किया कि लोचन भैया को जब मंत्रिमण्डल से मुक्त कर दिया जाता है तो वह अपनी ही मर्ज़ी से पार्टी की सदस्यता से त्याग-पत्र दे देता है। उसके मन में अनेक प्रश्न सागर की लहरों की तरह हिलौरे लेने लगता है।

त्रिलोचन असंतुष्टों का नेता बनकर मुख्यमंत्री पद प्राप्त करना चाहता था। यह भावना केवल त्रिलोचन की ही नहीं अपितु उसके लगभग सभी साथियों की थी। त्रिलोचन अपने आप को एक सजग राजनीतिज्ञ मानता था किन्तु अब वह जीवित होते हुए भी मृत के समान अनुभव करने लगा है। त्रिलोचन असंतुष्टों का नेता बनकर क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की बात करता था किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हो सका। स्थिति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं आया। वह अपने आप को असफल मानते हुए सोचता है कि अब तो जो भी व्यक्ति क्रांति की जरा-सी बात भी करता है उसका गला घोंट दिया जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि परिवर्तन या क्रांति की शक्ति रखने वाला व्यक्ति भी यदि प्रयास करे तो उसे राजनीति से हटा दिया जाता है या उसका राजनीतिक कैरियर भी समाप्त कर दिया जाता है। ऐसे कितने ही व्यक्ति हैं जिन्हें राजनीति के क्षेत्र से काटकर अलग फैंका जा चुका है। क्या ये सभी लोग मिलकर भी क्रांति की आवाज निकाल सकेंगे ? निश्चित ही नहीं। यही स्थिति त्रिलोचन बाबू की है।

त्रिलोचन बाबू अब बेकार हो चुके हैं। वे विवशता का अनुभव करते हुए जैसे-तैसे अपना जीवन बिताने के लिये विवश थे।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में पराजित, हताश और निराश त्रिलोचन बाबू की मानसिकता का वर्णन किया है।

2. अवतरण में लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि जो कलुषित राजनीति का पल्ला पकड़ कर आगे बढ़ता है। वह औंधे मुँह जमीन में आकर गिरता है जिसका कोई भी साथ नहीं देता है।

3. भाषा प्रसंगानुकूल है।

2.1 2 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

2.1 2.1 अति लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. 'महाभोज' उपन्यास किस प्रकार की कृति है, इसमें किस बिन्दु पर प्रकाश डाला गया है ?

उत्तर – उपन्यास 'महाभोज' एक आलोच्य कृति है। इसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने वर्तमान में प्रचलित स्वार्थी राजनीति के अनुसार उपचुनाव को स्वार्थ-साधना का आधार माना है, राजनीति के इसी कलुषित रूप को उपन्यास का बिन्दु माना है।

प्रश्न- 2. प्रस्तुत उपन्यास महाभोज के सभी पात्रों में लेखिका मन्नू भण्डारी ने किसको सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है ?

उत्तर – प्रस्तुत उपन्यास में मुख्यमंत्री दा साहब सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली व्यक्ति हैं।

प्रश्न- 3. 'महाभोज' उपन्यास एक गाँव की राजनैतिक स्थिति पर चित्रित की गई कृति है। इसमें किस गांव की स्थिति का वर्णन किया गया है ?

उत्तर – प्रस्तुत उपन्यास में सरोहा गाँव की राजनीति का वर्णन किया गया है।

प्रश्न- 4. 'महाभोज' उपन्यास में लोचन भैया पात्र का परिचय दीजिये।

उत्तर – त्रिलोचन सिंह रावत को ही सरोहा गाँव की जनता लोचन भैया के नाम से जानती है। वे राज्य के शिक्षामंत्री हैं और मुख्यमंत्री से असंतुष्ट रहने के कारण से असंतुष्ट दल के नेता हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न-5. प्रस्तुत उपन्यास में ऐसा क्रांतिवीर जो अपने भविष्य की चिन्ता न कर असत्य और अन्याय का विरोध करते रहते हैं उन्हें किस नाम से सम्बोधित किया गया है ?

उत्तर – असत्य और अन्याय का विरोध करने वाले क्रांतिवीरों को दिनेश नाम से सम्बोधित किया है।

प्रश्न-6. ''मेरा तो उसूल है कि इस दर्पण को धुँधला मत होने दो।'' प्रस्तुत कथन किसने, किससे कहा है ?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य दा साहब ने अपने मुँह लगे व्यक्ति लखनसिंह को कहे हैं।

प्रश्न-7. ''चतुर अपराधी ही सबसे अधिक आक्रामक मुद्रा अपनाता है।'' वाक्य किसने किससे कहा था ?

उत्तर – मुख्यमंत्री दा साहब ने आई.जी. सिन्हा साहब से कहा कि ''चतुर अपराधी ही सबसे अधिक आक्रामक मुद्रा अपनाता है।''

प्रश्न-8. 'महाभोज' उपन्यास के अतिरिक्त मन्नू भण्डारी ने कौन-कौन-सी रचनाएँ की हैं ?

उत्तर – प्रस्तुत आलोच्य उपन्यास के अतिरिक्त 'आपका बंटी' और 'एक इंच मुस्कान' उपन्यासों की रचना की है।

प्रश्न-9. 'बिसू' का सामान्य परिचय क्या है ?

उत्तर – बिसू का पूरा नाम बिसेसर है। यह सरोहा गाँव का रहने वाला साधारण किन्तु पढ़ा-लिखा व्यक्ति है। जो अपनी बिरादरी और गरीब भाइयों का शुभ चिन्तक है।

प्रश्न-10. आप कैसे कह सकते हैं कि दा साहब ज्योतिष में आस्था रखते थे ?

उत्तर – दा साहब की ज्योतिष में अटूट आस्था रही है। वे अपनी उँगली में नीलम जैसा प्रभावशाली नग अंगूठी के साथ पहने हुए हैं तथा गण्डा-तावीज भी बांधते हैं। यहाँ तक कि आम सभा को सम्बोधित करते हुए वे नीलम को मन ही मन प्रणाम करते हैं।

प्रश्न-11. दत्ता साहब कौन-से अखबार के पत्रकार हैं ?

उत्तर – दत्ता साहब 'मशाल' नामक अखबार के सम्पादक हैं।

प्रश्न-12. दा साहब अखबारों के संदर्भ में अपने क्या विचार रखते हैं ?

उत्तर – दा साहब अखबारों की स्वतंत्रता का पक्ष लेते हैं और वे उन्हें हमारे क्रियाकलापों का दर्पण मानते हैं।

प्रश्न-13. दत्ता साहब अपने हित में दा साहब से क्या चाहते हैं ?

उत्तर – दत्ता साहब दा साहब से अपने अखबार के लिये अधिक से अधिक विज्ञापन और अधिक कागज का कोटा चाहते हैं।

प्रश्न-14. बिन्दा कौन हैं ?

उत्तर – बिन्दा सरोहा गाँव का एक उग्र स्वभाव वाला व्यक्ति है जो बिसेसर का मित्र और रुक्मा का पति है।

प्रश्न-15. दा साहब के लखनसिंह को कानून के संदर्भ में क्या कहा ?

उत्तर – दा साहब ने लखनसिंह को कहा कि कानून अनुमान पर नहीं बल्कि प्रमाण पर चलता है और पुलिस प्रमाण जुटा रही है।

प्रश्न-16. बिसेसर की मौत को सुकुल बाबू ने अपने अनुकूल क्यों सोचा?

उत्तर – विपक्ष के नेता सुकुल बाबू बिसेसर की मौत को राजनैतिक मुद्दा बनाकर लोगों को अपने पक्ष में करना चाहते थे और येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतना चाहते थे।

प्रश्न-17. मुख्यमंत्री दा साहब ने किस आधार पर एस.पी. सक्सेना को अयोग्य बताया?

उत्तर – पुलिस अफसर के अनुरूप अन्तर्दृष्टि, व्यवहार कुशलता और व्यक्तित्व में ओज के अभाव में सक्सेना को अयोग्य बताया गया।

प्रश्न-18. जोरावर कौन था?

उत्तर – जोरावर सरोहा गाँव का प्रभावशाली नेता और जमींदार था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रश्न-19. सुकुल बाबू कौन हैं?

उत्तर—सुकुल बाबू विपक्षी दल के नेता और उप-चुनाव में विपक्ष के प्रत्याशी।

प्रश्न-20. ''जिसके अकाउण्ट में कुछ हो ही नहीं, वही खुले हाथ से बाँट सकता है इस प्रकार के ब्लैंक चैक।'' यह बात किसने, किससे कही?

उत्तर—यह कथन दा साहब ने विधायक राव और चौधरी से ही कहा था।

प्रश्न-21. बिन्दा को किस आरोप में गिरफ्तार किया था?

उत्तर—बिन्दा को बिसेसर की हत्या के आरोप में गिरफ्तर किया गया था।

प्रश्न-22. सुकुल बाबू पिछले चुनावों में किसके बल पर विजयी हुए?

उत्तर—सुकुल बाबू पिछले चुनावों में हरिजनों के बल पर विजयी हुए।

प्रश्न-23. सरोहा गाँव के लोगों को साँप सूँघ जाता था और उनकी जीभ तालुए से चिपक जाती थी, कब?

उत्तर—जब जुम्मन पहलवान के अखाड़े के लोग अपनी तेल-पिलाई लाठियाँ लेकर स्वतंत्रतापूर्वक गाँव में घूमते थे तो जैसे सारे गाँव वालों को साँप सूँघ जाता था और उनकी जीभ तालुए से चिपक जाती थी।

प्रश्न-24. दा साहब ने किस कार्य को ''प्रजातंत्र की हत्या'' बताया है?

उत्तर—दा साहब ने बताया है कि जब सरकार के द्वारा अखबारों पर प्रतिबन्ध लगाया जाए और उनके सच्चाई के प्रकाशन पर रोक लगाई जाए तो यह एक प्रकार से प्रजातंत्र की हत्या है।

प्रश्न-25. 'मशाल' के नए अंक प्रकाशन में सुकुल बाबू के भाषण के सम्बंध में क्या आरोप लगाया गया था?

उत्तर—'मशाल' नामक अखबार के नए अंक में सुकुल बाबू के विरूद्ध यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने सरोहा गाँव की छोटी-सी घटना को मनमाने ढ़ंग से विकृत और बढ़ा-चढ़ा कर राजनैतिक मुद्दा बना दिया है और उन्होंने व्यर्थ ही जनता में तनाव उत्पन्न करने का प्रयास किया है।

प्रश्न-26. लोचन भैया अपना असंतोष व्यक्त करने के लिये किससे मिलने गये?

उत्तर—लोचन भैया अपना असंतोष व्यक्त करने पार्टी के अध्यक्ष अप्पा साहब से मिलने गये।

प्रश्न-27. सरोहा गाँव के लोगों को दा साहब के किस व्यवहर से उनके बड़प्पन का अनुभव हुआ?

उत्तर—जब दा साहब बिसेसर के पिता हीरा को अपनी कार में बिठाकर सभा मंच तक ले गये तब गाँव वालों को दा साहब का बड़प्पन महसूस हुआ।

प्रश्न-28. प्रात:काल भ्रमण करते समय पाण्डेजी ने दा साहब को क्या सूचना दी?

उत्तर—पाण्डेजी ने सूचना दी कि रात में लोचन भैया के घर पर जो बैठक हुई, वह आपके विरोध में है और पिच्चासी विधायक लोचन बाबू का समर्थन कर रहे हैं।

प्रश्न-29. सरकार ने एस.पी. सक्सेना को क्या कार्य सौंपा था?

उत्तर—एस.पी. सक्सेना को सरोहा गाँव में बिसेसर की हत्या की जाँच का कार्य सौंपा गया था।

प्रश्न-30. महेश शर्मा किस कार्य के लिए सरोहा गाँव में आया था?

उत्तर—महेश शर्मा वर्ग-संघर्ष और जाति-संघर्ष पर रिसर्च प्रोजेक्ट पर सरोहा गाँव में आया था।

प्रश्न-31. महेश शर्मा के अनुसार बिसेसर किस बात से अक्सर परेशान रहता था?

उत्तर—महेश शर्मा के अनुसार बिसेसर गरीबों और किसान भाइयों पर निरन्तर हो रहे अत्याचार को लेकर अक्सर परेशान रहता था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न- 3 2. रुक्मा का परिचय दीजिये।

उत्तर – रुक्मा बिन्दा की पत्नी थी, वह बिसेसर की मान्यताओं की समर्थक थी और वह सच्चरित्र ग्रामीण महिला थी।

प्रश्न- 3 3. जोरावर ने अपना चुनाव लड़ने का इरादा क्यों छोड़ दिया था?

उत्तर – दा साहब ने जब उससे कहा कि बिसू के द्वारा गाँव आगजनी के जो प्रमाण जुटाये थे उन्हें बिन्दा दिल्ली लेकर जा रहा है, इससे तुम्हें जेल हो सकती है। तब अपने बचाव का आश्वासन लेकर जोरावर ने चुनाव लड़ने का अपना इरादा बदल दिया।

प्रश्न- 3 4. 'मशाल' अखबार के तीसरे अंक में क्या महत्त्वपूर्ण समाचार था?

उत्तर – ''दोस्ती की आड़ में बिसेसर की हत्या करने वाला हत्यारा बिन्दा गिरफ्तार।'' समाचार 'मशाल' के तीसरे अंक की सुर्खियों में छापा गया।

प्रश्न- 3 5. ''प्रान्त की राजधानी में एस.पी. का पद कम महत्त्व का तो नहीं होता.....तुम देख लेना।'' यह कथन किसने, किससे कहा?

उत्तर – उक्त कथन दा साहब ने आई.जी. सिन्हा के प्रति कहा था।

प्रश्न- 3 6. सिन्हा साहब ने किस खुशी में शानदार पार्टी का आयोजन किया था?

उत्तर – आई.जी. बन जाने की खुशी में सिन्हा साहब ने एक शानदार पार्टी का आयोजन किया।

प्रश्न- 3 7. जोरावर न केवल निश्चिन्त ही था, बल्कि उत्साहित भी था। इसका क्या कारण था?

उत्तर – बिन्दा की गिरफ्तारी और सक्सेना के स्थानान्तरण से जोरावर निश्चिन्त और प्रसन्न था।

प्रश्न- 3 8. महाभोज उपन्यास में 'महाभोज' किसका प्रतीक है?

उत्तर – प्रस्तुत उपन्यास में महाभोज समकालीन राजनीति में व्याप्त स्वार्थपरता, छल-हृदय, भ्रष्टाचार, सत्ता लोलुपता और समाज में अलगाववाद पैदा करने वालों का प्रतीक है।

प्रश्न- 3 9. 'महाभोज' उपन्यास में किसका अंकन किया है?

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास में मुख्यत: समकालीन राजनैतिक चेतना, उससे उत्पन्न विसंगतियों और विकृतियो का अंकन किया गया है।

प्रश्न- 4 0. महेश शर्मा को महाभोज उपन्यास में किसका प्रतीक माना गया है?

उत्तर – महाभोज उपन्यास में महेश शर्मा को एक बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक माना गया है।

2.1 2.2 लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. 'महाभोज' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता अथवा व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – कहानी की तरह ही उपन्यास में भी उसके शीर्षक का नामकरण का विशेष महत्त्व माना जाता है। समालोचकों ने उपन्यास के नामकरण पर विभिन्न विचार व्यक्त किये हैं। प्राय: नामकरण प्रधान पात्र के नाम के आधार पर, प्रधान घटना या मुख्य कथ्य के आधार पर अथवा उपन्यास में वर्णित प्रमुख भाव या उक्ति के आधार पर किया जाता है। नामकरण अत्यन्त संक्षिप्त और आकर्षक होना चाहिए, उसमें समस्त कथानक को व्यंजित करने की क्षमता, जिज्ञासा, रोचकता, उद्देश्य सूचकता तथा आदर्श-यथार्थ स्थापना की व्यंजना होनी चाहिए। इस प्रकार उपन्यास का नामकरण अनेक विशेषताओं और गुणों से मण्डित होना चाहिए। इस दृष्टि से विचार करें तो मन्नू भण्डारी के प्रस्तुत उपन्यास 'महाभोज' का शीर्षक प्रमुख घटना एवं भाव पर आधारित है। इसका नामकरण सार्थक तथा युक्तिसंगत है। यह अतीव संक्षिप्त एवं आकर्षक भी है। उपन्यास के प्रत्येक परिच्छेद के प्रारम्भ में लाश पर झपटने के लिए उद्दत गिद्धों का चित्रांकन होने से इसमें उत्सुकता, जिज्ञासा, रोचकता और कौतूहल जागृत होता है। 'महाभोज' शीर्षक प्रतीकात्मक है, क्योंकि यह महाभोज राजनीतिक पैंतरेबाजी एवं कूटनीति का परिचायक है। स्वार्थी राजनीति में सब हजम हो जाता है और सब उसमें भक्ष्य भी है। इस कारण यह शीर्षक व्यंजनापूर्ण भी है। इसमें वर्तमान राजनीति पर करारा व्यंग्य किया गया है। अत: इसका शीर्षक औचित्यपूर्ण तथा उद्देश्याभिव्यक्ति में सक्षम है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न- 2. 'महाभोज' उपन्यास में चित्रित वस्तु-वर्णन को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास में मन्नू भण्डारी ने वस्तु-वर्णन का विशेष ध्यान रखा है। इसमें मुख्यमंत्री दा साहब के निजी कक्ष का, सरोहा गाँव के स्थानीय वातावरण का, पुलिस थाना, आई.जी. सिन्हा द्वारा दी गई पार्टी का और 'मशाल' समाचार-पत्र के कार्यालय आदि का वर्णन करते समय लेखिका ने अपनी वातावरण-चित्रण की कुशलता का परिचय दिया है। इसमें आँचलिक परिवेश, राजनीतिक वातावरण, प्रशासन-व्यवस्था एवं प्राकृतिक दृश्यों आदि का समावेश भी प्रसंगानुकूल किया गया है। यद्यपि 'महाभोज' के कथानक में प्राकृतिक दृश्य एक-दो स्थान पर ही संक्षेप में उभरे हैं, तथापि इसमें देश-काल या वातावरण का विधान पृष्ठभूमि के रूप में अतीव आकर्षक हुआ है। सामान्यतया उपन्यास में प्राकृतिक पृष्ठभूमि का अतिशय चित्रण कथा-प्रवाह में बाधक भी हो सकता है, क्योंकि पाठक कथानक की गतिशीलता के साथ पात्रों के चरित्र के सम्बन्ध में भी जिज्ञासु बना रहता है। अतः उपन्यास प्राकृतिक पदार्थों का चित्रण संक्षेप में करने में उसके भाव-सौन्दर्य के संवर्धन में सहायक रहता है। इस तरह 'महाभोज' उपन्यास में चित्रित वस्तु-वर्णन औचित्यपूर्ण है।

प्रश्न- 3. 'महाभोज' उपन्यास की मूल चेतना को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – 'महाभोज' राजनीतिक चेतना का उपन्यास है। इसमें मन्नू भण्डारी ने भारत के एक ऐसे गाँव का कथानक उपस्थित किया है, जहाँ पर चुनाव के कारण सारा वातावरण दूषित हो जाता है। उपचुनाव के कारण सरोहा गाँव में राजनीतिक अखाड़ा जमता है। उसी समय बिसेसर अर्थात् बिसू जमींदारों के अत्याचारों के प्रमाण एकत्र कर दिल्ली तक पहुँचना चाहता है, परन्तु उसकी हत्या हो जाती है। इस तरह उसकी हत्या को उपचुनाव में राजनीतिक रंग दिया जाता है और उसकी मौत मानो राजनीति के अखाड़ेबाज गिद्धों के लिए चुनाव रूपी महाभोज का भक्ष्य बन जाती है। मुख्यमंत्री दा साहब और विपक्ष के नेता सुकुल बाबू के लिए वह उपचुनाव प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है। दा साहब सत्ता और पद के प्रभाव का उपयोग कर एक ओर बिसू की मौत की जाँच करवाते हैं तथा गाँव वालों को अपने पक्ष में करते हैं, दूसरी ओर वे पत्रकार दत्ता साहब, जोरावर, त्रिलोचनसिंह, बिन्दा आदि के विरोधी स्वर को शान्त कर देते हैं। वे निष्पक्ष पुलिस अफसर सक्सेना को सस्पेण्ड करके बिन्दा को गिरफ्तार करवा देते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास की मूल चेतना वर्तमान काल की राजनीतिक पैंतराबाजी तथा स्वार्थनिष्ठा पर व्यंग्य करना है।

प्रश्न- 4. 'महाभोज' उपन्यास के कथानक की विशेषताएँ बतलाइये।

उत्तर – उपन्यास की कथावस्तु रोचक, सरस, संगठित तथा नाटकीयता से परिपूर्ण होनी चाहिए। 'महाभोज' उपन्यास की कथावस्तु सरोहा गाँव तथा उपचुनाव की राजनीतिक गतिविधियों पर आधारित है। सरोहा गाँव में बिसू की हत्या हो जाती है। उपचुनाव के अवसर पर इसे राजनीतिक रूप दिया जाता है। मुख्यमंत्री दा साहब, विपक्षी नेता सुकुल बाबू, पुलिस अधीक्षक सक्सेना, डी.आई.जी. सिन्हा, लखन, त्रिलोचन, जोरावर, महेश आदि सभी इस राजनीति के पात्र हैं। सारा कथानक प्रारम्भ से लेकर अन्त तक राजनीतिक दाँव-पेंचों, कूटनीतिक चालों तथा स्वार्थपरता से व्याप्त दिखाई देता है। इसके कथातन्तुओं में सुन्दर तारतम्य बना रहता है और सभी घटनाएँ परस्पर अन्वित रहती हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि आलोच्य उपन्यास की कथावस्तु संगठनात्मकता, मौलिकता, प्रवाहशीलता, क्रमिकता, सुसम्बद्धता, रोचकता, सरसता और नाटकीयता आदि तत्त्वों से परिपूर्ण है। इन गुणों के अतिरिक्त एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि उपन्यास में वर्तमान काल की राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों का विश्वसनीय चित्रण हुआ है, इसकी प्रत्येक घटना चुनाव-चक्र के समय साक्षात् दिखाई देती है। इसमें घटनात्मक सत्यता अर्थात् सम्भाव्यता गुण का पूर्ण निर्वाह हुआ है। इसमें शैलीगत निर्माण-कौशल काफी प्रभावशाली है। इन सभी विशेषताओं से 'महाभोज' उपन्यास का कथानक काफी कलात्मक प्रतीत होता है।

प्रश्न- 5. बिसेसर के चरित्र की विशेषताएँ बतलाइये।

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास के अन्तर्गत बिसेसर को भी प्रमुख पात्र के रूप में लिया जा सकता है। बिसेसर की यद्यपि हत्या हो जाती है और वह जीवित नहीं है, फिर भी सारी कथा उसी के इर्द-गिर्द घूमती है। उपन्यास को पढ़ने से बिसेसर की कुछ चारित्रिक विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं। बिसेसर की पहली विशेषता यह है कि वह गरीबों का हमदर्द था, उनके हक की लड़ाई लड़ता था और उन्हें न्याय के लिये संघर्षरत बने रहने की प्रेरणा देता था। यह ठीक है कि बिसेसर उपन्यास में कहीं भी प्रत्यक्षतः सक्रिय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

नहीं दिखाई देता है। उसका चरित्र विभिन्न पात्रों की वार्तालाप द्वारा ही स्पष्ट होता है। प्रस्तुत उपन्यास में बिसेसर के चरित्र को अप्रत्यक्ष शैली में उपस्थित किया गया है। बिसेसर सरोहा गाँव का निवासी था। वह हीरा नामक किसान का सबसे बड़ा बेटा था, जिसे उसके पिता ने बड़ी मेहनत से पढ़ाया-लिखाया था। बिसेसर शिक्षित और बी.ए. की डिग्री प्राप्त युवक था। शिक्षित होने के कारण ही वह ग्रामीणों की अशिक्षा, उनके अंधविश्वासों और उनके शोषण को दूर करना चाहता था। वह केवल किताबी कीड़ा नहीं था, बल्कि देश और समाज की परिस्थितियों को समझकर उनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करना चाहता था। पुलिस की दृष्टि में वह भले ही नक्सली हो किन्तु वह एक न्यायप्रिय, स्वाभिमानी, निर्भीक और हिम्मतवर इन्सान था। वह स्वयं कष्ट सह सकता था, किन्तु अपने जाति-भाइयों व गरीबों को कष्ट सहते नहीं देख सकता था। पात्रों की बातचीत से यह भी पता चलता है कि बिसेसर सरल, स्नेही और भावुक व्यक्ति था। बिन्दा स्वयं उसका प्रशंसक था।

प्रश्न- 6. मन्नू भण्डारी कृत आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' के आधार पर लखन के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास की पात्र-योजना के अनुसार लखन को दा साहब का विश्वसनीय सेवक और सहयोगी बताया गया है। वह दसवीं पास करने के बाद से ही दा साहब की सेवा करने लगा था। एक प्रकार से वह उनके संरक्षण में पला-बढ़ा था और उनकी ही कृपा से उसे सरोहा के उपचुनाव में पार्टी का उम्मीदवार बनाया गया था। लखन स्वभाव से तेजमिजाज था, वह बात-बात पर उत्तेजित हो जाता था और आवेश में बोलते समय हकलाने लगता था। वह दा साहब के सामने निर्भयता से अपनी बात कहता था। जब से उसे उपचुनाव का उम्मीदवार बनाया गया, तब से वह अपने भविष्य के सम्बन्ध में दा साहब जैसी चिन्तन क्षमता नहीं थी, फिर भी वह भावी आशंकाओं से सावधान रहता था। वह दा साहब द्वारा बनाई गई घरेलू उद्योग-योजना को उचित मानता था, क्योंकि इस कार्यक्रम को प्रारम्भ करके मतदाता को रिझाना चाहता था। वह सुकुल बाबू से काफी आशंकित रहता था और उनकी भाषण-कला का लोहा मानता था। उसे मौका पड़ने पर दा साहब की सन्तई मुद्रा पसन्द नहीं थी, इस कारण लखन कुछ अविवेकी और स्वार्थी भी था। वह उपचुनाव को लेकर हर समय द्वन्द्व से ग्रस्त रहता था, साथ ही दा साहब की फटकार से वह ग्लानि का अनुभव करता था। उसकी अपनी कोई विशेष योग्यता नहीं थी, इस बात को जानकर तथा उपचुनाव में दा साहब द्वारा उम्मीदवार बनाये जाने पर वह उनकी कृपा के लिए कृतज्ञ बना रहता था। लखन अधिक महत्त्वाकांक्षा रखता था और हर हालत में उपचुनाव में विजयी होना चाहता था। इस कारण दा साहब की अनुकूल बातों से वह तुरन्त उत्साहित हो जाता था। परन्तु दा साहब की फटकार लगने पर वह सकपकाने लगता था और चुप बैठा रहता था।

इस प्रकार 'महाभोज' उपन्यास में लखन को एक सामान्य व्यक्तित्व वाला सहायक पात्र दर्शाया गया है। इसके चरित्र की विशेषताएँ प्रारम्भ में कम ही स्थलों पर व्यक्त हो पायी हैं।

प्रश्न- 7. 'महाभोज' उपन्यास में निहित व्यंग्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

उत्तर – कहानी की तरह ही उपन्यास में भी उसके शीर्षक या नामकरण का विशेष महत्त्व माना जाता है। समालोचकों ने उपन्यास के नामकरण पर विभिन्न विचार व्यक्त किये हैं। प्राय: नामकरण प्रधान पात्र के नाम के आधार पर, प्रधान घटना या मुख्य कथ्य के आधार पर अथवा उपन्यास में वर्णित प्रमुख भाव या उक्ति के आधार पर किया जाता है। नामकरण अत्यन्त संक्षिप्त और आकर्षक होना चाहिए, उसमें समस्त कथानक को व्यंजित करने की क्षमता, जिज्ञासा, रोचकता उद्देश्यसूचकता तथा आदर्श-यथार्थ स्थापना की व्यंजना होनी चाहिए। इस प्रकार उपन्यास का नामकरण अनेक विशेषताओं और गुणों से मण्डित होना चाहिए। इस दृष्टि से विचार करें तो मन्नू भण्डारी के प्रस्तुत उपन्यास 'महाभोज' का शीर्षक प्रमुख घटना एवं भाव पर आधारित है। इसका नामकरण सार्थक तथा युक्तिसंगत है। यह अतीव संक्षिप्त एवं आकर्षक भी है। उपन्यास के प्रत्येक परिच्छेद के प्रारम्भ में लाश पर झपटने के लिए उद्धृत गिद्धों का चित्रांकन होने से इसमें उत्सुकता, जिज्ञासा, रोचकता और कौतूहल जागृत होता है। 'महाभोज' शीर्षक प्रतीकात्मक है, क्योंकि यह महाभोज राजनीतिक पैंतरेबाजी एवं कूटनीति का परिचायक है। स्वार्थी राजनीति में सब हजम हो जाता है और सब उसमें भक्ष्य भी है। इस कारण यह शीर्षक व्यंजनापूर्ण भी है। इसमें वर्तमान राजनीति पर करारा व्यंग्य किया गया है। अत: इसका शीर्षक औचित्यपूर्ण तथा उद्देश्याभिव्यक्ति में सक्षम है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न-8. 'महाभोज' उपन्यास के मुख्य पात्र दा साहब के कक्ष परिवेश पर टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – दा साहब के कक्ष का परिवेश पूरी यथार्थता लिए हुए है। लेखिका मन्नू भण्डारी ने उनके निजी कक्ष के परिवेश को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। वास्तव में दा साहब के निजी कक्ष का वातावरण न केवल यथार्थपरक है, अपितु सहज ही विश्वसनीय भी लगता है। उदाहरणार्थ, यह अंश देखिए – ''उनका निजी कमरा भी बहुत सादा है। तड़क-भड़क, ताम-झाम कहीं कुछ भी नहीं। यह सादगी उनके पद के अनुरूप कतई नहीं, पर उनके व्यक्तित्व के अनुरूप जरूर है। कमरे में कालीन नहीं, मोटी दरी है, जिसके एक सिरे पर दीवार से सटा मोटा-सा गद्दा बिछा है। ऊपर झकझक चादर और गाव-तकिये पड़े हैं। एकदम देशी पद्धति। दा साहब को जितना देश प्रिय है, उतनी ही देशी पद्धति भी। लड़के-बच्चे जरूर अंगरेजियत में सन गये हैं। इम्पोर्टेड वस्तुएँ और इम्पोर्टेड भाषा का ही इस्तेमाल करते हैं। पर यह बच्चों की अपनी रुचि और चुनाव है और किसी की स्वतंत्रता पर अपने को आरोपित नहीं करते दा साहब। बच्चे छोटे थे और साथ रहते थे तब भी नहीं.....अब तो वैसे भी बड़े होकर सब अपने-अपने घरों में चले गये। सजावट के नाम पर केवल दो बड़ी-बड़ी तस्वीरें टँगी हैं – दीवार पर गाँधी और नेहरू की। इन्हें अपना पथ-प्रदर्शक और अपनी प्रेरणा मानते हैं दा साहब। गीता का उपदेश उनके जीवन का मूल मंत्र है। घर के हर कोने में गीता की एक प्रति मिल जायेगी। वैसे वे कभी किसी को उपहार देते नहीं, व्यर्थ के ढकोसलों में कतई विश्वास नहीं है उनका। पर फिर भी कभी उपहार देना ही पड़ गया तो सदा गीता की प्रति ही दी है।''

प्रश्न-9. 'महाभोज' उपन्यास में निहित राजनैतिक परिवेश को संक्षिप्त में स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास में समकालीन राजनीतिक परिवेश यथार्थ रूप में प्रारम्भ से अन्त तक बखूबी देखा जा सकता है। निश्चय ही महाभोज एक राजनीतिक उपन्यास है, अतः लेखिका ने इस उपन्यास में समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों और उससे जुड़े हुए परिवेश का प्रसंगानुसार चित्रण अवश्य किया है, किन्तु उसने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि राजनीति परिवेश को सीधे चित्रित न करके पात्रो के वार्तालाप के द्वारा दिखाया है। पात्रों के चरित्र-चित्रण और वार्तालाप के मध्य ही उपन्यास में समसामयिक राजनीति परिस्थितियों का सांकेतिक चित्रण किया गया है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि 'महाभोज' उपन्यास में जो राजनीतिक परिवेश चित्रित हुआ है, वह कहीं तो दा साहब की वार्ता या उनके विचारों की अभिव्यंजना के सहारे व्यक्त हुआ है, कहीं सुकुल बाबू की रीति-नीति के सन्दर्भ से से अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। लोचन भैया असन्तुष्ट नेता के रूप में सामने आये हैं अतः उनके द्वारा असन्तुष्टों की राजनीति और उससे निर्मित राजनीतिक परिवेश को वाणी दी गयी है। इसी प्रकार लेखिका ने दत्ता बाबू और दा साहब के वार्तालाप के द्वारा उस राजनीतिक परिवेश को भी चित्रित कर दिया है जो पत्रकारों के माध्यम से अखबारों के द्वारा सामने आता रहता है। दा साहब जब पाण्डेजी से बातचीत करते हैं तब वे एक कुशल राजनेता के रूप में सारी स्थिति को सम्भालते हुए नजर आते हैं। इतना ही नहीं, दा साहब भी राजनीति का खेल खेलते हैं, किन्तु उस खेल में या उनके द्वारा अपनायी गयी रीति-नीति से जो परिवेश उभरता है, वह भी यथार्थ ही है, उसमें न तो कहीं आरोपण है और न कहीं कोई ऐसी स्थिति है जिसे अनावश्यक कहा जाये। इससे यह प्रमाणित होता है कि मन्नूभण्डारी ने राजनीतिक परिवेश के यथार्थ को सांकेतिक रूप में ही सही, पर बड़ी खूबी से प्रस्तुत किया है।

'महाभोज' उपन्यास के अन्त में जो पार्टी आयोजित की जाती है, उसमें जिन स्थितियों को संकेतित किया गया है, वे सब की सब स्थितियाँ राजनीतिक विजय प्राप्त करने के बाद परिवेश को उद्घाटित करती हैं। उदाहरण के लिए यह अंश देखिए जो उत्सव आयोजन को तो व्यक्त करता ही है, साथ ही साथ उस राजनीतिक परिवेश के यथार्थ को भी व्यक्त कर देता है जो आजकल देखने में आता है – ''लॉन में कनात और शामियाना लगा है और पेड़ों और पौधों पर रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। श्री और श्रीमती सिन्हा बड़े उत्साह और आत्मीयता से स्वागत कर रहे हैं आने वालों का। बड़े-बड़े सरकारी अफसर, व्यापारी, वकील, डॉक्टर-कहना चाहिए – क्रीम ऑफ द टाउन – जुटा हुआ है इस समय सिन्हा साहब लॉन में। वर्दीधारी बैरे ट्रे में सॉफ्ट ड्रिंक्स लेकर घूम रहे हैं। यहाँ से वहाँ तक फैली, सजी-संवरी मोटी-छरहरी महिलाएँ ही उपकृत कर रही हैं इन लोगों को। पुरुषों की भीड़ तो टुकड़ों-टुकड़ों में ऊपर-नीचे आ जा रही है। यों महिलाओं के लिए भी वह क्षेत्र वर्जित कतई नहीं, पर कम ही है इनकी संख्या वहाँ। ऊपर के कमरे में बाकायदा बार बना हुआ है। शीवाज-रीगल, ब्लैक-डॉग से लेकर देशी रम तक कम से कम पच्चीस किस्म की शराबें रखी हुई हैं वहाँ और सिन्हा साहब के दोनों पुत्र बड़ी शालीनता और मुस्तैदी के साथ सबको अपनी-अपनी पसन्द का ड्रिंक डाल-डालकर दे रहे

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हैं। सिन्हा साहब शिष्टता के नाते हर किसी के पास दो-दो मिनट जाकर बधाई के बोझ से बोझिल हो रहे हैं। श्रीमती सिन्हा बिना किसी काम के ही अपने भारी-भरकम शरीर को बड़ी फुर्ती से इधर-उधर घुमाकर ऐसी व्यस्तता का आभास दे रही हैं कि जैसे इनके चलने से ही पार्टी चल रही है।''

उपन्यास के अन्तर्गत राजनीतिक परिवेश का यथार्थ सरोहा गाँव के चित्रण में देखने को मिलता ही है। उपन्यास के प्रारम्भ से ही इस स्थिति को बखूबी देखा जा सकता है। राजनीतिक परिवेश के और भी बहुत से चित्र उपन्यास में यत्र-तत्र बिखरे हुए हैं, किन्तु परिवेश के कुछ और रूप भी उपन्यास में देखने को मिलते हैं। ऐसे रूपों में दा साहब के निजी कक्ष का परिवेश, सुकुल बाबू की कोठी का परिवेश और लोचन भैया के जीवनगत परिवेश को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न-10. किसी भी सफल उपन्यास में देशकाल व वातावरण को निर्धारित करते समय किन विशेष गुणों पर ध्यान देना चाहिये? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – देशकाल अथवा वातावरण उपन्यास का प्रमुख तत्त्व है। उपन्यास की विविध घटनाओं, उसके विविध पात्रों तथा उनके कार्यकलापों के साथ ही विभिन्न परिस्थितियों में उनकी प्रतिक्रियाओं को कोई पाठक तभी सम्भावित या किसी सीमा तक यथार्थ समझता है, जब वह यह देखे कि उसकी पृष्ठभूमि किस सीमा तक देशकाल का सही वातावरण और लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। यह तथ्य उपन्यास के कथानक तथा पात्रों दोनों के लिए ही समान सीमाएँ निर्धारित करता है, क्योंकि इसका अतिक्रमण करने से किसी कृति के अशक्त बन जाने का भय रहता है। यदि कोई उपन्यासकार देशकाल का बन्धन नहीं मानता, तो उसकी कृति में किसी भी सामाजिक युग की परिस्थितियों का चित्रण सम्यक् रूप में नहीं हो पाता। देशकाल के अन्तर्गत सामान्य रूप से किसी भी देश अथवा समाज की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ, आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-रिवाज अथवा समाज की कुरीतियाँ या विशेषताएँ आदि समझती जाती हैं।

देशकाल के गुण – उपन्यास में देशकाल अथवा वातावरण का चित्रण प्राय: कथा-काल और कथा-प्रकार की विशिष्टता के अनुसार किया जाता है। इस कारण से उपन्यास में देशकाल अथवा वातावरण चित्रण के कुछ निश्चित सांकेतिक आधार और गुण हैं, जिनका पालन करना उपन्यासकार के लिए आवश्यक हो जाता है, भले ही वह प्राकृतिक, सामाजिक अथवा राजनीतिक किसी भी प्रकार की पृष्ठभूमि उपस्थित करना चाहता हो। इन गुणों का समावेश देशकाल अथवा वातावरण के चित्रण को अभिव्यक्तिगत पूर्णात्मकता प्रदान करता है। उनसे उसमें विश्वसनीयता भी आती है। इसलिए किसी औपन्यासिक कृति में इस तत्त्व के अंकन के समय इन गुणों का सतर्क निर्वाह करना आवश्यक है, वर्णनात्मक सूक्ष्मता, विश्वसनीय कल्पनात्मकता, उपकरात्मक संतुलन।

उपन्यास में देशकाल और वातावरण का समावेश करने में उक्त गुणों की सम्बद्धता और सफलता इस कारण भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ये उसका प्राथमिक आधार हैं। यदि उपन्यासकार सामाजिक वातावरण का चित्रण कर रहा है तो उसे समाज की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों और उन तत्त्वों का विस्तार से परिचय देना चाहिए जो उस समाज की रचना के मूल आधार हैं। उस समाज में रहने वाले विविध जाति और वर्ग के लोगों तथा उनका प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि में उस समाज की संरचना का विस्तृत वर्णन होना चाहिए। समाज के विशिष्ट काल से ही उसका सम्बन्ध होना चाहिए और उसे काल विशेष की स्पष्ट और प्रत्यक्ष रूप से प्रतीति कराने में सहायक होना चाहिए। यदि मनुष्य समाज का उपर्युक्त दृष्टिकोण से एतिहासिक अध्ययन किया जाये तो यह ज्ञात होगा कि समाज में होने वाला परिवर्तन किसी-न-किसी व्यापक भावी परिवर्तन का सूचक होता है। उसकी किसी इकाई में प्रस्फुटित होने वाला कोई विचार आगे चलकर किसी-न-किसी महान् विचारधारा में परिणत होता है और विद्रोह का एक नगण्य स्वर व्यापक क्रांतिकारिता का रचनासूत्र सिद्ध होता है। इसलिए उपन्यासकार की सूक्ष्म दृष्टि जब तक समाज की मूल चेतना की तह में नहीं बैठेगी और यथार्थ रूप में उसका समग्रता से उद्घाटन नहीं करेगी, तब तक इस प्रकार के वर्णन में विश्वसनीयता नहीं आ सकेगी।

प्रश्न-11. 'महाभोज' उपन्यास के आधार पर सुकुल बाबू के परिवेश की यथार्थता पर प्रकाश डालिये।

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास में मन्नू भण्डारी ने पहले तो सुकुल बाबू की अभिरुचियों, उनके स्वभाव और रहन-सहन का वर्णन किया है, तत्पश्चात् उनकी मानसिकता को वाणी देते हुए उस राजनीतिक परिवेश को भी व्यक्त कर दिया है जिसका एक ओर तो जोरावर से सम्बन्ध है और दूसरी ओर देश के भीतर उठ रहे तरह-तरह के बवण्डरों से सम्बन्ध है। जोड़-तोड़ की जो राजनीति

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आजकल चल रही है, उसे हम इस अंश में देख सकते हैं। वास्तव में यह भी परिवेश का यथार्थ ही है – ''बहाकर ले जाने का मतलब अब वे खूब अच्छी तरह समझ गये हैं और बहाव की ताकत भी। कुछ अरसे पहले जो आया था, वह बहाव ही तो था। बहाव नहीं, बवंडर ! एक जोरदार बवंडर ! कुर्सियों पर बैठे सारे लोग धड़ाधड़ नीचे जा गिरे। बड़ी-बड़ी हस्तियाँ तक नहीं टिक पायीं। उसके बाद से तो जैसे देश में बवंडरों का सिलसिला ही शुरु हो गया.....आन्ध्र में बवंडर, दिल्ली में बवंडर....., उड़ीसा में बवंडर। उस बवंडर ने इतिहास बदला तो ये बवंडर भूगोल बदलने में लगे हैं। और यदि वे बवंडर ले आये तो? वह शायद उनकी किस्मत बदल देगा। एक बार जीतकर किसी विधानसभा में पहुँच जायें तो फिर वहाँ बवंडर का सिलसिला शुरु करेंगे। जोड़-तोड़ करने की अपनी क्षमता पर काफी भरोसा है सुकुल बाबू को। फिर सत्तर दरार वाली खोखली नींव पर खड़े इस मंत्रिमण्डल को गिराना यों भी कोई मुश्किल बात नहीं। अपने लोग जरा-सा साथ दें तो बायें हाथ का खेल है यह उनके लिए।''

प्रश्न- 12. 'महाभोज' उपन्यास में यथार्थ की दृष्टि से जुम्मन पहलवान के अखाड़े का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास में अखाड़े के परिवेश का यथार्थ चित्रित हुआ है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि लेखिका ने परिवेश के यथार्थ को चित्रित करते समय बड़ी सूक्ष्मता और सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता से काम लिया है। परिवेश के यथार्थ की दृष्टि से जुम्मन पहलवान के अखाड़े का यह वर्णन लिया जा सकता है – ''गाँव के पूरब में एक बड़ा-सा अखाड़ा था। जुम्मन पहलवान का। जिसमें तीस-चालीस पट्ठे लाल लँगोटे बाँधकर व्यायाम करते रहते हैं रात-दिन। दंड पेलना, लाठी भाँजना, मुगदर घुमाना, कुश्ती लड़ना.....कुछ न कुछ चलता ही रहता है। शाम के समय काम से लौटते हुए लोग कुछ देर खड़े होकर तमाशा जरूर देखते। यह अखाड़ा गाँव वालों के मनोरंजन का केन्द्र भी है और आतंक का स्रोत भी। इस अखाड़े की आबादी जब अपने तेल-पिलायी हुई लाठियाँ लेकर गाँव के गली-बाजारों में उतर आती है तो सारे गाँव वालों को साँप सूँघ जाता है और सबकी जीभ तालू से चिपक जाती है। जैसे ही बिसू की लाश चीरफाड़ के लिए शहर गयी, अखाड़े के ये लठैत गश्त लगाने लगे गाँव में। उसके बाद लोगों के मुँह से आहें भले ही निकलती रही हों, बात नहीं निकलती। बिसू के मारने का तरीका चाहे न समझ में आ रहा हो, पर मरवाने वाले का नाम शायद सबके मन में बहुत साफ था। नाम भी, कारण भी। पर केवल मन में। बयान के समय भी जबान पर कोई नहीं लाया। बिसू का बाप भी नहीं।''

प्रश्न- 13. ''त्रिलोचनसिंह जनता के प्रिय लोचन थे।'' 'महाभोज' उपन्यास के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिये।

उत्तर – वास्तव में त्रिलोचनसिंह रावत को उनके असली नाम से लोग कम जानते थे। वे लोगों में लोचन भैया के नाम से प्रसिद्ध थे, अत: उपन्यास में भी उन्हें अधिकांश स्थलों पर लोचन भैया ही कहा गया है। सच यह है कि वे केवल नाम से ही लोचन नहीं हैं, वे सचमुच जनता के प्रिय लोचन हैं। स्मरणीय तथ्य यह है कि जब सुकुल बाबू मुख्यमंत्री थे तब लोचन विधानसभा के सदस्य थे और सुकुल बाबू की पार्टी से ही सम्बन्ध रखते थे। इसी बीच आपातकालीन स्थिति की घोषणा हो गयी। परिणामस्वरूप बड़े-बड़े नेताओं का साहस डाँवाडोल हो गया और वे अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खो बैठे। कहने के लिए समूचे देश में प्रजातंत्र था, किन्तु वास्तविकता यह भी कि प्रजा बिल्कुल बेमानी हो गयी थी और तन्त्र मुट्ठीभर लोगों की मनमानी बनकर रह गया था। उक्त परिस्थितियों में भी लोचन ने अपने प्रजातंत्र का समर्थन किया। इतना ही नहीं, उन्होंने जनता की आजादी की माँग भी दोहराई। इन्हीं सब कारणों से लोचन बाबू जनता के प्रिय लोचन बन गये।

2.12.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. ''मन्नू भण्डारीकृत आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' भारत की स्वातन्त्र्योत्तर राजनीति का जीता-जागता दस्तावेज है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिये।

अथवा

'' 'महाभोज' उपन्यास में स्वातन्त्र्योत्तर भारत की जिस राजनीतिक वास्तविकता का चित्रण लेखिका मन्नू भण्डारी ने किया है, उसे अपने शब्दों में व्यक्त कीजिये।''

अथवा

''आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' राजनीतिक बोध का उपन्यास है'' स्पष्ट कीजिये।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उत्तर – 'महाभोज' की लेखिका मन्नू भण्डारी की कथा-चेतना नारी, प्रेम और भावात्मक संसार से सम्बद्ध रही है। यह उनके कथा-साहित्य का एक ऐसा सन्दर्भ है जिसने उनको न केवल एक पहचान दी है, अपितु उन्हें प्रसिद्धि देते हुए उन्हें प्रमुख कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है। 'महाभोज' एक ऐसा उपन्यास है जे उनकी इस स्थापित कथा-चेतना को छोड़कर एक-दूसरे अथवा कहें कि राजनीतिक संदर्भ और उससे जुड़े हुए बोध को वाणी देता है। बार-बार यह प्रश्न उठाया गया है कि राजनीति और साहित्य का क्या सम्बन्ध है ? इस विषय में अधिक कुछ न कहकर यही कहना उचित प्रतीत होता है कि राजनीति किसी-न-किसी रूप में साहित्य का अंग हमेशा से रही है। यह अलग बात है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत में राजनीति अपने यथार्थ रूप में उभरकर सामने आयी है। यह यथार्थ रूप होना तो चाहिए था व्यवस्थित और सन्तुलित, किन्तु हो नहीं पाया। परिणाम यह निकला कि हमारे देश में राजनीति विकृत होती चली गयी, वह धर्मनीति न रहकर स्वार्थनीति, सत्तालोलुप बने रहने की नीति और अवसरवादिता व भ्रष्टाचार का प्रतीक बन गयी। इसीलिए आधुनिक साहित्य में राजनीति पर्याप्त और स्पष्ट रूप से विवेचित और वर्तमान राजनीति का सच्चा दस्तावेज है।

1. राजनीतिक चेतना – राजनीतिक चेतना से अभिप्राय सामान्यत: उस चेतना से लिया जाता है जो दलगत राजनीति से सम्बंधित हो। जब हम राजनीति चेतना की बात करते हैं तो हमारा अभिप्राय यह होता है कि राजनीति का जो सही और स्वस्थ रूप है, वही अभिव्यक्त हो, किन्तु परिस्थितियों के बदलाव के साथ-साथ यह स्वस्थ राजनीतिक दृष्टिकोण बदलता भी रहता है। आज से कई दशक पूर्व राजनीति को स्वस्थ और सन्तुलित रूप में ही लिया जाता था, किन्तु अब परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं, इसलिए राजनीति का घिनौना रूप भी उभरकर सामने आने लगा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आजादी के पश्चात् राजनीतिक चेतना का स्वरूप विकृत हुआ है। इसमें जिस प्रकार विकृति आयी है, उसके लिए भले ही समय-समय पर हमारी परिस्थितियाँ जिम्मेदार रही हों, किन्तु उसमें आया विकृत रूप हमें सोचने के लिए विवश अवश्य करता है। यद्यपि थोड़ी-बहुत विकृति तो प्रेमचन्द के समय में ही आ चुकी थी, किन्तु अब तो यह चरम सीमा पर दिखाई देने लगी है। यही कारण है कि साहित्य के सभी रूपों में जिनमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, फीचर आदि सभी आते हैं, इस विकृति को देखा जा सकता है। हमारा फिल्म-जगत् भी राजनीति के इस घिनौने रूप से दूर नहीं रह गया है। कितनी ही प्रभावी और मारक फिल्में हमारे सामने राजनीति के विकृत और कलुषित रूप को उजागर कर रही हैं। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण तो है ही, सर्जकों के लिए चिन्ता और चिन्तन दोनों का विषय बनी हुई है। मन्नू भण्डारी ने अपने उपन्यास में इसी विकृत और घिनौनी राजनीति को अपना विषय बनाया है। इसे भी हम राजनीतिक चेतना ही कह सकते हैं, भले ही यह उसका विकृत और परिवर्तित रूप ही क्यों न हो।

2. साहित्य और राजनीतिक स्तर – साहित्य आज राजनीति से अछूता नहीं रह गया है। कथा-साहित्य भी इसका अपवादनहीं है। आज जो राजनीतिक का स्वरूप है और जो होना चाहिए, उसके सम्बन्ध में डॉ. रामविनोद सिंह की यह टिप्पणी विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है – ''राजनीति-बोध के घिनौनेपन तथा उससे उत्पन्न जीवन विरोधी परिस्थितियों और विसंगतियों पर हिन्दी कथा-साहित्य में पर्याप्त लिखा गया है। ऐसा लेखन स्वाभाविक परिस्थितियों से प्रेरित भी है। जिस देश का सारा नियोजन राजनीतिक स्तर पर हो रहा है, उस देश के साहित्य में राजनीतिक कार्यों का अधिकाधिक विश्लेषण किया जाना स्वाभाविक है। वस्तुत: भारतीय राजनीति विध्वंस और आत्महीन सम्बन्धों से प्रेरित और सामाजिक निर्माण की दृष्टि से असफल हो गयी है। इसने हमारे जीवन को भीतर से तोड़ा है तथा सारे मानवीय सम्बन्धों को विभिन्न कटघरों में बाँट दिया है। मूलत: हमारे देश की राजनीति सत्ता प्रतिष्ठानों पर आधिपत्य प्राप्त करने की राजनीति बन गयी है। ऐसी राजनीति समाज को कभी वर्ग-संघर्ष और कभी जाति-संघर्ष में बदलने का प्रयास करती है। समाज के बदलाव में वर्ग-संघर्ष की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है। लेकिन इसके लिए राजनीति का रचनात्मक होना आवश्यक होता है। यह अपेक्षाकृत कठिन और श्रमसाध्य व्यापार है।''

अत: भारतीय राजनीति व्यक्ति को अलग-अलग वर्गों एवं जातियों में संघटित और बाँटती आयी है। यह वर्तमान दलगत राजनीति का एक भ्रष्ट तरीका है। इसमें प्रत्येक जाति के चालाक लोग अपनी जाति की संगठित शक्ति का उपयोग कर सत्ता प्राप्त करते हैं और फिर उस जाति का नियोजन नहीं करते, बल्कि उसकी भावना और शक्ति का शोषण करते हैं। प्रत्येक जाति में स्वार्थी धूर्त लोगों का एक वर्ग बन गया है जो हर दृष्टि से सुविधाभोगी एवं अवसरवादी हैं। ऐसे ही स्वार्थी लोगों ने अपनी जाति को संघटित कर उनके राजनीति उपयोग से हरिजन वर्ग का न केवल शोषण किया है, बल्कि उनके साथ अमानवीय एवं घिनौना व्यवहार भी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

किया है। हरिजनों के घर जलाये गये हैं और उनकी औरतों के साथ खुलकर बलात्कार भी किया गया है। राजनीति के चालाक लोग अपनी क्रूर कार्य-पद्धति से हरिजनों या समाज के कमजोर लोगों को शिकार बनाकर अपनी जाति का ध्यान दूसरी ओर केन्द्रित करते हैं। उनकी जाति के लोगों का अहं ऐसे घिनौने कार्य से तुष्ट होता है और नेताओं का वर्चस्व कायम रह जाता है। मन्नू भण्डारी का आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' एक हरिजन युवक की निर्मम हत्या और उससे बनने वाले परिवेश की व्याख्या करता है। ऐसे नाजुक कथ्य का चुनाव कर मन्नू भण्डारी ने एक जोखिम भरा कार्य किया है।

3. साहसिक और जोखिक भरा लेखन—मन्नू भण्डारी का 'महाभोज' उपन्यास उनके लेखन के संदर्भ में एक साहसिक और जोखिम भरा कार्य ही कहा जायेगा। कारण यह है कि उन्होंने अपनी सृजन-सम्बन्धी चेतना से हटकर ऐसा विषय उपन्यास के लिए चुना है जिसकी प्रस्तुति में न केवल अनेक कठिनाइयाँ हैं, बल्कि उन कठिनाइयों को झेलते हुए सफलतापूर्वक राजनीति के स्वरूप को विश्लेषित कर देना एक महत्तम कार्य भी है। जोखिम भरा और साहसिक कार्य इसलिए भी है कि मन्नू भण्डारी अपने लेखनमें शहरी जीवन की विसंगतियों और उनमे अपने को फिट न बना सकने वाली नारी के आन्तरिक बोध को ही लिपिबद्ध करती रही हैं। उन्होंने नारी के संदर्भ से उन समूचे आयामों को उद्घाटित किया है जिनके कारण वह वर्तमान परिवेश में अपने को मिसफिट महसूस करती रहती है। उनके द्वारा लिखित 'एक इंच मुस्कान' भले ही एक सहयेागी लेखन है, फिर भी उन्हें स्थापित उपन्यास-लेखिका बनाने में उसका विशेष योगदान है। 'एक इंच मुस्कान' में मन्नू भण्डारी ने जो अंश लिखा है, वह प्रशंसनीय माना गया है और उसी के आधार पर उनकी रचनाशीलता का मूल्यांकन भी किया गया है। जहाँ तक 'आपका बंटी' का प्रश्न है, वह उनका स्वतंत्र लेखन है और आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास-साहित्य नें न केवल नया है, अपितु एक नयी दिशा का संकेतक भी है। यह वह उपन्यास है जिसमें लेखिका ने अकेलेपन से मुक्त होने और एक नया समीकरण स्थापित करने वाले पात्र की मनोदशा का अभिव्यंजन बड़ी खूबी के साथ किया है। इन दोनों उपन्यासों से यह सिद्ध हो जाता है कि मन्नूजी की सृजन-क्षमता शहरी जीवन से जुड़ी रही है और उसी जीवन की समस्याओं को आकार देती रही है। ऐसी स्थिति में एक नया कथ्य समुचित और विश्वसनीय नियोजन के अभाव में मन्नू भण्डारी के स्थापित लेखकीय अस्तित्व को झकझोर एवं विस्थापित कर सकता है। सम्भवत: इस खतरे की आशंका से लेखिका अनभिज्ञ नहीं है। अत: उसने खतरे को स्वीकार कर एक साहसिक कार्य किया है। इस साहस एवं जोखिम भरे कार्य के लिए लेखिका मन्नू भण्डारी बधाई पाने की हकदार बन जाती है।

मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'महाभोज' उपन्यास राजनीतिक चेतना और सामयिक यथार्थ से युक्त उपन्यास है। यह एक हरिजन युवक की निर्मम हत्या और उससे बनने वाले परिवेश को पाठकों के सामने ले आता है। सामान्यत: राजनीतिक क्षितिज पर जो कुछ घटित होता है, वह एक सीमा तक शहरों में कैद होकर रह जाता है, किन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं रही। अब तो राजनीति में यदि कुछ भी घटित होता है तो वह शहर की हदबन्दी को लाँघकर ग्रामीण परिवेश तक जा पहुँचता है। अत: उससे न केवल शहरी जीवन प्रभावित होता है, अपितु ग्रामीण जीवन भी अप्रभावित नहीं रह पाता है। प्रस्तुत उपन्यास के कथानक में यही चेतना दर्शायी गई है। सरोहा गाँव की हरिजन बस्ती में आग लगा दी जाती है, झोंपड़ों के जलने के साथ-साथ कितने ही मनुष्य जीवित जलकर राख हो जाते हैं। इस घटना से परिवेश उबर भी नहीं पाता है कि गाँव के ही एक युवक बिसेसर की हत्या हो जाती है। वहाँ शोषण और अत्याचार जैसी चीजें तो होती ही रहती हैं। इन दो प्रमुख घटनाओं के होने से शहर की राजनीति, सत्ताधारियों की राजनीति तो प्रभावित होती ही है, दुर्घटनाओं का केन्द्र बना हुआ सरोहा गाँव भी उसी की लपेट में आ जाता है जो यथार्थपूर्ण है। गाँवों में घटित घटनाएँ शहर से जुड़ जाती हैं। इनका जुड़ाव इसलिए अधिक तेजी से होता है कि चुनाव का माहौल है। जिसे गाँव में ये घटनाएँ घटित होती हैं वहाँ पर चुनाव होना है। बस, इसी बिन्दु से राजनीति के अपराधीकरण, विकृत स्वरूप, अमानवीय व्यवहार, अन्याय, अधर्म, हत्या आदि की घटनाएँ घटित होने लगती हैं। इन सबका ब्यौरा 'महाभोज' उपन्यास में देखने को मिल जाता है। इसलिए इस उपन्यास को स्वातन्त्र्योत्तर भारत की राजनीतिक चेतना के वास्तविक चित्रण से परिपूर्ण उपन्यास कहना न तो अनुचित है और न असंगत ही है। इस उपन्यास को राजनीतिक चेतनापरक उपन्यास जिन आधारों पर कहा जा सकता है, वे निम्नांकित बिन्दुओं से स्पष्ट हो जाते हैं—

1. राजनीति बोध और चुनाव-चक्र—ग्रामीण जीवन के सर्वाधिक उपेक्षित वर्ग की व्यथा-कथा के स्थान पर देश की राजनीतिक स्थिति और चुनाव-चक्र को बहुत अधिक विस्तार देकर लेखिका ने अपनी ग्रामीण बोध विषयक अल्प जानकारी को

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

छिपाने का प्रयत्न किया है। यही कारण है कि 'महाभोज' उपन्यास केवल ग्रामीण कथा-बोध का उपन्यास नहीं रह गया है, यह समकालीन राजनीति बोध का उपन्यास बन गया है। परोक्ष रूप से लेखिका मन्नू भण्डारी शहरी-बोध को इस उपन्यास के केन्द्र में स्थापित करने में सफल हो गयी हैं। ऐसी स्थिति में इसे राजनैतिक बोध या राजनीतिक चेतना का उपन्यास कहना उचित प्रतीत होता है। ग्रामीण जीवन में हरिजनों पर होने वाले अत्याचार की अनेक स्थितियाँ हैं, किन्तु उचित जानकारी के अभाव में उनका रचनात्मक स्तर पर उपयोग करना कोई सरल कार्य नहीं है। ऐसी स्थिति में इस नाजुक कथ्य को राजनीतिक हरकतों से जोड़ने की लेखकीय लाचारी भी स्वत: ही स्पष्ट हो जाती है। एक विद्वान् समीक्षक का यह कथन उचित प्रतीत होता है –

''राजनीति का रचनात्मक उपयोग भी श्रमसाध्य कार्य-व्यापार है। निश्चय ही इस उपन्यास में लेखिका के लिए यह कार्य सरल और सुविधाजनक है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि राजनीतिक स्थितियों के रचनात्मक उपयोग में भी लेखिका को सफलता नहीं मिली है। इसका मुख्य कारण यह है कि राजनीतिक उपन्यास लेखन के लिए जिस निरस्संगता की आवश्यकता होती है, मन्नू भण्डारी में उसका अभाव है। इसीलिए इस उपन्यास में लेखिका का राजनीतिक रुझान स्पष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में राजनीतिक स्थितियों का वास्तविक मूल्यांकन और नियोजन नहीं हो सकता। अतएव आलोच्य उपन्यास का अनगढ़ राजनीतिक उपयोग लेखिका की सफलता को अधिक सीमित बना देता है। जाहिर है कि जिस नाजुक कथ्य को उसने अपना विषय बनाया, वह उपेक्षित होकर इस उपन्यास में अर्थहीन बन गया है। इसीलिए इस उपन्यास में बिसू नामक हरिजन युवक की हत्या के अवसाद की अपेक्षा जमींदार जोरावरसिंह और मुख्यमंत्री दा साहब के राजनीतिक षड्यंत्र की टीस का अनुभव होता है। यही कारण है कि आलोच्य उपन्यास यातनादायक परिस्थिति को बनाये नहीं रख पाता।''

जिस विधानसभा क्षेत्र का उपचुनाव होता है, उसमें सरोहा गाँव भी सम्मिलित है। इसमें दो विरोधी शक्तियाँ अपना दबदबा बनाये रखने के लिए क्रियाशील दिखलाई गयी है। भूतपूर्व मुख्यमंत्री सुकुलजी के विरोध में दा साहब का प्रत्याशी लखन चुनाव लड़ता है। जोरावरसिंह मुख्यमंत्री का समर्थक है। वह न केवल भूमिपति है, बल्कि अपनी क्रूरता एवं पाशविकता के लिए कुख्यात भी है। वही हरिजनों के घरों को जलाता है और भी बहुत से कारनामे करता है, परन्तु बच इसलिए जाता है कि उसे मुख्यमंत्री दा साहब का समर्थन और विश्वास प्राप्त है। गाँव के लोग भी जानते हैं कि हरिजन युवक बिसेसर की हत्या जोरावरसिंह ने ही करवाई है, उसे जहर देकर मार डाला गया है, किन्तु कोई कुछ बोलता नहीं है, क्योंकि सभी उससे आतंकित हैं और उसके राजनीतिक समीकरणों को समझते हैं। यों भी जोरावर यदि बिसेसर की हत्या को आत्महत्या के रूप में बदल देता है या बदलने का प्रयास करता है तो यह भी उसकी ऐसी सफलता है जिसे राजनीतिक चाल ही कहा जा सकता है। बिसेसर की हत्या की उत्तेजना को कम करने के उद्देश्य से दा साहब न केवल हीराके पास जाकर शोक व्यक्त करते हैं, बल्कि घरेलू ग्रामीण उद्योग योजना का उद्घाटन भी हीरा के हाथों से कराते हैं। एक ओर यह सब होता है तो दूसरी ओर विरोधी दल के नेता सुकुल बाबू इस हत्याकाण्ड का राजनीतिक लाभ उठाना चाहते हैं। वे सरकार को हरिजन विरोधी और जनतंत्र विरोधी बतलाकर एक बहुत बड़ी रैली का आयोजन करते हैं।

परिस्थितियों को भली-भाँति समझकर वातावरण में कुछ हल्कापन लाने के उद्देश्य से और अपना प्रभाव जमाने की नीयत से मुख्यमंत्री दा साहब बिसेसर की हत्या की उच्चस्तरीय जाँच करवाने का प्रयास करते हैं और कराते भी हैं। जोरावर क्रूर और निर्मम तो है ही, वह इस जाँच के विरोध में खड़ा हो जाता है। परिणामस्वरूप अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए यह जानते हुए भी कि लखन मुख्यमंत्री दा साहब का प्रत्याशी है, उनसे अलग होकर चुनाव मैदान में कूद पड़ता है। मुख्यमंत्री दा साहब पिछली आगजनी और बिसेसर की हत्या का संकेत देकर जोरावरसिंह को शांत भी करते हैं और उसे चुनावी मैदान से अलग करने में सफल भी हो जाते हैं। ये सभी स्थितियाँ इस बात की सूचक हैं कि आलोच्य उपन्यास में लेखिका मन्नू भण्डारी ने वर्तमान राजनीतिक विकृति को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने में सफलता प्राप्त की है। यह सफलता ऐसी नहीं है जो केवल यह सिद्ध करती हो कि यह राजनीतिक उपन्यास है, बल्कि यह भी प्रमाणित कर देती है कि आज राजनीति के कुचक्र से न तो शहर बचे हैं और न गाँव। इन दोनों ही स्थानों पर राजनीति ने अपना जाल फैला रखा है और यह जाल ऐसा है जिसमें एक बार यदि व्यक्ति फँस गया तो उससे निकलना कठिन हो जाता है।

2. सुविधा-प्राप्ति और सत्ता-प्राप्ति की राजनीति – यह बहुत पहले होता था कि राजनीति धर्मनीति होती थी, अब ऐसा नहीं है। अब तो राजनीति का कवच पहनकर नेता लोग सुविधाएँ प्राप्त करते हैं और सत्ता प्राप्त करते हैं। महाभोज उपन्यास में दा साहब

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भले ही यह कहते हों कि उनके लिए राजनीति धर्मनीति ही है और वे गीता के निष्काम कर्मयोग की दुहाई देते हों, किन्तु ऐसी बात नहीं है। यदि ऐसी बात होती तो वे जाँच के परिणाम सामने आने पर जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर लेते, किन्तु वे अपनी कुर्सी बनाये रखने के लिए और सत्ता पर अधिकार रखने के उद्देश्य से डी.आई.जी. सिन्हा को ऐसे संकेत देते हैं जिनसे बिसेसर की हत्या हुई है, यह तो सिद्ध हो जाये परन्तु साथ ही साथ यह भी सिद्ध हो जाये कि यह हत्या जोरावरसिंह ने नहीं की है, बल्कि बिसेसर के ही दोस्त बिन्दा ने की है। यही होता है। यह होने के लिए वे डी.आई.जी. सिन्हा को संकेत देते हैं और उन्हें आई.जी. का पद भी प्राप्त हो जाता है। इतना ही नहीं, 'मशाल' अखबार के सम्पादक दत्ता साहब को अनेक सरकारी सुविधाएँ भी प्राप्त हो जाती हैं। उनके अखबार के लिए कागज का कोटा बढ़ा दिया जाता है। अखबार में दा साहब की प्रशंसा होती है, उनकी रीति-नीति को सम्मान प्राप्त होता है और सारा वातावरण दा साहब के पक्ष में हो जाता है। सत्तादल की भीतरी राजनीति भी इस घटना का समुचित राजनीतिक उपयोग करना चाहती है। परिणामस्वरूप मंत्रिमण्डल के शिक्षामंत्री लोचन मुख्यमंत्री दा साहब के विरोधियों का नेतृत्व सम्भाल लेते हैं। इतना ही नहीं, अनेक सत्ताधारी या विरोधी दलों के सहित अनेक अधिकारी इस घटना का उपयोग अपने-अपने स्वार्थ साधन के लिए करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह सच्चाई न केवल किसी एक दल या राज्य की है, बल्कि यह भारतीय राजनीतिक परिवेश का यथार्थ और कटु सत्य है। इससे सिद्ध हो जाता है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय राजनीति सुविधा-प्राप्ति और सत्ता-प्राप्ति की राजनीति बनकर रह गयी है।

एक समीक्षक ने लिखा है कि "आज प्रत्येक दल घटित घटनाओं का अपने पक्ष में इस्तेमाल करके सत्ता प्राप्त करना चाहता है। किसी भी दल के पास सामाजिक निर्माण का कार्य नहीं है। जो कार्य है वह केवल कागजी है और उसका इस्तेमाल कभी नहीं किया जाता। इसीलिए भारतीय राजनीतिक अवसर और सत्तावाद की राजनीति हो गयी है और मानवीय भावना से यह राजनीति बिल्कुल कट गयी है। स्थितियों के राजनीतिक इस्तेमाल तथा नेताओं की मंशा को लेखिका ने अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए अधिक रस लेने का प्रयास करने लगी है। अत: ऐसे प्रसंग अनावश्यक विस्त र भी पा गये हैं और वे अविश्वसनीय भी बन गये हैं। सक्सेना की कथा वैसी ही बन गयी है जो लेखिका के अटूट प्रयास के बावजूद पाठकीय मानस को आश्वस्त नहीं कर पाती है।"

3. घिनौना राजनीतिक जीवन – 'महाभोज' उपन्यास के अन्तर्गत वर्तमान परिवेश में उभरे घिनौने राजनीतिक जीवन को भी अभिव्यक्त किया गया है। वास्तव में उस राजनीति को राजनीति नहीं कहा जा सकता है जो घिनौनी हरकतों को बढ़ावा देती है, अपनी स्वार्थ-पूर्ति के लिए कुत्सित विचारों को अपनाती है और अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए मनमाने ढंग सेपद और सत्ता का दुरुपयोग करती है। इस उपन्यास में ऐसे पात्र भी हैं जो स्वतंत्र विचारों के हैं, ईमानदारी को महत्त्व देते हैं और कर्त्तव्यपरायण हैं। पुलिस अधीक्षक सक्सेना ऐसे ही पात्र हैं। वे निष्ठा और ईमानदारी से बिसेसर की हत्या के कारणों की खोज करते हैं, अथक परिश्रम करके वे हत्या विषयक सामग्री को एकत्र करते हैं। परिणाम में वे यह व्यक्त कर देते हैं कि बिसेसर की हत्या के लिए जोरावरसिंह दोषी है। यह सब तो ठीक है, किन्तु मुख्यमंत्री दा साहब जोरावर को दोषी मानने के पक्ष में नहीं हैं। वे जानते हैं कि यदि जोरावरसिंह को सजा दी गयी तो वह उनके लिए खतरा बन सकता है और उपचुनाव में पराजय मिल सकती है। बस, यहीं से राजनीति को धर्मनीति कहने तथा मानने वाले दा साहब अपनी कुर्सी बचाये रखने के लिए और अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए सिन्हा साहब को कुछ ऐसे संकेत देते हैं जिससे बिन्दा दोषी सिद्ध हो जाए और जोरावर बच जाये। परिणामस्वरूप मुख्यमंत्री पुलिस अधीक्षक सक्सेना केकार्य से अथवा उनकी खोजबीन से खीझ उठते हैं और उसे मुअत्तिल कर देते हैं। इतना ही नहीं, दा साहब के ही संकेत से बिसेसर के सहयोगी बिन्दा पर हत्या का आरोप लगाया जाता है। वह कैद कर लिया जाता है और पुलिस हिरासत में उसकी बुरी तरह पिटाई की जाती है। उपन्यास में आया यह अंश घिनौने राजनीतिक चरित्र को व्यक्त करता है और उपन्यास लेखिका ऐसी घिनौनी राजनीति के विरोध में खड़ी दिखाई देती है।

इस संदर्भ में डॉ. रामविनोद सिंह ने अपने ढंग से जो टिप्पणी प्रस्तुत की है, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, अत: उसे यहाँ यथावत् प्रस्तुत किया जा रहा है – "अंधेरे में प्रकाश की उपयोगिता और आवश्यकता अधिक बढ़ जाती है। इसको प्रदर्शित करने के लिए की सक्सेना और बिन्दा का प्रसंग गढ़ा गया है। निश्चय ही बिन्दा की पिटाई तथा सक्सेना की मुअत्तली पाठकीय आक्रोश को और अधिक तीव्र बना देती है। यद्यपि यह सच्चाई हमारे समाज की है। फिर भी उपन्यास की सच्चाई हमें नये ढंग से उत्तेजित करती है या फिर हमारे मानस को अधिक संवेदनशील बना पाती है। अत: श्रीलाल शुक्ल के इस मत से सहमत हो पाना संभव नहीं कि यह हमें

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)Ladnun

झकझोर नहीं पाती है। किसी की मौत को राजनीतिक लाभ का साधन बनाना घिनौनी बात है, पर राजनीति में घिनौनापन इतनी गहराई और व्यापकता से प्रविष्ट है कि अपने आप में यह कथा हमें उस तरह नहीं झकझोर पाती जिस तरह उसने लेखिका को झकझोरा है, हजारों में यह भी एक गंदी अखबारी घटना भर हो जाती है। रुक्मा की मातृत्वपूर्ण व्यग्रता, हीरा के आँसू, उसका लगभग नाटकीय वार्तालाप, बिन्दा का आवेश, सक्सेना का त्याग तक उसे ऐसी हिलाने वाली ट्रेजेडी नहीं बना पाता, जो कि लेखिका का मंतव्य था। मुख्यमंत्री की कुटिलता हमारे मन में कोई पवित्र क्रोध नहीं जगा पाती, उनकी सारी हरकतें रिशकू, मुंजाल मेहता और मुख्यमंत्री के ही कई औपन्यासिक चरित्रों की स्टीरियो-टाइप जैसी जान पड़ती हैं और वे जो भी करते हैं वह वही है जिसकी उनके चरित्रों से आशा की जा सकती है।''

उपर्युक्त क्रम में ही लेखक ने आगे लिखा है कि ''कोई भी लेखक सामाजिक घटना से ही प्रभाव ग्रहण करता है। वह घटनाश्रित सामाजिक साक्ष्य को अपना लेखन का विषय बनाता है। साहित्य में जो कुछ उपलब्ध होता है, उसकी सही जानकारी समाज के जागरूक लोगों को रहती है। लेखक सामाजिक सत्य को ही अपने अनुभव और प्रतिभा से जोड़कर प्रस्तुत करता है। आलोच्य उपन्यास का काल्पनिक सत्य भी लेखकीय मानस को झकझोरता है। क्योंकि अखबारी सूचना और लेखकीय संवेदना पाठक को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करती हैं। सूचनाएँ तात्कालिक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कर समाप्त हो जाती हैं लेकिन साहित्य का सत्य पाठक के मन और हृदय दोनों को झकझोरता है। वह समस्या पर सोचने को विवश करता है। अत: यह कहना नितान्त ही असंगत है कि इस उपन्यास की संवेदनाएँ इसिलए नहीं झकझोर पातीं कि ये सब जानी-पहचानी हैं। सच्चाई यह है कि यदि लेखिका कुत्सित राजनीति के विविध मुखौटे की अपेक्षा हरिजनों के आक्रोश अथवा भय से भरे हुए मन को अधिक विस्तार और महत्त्व देती, तब यह रचना आज की सामाजिक स्थिति का प्रामाणिक दस्तावेज बन जाती। अत: राजनीति की शक्लों को विस्तार देकर लेखिका ने अपने लेखन के लिए एक सीमा खींच ली है और यह उपन्यास सामाजिक सत्य का दस्तावेज होने से वंचित रह गया है।''

4. राजनीति और शिल्प-संयोजन – मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'महाभोज' राजनीतिक चेतनापरक उपन्यास है। राजनीति के बोध को प्रस्तुत करने में एक भिन्न प्रकार का संयोजन किया जाता है। इसमें सन्देह नहीं है कि मन्नू भण्डारी अपने राजनीतिक चेतना वाले उपन्यास में शिल्प-संयोजन के प्रति पर्याप्त सावधान रही हैं। छोटी-छोटी कथाओं को विश्वसनीयता प्रदान करने के लिए और कथा के प्रभाव को बनाये रखने के लिए मन्नू भण्डारी निस्संगता का निर्वाह नहीं कर पायी हैं। इतने पर भी यह सत्य है कि समकालीन राजनीति-बोध तथा उससे प्रभावित विभिन्न वर्गों की मानसिकता का सही विश्लेषण सही शिल्प द्वारा किया गया है। राजनीति की घटनाओं को जीवन के प्रभाव में ढालकर लेखिका ने उनका रचनात्मक उपयोग किया है। राजनीति केप्रभाव से बनते हुए कृत्रिम परिवेश और राजनीतिक शक्तियों के खोखलेपन की बड़ी ही सहजता और सतर्कता से अभिव्यक्त किया गया है। पुलिस अधीक्षक सक्सेना की दृढ़ता, बिन्दा का मनोबल कभी यथार्थ से दूर दिखलाई पड़ सकता है, किन्तु जबसमाज मूल्यहीनता के कगार पर खड़ा हो तो फिर ऐसे व्यक्ति मिल ही जाते हैं जो परिस्थिति के दबाव से अपने को मुक्त करना चाहते हैं। उपन्यास में सक्सेना और बिन्दा ऐसे ही व्यक्तियों का प्रतीकार्थ रखते हैं। जहाँ तक उपन्यास में अपनायी गयी भाषा-शैली का प्रश्न है, वह भी उपन्यास की मूल चेतना राजनीतिक बोध से पूरी तरह जुड़ी हुई है। राजनीति चेतना के घिनौनेपन, उसमें आये स्वार्थी तत्त्वों, सत्ता के लालचियों और पाशविक हरकतें करने वाले पात्रों व उनकी घटनाओं व प्रसंग वाली स्थितियों में भाषा-शैली पूरी तरह राजनीतिक चेतना से जुड़ी हुई प्रतीत होती है। यह भी कह सकते हैं कि वह विषयानुकूल है, उपन्यास के कथ्य के सर्वथा अनुकूल है।

निष्कर्ष – उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि 'महाभोज' राजनीतिक चेतनापरक उपन्यास है। इसमें राजनीति को वर्तमान परिवेश के संदर्भ में चित्रित किया गया है। आज राजनीति की जो स्थिति है, वही इस उपन्यास का प्रमुख विषय बनकर सामने आयी है। लेखिका मन्नू भण्डारी ने सत्ता प्राप्ति के लोभ लक्ष्य प्राप्ति संदर्भों और स्वार्थ-सिद्ध करने वाली कलुषित राजनीतिक मानसिकता को पूरे यथार्थ के साथ अभिव्यक्ति प्रदान की है। विशेष बात यह है कि जो राजनीति केवल शहरों तक सीमित थी, वही अब अपना कलुषित रूप लिए हुए ग्रामीण जीवन को भी विकृत बना रही है। पूरा उपन्यास शहरी और ग्रामीण राजनीति के सम्मिलित कुचक्रों को आधार बनाकर लिखा गया है। यही कारण है कि यह एक सफल राजनीतिक चेतना का उपन्यास बन गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रश्न- 2. मन्नू भण्डारी द्वारा रचित 'महाभोज' उपन्यास की भाषागत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त मध्यम होती है। जब हम किसी उपन्यास की भाषा शैली का मूल्यांकन करते हैं तो सर्वप्रथम यह देखा जाता है कि उपन्यास का कथ्य किस प्रकार का है, उसके अनुरूप उसकी भाषा है अथवा नहीं। यदि भाषा कथ्य के अनुरूप है तो हम सहज ही यह मान लेते हैं कि उपन्यासकार अपनी कृति के प्रति पूर्ण ईमानदार हैं। भाषा का प्रयोग प्रसंग, पात्र, परिस्थिति और कथ्य के अनुरूप वह भाषा शैली का प्रयोग कर रहा है। यह इसलिए होता है कि पाठक उपन्यास की आत्मा से जुड़ा होता है। पाठक को यह अनुभव होता रहे कि उपन्यास का विषय जैसा है उसकी भाषा भी वैसी ही है। यदि हम 'महाभोज' उपन्यास की भाषाशैली के बारे में विचार करें तो अंत तकऐसा लगता है कि इसकी भाषा कथ्य के अनुरूप और प्रसंग सापेक्ष है।

'महाभोज' की भाषा –

किसी भी उपन्यास का अध्ययन दो प्रकार से किया जा सक्ता है – एक तो भाषा की सामान्य विशेषताओं के आधार पर और दूसरे प्रयुक्त शब्दावली के आधार पर। विशेष बात यह है कि महाभोज की भाषा साधारण बोलचाल की भाषा है। उपन्यास में प्रयुक्त भाषा के जो रूप सामने आये हैं उन्हें हम निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं।

1. तत्सम शब्दावली का प्रयोग – 'महाभोज' उपन्यास की यह प्रथम भाषागत विशेषता है कि यह तत्सम शब्दावली के प्रयोग से जुड़ी हुई है। भाषा के इस रूप को उजागर करने के लिए ऐसे कितने ही शब्द प्रयुक्त हुए हैं, यथा – सौम्यता, भव्य, वर्णा, संयम, आहार-विहार, सौम्य, साधना, दृष्टि, विकृत, व्यवधान, आत्मग्लानी, अनन्त धैर्य, मुद्रा आदि-आदि।

2. उर्दू शब्दावली का प्रयोग – महाभोज की भाषा में पर्याप्त मात्रा में उर्दू शब्दावली का प्रयोग हुआ है। यद्यपि उर्दूभाषा हिन्दी में प्रयुक्त होने वाली ऐसी मात्रा बन चुकी है कि इसे दैनिक बोल-चाल की भाषा से पृथक् करना मुश्किल है।

वैसे यह भाषा साहित्यिक रचनाशैली में मधुरता व कर्णप्रियता जैसे गुणों का वेग उत्पन्न करने वाली है। 'महाभोज' उपन्यास में भी उर्दू के प्रभावशाली शब्दों का प्रयोग हुआ है, यथा – लावारिस, लाश, मुश्किल, बेअसर, खलबली, सरहद, राख, आदमी, अखबारनबीस, खबर, दर्दनाक, खुमारी, हादसा, सिलसिला आदि।

3. अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग – महाभोज उपन्यास की एक यह भी महत्ती विशेषता रही है कि जहाँ एक ओर इसमें तत्सम शब्दावली और उर्दूभाषी शब्दों का प्रयोग हुआ है वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी शब्दों का भी जमकर प्रयोग हुआ है, यथा – ड्यूटी, हॉरीबल, सिंम्पली, इनह्यूमन, सस्पेन्ड, सीट, पार्टी, डायरी, कार्ड, फाइल, फोन, मीटिंग, इमरजेन्सी, प्रमोशन, प्रमोट, इन्टरव्यू, इम्पोर्टेड, सेल्यूट, रिसर्च प्रोजेक्ट, क्लास स्ट्रगल, कास्ट इस्ट्रगल, एक्स्ट्रा सेंसिटिव, आइ मीन पर्सनल, नथिंग बैरी स्पेशल नथिंग रोमान्टिक अबाउट हिम, ही वाज नोट इन हिस प्रोपर सैसीज़ एक्सक्यूज मी सर, आई मस्ट काँग्रेच्युलेट यू, गो अहेड आदि।

4. मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग – 'महाभोज' उपन्यास में हिन्दी भाषा के एक महत्त्वपूर्ण गुण लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी प्रायः देखने को मिला है, यथा – चकना चूर हो जाना, जहरीला सांप सूँघ जाना, आग लगना, मुँह की खाना, आग उगलना, दुहरी लड़ाई लड़ना, लेने के देने पड़ जाना, कमर कसना, गेहूँ के साथ घुन पिसना, माथे पर कलंक लगना, पोल खोल देना, एक पंथ दो काज, गले की घण्टी बनाना, नौ दो ग्यारह, दूध का दूध और पानी का पानी होना आदि कितने ही प्रयोग हुए हैं जिनसे भाषा में सम्प्रेषणीयता के गुण उत्पन्न हो गये हैं।

5. भावानुकूल भाषा का प्रयोग – महाभोज उपन्यास में ऐसे स्थलों की कमी नहीं है जहाँ पर भावानुकूल भाषा का प्रयोग नहीं किया गया हो। जैसे – सरोहा गाँव में आगजनी के बाद पाठक के सामने सम्पूर्ण स्थिति को यथारूप प्रकट होता दिखाई देता है।

''आग से उठने वाले बादल तो एक ही दिन में छँट गये, पर शहरी गाड़ियों से उठने वाले धूल के बादल कई दिनों तक मण्डराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रूँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया तथा बड़े-बड़े आश्वासन दिये। अखबार नबीस आये तो दनादन उस राख के ढेर की अनेक फोटो खींच कर ले गये। दूसरे दिन अखबार में छापकर घर-घर पहुँचा भी दिया।'' इसी प्रकार लेखिका मन्नू भंडारी ने इस घटना का सचित्र ब्यौरा स्पष्ट करते हुए – किसी ने सवेरे खुमारी में अँगड़ाई लेते हुए तो किसी ने चाय की

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

चुस्की के साथ इस ख़बर को पढ़ा। देखते ही चेहरे पर गहरे विषाद की छाया पुत गई और चाय का मीठा घूँट भी कड़वा हो गया। वही राख का ढेर अब सहानुभूति और दु:ख में लिपट कर निकला। ''ओह हरिबल.....सिम्पली इन ह्यूमन। कब तक यह सब और चलता रहेगा ?'' और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँव वालों की जिन्दगियों की तरह ही अखबार भी रद्दी के ढेर में जा मिला।

6. पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग – इस उपन्यास की दूसरी मुख्य विशेषता यह रही है कि इसकी भाषा पात्रों के अनुकूल है। सभी पात्रों की भाषा उनके व्यक्तित्व और गरिमा को उजागर करने वाली है। दा साहब जब किसी व्यक्ति से बात करते हैं तो उसके स्टेण्डर के अनुकूल ही दो टूक जवाब देकर वे अपनी बात को विराम दे देते हैं। बयान देते समय महेश शर्मा की भाषा एक शिथिल व्यक्ति की भाषा लगती है। हीरा की भाषा ग्रामीण और अशिक्षित पात्र की भाषा है। अत: हय कह सकते हैं कि आलोच्य उपन्यास की भाषा का प्रयोग पात्रों के स्तर और उनकी भावना के अनुकूल है।

''कहाँ रखा है पद-पद। भूल जाइये अब यह सब। विरोधी दल के नेता इस घटना को ऐसा भुनाएँगे कि हम सब टापते ही रह जायेंगे। यह बिसू की नहीं बल्कि समझ लीजिये कि यह मेरी हत्या हुई है, मेरी।'' लखन ने खुले पंजेसे छाती पीटकर अपनी हत्या की घोषणा करके दा साहब को दहलाना चाहा। ''हूँ।'' दा साहब ने कुछ इस प्रकार से हूँकार भरी कि जैसे नए सिरे से सारी स्थिति का पूरा-पूरा जायजा ले रहे हों।

इसी क्रम में उपन्यास के एक पात्र बिसेसर के पिता हीरा की भाषा को भी लिया जा सकता है ''कहा कहत, सरकार। हाँ, महतारी लड़त रही, छोटे-छोटे लरिकन का पेट काटि के पढावा अउर अब कछु करै न धरै। तब हिम्मत रही साहब.....अब हाथ पाँव नहीं चलत, एहि से महतारी बकत रही.....कोसती रही।'' फिर भर्राये और रूँधी हुई आवाज में कहा – ''पर जब से गवा है, आँखिन से आँसू नहीं टूटत। रोय-रोय के आधी हो गयी है। सब दिन अपने को कोसत है – दैया रे! हमहिन लड़ि-लड़ि के अपने बिसू को मार डाला। दुई-दुई रोटीन का तरसाई दीन। बहुत कलपती हे सरकार! वाहि केर दु:ख नाहीं देखा जात।''

7. सूक्ति प्रधान भाषा – 'महाभोज' उपन्यास में सूक्ति प्रधान भाषा का प्रयोग भी पर्याप्त मात्रा में किया है। विशेष बात यह है कि जब-जब भाषा सूक्ति प्रधान होती है, तब-तब उसमें उतनी ही गहराई आती है अथवा हम कहें कि उसकी अर्थवत्ता उतनी ही बढ जाती है। 'महाभोज' के प्रमुख पात्र दा साहब प्राय: सूक्ति प्रधान भाषा का प्रयोग करते हैं, यथा –

(अ) ''आदमी जब अपनी सीमा और सामर्थ्य को भूलकर कामना करने लगे तो समझ लो कि पतन की ओर उसके कदम बढने लग गये।''

(ब) ''यह भाषा मुसाहिबों को शोभा देती है, तुम्हें नहीं और मुसाहिबों का जमाना अब गया।''

(स) ''सच पूछा जाये तो बड़ा न आदमी होता है और न घटना, यह तो बस मौके-मौके की बात होती है।''

(द) ''पद के प्रलोभन में अविवेकी मत बनो।''

सुकुल बाबू ने भी सूक्ति प्रधान भाषा का प्रयोग किया है, जैसे – ''कुर्सी और इंसानियत में बैर है। इन्सानियत की खाद पर कुर्सी के पाये अच्छी तरह से जम जाते हैं।''

बिन्दा के द्वारा भी एक दो स्थानों पर ऐसी ही भाषा के प्रयोग किये गये हैं – ''खड़ा हुआ हूँ आप लोगों के हक़ की लड़ाई लड़ने के लिये। बिसू की मौत का हिसाब पूछने के लिये। यह केवल बिसू की मौत की ही नहीं, यह आप सब लोगों के जिन्दा रहने का सवाल है।''

8. व्यंजना प्रधान भाषा का प्रयोग – 'महाभोज' उपन्यास में व्यंजना-प्रधान भाषा का प्रयोग भी कई स्थलों पर किया है। बयान वाले प्रसंग में जब सक्सेना बिन्दा पर व्यंग्य करता है तब वह मन मसोस कर रह जाता है और भड़कते हुए केवल इतना ही कह पाता है कि ''मैं आज आ गया। आज भी नहीं आता, अगर काका ने सौगन्ध नहीं दिलाई होती तो।'' बिन्दा का अभिप्राय: हीरा काका से था। सक्सेना जब यह कहते हैं कि ''सरकार के बुलावे पर न आना जुर्म है।'' तो बिन्दा जो उत्तर देता है वह व्यंजना प्रधान भाषा है, यथा – ''ज़ुर्म!'' एका एक लपट-सी कौंधी बिन्दा की आँखों में'' ज़ुर्म की पहचान रह गई है, आप लोगों को ? बड़े-बड़े ज़ुर्म आप लोगों को ज़ुर्म नहीं लगते, ज़िन्दा आदमियों को जला दो... मार दो...यह सब ज़ुर्म नहीं है न आपकी नज़रों में ?'' आँखों के डोरे लाल हो आये और कनपटी की नसें फ़ड़कने लगीं बिन्दा की। रुक्मा ने उसके आवेश पर अंकुश लगाने के लिये कस कर उसकी बाँह पकड़ ली। भय से उसका चेहरा जर्द पड़ने लगा परन्तु सक्सेना के चेहरे पर किसी भी प्रकार का कोई विकार नहीं आया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

9. सपाट बयानी – इस शब्द से अभिप्राय: जब पात्र ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जिसमें कोई लाग लपेट न हो वह सीधे-सादे ढंग से तेज तर्रार अथवा आक्रामक भाषा में जो भी कुछ कहता है वह इस भाषा का रूप होता है।

प्रश्न-3. 'महाभोज' उपन्यास के प्रमुख पात्र दा साहब, सुकुल बाबू तथा लोचन भैया की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिये।

उत्तर – किसी भी उपन्यास में उसके पात्रों अथवा उसमें निहित चरित्र-चित्रण तत्त्व की प्रधानता होती है। चारित्रिक दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास अत्यन्त सफल व जीवंत है। इसका प्रत्येक चरित्र अपने में पूर्ण, यथार्थ, अनुकूल और स्वाभाविक है। किसी भी पात्र का चरित्र कहीं पर भी ऐसा नहीं लगता है कि वह कोरा काल्पनिक है। राजनीति के रंग में रंगे हुए सभी पात्र पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत किये गये हैं। लेखिका ने पात्रों के मनोविज्ञान और उनकी मानसिकता को ध्यान में रखकर अपने चरित्रों को प्रस्तुत किया है –

मुख्यमंत्री दा साहब का चरित्र-चित्रण

'महाभोज' उपन्यास के प्रमुख पात्र दा साहब का चरित्र-चित्रण उनकी निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताओं से स्पष्ट किया जा सकता है –

1. अत्यंत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति – दा साहब प्रस्तुत उपन्यास के एक अति महत्त्वपूर्ण चरित्र हैं जिनके व्यक्तित्व और चरित्र को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया गया है, क्योंकि कथावस्तु के विकास में तो उनका योगदान है ही, अन्य चरित्रों से भी उनका व्यक्तित्व सीधा सम्बन्ध रखता है। दा साहब पूरे शहर के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं जिसका प्रमाण यह है कि वे एक 'मुख्यमंत्री' हैं। यह पद अपने आप में महत्त्वपूर्ण होता है और इस पद पर वही व्यक्ति बैठ सकता है जो जानता है की दृष्टि में समर्पित, कर्मठ और लोकप्रिय व्यक्ति हो, साथ ही वह जनता के हृदय में सम्माननीय और विश्वसनीय स्थान रखता हो। इन सब श्रेष्ठ गुणों का धनी व्यक्ति ही मुख्यमंत्री जैसे पद पर आसीन हो सकता है और निश्चित ही वह महत्त्वपूर्ण होगा। दा साहब शहर के ऐसे ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं।

2. गम्भीर व्यक्तित्व के धनी – मुख्यमंत्री दा साहब की प्रस्तुति उपन्यास के प्रारम्भ में ही गम्भीर व्यक्तित्व के रूप में की है। उनकी भाषा गम्भीर है, नये तुले शब्दों में सारयुक्त अभिव्यक्ति उनका एक गुण है। कम से कम बोलना ओर सटीक बोलना उनका अपने आप में एक परिचय है। लगभग मौन रहना इस बात का प्रतीक है कि वे चिन्तनशील स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। दा साहब अपने प्रारम्भिक रूप में चिन्तानुकूल दिखाई देते हैं। एक विशेष बात यह है कि वे चिन्तनशील दिखाई नहीं देते हैं। एक विशेष बात यह है कि वे चिन्तनशील होते हुए भी बाहर से चिन्तित दिखाई नहीं देते हैं।

3. सौम्य स्वभाव – ऐसा लगता है कि दा साहब की चिन्तन प्रवृत्ति उनके सौम्य गुण के कारण अंत:करण से बाहर आ ही नहीं पाती है। केवल यही प्रतीत होता है कि वे किसी गहरे चिन्तन में निमग्न हैं। सामान्यत: जब व्यक्ति चिन्तित होता है तो परेशानी उसके चेहरे पर खुद-ब-खुद झलकने लगती है, या फिर वह अपने आप में डूबा हुआ परेशान-सा प्रतीत होता है। जब भी दा साहब गम्भीर या चिन्तित होते हैं और बीच-बीच में टेलीफोन की घण्टी बजती है तो वे नपे-तुले शब्दों मेंअपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं। फोन पर बातें करते हुए वे अपने सौम्य स्वभाव का परिचय ख़ुद-ब-ख़ुद दे देते हैं।

4. भव्य व्यक्तित्व – गोरा रंग, सुना हुआ शरीर, गठीला चुस्त शरीर ऐसालगता है कि उनका सारा व्यक्तित्व भव्यता से मुक्त हो। उनके शरीर पर कहीं पर भी व्यर्थ चरबी दिखाई नहीं देती है। अगर कहीं दिखाई देती है तो केवल भव्यता। उनके गरिमामयी व्यक्तित्व और गठी हुई देह का मुख्य राज यह है कि दा साहब जीवन में संयम, आहार-व्यवहार में नियमों का पालन करते हैं।

उनकी नज़रों में गंभीरता, शालीनता और गहराई होती है। उनके मुँह से निकला हुआ शब्द जुबान से फिसला हुआ शब्द नहीं लगता अपितु गहराइयों से सोच समझ कर निकाले जाने वाले शब्द लगते हैं। दा साहब कभी भी किसी से हल्की बात नहीं कहते हैं। उनके व्यवहार में संयम है, संतुलन है जो काफी मेहनत के बाद किसी भी व्यक्ति में यह गुण आता है। दा साहब का जीवन अपने आप में एक साधना का इतिहास है। ऐसा लगता है कि साधना की आग में तप कर ही उनका व्यक्तित्व कुन्दन की तरह निखर गया है।

5. सादगीपूर्ण जीवन – सादा जीवन उच्च विचार रखने वाले दा साहब अपने इसी रूप में विश्वास करते थे। उन्हें अपने मुख्यमंत्री पद रहते हुए दिखावा अथवा अप्राकृतिक चमक-दमक पसन्द नहीं था। उनका रहन-सहन, पहनावा, खान-पान और

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वैचारिक सादगी ही उनकी एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। उनका निजी कमरा पूर्णत: सादगी युक्त है, दिखावा अथवा ताम-झाम जैसी कोई बात वहाँ पर दिखाई नहीं देती है। जिस कमरे में वे बैठते हैं वहाँ पर एक मोटी दरी है, जिसके एक सिरे पर दीवार से सटा हुआ मोटा गद्दा बिछा हुआ है। सफेद चादर और तकिये पड़े हुए हैं, जिस पर देशी पद्धति से बैठा जाता है। एक बात और है कि जहाँ दा साहब पूर्णत: देशी और सादा जीवन व्यतीत करते हैं वहीं उनके बच्चे अंग्रेजी प्रणाली के मार्ग पर चल रहे हैं। वे विदेशी भाषा का इस्तेमाल करते हैं और इम्पोर्टेड वस्तुओं को काम में लेने वाले हैं। दा साहब किसी पर भी अपने पद का रौब और अपना बड़प्पन नहीं थोपते हैं। कमरे में केवल एक गाँधीजी की और एक नेहरूजी की तस्वीर लगी हुई है, वे इन्हीं को अपनी मूल प्रेरणा मानते हैं। सादा जीवन उच्च विचार उनका नारा है।

6. स्वतंत्रता प्रिय—यह दा साहब के व्यक्तित्व की एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि वे जितना स्वतंत्र अपने आप को रखना चाहते हैं उतना ही वे दूसरों की स्वतंत्रता पर्व या स्वतंत्रता को किसी अन्य पर नहीं थोपते हैं। वे किसी के आचार-विचार या अपनी स्वतंत्रता को किसी अन्य पर नहीं थोपते हैं। वे किसी के आचार-विचार पर किसी प्रकार की दखल नहीं डालते हैं। वे यह जानते हैं कि राजनीति उनकी अपनी रुचि हैं, अपने चुनाव हैं जबकि अन्यलोगों की अपनी स्वयं की स्वतंत्र जिन्दगी है। वे अपने जीवन का मूल मंत्र गीता का उपदेश मानते हैं। उनके घर में गीता की कई प्रतियाँ और तस्वीरें हैं। यहाँ तक कि उनको विशेष अवसर पर जो उपहार दिये जाते हैं वे भी गीता की प्रति अथवा गीता की तस्वीर ही दी जाती है।

7. प्रियजनों के सहायक—दा साहब की एक यह भी विशेषता है कि उनके कक्ष में विशेष तौर पर अपने ही खास लोगों का प्रवेश हैं अन्य लोगों का नहीं। लखनसिंह दा साहब का एक मुख्य व्यक्ति है, जब लखनसिंह दसवीं कक्षा में पढ़ता था तब से ही वह उनके साथ लगा हुआ है। हमेशा उनका थैला लेकर उनके दायें-बायें घूमता आया है और जब दा साहब चुनाव लड़े तो लखनसिंह ने अपना सर्वस्व सुख त्याग कर रात-दिन एक करके पूर्ण योगदान दिया। मुख्यमंत्री बनते समय लखन ने इतनी सेवा की कि वे उसे भूल नहीं सकते हैं। दा साहब अपने सम्पर्की व्यक्ति या सेवा करने वाले अथवा उनके साथ काम करने वाले की तरक्की का पूरा-पूरा ख्याल रखते हैं और उन्हें उन्नति का अवसर भी वे देते रहते थे। यहाँ तक कि जिसको वे सहारा देते थे उसे उसकी मंजिल तक पहुँचाने में पूर्णता प्रदान करते रहे हैं। लखनसिंह को भी सरोहा गाँव में होने वाले विधानसभा के उपचुनाव में खड़ा किया। जबकि लखनसिंह की औक़ात केवल दफ्तरों में कुर्सियाँ उठाने और पानी पिलाने तक की ही थी और उसको सुकूल बाबू के विरोध में खड़ा किया गया था। सुकूल बाबू पिछले दस वर्षों से प्रांत के मुख्यमंत्री रहे हैं, किन्तु दा साहब ने जिसकी एक बार बाँह थाम ली उसे किनारे तक पहुँचा कर ही श्वाँस ली। दा साहब की पार्टी के सदस्यों ने लखन का सतर्क विरोध किया किन्तु उन्होंने किसी की एक न सुनी। वे ये जानते हैं कि सभी लोग अपने-अपने लोगों को राजनीति में उतारते हैं तो वे स्वयं लखन को चुनाव लड़ाकर कोई गलती नहीं कर रहे हैं।

8. चिंतित मन:स्थिति—यद्यपि दा साहब प्रान्त के मुख्यमंत्री पद पर आसीन थे फिर भी सदैव अनेक प्रकार की चिन्ताओं से घिरे रहते थे। उन्हें अपने-अपने सभी विरोधियों के साथ-साथ अपनी पार्टी के असंतुष्ट नेताओं और व्यक्तियों को संभालने की चिन्ता बनी रहती थी। उन्हें सदैव यह डर बना रहता है कि उनके ही लोग उनके ही बैनर तले कहीं उनकी ही जड़ काटने न लग जायें।

9. सतर्क चिन्तन—दा साहब यह जानते हैं कि उन्हें चुनाव के दौरान दुहरी नीति को काम में लेना है, इसलिये वे चैन से नहीं बैठते हैं। इन सभी परेशानियों की वजह से वे न केवल सावधान ही रहते हैं, अपितु अपनों से भी सदैव सतर्क बने रहते हैं और वे हर समय यह ध्यान रखते हैं कि कहाँ पर क्या हो रहा है और सदैव फूँक-फूँक कर कदम रखते हैं कि उनका पद कायम रहे।

10. क्षमता से युक्त—दा साहब अपने पर या अपने पद पर अथवा अपनी पार्टी पर आने वाली हर मुसीबत को सहन करने और उनसे जूझने की पूरी-पूरी क्षमता रखते हैं। वे यह भी जानते हैं कि राजनीति के मार्ग में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं जिनके द्वारा ही एक अच्छा खासा अनुभव प्राप्त होता है। ऐसी स्थिति में वे पूर्ण साहस से आने वाली हर परेशानी का मुक़ाबला करने के लिये तत्पर रहते हैं।

11. धैर्यशील व्यक्ति—दा साहब हर परिस्थिति को सुलझाने अथवा उनसे जूझने से पहले उसके हर पक्ष पर धैर्यपूर्वक चिन्तन-मनन करते हैं। वे इस बात से सहमत नहीं होते हैं कि घरेलू उद्योगों के लिये आर्थिक योजना की सहायता की पृष्ठभूमि में ही

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चुनाव कराने चाहिये। उनका कथन है कि ''घरेलु उद्योग की इस योजना से उनकी गरीबी पर मरहम अवश्य लगाया जा सकता है किन्तु प्रियजनों के बिछुड़ने के दुःख पर नहीं। आदमी का दुःख जिस दिन पैसे से दूर होने लगेगा उसदिन दुनियाँ से इन्सानियत उठ जाएगी। दा साहब इस सत्य को भी स्वीकार करते हैं। मूर्खता का फल दूसरों को भुगतना पड़ता है। वे आवेश को बुरा मानते हैं, इस लिये हमेशा चिन्तन-मनन और धैर्य से काम करते हैं। उनका कहना है कि ''आवेश राजनीति का शत्रु है, राजनीति में विवेक चाहिए, विवेक और धैर्य ही काम में आता है।''

12. समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के समर्थक—दा साहब हमेशा स्वतंत्र रूप से समाचार पत्रों की स्वायत्तता का पूर्ण समर्थन करते हैं। जब ''मशाल'' नामक अखबार के खिलाफ इमरजेंसी लगाने का प्रस्ताव यह कहकर आया कि यह अखबार अपनी पार्टी के विरूद्ध उल्टा-सीधा छापता रहता है तो दा साहब ने उस प्रस्ताव का विरोध करते हुए यही कहा ''यह तुम नहीं बल्कि तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है, स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं है कि वह विवेक को ही खा जाये, अखबारों को तो हमेशा आजाद ही रहना चाहिये। अखबार ही तो हमारे कामों का सही दर्पण है। मेरा तो उसूल है कि इस दर्पण को धुँधला मत होने दो।''

13. सद्भावनाओं से युक्त—दा साहब के अन्दर सद्भावीपन का महत्त्वपूर्ण गुण है ऐसी स्थिति में सबसे अच्छा व्यवहार और सद्भावनापूर्ण वार्तालाप करते हैं। दा साहब अपनी ही पार्टी के सदस्यों के द्वारा प्रस्तावित असंतुष्ट प्रस्तावों का भी पूरा आदर करते हैं, उन पर विचार करते हैं और कहते हैं कि ''जिस दिन मैं अपने लोगों का विश्वास खो दूँगा, उस दिन कुर्सी पर नहीं बैठूँगा, आप सभी के विश्वास पर टिकी हुई है। यह कुर्सी मैं आप सब की सद्भावना पर जिन्दा हूँ।''

14. अविचलित मन और मस्तिष्क—दा साहब हर हाल में हर स्थिति-परिस्थिति में शान्त चित्त और स्थिर मन में विचार करने वाले व्यक्ति हैं। वे अपने और पराये लोगों के द्वारा उत्पन्न हर मानसिक तनाव को सहज रूप में लेते हैं। विषम से विषम परिस्थिति में भी वे विचलित नहीं होते हैं। दा साहब को भड़काने या पार्टी के सदस्यों द्वारा फेंके गये हर वार खाली जाते हैं। उसका मुख्य कारण यह है कि दा साहब अविचलित मन और मस्तिष्क के धनी हैं। वे सदैव निर्विकार बने रहते हैं।

15. कुशल राजनीतिज्ञ—दा साहब जब भी किसी से कोई प्रश्न करते हैं तो वे उसके उत्तर की प्रतिक्षानहीं करते हैं। वे अपनी ओर से जो भी कहते हैं अथवा करते हैं वहीं बस अन्तिम होता है। उनके इस व्यवहार में उनकी राजनीतिक कुशलता प्रमाणित होती है। राजनीति की गंभीर समस्या के दौरान दा साहब चिंतन की मुद्रा में शून्य की ओर ताकते हैं तो यह समझ लें कि वे किसी गहरी चिन्ता में डूब रहे हैं। दा साहब का मानना है कि मनुष्य को अपनी आकांक्षाओं को थोड़ी लगाम देनी चाहिए। पद के प्रलोभन में कभी भी अविवेकी नहीं बनना चाहिये। सम्पूर्ण उपन्यास में दा साहब की भूमिका एक कुशल और पूर्ण अनुभवी राजनीतिज्ञ का परिचय देता है। भले ही वे बाहर से निर्लिप्त जान पड़ते हों किंतु सत्ता या पद को दबाये रखने में वे हर संभव प्रयासरत रहते हैं। एक ओर तो वे कहते हैं कि ''राजनीति मेरे लिये धर्मनीति से कम नहीं है, इस राह पर यदि मेरे साथ चलना है तो गीता का उपदेश गाँठ बाँधा लो, निष्ठा से अपना कर्त्तव्य किये जाओ, फल पर दृष्टि मत रखो।'' और दूसरी ओर वे अपने पक्ष में वातावरण निर्मित करने के लिये निरंतर सजग हैं। वे अपने प्रतिद्वन्द्वी को बड़ी चतुरता के साथ पराजित करने में अपनी कुशलता दिखाते हैं।

16. स्पष्टवादी व्यक्ति—दा साहब एक व्यवहार कुशल होने के साथ-साथ स्पष्टवादी भी हैं किंतु सर्वथा नहीं। कभी-कभी तो उनमें वाक् संयम का गुण भी स्पष्ट दिखाई देता है। दा साहब अपने खास व्यक्ति या विश्वास पात्र से जो भी कुछ कहना है, उसे साफ-साफ कह देते हैं। वैसे वे अपनी भावनाओं को छुपाने में पूर्ण निपुण हैं। अपने निकटतम व्यक्ति लखनसिंह के समक्ष भी वे अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं करते हैं परन्तु अन्त में विदा करते समय वे उसकी पीठ पर हाथ रखकर स्पष्ट रूप से कहते हैं कि ''आज तुम्हारा आवेश देखकर अच्छा नहीं लगा मुझे.....। मेरे साथ चलना है तो भाई, जबान पर लगाम लगाओ और व्यवहार में ठहराव चाहिये....।'

17. कुशल प्रशासक—दा साहब एक कुशल प्रशासक हैं इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है। सचिवालय से लौटने के बाद वे अपने घर पर अपने ऑफिस में सात बजे से नौ बजे तक अपनी जरूरी फाइल्स निपटाते हैं। वे मानते हैं कि वही फल अच्छा होता है, जो अपने हाथों से पूरा किया जाये और अपनी नजरों के नीचे हो। दा साहब कोरे उपदेश में विश्वास नहीं करते हैं, वे बापू के आदर्शों की गाँठ बाँध कर चलते हैं। वे सच्चे प्रशासक की भाँति सबसे मिलते हैं। दा साहब के प्रशासनिक कार्य से सभी लोग पूर्णतः संतुष्ट थे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

18. निन्दक नियरे राखिये के समर्थक—दा साहब अपने बुराई करने वाले या विरोधियों को अपने पास रखने के पक्ष में रहते हैं। उनका मानना है कि विरोधी अथवा आलोचक की आलोचना तो साबुन के समान होती है जो मन को निर्मल करने का गुण रखती है। आलोचना तो सदैव हमें सद्मार्ग दिखाती है। ऐसा कहकर दा साहब अपने आलोचकों को अपना कायल बना देते हैं। दा साहब डी.आई.जी. को भी यही कहते हैं कि ''तुम अपना फ़र्ज निभाओ, ईमानदारी और सच्चाई से कार्य करो।'' दत्ता बाबू कागज के कोटे की शिकायत करते हैं तो दा साहब उन्हें कागज का कोटा देने के लिये आश्वस्त कर देते हैं और उसे भी अपने कौशल के जरिये अपने पक्ष में कर लेते हैं। दत्ता साहब जो कि अखबार के सम्पादक हैं और विरोधी भी दा साहब उसे भी अपने आत्मीय मानते हैं।

19. दृढ़ता के धनी—दा साहब एक दृढ़ व्यक्तित्व के धनी हैं। वे कुलभूषण के बाद अपनी मीटिंग रखवाते हैं। लखनसिंह का कहना है कि कुलभूषण के बाद में मीटिंग का कोई महत्त्व नहीं है, किन्तु दा साहब अपनी अनूठी दृढ़ता के साथ कहते हैं कि तुम धैर्य रखो, जल्दबाजी मत करो। यही कारण है कि वे मीटिंग में गाँववासियों पर अपना अनूठा प्रभाव जमाने में सफल हो जाते हैं। सुकुल बाबू की मीटिंग के दूसरे दिन बाद सवेरे गली-गली और घर-घर की दीवारों पर घरेलू उद्योग योजना के पोस्टर लगाये जाते हैं। आलम यह होता है कि जहाँ देखो वहाँ दा साहब का मुस्कुराता हुआ चेहरा और घरेलू उद्योग की योजना की रूपरेखा दिखाई देती है। दा साहब निर्धारित तिथि और नियत समय पर वहाँ पहुँचते हैं, अपना भाषण देते हैं जिसमें सभी मुद्दों को उठाते हैं जो उनके विरोधियों ने उठाए। हर बिन्दु का दृढ़ता पूर्वक जवाब देते हैं और जनता के मन में यह बात दृढ़ता से भर देते हैं कि वे कभी भी किसी बात का बुरा नहीं होते हैं।

20. सिद्धान्त प्रिय—दा साहब की नीति साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे के सिद्धान्त पर चलती है वे अपने विरोधियों, प्रतिस्पर्धियों एवं असंतुष्टों से निपटने के लिये हमेशा अपने कट्टर सिद्धान्तों को काम में लेते हैं जिससे वे सफल रहते हैं।

दा साहब को यह बड़ी शोचनीय स्थिति जान पड़ती है कि राजनीतिक स्तर और आदमी के वोट की कीमत को पाँच रुपये पर उतार दी जाये तो। जब दा साहब को यह ज्ञात होता है कि राव और चौधरी को यदि कोई मन्त्रालय सौंप दिया जायेतो वे दोनों लोचन के गुट का साथ छोड़कर अपना साथ देंगे। इस प्रसंग में दा साहब शीघ्र ही अपना उचित मन्तव्य प्रकट करते हैं ''आदमी जब अगर अपनी सीमा या सामर्थ्य को भूलकर कामना करे तो समझ लो कि पतन की दिशा में उसके कदम बढ़ने लग गये हैं। मूर्ख हैं दोनों, राव और चौधरी। उनकी क्या औकात भला, जो मिला हुआ है उसके भी लायक नहीं हैं वे दोनों।'' दा साहब की आवाज मुख्यमंत्री के पदानुकूल गम्भीर होने के साथ-साथ दबंग भी थी। वे अपनी वार्तालाप का प्रारम्भ ही कुछ इस प्रकार से करते कि राव और चौधरी का उल्लास धीरे-धीरे अपने आप कम होने लगता है। दा साहब सदैव अपने सिद्धान्तों पर टिके रहने वाले व्यक्ति की छाप उपन्यास के अन्त तक कायम रखते हैं।

21. अनुशासनप्रिय—दा साहब मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए अनुशासनहीनता कतई बर्दाश्त नहीं करते हैं। वे अपने विरोधियों से समझौता करते समय पूरी चतुराई से काम लेते हैं। ''अपने साथ रखकर खूब हवा में उड़ना सिखा दिया है तुम लोगों को भी देखो भाई! मैं बहुत ऊँचे तक तो नहीं ले जा सकता हूँ पर जहाँ तक ले जाता हूँ वहाँ खड़े होने के लिये जमीन अवश्य देता हूँ। मेरे साथ चलने वालों को औंधे मुँह गिरने का कतई खतरा नहीं रहता है, अब तुम सोच लो।'' जब अप्पा साहब अपने निर्णय पर पुनः विचार के लिये कहते हैं तो वे अनुशासन की बात करने लगते हैं और कहते हैं कि ''अनुशासन भंग करने वालों को साथ ले चलना मुश्किल होगा मेरे लिये।'' उन्होंने राव और चौधरी से भी कह दिया था कि ''अनुशासन मेरे मंत्रिमण्डल की प्रथम और अनिवार्य शर्त है।''

दा साहब की चारित्रिक विशेषताओं में एक कशिश है, खिंचाव है, आकर्षण है जो हर किसी को अपने अनुकूल बना लेने की समता रखती है। दा साहब जितने सिद्धान्तवादी होते हैं उतने ही अपने लक्ष्य की पूर्ति में कुशल होते हैं। विवशता में वे काइयाँपन भी दिखा देते हैं। उनकी विनयशीलता और वाक्पटुता उनका विशेष गुण है।

निष्कर्ष—हम कह सकते हैं कि दा साहब का व्यक्तित्व प्रस्तुत उपन्यास में पर्याप्त विस्तृत रहा है। सिद्धान्त और आदर्श की बात करने वाले दा साहब एक सफल और कुशल राजनीतिज्ञ की तरह अपने स्वार्थों की सिद्धि कर लेने में पूर्ण निपुण हैं। लेखिकाने बड़ी ईमानदारी के साथ उचित शैली में उनका चरित्र प्रस्तुत किया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सुकुल बाबू का चारित्रिक विश्लेषण

मन्नू भण्डारी द्वारा रचित आलोच्य उपन्यास ''महाभोज'' में जितने भी चरित्र उभर कर सामने आये हैं उनमें हम यदि दा साहब को प्रमुख पात्र मान लें तो सुकुल बाबू भी उनके प्रतिस्पर्धा पात्र हैं। वे दा साहब के विरोधी और उपन्यास के प्रतिनायक हैं। सुकुल बाबू भूतपूर्व मुख्यमंत्री हैं तथा उनको विपक्षी दल के नेता के रूप में चित्रित किया गया है। सुकुल बाबू का चरित्र दा साहब के विपरीत होते हुए भी एक समानता लिये हुए है कि दोनों ही कुशल राजनीतिज्ञ हैं, भाषण देने में प्रवीण हैं और जनता पर अपना प्रभुत्व जमाने में एक से बढ़कर एक हैं। सुकुल बाबू की चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं –

1. अनुभवी एवं भूतपूर्व मुख्यमंत्री – सुकुल बाबू पिछले दस वर्षों में बिना किसी व्यवधान और विरोध के मुख्यमंत्री रहे हैं। अपने कार्यकाल में उनकी कार्यशैली अपने ही ढंग की रही और उन्होंने विरोधियों को सिर उठाने का अवसर नहीं दिया। दस वर्ष इस प्रतिष्ठित पद पर रहते हुए जब वे परास्त हो गये तो उन्होंने राजनीति से सन्यास लेने का भी निश्चय कर लिया, किन्तु उनका निश्चय अन्य राजनेताओं के समान था। जैसे ही उन्हें सत्ता में आने का अवसर आभासित हुआ वैसे ही वे पुनः क्रियाशील हो गये।

2. शारीरिक व्यक्तित्व – सुकुल बाबू का व्यक्तित्व शारीरिक दृष्टि से दा साहब के बिल्कुल विपरीत था। सांवला रंग, नाटा कद, थुल-थुल शरीर और तेजविहीन था। वे सौम्य और संयत भी नहीं थे। वे सुरा और सुन्दरी से प्रेम रखते थे। वे उन लोगों की बात को महत्त्व देते थे कि ''सकल पदारथ है जगमाही, करम हीन नर पाबत नही।'' मस्त और फक्कड़ प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे अपने इष्ट-मित्रों में हर प्रकार की फूहड़ भाषा का प्रयोग कर लेते थे। यहाँ तक कि उन्हें गाली-गलौच का भी कतई परहेज नहीं था। उनका मानना था कि यदि वाक्य में किसी गाली का बंद लग जाये तो वह वाक्य धारदार बन जाता है। बाहर वालों के साथ में वे सधा हुआ व्यवहार करते थे।

3. चालाक राजनेता – जैसा कि राजनीति के क्षेत्र में हो रहा है। सुकुल बाबू भी दा साहब की तरह चालाक राजनीतिज्ञ थे। अन्तर केवल इतना था कि दा साहब राजनीति की चाल शालीनता से खेलते थे जबकि सुकुल बाबू के पास शालीनता के लिए कोई भी स्थान नहीं था। वे तो येन-केन प्रकारेण राजनीति के दाव पेंचों में जीतना चाहते थे चाहे उन्हें इसके लिये कुछ भी, कैसा भी कार्य करना पड़े। गालियाँ और अपमान सहन करके भी वे अपना लक्ष्य प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने कभी भी यह नहीं सोचा था कि जिस राजनीति में उन्होंने दस वर्षों तक अपनी मजबूती बनाई वह एक ही झटके में बिखर जायेगी। बासठ वर्ष की आयु में पहुँचते पहुँचते उन्होंने बहुत कुछ झेला था। पार्टी को महाभारत को भी सँभाला और उसके लिये परिश्रम भी बहुत किया। बड़ी कुशलता के साथ उन्होंने दस वर्षों तक अपनी कुर्सी को बनाये रखा। उनकी पार्टी में बहुत से ऐसे लोग भी थे जो उनको पसन्द नहीं करते थे किन्तु सुकुल बाबू ने उन सबको ठिकाने लगा दिया।

4. हार न मानने वाले व्यक्ति – सुकुल बाबू मन में भले ही क्षुब्ध हों कन्तु वे कभी हार नहीं मानते थे।वे इस बात से बड़े दुःखी थे कि राजनीति गुण्डागर्दी के निकट चली गई। उनका कथन था कि ''जिस देश में देवतुल्य राजनेताओं की परम्परा रही हो, वहाँ पर राजनीति का ऐसा पतन कभी-कभी मन में एक वैराग्य-सा जागृत कर देता है परन्तु राजनीति में जहाँ तक अपने को धँसा लिया है वहाँ से निकलना भी तो अब सम्भव नहीं है। निकलने का सीधा अर्थ है, हार मान लेना।'' और उनके जीवन में एक यही तो बात है जिसे वे कभी नहीं मान सकते हैं। पिछले चुनावों की हार को वे एक दिन के लिए भी स्वीकार नहीं करते हैं। सुकुल बाबू पराजित होकर भी अपने आपको विजयी मानने वाले व्यक्ति थे। वे यह मानते थे कि आज की परम्परा कल की विजय का पूर्व संदेश है।

5. प्रभावशाली व्यक्तित्व – सुकुल बाबू जनता के मन में प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में स्थान रखते थे। इस प्रभाव के दो कारण थे – प्रथम तो यह कि वे दस वर्षों तक मुख्यमंत्री पद पर रहे और दूसरा यह कि वे भाषण कला में पूर्णतः निपुण ये सुकुल बाबू सरोहा गाँव में विधानसभा के उपचुनाव में प्रत्याशी के रूप में खड़े हो जाते हैं। समाचार फैलते ही सत्तारूढ़ पार्टी में खलबली मच जाती है। वे सभी इस बात को जानते थे कि जनता में सुकुल बाबू केप्रति आज भी श्रद्धा और विश्वास का स्थान क़ायम है। दा साहब का प्रिय व्यक्ति लखनसिंह सशंकित रहता है। लखनसिंह इस बात को स्पष्ट भी कर देता है कि – ''नौ तारीख को यानी दस दिन बाद ही मीटिंग का एलान हो गया है..... । सुकुलजी खुद भाषण देने के लिये आ रहे हैं और उनके भाषण देने का मतलब है उनके द्वारा आग उगलना।'' जब दा साहब पाँच दिन बाद अपनी मीटिंग की घोषणा करते हैं तो लखनसिंह पहले तो

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसन्नता होता है और फिर सशंकित सा हो जाता है और ठंडे स्वर में कहता है कि ''बस एक ही डर है, सुकुल बाबू के बाद वहाँ जमना मुश्किल है। इस प्रकार विरोधी भी सुकुल बाबू के व्यक्तित्व को लोहा मानते हैं और उनका प्रभाव स्वीकार भी करते हैं।''

6. ज्योतिष पर विश्वास – सुकुल बाबू ज्योतिष पर अगाध विश्वास रखते हैं, उन्होंने अपनी उंगलियों में तरह-तरह के नग, गले में गेण्डा और भुजा में ताबीज बाँध रखा है। सुकुल बाबू का ज्योतिष के प्रति विश्वास आजकल के राजनेताओं की आदत से मेल खाने वाला है। सुकुल बाबू को पहले तो नीलम पहनने को कहा था किन्तु उनका साहसनहीं हो पाया क्योंकि नीलम तेज मिजाज वाला पत्थर होता है।

7. अवसरवादी व्यक्ति – आज की राजनीति में कोई भी नेता ऐसा नहीं होगा जो अवसर का लाभ नहीं उठाता है। ऐसे में सुकुल बाबू यदि अवसर का लाभ उठाते हैं तो इसमें कौन-सी नई बात होगी। जैसे उनको चुनाव का अवसर मिला वैसे ही गाँव में बिसेसर की मौत हो गई और यह मौत तो एक प्रकार से परोसी हुई थाली के समान थी क्योंकि सुकुल बाबू बिसेसर की मौत को राजनीति मुद्दा बनाकर अपनी हार को जीत में बदल देना चाहते थे। जिस दिन उनका भाषण सरोहा में होने वाला था उस दिन वे अनेक प्रकार की मोटियाँ बिछाते रहे। भाषण में कौन-कौन से मुद्दे उठाने हैं, कितने वोट खोने हैं, कितने पाने हैं यही सब हिसाब-किताब लगाते रहे। वे अभी तक हरिजनों के बूते पर ही चुनाव जीतते आये हैं। पिछली बार इन लोगों ने आँख फेर ली तो मुँह की खानी पड़ी। बिसेसर ने अपने लोगों के लिए आन्दोलन किया था। उसकी हत्या कर दी गई, अब उसकी हत्या का हिसाब सरकार से माँगना है बस हो गई जीत। बिसेसर की हत्या की सुकुल बाबू की जीत का अवसर है और वे इसे किसी भी हालत में खोना नहीं चाहते हैं।

8. विचारशक्ति की प्रबलता – सुकुल बाबू विचारशक्ति के प्रबल व्यक्ति हैं। वे हर काम सोच-समझ कर तर्क-वितर्क के साथ प्रारम्भ करते हैं। उन्होंने बिसेसर की मौत को चुनावी मुद्दा तो बना लिया और सिरोहा गाँव में मीटिंग के आयोजन की घोषणा तो कर दी किन्तु उन्हें डर है कि जोरावर कहीं उनकी मीटिंग में उड़दंग न मचवा दे। जोरावर पूरी तरह जंगली और हुड़ड आदमी है परन्तु पंचायत में उसका पूरा दबदबा है। उसकी बात हर व्यक्ति मानता है। यदि उसने सभा में कहीं हुडदंग मचा दिया तो इसका मतलब वह अच्छी प्रकार से जानते थे। सुकुल बाबू की यह स्वतार्किक विशेषता एक अच्छे राजनेता के गुण को स्पष्ट करने वाला गुण है।

9. समय के पाबन्द – सुकूल बाबू के चरित्र की यह भी एक विशेषता रही है कि वे समय के पक्के पाबन्द हैं। वे समय देकर विलम्ब से पहुँचने में विश्वास नहीं करते हैं। जैसा कि भारतीय राजनेताओं और अफसरों में अक्सर ऐसा होता है। जिस दिन सुकुल बाबू की मीटिंग थी उस दिन सायं छः बजे का समय तय किया गया और ठीक छः बजे ही सुकुल बाबू को गाड़ी सिरोहा गाँव में प्रवेश कर गई। समय की पाबन्दी ने सुकुल बाबू पर काफी अच्छा प्रभाव जमाया। दिन भर चहल-पहल रही और नेताजी के पहुँचते ही सब कुछ गम्भीर हो गया। कुछ अवसरवादी लोगों ने सूखा ही नेताजी का स्वागत किया बिना माला के ही। सुकुल बाबू भी मंजे हुए नेता थे, उन्होंने भी अपने आपको शोक संतप्त ढंग से प्रस्तुत किया। धीरे-धीरे वे मंच पर चढे। समय की नजाकत और पाबंदी को लोग भली प्रकार से समझते थे। अच्छी खासी भीड़ वहाँ पर जमा हो गई अतः सुकुल बाबू समय के बड़े पाबंद थे।

10. कुशल वक्ता – उन्होंने मंच पर चढकर अभिवादन की मुद्रा में हाथ जोड़े और देख लिया कि मजमा अच्छा खासा जमा हो गया है तो उनके चेहरे पर संतोष के भाव भी जम गये। उन्होंने सोच लिया था कि यदि यह सभा शांतिपूर्वक चली तो आज वे ऐसी शब्दों की वर्षा करके जायेंगे कि सारी वोटों की फसल उनकी मतपेटी में ही भरती चली जाये। मन ही मन उन्होंने अपनी अँगुली में पड़ी हुई नीलम को प्रणाम किया और 'मत चूकै चौहान' के भाव से माइक सँभाल लिया। यद्यपि जोरावर के कुछ लोग सभा के आस-पास लाठी लेकर मण्डरा रहे थे पर सुकुल बाबू भी राजनीति के कच्चे खिलाड़ी नहीं थे। उन्होंने गाँव वासियों पर होने वाले अत्याचारों का संकेत करने के क्षणिक बाद ही तुरन्त कहने लगे कि ''हरिजनों का क्या दोष था, यही न कि सरकारी रेट पर वे मजदूरी माँग रहे थे। क्या यही गुनाह था। शायद था.....इसीलिये जिन्दा जला दिया गया। और जिन्होंने जलाया उन पर जरा सी भी उँगली उठाने की कोशिश की तो उसे मौत के घाट उतार दिया गया। अब किसी की हिम्मत होगी जो चूँ भी करे। हो ही नहीं सकती है। पुलिस गवाही लेने आई पर किसी की भी हिम्मत नहीं कि सच बात कह दे। जानते हैं कि सच बोलते ही गला दबा दिया जायेगा और जहाँ सच का ही गला दबा दिया जाता हो वहाँपर न्याय की क्या उम्मीद की जा सकती है। भूल जाइये कि आपको न्याय मिल जायेगा।'' प्रस्तुत ओजस्वितापूर्ण भाषण में उनका कुशल वक्ता का गुण निहित है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

11. मजमा जमाने में कलाकार – सुकुल बाबू परास्त मुख्यमंत्री होने के बावजूद भी जनता में रंग जमाने में हमेशा सफल रहते हैं। उनका भाषण इतना प्रभावशाली होता है कि खुद ही मजमा जम जाता है। वास्तव में सुकुल बाबू जो तर्क प्रस्तुत करते हैं उनमें ग्रामीण जनता पूर्णत: प्रभावित हो जाती है। ''मैं यहाँ पर वोट माँगने नहीं आया हूँ क्योंकि एक बार हार जाने के बाद मेरे लिये हार जीत का अन्तर भी मिट गया है।'' इतने में ही एक व्यक्ति सभा में ही बोला ''कौन हकीम बोलै रहा खड़ा होने को ?'' इस बात को सुनकर सुकुल बाबू जरा भी सकपकाते नहीं हैं, विचलित नहीं होते हैं और उसका जवाब देते हैं – ''खड़ा हुआ हूँ आप लोगों के हक के लिये लड़ाई लड़ने, बिंसू की मौत का हिसाब पूछने के लिये। बात केवल बिसू की मौत की नहीं है। यह सब आप लोगों के जिन्दा रहने का सवाल है। ... अपने पूरे हक के साथ जिन्दा रहने का। यह मौत कुछ ही हरिजनों की या केवल बिसू की नहीं बल्कि आपके जिन्दा रहने के हक की मौत है। आपका यह हक जरा से स्वार्थ के लिये कुछ धनी व्यक्तियों को बेच दिया गया है और यही हक मुझे आपको वापस दिलाना है। जुलुस ने आप लोगों के हौसले तोड़ दिये हैं, इसलिये मैं लड़ूँगा। आप लोग साथ देंगे तो भी ओर नहीं देंगे तो भी...।'' सुकुल बाबू के इन भाषणों में सभा में रंग जमा दिया और उनके पक्ष में जिन्दाबाद के नारे गूँजने लगे।

12. धैर्यशील – सुकुल बाबू कभी भी निराश नहीं होते हैं वे असफलता के क्षणों में भी अपनी धैर्य की पूँजी को मस्तिष्क से नहीं खिसकने देते हैं। असफलता के बाद भी वे निराश नहीं होते हैं और विधानसभा के उपचुनाव में पुन: प्रत्याशी बनकर सामने आते हैं और जनमत को अपने पक्ष में करने का पूरा-पूरा प्रयास करते हैं जब उन्हें यह पता चलता है कि दा साहब की सभा पूर्णत: सफल रही है तो वे विचलित नहीं होते हैं।

निष्कर्ष – निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि आलोच्य उपन्यास के सभी पात्र अपना-अपना वर्चस्व लिये हुए हैं। यद्यपि दा साहब सत्तारुढ़ मुख्यमंत्री पद पर है तो सुकुल बाबू पराजित मुख्यमंत्री अथवा विपक्षी दल के नेता होने पर भी महत्त्वपूर्ण चरित्रप्रधान पात्र हैं। एक मंजे हुए नेता के रूप में लेखिका ने इनको अपने उपन्यास में ईमानदार शैली में प्रस्तुत किया है।

लोचन भैया की चारित्रिक विशेषताएँ

'महाभोज' उपन्यास में त्रिलोचनसिंह उर्फ लोचन भैया का व्यक्तित्व जिस रूप में उभर कर सामने आया है, वह पर्याप्त प्रभावशाली है। इनके चारित्रिक गुणों को हम निम्नलिखत बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं –

1. लोकप्रिय व्यक्ति – वास्तव में त्रिलोचनसिंह रावत को उनके असली नाम से लोग कम जानते हैं बल्कि लोचन भैया के नाम से विख्यात हैं वे जनता के इतने प्रिय हैं कि यथा नाम तथा गुण की सार्थकता उनके नाम में समाहित हो गई है। वे नाम से ही लोचन नहीं बल्कि कर्म से भी जनता के प्रिय लोचन बन गये हैं। जब सुकुल बाबू मुख्यमंत्री थे तो लोचन विधानसभा के सदस्य थे और सुकुल बाबू की पार्टी से ही सम्बन्ध रखते थे। इसी दौरान आपातकालीन घोषणा हो गई तो बड़े-बड़े नेताओं का साहस डावाडोल हो गया और वे अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खो बैठे। सम्पूर्ण देश में यद्यपि प्रजातंत्र है किन्तु वास्तविकता यह थी कि सत्ता के सभी तंत्र मुट्ठी भर लोगों के हाथों में सिमट कर रह गये थे। जनता बेमानी पर उतर आई थी। इन सभी परिस्थितियों में त्रिलोचनसिंह ने अपने बल-बूते पर सुकुल बाबू का विरोध किया और प्रजातंत्र का समर्थन किया। इतना ही नहीं उन्होंने जनता की आजादी की माँग की और त्रिलोचनसिंह लोचन भैया में बदल गये।

2. बुलन्द भाग्यशाली व्यक्ति – लोचन भैया जहाँ एक ओर जनप्रिय थे वहीं दूसरी ओर वे भाग्य के बुलन्द व्यक्ति भी निकले। उन्हें उस समय मुक़द्दर का सिकन्दर कह दें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उन्होंने जो खोया था उसेपाने का भी भरपूर मौका मिला। चुनाव का अवसर आया और कुछ दलों ने मिल-जुलकर एक पार्टी गठित कर ली। लोचन भैया का इस पार्टी निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा। विधान सभा चुनाव में लोचन बाबू ने भी उम्मीदवार का अवसर पाया। जनता ने अपने प्रिय लोचन को भारी मतों से विजयी बनाया और पूरे सम्मान के साथ विधान सभा में लाकर बिठा दिया। जब दा साहब मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने लोचन की लोकप्रियता को देखते हुए अप7ने मंत्रिमण्डल में शामिल कर लिया और उन्हें शिक्षा मंत्री बना दिया गया। इस प्रकार लोचन भैया भाग्य के बलवान निकले।

3. ईमानदार व्यक्तित्व – लोचन भैया शिक्षामंत्री जैसे पद पर आसीन हो जाने के बाद न केवल अपनी जिम्मेदारियों के प्रति ही सजग रहे अपितु ईमानदारी से काम करने और जनता में अपनी ईमानदारी की छाप छोड़ने के लिये सदैव चिन्तित रहते थे। उन्होंने चुनाव प्रचार के दौरान जनता के सम्मुख अनेक प्रकार के वायदे किये थे जिनको पूरा करना आवश्यक था। एक-एक वादा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चुनौती के रूप में सामने खड़े से दिखाई दे रहे थे। लोचन भैया जनता की नजर में एक ईमानदार थे, हैं और बने रहना चाहते थे। यद्यपि वे शिक्षामंत्री पद पर रहते हुए अत्यंत व्यस्त थे फिर भी कर्त्तव्य के प्रति ईमानदारी उनमें कूट-कूट कर भरी पड़ी थी।

4. व्यथित मन—लोचन भैया को यह देखकर अत्यंत दुःख होता है कि मुख्यमंत्री दा साहब न केवल जमींदारों को सुख-सुविधाएँ ही प्रदान करते हैं, अपितु उन्हें निर्धन ग्राम वासियों के शोषण की छूट भी प्रदान करते हैं। जब सरोहा गाँव की सरहद के समीप हरिजन बस्ती की कुछ झोंपड़ियों में जमींदार जोरावरसिंह ने आग लगवा दी और आदमियों सहित झोंपड़ियां जलकर राख हो गई तब लोचन भैया का मन जैसे सुलग गया हो और जब उपचुनाव में नामांकन की बारी आई तो अनेक प्रस्ताव सामने आये किन्तु दा साहब ने एक दो कौड़ी के व्यक्ति लखनसिंह को चुनाव के लिये खड़ा कर दिया जिसका लोचन भैया को काफी दुःख हुआ। आतंक का यह सिलसिला खत्म नहीं हुआ। हरिजन बस्ती की आग का धुंआ अभी रुका भी नहीं था कि लगभग एक महीने बाद ही बिसेसर की लाश लावारिस रूप में पाई गई जबकि बिसेसर लावारिस नहीं था। बिसेसर हरिजनों और मजदूरों को शोषण का विरोध करने के लिए कहता रहा और यह भी कहता रहा कि पूरी मजदूरी लिये बिना जमींदारों के यहाँ काम करना भी शोषण है। जमींदार उससे बहुत नाराज थे। उस प्रकार बिसू की मौत कोई साधारण मौत नहीं थी बल्कि वह हत्या थी, जिससे लोचन भैया का मन बहुत व्यथित रहता था।

5. निडर और स्पष्टवादी—लोचन भैया वास्तव में एक निडर और स्पष्टवादी व्यक्ति हैं। इसी वजह से लोचन यह कहने का साहस कर सकते हैं कि ''आप लोग शायद इस बात को भूल ही गये हैं कि दा साहब के व्यक्तित्व से परे भी पार्टी का कोई और अस्तित्व भी है।'' लोचन भैया अप्पा साहब से यह प्रश्न भी करते हैं ''इस पार्टी के जरिये हमने बहुत बड़ी बातें करने के दावे भी तो किये थे, क्या हुआ उन सबका ?'' लोचन भैया अप्पा को दृढ़ता पूर्वक यह भी कहते हैं कि ''जो सड़क एक गज रोज बनती है, और दो गज खुदती है, उसके पूरे होने पर क्या आप विश्वास करते हैं ? आप भ्रम में रहना चाहते हैं, जरूर रहें पर अब यह दोहरी जिन्दगी जीना मेरे वश की बात नहीं।

6. प्रश्निल मानस—लोचन भैया का अस्तित्व प्रस्तुत उपन्यास में प्रश्निल मानस के रूप में है। वैसे तो वे स्वभावतः अनेक प्रकार के प्रश्नों पर विचार करते रहते हैं, किन्तु जब उन्हें मंत्रीमण्डल से बरखास्त कर दिया जाता है तो वे स्वेच्छा से त्यागपत्र भी दे देते हैं। त्याग पत्र देकर उनके मन में शांति नहीं थी, एक एक कर हजारों प्रश्न उनके दिमाग में सागर की लहरों की भाँति उत्पन्न होते हैं। कभी तो वे सोचते हैं कि उनके सामने जो भी कुछ हो रहा है उसे यथावत होने दें। उसमें किसी भी प्रकार की दखल न डालें और चुपचाप आँखें बन्द कर जीवन यापन किया जाये। लोचन भैया सोचते हैं कि ईमानदारी से काम करके ही जनता का विश्वास जीता जा सकता है और दूसरी ओर यह भी सोचते हैं कि उन्हें केवल अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। उनके प्रश्निल वास्तविक होने का तीसरा कारण यह भी है कि वे एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाना चाहते हैं और उस बड़ी क्रांति के छोटे से वाहक बनना चाहते हैं किन्तु वे कुछ भी नहीं कर पाये। उनके मस्तिष्क में केवल देश के लिये ही प्रश्न नहीं कर पाये। उनके मस्तिष्क में केवल देश के लिये बल्कि जनता के लिये भी अनेक प्रश्न थे।

7. क्रांतिकारी चेतना—लोचन भैया को सामाजिक परिवर्तन की सदैव चिन्ता बनी रहती है। वे चाहते हैं कि सत्य को उजागर कर सामने लाना चाहिये। वे पूर्ण परिवर्तन की क्रांति लाना चाहते हैं जिससे कि सभी लोग स्वतंत्र रूप से स्वतंत्र देश में श्वाँस ले सकें। आज तो लोग परिवर्तन के नाम से ही घृणा करते हैं। जैसे ही दा साहब को यह बात पता चली कि लोचन भैया असंतुष्टों के नेता बन गये हैं, वैसे ही दा साहब उनकी आवाज को बन्द कर देना चाहते हैं जिसका परिणाम यह हुआ कि लोचन भैया अपनी बात मुक्त कंठ से व्यक्त ही नहीं कर पाते हैं। किसी भी नवीन क्रांति के लिये दबंग आवाज और मुक्त कण्ठ की आवश्यकता होती है और ये दोनों ही वहाँ नहीं हैं। साथ ही तीसरी बात यह है कि अच्छे खासे जन-समूह की आवश्यकता होती है वह भी उनके पास मुट्ठी भर चन्द लोग ही हैं। यद्यपि लोचन भैया को अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिल सकी, किन्तु प्रस्तुत उपन्यास में उनका चरित्र काफी हद तक महत्त्वपूर्ण रहा है।

8. आचरण की अनुकूलता—लोचन भैया सदैव स्थिति और परिस्थितियों के अनुकूल आचरण करते हैं। जब पार्टी के अध्यक्ष अप्पा साहब उनसे मिलने आते हैं तो वे स्पष्ट रूप से कह देते हैं कि ''कल अन्तिम रूप से यह निर्णय लिया गया है कि हम लोग एक दिन के लिये भी इस मंत्रीमण्डल का हिस्सा बनकर नहीं रहेंगे। स्थितियों को और अधिक बर्दाश्त अब नहीं किया जा सकता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

लोचन भैया यह नहीं सोचते हैं कि उनके द्वारा कठोर कदम उठाने से स्थिति बिगड़ जायेगी बल्कि यह सोच कर ही ऐसा कार्य करते हैं कि जिससे समाज और देश में आमूलचूक परिवर्तन आ सके। समय और परिस्थितियों के अनुकूल यह सब आवश्यक है।

निष्कर्ष – लोचन भैया को प्रस्तुत उपन्यास में असंतुष्ट दल के नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनका अच्छा खासा प्रभाव है। वे जनप्रिय नेता हैं। उनकी लोकप्रियता तो उनके नाम का प्रभाव ही स्पष्ट कर देती है। वे जो भी कुछ चाहते हैं, उन्हें भाग्यवश मिल ही जाता है, यद्यपि वे अपने लक्ष्य में सफल नहीं रहते हैं किन्तु उनका किरदार समूचे उपन्यास में जीवन्त ही रहा है।

प्रश्न- 4. मन्नू भण्डारी द्वारा रचित उपन्यास 'महाभोज' के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए इसकी तात्त्विक समीक्षा कीजिये।

उत्तर – 'महाभोज' उपन्यास की मूल संवेदना हमारे देश की वर्तमान राजनीति में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण है। इसमें कलुषित और घिनौने रूप को प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने यह प्रमाणित कर दिया है कि आज राजनीति राजनीति नहीं रही, वह तो इसके नाम पर काली नीति बन गई है। इसे हम भ्रष्ट नीति भी कह सकते हैं क्योंकि जहाँ पर केवल स्वार्थसिद्धि ही प्रमुख लक्ष्य बन गया हो, जहाँ पर अपना ही पेट और जेबें भरने का भाव रह गया हो, जहाँ पर हर गलत से गलत व बुरे से बुरे घटनाक्रम को नजर-अंदाज करके उसेअपनी आकांक्षाओं के अनुरूप बदलने की काली मानसिकता हो, वह राजनीति भला कैसे हो सकती है किन्तु अब तो हमारे देश में यही रूप राजनीति का रह गया है। इसने देश के सम्पूर्ण परिवेश को न केवल विकृत कर दिया है अपितु समाज में रहने वाले लोगों की मानसिकता को भी बिगाड़ दिया है। इन सब बातों को दृष्टिपथ में रखते हुए 'महाभोज' उपन्यास राजनीति बोध के साथ-साथ लेखिका के यथार्थ बोध को व्यक्त करने वाला उपन्यास है।

उपन्यास की तात्विक समीक्षा से अभिप्राय यह है कि विद्वानों ने समीक्षा की दृष्टि से जो तत्त्व तय किये हैं, उनकी कसौटी पर उपन्यास किस रूप में प्रस्तुत हुआ है। यद्यपि उपन्यास, कहानी, नाटक – तीनों ही गद्य की सशक्त विधाओं के प्रमुख तत्त्व एक जैसे हैं किन्तु अन्तर अवश्य है, जो उपन्यास को उपन्यास, नाटक को नाटक और कहानी को कहानी बनाये रखता है। नाटक में रंग-मंच प्रमुख होता है जो उपन्यास मेंनहीं होता है। जहाँ तक कहानी का प्रश्न है, उसमें भी मूल संवेदना, पात्र और शिल्प ही प्रमुख होता है। उपन्यास में कथा आवश्यक है। कथानक को गति देने के लिये चरित्र आवश्यक है और चरित्रों के लिये संवाद भी नितान्त जरूरी है। अर्थात् जिन प्रमुख तत्त्वों के आधार पर सामान्यत: किसी भी उपन्यास का मूल्यांकन किया जाता है, वे हैं – कथावस्तु, चरित्रविधान, संवाद योजना, देश काल और वातावरण, भाषा शैली और उद्देश्य। इन्हीं प्रमुख तत्त्वों को ध्यान में रखकर इन्हीं के परिप्रेक्ष्य में 'महाभोज' की तात्त्विक समीक्षा निम्नलिखित बिन्दुओं में स्पष्ट की जा रही है –

1. कथावस्तु – 'महाभोज' की कथावस्तु में कथा नाम पर अधिक पेचींदगी नहीं है। आजादी के बाद एक देहात, उस देहात में फैली हुई दलगत राजनीति चुनावों के लिये अपनाये जाने वाले हथकण्डे, अपराधी तत्त्वों का राजनीति में हस्तक्षेप, अपने ही लाभ पर पुलिस की दृष्टि, बुद्धिजीवियों की तटस्थता, पत्रकारों की अवसरवादिता और जनता का शोषण। ये सारे तत्त्व उपन्यास की कथावस्तु में मुखरित हो रहे हैं। एक झूठ को सच और एक सच को झूँठ में बदलने के वास्ते क्या मुख्यमंत्री, क्या विपक्ष के नेता, क्या पुलिस के आला अफसर, क्या पत्रकार, क्या बुद्धिजीवी, क्या गुण्डातत्त्व सभी अपने-अपने दावपेचों में अपना महारथ दर्शाने और उसे सिद्ध करने में लगे हुए हैं।

'महाभोज' उपन्यास के कथानक की विशेषताओं के संदर्भ में यहाँ पर यही कहा जा सकता है कि इस आलोच्य उपन्यास की कथावस्तु संगठनात्मकता, मौलिकता, प्रवाहशीलता, क्रमिकता, सुसम्बद्धता, रोचकता, सरसता और नाटकीयता आदि सभी तत्त्वों से परिपूर्ण है जिनकी वजह से उपन्यास की रोचकता कायम रहती है और अन्त तक यह किसी श्रेष्ठ उपन्यास का ठोस कथानक प्रतीत होता है।

2. पात्र-विधान – किसी भी उपन्यास की सफलता कथानक के साथ-साथ उसके पात्र-विधान पर भी निर्भर है। उद्देश्य चाहे कुछ भी हों चाहे वह समाजोपयोगी हो, राजनीति पूर्ण हो, व्यक्तिगत भावों से मंडित हो, मनोवैज्ञानिक या सत्यान्वेषी अथवा मनोरंजन से युक्त हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसमें आये पात्र कथा या कृति की मूल संवेदना के वाहक होने चाहिये। 'महाभोज' उपन्यास पात्र-नियोजन की दृष्टि ऐसा ही सफल उपन्यास है। इसके सभी पात्र मूल चेतना सीधे जुड़े हुए हैं। बिसेसर, सरोहा गाँव का थानेदार, मुख्यमंत्री दा साहब, विपक्षी दल का नेता, लखन सिंह, जोरावर, दत्ता बाबू त्रिलोचन सिंह, पाण्डे जुम्मन पहलवान, हीरा, बिहारी बाबू, बिन्दा, रुक्मा, रत्ती, भवानी, डी.आई.जी. सिन्हा, अप्पा साहब, राव, चौधरी, जोगेसर, एस.पी. सक्सेना,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

महेश शर्मा आदि। ये सभी पात्र उपन्यास में आये अवश्य हैं किन्तु केवल बिसेसर, दा साहब, सुकुल बाबू, त्रिलोचन सिंह रावत और बिन्दा के चरित्र का ही अधिक चित्रण हुआ है, शेष पात्र गौण हैं।

उपन्यास में सीमित पात्र हैं जिसकी वजह से पात्रों की योजना पर्याप्त आकर्षक बन गई है। 'महाभोज' के चरित्र चित्रण कला का उज्ज्वल रूप दिखाई देता है। माना कि सारे पात्र काल्पनिक हैं किन्तु विश्वसनीय और वास्तविक प्रतीत होते हैं। लेखिका ने जिस ढंग से पात्रों को प्रस्तुत किया है उनका प्रभाव उसी ढंग सेपाठकों के मन पर पड़ा है। अत: नि:संदेह पात्रों की योजना प्रस्तुत उपन्यास में स्वाभाविक और सार्थक है। इसके सभी पात्र यथार्थोन्मुख दृष्टिकोण रखते हैं। उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि पात्रों के केवल सद्गुणों का ही उल्लेख नहीं किया गया है अपितु उनकी दुर्बलताओं को भी सांकेतिक किया गया है। आमतौर पर उपन्यासों के अन्तर्गत चरित्र-चित्रण हेतु विश्लेषणात्मक और नाटकीय दो ही प्रकार की प्रणालियाँ काम में ली जाती हैं। इनमें से विश्लेषणात्मक चित्रांकन प्रणाली को प्रत्यक्ष प्रणाली के नाम से भी अभिहित किया जाता है। इसमें उपन्यासकार स्वयं अपने पात्रों के भावों, शारीरिक एवं मानसिक अवस्थाओं का विश्लेषण करता है। प्रस्तुत उपन्यास में मुख्यमंत्री दा साहब, सुकुल बाबू, त्रिलोचनसिंह और लोचन भैया जैसे पात्रों का चरित्र-चित्रण विश्लेषणात्मक पद्धति से किया गया है।

चरित्र-चित्रण की नाटकीय पद्धति को परोक्ष-प्रणाली के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत पात्रों के कार्यों, वार्तालापों, संवादों द्वारा चरित्र को उद्घाटित किया जाता है। इस प्रणाली का प्रयोग बिसेसर के चरित्र विश्लेषण में किया गया है। इसके साथ ही बिन्दा और रुक्मा जैसे चरित्रों की कतिपय विशेषताओं का उद्घाटन और विश्लेषण भी नाटकीय-पद्धति या परोक्ष प्रणाली से किया गया है। अत: पात्र-विधान और चित्रांकन की दृष्टि से लेखिका मन्नू भण्डारी ने 'महाभोज' उपन्यास को आशातीत सफल बनाया है।

प्रश्न-5. 'महाभोज' उपन्यास के शीर्षक की विशेषताओं का उल्लेख कर इसके कथानक की समीक्षा कीजिये।

उत्तर – उपन्यास के महत्त्व का दारमदार उसके नामकरण अथवा शीर्षक पर निर्भर रहता है। यह शीर्षक उपन्यास में निहित मुख्य कथ्य अथवा मुख्य घटना अथवा मुख्य पात्र अथवा प्रमुख भाव या प्रमुख उक्ति के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसमें संक्षिप्तता का गुण अनिवार्य है, शीर्षक जितना छोटा होगा उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। इसके लिये कोई भी एक सारगर्भित शब्द अथवा दो शब्द अथवा वाक्यांश लिया जा सकता है। मेरा मानना तो यह है कि शीर्षक एक अथवा अधिक से अधिक दो शब्दों में ही निर्धारित किया जाना चाहिये। शीर्षक ऐसा हो कि जिसमें समस्त कथानक को व्यंजित करने की क्षमता विद्यमान हो, पाठक के चित्त में जिज्ञासा भाव उत्पन्न हों, रोचकता हो, उद्देश्य सूचकता हो तथा आदर्श-यथार्थ व्यंजना की शक्ति हो। अत: उपन्यास का शीर्षक विभिन्न गुणों से मण्डित होना चाहिये। कर्णप्रियता, माधुर्य संक्षिप्त रूप, भावपूर्ण, रहस्यमय, सरल तथा आकर्षक शीर्षक ही समूचे उपन्यास का प्रभावशाली दर्पण होता है।

मन्नू भण्डारी कृत उपन्यास का शीर्षक प्रमुख घटना एवं भावना पर आधारित है। इसमें संदेह नहीं है कि प्रस्तुत उपन्यास ऐसे ही प्रभावपूर्ण आधार पर टिका हुआ है। इसके शीर्षक की सार्थकता और युक्ति संगतता पर निम्नलिखित तथ्यों पर विचार आवश्यक है।

1. संक्षिप्त – 'महाभोज' शब्द एक संक्षिप्त और सारगर्भित शब्द हैं जो अपने आप में आकर्षक लिये हुए हैं। इस शब्द के द्वारा पाठक का ध्यान स्वत: केन्द्रित हो जाता है तथा दृष्टि को रोकने वाला शब्द है। यद्यपि इस शब्द का अर्थ एक बार पढने मात्र से स्पष्ट हो जाता है। यह भी ज्ञात हो जाता है कि इस रचना में किसी बड़े पैमाने पर आयोजित प्रीतिभोज या सहभोज का उल्लेख किया गया है। कथानक के प्रारम्भ होने की गति के साथ-साथ इसकी सार्थकता की कलई खुलने लग जाती है और रहस्यमय ढंग से यह भी धीरे-धीरे पुष्टि होने लग जाती है कि यह महाभोज आज की विकृत राजनीति के परिवेश में होने वाले उपचुनावों का ऐसा महाभोज है जिसमें तीखे दिमाकधारी, दावपेचों के निपुण खिलाड़ी राजनेता शामिल होते हैं। सभी राजनीतिक दल इस महाभोज में अपने-अपन भक्ष पर झपटने के लिये न केवल तत्पर रहते हैं, अपितु येन-केन-प्रकारेन उसे अपना ग्रास बना लेना चाहते हैं। उपन्यास में समय-समय पर दावत, राजनीतिक पार्टी जैसी पूर्ण सम्भावना बनी रहती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. आकर्षक – यद्यपि कथानक के प्रारम्भ होने के साथ ही 'भाषण' की सम्भावना दिखाई देने लगती है किन्तु इस सुखदायी लक्ष्य की परिणति अन्त में ही हो पाती है। सभी लोगों के प्रयास और उत्सुकतापूर्ण कृत्य शीर्षक के आकर्षण को बनाए रखते हैं।

3. रोचकता से युक्त – ''महाभोज'' शब्द अपने आप में पर्याप्त रोचक है। यह महाभोज कथानक प्रारम्भ होने के साथ ही अपने नाम की सार्थकता के अपने अलग-अलग रूपों में स्पष्ट करने लगता है। बिसेसर की लाश को गिद्ध नोच-नोच कर खा जाते हैं जबकि वह लावारिस नहीं होता है। इस घटना वर्णन से गिद्धों का महाभोज उत्सुकता व रोचकता के गुण का संवर्धन करने वाला है। कौन बिसेसर है, कौन गिद्ध है, महाभोज कहाँ हो रहा है, किसके द्वारा आयोजित है और कौन इसका सही आनन्द ले रहा है आदि-आदि। उसका खुलासा शनैः-शनैः कथानक की मन्दगति के साथ ही पता चल पाता है। अतः अन्त तक महाभोज शीर्षक रोचक बना रहता है।

4. जिज्ञासापूर्ण – प्रस्तुत उपन्यास के अनुसार सरोहा गाँव में उपचुनाव का माहौल गर्माता है। उसका एक महत्त्वपूर्ण कारण वहाँ के एक व्यक्ति बिसेसर की मौत उसी दौरान हो जाती है। यद्यपि बिसेसर की मौत कोई विशिष्ट मौत नहीं होती है, किन्तु स्वार्थी राजनेताओं ने इसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बना दिया है और इस चुनाव का मुद्दा यही मौत बन जाती है। जैसा आजकल चुनावों में प्रायः देखने को मिल जाता है। किसी भी मामूली घटना को 'तिल का ताड़' बनाकर अनेक प्रकार के दाव पेचों से उसे रहस्यमय बना दिया जाता है। बिसेसर की मौत का रहस्य अनेक परिस्थितियों और स्थितियों से गूँथ कर तैयार किया जाता है, जो पाठक के मन में जिज्ञासा जागृत करता है। वर्तमान जनता राजनेताओं के लिये महाभोज का पर्याय है। विजयी दल अनेक प्रकार के जश्न मनाता है, प्रीतिभोजों के आयोजन करता है, अनेक अवसरवादी उच्च पदाधिकारियों के प्रमोशन, इच्छित तबादले और न जाने क्या-क्या.....। प्रस्तुत उपन्यास में उपचुनाव जीतने वाली सत्तारूढ़ पार्टी शानदार और मजेदार जश्न का आयोजन करती है। डी.आई.जी. सिन्हा अपने इच्छित पद पर उन्नत होने की खूबसूरत पार्टी देते हैं और एस.पी. सक्सेना सत्ता की कुटिलता के शिकार बन जाते हैं। पुलिस विभाग के भ्रष्ट सिपाही जेल में बन्द बेकसूर बिन्दा की पिटाई कर झूँठ को सच में बदलने का प्रयास करते रहते हैं अतः उपन्यास की जिज्ञासा क़ायम रहती है।

5. व्यंजनापूर्ण प्रस्तुति – किसी ने सच कहा है कि ''जंग व मुहब्बत में सब जायज है।'' इस कहावत की सच्चाई प्रस्तुत उपन्यास की दाव पेच युक्त उपचुनाव की भ्रष्ट राजनीति है। इस उपन्यास में विभिन्न पात्रों की मनोदशा, आचरण एवं विवशता की सुन्दर अभिव्यंजना की गई है।

सरोहा गाँव का बिसेसर श्रमिकों को शोषण के विरूद्ध एकजुट बनाकर खड़ा करना चाहता है, किन्तु उसकी उसी के कारण हत्या कर दी जाती है। हरिजनों की कच्ची बस्ती में आगजनी करा दी जाती है और समूचे गाँव का वातावरण अशान्त बन जाता है। उधर उपचुनाव सन्निकट हैं जिसके कारण अनेक राजनीतिक दल अपने-अपने तरीके से ग्रामवासियों की भावना को अपने पक्ष में बनाने के लिये हमदर्दी बाँटने लग जाते हैं और वह गांव राजनीति का अखाड़ा बन जाता है। एस.पी. सक्सेना को बिसेसर की मौत जाँच अधिकारी चुन दिया जाता है। मुख्यमंत्री दा साहब चुनाव जीतने के लिये अनेक प्रकार के हथकंडे अपनाते हैं। वे अपनी पार्टी या सत्तापक्ष के असंतुष्ट मंत्रियोंको अपने पक्ष मेंकरने के लिये पूरी कूटनीतिक चेष्टा करते हैं। साथ ही लोचन भैया को पार्टी से निकलवा देते हैं। एस.पी. सक्सेना की जाँच रिपोर्ट से बिसेसर की हत्या का एक अच्छा अभियुक्त सिद्ध हो रहा था किन्तु उसके पास एक ख़ासा वोट बैंक था जिसके कारण मुख्यमंत्री उसे अपने पक्ष में लाकर बचा लेता है और निर्दोष बिन्दा को जेल में डाल दिया जाता है। सक्सेना को नौकरी से सस्पेण्ड करना और सिन्हा को पदोन्नत करना भी राजनीति का भ्रष्ट रूप है। प्रतिकूल व्यवहार करने वाले राजनेता, सरकारी कर्मचारी भी इस महाभोज के भक्षक बन गये अतः 'महाभोज' उपन्यास में प्रस्तुत शीर्षक की सशक्त व्यंजना हुई है जो उचित, सक्षम और सार्थक है।

उद्देश्य सूचक – कथानक के आरम्भ में बिसेसर उर्फ बिस्सू की लाश को लावारिस बताना, गिद्धों के द्वारा नौंच-नौंच कर खाना तथा अन्य जितनी भी घटनाओं का उल्लेख किया गया है वह इस उद्देश्य की पूर्ति करता है कि वर्तमान राजनीति का अपना कोई नैतिक अस्तित्व नहीं है इसमें अनेक विसंगतियाँ समाहित हैं। भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश को जर्जर व खोखला एवं जनता के मन में इस के प्रति अविश्वसनीयता की भावना का कारण ये ही राजनीतिक विसंगतियाँ हैं। जिसप्रकार किसी भी महाभोज के आयोजन में अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन होते हैं जो अलग-अलग जिह्वा रसों का आनन्द देने वाले होते हैं। उसी प्रकार राजनेता

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

और आला अफसर मिलकर जनता को अपनी महाभोज की सामग्री समझकर सब कुछ हजम कर जाते हैं। स्वार्थी राजनीति और भ्रष्ट शासनतंत्र में जनता को बिना चबाये ही निगलता जा रहा है। पूंजीपति और जमींदार वर्ग भोले-भाले गरीब मजदूरों और किसानों का सरेआम शोषण कर रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास में उपचुनाव के दौरान गाँव का माहौल महाभोज जैसा बन जाता है। हर व्यक्ति अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहता है। राजनेता गाँव के लोगों के साथ बिसेसर की मौत और हरिजन बस्ती की अग्नि दुर्घटना तथा ग्रामीण जनजीवन की अस्त-व्यस्तता के प्रति हमदर्दी दिखाकर जनमत को अपने पक्ष में करने लगे हैं। वोट बैंक को बढ़ाने के वास्ते राजनेता अपने-अपने तरीकों से दाव-पेच खेल रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास के सुन्दर शीर्षक से इस माहौल की अच्छी खासी तृप्ति हो जाती है अत: मन्नुजी के द्वारा रचित इस उपन्यास का शीर्षक सभी क्षेत्रों में खरा उतरने वाला है।

कथावस्तु-समीक्षा

देश की स्वतंत्रता के बाद राजनीति का बदलता हुआ परिवेश प्रस्तुत उपन्यास का एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। यद्यपि उपन्यास में कथावस्तु की स्थिति इतनी अधिक पैचीदी नहीं है कि उसे हम विभिन्न रहस्यों से गुँथी हुई विशिष्ट मान लें तथापि आजाद देश की वह दलगत राजनीति जो एक देहात की शान्त चौपालों को गर्मा देने वाली तथा वातावरण को संवेदनशील बना देने वाली है की पैचीदगी वाकई क़ाबिल-ए-तारीफ़ है। चुनावों के लिये किये जने वाले हथकंडे, चुनाव जीतने के दाव-पेच, अपराधी तत्त्वों का राजनीति में दखल, अपने स्वार्थों पर टिकी हुई पुलिस की दृष्टि, बुद्धि जीवियों की तटस्थता, पत्रकारों की अवसरवादिता—ये सारे तत्त्व इस उपन्यास की कथावस्तु में मुखरित हुए हैं।

मुख्यमंत्री दा साहब हैं और सुकुल बाबू विरोधी पक्ष के नेता हैं। जोरावर एक शक्तिशाली ज़मींदार हैं किन्तु राजनीतिक सुरक्षा में पलने वाला हत्यारा और गुण्डा है। सक्सेना और सिन्हा पुलिस के आला अफसर हैं। दत्ता बाबू अच्छे सम्पादक हैं। गाँव में जाकर इस बात की खोज करने वाले भी बिसेसर की मौत और गाँव में होने वाली आगजनी का क्या कारण है, बुद्धिजीवी महेश शर्मा हैं। महेश बाबू यह भी जानना चाहते हैं कि ''कास्टस्ट्रगल और क्लास स्ट्रगल'' क्या होता है ?

सरेहा गाँव में बिसेसर नामक क्रांतिकारी व्यक्ति की मौत का कारण क्या हो सकता है ? वह हत्या है या आत्महत्या है इस बात को स्पष्ट होने में इतना समय लग जाता है कि पाठक दँग रह जाता है। बिसेसर की हत्या जैसे साफ-सुथरे मुक़द्दमे को काली राजनीति इतना उलझा देती है कि पाठक का मस्तिष्क उसे रहस्यात्मक ढंग से पढने लगता है। एक झूठ को सच में और सच को झूँठ में बदलने के लिये राजनेता, सरकारी अफसर, पत्रकार, पुलिस विभाग, गुण्डा तत्त्व और स्वार्थसिद्धि में जुटे अन्य किरदार क्या-क्या दावपेच नहीं खेलते हैं। यह सब प्रस्तुत उपन्यास का सामान है। उस सामग्री को पढकर प्रत्येक पाठक नि:संदेह अपनी सहमति प्रकट करेगा। इसे हमप्रस्तुत उपन्यास महाभोज की कथावस्तु का यथार्थ चित्रण का सुन्दर अनुमान बता सकते हैं। इस संदर्भ में अनिता राजूरकर ने लिखा है कि ''स्वाधीनता के बाद उभरी देश की राजनीति का उज्ज्वल पक्ष चाहे कुछ भी रहा हो किन्तु कालेपक्ष का चित्रण केवल हिन्दी के ही नहीं बल्कि भारत की प्राय: सभी भाषाओं के लेखकों का प्रिय विषय रहा है। इससे स्थूल रूप में यहमाना जा सकता है कि देश पर शासन करने वाला पक्ष जिसे सत्ताधारी पक्ष कहा जाता है, अपने समर्थ राजनीतिक विपक्ष से अवश्य निश्चिन्त रहा है परन्तु साहित्यिकों के रूप में उसके (सत्ताधारी पक्ष) विरोध में खड़े रहने के कारण उसे अनेक बार कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।''

कथानक की विशेषताएं

उपन्यास 'महाभोज' का कथानक राजनैतिक चेतना पर आधारित है। यह एक ऐसा उपन्यास है जिसका कथानक वर्तमान राजनीति, उसमें आई विसंगतियों और कमियों को रेखांकित करता है और स्पष्ट करता है कि आज की राजनीति धर्म या न्याय पर चलने वाली नहीं है बल्कि यह तो भ्रष्टाचार और मूल्यहीनता का पर्याय बन चुकी है। इसका नैतिक पतन हो चुका है, आदर्शहीन और चरित्रहीन बन चुकी है। प्रस्तुत उपन्यास के कथानक की प्रमुख विशेषताओं को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं।

1. कथानक पारस्परिक सम्बद्धता—प्रस्तुत उपन्यास महाभोज चरित्र प्रधान उपन्यास न होकर वातावरण प्रधान है और इसके कथानक में सम्बद्धता का गुण निहित है—बिसेसर की कथा, मुख्यमंत्री दा साहब की कथा, विपक्ष के नेता सुकुल बाबू की कथा, बिन्दा एवं रुकमा की कथा आदि सभी प्रकरण एक दूसरे से गहरा ताल्लुक रखते हैं। यद्यपि उपन्यास छोटा है किन्तु उपर्युक्त

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

सभी कथाओं को आपस में सम्बद्धित किया गया है। उपन्यास का यह प्रथम गुण होना चाहिये कि कथानक घटनाओं, प्रसंगों, पात्रों के कार्यकलापों के एक साथ में लेकर चले। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने बिसेसर की हत्या हो जाने और सरोहा गांव की कच्ची बस्ती में हुई आगजनी का वर्णन किया है, उसके परिणामों की चर्चा भी की गई है तत्पश्चात् चुनाव की घटना को पूर्ण विस्तार से वर्णित किया गया है। सत्तारूढ़ तथा विपक्षी नेताओं के कार्य कलापों का विस्तार पूर्वक वर्णन भी प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है तात्पर्य यह है कि प्रत्येक गतिविधि और घटना का सम्बन्ध उपन्यास के कथानक से है अत: कथानक में पारस्परिक सम्बद्धता का गुण पूर्णरूपेण विद्यमान है।

2. कथावस्तु में वैचारिक मौलिकता – किसी भी उपन्यास का कथानक वैचारिक धरातल पर जितना होगा, मौलिक होगा वह उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। महाभोज उपन्यास में वैचारिक मौलिकता दिखाई देती है। लेखिका ने घटनाओं, वर्णनोंआदि के माध्यम से वर्तमान राजनीति के स्वरूप की वैचारिकता को यथार्थ के धरातल पर रखा है। विषय-वस्तु भी नवीनता लिये हुए है। मौलिकता के लिये जीवन के यथार्थ का चित्रण प्रस्तुत करना नितान्त आवश्यक है और वह लेखिका ने अपने उपन्यास में किया है। राजनीति में कालुष्य का आ जाने से जो विकृतियाँ और विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं वे पात्रों के भाव-चित्रण से स्वत: प्रस्तुत होने लगती हैं। अत: प्रस्तुत उपन्यास में वैचारिक मौलिकता का गुण समाविष्ट है।

3. घटनात्मक सत्यता – इस गुण को सम्भाव्यता भी जाता है। यही स्वाभाविकता मानी जाती है। अच्छे उपन्यास भी घटनाओं को योजना सम्भव, सत्य और विश्वसनीय होनी चाहिए क्योंकि असम्भव बातों और अतिरंजित कलानाओं से उपन्यास का यथार्थ बाधित हो जाता है। जब रचनात्मक यथार्थता के साथ अधिकाधिक आग्रह अपना लेता है तो कथानक में संभाव्यता का गुण खुद-ब-खुद समाहित होने लगता है। आलोच्य उपन्यास 'महाभोज' प्रारम्भ से अन्त तक कहीं भी ऐसा नहीं लगता है कि इसमें अवास्तविकता, अति काल्पनिक और अविश्वसनीय प्रसंगों का चित्रण किये हुए हैं। सुकुल बाबू जिस तरह ग्रामीण जीवन में घटित घटनाओं को अपने पक्ष में मोड़कर उसका लाभ उठाना चाहते हैं, वैसे ही संतुष्ट दल के नेता लोचन भैया भी लाभ लेना चाहते हैं। यहाँ तक कि एक कुशल राजनीतिज्ञ दा साहबभी सम्पूर्ण परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने के लिये निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास घटनात्मक सत्यता से युक्त है।

4. शैली कौशल – प्रस्तुत उपन्यास में जिस शैली योजना को मन्नू भण्डारी ने काम में लिया है वह प्रभावशाली और आकर्षक है। भाषा का पानुकूल, विषयानुकूल और प्रसंगानुकूल होना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि यह गुण कथानक को अतिरिक्त शक्ति प्रदान करने वाला गुण होता है। कहानी कहना अलग बात है, किसी कथानक को प्रस्तुत करना भी सहज हो सकता है किन्तु उसे नवीनता और आकर्षण के साथ प्रस्तुत करना एक बड़ी बात है। लेखिका ने अपने उपन्यास के कथानक को आकर्षक और प्रभावशाली शैली में सफलता पूर्वक व्यक्त किया है। सभी घटनाओं और प्रसंगों को अनुकूल भावात्मक शैली प्रदान की है जिससे शैलीगत नव्यता और चारुता बराबर रही है। विशेष बात तो यह है कि उपन्यास का कथानक अपने आप में आकर्षक और प्रभावशाली है। इसे हम कथा प्रस्तुति विषयक निर्माण कौशल कह सकते हैं।

5. रोचक एवं सरस कथा – यह कथा वस्तु का महत्त्वपूर्ण गुण होता है। कथानक कितना भी शक्तिशाली हो, किन्तु यदि उसमें सरसता अथवा रोचकता का गुण नहीं है तो वह पाठकों की अरुचि का साधन माना जायेगा। 'महाभोज' उपन्यास में कथानक में ये गुण अन्त तक आसानी से देखने को मिलते हैं। उपन्यास पढ़ते समय पाठक कहीं पर भी यह अनुभव नहीं करता है कि वह ऊब रहा है या उसका ध्यान इधर-उधर भटक रहा है। इस गुण को समाहित करने के लिये लेखिकाने कहीं तो घटना की प्रस्तुति से रोचकता बढ़ी है और कहीं कथा को कहने में सरसता उत्पन्न की है। अत: यह आलोच्य उपन्यास जिज्ञासात्मकता, सरसता एवं रोचकता से पगा हुआ है। कलुषित और विकृत राजनीति में यथार्थ निदर्शन उनकी स्थिति पर व्यंग्य, पात्रों के मनोभावों की विश्वसनीय अभिव्यक्ति से कथानक अबाध रूप सेरोचक बना हुआ है। इन सभी विशेषताओं के अतिरिक्त –

6. अन्य विशेषताएँ – लेखिका ने प्रस्तुत आलोच्य उपन्यास से मानव जीवन के लगभग सभी समस्याओं की व्याख्या की है। यह उपन्यास समाज और अपने युग के यथार्थ चित्रण को प्रस्तुत करने में पूर्णत: सफल है। जीवन पक्षों के अपेक्षित महत्त्व और उसके मूल्यांकन का सम्बन्ध न केवल उपन्यासकार के दृष्टिकोण से होता है, अपितु कलात्मक प्रस्तुति से भी होता है। यह भी विशेषता 'महाभोज' केकथानक में सहजता से मिल जाती है। उपन्यास लेखिका विविध घटनाओं और पात्रों के माध्यम से मानव-हृदय की अनेक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में सफल रही है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

निष्कर्ष – अन्त में हम यह कह सकते हैं कि मन्नू भण्डारी का 'महाभोज' उपन्यास कथानक शिल्प की दृष्टि से पूर्णत: सफल रहा है। इसके कथानक में संगठनात्मक या सुसम्बद्धता तो है ही, क्रमिकता और प्रभावशीलता के साथ-साथ रोचकता, सरसता भी बखूबी से समाहित है। कथानक की सम्बद्धता, यथार्थ स्थितियों का विश्वसनीय प्रतिरूप, मौलिकता, नवीनता, नारकीयता तथा जीवन का बहुपक्षीय स्वरूप और उसका अंकन-प्रत्यांकन भी प्रभावशाली है। अत: 'महाभोज' का कथानक सर्वसम्पन्न है।

प्रश्न- 6. उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों पर प्रकाश डालिये।

अथवा

उपन्यास-विधा के विभिन्न उपकरणों (तत्त्वों) की परस्पर सम्बद्धता और प्रभाव-ऐक्य की सिद्धि में उनके योगदान पर प्रकाश डालिये।

उत्तर – आधुनिक काल में उपन्यास प्राय: सभी भाषाओं के साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा मानी जाती है। सांस्कृतिक ओर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी इसका अपना एक विशिष्ट महत्त्व है। साहित्य को यदि जीवन-जगत् की प्रतिच्छाया माना जाता है तो यह स्वीकार किया जा सकता है कि जीवन की जितनी सम्पूर्ण सौन्दर्यमयी छवि उपन्यास में उभरती है, उतनी अन्य किसी साहित्य विधा में नहीं। इस प्रकार उपन्यास में जीवन के सभी पक्षों के साथ समग्र परिवेश का और समग्र मानवीय मनोभावों का समावेश रहता है। इस कारण उपन्यास में महाकाव्य या प्रबन्ध-काव्य के समान व्यापकता एवं रसास्वादन की पूर्ण क्षमता रहती है।

उपन्यास के तत्त्व –

विद्वानों ने उपन्यास के निम्न छ: तत्त्व माने जाते हैं –

1. कथावस्तु
2. पात्र और चरित्र-चित्रण
3. कथोपकथन या संवाद
4. देश-काल या वातावरण
5. शैली
6. उद्देश्य।

इन तत्त्वों के अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने (1) द्वन्द्व अथवा संघर्ष को तथा (2) कौतूहल या द्वैधीभाव (सस्पेंस) को भी तत्त्व माना है, परन्तु वास्तव में ये रचना-कौशल के ही अंग हैं। उपर्युक्त छ: तत्त्वों में भी मुख्य कथावस्तु और पात्र हैं, देशकाल कथावस्तु का ही एक अंग है जो उसे स्वाभाविक और विश्वसनीय बनाता है। उद्देश्य वह परिणाम है, जिसे कथावस्तु के द्वारा प्राप्त किया जाता है तथा शैली और संवाद उसे प्राप्त करने के साधन हैं।

1. कथावस्तु – उपन्यास में वर्णित कहानी को कथावस्तु कहते हैं। कथावस्तु ही उपन्यास का अनिवार्य तत्त्व है। कथावस्तु के निम्नलिखित गुण स्वीकार किये जा सकते हैं –

(i) मौलिकता – उपन्यास की कथावस्तु कल्पित, लोकविश्रुत अथवा ऐतिहासिक हो सकती है। सभी प्रकार के कथानकों में मौलिकता का गुण अनिवार्य है। कल्पनाप्रसूत कथानक में तो इस गुण का स्वत: समावेश हो जाता है। जन-परम्परागत एवं इतिहास प्रसिद्ध घटनाओं को भी अपनी कथा का आधार बनाते समय उपन्यासकार के लिए उसमें मौलिकता लाना आवश्यक है। इसके लिए वह लोकविश्रुत अथवा इतिहासानुमोदित घटना में कल्पना का मिश्रण करता है। इस कल्पना के समावेश से वह ऐतिहासिक सत्य की रक्षा करता हुआ नवीन प्रसंगों की उद्भावना कर सकता है। इतिहास के धूमिल एवं अस्पष्ट चित्रों को भी वह अपनी कल्पना-कूर्चिका से स्पष्ट एवं उज्ज्वल रूप प्रदान कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि उपन्यास के कथानक में मौलिकता के गुण का होना अनिवार्य है।

(ii) सम्भावना – सम्भावना के बिना मौलिकता अर्थहीन है। घटनाएँ काल्पनिक होने पर भी सम्भव प्रतीत होनी चाहिए अन्यथा उनसे पाठकों के हृदय में अविश्वसनीयता की सृष्टि होती है, जिसके फलस्वरूप पाठक की तन्मयता भंग हो जाती है। अत: उपन्यास की घटनाओं को प्रत्यक्ष जगत् की अनुभूतियों का सबल आधार देना चाहिए। जब पाठक पूर्ण विश्वास के साथ उपन्यास

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

के पढ़ने में मग्न होता है तो वह यह भूल जाता है कि वह औपन्यासिक गगन में विचरण कर रहा है। उस समय उसे काल्पनिक और व्यावहारिक में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता। उस समय उसे काल्पनिक और व्यावहारिक जगत् का, नवीन और प्राचीन का, अनुभूत और अननुभूत का, प्रत्याशित और अप्रत्याशित का तथा सम्भावित और असम्भावित का कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता। इस प्रकार कथावस्तु में सम्भावना के गुण की नितान्त अपेक्षा है।

(iii) रोचकता—यह भी कथानक का एक अनिवार्य गुण है। इस गुण से विहीन उपन्यास पाठकों के हाथों के स्पर्श से भी वंचित हो जाएगा। कथावस्तु में इस गुण को उत्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता यह है कि कथा की धारा अपने सहज स्वभाव से प्रवाहित हो। जिस प्रकार नदी की मिली मिट्टी जल के साथ ही बहती चली जाती है, उसी प्रकार पाठक की कल्पना कथा की धारा में निमग्न होकर बहती चली जानी चाहिए। सहज प्रवाह के लिए उपन्यासकार पात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में अपनी-अपनी चारित्रिक विशेषताओं के अनुरूप ही व्यवहार करता दिखाता है। यदि कहीं विपर्यय आता है तो लेखक उसके कारण का उल्लेख कर देता है, जिससे वह विपर्यय क्रमिक विकास का परिणाम दिखाई देता है।

(iv) संघर्ष—संघर्ष कथानक को रोचक बनाता है। यह संघर्ष व्यक्ति के अन्तर्जगत में घटित होता हुआ दिखाया जा सकता है। इस संघर्ष की स्थिति में मानव कुछ अवधि के लिए किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है। कभी एक भावना के प्रवाह में बहता है और कभी दूसरी भावना-तरंग उसे अपने अधीन करलेती है। इस अस्थिरता से वह विकल हो उठता है। अन्त में किसी निर्णय पर पहुँच कर वह अपने विप्लव को शान्त करता है। यह संघर्ष बाह्य अर्थात् भावनाजन्य न होकर परिस्थितिजन्य होता है। सामाजिक व्यवस्थाओं और रूढ़ियों में फँसकर मानव अनिच्छा से उनके सम्मुख नतमस्तक होता है। इन दोनों—आन्तरिक और बाह्य संघर्षों का विन्यास उपन्यास की कथा को रोचक बना देता है।

(v) तारतम्य—प्रत्येक प्रसंग तथा वर्णन का अपने उचित अनुपात में रहना भी उपन्यास की कथावस्तु का आवश्यक गुण है। कथानक में मार्मिक स्थलों तक पहुँचाने वाले प्रसंगों का उचित मात्रा में वर्णन ही अपेक्षित रहता है। इन प्रसंगों के वर्णन में उपन्यासकार को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ये वर्णन कथा-प्रवाह में बाधक न होकर उसे गति प्रदान करने वाले हों, इन प्रसंगों के अधिक विस्तृत हो जाने से कथावस्तु के विच्छिन्न होने की आशंका रहती है।

एक घटना से कई कार्य सिद्ध कर लेना तारतम्य का विशेष लक्षण है। इसे साहित्यिक संक्षेप भी कहा जा सकता है। एक ही घटना कथानक के प्रसाद में सहायक हो सकती है, पात्रों के चारित्रिक विश्लेषण में काम दे सकती है, देशकाल के चित्रण में भी उसका महत्त्व हो सकता है। इस प्रकार एक घटना के वर्णन से अनेक कार्यों की सिद्धि से कथानक में तारतम्य की प्रतिष्ठा हो जाती है।

(vi) सुगठितता—सुगठितता का अर्थ विविध अवान्तर प्रसंगों के पारस्परिक गठन से है। जिस प्रकार एक प्रसंग की घटनाएँ परस्पर संबद्ध होनी चाहिए, इसी प्रकार उपन्यास के अन्तर्गत अन्यान्य प्रसंगों का भी परस्पर सुगठित होना आवश्यक है। जिस प्रकार शरीर-संस्थान में अंगों-प्रत्यंगों के यथास्थान विन्यास से, उचित विभाजन, उचित गति-व्यापार और आवश्यक दृढ़ता के अनुपात से सुडौलपन तथा सुघड़ता की सृष्टि होती है, इसी प्रकार एक औपन्यासिक कथा की सुगठितता के लिए भी मूल-कथा में अवान्तर कथा प्रसंगों को यथास्थान विन्यस्त करने, उनका उचित विभाजन, उनके विभिन्न व्यापारों को उचित गति प्रदान करने तथा संधि स्थलों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता रहती है। उपन्यास में प्रमुख कथा के अतिरिक्त गौण कथाएँ भी रहती हैं। इसके अलावा पात्रों के चारित्रिक विकास के लिए अन्यान्य गौण प्रसंगों की भी उद्भावना की जाती है। अतः सहायक कथा अथवा अन्यान्य गौण प्रसंगों की उद्भावना मुख्य कथा के प्रवाह को अधिक तीव्र करने के उद्देश्य से ही की जानी चाहिए।

२. पात्र और चरित्र-चित्रण—उपन्यास में कथावस्तु के संगठन और विन्यास से भी अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व पात्र और चरित्र-चित्रण है। उपन्यास के पात्रों के क्रिया-कलाप से ही कथावस्तु का निर्माण होता है। आधुनिक उपन्यास तो मानव जीवन से संबद्ध रहते हैं। अतः उपन्यासकार को मानव जीवन का कल्पना-प्रसूत चित्रण प्रस्तुत करने की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए वह वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले काल्पनिक पात्रों की सृष्टि करता है। प्रजापति की सृष्टि से मानव अपना विशेष आकार-प्रकार लेकर तथा सबल-दुर्बल मनोवृत्तियों को धारण करके जीवन-यापन करता है। औपन्यासिक सृष्टि में भी मानव जीवन के प्रतीक ये पात्र स्थूल शरीर धारण करते हैं और इनमें प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। इनकी वृत्तियाँ भी सक्रिय होती हैं। सुख-दुःख की मूल अनुभूतियों से इनमें भी राग-द्वेषमूलक मनोविकार उत्पन्न होते परिलक्षित होते हैं। तात्पर्य यह है कि उपन्यासकार सृष्टि पात्रों के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भीतरी और बाहरी व्यक्तित्व का पूरा विवरण प्रस्तुत करता है और इस विश्लेषण की कुशलता में ही उपन्यासकार की सफलता निहित रहती है।

3. संवाद अथवा कथोपकथन – संवादों का कथानक के विकास में, समप्रेष्य बनाने में अथवा उनमें नाटकीयता का समावेश करने में, पात्रों के चरित्र के उद्घाटन में, उन्हें सजीव एवं गतिशील बनाने में, देशकाल और सामाजिक परिस्थितियों के स्पष्टीकरण में तथा लेखक के विचारों के ज्ञान में महत्त्वपूर्ण योग रहता है। पात्रों की बातचीत के द्वारा ही हम उनसे सम्यक् परिचित होते हैं। वर्णन के द्वारा उनके सूक्ष्म मनोभाव, प्रतिक्रियाएँ, संकल्प-विकल्प, विचार और वितर्क आदि का वैसा यथातथ्य और प्रभावशाली चित्र नहीं दिखाई देता है। संवाद पात्रों को सजीव बनाते हैं तथा कथानक में नाटकीयता का समावेश करके उसके प्रभाव को तीव्र कर देते हैं। संवाद पात्रानुकूल होने चाहिए, अर्थात् उनका विषय, भाषा तथा शैली पात्रों के व्यक्तित्व के अनुकूल होनी चाहिए। उनमें सरलता तथा स्पष्टता होनी चाहिए। मिस्टर बेकर के अनुसार, ''यदि संवादों को समझने के लिए शब्दकोष देखने की आवश्यकता पड़ती है तो उनका तो उद्देश्य नष्ट हुआ समझना चाहिए।'' सरलता, संक्षिप्तता तथा रोचकता भी संवादों को सहजग्राह्य बनाने वाले गुण हैं।

4. देशकाल तथा वातावरण – उपन्यास के कथानक और पात्रों का सम्बन्ध किसी-न-किसी स्थान और समय से होता है, अतः यह आवश्यक है कि घटनाओं के घटित होने की सम्पूर्ण परिस्थिति, उनका स्थान और समय पाठकों के कल्पना-पट पर अंकित कर दिया जाए, ताकि पाठक पात्रों की सजीवता पर विश्वास कर सके। कथानक की घटनाओं में स्पष्टता, वास्तविकता तथा मार्मिकता लाने में वातावरण की बहुत बड़ी उपयोगिता है। स्थान और समय की पृष्ठभूमि में पात्रों का चित्रण करने से वे पात्र मानव के अनुकूल प्रतीत होते हैं। वे कल्पनालोक के होते हुए भी इहलोक के दृष्टिगोचर होते हैं। इससे पात्रों का व्यक्तित्व स्पष्ट उभार में आने लगता है, वे सजीव प्रतीत होते हैं। अमूर्त एवं सूक्ष्म विचार स्थूल परिस्थितियों के रूप में मूर्त होकर ग्राह्य बन जाते हैं। वातावरण का सम्यक् चित्रण पाठक के हृदय को भावमग्न करने में भी पर्याप्त क्षमता रखता है।

वातावरण दो प्रकार का हो सकता है – प्राकृतिक और सामाजिक। प्राकृतिक वातावरण में जड़ प्रकृति के चित्रण को समाविष्ट किया जा सकता है। प्राकृतिक वातावरण में सामान्यतः उन सब स्थानों का चित्रण सम्मिलित रहता है, जिसमें पात्र विचरण करते हैं और अपने व्यापारों का विस्तार करते हैं। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक वातावरण में सामयिक परिस्थितियाँ भी समाविष्ट हो जाती हैं, जिनकी विस्तृत छाया में पात्रों को व्यापार करते हुए चित्रित किया जाता है। सामाजिक वातावरण में तत्कालीन समाज की मान्यताओं, रूढ़ियों तथा परम्पराओं का चित्रण होता है। इस सामाजिक वातावरण में राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी समाविष्ट रहती हैं।

देशकाल के चित्रण में लेखक के लिए तीन बातों का ध्यान रखना अत्यावश्यक है – प्रथम, उसे वर्ण्य देशकाल का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए। स्थान और समय विशेष की पूरी और सही जानकारी के अभाव में उसके वर्णन में असंगति आ जाती है। द्वितीय, देशकाल का चित्रण संतुलित रूप में होना चाहिए, न इतना संक्षिप्त कि कथानक में स्पष्टता ही न आ पाए और न इतना विस्तृत की कथानक के प्रवाह में बाधा पड़े। तृतीय, बाह्य वातावरण के साथ आन्तरिक वातावरण का चित्रण भी आवश्यक है। इसमें पात्रों की सत्ता में विश्वसनीयता का समावेश आ जाता है।

5. शैली – शैली का अर्थ विषय के प्रतिपादन अथवा उपस्थापन का ढंग है। शैली के द्वारा ही उपन्यास में विभिन्न तत्त्वों की योजना होती है। पाश्चात्य विद्वानों ने इस तत्त्व में ही शब्द, अर्थ और उद्देश्य की श्रेष्ठता निहित मानी है। जिस प्रकार बलवान आत्मा के लिए उपयुक्त बलवान शरीर का महत्त्व है, उसी प्रकार उत्कृष्ट विषय के लिए तदनुकूल शैली अपेक्षित है।

शैली का सर्वप्रथम गुण है – प्रसादपूर्णता अर्थात् सहज सुबोधता, द्वितीय गुण है – सरसता अर्थात् रोचकता, तृतीय गुण है – पात्रानुरूपता।

उपन्यासकार का भाषा पर पूरा अधिकार होना चाहिए। उसकी भाषा भावानुसरण में सक्षम होनी चाहिए। कोमल भावों की अभिव्यंजना में, उसमें कोमलता के परिलक्षित और क्रोध आदि उग्र भावों के प्रकाशन में भाषा का उग्र रूप धारण करके आवश्यक प्रभाव को तीव्र बनाना चाहिए। उपन्यास लेखक अपनी भाषा में विशेष व्यापारसूचक शब्दों के प्रयोग से चित्रमयता, मर्मस्पर्शिता आदि काव्य-गुण समाविष्ट कर सकता है। लक्षणा और व्यंजना के प्रयोग से सूक्ष्म भावों को स्थूल साकार रूप प्रदान कर सकता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कहीं-कहीं लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी भाषा की अभिव्यंजकता को बढ़ा देता है संक्षेपत: भाषा व्यावहारिक, सरल, स्वच्छ और सरस होनी चाहिए।

6. उद्देश्य – साहित्य जीवन की व्याख्या है और यह कार्य उपन्यास मनोरंजन के माध्यम से बड़ी सुगमता से करता है। उपन्यास के कथानक की परिस्थितियों अथवा चारित्रिक विशेषताओं में कोई-न-कोई विशिष्ट जीवन दृष्टि पाई जाती है। उपन्यासकार कलाकार होने के अतिरिक्त सामाजिक प्राणी भी होता है। जब वह किसी कथा को उपन्यास के रूप में कहने का निश्चय करता है, तभी उसके मन में कथासूत्र के साथ जीवन दृष्टि मूर्त होने लगती हे, जो उसने अपने सांसारिक जीवन के अनुभवस्वरूप उपलब्ध की है।

2.13 सारांश

कला की दृष्टि से वही उपन्यास श्रेष्ठ है, जिसका लेखक पाठकों पर सफलतापूर्वक यह प्रभाव डाल सके कि उसकी रचना से जिस जीवन-दर्शन का सन्देश मिलता है, वह उसने बाहर से आरोपित नहीं किया है, वरन् वही सामयिक अथवा शाश्वत् सत्य है। इस प्रकार उपन्यासकार को अपने उद्देश्य को कृति का अंग बनाकर ही प्रस्तुत करना चाहिए। एक सफल उपन्यास में इन सभी तत्त्वों का परस्पर समन्वय होना चाहिए, ऐसा होने पर ही उसमें प्रभाव-ऐक्य एवं उद्देश्याभिव्यक्ति आ सकती है।

2.14 अभ्यास प्रश्नावली

1. महाभोज उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
2. दा साहब का जीवन परिचय लिखिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 3 : हिन्दी कहानी

संरचना

3.0 प्रस्तावना

3.1 उद्देश्य

3.2 कहानी का स्वरूप

3.3 कहानी विकास के सोपान

3.3.1 भारतेन्दु युग

3.3.2 प्रसाद युग

3.3.3 प्रेमचन्द युग

3.3.4 प्रेमचन्दोत्तर युग

3.3.5 नई कहानी

3.3.6 नई कहानी की प्रवृत्तियाँ

3.4 सारांश

3.5 अभ्यास प्रश्नावली

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

3.0 प्रस्तावना

अनुभूतियों का सुफल, साहित्य है अथवा यों कहें कि साहित्य अनुभूतियों का आत्मज है। मानव के अन्त:करण की भावपूर्ण अभिव्यक्तियों का वेग कभी भी रोके नहीं रुकता है। इस शक्तिशाली गुण के माध्यम भले ही अलग-अलग हों यथा वाणी द्वारा अथवा आकृतियों द्वारा या संकेतों के द्वारा, जो भी हो किन्तु इतना निश्चित है कि मनुष्य भावाभिव्यक्ति के दौरान अपने विचारों के प्रस्तुतीकरण को यथा संभव आकर्षक और प्रभावपूर्ण बनाये रखना चाहता है। अभिव्यक्ति की माध्यम शैली जैसे-जैसे अपने रूप को परिवर्तित करती है, वैसे-वैसे ही साहित्य के रूप विधानों में भी परिवर्तन होता जाता है और ये सम्पूर्ण परिवर्तन देते हैं हमें नवीन योजनाएँ, नवीन प्रयोजन और नवीन अभिव्यक्ति शैली। कहानी एक ऐसी ही अभिव्यक्ति का संवेदनाप्रवण और प्रभावपूर्ण रूप है। अति प्राचीन युग से गतिमान कथा-कथन की प्रवृत्ति अनेक उतार-चढ़ावों और घुमावदार मार्गों को तय करती हुई आज नवीन कहानी या कथा के रूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत हुई है। यदि हम यों कहें कि कथा कहने की प्रवृत्ति उतनी ही प्राचीन है जितनी कि मानवता, तो इसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होगी। यही प्रमुख कारण है कि जब-जब मानवीय गुणों में बदलाव आया तब-तब कहानी की अभिव्यक्ति का तरीका भी बदला तथा उसकी संवेदनाओं में भी तदनुरूप परिवर्तन हुआ। जीवन के सम्पूर्ण रस, सम्पूर्ण अनुभूतियाँ, वैचारिक द्वन्द्व और सुखद अहसास कहानी के विस्तृत क्षेत्र में समाहित हो जाते हैं। आज कहानी का विस्तार पर्याप्त रूप में हो चुका है और साहित्य जगत् में इसका पूर्णत: मुक्त व्यक्तित्व बन गया है। वैसे तो साहित्य के अति विशाल गगन मण्डल में अनेक विधाओं के सितारे अपनी आभा बिखेर हुए है किन्तु कहानी अन्य सितारों की अपेक्षा अधिक दैदीप्यमान है। समीचीन विधाओं में कहानी ने उपन्यास के समान अपना स्थान ग्रहण कर लिया है किन्तु कहानी को उपन्यास की अनुजा मान लिया जाये तो अधिक उपयुक्त होगा। जहाँ तक कथा साहित्य की व्युत्पत्ति का सवाल है, तो इस सम्बन्ध में निश्चित तथ्य स्पष्ट नहीं किये जा सकते हैं किन्तु यह असंभव भी नहीं है, कठिन अवश्य है क्योंकि कहानी का अस्तित्व अत्यंत प्राचीन है तथा सभी देशों में हर समय विद्यमान रही है। कहानी को अलग-अलग स्थानों व संदर्भों में कई नामों से जाना जाता है, यथा कहानी, गल्प, लघु कथा अथवा आख्यायिका आदि।

3.1 उद्देश्य

यहाँ हम मुन्शी प्रेमचन्द एवं उनकी कहानी गुल्ली डण्डा के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.2 कहानी का स्वरूप

इस तथ्य की पुष्टि करने में संवेदनाओं की एकता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसका वर्ण्य-विषय मानव या संसार की कोई निश्चित घटना, निश्चित विचार निश्चित भावना अथवा निश्चित परिस्थिति होती है अत: इन सबकी अभिव्यक्ति के लिए संवेदनाओं का निश्चित केन्द्रीकरण अवश्य होना चाहिये। यदि संवेदनाओं की एकता नहीं होगी तो वह केवल कमज़ोर ही नहीं पड़ जायेगी अपितु प्रभावहीन भी हो जायेगी और संवेदनाओं का एकीकरण प्रभावों की अन्विति में ही संभव है।

जब संवेदना कथाकार की कला से इतनी ऊर्जस्वी हो जाती है कि वह आसानी से सहृदय के मन में आक्रान्त भाव उत्पन्न कर उसे भौतिक जगत् से उठाकर कथा जगत् का स्वामी बना दे तभी हम उसे प्रभावान्विति कह सकते हैं। जिस कहानी में यह गुण जितना आवेगपूर्ण होगा, कहानी उतनी ही उत्तम गुणों से ओत-प्रोत होगी। कहानी चाहे किसी भी प्रकार की क्यों न हो, उसमें किसी-न-किसी सत्य की प्रतिष्ठा अवश्य की जाती है और कोई-न-कोई संवेदना निश्चित रूप से प्रस्तुत की जाती है। इन सबके अभाव में कहानी में न तो गुणवत्ता का ही प्रभाव होगा और न प्राणवत्ता का समावेश होगा और ये ही कहानी के वे तत्त्व हैं जिनके द्वारा उसे स्तरीय साहित्य निधि बनाने में सम्बल प्राप्त होता है। इन्हीं तत्त्वों के साथ इसमें आकर्षण और रोचकता का समावेश किया जाता है। इसके अतिरिक्त चरित्र सृष्टि का भी कहानी में महत्त्व है क्योंकि चरित्र चित्रण इसमें प्राण फूकने वाला तत्त्व है।

हम यह कह सकते हैं कि आकार की लघुता, संवेदनाओं की एकता, किसी-न-किसी सत्य की प्रतिष्ठा, प्रभावान्विति, आकर्षण क्षमता, रोचकता, चरित्र सृष्टि का सौन्दर्य और संवादों की मार्मिकता कहानी में सक्रीयता उत्पन्न करते हैं और इन्हीं से यह प्रभावी और आकर्षण युक्त बनती हुई पाठकों की चेतना का अंग बन जाती है।

3.3 कहानी विकास के सोपान

आखेट अवस्था में मानव ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का चाहे कोई भी माध्यम अपनाया हो, किन्तु निश्चित रूप से उसकी पृष्ठभूमि में कोई-न-कोई कहानी अवश्य रही होगी और निश्चित रूप से उस पृष्ठभूमि के निर्माण में किसी सत्य की या घटना-क्रम की अनुभूति भी होगी क्योंकि सत्य या किसी घटना-क्रम के अभाव में मानव स्वभाव पृष्ठभूमि कम से कम उस युग में तो नहीं बना सकता और यदि पृष्ठभूमि ही नहीं होगी तो अभिव्यक्ति का मुद्दा भी नहीं होगा। सभ्यता का विकास, कहानी की कथन प्रणालियों का विकास रहा है। असंख्य वर्षों की अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त इसकी कथा-प्रवृत्ति और इस कला की विशेषताएँ अद्वितीय रही हैं। वैदिक संस्कृत, संस्कृत का कला कौशल क्रमश: अपने बीजरूप में उत्पन्न हुआ और विकसित होकर प्रवर्धित होता हुआ अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर फलीभूत हुआ। यही कारण है कि आज भी भारतीय साहित्य के प्रतिनिधि और आधुनिकतम रूप हिन्दी साहित्य में कहानी कला की व्युत्पत्ति और विकास के अध्ययन के साथ हमारी नज़र उस प्राचीन कथा साहित्य की ओर जाती है। वैसे नि:संदेह हिन्दी कहानी आधुनिक युग की देन है।

वैसे तो हिन्दी कहानी का विकास क्रम का तथ्य अनेकानेक विवादों से घिरा हुआ है। फिर भी हम कह सकते हैं कि इंशा अल्लाखाँ द्वारा विरचित 'रानी केतकी की कहानी' तथा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की 'राजा भोज का सपना' उल्लेखनीय प्रारंभिक कहानियाँ हैं। कई अंग्रेजी कहानियों का अनुवाद भी हिन्दी भाषा में किया गया है।

3.3.1 भारतेन्दु युग

हिन्दी के स्वरूप 'कथा-साहित्य' का विकास बाबू भारतेन्दु के आगमन के साथ माना गया है। इसी युग में कथा साहित्य का समुचित रूप हमारे सामने आया। इस काल के विख्यात कहानी लेखक गिरिजा कुमार घोष और किशोरीलाल गोस्वामी हैं। माना कि इंशा अल्लाखाँ द्वारा विरचित 'केतकी की कहानी' प्रारम्भिक कहानियों में से एक है किन्तु जिसे हम आधुनिक अर्थ में कहानी कहते हैं, उसका आरम्भ बीसवीं सदी के दूसरे दशक से होता है। मनोरंजन प्रधान कहानी 'रानी केतकी की कहानी' ने इस विधा को नाम 'कहानी' दिया। इस नाम को पाने से पहले कथा, आख्यायिका, आख्यान, उपाख्यान, बीज, गपाष्टक, नवन्यास आदि कई नामों के रूप भी धारण करने पड़े।

19वीं सदी के प्रारम्भ की कहानियों में मनोरंजन तो बहुत कम था किन्तु साथ-साथ आदर्श, उपदेश, सुधार आदि पर अधिक बल दिया जाता था। सदी के उत्तरार्द्ध में भी इस दिशा में सामान्य प्रयत्न ही हुए। नाटक तो लिखे गये किन्तु कहानियाँ नहीं लिखी गई और यदि कुछ लिखी भी गई तो उनमें समय की दृष्टि का बदलाव अवश्य दिखाई देता है। वे अपने मूल रूप में व्यंग्य व निबन्ध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

ही मानी गई हैं परन्तु इनको कहानी इसीलिये कहा जाता है क्योंकि इनका प्रयोग कहानी रूप में ही किया जाने लगा। किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' कहानी भी सरस्वती के प्रकाश के साथ तपी जिसे कुछ विद्वानों ने हिन्दी की प्रथम कहानी माना है। परन्तु वास्तव में देखा जाये तो वह मौलिकता की सीमा में नहीं आती है, क्योंकि शेक्सपीयर के 'टेम्पेस्ट' का प्रभाव है।

संवत् 1960 में आचार्य शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' प्रकाशित हुई किन्तु भारी भाषा से युक्त होने के कारण श्रेष्ठ पद प्राप्त नहीं कर सकी। इस प्रथम चरण की महत्त्वपूर्ण कहानी बंग महिला की 'दलाई वाला' ने विशेष ख्याति प्राप्त की। संवत् 1966 में वृन्दावन लाल वर्मा की 'राखीबन्द भाई' सरस्वती में प्रकाशित हुई। वैसे प्रथम चरण कहानी का प्रयोग काल था। इस युग में बंगला और अंग्रेजी कहानियों का भी पर्याप्त हिन्दी रूपान्तरण हुआ।

3.3.2 प्रसाद युग

महान् रचनाकार और बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद ने छोटी कहानियों में इस प्रकार प्राण प्रतिष्ठा की कि उनके सम्पर्क व स्पर्श से कहानी कला चरम-उत्कर्ष पर पहुँची। प्रसाद द्वारा रचित 'आकाश दीप', 'पुरस्कार', 'प्रतिध्वनि', 'चित्र मन्दिर' और 'मधुआ' आदि कहानियों ने एक नवीन युग का श्रीगणेश किया और इस युग में कहानियाँ कुछ विकसित होने लगी। इस काल की कहानियों के आते-आते 'सरस्वती' पत्रिका की सीमा इन्हें बाँध नहीं सकी और अन्य पत्र-पत्रिकाओं की जरूरत पड़ने लगी। संवत् 1966 प्रसाद की प्रेरणा से अम्बिका प्रसाद ने 'इन्दु' मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। उसी पत्र के माध्यम से प्रसाद का व्यक्तित्व और कृतित्व हमारे सामने आया और इन्हीं के द्वारा रचित कहानी 'ग्राम' और 'चन्दा' नामक कहानियों ने सन् 1910 में 'इन्दु' पत्रिका को सुशोभित किया और इन्हीं कहानियों के साथ हिन्दी की मौलिक कहानी-धारा का वास्तविक शुभारम्भ हुआ। वैसे जयशंकर प्रसाद मूलत: कवि थे इसी वजह से उनकी कहानियाँ भी प्राय: भावप्रधान और मर्मस्पर्शी बनी। उनकी कुछ कहानियाँ गद्य-गीत सी प्रतीत होती हैं और उनमें बाह्य जगत् की उत्पेक्षा अन्तर्जगत का रूप अपनी स्पष्ट झलक देता है।

कहानी मासिक पत्रिका 'इन्दु' के माध्यम से अन्य कहानियाँ भी सामने आईं, जिनमें विश्वम्भरनाथ जिज्जा, राजा राधिका रमणसिंह उल्लेखनीय हैं। जे.पी. श्रीवास्तव की प्रथम कहानी 'पिकनिक' संवत् 1968 में प्रकाशित हुई। यह हास्यरस को साकार करने वाली प्रथम कहानी थी। इसके साथ विश्वम्भर दयाल कौशिक ने इस क्षेत्र में पदार्पण किया। उनकी कहानियाँ ग्रामीण और शहरी जीवन से सम्बन्ध रखती हैं तथा प्रथम कहानी 'रक्षाबन्धन' 'इन्दु' पत्रिका में प्रकाशित हुई। गुलेरी द्वारा रचित कहानी 'सुखमय-जीवन' और 'बहू का काटा' प्रसिद्ध हुई।

3.3.3 प्रेमचन्द युग

प्रेमचन्द से पूर्व हिन्दी की कहानियाँ मनोरंजन प्रधान, जासूसी या तिलस्मी थीं। कहानी में उतार-चढाव तो पहले भी आते थे किन्तु पात्र उससे अछूते और पूर्णत: निर्विकल्प रह जाते थे। जो परिस्थितियाँ हैरत-अंगेज दिखाई पड़ती थीं, जो घटनाएँ मनुष्य के हृदय को हिला देने वाली या तोड़ देने वाली होती थी वे पात्रों के मानस पर वैसे प्रभाव डाल ही नहीं पाती थी। प्रेमचन्द ने मनुष्य के दु:ख-दर्द, रोने और हंसी-खुशी में उल्लसित होने वाले पात्र हिन्दी कहानी को दिये। वे सामाजिक संघर्ष से जूझने वाले, सत्य व ईमानदारी के पथ पर अडिग रहने वाले पात्रों के हृदय को भी आसानी से पहचान जाते थे। प्रेमचन्द की कहानियाँ सदैव आदर्शवाद से ओत-प्रोत रही जिससे उनमें घटनाओं का स्वाभाविक विकास भी कहीं-कहीं बाधित हुआ। प्रसंगों को अनावश्यक विस्तार मिला और चरित्रों में अनेक परिवर्तन हुए लेकिन उनमें जीवन की वास्तविकता का चित्रण निरन्तर बढ़ता गया। प्रेमचन्द की कहानियों का विषय गरीबों, दलितों की समस्याएँ रहा। इनकी कहानी में मानव जीवन की गहराइयाँ दिखाई देती हैं। 'गुल्ली-डंडा' में बाल मनोविज्ञान का अच्छा उपयोग हुआ है और 'कफन' में जीवन की जटिलता की निपुणतम अभिव्यक्ति हुई है। मुंशी प्रेमचन्द की हर कहानी में वर्णन की असाधारण क्षमता, वातावरण, चित्रण का कौशल, मानवीय सहानुभूति, भाषा की सादगी, सहजता और सरसता जैसे गुण विद्यमान हैं।

प्रेमचन्द की प्रथम हिन्दी कहानी 'पंच-परमेश्वर' है जो कि सरस्वती में प्रकाशित हुई। आगे चलकर मुंशी जी ने हिन्दी कहानियों में जान डाल दी। उन्होंने सरल और मुहावरेदार भाषा के बड़े ही मार्मिक और मनोवैज्ञानिक चित्रांकन किये हैं। चूँकि प्रेमचन्द स्वयं एक ग्रामीण अंचल में जन्मे और पले, बड़े हुए अत: उनकी कहानी में ग्राम-जीवन के अनूठे चित्र हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य शोषकों के विरूद्ध मुखरित, शोषित की उपेक्षा-पूर्ण वाणी है। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'आत्माराम', 'बूढ़ी काकी' प्रसिद्ध कहानी हैं। अछूतोद्धार, हरिजनोद्धार की दृष्टि से 'दूध का दाम' जैसी कहानी मानवीय बोध कराने वाली है। चण्डी प्रसाद हृदयेश की कहानियाँ आदर्शवादी और वर्णन प्रधान हैं। जिनका कहानी संग्रह 'नन्दन-निकुंज' है जो गद्य काव्य के काफी निकट हैं। उग्र कहानी के लेखक 'उग्र' जिनका कहानी संग्रह 'चिनगारियाँ', 'रेशमी', 'इन्द्रधनुष' है। 'दुखवारे कासू कहूँ मोरी सजनी' एक कलात्मक कहानी है जिसे शास्त्रीजी से प्राप्त की है जिसकी लेखन शैली अत्यन्त सजीव और आकर्षक है। 'ककड़ी की क़ीमत' और 'खूनी' भी इनकी प्रसिद्ध कहानी है।

3.3.4 प्रेमचन्दोत्तर युग

इस युग में मुख्य रूप से दो प्रकार की धाराएँ उल्लेखित हैं – मनोविश्लेषणवादी कहानी और मार्क्सवादी कहानी। जैनेन्द्र और अज्ञेय इनमें प्रथम धारा के प्रतिनिधि हैं और यशपाल द्वितीय धारा के। आलोचकों का मत है कि 1931 में अज्ञेय की 'गैंग्रीन' कहानी के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी कहानी में प्रेमचन्द और प्रसाद की जमीन से हटकर अलग कहानी का उदय हुआ। मनोविश्लेषण प्रधान होने के कारण जैनेन्द्र की कहानी सामाजिक जीवन से अधिक व्यक्ति मन की कहानी है। उन्होंने मानव के अन्तर्संसार को झांककर कहानी लिखी इसीलिये उनकी कहानियों में घात-प्रतिघात नहीं बल्कि वैयक्तिक मन की हिलोरें अधिक मिलती हैं। कहीं-कहीं यौन कुण्ठा भी परिलक्षित होती है जिनमें 'पत्नी', 'इनाम' कहानियाँ प्रमुख रही हैं। साथ ही इनकी कहानियों में कहीं गाँधीवादी और कहीं दार्शनिकता का सीधा हस्तक्षेप मिलता है जिससे रचनाओं में बौद्धिक जटिलता और नीरसता भी आ गई है। जैनेन्द्र की कहानी में हमारा ध्यान आकर्षित होने का एक कारण अपनी भाषागत तरो-ताजगी और छोटी वाक्य रचना है तथा व्याकरण की अवहेलना भी की गई है। अज्ञेय की कहानी में जहाँ एक ओर व्यक्ति मन की अभिव्यक्ति है वहीं दूसरी ओर व्यक्ति स्वातंत्र्य के लिए छटपटाहट भी दिखाई देती है। व्यंग्यों का पैनापन भी है, प्रकृति के प्रति आत्मीयता का भाव भी है और उसकी उपेक्षा का दर्द भी है। उनकी प्रसिद्ध रचना 'चिड़ियाघर' में सभ्यता की विषमता और प्रकृति के प्रति मानव क्रूरता का गहन चित्रांकन हुआ है। पशु-प्रकृति की गहरी समझ प्रेमचन्द में भी मिलती है। इनकी भाषा अपनी खास ताजगी, तराश-वृत्ति, शब्द प्रयोगों में सतर्कता और अभिजात्य की वजह से हिन्दी गद्य को एक नवीनतम संस्कार प्रदान करती है। नवीन कहानी लेखकों में यशपाल को भी नहीं भुलाया जा सकता है जो एक क्रांतिकारी लेखक हैं।

प्राचीन धर्मों की अन्धानुकरण वाली प्रवृति से यशपाल का विरोध रहा है। कटु आलोचक के रूप में पौराणिक रीति-रिवाजों को इन्होंने काफी नजदीक से देखकर उनकी वास्तविकता को जानने की इन्होंने कोशिश की है। इनकी भाषाशैली व्यंग्य-पूर्ण है। 'अभिशप्त', 'फूलों का कुर्ता', 'उत्तमी की माँ', 'तर्क का तूफान', 'भस्मावृत्त चिनगारी', 'तुमने क्यों कहा था कि मैं सुन्दर हूँ', 'बिबी कहती है, मेरा चेहरा रौबीला है' आदि कहानियाँ प्रसिद्ध रही हैं। इनके अतिरिक्त मोहनलाल महतो 'वियोगी', विष्णु प्रभाकर, देवेन्द्र सत्यार्थी, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, वाचस्पति पाठक, पहाड़ी और हंसराज रहबर व सद्गुरु शरण अवस्थी आदि की कहानियाँ भी इस युग की प्रसिद्ध रही हैं।

3.3.5 नई कहानी

आजादी के बाद नई कहानी का शुभारम्भ होता है जो किसी विचारधारा अथवा विषय विशेष की कहानी नहीं बल्कि उनमें जीवन के अनेक क्षेत्र समाहित हैं जिनके रचनाकारों के रूप में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर आदि प्रमुख रहे हैं जिन्होंने 'बिरादरी बाहर' और 'कब्जे का आदमी' प्रमुख हैं। मोहन राकेश की कहानियों में विभाजन का दर्द दिखाई देता है।

नए कहानीकारों में भीष्म साहनी की रचनाएँ भी अपना एक सम्माननीय स्थान रखती हैं जिनमें राजनैतिक और सामाजिक विघटन को गहन कलात्मक संयम के साथ अभिव्यक्ति दी है। 'चीफ की दावत' एक ऐसी ही रचना है जिसमें व्यक्ति की दृष्टि में आये परिवर्तन को स्पष्ट किया गया है और एक माँ भी स्वार्थपूर्ति का साधन मात्र बन जाती है। 'झुटपुटा' कहानी न केवल साम्प्रदायिक उन्माद को व्यक्त किया गया है अपितु मानवीयता की पहचान को भी व्यक्त करने वाली कहानी है। 'जिन्दगी और जोंक' के लेखक अमरकान्त का नाम भी इसी प्रकार प्रभावशाली रहा है।

उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि की कहानियाँ नारी जीवन के सम्पूर्ण अछूते पहलुओं को उद्घाटित ही नहीं अपितु आन्तरिक विघटन को भी प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती हैं। मन्नू भण्डारी द्वारा रचित 'अकेली'। प्रियंवदा की 'वापसी'

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

महत्त्वपूर्ण कहानियाँ हैं। मन्नू भण्डारी ने अपनी रचना 'रानी माँ का चबूतरा' में गाँव की एक तीखे स्वभाव की नारी के जीवन का जीवन्त दस्तावेज प्रस्तुत किया है। कृष्णा सोबती की कहानियाँ सर्वथा एक नया मुहावरा तलाश करती है।

वैसे नई कहानियाँ कुछ विशेष संदर्भों की तलाश में जी रही हैं और वे अपने इस लक्ष्य में काफी कुछ सफल भी हो चुकी हैं। इतना ही नहीं, साहित्य के उभरते हुए नए प्रतिमानों के संदर्भ में अनेक आलोचक भी 'आत्मालोचक' कहलाने लगे। वस्तुतः, आजादी के बाद कथाकार के समाने जो नई दुनियाँ आई है, उसमें घृणा, प्यार, ईर्ष्या, स्वार्थ और आत्मोन्मुखता तो है ही, वह अपने परिवेश में रहकर अपने से अलग टूटी हुई और संत्रस्त भी प्रतीत होती है। नया कथाकार उसे देखता है और आकार दे देता है। उसको स्वयं को यह पता नहीं कि जिस कुरुप, घिनौनी और चिपचिपी सृष्टि का जिम्मेदार उसे ठहराया जाता है, उसमें उसकी जिम्मेदारी कितनी है। आजादी के बाद समाज की जो नई तस्वीर बनी है वह उपेक्षित नहीं है। समाज की नई व्यवस्था, नया उल्लास, नई परेशानियाँ, राजनैतिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक परिवर्तन, प्रजातंत्र का बुखार और उससे पीड़ित आदमी की धीरे-धीरे कम होती हुई नब्ज, चमक-दमक, शोर-शराब आदि को नए कलाकारों ने कुछ सूत्र दिये हैं। भारतीय संस्कृति की आड में छुपा हुआ वेस्टर्न पेटर्न और धर्म के साये में या विवशता की दीवार के पीछे कितनी ही कुमारियों के यौवन की दखलन्दाजी तथा नारी-पुरुष के बनते बिगड़ते विविध पक्षीय सम्बन्धों को देखकर कोई भी प्रतिभावान कलाकार अपनी अनुभूति का गला नहीं घोंट सकता है। इन्हीं सब पक्षों का दस्तावेज नई कहानियों में हमें प्राप्त हो जाता है।

नई कहानिकारों में – धर्मवीर भारती, मोहन राकेश, नरेश मेहता, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त, मार्कण्डेय, रेणु, बक्शी, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, शिवानी, शैलेश मटियानी, भीष्म साहनी आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। इनके द्वारा रचित कहानियों के बावजूद अधिक चर्चा आन्दोलनों की रही है जिसका कारण पत्रिकाएँ और समूह रहे हैं। आजादी के सातवें दशक के आते-आते नई कहानियों का रूप बिखरने लगा और जो आन्दोलन रह गया वह संकीर्ण दृष्टि वाला 'अकहानी' आन्दोलन सामने आया। इन कहानियों के अन्तर्गत रमेश बक्शी, मणिमधुकर, जगदीश चतुर्वेदी, मोना गुहाटी, मणिका मोहिनी, दूधनाथ, गंगाप्रसाद विमल, सुदर्शन चौपड़ा, सुधा अरोड़ा आदि ने विकृत व बीमार मनःस्थितियों को और यौन सम्बन्धों की गन्दगी को एक रूप दिया। यद्यपि इस दौर में भी मानवीय संवेदना से युक्त कहानियों का लेखन जारी है और अकहानी के दौर में ही महीपसिंह, धर्मेन्द्र गुप्त, मनहर चौहान आदि ने सचेतन कहानी आन्दोलन चलाया और अकहानी का विरोध किया। 1968 में अमृत राय ने सम्पादकियों के माध्यम से 'सहज कहानी' का नारा दिया। 1972 में समान्तर कहानियों का सूत्रपात हुआ, जिसमें 'ऐयाशप्रेतों का विद्रोह' शीर्षक चर्चित लेखभाषा अकहानी का विरोध कमलेश्वर ने किया।

सातवें दशक के समाप्त होने के साथ-साथ 'जनबादी कहानी' सामने आने लगी। यह कोई आन्दोलन नहीं था, बल्कि जीवन दृष्टि थी और इसके रचनाकारों ने अपना सम्बन्ध प्रेमचन्द और यशपाल से जोड़ा। लगभग सभी समकालीन कथाकार इसी धारा से सम्बन्ध रखने लग गये। नई कहानी वे कहानी हैं, जिन्होंने हिन्दी कहानी को एक नई दिशा दी तथा भाषा को नया रूप प्रदान किया गया, साथ ही चरित्रों को नए परिवेश में परिवर्तन दिया।

3.3.6 नई कहानी की प्रवृत्तियाँ

1. परिवर्तित परिवेश के यथार्थ को देखते हुए दृश्य और चित्रण की प्रवृत्ति कुछ नई कहानियों में परिलक्षित होती है, यथा – भारती की 'यह मेरे लिये नहीं', मोहन राकेश की 'मंदी जंगल', 'श्रीमती मास्टन', 'वह मर्द थी' नरेश मेहता की 'मरने वाले का नाम' यादव की 'ऊपर उठता हुआ मकान' और 'कमलेश्वर' आदि कहानियाँ।

2. मार्कण्डेय, अमरकान्त, भीष्म साहनी और श्रीमती विजय चौहान की रचनाओं में सामाजिक यथार्थवाद का चित्रण देखने को मिलता है। इनकी कहानियाँ समाज के परिवर्तित प्रत्येक पहलू पर अपनी दृष्टि डालती हैं और जीवन मूल्यों का निर्धारण करती है।

3. नई कहानियों में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद के हमें दर्शन होते हैं जिनमें मानव की सम्पूर्ण भावनाओं के बदलते हुए रूप और उनकी गूढ़ता का स्पष्टीकरण होता है, ऐसी रचनाओं में भारती की 'सावित्री नं. 2', कमलेश्वर की 'तलाश', ज्ञान रंजन की 'शेष होते हुए' प्रमुख हैं।

4. कुछ कहानियों में यथार्थवादी प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है। मोहन राकेश द्वारा रचित 'इन्सान के खण्डहर', 'चाँद के टुटे हुए लोग' भारती की रचना है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)

5. नई कहानी अस्तित्ववाद को भी स्पष्ट करती हैं। जिनमें नरेश की 'अनबीता व्यतीत', कमलेश्वर की 'कई एक अकेले' राकेश की 'पराये शहर में', निर्मल वर्मा की 'शेष होते हुए' आदि प्रमुख हैं।

6. सामाजिक चेतना और सम्बन्धों को लिखने वालों में – यादव निर्मल, शिवप्रकाश सिंह, राजकुमार और भीष्म साहनी का नाम लिया जाता है।

7. वैयक्तिक सम्बन्धों का चित्रण अथवा सम्बन्धों के टूटने का मर्म भी नई कहानी की विशेषता है। जहाँ इन्सान हर कदम अलग छूटता चला जाता है और अजनबी बन जाता है, इस प्रकार के भाव भी नई कहानी में देखने को मिल जाते हैं।

अनेक कहानिया स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को लेकर लिखी गई हैं जिनमें स्त्रियों व पुरुषों के शारीरिक, मानसिक व आदर्श आदि सम्बन्धों की पुष्टि की गई है। इसके साथ पुरुष की घुटन, टूटन, विश्वास घात, आशंका आदि को भी वाणी मिलती है।

8. शिल्प की दृष्टि से नई कहानी में सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, बिम्ब विधायकता और प्रेषणीयता आदि गुणों का अच्छा विकास हुआ है। भाषा की सार्वजनिकता हिन्दी की नई कहानी में उल्लेखनीय उपलब्धि है।

कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी की नई कहानी अपनी विकास-यात्रा में काफी आगे निकली है और निरंतर आगे बढ़ती जा रही है।

हमारे अपने प्रांत राजस्थान में कथा-कथन की बहुत पुरानी परम्परा रही है। यहाँ का बात साहित्य और लोक साहित्य बहुत पुराना है और समृद्ध है। आधुनिक कहानी की प्रथम क्लासिक कहानी 'उसने कहा था' भी इसी प्रांत के पंडित चन्द्रधर गुलेरी ने प्रस्तुत की है। इनके बाद कथाकारों में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भाव भूमि के प्रमुख कथाकार ओंकारनाथ दिनकर, भावुकता पूर्ण रचनाकार शम्भू दयाल सक्सेना, माधव प्रसाद शर्मा, विष्णु अम्बालाल जोशी महत्त्वपूर्ण हैं। पंडित जनार्दन राय नागर भी इसी काल के खास रचनाकार हैं।

3.4 सारांश

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारतीय स्तर पर मान्यता प्राप्त रांगेय राघव, मन्नू भण्डारी, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' प्रमुख हैं। चन्द्र ने अपनी कहानी में राजस्थानी जीवन के विभिन्न आयामों, स्वरों और रंगों को अच्छी तरह से पकड़ा है। इन्हीं के समकालीन परदेसी सुमेरसिंह उईया, बिशन सिन्हा आदि ने अनेक कहानियाँ दीं। साठ के दशक के बाद राजस्थान में सबसे अधिक उभरता कहानीकार मणि मधुकर है। अनेक विधाओं में सृजनरत केन्द्रीय अकादमी से काव्य-संग्रह पर पुरस्कृत मधुकर में राजस्थानी आंचलित जीवन को भी चित्रित किया और समकालीन जीवन की विसंगतियों को भी उभारा। अपनी खास भाषाशैली के लिये चर्चित आतमशाह खान ने निम्न वर्ग की पीड़ा को मुखरित करने में महत्त्वपूर्ण सफलता पाई है। अपनी प्रखर वर्गीय चेतना, सामाजिक, राजनैतिक अन्त:विरोधियों की गहन समझ और जुझारुपन की पक्षधरता ने उनकी कहानियों को आज के पाठक के लिये अत्यन्त प्रासंगिक बना दिया जो गहराई तक असर करने वाली हैं। भारद्वाज की कहानियाँ ग्रामीण जीवन की गहन पहचान प्रदान करती है।

कहानी में यथार्थ रूप 1960 के बाद की कहानियों में मिलता है। आन्दोलनों के रूप में हम यदि साठोत्तर कहानियों के विकास को समझें तो स्पष्ट होता है कि अकहानी, अचेतन कहानी और समानान्तर कहानी क्रमश: साथ-साथ ही विकसित हुई हैं।

3.5 अभ्यास प्रश्नावली

हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इकाई- 4 : प्रेमचन्द

संरचना

4.0 प्रस्तावना

4.1 उद्देश्य

4.2 परिचय

4.3 गुल्ली डण्डा

4.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

4.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

4.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

4.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

4.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

4.6 सारांश

4.7 अभ्यास प्रश्नावली

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

4.0 प्रस्तावना

हिन्दी कहानी साहित्य के विशाल मैदान में प्रगतिशील चेतना, मानवतावादी चिन्तन की प्रतिमूर्ति, कलम के सिपाही प्रेमचन्द को कौन नहीं जानता है? प्रेमचन्द हिन्दी के सबसे समर्थ कहानीकार हैं। आपका जन्म 1880 ई. में वाराणसी जिले के 'लमही' नामक गाँव में हुआ। वैसे तो संसार में अनगिनत लोग ऐसे हैं जो आर्थिक अभाव के कारण अनेक परेशानियों से त्रस्त हैं किन्तु यह त्रासदी उनके जीवन की राहों में बहुत बड़ा व्यवधान बन जाती है जिसे समाप्त करना जन-साधारण के लिए कठिन होता है। निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे प्रेमचन्द का सम्पूर्ण जीवन भी आर्थिक अभावों से त्रस्त रहा है। बचपन में ही प्रेमचन्द के पिता का देहावसान हो गया था परिणामत: सम्पूर्ण पारिवारिक दायित्वों का भारी-भरकम बोझ प्रेमचन्द के नाजुक कंधों पर आ गया। जिम्मेदारियों का निर्वाह समय पर करने के हेतु से उन्होंने अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया और इसी व्यवसाय में अपनी कार्य कुशलता दर्शाते हुए इन्टर कक्षा उत्तीर्ण की, तत्पश्चात बी.ए. परीक्षा देने के साथ-साथ राजनैतिक आन्दोलनों में भी अपनी रुचि दिखाने लगे। उस समय गाँधीजी का असहयोग आन्दोलन पूरे वेग पर था जिसकी बाग-डोर स्वयं गाँधी जी के हाथों में थी। प्रेमचन्द इससे अत्यधिक प्रभावित हुए। राजकीय सेवा से मुक्त होकर स्वतंत्र लेखन कार्य का शुभारम्भ किया। लेखन कार्य में रुचि रखते हुए मुंशीजी ने कथा-साहित्य को समृद्धि प्रदान की। प्रेमचन्द ने पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी उसी दौरान प्रारम्भ किया जिनमें 'माधुरी' 'जागरण' और 'हंस' नामक पत्रिकाएँ प्रमुख रूप से थीं। इनकी रचनाएँ प्रारम्भ में विद्रोह को आमंत्रण करने वाली थी जो उर्दू भाषा में लिखी गई थी। 'सोजे वतन' नामक कहानी संग्रह को राजद्रोहपूर्ण मानकर जब्त कर लिया गया। 1916 ई. में प्रेमचन्द ने हिन्दी में प्रथम कहानी प्रकाशित की जिसका नाम 'पंच-परमेश्वर' था। आगे चलकर लगभग तीन-सौ कहानियाँ 'मान सरोवर' शीर्षक से आठ भागों में प्रकाशित की गई। 1936 ई. में प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के प्राङ्गण से हमेशा-हमेशा के लिए ओझल हो गये और साहित्य में उपन्यास प्रेमियों को 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रय', 'रंगभूमि', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'निर्मला', 'गोदान' जैसी अमर कृतियाँ अपनी यादों के रूप में छोड़ गये।

4.1 उद्देश्य

यहाँ हम मुन्शी प्रेमचन्द एवं उनकी कहानी गुल्ली डण्डा के बारे में जानकारी करेंगे।

4.2 परिचय

हिन्दी कहानी का वास्तविक प्रारम्भ प्रेमचन्द से ही होता है। यद्यपि कहानी लेखन की प्रवृत्ति उन्नीसवीं सदी से प्रारम्भ हो गई थी। इन्शा अल्ला खाँ इस समय के प्रारम्भिक कथाकारों में से थे जिनकी प्रथम कहानी 'रानी केतकी की कहानी' थी किन्तु यह सुनिश्चित है कि हिन्दी के प्रथम वास्तविक कहानीकार प्रेमचन्द ही माने गये हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि 1910 में ही इनकी प्रथम कहानी 'बड़े घर की बेटी' का प्रकाशन हो गया।

प्रेमचन्द से पहले हिन्दी कहानी मनोरंजन प्रधान जासूसी या तिलस्मी थी। निरे आदर्श का लगभग अविश्वसनीय आलेख, जिनमें जीवित पात्रों का समावेश कराने और सामाजिक परिवेश में सम्प्रक्त कराने का शुभ कार्य मुंशी प्रेमचन्द ने ही किया। जो कहानी वास्तविकता से कहीं परे थी और जो परिस्थितियाँ हैरत-अंगेज दिखाई पड़ती थी, जो घटनाएँ मनुष्य के अन्त:करण को हिला देने वाली थी जिनका पात्रों के मानस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था उन्हीं कहानियों में प्रेमचन्द ने परिवर्तन का रूप दिया और मानवता से ओत-प्रोत, भावानुकूल पात्र हिन्दी कहानी को मुंशीजी ने दिये। प्रेमचन्द ने सामाजिक संघर्ष में जूझने वाले, सत्य व ईमानदारी के पथ पर अडिग रहने वाले पात्रों के मन को भी टटोला और कहानियों में उन्हें उतरने की प्रेरणा दी।

प्रेमचन्द की प्रारंभिक कहानियाँ आदर्शवाद से ओत-प्रोत रही जिसकी वजह से उनमें घटनाओं का स्वाभाविक विकास भी कहीं-कहीं बाधित हुआ है। दीन-हीन-दलित-निर्बल वर्ग का जीवन और उनकी समस्याएँ प्रेमचन्द की कहानी की विषय-वस्तु बनी। उनकी कहानियों में क्रमश: जीवन की जटिलता और मानव मन की उलझनें गहरी होती चली गई। गुल्ली-डण्डा में बाल मनोयोग का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। 'कफन' में जीवन की जटिलता की निपुणता का समावेश है।

प्रेमचन्द आज लगभग एक शताब्दी बाद भी हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रासंगिक और अर्थपूर्ण बने हुए हैं। इनकी कहानी कला क्रमश: परिमार्जित होकर प्रौढ़ता की ओर अग्रसर हुई है। प्रारम्भिक कहानियाँ आदर्शोन्मुख और यथार्थ से युक्त हैं।

भारतीय ग्राम्य जीवन के संश्लिष्ट यथार्थ को प्रेमचन्द ने प्रमुखता से अपनी कहानियों में स्थान दिया है। समाज सुधार राष्ट्रीय जागरण और पारिवारिक समस्याओं ने भी प्रेमचन्द को काफी उद्वेलित किया है। इसमें किसी प्रकार की दो राय नहीं है कि हिन्दी कहानी ने सतत विकास कर जिस उत्कर्ष को पाया है उस विकास यात्रा का शुभारम्भ मुंशी प्रेमचन्द से ही होता है।

4.3 गुल्ली डण्डा

मानव जीवन अपने आप में अति सुन्दर चित्रों का एक एलबम है, जिसे जितना देखा जाये उतना ही अतीत के पलों में नया पन आता है—नयापन चाहे सुख की शीतलता से युक्त हो या दु:ख की तपन देने वाला, जो भी हो, अतीत का आगमन अन्त:करण को सच्चाई से साक्षात्कार कराने वाला ही होता है। समय का परिवर्तन और हालातों का दौर चाहे यादों को हल्का धुँधला कर दे, किन्तु मन की तरंगों के वेग को कम नहीं कर सकता है। यह भी अपने आप में एक सच्चाई है कि समय के इस बदलते हुए परिवेश में बाल वय की सुनहरी यादों के मोहक पल जहाँ एक ओर सारे भेद भावों को मिटा देने में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सक्षम होते हैं वहीं दूसरी ओर पद और प्रतिष्ठा मनुष्य और मनुष्य के बीच नैसर्गिक सम्बन्धों को परास्त और समाप्त कर देते हैं।

प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली-डण्डा' बहुत कौशल के साथ इस सच्चाई को चरितार्थ करती है कि बचपन का मीत संसार के सारे असमानता के अन्तरालों को पाट कर समानता के समतल मैदान में मैत्री के निर्मल जल को अबाध रूप से प्रवाहित करने वाला होता है किन्तु समय के परिवर्तन के साथ उच्च पद, जनप्रतिष्ठा और शोहरत पुन: मनुष्य और मनुष्य के बीच वर्गों की दीवार खड़ी कर देती है और एक-दूसरे के नैसर्गिक सम्बन्धों को समाप्त कर देती है। कथा नायक और गया चमार दोनों बाल सखा हैं, बचपन में दोनों एक साथ गुल्ली डण्डा खेलते हैं। दोनों में न किसी प्रकार का जाति भेद होता है और न वर्ग भेद। बचपन में एक बार कथा नायक जो कि थानेदार का लड़का होता है वह दाव देने के प्रसंग में गया चमार के हाथों पिट भी जाता है किन्तु इस बात की वह किसी से शिकायत नहीं करता है और उससे भी कुछ नहीं कहता है। बीस वर्ष बाद कथा नायक जो इंजीनियर है उसकी भेंट पुन: गया प्रसाद से हो जाती है। बचपन की स्मृतियों को सजीव करने के लिए कथानायक गया के साथ गुल्ली डण्डा खेलना चाहता है। उसके आग्रह के बाद गया उसके साथ खेलता तो है किन्तु अब उस खेल में बचपन के मीत वाला सुखद आनन्द नहीं होता है। कथानायक और गया के बीच अफसरी एक दीवार है। यही दीवार कहानी की मूल संवेदना है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

''आख़िर मैंने किसी स्वार्थ से ही उसे अमरूद खिलाया होगा। कौन किसी के साथ नि:स्वार्थ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिए ही देते हैं। जब गया ने अमरूद खाया, तो फिर उसे दाँव लेने का क्या अधिकार है। रिश्वत लेकर तो लोग खून पचा जाते हैं। यह मेरा अमरूद यों ही हजम कर जायेगा। अमरूद पैसे के पाँच वाले थे, जो गया के बाप को भी नसीब न होंगे। यह सरासर अन्याय था।''

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'गुल्ली डण्डा' नामक कहानी से अवतरित है जिसे सुप्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द द्वारा प्रस्तुत किया गया है। कथा नायक और गया प्रसाद जो कि क्रमश: थानेदार का लड़का और चमार हैं, दोनों बचपन में एक-दूसरे के साथ गुल्ली-डण्डा खेलते हैं। इसी संदर्भ में एक बार गया कथानायक को दाँव दिये बिना घर जाने से रोक देता है। बिना दाँव दिये घर चले जाने के लक्ष्य से कथानायक उसे अमरूद खिला देता है। इसी संदर्भ में घटना का स्मरण करते हुए वह कहता है कि–

व्याख्या– अच्छे खेलों का अच्छा महत्त्व न्याय पर ही निर्भर करता है। कथानायक का बाल सखा गया प्रसाद खेल के दौरान अपना दाँव लेने की जिद करता है किन्तु नायक बिना दाँव चुकाए अपने घर पर चला जाना चाहता है किन्तु गया उसे जाने नहीं देता है। उस पर नायक कहता है कि, ''मैंने तुम्हें जो कल अमरूद खिलाया वह लौटा दो तो मैं तुम्हारा खेल का दाँव चुका दूँगा।'' इस तरह नायक सोचता है कि न्याय उसके पक्ष में है क्यों कि गया अमरूद उस समय वापस नहीं कर सकता था। इसी बात के चिन्तन में नायक कहता है कि स्वार्थ के कारण ही अमरूद खिलाया गया था क्योंकि बिना किसी स्वार्थ के इस संसार में कोई किसी को कुछ भी नहीं देता है। यहाँ तक कि जो भिक्षा भिखारी को दी जाती है, उसमें भी कोई-न-कोई स्वार्थ अवश्य निहित होता है। पुण्य का स्वार्थ, नाम कमाने का स्वार्थ, सम्मान प्राप्त करने का स्वार्थ उस भिक्षा के बदले में होता ही है। इसलिये कथा नायक कहता है कि मैंने गया को अमरूद इसलिये खिलाया था कि वह मुझे खेल में अधिक परेशान न करे, मैंने अमरूद के रूप में गया को रिश्वत दी थी। शिष्टाचार तो यह कहता है कि रिश्वत देने वाले की हर बात माननी चाहिये। कथा नायक का कहना है कि आजकल तो रिश्वत लेने पर लोग खून भी पचा जाते हैं। कथानायक का यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या गया अमरूद रूपी रिश्वत लेकर भी खेल में मेरे साथ कठोरता का व्यवहार करेगा ? उसे आशंका थी कि अच्छी किस्म का मँहगा अमरूद मैंने उसे खिलाया था जो गया के बाप को भी नसीब नहीं हो सकता है यह कथानायक के साथ अन्याय है कि अमरूद खाने के बाद भी गया उसके साथ कठोर व्यवहार करता हुआ बिना दाँव दिये घर जाने से रोक रहा है।

विशेष– 1. प्रस्तुत अवतरण में भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया गया है।

2. यद्यपि कथानायक के बचपन की रोचक घटना है तथापि वर्तमान काल में प्रचलित स्वार्थ भावना का चित्रण है।

(2)

''मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डटा हुआ था। मैं हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था, वह मुझे जाने न देता था। मैंने उसे गाली दी, उसने मुझसे कड़ी गाली ही नहीं दी, बल्कि चाँटा भी जमा दिया। मैंने उसे दाँत काट लिया। उसने मेरी पीठ पर डण्डा जमा दिया। मैं रोने लगा। गया मेरे इस अस्त्र का मुक़ाबला न कर सका, भागा। मैंने तुरन्त आँसू पौंछ डाले, डण्डे की चोट भूल गया और हँसता हुआ घर आ पहुँचा। मैं थानेदार का लड़का, एक नीच जाति के लड़के के हाथों पिट गया। यह मुझे उस समय भी अपमानजनक मालुम हुआ, लेकिन घर में किसी से शिकायत नहीं की।''

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गुल्ली डण्डा' नामक कहानी से अवतरित है जिसमें लेखक ने स्पष्ट किया है कि बचपन में गया कथा नायक का ऐसा साथी होता है जो खेल में बहुत चालाक और होशियार है, वह सत्य के आधार पर न्यायप्रिय होता है किन्तु कथानायक रिश्वत देकर न्याय प्राप्त करना चाहता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्याख्या – कथानायक और गया दोनों बचपन के मित्र हैं और दोनों एक साथ गुल्ली डण्डा का खेल खेलते हैं। दोनों ही इस खेल के शौकिन हैं, किन्तु गया इस खेल में न केवल शौकीन ही है, अपितु निपुण भी है। एक दिन गया अपने मित्र को इस खेल में इतना पिदाता है कि वह परेशान हो जाता है और हार कर बिना दॉव दिये हुए ही घर चला जाना चाहता है किन्तु गया उसे बिना दॉव दिये घर पर नहीं जाने देता है। कथानायक ने एक दिन पहले गया को अच्छी किस्म का कीमती अमरूद खिला दिया था और गया उसे मित्र द्वारा दिया जाने वाला प्रेम का तोहफा समझ कर खा लेता है किन्तु नायक के मन में उस अमरूद के साथ अपना स्वार्थ निहित रहता है कि इस अमरूद के बदले में गया उसे खेल में अधिक परेशान नहीं करेगा किन्तु जब आज गया के नायक को खेल में हरा दिया और उससे लगातार दॉव पर दॉव लेना चाहता है तो नायक परेशान होकर बिना दॉव के घर चला जाना चाहता है। इस पर नायक सोचता है कि मुझे गया से अपने द्वारा खिलाया जाने वाला अमरूद वापस लेने का पूरा अधिकार है, मेरा पक्ष न्याय से युक्त था इसीलिये मैं अपनी बात पर अड़ा रहा। गया अपनी जिद करता रहा। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मैं उससे हाथ छुड़ाकर भागना चाहता था। मैंने क्रोध में आकर उसे गाली दी, उसने भी मुझे गाली दी। जब कहा सुनी अधिक होने लगी तो उसने मेरे गाल पर एक करारा तमाचा जड़ दिया। मैंने उसे दाँतों से काट लिया तो उसने डण्डे से मेरी पीठ पर प्रहार किया और मैं रोने लगा। वह मुझे रोते हुए देखकर भाग गया तो मैंने अपने आँसू पौंछ लिये और आराम से घर आ गया। डण्डे की चोट को भूल गया। कथा नायक कस्बे के थानेदार का लड़का है और गया एक निम्न जाति का चमार है। कथानायक कहता है कि मुझे जाति के चमार से मार खाने पर अपमान अनुभव हुआ किन्तु उसे मैंने घर पर पहुँचने की वजह से सहन कर लिया, किसी से कुछ नहीं कहा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथा नायक की बालवय की मनोभावों का सुन्दर चित्रण किया गया है।

2. अवतरण में आत्म कथात्मक शैली का प्रयोग है।

3. भाषा सरल, रोचक और प्रभावशाली है।

(3)

''आँख किसी प्यासे पथिक की भाँति बचपन के उन क्रीड़ा-स्थलों को देखने के लिये व्याकुल हो रही थी, पर उस परिचित नाम के सिवाय वहाँ और कुछ परिचित न था। जहाँ खण्डहर था, वहाँ अब एक सुन्दर बगीचा है। स्थान की काया पलट हो गई थी। अगर उसके नाम और स्थिति का ध्यान नहीं होता, तो मैं इसे पहचान भी नहीं सकता था। बचपन की संचित और अमर स्मृतियाँ बाँह खोले अपने उन पुराने मित्रों से गले मिलने को अधीर हो रही थी, मगर वह दुनियाँ बदल गई थी। ऐसा जी होता था कि उस धरती से लिपट कर रोऊँ और कहूँ, तुम मुझे भूल गई ! मैं तो अब भी तुम्हारा वही रूप देखना चाहता हूँ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'गुल्ली डण्डा' नामक कहानी से अवतरित है, जिसे मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा है। प्रस्तुत पद में लेखक ने नायक के बचपन की यादों को चित्रों के एलबम की तरह प्रस्तुत किया है और बताया है कि कथा नायक कस्बे के थानेदार का लड़का होता है जहाँ बचपन में वह उसके एक मित्र गया के साथ गुल्ली-डण्डा का खेल खेला करता था। जब थानेदार साहब का स्थानान्तरण उस कस्बे से दूसरे अच्छे शहर में हो जाता है तो कथा नायक को मजबूरी वश वह कस्बा और अपना अजीज मित्र छोड़कर पिताजी के साथ शहर में आना पड़ता है, वहाँ उसे गया की याद सताने लगती है और वह परेशान होने लगता है।

व्याख्या – जब कथा नायक के पिताजी का स्थानान्तरण हो जाता है और वह दूसरे आधुनिक शहर में आ जाता है तो उसे वहाँ पर सब कुछ बदला हुआ मिलता है। यह बदलाव न केवल स्थान और वातावरण का है, अपितु उसकी बाल भावना का कष्टदायक बदलाव होता है।

अजनबी शहर की अजनबी भीड़ में कथा नायक की कोमल आँखें अपने मित्र के परिचित नाम के सिवाय किसी को नहीं पहचानती हैं और उसी को ढूँढती रहती हैं। वहाँ की भूमि भी बदल चुकी थी, जहाँ पर वह गया के साथ खेला करता था। वह खण्डहर नूमा एक खाली स्थान था और यहाँ पक्के मकान थे। वहाँ पर एक सुन्दर बगीचा और एक बरगद का पेड़ था। नायक को यदि गया का नाम याद नहीं होता तो सब कुछ ही नया और अपरिचित होता। कथा नायक को अपने पुराने मित्र गया की यादें बहुत सताने लगी।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ऐसा लग रहा था मानो कथानायक की बाहें बचपन की संचित और मधुर स्मृतियों को समेट लेना चाहती हों और अपने पुराने मित्र से गले मिलने के लिए अधीर हो रही हों। कथा नायक के पास सिवाय व्याकुलता के और कुछ भी नहीं था। इस समय तो केवल यादें ही उसका साथ दे रहीं थी। वह फूट-फूट कर रोना चाहता था। नायक सोचता है कि वह जी भर के रोए और धरती से कहे कि शायद तू मुझे भूल गई है। मैं तो आज भी तेरा वही रूप देखने के लिये व्याकुल हूँ जिसमें पुराना बरगद का पेड़ और खण्डहरनूमा एक ऐसा मैदान है, जहाँ मैं और मेरा मित्र गया गुल्ली-डण्डा खेल रहे हों।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने बचपन की मधुर स्मृतियों को मोहक ढंग से प्रस्तुत किया है।

2. अवतरण की शैली आत्मकथा तुल्य है।

3. भाषा सरल, रोचक और प्रभावशाली है।

(4)

"बच्चों में मिथ्या को सत्य बना लेने की शक्ति है, जिसे हम, जो सत्य को मिथ्या बना लेते हैं, क्या समझें? उन बेचारों को मुझसे कितनी स्पर्द्धा हो रही थी, मानो कह रहे थे – तुम भगवान् हो भाई, जाओ। हमें तो इसी उजाड़ गाँव में जीना भी है और मरना भी है।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गुल्ली डण्डा' नामक कहानी से लिया गया है, जिसमें कथानायक की बीस साल पुरानी बचपन की स्मृतियों को पुनः तरोताजा किया गया है।

कथा नायक बचपन में जहाँ रहता था और अपने मित्र गया के साथ 'गुल्ली डण्डा' के खेल खेला करता था वहाँ बीस साल पहले उसके पिताजी थानेदार थे। जब उसके पिताजी का तबादला हो गया तो कथा नायक को वह कस्बा छोड़कर अन्यत्र जाना पड़ा। अब वही बालक (कथा नायक) बड़ा होकर इंजीनियर बन जाता है और बीस वर्ष बाद जिले का दौरा करता हुआ उसी कस्बे के गेस्ट हाऊस में आकर ठहरता है तो पुनः उसकी बचपन की स्मृतियाँ चित्रों के एलबम की तरह एक-एक करके उभरने लगती हैं।

व्याख्या – आज जब पूरे बीस वर्ष बाद गाँव वालों ने थानेदार साहब के छोटे से बच्चे को एक इंजीनियर के रूप में देखा तो सभी आश्चर्यचकित हो गये और गाँव वालों की नजर में कथा नायक बहुत बड़ा आदमी बन गया। बचपन में नायक और बाल सखाओं के बीच भविष्य के संदर्भ में अनेक बातें हुआ करती थी। प्रायः बच्चे अपने आत्मविश्वास के बल पर अपनी बात को सही ठहराते हैं। बच्चों में इसी आत्म-विश्वास के कारण असत्य बात को भी सत्य सिद्ध करने की क्षमता होती है जबकि प्रौढ़ आयु में यह क्षमता नहीं होती है और व्यक्ति को सत्य में भी असत्य का भ्रम रहता है जिसका कारण आत्मविश्वास का अभाव है। जब नायक इंजीनियर के रूप में उस कस्बे में पहुँचता है तो वहाँ के लोग उसे भाग्यशाली समझने लगते हैं। इसी संदर्भ में कथा नायक कहता है कि "वे बेचारे मुझे देख कर मानो अपने मन की स्पर्द्धा को पूरी तरह से व्यक्त नहीं कर पा रहे हों और कह रहे हों कि तुम कितने भाग्यशाली हो, जो इतने बड़े आदमी बन गये और मानो यह भी कह रहे हों कि हमें तो इसी ग्रामीण वातावरण में अपनी जिन्दगी बसर करनी है, हम तुम्हारी तरह से ऐश्वर्यपूर्ण जिन्दगी नहीं बिता सकते हैं, हमें तो इसी गाँव कि मिट्टी में जीना है और इसी मिट्टी में मर कर विलीन हो जाना है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बालवय और प्रौढ़वय के चिन्तन और व्यवहार के अन्तर को स्पष्ट किया गया है।

2. भाषाशैली संकेतात्मक और सूत्रात्मक है।

3. भाषा में भावानुकूल और सरलता का गुण है।

(5)

"गया बड़ी मुश्किल से राजी हुआ। वह ठहरा टके का मजदूर, मैं एक बड़ा अफसर। मेरा और उसका क्या जोड़? बेचारा झेंप रहा था, लेकिन मुझे भी कुछ कम झेंप न थी। इसलिये नहीं कि मैं गया के साथ खेलेन जा रहा था बल्कि लोग इस खेल को अजूबा समझ कर इसका तमाशा बना लेंगे और अच्छी खासी भीड़ लग जायेगी। इस भीड़ में आनन्द कहाँ रहेगा, पर खेले बगैर तो रहा नहीं जाता।"

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मुंशी प्रेमचन्द द्वारा विरचित 'गुल्ली डण्डा' नामक कहानी से अवतरित है जिसमें लेखक ने बताया है कि कथा नायक आज पूरे बीस साल बाद जिले का इंजिनियर बनकर उसी कस्बे में आया है, जहाँ बचपन में वह अपने मित्र गया के साथ गुल्ली डण्डा खेल करता था। वहाँ पर आकर उसने गया को ढूँढने का प्रयास किया और वहाँ के लोगों के सहयोग से उसकी मुलाक़ात हो गई। नायक यह कहकर गया से गुल्ली डण्डा खेलने का प्रस्ताव रखता है कि मुझ पर तुम्हारा बचपन के खेल का दॉव बकाया है। उसे ले लो और बचपन की यादें भी ताजा कर लो। कथानायक के इस प्रस्ताव को गया बड़ी मुश्किल से स्वीकार करता है और दूर एकांत में वे गुल्ली डण्डा खेलने चल पड़ते हैं।

व्याख्या – लेखक के अनुसार कथा नायक के द्वारा प्रस्तावित गुल्ली डण्डा खेल के लिये गया बड़ी मुश्किल से तैयार होता है। इस पर नायक सोचता है कि अब खेल में वह आनन्द नहीं जो बचपन में हुआ करता था क्योंकि गया तो टके भर का मजदूर मात्र है और मैं एक आला अफसर ठहरा। इस प्रकार सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठा के कारण दोनों की बराबरी नहीं हो सकती है। इसी क्रम में नायक सोचता है और कहता है कि जिस प्रकार गया मेरे साथ खेलने में झेंप रहा था, मेरे मन में भी कम झेंप नहीं हो रही थी। मेरी झेंप का कारण यह नहीं था कि मैं गया जैसे दलित और निम्न जाति के मजदूर के साथ खेल रहा था, बल्कि इस बात से झेंप रहा था कि लोग हमारे खेल को कहीं अजनबी खेल न मान लें, क्योंकि आजकल गुल्ली डण्डा जैसे खेल को कोई समझता ही नहीं है। यह खेल तो अब पुराने जमाने का खेल हो गया है और इसे देखने के लिए लोग भीड़ जमा न कर लें। अत: नायक इसे खेलने के लिए एकान्त स्थान चाहता है। लेखक सोचता है कि अजनबी लोगों की भीड़ में खेल का मनचाहा आनन्द नहीं मिलता है। लेखक ने यह भी स्पष्ट किया है कि कथा नायक और गया के बीच यह खेल उन दिनों की पुरानी यादें ताजा करेगा, इसी प्रयोग से वे दूर, एकांत में खेलने निकल पड़ते हैं।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथा नायक के मनोभावों की सुन्दर अभिव्यक्ति दी है।

2. सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठा में नैसर्गिक आनन्द समाप्त होने की विशेषता को स्पष्ट किया है।

3. भाषा सरल और भावानुकूल है।

(6)

मैं अब अफसर हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच की दीवार बन गई है। मैं अब इसका लिहाज पा सकता हूँ, अदब पा सकता हूँ किन्तु साहचर्य नहीं पा सकता हूँ। जब लड़कपन था तब कोई भेद नहीं था। यह पद पाकर केवल उसकी दया के योग्य हूँ। वह मुझे अब अपना जोड़ नहीं समझता है, वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गुल्ली डण्डा' नामक कहानी से अवतरित है। प्रस्तुत पद इसी पाठ से लिया गया है। जिसमें कहानी नायक अपने मित्र गया के व्यवहार और उसकी मन:स्थिति के संदर्भ में सोचता है कि बचपन में गया इस खेल का कुशलतम खिलाड़ी था और अब तो वह और भी अधिक माहिर हो गया है। एक दिन पूर्व जब कथा नायक ने उसके साथ खेल खेला तो गया ने अपने आपको कमजोर दर्शाया था, वह बचपन की तरह कथा नायक को पिदाना नहीं चाहता था, बल्कि उसे जिताना चाहता था और जब आज पुन: कथा नायक ने गया के द्वारा खेले गये इसी खेल को देखा तो वह खेल चमत्कारी और आश्चर्य युक्त था। प्रस्तुत अंश में कथानायक के इन्हीं विचारों का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है।

व्याख्या – ''कथानायक ने अगले दिन गुल्ली डण्डा खेल में अपना हुनर दर्शाने वाले गया को देखा तो वह आश्चर्यचकित हो गया और उसके खेल कौशल को देखकर उसे स्पष्ट लगने लगा कि कल जब गया ने मेरे साथ यह खेल खेला तो उसमें इतना आनन्द नहीं था। गया ने मेरे साथ नहीं बल्कि खेल के साथ न्याय नहीं किया था। उसने खेल को खेल की तरह नहीं खेला था। गया ने मुझे अपनी दया का पात्र समझा क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि मैं इस खेल में कमजोर हूँ और बड़ा अफसर बन गया हूँ और वह गरीब मजदूर है। इसी कारण वह मुझ पर दया करके चुप रहा। उसकी नज़र में मैं एक बड़ा अफसर था और यही अफ़सरी उसके और मेरे बीच दीवार बन गई। इसी लिहाज के कारण गया मेरा लिहाज करता रहा। मैं जीतता रहा और वह हारता रहा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कथा नायक सोचता है, गया कथा नायक के बचपन का मित्र था, परन्तु जब मैं उसे वह स्नेह भाव नहीं दे सकता हूँ जो पहले दिया करता था क्योंकि उसकी दृष्टि मेरे प्रति बचपन के सखा जैसी नहीं रही और यही कारण है कि मैं कभी भी अब गया का साहचर्य प्राप्त नहीं कर सकता हूँ। बचपन में हमारे और उसके बीच किसी प्रकार का वर्ग व जाति भेद नहीं था किन्तु बड़ा पद पा जाने के बाद अब मैं खेल के क्षेत्र में उसकी दया का पात्र बन गया हूँ। शायद इसीलिये जब वह कल मेरे साथ खेल रहा था तो उसने मेरे साथ अपने खेल-कौशल का प्रदर्शन नहीं किया बल्कि वह जान-बूझकर मुझसे हारता रहा और मुझे जिताता रहा। नायक यह भी सोचता है कि मैं आज तक गया को वर्ग और जाति की दृष्टि में छोटा समझता रहा किन्तु खेल-प्रतिस्पर्धा में गया मुझे अपने बराबर भी नहीं मानता था। उसके खेल में बचपना नहीं, बल्कि प्रौढ़ता आ गई, उसके व्यवहार में शिष्टता आ गई। सही मायने में गया अब मुझसे बड़ा हो गया और मैं उससे छोटा रह गया हूँ। उसका चिन्तन मेरी अपेक्षा काफी उच्च हो गया है और मेरी सोच आज तक भी गया के प्रति छोटी बनी रही।''

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने स्पष्ट किया है कि पद व प्रतिष्ठा व्यक्ति और व्यक्ति के बीच नैसर्गिक सम्बन्धों को समाप्त कर देती है।

2. आचरण के आधार पर गया के व्यक्तित्व का उत्कर्ष स्पष्ट किया गया है।

3. भाषाशैली सरल व भावानुकूल है।

4.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

4.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. कथा नायक ने 'गुल्ली डण्डा' के खेल को किन शब्दों से सबोधित किया है?

उत्तर – कथा नायक के अनुसार गुल्ली डंडा का खेल सभी खेलों का राजा है।

प्रश्न- 2. कथा नायक के अनुसार विलायती खेल और गुल्ली-डण्डा के खेल में क्या अन्तर है और विलायती खेलों के किस ऐब की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर – विलायती खेलों का सबसे बड़ा ऐब यह है कि उनके सभी सामान मँहगे होते हैं। जन-साधारण उन वस्तुओं को खरीदने से पहले अपनी आर्थिक स्थिति का अंकन करता है। गुल्ली डंडा के खेल में न लॉन की जरूरत, न नेट की, न थापी की और न कोर्ट व अन्य तामझाम की जरूरत रहती है। किसी भी पेड़ की मोटी डाली को तोड़ा और गुल्ली डण्डा तैयार हो जाते हैं तथा केवल दो व्यक्ति इस खेल को मजे के साथ खेल सकते हैं।

प्रश्न- 3. प्रस्तुत कहानी में कथा नायक के बाल सखा का क्या नाम है और वह किस जाति का है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली डंडा' में कथा नायक के बाल सखा का नाम गया है जो चमार जाति का है।

प्रश्न- 4. गुल्ली डण्डा कहानी में लेखक ने किस यथार्थ का चित्रण किया है ?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली डण्डा' में लेखक मुंशी प्रेमचन्द ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य और मनुष्य के बीच पद और प्रतिष्ठा उनके नैसर्गिक सम्बन्धों को समाप्त कर देते हैं।

प्रश्न- 5. मुंशी प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कहानियों की क्या विशेषता रही है?

उत्तर – मुंशी प्रेमचन्द की प्रारम्भिक कहानियाँ यथार्थवादी व आदर्शोन्मुख रही हैं।

प्रश्न- 6. प्रेमचन्द की कहानियाँ किस चित्रण को विशेष रूप से प्रस्तुत करती हैं ?

उत्तर – मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों में भारतीय ग्रामीण अंचल के जीवन से सम्बंधित समस्याओं, पारिवारिक स्थितियों, समाज सुधार और राष्ट्रीय भावनाओं से सम्बंधित विशेष समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न- 7. ''मुझे न्याय का बल था। वह अन्याय पर डँटा हुआ था।'' लेखक ने प्रस्तुत पंक्ति में न्याय और अन्याय किसे बताया है?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उत्तर – कथा नायक ने गया को अमरूद यह सोचकर खिलाया कि वह खेल में उसे अधिक परेशान नहीं करेगा। आधुनिक परिपाटी में कथा नायक इसे न्याय समझता है किन्तु गया उसे दॉव दिये बिना घर नहीं जाने देता है यह उसके मन में अन्याय था।

प्रश्न- 8. ''कौन किसी के साथ नि:स्वार्थ सलूक करता है। भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिये ही देते हैं।'' कथा नायक के अनुसार भिक्षा देने में लोगों का क्या स्वार्थ निहित हो सकता है?

उत्तर – कथा नायक के अनुसार लोग जब किसी भिखारी को भिक्षा भी देते हैं तो उसमें भी उनका पुण्य का स्वार्थ, नाम कमाने का स्वार्थ और भिखारियों द्वारा सम्मान पाने का स्वार्थ निहित होता है।

प्रश्न- 9. ''वह बड़ा हो गया है, मैं छोटा हो गया हूँ।'' लेखक ने कथा नायक को किस दृष्टि में छोटा और गया को बड़ा बताया है?

उत्तर – लेखक के अनुसार कथा नायक बचपन से ही अपने मन में अपनी हैसियत और जाति के आधार पर अपने आप को बड़ा समझता आया है और आज इन्जिनियर के पद पर नियुक्त होने पर वह अपने आपको और अधिक बड़ा समझता है किन्तु गया की प्रौढ़ता ने उसे न केवल खेल में ही निपुण बना दिया है अपितु उसका चिन्तन भी बड़ा हो गया है। वह कथानायक को जान-बूझकर खेल में हराना नहीं चाहता है बल्कि स्वयं हार-हार कर उसे खिलाता है। गया की यह भावना ही उसे बड़ा बनाती है।

प्रश्न- 10. कथा नायक पुराने कस्बे को छोड़कर क्यों चला जाता है और कितने साल बाद वह किस रूप में उसी कस्बे में आता है?

उत्तर – कथा नायक थानेदार का लड़का होता है। उसके पिताश्री का स्थानान्तरण हो जाने के कारण वह पुराने कस्बे को छोड़कर चला जाता है और बीस साल बाद वह इंजिनियर बन कर जिले का दौरा करता हुआ पुन: उसी कस्बे में आ जाता है।

प्रश्न- 11. ''आज गया का खेल और उसका वह नैपुण्य देखकर मैं चकित हो गया।'' कथा नायक के चकित होने का क्या मूल कारण था?

उत्तर – जहाँ एक ओर गया ने अपने खेल में अपनी आश्चर्यजनक कला-कौशल का प्रदर्शन किया और स्पष्ट किया कि वह उस खेल का निपुण खिलाड़ी बन गया है, वहीं दूसरी ओर एक दिन पहले जब वह कथा नायक के साथ वही खेल खेला तो उसने जान-बूझकर अपना कौशल नहीं दर्शाया था बल्कि अपने अफसर साथी को जिताने के लिये वह हारता रहा। कथा नायक इन दोनों बातों के चिन्तन से आश्चर्यचकित हो गया।

प्रश्न- 12. गया द्वारा खेले गये दो दिबसीय खेलों को देखकर कथा नायक क्या सोचता है?

उत्तर – कथा नायक सोचता है कि गया ने कल मेरे साथ में गुल्ली डण्डा का न्यायोचित और रूचिपूर्वक खेल नहीं खेला था अपितु खेलने का बहाना बनाया था। उसने मुझे अपनी दया का पात्र समझकर अपने खेल का कौशल प्रकट नहीं होने दिया। शायद वह मुझे खेल प्रतिस्पर्धा में मुझे अपने जोड़ का नहीं समझता था।

प्रश्न- 13. कथा नायक की अफसरी गया के और उसके सम्बन्धों में कैसे दीवार बन गई थी?

उत्तर – कथा नायक की अफसरी गया के नैसर्गिक सम्बंधों में दीवार बन गई थी। गया का साहचर्य पाने के लिये कथा नायक तरस जाता है जबकि गया के द्वारा उसे पूरा-पूरा सम्मान और लिहाज मिल रहा था।

प्रश्न- 14. कथा नायक इंजिनियर के रूप में गया के साथ खेलते समय क्यों झिझक रहा था?

उत्तर – कथा नायक यह सोच रहा था कि गुल्ली डण्डा का खेल खेलते हुए लोग कहीं इसे अजूबा समझ कर भीड़ न बना लें क्योंकि आज-कल यह खेल कोई नहीं खेलता है। इसी कारण से वह झिझकता है।

प्रश्न- 15. बचपन में गया के हाथों पिट जाने पर भी कथानायक उसकी शिकायत क्यों नहीं करता है?

उत्तर – जहाँ एक ओर कथा नायक के मन में गया जैसे नीचे जाति से पिटने का अपमान महसूस हो रहा था वहीं दूसरी ओर उसकी घनिष्ट मित्रता का भी ख्याल था, इन्हीं कारणों से गया की किसी से शिकायत नहीं की गई।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. मुंशी प्रेमचन्द ने 'गुल्ली डण्डा' कहानी में किस मूल चेतना को स्पष्ट किया है?

उत्तर—कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचन्द ने प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली डण्डा' में बाल मनोविज्ञान के आधार पर मानवीय नैसर्गिक सम्बन्धों का यथार्थ रूप प्रस्तुत कया है और यह सच्चाई बड़े कौशल के साथ स्पष्ट की है कि पद और प्रतिष्ठा के कारण मनुष्य-मनुष्य के बीच रहने वाले आत्मीय प्राकृतिक सम्बन्ध और व्यवहार समाप्त हो जाते हैं। बचपन में इस प्रकार का कोई कारण नहीं रहता है और सांसारिक सम्पूर्ण भेद-भावों को बचपन में कोई स्थान नहीं रहता है।

कथा नायक थानेदार कालड़का है वह बचपन में चमार जाति के एक गया नामक लड़के का आत्मीय मित्र होता है। वह उसके साथ गुल्ली डण्डा का खेल खेलता है। दोनों ही एक-दूसरे के साथ साहचर्य की भावना रखते हैं। उनके इस साहचर्य में किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं होता है। खेल के दौरान एक बार गया उसे काफी पिदाता है और कथानायक कुछ ज्यादा ही परेशान हो जाता है और वह घर चला जाना चाहता है, किन्तु गया उसे अपना दॉव दिये बिना जाने नहीं देता है। दोनों में काफी कहा-सुनी होती है, गाली-गलोच हो जाती है। यहाँ तक कि कथा नायक गया को दाँतों से काट लेता है और गया उसकी पीठ पर जोरदार डण्डा जमा देता है। नायक रोने लगता है और गया वहाँ से भाग जाता है और नायक आराम से घर चला जाता है किन्तु वह किसी से भी गया की शिकायत नहीं करता है। बचपन की अठखेलियाँ समय को भारी नहीं रहने देती हैं और अच्छा समय जल्दी ही गुजर जाता है। नायक के पिताजी का स्थानान्तरण हो जाता है और वह गया की यादों को अपनी आँखों में बसाये वहाँ से अन्यत्र चला जाता है।

आज पूरे बीस साल बाद जब कथा नायक एक इंजिनियर के रूप में जिले का दौरा करता हुआ उसी पुराने कस्बे में आकर गेस्ट हाऊस में ठहरता है तो उसे बचपन के प्रिय मित्र गया की बेचैन करने वाली याद आने लगती है और वह अन्य लोगों के प्रयास से उसे बुला लेता है। मधुर मिलन के बाद दोनों गुल्ली डण्डा खेलते हैं किन्तु गया उसे न्यायोचित व वास्तविक खेल की तरह नहीं खेलता है। जान-बूझकर गया अपने खेल कौशल को काम में नहीं लेता है क्योंकि वह नहीं चाहता है कि उसका अफसर दोस्त खेल में परेशान हो। वह जान-बूझकर स्वयं हार कर उसे जिताता है। कथा नायक को प्रौढ़ावस्था के इस खेल में नीरसता का अनुभव होता है क्योंकि जो आत्मीयतापूर्ण बाल व्यवहार कभी बचपन में गया का हुआ करता था वह अब नहीं है। नायक को सम्मान मिलता है, अदब मिलता है किन्तु साहचर्य और नैसर्गिक व्यवहार नहीं मिल पाता है। पद और प्रतिष्ठा सम्बन्धों को नीरस बनाते हैं। यही संवेदना प्रस्तुत कहानी में प्रकट की गई है।

प्रश्न-2. 'गुल्ली डण्डा' कहानी में प्रेमचन्द ने गया की कौन-सी चारित्रिक विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर—मुंशी प्रेमचन्द द्वारा विरचित 'गुल्ली डण्डा' कहानी में मूलतः दो ही प्रमुख पात्र हैं—कथा नायक और गया। गया उसी कस्बे के चमार का छोटा लड़का है जिस कस्बे में कथा नायक अपने थानेदार पिता व परिवार के साथ रहता है। गया उसी पुलिस अफसर के लड़के के साथ गुल्ली डण्डा खेलता है। वह गरीब और चमार जाति का है। नायक से दो या तीन साल उम्र में बड़ा, दुबला-पतला शरीर, लम्बी और पतली उँगलियाँ, बन्दरों जैसी चपलता और झल्लाहट थी उसमें। गुल्ली डण्डा का अच्छा खिलाड़ी गया रोजाना नायक के साथ बिना किसी ऊँच-नीच, जाति-पाँति के भेदभाव से खेलता था। वह क्रोधी स्वभाव का था। उसे अन्याय पसन्द नहीं था। जब कथा नायक बिना दॉव दिये आधा खेल छोड़कर घर चला जाना चाहता है तो वह उसे जाने नहीं देता है। दोनों में खूब ताना-कशी होती है, गाली-गलौच होती है और गया निडर भाव से उसका हर क्षेत्र में करारा जवाब देता है। वह नायक के गाल पर तमाचा तक जड़ देता है और उसकी पीठ पर गर्मागरम डण्डा भी जमा देता है। उम्र की प्रौढ़ता उसे व्यवहार-कुशल बना देती है और छोटे-बड़े का कायदा सिखा देती है। चाहे गया इन्जिनियर साहब के बचपन का घनिष्ट मित्र होता है किन्तु वह अब बचपन की तरह से उससे व्यवहार नहीं करता है। अपने मित्र को पूरा-पूरा सम्मान व अदब देना वह अच्छी तरह से जान गया है। वह चाहता तो बीस साल बाद भी वह नायक को खेल का पुराना सबक सिखा सकता था। वह इस खेल में इतना माहिर हो गया था कि इंजिनियर साहब की सारी अफसरी उसके कौशल के आगे एक ही बाजी में धूल चाटती नज़र आती किन्तु अदब ने उसे ऐसा नहीं करने दिया बल्कि वह जान-बूझकर हारता हुआ ही खेलता रहा और अपने पुराने मित्र को उसकी हैसियत के अनुसार सम्मान देता रहा। यद्यपि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नायक ने अपनी आदत के अनुसार खेल में धाँधली अभी भी की लेकिन गया उसे भी आराम से सहन करता रहा है अत: गया का चरित्र पूर्णत: स्वाभाविक रहा है।

4.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गुल्ली डण्डा' कहानी के प्रमुख तत्त्वों को स्पष्ट करते हुए उसकी समीक्षा कीजिये।

अथवा

'गुल्ली डण्डा' कहानी की समीक्षा करते हुए उसके मुख्य तत्त्वों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर – कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी के सबसे समर्थ कहानीकार हैं और आज लगभग एक शताब्दी बाद भी प्रासांगिक और अर्थपूर्ण बने हुए हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य को तीन-सौ से भी अधिक कहानियाँ भेंट की हैं जिनमें भारतीय जीवन के विविध चित्र दिखाई देते हैं। प्रेमचन्द की कहानियाँ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी हैं। इनकी कहानी-कला क्रमश: परिमार्जित होकर प्रौढ़ता की ओर अग्रसर हुई हैं। बाद की कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को प्रधानता देती हैं।

प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली डण्डा' में एक ऐसी सच्चाई को उद्घाटित किया है जो आज के युग में व्यक्ति के अन्त:करण का एक अंग बन गई है। हर व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान की चाह होती है और वह इन्हें पाने के लिये यथेष्ट प्रयत्न भी करता है और उसके प्रयत्न कामयाब भी हो जाते हैं किन्तु यह प्रतिष्ठा और पद व्यक्ति और व्यक्ति के नैसर्गिक सम्बन्ध को समाप्त कर देते हैं। पद और प्रतिष्ठा की गरिमा बचपन के मधुर प्रेम-सम्बन्धों में भी दीवार बन जाती है। कथा नायक और गया नामक पात्र के पारस्परिक व्यवहार से इसी सामाजिक और भावनात्मक स्थिति का चित्रण किया है।

'गुल्ली डण्डा' कहानी का समीक्षात्मक रूप –

कहानी-कला की दृष्टि से कहानी के निम्नलिखित प्रमुख तत्त्व माने जाते हैं – 1. कथा वस्तु, 2. चरित्र-चित्रण, 3. कथोपकथन, 4. देशकाल, 5. भाषा शैली, 6. उद्देश्य, 7. शीर्षक अथवा नामकरण।

प्रस्तुत कहानी के सन्दर्भ में उपर्युक्त तत्त्वों के आधार पर समीक्षा –

1. कहानी का कथानक – अच्छी और प्रभावशाली कहानी के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि उसका कथानक या कथावस्तु रोचकता से ओत-प्रोत हो और सुव्यवस्थित हो। साथ ही भव्यता लिये हुए होना चाहिये। कहानी के प्रतिपाद्य का दूसरा नाम कथानक है। कथानक में समाहित जितनी भी घटनाएँ होती हैं यदि उनका जीवन से निकट का सम्बन्ध रहता हो तो निश्चित रूप से वह कथानक जानदार होता है। सभी घटनाएँ संक्षिप्तता के गुण से युक्त होनी चाहिये और सभी घटनाओं का उद्घाटन आपसी ताल-मेल के साथ होना चाहिये और ऐसा ताल-मेल कि वे सभी एक ही उद्देश्य को प्रकट करने वाला हो।

कथानक के प्रमुख विशेषताओं के आधार पर मुंशी प्रेमचन्द द्वारा विरचित कहानी 'गुल्ली डण्डा' एक रोचक कथानक रखती है। ग्रामीण अंचल में पल रहे दो बाल सखाओं की बाल क्रीड़ाओं का चित्रण मधुर यादों के आधार पर किया गया है। दोनों बचपन में बिना किसी जातीय अथवा वर्गीय भेदभाव के मिल-जुलकर साहचर्य भाव से गुल्ली डण्डा खेलते हैं। गया इस खेल में निपुण होता है वह कथा नायक को खेल में बहुत पिदाता है और उसे परेशान करता है लेकिन दोनों एक साथ उसी खेल को बिना किसी गिले-शिकवे के खेलते हैं। एक दिन जब गया कथा नायक से लगातार दाँव पर दाँव ले रहा था तो वह थक कर परेशान हो जाता है और बिना दाँव दिये खेल को अधूरा छोड़कर घर चला जाना चाहता है लेकिन गया उसे जाने नहीं देता है। दोनों के बीच गर्मा-गरमी होने लगती है और गाली-गलौच की भी नोबत आ जाती है। यहाँ तक कि कथा नायक उसे काट लेता है और गया उसकी पीठ पर डण्डा जमा देता है। नायक रोने लगता है और गया वहाँ से भाग छूटता है। गया के जाने के बाद कथानायक अपने घर पर चला आता है, वह अपने पिटने की बात किसी से नहीं कहता है और न ही वह गया के प्रति अधिक बुरी भावना रखता है। कुछ समय बाद कथा नायक के थानेदार पिता का स्थानान्तरण अन्यत्र हो जाता है और नायक अपने बचपन के प्रिय मित्र को छोड़कर अपने परिवार के साथ अन्यत्र चला जाता है। वहाँ जाकर कथा नायक को रह-रहकर अपने मित्र गया की याद आने लगती है और काफी दिनों तक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

परेशान रहता है। समय गुजरने लगा। दिन, सप्ताह, महिने और वर्ष अपनी रफ्तार से गुजरने लगे और कथा नायक एक इंजिनियर बन जाता है। आज पूरे बीस साल बाद वह जिले का दौरा करता हुआ उसी कस्बे में आकर गेस्ट हाऊस में ठहरता है और उत्सुकता से अपने मित्र को खोजता है। वहाँ के लोगों के सहयोग से नायक की जल्दी ही गया से मुलाक़ात हो जाती है। दोनों प्रेमालाप करते हुए पुनः पुरानी स्मृतियों को तरोताज़ा करने के लिये गुल्ली डण्डा खेलने के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रौढ़ावस्था के इस खेल में बचपन के जैसा कुछ भी नहीं होता है। न स्फुर्ति, न प्रेम, न साहचर्य भाव, न वह जोश व उमंग, न एक-दूसरे को हराने वाली स्पर्धा और न वह जीवन्तता। बस वह एक खेल की खानापूर्ति मात्र था। गया तो पहले से ही उस खेल का चैम्पियन था अब तो वह और भी अधिक निपुण हो गया था जिसका पता नायक को गया के द्वारा खेले गये दूसरे दिवसीय खेल में चला। गया ने पहले दिन अपने मित्र को खेल में परेशान नहीं किया, न उसे अधिक पिदाया बल्कि जान-बूझकर स्वयं हारता रहा, दॉव देता रहा और अपने साथी को खिलाता रहा। ऐसा उसने इसलिए किया कि उसका बचपन का साथी अब वह साथी नहीं था बल्कि एक आला-अफसर था जिसका सम्मान और लिहाज आवश्यक था। नायक अपने मित्र गया की बेबसी को अच्छी तरह समझ गया था। अफसरी और प्रतिष्ठा दोनों मित्रों के आपसी नैसर्गिक सम्बन्धों के बीच एक दीवार बन चुकी थी।

प्रस्तुत कहानी में कथानक की सभी घटनाओं का संयोजन बड़ी कुशलता के साथ किया गया है। कथा नायक के प्रतिष्ठा व पदाधिकारी के पुत्र का अहंकार का तारतम्य प्रारम्भ से अन्त तक बिठाया जाता है। प्रस्तुत कहानी का कथानक स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। पात्रों की मनोदशा का सहज चित्रण किया गया है। इसमें कथानक में संक्षिप्तता का गुण भी निहित है जिसकी घटना निश्चित उद्देश्य को प्रकट करने में भी सफल रही है।

2. पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ— प्रस्तुत कहानी में पत्रों की संख्या मात्र दो हैं जो कहानी के संक्षिप्त आकार के गुण के अनुकूल हैं। इस कहानी में पात्रों का चरित्र-चित्रण अत्यंत सूक्ष्म रेखाओं से उभारा है कि दोनों ही पात्रों का व्यक्तित्व सुस्पष्ट रूप से पाठकों के मानस पटल पर विकसित होता हुआ प्रतीत होता है। कथा नायक उच्च जाति और उच्च अधिकारी (थानेदार) का लड़का है और दूसरा पात्र गया एक निम्न जाति चमार का मजदूर वर्गीय बालक है, जो समान वय के बाल-सखा हैं। लेखक ने दोनों मित्रों की बाल-क्रीड़ाओं के आधार पर उनके चारित्रिक गुणों का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। एक ओर कथा नायक का उच्चपदीय अहंकार और दूसरी ओर गया के गरीब मन में उसके प्रति अदब और सम्मान पूर्वक लिहाज। इस प्रकार आत्मकथन की प्रभावपूर्ण शैली में दोनों पात्रों के चरित्र का स्वाभाविक विकास प्रस्तुत कहानी में बड़ी ही कुशलता से प्रस्तुत किया गया है।

3. 'गुल्ली डंडा' कहानी का संवाद— किसी भी अच्छी कहानी की अच्छाई उसके संवाद पर निर्भर करती है। संवाद या कथोपकथन के द्वारा ही पात्रों के व्यक्तित्व का उद्घाटन होता है, कथानक को गति मिलती है और घटनाओं में नाटकीयता का गुण समाहित होता है। कहानी का संवाद संक्षिप्त, सारगर्भित और रोचक होना चाहिये। प्रस्तुत कहानी में संवाद के गुण पूर्णतः समाहित हैं—

गया ने विजय के उल्लास में कहा—''लग गई, लग गई। टन से बोली।''

मैंने अनजान बनने की चेष्टा करके कहा—''तुमने लगते देखा? मैंने तो नहीं देखा।''

''टन से बोली है सरकार।''

''और जो किसी ईंट में लग गई हो?''

मेरे मुँह से यह वाक्य उस समय कैसे निकला, इसका मुझे खुद आश्चर्य है।

इसी प्रकार—

''अब तो अंधेरा हो गया है भैया, कल पर रखो।''

''नहीं, नहीं। अभी बहुत उजाला है। तुम अपना दॉव ले लो।''

''गुल्ली सूझेगी नहीं।''

''कुछ परवाह नहीं।''

गया ने पिदाना शुरू किया, पर उसे अब बिल्कुल अभ्यास न था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रस्तुत कहानी में अधिकतर संवाद पात्रों की मनोदशा को प्रकट करने वाले हैं जो सरल, स्पष्ट और भावानुकूल हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी संवाद या कथोपकथन की दृष्टि से पूर्णत: सफल रही है।

4. प्रस्तुत कहानी का देशकाल – श्रेष्ठ कहानियों में देशकाल व वातावरण का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है जिसमें कहानी की घटना का समय या स्थान का सुन्दर चित्रण किया जाता है। पात्रों की जिन्दगी देशकाल या वातावरण के आवरण से ढकी होती है और वह अपनी सामाजिक परिस्थितियों के परिवेश में निर्लिप्त रहता है। उसकी भाषा, रहन-सहन, खान-पान, मान-मर्यादा, रीति-रिवाज आदि सभी गुण देशकाल से प्रभावित रहते हैं। प्रस्तुत कहानी की घटना में कहानीकार प्रेमचन्द ने एक गाँव में घटित होने वाली स्थितियों को दर्शाया है। घटना को दो भागों में विभाजित किया गया है – पूर्वार्द्ध में कथा नायक और गया के नैसर्गिक सम्बन्धों को दर्शाते हुए बाल-क्रीड़ाओं की स्वाभाविक प्रस्तुति दी है और उत्तरार्द्ध में कथा नायक की आला अफसरी का आलम और गया की एक सादगीपूर्ण जिन्दगी का सीधा-सादा स्वाभाविक अंदाज व्यक्त किया है। बीस वर्षों के अन्तराल में न केवल कस्बे का प्राकृतिक वातावरण ही बदल जाता है, अपितु पद और प्रतिष्ठा के कारण दोनों के स्वभाव भी बदल जाते हैं। इस प्रकार कहानी के रचयिता प्रेमचन्द ने देशकाल और वातावरण के निर्वाह का पूरा खयाल रखा है। साथ ही उसमें सामाजिक वातावरण की सम्पूर्ण विशेषताओं को सफलता पूर्वक समाहित किया गया है।

5. भाषा और शैलीगत गुण – भाषा ही एक ऐसा गुण है जो कहानी को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम है। भाषा का सौन्दर्य न केवल पात्रों के मानसिक स्तर को उद्घाटित करता है अपितु कहानीकार के व्यक्तित्व और रचना शक्ति का भी परिचय कराने वाला होता है। प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द ने पात्रों के स्तर के अनुरूप और घटना-क्रम को व्यंजित करने वाली सक्षम भाषाशैली को काम में लिया गया है। कथा नायक जब खेल में बार-बार दॉव देता हुआ थक कर परेशान हो जाता है तो वह अनेक चालें चलता है, अनेक नीतियाँ काम में लेता है। जब सभी चालें और नीतियाँ (साम, दाम, दण्ड व भेद आदि) ना-कामयाब रहती हैं तो पीछा छुड़ाने के लिए अधूरे खेल को छोड़कर वह घर चला जाना चाहता है, किन्तु गया उसे दॉव दिये बिना जाने नहीं देता है। उस समय मुंशी प्रेमचन्द ने दोनों के संवाद को जो स्वाभाविक भाषाशैली दी है वह प्रशंसनीय और पात्रों की भावना के अनुरूप है।

यथा – मैं घर की ओर भागा। अनुनय-विनय का कोई असर नहीं हुआ।

गया ने दौड़कर पकड़ लिया और डण्डा तान कर बोला –

''मेरा दॉव देकर जाओ। पिदाया तो दिन भर बड़े बहादुर बनकर, पदने के बेर क्यों भाग जाते हो?''

''तुम दिन भर पिदाओ तो मैं दिन भर पिदता रहूँ?''

''हाँ, तुम्हें दिन भर पिदना पड़ेगा।''

''न खाने जाऊँ, न पीने जाऊँ''

''हाँ मेरा दॉव दिये बिना कहीं भी नहीं जा सकते।''

''क्या मैं तुम्हारा गुलाम हूँ?''

''हाँ, मेरे गुलाम हो।''

''मैं घर जाता हूँ, देखूं मेरा क्या कर लेते हो?''

''घर कैसे जाओगे, कोई दिल्लगी है, दॉव दिया है; दॉव लेंगे।''

''अच्छा, मैंने तुम्हें कल अमरूद खिलाया था, वह लौटा दो।''

''वह तो पेट में चला गया।''

''निकालो पेट से, तुमने क्यों खाया मेरा अमरूद?''

''अमरूद तुमने दिया था, तब मैंने खाया था, मैं तुमसे माँगने नहीं गया था।''

''जब तक मेरा अमरूद न दोगे, मैं दॉव नहीं दूँगा।''

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी भाषाशैली में देशकाल के अनुसार सामाजिक गरिमा का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा है –

मैंने पूछा – ''तुम्हें कभी हमारी याद आती है गया? सच कहना।''

गया झेंपता हुआ बोला – ''मैं आपको याद करता हुजूर, किस लायक हूँ? भाग में आपके साथ कुछ समय खेलना बदा था, नहीं मेरी क्या गिनती?''

मैंने कुछ उदास होकर कहा – ''लेकिन मुझे तो तुम्हारी बराबर याद आती थी। तुम्हारा वह डण्डा जो तुमने तानकर जमाया था, याद है न?''

गया ने पछताते हुए कहा – ''वह लड़कपन था सरकार, उसकी याद न दिलाओ।''

कहानी के प्रस्तुतीकरण का तरीका शैली कहलाता है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने भाषाशैली की अलग-अलग विधाओं का प्रयोग किया है। कहानी के प्रारम्भ में वर्णनात्मक शैली और अन्त में आत्म कथात्मक तथा संवादात्मक शैली का प्रयोग कर इसे रोचक अंदाज प्रदान किया है, साथ ही नाटकीय और मनोविश्लेषणात्मक शैली के प्रयोग से कहानीकार ने इसे अत्यन्त सफल बनाया है?

6. कहानी का लक्ष्य – सोद्देश्य कहानी ही सही मायने में अच्छी कहानी की श्रेणी में आती हैं। उद्देश्यों में ही कहानी का संदेश निहित होता है जो कहानीकार के द्वारा पाठकों को दिया जाता है। प्रस्तुत कहानी का मूल उद्देश्य सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करना है। बचपन में बालक के मन में किसी प्रकार का सामाजिक दोष नहीं होता है किन्तु बड़ा होने पर मान-अपमान, पद-प्रतिष्ठा, ऊँच-नीच आदि सभी जैसे-जैसे अवस्था व्यतीत होती जाती है, वैसे-वैसे व्यक्ति की सोच भी बड़ी होती चली जाती है और उसमें इस प्रकार के विचार बनते चले जाते हैं और व्यक्ति अपने ही अंदाज में स्वयं को और दूसरों को देखने लगता है। प्रस्तुत कहानी का नायक जब बचपन में अपने मित्र गया के साथ गुल्ली डण्डा खेलता है तो उसका बाल-मन किसी प्रकार का भेद-भाव या मान-अपमान की भावना नहीं रखता है किन्तु बड़ा हो जाने और इंजिनियर बन जाने पर वह अपने पद की गरिमा और प्रतिष्ठा को महत्त्व देने लग जाता है किन्तु उसका मित्र गया उसे उसी के अनुरूप सम्मान और अदब का ख्याल रखते हुए ही सद्व्यवहार करता है। अत: प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य यह है कि पद और प्रतिष्ठा के कारण मनुष्य-मनुष्य के बीच नैसर्गिक सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं अत: इस कहानी से हमें यह भी प्रेरणा मिलती है कि हमें उच्च कुल में जन्म लेकर या उच्च पद प्राप्त करने पर अहंकार नहीं करना चाहिए। प्रेमचन्द कहानी के इस उद्देश्य को पूर्ण रूप से प्रकट करने में सफल रहे हैं।

7. शीर्षक – कहानी के तत्त्वों में शीर्षक का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। शीर्षक किसी भी रचना का आधार होता है और इसका निर्धारण ही रचनाकार के विवेक व्यक्तित्व को बखूबी से दर्शा देता है। शीर्षक प्राय: किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना या विशेषता के नाम के अनुरूप निर्धारित किया जाता है। यह जितना संक्षिप्त होता है उतना ही प्रभावशाली व सारगर्भित होता है। मुख्य रूप से शीर्षक एक या दो शब्द अथवा अधिक से अधिक तीन शब्दों के वाक्यांश में तय किया जाता है। प्रस्तुत कहानी का शीर्षक एक खेल विशेष के नाम पर निर्धारित किया गया है। यह खेल मुख्य रूप से गाँवों में खेला जाता है क्योंकि इस खेल में किसी प्रकार के ताम-झाम की या महँगे सामान की और अधिक लोगों की आवश्यकता नहीं होती है। किसी भी पेड़ की मोटी डाली को तोड़ कर गुल्ली व डण्डा बना लिये जाते हैं और जब भी दो साथियों का मन करे तभी किसी खाली मैदान में खेल शुरू किया जा सकता है। कहानी का नायक और गया एक कस्बे में बाल्यावस्था में यह खेल प्रारम्भ करते हैं और अन्त तक इसी खेल को खेलते हैं। शीर्षक कथा अथवा किसी भी रचनात्मक विधा का आधार होता है और इसका सम्बन्ध रचना के प्रारम्भ से अन्त तक बना रहता है। वही शीर्षक सार-गर्भित माना जाता है जिसमें ये गुण हों। मुंशी प्रेमचन्द ने प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'गुल्ली डण्डा' निर्धारित करने में इस तत्त्व के सभी गुणों का पूर्ण सफल रूप से खयाल रखा है। सम्पूर्ण कहानी प्रारम्भ से अन्त तक इसी नाम के इर्द-गिर्द मँडराती हुई दिखाई देती है और इस खेल के अनुरूप ही मुख्यत: दो पात्रों का चित्रण तथा उनकी अनुकूल मनोभावना भी इसी शीर्षक के अनुसार है। अत: शीर्षक की दृष्टि से भी कहानीकार पूर्णत: सफल रहे हैं।

निष्कर्ष – कहानी के तात्त्विक विशेषणों के निष्कर्ष में हम यह कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी का कथानक सारगर्भित और उद्देश्यपूर्ण है जिसमें व्यक्ति के बदलते हुए मानसिक रूप को बहुत ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। देश, काल और वातावरण

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

में जिस तीक्ष्णता से घटनाक्रम को रेखांकित किया है वह प्रशंसनीय है। पात्रों के चयन और उनकी चारित्रिक विशेषताएँ कहानी के अनुकूल हैं और नैसर्गिकता का गुण समाहित किये हुए है। संवाद की दृष्टि से कहानी की स्वाभाविकता कहानीकार से कहीं दूर नहीं है अत: प्रेमचन्द की प्रस्तुत कहानी पूर्णत: सफल रही है।

प्रश्न- 2. मुंशी प्रेमचन्द द्वारा विरचित कहानी 'गुल्ली डण्डा' के कथानक पर सोद्देश्य प्रकाश डालिये।

उत्तर – मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी कथा साहित्य को समृद्ध करने में अद्वितीय भूमिका निभाई है। इनके द्वारा कहानी के संगठन को सजगता पूर्वक एक निश्चित आदर्श की ओर ले जाया गया है। प्रगतिशील चेतना और मानवतावादी चिन्तन की दृष्टि से मुंशीजी का उच्चतम स्थान माना गया है। दीन-हीन और दलित, निर्बल वर्ग का जीवन और उनकी समस्याएँ प्रेमचन्द की कहानियों में प्रमुख विषय रही हैं। 'गुल्ली डण्डा' उनकी प्रतिनिधि कहानी है जिसमें बाल मनोविज्ञान का सुन्दर उपयोग किया गया है। यह आत्मकथात्मक शैली में रचित है और आदर्शोन्मुख प्रस्तुत कहानी में एक कस्बे के वातावरण को पृष्ठभूमि दो बाल सखाओं के स्वाभाविक निश्च्छल सम्बन्धों को उद्घाटित किया है। उनके द्वारा खेले जाने वाले गुल्ली-डण्डा के खेल का अत्यन्त कुशलता से वर्णन किया गया है और इसी खेल के माध्यम से बालवय तथा बीस वर्ष बाद की आयु में व्यावहारिक परिवर्तन को अत्यंत सुन्दर और स्वाभाविक ढंगसे स्पष्ट किया गया है। बचपन में निकटतम और एक दूसरे के प्रिय मित्र एक-दूसरे में किसी प्रकार का अन्तर नहीं समझते हैं किन्तु बीस साल बाद वे ही मित्र छोटे-बड़े की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं। पद और प्रतिष्ठा उनके नैसर्गिक सम्बन्धों के बीच दीवार बन जाती है। जिसे मुंशी प्रेमचन्द ने प्रमुख रूप से मुखरित किया है।

'गुल्ली डण्डा' कहानी का कथानक –

किसी भी कहानी का मूल आधार उसका कथानक या कथावस्तु है, जिसका निर्माण कहानीकार के विवेक कौशल का परिणाम होता है। प्रस्तुत कहानी के कथावस्तु निर्धारण में मुंशी प्रेमचन्द ने बहुत ही चतुराई से बाल मनोभावनाओं के आधार पर अपने विवेक कौशल का परिचय दिया है। इस कहानी का कथानक दो भागों में विभक्त है। दोनों ही भागों में समय का चिर अन्तराल रहा है जिसे आत्मकथात्मक शैली में उपस्थित कर सम्पूर्ण घटना-चक्र को एक अन्विति में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है –

1. गुल्ली-डण्डा एक प्रशंसनीय खेल – प्रस्तुत कहानी का शीर्षक एक पौराणिक लोकप्रिय खेल के नाम पर निर्धारित किया है। वैसे तो भारतीय खेल परम्पराओं में बहुत से प्रिय खेल हैं, यथा – आँख मिचौनी, संतोलिया, कबड्डी, खो-खो, कंची खेल आदि। गुल्ली डण्डा खेल का भी अपना एक अंदाज होता है। कथा नायक ने इस खेल को सभी खेलों का राजा बताकर उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की है और स्पष्ट किया है कि यह खेल प्रचलित अन्य खेलों और विदेशी खेलों में सबसे सस्ता खेल है। इसेक लिये विशेष ताम-झाम इकट्ठा करने की आवश्यकता नहीं होती है। इस खेल के लिये न नेट चाहिए, न लॉन चाहिये, न कोर्ट चाहिये और न ही थापी की आवश्यकता है। बस दो आदमियों की जरूरत ही होती है और जब इच्छा हो, तब किसी भी पेड़ से एक मोटी डाली तोड़िये और गुल्ली-डण्डा बनाइये तथा उतर जाइये खेल के मैदान में। खेल का खेल और कसरत की कसरत। अत: कहानीकार ने सोच-समझ कर इसकी लोकप्रियता को उजागर किया है। यह खेल यद्यपि खेल जगत के बदलते हुए परिवेश में थोड़ा कम-सा हो गया है किन्तु ग्रामीण या कस्बों में आज भी जब यह खेल परवान चढ़ता है तो इसकी लोकप्रियता का आनन्द ही कुछ और है।

2. गया और कथा नायक की बाल क्रीड़ा का माध्यम – प्रेमचन्द ने कथानक में गुल्ली डण्डा को कथा नायक और उसके बाल मित्र गया का प्रिय खेल स्पष्ट किया है। दोनों ही बाल सखा प्रतिदिन साहचर्य भाव से इस खेल का आनन्द लेते हैं। इस खेल में किसी प्रकार का जातीय अथवा वर्गीय बन्धन नहीं होता है। गया और कथानायक समवय बालक हैं जो गुल्ली डण्डा को माध्यम बनाकर अपनी बाल-क्रीड़ाओं को क्रियान्विति देकर अपनी बाल भावनाओं का बिना किसी भेद-भाव के निर्वाह करते हैं। यह वह खेल है जिसके अविस्मरणनीय पलों की स्मृति कथा नायक को दीर्घ काल तक अकुलाहट पैदा करती रहती है। गया के साथ कथा नायक का सुबह से साँझ ढलने तक गुल्ली डण्डा खेलना, एक दूसरे के प्रति क्रीड़ागत प्रतिस्पर्धा रखना, दॉव पर दॉव लगाना और चुकाना, दॉव देने से बचने के लिए खाद्य वस्तुओं की घूँस देना, खेल ही खेल में लड़ना-झगड़ना, गाली-गलोच करना, मारना-पीटना, रोना और अगले दिन फिर वही का वही सिलसिला नए सिरे से तैयार करना आदि-आदि।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चूँकि कथा नायक एक थानेदार का लड़का है और उसके पिताजी का स्थानान्तरण उस कस्बे से अन्यत्र हो जाता है अतः कहानी नायक को यह कस्बा मजबूरन छोड़ना पड़ता है। बाहर चले जाने के बाद कथा नायक गुल्ली डण्डा के सहनायक, बालमित्र गया का अभाव महसूस करता है और उसका मन व्याकुल रहता है। पूरे बीस वर्ष बाद जब कथा नायक इंजिनियर बनकर जिले का दौरा करते हुए इसी कस्बे में पहुँचता है तो उसका बालमन अतीत चित्रों के एलबम की तरह एक-एक करके सामने आने लगता है और वह अपने मित्र गया को खोज कर उसी खेल 'गुल्ली डण्डा' के माध्यम से अपनी तृषित भावनाओं को तृप्त करने का प्रयास करता है।

3. समय के अनुकूल भावनाओं में परिवर्तन – जब कथा नायक इंजिनियर के रूप में जिले का सरकारी दौरा करता हुआ, उसी कस्बे के डाक-बंगले में ठहरा जिस कस्बे में गया के साथ उसकी बाल-क्रीड़ाओं की कली विकसित हुई थी। कथा नायक कस्बे के कुछ लोगों के सहयोग से गया को पा लेता है और पुरानी यादों से युक्त बालक्रिड़ाओं को मधुरता देता हुआ पुनः गुल्ली डण्डा खेलने का प्रस्ताव गया के समक्ष रखता है। यद्यपि पहले तो गया इस प्रस्ताव को सुनकर झेंपता है किन्तु मित्राग्रह के कारण वह राजी हो जाता है। खेल के लिये एकान्त चुना जाता है जिससे तमाशाइयों की भीड़-भाड़ से मुक्त रहकर खेल का आनन्द लिया जा सके। खेल प्रारम्भ होता है किन्तु सब कुछ होते हुए भी उसमें नैसर्गिक आनन्द और साहचर्य का अभाव रहता है। समय का अन्तराल इन भावनाओं को समाप्त करने में उतना सक्षम नहीं रह सकता है जितना स्थितियों और परिस्थितियों का परिवर्तन सक्षम है। कथा नायक बीस वर्षों में पढ़-लिखकर इंजिनियर बन जाता है और गया एक साधारण नौकर रहता है। यद्यपि कथा नायक और गया के बीच जाति और वर्ग का भेद बचपन में भी होता है क्योंकि कथा नायक कस्बा के रौबीले पद पर आसीन थानेदार का लड़का होता है और गया चमार जाति का गरीब बालक। तथापि दोनों के नैसर्गिक सम्बन्धों को यह वर्गभेद अधिक प्रभावित नहीं कर पाता है। किन्तु आज बीस साल बाद जब दोनों मित्र उसी मंच पर बाल-क्रीड़ा का अभिनय कर रहे हैं तो सब कुछ फीका-फीका और आनन्द विहीन सा प्रतीत हो रहा है। इस परिवर्तन का मूल कारण प्रतिष्ठा और पद की गरिमा है। कथा नायक पद और प्रतिष्ठा की दृष्टि से एक बड़ा आदमी है और गया एक निम्न वर्ग का प्रायः मजदूर है। गया के मन में अपने अफसर मित्र की प्रतिष्ठा व पद का लिहाज है और सम्मान है। गया नहीं चाहता है कि उसके खेल का कौशल कथा नायक की गरिमा का उल्लंघन करे और उसे परेशान करे। वह खेल को खेल की तरह से नहीं खेलता है और स्वयं हारता हुआ अपने प्रकार से भाँप लेता है और सोच लेता है कि गया उसे अपने लायक नहीं समझता है। कथा नायक अपने आपको गया की कृपा का पात्र अनुभव करता है। इसमें संदेह नहीं कि गया इस खेल का निपुण खिलाड़ी बन चुका था और कथा नायक आज भी इस क्षेत्र में एक अनाड़ी खिलाड़ी था। खेल में पद और प्रतिष्ठा हार-जीत के बीच कभी आड़े नहीं आती है किन्तु उन दोनों मित्रों के नैसर्गिक सम्बन्धों में पद और प्रतिष्ठा एक दीवार बन चुकी थी।

4. गया का खेल कौशल – कथा नायक के आग्रह पर दूसरे दिन गुल्ली डण्डा खेल का आयोजन किया जाता है जिसमें लगभग दस बारह खिलाड़ियों की मण्डली भाग लेती है और मैदान में उतरती है। कथा नायक मोटर में बैठकर दूर से तमाशा देखता रहा। गया के द्वारा खेल की प्रस्तुति अत्यंत रोचक लग रही थी। गया पूर्ण कौशल के साथ प्रतिद्वन्द्वियों को पिदा रहा था। दाँव पर दाँव दे रहा था। कथा नायक सोचता है कि कल जब गया के साथ मैंने यह खेल खेला तो गया को उकसाने के लिए मैंने कई प्रकार से बेइमानियाँ और धाँधलियाँ की, किन्तु गया चुपचाप सहन करता रहा। कल उसने मेरे पद का लिहाज किया और उसने मुझे इस खेल के जोड़ का साथी नहीं समझा। इस प्रकार कथा नायक स्वयं को दया का पात्र समझकर कहने लगा कि ''गया अपने इस आचरण से बड़ा हो गया है और मैं उससे छोटा हो गया हूँ।'' अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी का कथानक रोचक, अनुशासित, प्रभावशाली, आकर्षक और नारकीयता से युक्त है।

कहानी का उद्देश्य –

उद्देश्य या लक्ष्य-विहीन कहानियों का पाठक के मन में कोई स्थान नहीं होता है। किसी भी कहानी का उद्देश्य उसका प्राणाधार होता है। मुंशी प्रेमचन्द की अधिकतर कहानियों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है और अनेक कहानियाँ बाल-मनोविज्ञान से युक्त हैं। प्रस्तुत कहानी 'गुल्ली डण्डा' की बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। इस कहानी का एक सुनिश्चित उद्देश्य है जो निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है –

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

1. बाल भावना और खेल – मानव जीवन की बाल्यावस्था अपने आप में बाल-क्रीड़ाओं और स्वच्छ, निर्मल बाल स्मृतियों का अनमोल तोहफ़ा होती है जो जीवन के अंत तक मानव मन में यादों के सिंहासन पर कायम रहती है। हर व्यक्ति के जीवन का एक प्रिय खेल होता है जो बचपन से बुढ़ापे तक सुखानुभूतियाँ प्रदान करता है। प्रस्तुत कहानी में कथा नायक का रूचिकर खेल 'गुल्ली डण्डा' है। प्रतिदिन इस खेल की तैयारी कथा नायक के द्वारा की जाती है। सुन्दर नुकीली गुल्ली और साफ सुथरा सीधा डण्डा उनका साधन है जो प्रतिदिन रूचिपूर्वक अपना-अपना आकार प्राप्त करते हैं। बिना गरीबी-अमीरी के भेदभाव के यह खेल प्रतिदिन खेला जाता है। हर रोज तैयारी, हर रोज प्रतिस्पर्धात्मक भावना, नोंक-झोंक, तना-कशी और पदा-पदी बस यही सब कुछ। इस सबके होते हुए अगले दिन वही तरोताजगी, वही रुचि, वही तैयारी और वही प्रतिस्पर्धा और खेल का वही आनन्द। दोनों के बीच मन-मुटाव होता है परन्तु बैर की भावना नहीं रहती है। दोनों में इस खेल के दौरान न तो अमीरों की जैसी चोचलेबाजी होती है और न किसी प्रकार का भेदभाव। बचपन की दुनिया में खेल का महत्त्व सारे आनन्ददायक साधनों से बढकर मिठाइयों की मिठास से भी बढ़कर होता है। प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य बचपन में खेल भावना के महत्त्व को स्पष्ट कर इसे समग्र जीवन में अपनाने की प्रेरणा देना है।

2. मानवीय सम्बन्धों की स्थापना – बाल्यावस्था किसी भी प्रकार के ऊँच-नीच, जाति-पाँति के भेद-भावों को नहीं मानती है। इसे किसी प्रकार का पद या किसी प्रकार की प्रतिष्ठा प्रभावित नहीं कर सकती है। अगर प्रभावित करती है तो केवल बाल मित्रों की कमी। बचपन में गया और कथा नायक के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता है, परन्तु बड़ा होने पर गया एक साधारण नौकर रह जाता और कथा नायक एक इंजिनियर बन जाता है। दोनों एक दूसरे के मित्र होते हुए भी मानवीय सम्बन्धों की दृष्टि से भावना ग्रस्त हो जाते हैं। बीस साल बाद जब दोनों एक-दूसरे से मिलते हैं तो दोनों के व्यवहार में वह नैसर्गिकता नहीं होती है जो कभी थी। गया अपने मित्र को सम्मान देता है, उनके पद की गरिमा का ध्यान रखते हुए अदब करता है, लिहाज करता है। कथा नायक के द्वारा खेल के दौरान अनेक प्रकार की धाँधलियाँ करता है किन्तु गया सब को अनदेखा कर जाता है और चुपचाप सहन भी कर लेता है किन्तु कथा नायक गया के इस व्यवहार को हीन दृष्टि से देखता है। पद की गरिमा के कारण वह इस गुल्ली डण्डा खेल को ही हीन समझता है। शायद इसीलिये कस्बे से तीन मील दूर एकान्त में जाकर खेलता है। अगले दिन जब गुल्ली डण्डा मैच होता है तब भी कथानायक मोटर में बैठकर दूर से इस खेल को देखता है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि पद और प्रतिष्ठा के कारण मानवीय सम्बन्धों में दीवार खड़ी हो जाती है और इससे मनुष्य-मनुष्य के बीच स्वाभाविक स्नेह और आत्मीयता समाप्त हो जाती है। मुंशी प्रेमचन्द का प्रस्तुत कहानी के माध्यम से मानवीय सम्बन्धों की स्थापना करना लक्ष्य रहा है।

3. भेदभावों की पुष्टि – मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में सामाजिक जीवन के आदर्शों की स्थापना की है क्योंकि वे प्रगतिवादी सामाजिक चेतना के कथाकार रहे हैं। प्रस्तुत कहानी में भी कथा नायक को उच्च अधिकारी के बेटा और गया को चमार जाति का मजदूर वर्गीय लड़का बताया है। प्रारम्भ में गया कथा नायक के साथ बिना किसी भेदभाव के गुल्ली डण्डा खेलता है और उसे खूब पिदाता है। यहाँ तक कि खेल के दौरान गया उसे खरी-खोटी सुनाता है और उसको पीटता भी है किन्तु कथा नायक किसी से गया की शिकायत नहीं करता है। कथा नायक के पिताजी का स्थानान्तरण दूसरे स्थान पर हो जाने के कारण गया को छोड़कर कथा नायक अन्यत्र चला जाता है। समय व्यतीत होता गया और गया एक छोटी-मोटी नौकरी कर अपना उसी कस्बे में जीवन यापन करने लगता है। ठीक बीस साल बाद कथा नायक इंजिनियर बनकर उसी कस्बे में आता है, जहाँ पर उसकी भावनाओं की दबी हुई आग को स्मृतियों की हवा पुनः प्रज्वलित कर देती है। गया को पुनः नायक के द्वारा बुलाया जाता है और गुल्ली डण्डा खेलने के लिये आमादा किया जाता है। समय का परिवर्तन देखिये कि जो गया कभी अपने खेल के दौरान जरा-सी भी बेईमानी या धाँधली पसन्द नहीं करता था। बेईमानी करने पर गया ने नायक को पीटा भी था और आज वही गया नायक द्वारा की जाने वाली हर चालाकी या धाँधलेबाजी को जान कर भी अनदेखा कर देता है।यहाँ तक कि वह स्वयं हारता हुआ अपने मित्र को जिताने का प्रयास करता है। चाहता तो गया कथा नायक को ऐसा सबक उन चालाकियों को देता कि.....लेकिन, आज के खेल में गया के द्वारा मित्र को प्रतिष्ठा और उसके पद की गरिमा का सम्मान व कायदा था। वह खेल नहीं रहा था अपितु खेलने का बहाना बना रहा था। गया ने उसे अपनी दया का पात्र समझा वरना गया का खेल कौशल उसका कचूमर निकाल देता। प्रस्तुत प्रसंग में इसी बात की पुष्टि की गई है कि पद और प्रतिष्ठा व्यक्ति-व्यक्ति के मानवीय मूल्यों को और व्यवहार के स्वाभाविक रूप को नष्ट करने वाली होती है। प्रस्तुत कहानी में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

लेखक ने स्वाभाविक सम्बन्धों की कमजोरी का निरूपण किया है – ''मैं अब अफसर बन गया हूँ। यह अफसरी मेरे और उसके बीच दीवार बन गई है। मैं अब उसका लिहाज पा सकता हूँ, सम्मान पा सकता हूँ किन्तु साहचर्य नहीं पा सकता।'' इस बात ये यह स्पष्ट होता है कि छोटे-बड़े का अन्तर समझना मानवीय मूल्यों का अपमान करना है। इन्सान मानवीय भावनाओं के कारण ही छोटा अथवा बड़ा बनता है, जाति या पद के आधार पर नहीं। इन्हीं मानवीय भावनाओं के कारण कथा नायक कहता है कि गया बड़ा बन गया है और मैं छोटा।

4.6 सारांश

अन्त में यह कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी का कथानक यथार्थ पर आधारित है। इसमें पद व प्रतिष्ठा घनिष्ट मित्रों के बीच न केवल दीवार ही बन जाती है अपितु नैसर्गिक सम्बन्धों को समाप्त कर मनुष्य को मनुष्य से पृथक् भी कर देती है। यह प्रवृत्ति सर्वथा अनुचित है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 5 : जयशंकर प्रसाद

संरचना

5.0 प्रस्तावना

5.1 उद्देश्य

5.2 परिचय

5.3 ममता

5.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

5.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

5.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

5.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

5.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

5.6 सारांश

5.0 प्रस्तावना

सुप्रसिद्ध सुंघनी साहु परिवार के दैदीप्यमान चिराग, महान रचनाकार और बहुमुखी प्रतिभा के धनी जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 में वाराणसी में हुआ। काल के क्रूर पंजों ने बचपन में ही इनके माता-पिता को इनसे छीन लिया। पारिवारिक जिम्मेदारियों ने इनके शैक्षणिक उन्नयन के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया परिणामत: ये नियमित अध्ययन नहीं कर पाये। जिस पर माँ सरस्वती की असीम अनुकम्पा हो, उसे किसी विद्या-भवन की आवश्यकता नहीं होती है और मुक्त वातावरण में हवा के झोकों की तरह विद्या का आगमन स्वत: मस्तिष्क में होने लगता है। प्रसाद ने घर पर रहकर ही अनेक भाषाओं तथा संस्कृत, दर्शन, पुरातत्त्व एवं प्राचीन साहित्यों का गहन अध्ययन किया।

5.1 उद्देश्य

यहाँ हम जयशंकर प्रसाद एवं उनकी कहानी ममता का अध्ययन करेंगे।

5.2 परिचय

जयशंकर प्रसाद मूलत: कवि हैं किन्तु नाटक और कथा क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है। 'ग्राम' कहानी के साथ प्रसाद जी का रचनात्मक ताना-बाना प्रारम्भ हुआ। प्रसादजी की कहानियाँ गहरी मानवीय संवेदनाओं को समेटे हुए हैं। दया, करुणा, स्नेह, सहानुभूति, शील, अहिंसा, ममत्व, भ्रातत्व, प्रेम आदि मानवीय गुणों की वे खान हैं। उनकी प्रत्येक कहानी जीवन के आदर्शों को प्रतिष्ठित करने वाली है। वे कहानीकार, निबन्धकार, नाटककार, उपन्यासकार और महान कवि थे। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इन्द्रजाल (कहानी संग्रह), तितली, कंकाल, इरावती (उपन्यास), राज्यश्री, कामना, विशाख, जनमेजय का नागयज्ञ, अजात शत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कन्द गुप्त, ध्रुव-स्वामिनी, एक घूँट (नाटक), कामायनी, चित्राधार, कानन-कुसुम, करुणालय, महाराणा का महत्त्व, लहर, आँसू, झरना (काव्य) तथा काव्य कला व अन्य निबन्ध (निबन्ध संग्रह) प्रमुख हैं। यह सच है कि अच्छे मानवीय व्यक्तित्वों को प्रकृति जल्दी ही अपने में समेट लेती है। शायद उसे भी ऐसे कलाकारों की उतनी ही आवश्यकता होती है। 1937 में जयशंकरप्रसाद अपनी कृतियों का तोहफा देकर हमेशा के लिए पंचतत्त्व में विलीन हो गये।

जयशंकर प्रसाद जी प्रेमचन्द युगीन कथाकार थे किन्तु रचनाशैली दोनों की अलग-अलग थी और कथा क्षेत्र भी अलग था। उन्होंने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भावपूर्ण आदर्शवादी कहानियाँ लिखीं। 'पुरस्कार' और 'आकाश दीप' उनकी प्रसिद्ध कहानी हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इन दोनों कहानियों को हिन्दी कहानी की गौरवशाली कहानी माना गया है। इन कहनियों में एक ओर तो प्रेम और सौन्दर्य का सूक्ष्म चित्रण है और दूसरी ओर गहरी नैतिक चेतना से उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्व की तीक्ष्ण चित्रण है। 'मधुआ' कहानी में सामाजिक आदर्श की अभिव्यक्ति मिलती है। 'देवरथ' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर नवीन सामाजिक आदर्श का संकेत करती है। 'देवरथ' का नायक पतिवृत्य से अच्युत नायिका को अपनाने का प्रस्ताव रखता है। जयशंकर प्रसाद जी की रचनाओं की प्रशंसा का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनकी प्रांजल भाषा-शैली है। इनकी रचनाओं में प्राकृतिक सौन्दर्य का भी मनोरम चित्रण हुआ है जो पात्रों की मन:स्थिति के साथ आधार-आधेय सम्बन्ध बनाकर कहानी को विशिष्ट अर्थवत्ता प्रदान करता है अत: हम कह सकते हैं कि प्रसाद जी ने प्रेमचन्द युग में भी अपनी अलग पहचान कायम की है।

5.3 ममता

जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित कहानी 'ममता' एक मर्मस्पर्शी, आदर्शवादी कहानियों में अपना प्रमुख स्थान रखती है। यह कहानी नारीस्वाभिमान, आत्म-गौरव, स्वदेश प्रेम, त्याग का कलात्मक सजीव रूप प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने नारी को पुरुष की तुलना में अधिक उत्तम और उदात्त गुणों से समन्वित दर्शाया है। यह एक चरित्र-प्रधान कहानी है, मंत्री चूड़ामणि की पुत्री 'ममता' इस कहानी की नायिका है। चूड़ामणि और हुमायुं का चरित्र ममता की ही चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालने में सहायक है। कहानी में प्रारम्भ से अन्त तक ममता के चरित्र का सशक्त चित्रण हुआ है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लिखी गई यह कहानी प्रसादजी की प्रतिभा और कल्पना शक्ति की परिचायक है। उदात्त जीवन दृष्टि लिए हुए ममता कहानी अपनी भाषा और शिल्पगत विशेषताओं के कारण उल्लेखनीय है।

5.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएं

(1)

"उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिये हुए, वह सुख के कंटक शयन से विफल थी। वह रोहिताश्व-दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की इकलौती दुहिता थी, फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असंभव था। परन्तु वह विधवा थी – हिन्दू विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है – तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा संचय" के 'ममता' नामक पाठ से अवतरित है जिसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है। इस अंश में रोहिताश्व दुर्ग के राजा के मंत्री चूड़ामणि की विधवा पुत्री ममता की वैधव्य जनित मानसिकता का चित्रण किया गया है –

व्याख्या – वैसे तो विधवा शब्द अपने आप में नारी व्यथा का दूसरा सारगर्भित नाम है किन्तु यौवनावस्था के बढते हुए तेज के साथ विधवा नाम न केवल वेदना दायक होता है अपितु मर्मस्पर्शी करुणा और मानसिक विकृतियों से समाहित वेदना का वह प्रतिरूप है जो तुच्छता की नजरों से घिरा रहता है। ममता यौवनावस्था में ही विधवा हो गई थी और उसकी जवानी अंग-अंग में शोण नदी के तीव्र प्रवाह की भाँति उमड़ रही थी। उसके मन में यौवन की प्रभावपूर्ण उमंगें थी। जवां उमंगों के दौर में विधवा हो जाना कितना वेदना और कसक दायक होता है यह ममता ही जानती थी, उसका मन अत्यधिक दु:खी था, मन में अपार वेदनाओं को समेटे हुए, मस्तिष्क में तूफानी विचारों के तीव्र वेग को थामे हुए अपने आप में निर्बल और असहाय बन गई थी। तृसित आँखों में दु:ख के आँसू सदैव ममता को और उसके रोम-रोम को नम बना देते थे। उस सुख-सुविधाओं की सेज ममता को वैधव्य के काँटों से युक्त महसूस होती थी। वह रोहिताश्व दुर्गपति के मंत्री जैसे प्रतिष्ठित और महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन चूड़ामणि की अकेली दुहिता होने के नाते कष्टपूर्ण जीवन तो व्यतीत कर ही नहीं सकती थी। उसे यदि दु:ख था तो केवल वैधव्य का दु:ख था और यह दु:ख ममता के लिए संसार में सम्पूर्ण ऐश्वर्य को नीरस और तुच्छ बना देने वाला था। हिन्दू समाज में तो विधवा का जीवन रद्दी अखबार के पन्नों की तरह महत्त्वहीन होता है, तुच्छ होता है और ऐसे तुच्छ व बेसहारा जीवन के कष्टों के साये से घिरा रहता है। हिन्दू विधवा ममता के जीवन के कष्टों का भी कोई अन्त नहीं था। उसके अन्त:करण की वेदना को केवल ममता ही समझती थी। यही ममता के जीवन की एक ऐसी विडम्बना थी कि जिसका कोई शमन नहीं कर सकता था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में हिन्दू विधवा के अन्त:करण की वेदना को स्पष्ट किया गया है।

2. यौवनावस्था की देहलीज को पार करते समय यदि वैधव्य का सामना करना पड़े तो वह कितना असहनीय होता है, को स्पष्ट किया गया है।

3. अवतरण की भाषा सांकेतिक, प्रतीकात्मक और अलंकारिक है।

(2)

"हे भगवान! तब के लिए! विपद के लिए! इतना आयोजन! परम पिता की इच्छा के विरूद्ध इतना साहस? पिताजी, क्या भीख नहीं मिलेगी? क्या कोई हिन्दू भू-पृष्ठ पर न बचा रह जायेगा? जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न न दे सके? यह असंभव है। फेर दीजिये पिताजी। मैं काँप रही हूँ। इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा संचय" के 'ममता' नामक पाठ से अवतरित है जिसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है जिसमें कथाकार ने ममता द्वारा, रिश्वत लेने जैसे अधार्मिक कृत्य का विरोध प्रदर्शित किया है। ममता उस धन को वापस लौटाने का अनुरोध अपने पिता से करती है जो धन उन्होंने अपने शत्रु से उत्कोच रूप में प्राप्त किया है।

व्याख्या – जब रोहिताश्व दुर्गपति के मंत्री अर्थात् ममता के पिता चूड़ामणि ने स्वर्णपूरित थाल ममता के समक्ष प्रस्तुत किये जो ममता की आँखें स्वर्ण कान्ति से चौंधिया गई। ममता ने उस धन के आगमन का प्रयोजन और सूत्र पूछा तो चूड़ामणि ने भविष्य की आशंकाओं को व्यक्त करते हुए बताया कि निकट भविष्य में शेरशाह रोहिताश्व दुर्ग पर अपना अधिकार कर लेगा तब शायद वह मंत्री नहीं रह पायेगा और उन्हें सम्भवत: कई प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ सकता है। विपत्ति के समय धन सच्चा साथी होता है। ममता अपने पिता के विचारों व उनके दुष्कार्यों में भागीदार बनने में कतई सहमत नहीं हुई और उनका विरोध करने लगी। वह दु:ख प्रकट करती हुई अपने पिता से कहने लगी कि सुख और दु:ख तो विधि का अटल विधान है उसे संसार का कोई साधन या कोई शक्ति नहीं टाल सकती है क्योंकि विधाता के नियम-सूत्रों में परिवर्तन करना सांसारिक मानव के वश में नहीं होता है। ममता उसी प्रसंग में कहती है कि जो विपत्तियाँ अभी आई ही नहीं हैं उनके निवारण के लिए अधर्म युक्त प्रयास अनुचित और व्यर्थ हैं। ममता अपने पिता से हालातों के साथ समझौता करने की बात कहती है कि जब आपके पास मौजूदा आमदनी का स्रोत नहीं रहेगा तो क्या इस पृथ्वी पर कोई मानव ऐसा नहीं होगा कि जिसमें दया अथवा ब्राह्मणों के सम्मान की भावना नहीं होगी और वह भिक्षा स्वरूप दो मुट्ठी अन्न भी नहीं दे सकेगा? ममता ने नीति युक्त तर्क देते हुए कहा कि हम ब्राह्मण हैं और ब्राह्मण को अधिक धन संचय करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि ब्राह्मण संतोषी प्रवृत्ति का श्रेष्ठ मानव होता है। उसे भौतिक सुख-सुविधाओं से किसी प्रकार का प्रयोजन नहीं रह जाता है। हम ब्राह्मण होने के नाते भीख माँग कर भी जीवन यापन कर सकते हैं फिर इतने धन को गलत तरीके से संचित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अत: मैं आपसे पुन: आग्रह करती हूँ कि आप यह विपुल धन लौटा दीजिये। आपके द्वारा प्रस्तुत इस धन को देखकर मुझे डर लग रहा है, मेरा अन्त:करण कंपित हो रहा है और मेरी आँखों की ज्योति इस धन की चकाचौंध से बिखर-बिखर कर मुझे अन्धी बना रही है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में स्पष्ट किया गया है कि भविष्य में आने वाली विपत्तियों की आशंका मात्र से अनुचित कृत्य द्वारा धन का संग्रह नहीं करना चाहिये।

2. ब्राह्मण अपने आप में संतोषी महान मानव होता है। उसे भौतिक विलासिताओं से प्रयोजन नहीं रखना चाहिये।

3. विधि के विधान को सांसारिक शक्तियाँ नहीं बदल सकती हैं।

4. ममता के चरित्र का आदर्शवादी रूप प्रस्तुत हुआ है।

5. भाषा सरल, रोचक, प्रभावशाली और वर्ण्य विषय अनुरूप है।

(3)

"यहाँ कौन दुर्ग है! यही झोंपड़ी न; जो चाहे ले ले, मुझे तो अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा। वह बाहर चली आई और मुगल से बोली, "जाओ भीतर, थके हुए भयभीत पथिक! तुम चाहे कोई हो, मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ। मैं ब्राह्मण-कुमारी हूँ, सब

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अपना धर्म छोड़ दें तो क्या मैं भी छोड़ दूँ ?'' मुगल ने चन्द्रमा के प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा, उसने मन ही मन नमस्कार किया। ममता पास की टूटी हुई दीवारों में चली गई, भीतर थके हुए पथिक ने विश्राम किया।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा संचय'' के 'ममता' नामक पाठ से अवतरित है जिसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है जिसमें बताया है कि जब रोहिताश्व दुर्ग पर शेरशाह का आधिपत्य हो गया और ममता का पिता चूड़ामणि का देहावसान हो गया तो ममता ने काशी के उत्तर में धर्म-चक्र-विरह के निकट प्राचीन खण्डहरों में अपना आश्रय-स्थल बना लिया और वह वहाँ अपना वैधव्य जीवन बसर करने लगी। एक बार चिरकाल के बाद संध्याकालीन बेला में एक थका-हारा पथिक उन्हीं खण्डहरों में आश्रय प्राप्त करने के अभीष्ट से आया और ममता से आश्रय पाने की अनुनय-विनय की। ममता द्वारा पथिक का परिचय पूछे जाने पर पता चला कि वह शेरशाह से परास्त मुगल हैं तो ममता के मन में उस बटोही के प्रति घृणा भाव जाग्रत हो गये किन्तु तत्काल ममता के मन में मानवीय धर्म का अनुभव हुआ और अतिथि को आश्रय देना अपना पुनीत धर्म मानकर ममता ने आश्रय देने के लिए सोचा।

व्याख्या – अतिथि के आगमन और उसके द्वारा आश्रय मांगने पर ममता ने अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार किया कि ये खण्डहर कोई दुर्ग या वैभवशाली स्थली नहीं हैं, मेरे लिये यह स्थान तो मात्र आश्रयदात्री झौंपड़ी है। मैं विधवा ब्राह्मणी हूँ और अतिथि सम्मान मेरा मानवीय पावन धर्म है, अत: अगर यह अतिथि मुझसे यह झौंपड़ी भी मांग ले तो उसे देने में मुझे कोई संकोच नहीं होगा क्योंकि मुझे तो अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना है। इन्हीं पवित्र विचारों को मन में समेटे हुए ममता बाहर आई और अतिथि से बोली कि हे पथिक! तुम शत्रुओं के भय से त्रसित और अधिक थके हुए हो अत: अन्दर जाकर विश्राम करो। तुम यद्यपि विधर्मी हो और ऐसे लोग आश्रय या दया के पात्र नहीं होते हैं किन्तु मैं मानव धर्म के नाते तुम्हें आश्रय प्रदान करती हूँ। ममता ने कहा कि मैं ब्राह्मण-पुत्री हूँ इसलिये अपने धर्म का यथासम्भव निर्वाह करना मेरा पुनीत कर्त्तव्य है इसे मैं निभाऊँगी चाहे सब लोग अपने कर्त्तव्य या धर्म से विमुख हो जायें। इस प्रकार कहती हुई ममता बाहर आ गई और निकट के खण्डहरों में चली गई। पथिक ने चन्द्रिका के आलोक में ममता के आभायुक्त मुख-मण्डल को देखा और मन ही मन उसे प्रणाम किया।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में भारतीय परंपरा 'अतिथि देवो भव:' की भावना को व्यक्त किया है।

2. ममता और हुमायुं के चरित्र पर प्रकाश डाला है।

3. भाषा शैली कथानक के अनुरूप है।

(4)

''शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार-ध्वनि सेवह प्रान्त गूँज उठा। ममता अधिक भयभीत हुई। पथिक ने कहा, ''वह स्त्री कहाँ है? उसे खोज निकालो।'' ममता छुपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई। वह मृग-दाव में चली गई। दिन-भर उसमें से नहीं निकली। संध्या को जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ तो ममता ने सुना, पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा था, ''उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका, उसका घर बनवा देना, क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ पर विश्राम पाया था, यह स्थान भूलना मत।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा संचय'' के 'ममता' नामक पाठ से अवतरित है जिसे जयशंकर प्रसाद ने लिखा है जिसमें बताया है कि चौसा के युद्ध में शेरशाह से परास्त होकर मुगल-बादशाह हुमायुं अकेला ही अपनी जीवन रक्षा के प्रयोजन से भागता हुआ काशी के उत्तर में धर्म-चक्र-विहार के खण्डहरों में छुपने का प्रयास करता है और वहाँ उसकी मुलाक़ात वहीं के खण्डहरों में ममता से होती है और वह उससे आश्रय माँगता है। ममता अपने मानवीय और ब्राह्मण धर्म का निर्वाह करती हुई हुमायुं को अपनी झौंपड़ी में आश्रय दे देती है। हुमायुं वहीं पर रात्रि-विश्राम करता है किन्तु प्रात:काल सैंकड़ों अश्वारोही हुमायुं को खोजते हुए वहाँ आ जाते हैं, ममता खण्डहरों में छुप जाती है –

व्याख्या – जब रात्रि-विश्राम के बाद सैंकड़ों अश्वारोही हुनायुं की खोज में उन्हीं काशी के खण्डहरों में आ जाते हैं तो ममता उनसे आक्रान्त होकर छुप जाती है और अपने बादशाह हुमायुं को सकुशल देखकर सारे मुगल सैनिक प्रसन्न हो जाते हैं। उनकी प्रसन्नता की चीत्कार से सम्पूर्ण क्षेत्र गूँज उठा जिसे सुनकर ममता और अधिक भयभीत हो गई और वह अपने-आप को सुरक्षित रखने के प्रयोजन से मृग-दाव में जाकर छुप गई। हुमायुं ने अपने सैनिकों को उसे खोजने को आदेश दिया और कहा कि ''वह स्त्री कहाँ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

है, उसे खोज निकालो।'' इस प्रकार के शब्दों को सुनकर ममता का आक्रान्त भाव और अधिक बढ़ गया और वह छुपने की अधिक चेष्टा करने लगी। उसे उस समय अनिष्ट की आशंका होने लगी। वह इसी आशंका से दिन भर मृग-दाव में छुपी रही। हुमायुं और उसके सैनिक दिन भर वहीं पर रहे। सायंकाल जब वे वहाँ से कूच करने की तैयारी करने लगे तो हुमायुं ने अपने घोड़े पर सवार होते हुए कहा कि हे सेनापति! इस स्त्री ने मुझे विपत्ति के समय आश्रय दिया था मैं इसका अहसान मानता हूँ किन्तु अफसोस कि मैं जाते समय उसके अहसानों के बदले में उसे कुछ भी नहीं दे सका। इसलिये तुम इस झौंपड़ी के स्थान पर एक अच्छा-सा घर बनवा देना, इस काम में जरा सी भी भूल मत करना। ममता मृग-दाव में छुपी हुई ये शब्द सुन रही थी। इसके बाद वे सब वहाँ से कूच कर गये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में हुमायुं की कृतज्ञता को व्यक्त किया है।

2. घटना-क्रम और पात्रों की चेष्टाओं का शब्द-चित्र है।

3. भाषा सरल, सुबोध और भावानुकूल है।

5.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

5.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. प्रस्तुत कहानी 'ममता' का केन्द्रीय भाव क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में भारतीय नारी की स्वाभिमान, आत्म-गौरव, स्वदेश-प्रेम और त्याग का कलात्मक निरूपण किया गया है।

प्रश्न- 2. प्रस्तुत कहानी 'ममता' किस प्रकार की है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'ममता' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित मर्मस्पर्शी आदर्श कहानी है जिसमें नारी संवेदना को व्यक्त किया है।

प्रश्न- 3. कहानीकार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कहानी संग्रह का नाम बताइये।

उत्तर – 'प्रतिध्वनि', 'आकाश दीप', 'आँधी' और 'इन्द्रजाल'।

प्रश्न- 4. ''तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया?'' किसने-किससे कहा?

उत्तर – ममता ने अपने पिता चूड़ामणि से यह प्रश्न किया था।

प्रश्न- 5. ममता किसकी पुत्री थी और उसकी क्या व्यथा थी?

उत्तर – ममता रोहिताश्व दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी और वह यौवनावस्था की तीव्रता में ही विधवा हो गई थी।

प्रश्न- 6. कथाकार जयशंकर प्रसाद ने ममता के जीवन को विडम्बनामय क्यों बताया है?

उत्तर – ममता यौवनावस्था में ही विधवा हो गई थी। वह एक ब्राह्मण कुलीन महिला थी। हिन्दू समाज में वैधव्य स्त्री का जीवन तिरस्कार, वेदना और विवशताओं से युक्त नारकीय तुल्य होता है। यद्यपि ममता के पास सम्पूर्ण भौतिक सुख-सुविधाएँ होती हैं किन्तु उसका वैधव्य सबसे बड़ा वेदनादायी जीवन है। यही ममता की विडम्बना है।

प्रश्न- 7. मंत्री चूड़ामणि ने किसका उत्कोच स्वीकार किया और क्यों?

उत्तर – मंत्री चुड़ामणिने मुगल आक्रमणकारी शेरशाह से उत्कोच ग्रहण किया क्योंकि वह रोहिताश्व दुर्ग पर शीघ्र आक्रमण करना चाहता था और चूड़ामणि को अपने मंत्री पद से हटने और भावी विपत्तियों की आशंका रहती है। वह उन विपत्तियों के निर्वाह और जीविका के संचालन के लिये उत्कोच स्वीकार करने हेतु उद्धृत हुआ था।

प्रश्न- 8. ''फेर दीजिये पिताजी, मैं काँप रही हूँ – इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है।'' ममता के इस कथन का क्या अभिप्राय है?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उत्तर– किसी से रिश्वत लेना अनैतिक या अधर्म का कार्य होता है या किसी का उत्कोच स्वीकार करना मानव धर्म के विपरीत है और इस कुकृत्य से मानव पाप का भागी होता है और ऐसा धन सदैव जीवन को कष्टपूर्ण व नारकीय बना देता है। ममता इसी भय से आक्रान्त होकर उसे लौटाने के लिये कहती है।

प्रश्न-9. रोहिताश्व दुर्ग पर शेरशाह का अधिकार हो जाने पर ममता कहाँ रहने लगी?

उत्तर–रोहिताश्व दुर्ग पर शेरशाह का अधिकार हो जाने पर ममताने उत्तर काशी के धर्म-चक्र विहार में खंडहरों को अपना आश्रय स्थल बनाया था।

प्रश्न-10. चक्र-विहार क्या था?

उत्तर–चक्र-विहार उत्तर काशी में मौर्य और गुप्त सम्राटों का कीर्ति स्थल था जो अब खण्डहर हो गया था।

प्रश्न-11. ''गला सूख रहा है, साथी छूट गये, अश्व गिर पड़ा है।'' ये वाक्य कब, किसने और किससे कहे थे?

उत्तर–यह कथन मुगल सम्राट हुमायुं ने ममता से कहे थे जब शाम के समय वह उसकी झोंपड़ी में आश्रय माँगने के लिए आया था।

प्रश्न-12. बादशाह हुमायुं ने स्वयं को किसका वंशज बताया?

उत्तर–बादशाह हुमायुं ने अपने आप को तैमूर का वंशज बताया था।

प्रश्न-13. ममता की झोंपड़ी के स्थान पर बने अष्ट-कोण के मन्दिर पर लगे शिलालेख पर क्या अंकित किया गया?

उत्तर–ममता की झोंपड़ी के स्थान पर बने अष्ट-कोण के मन्दिर के शिलालेख पर अंकित किया गया कि ''सातों देश के नरेश हुमायुं ने एक दिन यहाँ पर विश्राम किया था, उसके पुत्र अकबर ने उनकी पावन स्मृति में यह गगन-चुम्बी मन्दिर बनवाया।''

प्रश्न-14. ममता की झोंपड़ी के स्थान पर अकबर ने जो मन्दिर बनवाया वह कितने समय बाद बना?

उत्तर–लगभग सैंतालीस वर्षों के बाद।

प्रश्न-15. अश्वारोही और ममता के बीच अंतिम संवाद क्या थे?

उत्तर–''मैं नहीं जानती कि वह शहँशाह था, या साधारण मुगल, पर एक दिन वह इसी झौंपड़ी के नीचे रहा था। मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था। मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी खोदवाने के डर से भयभीत रही। भगवान् ने सुन लिया, मैं आज इसे छोड़कर जाती हूँ। अब तुम इसका मकान बनाओ या महल। मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ।'' ममता ने अपने जीवन के अंतिम क्षणों में वक्तव्य प्रस्तुत किये थे।

5.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. ''हिन्दू-विधवा ममता का जीवन अपने आप में एक विडम्बना था।'' इस कथन की पुष्टि कीजिये।

उत्तर–प्रस्तुत कहानी 'ममता' सुप्रसिद्ध कथानायक जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित है जिसकी मूल पात्र रोहिताश्व दुर्गपति के मंत्री ब्राह्मण चूड़ामणि की इकलौती दुहिता 'ममता' है। ममता युवावस्था में ही विधवा हो जाती है। उसका यौवन अंग-अंग में शोण नदी के तीव्र जल प्रवाह की भाँति उमड़ता हुआ प्रतीत होता है। वह रूपवती और सुडौल शरीर वाली नव यौवना है। उसके मन में यौवनावस्था की उमंगें थीं और ऐसे में विधवा हो जाने के कारण वह अत्यधिक दुःखी थी। वह अपार वेदनाओं से त्रसित थी। उसके मस्तिष्क में सदैव विचारों का तूफान बना रहता था। उसकी आँखों में सदैव असहाय अवस्था का जल प्रवाहित रहता था। उसकी हालत देखकर उसके पिता चूड़ामणि बहुत व्याकुल और दुःखी रहते थे। वे नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी सांसारिक सुखों से वंचित रहे अतः उन्होंने ममता के लिये सारे सुख और भौतिक वस्तुओं की सुविधाएँ जुटा रखी थी किन्तु ममता के वैधव्य जीवन में उन भौतिक सुखों का कोई मूल्य नहीं था। उसके लिये तो मखमली सेज भी काँटों के समान चुभन देने वाली अनुभव होती थी और यह स्वाभाविक भी है कि यौवनावस्था के प्रारम्भ में हिन्दू-विधवा का जीवन किसी अभिशाप से कम नहीं होता है। समाज में विधवा को सदैव हेय दृष्टि से देखा जाता है। वह केवल अभिशप्त और बेचारी होती है। ममता भी एक ऐसी ही हिन्दू नारी है जिसकी वेदनाओं का कोई अन्त नहीं है। ममता अपनी विपन्नता और लाचारी को भलीभाँति समझती है। अपने पति के बिना असहाय जीवन कितना

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कष्टदायी होता है इसका मर्म तो ममता ही जान सकती थी। वह उच्च पदासीन चूड़ामणि की एक मात्र पुत्री है जहाँ सब कुछ भौतिक सुविधाएँ हैं किन्तु ममता के लिये वे सब निरर्थक और निर्मुल्य हैं। यही उसके जीवन की अन्तहीन विडम्बना है।

प्रश्न- 2. प्रस्तुत कहानी 'ममता' के आधार पर कहानी नायिका की चारित्रिक टिप्पणी प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी ''ममता'' सुप्रसिद्ध कथाकार जयशंकर प्रसाद की कृति है जो अपने आप में चरित्र-प्रधान है। रोहिताश्व दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री ममता ही इस कहानी की मुख्य नायिका है और इसी के नाम पर इस कहानी का शीर्षक निर्धारित किया गया है। ममता युवावस्था में ही विधवा हो जाती है किन्तु वह जीवन भर इस वैधव्य कष्ट को सहन करते हुए भी अपने कर्त्तव्य पालन में किसी प्रकार का प्रमाद अनुभव नहीं करती है। उसका जीवन अपने आप में कष्टों का पुञ्ज बन चुका है किन्तु अपने आपको चारित्रिक विचलन से रोके रखती है। वह उच्च कुलीन, उच्च पदासीन चूड़ामणि की प्रेमपात्रा पुत्री है। उसके पास हर प्रकार की भौतिक सुख-सुविधा उपलब्ध है किन्तु इन सबके होते हुए भी वह वैधव्य पूर्ण जीवन की गरिमामय जिन्दगी व्यतीत करती है। चूड़ामणि ने जब अपने शत्रु का उत्कोच स्वीकार कर लिया और विपुल स्वर्ण प्राप्त कर दुष्कार्य किया है जो अधर्म से युक्त है। वह अपने पिता को यह भी नीति युक्त बात कहती है कि ब्राह्मण को कभी भी अधिक धन संग्रह नहीं करना चाहिये क्योंकि ब्राह्मण संतोषी होता है। वह भिक्षा माँगकर जीवन यापन करने के लिए भी तैयार रहता है। ममता अत्यंत विचारशील नारी थी, उसमें मानवता, स्त्री धर्म व ब्राह्मण धर्म का समावेश था। ममता में भारतीय नारी के सभी गुण और चारित्रिक विशेषताएँ विद्यमान हैं। प्रस्तुत कहानी एक चरित्र प्रधान कहानी है।

5.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. 'गगता' कहानी की तात्विक समालोचना कीजिये।

अथवा

कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'ममता' कहानी की समीक्षा कीजिये।

उत्तर – बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रमुख कथाकार जयशंकर प्रसाद मूलत: मानवतावादी आदर्श चेतना के सुविख्यात रचनाकार थे। उन्होंने अपनी कहानियों में मानव के सभी क्षेत्रों की भावनाओं को समाहित किया है। उन्होंने ऐतिहासिक, प्रेम मूलक, मानवतावादी, आदर्शवादी और रहस्यवादी आदि सभी प्रकार की कहानी लिखी हैं। प्रस्तुत कहानी 'ममता' एक आदर्शवादी रचना है जिसे ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार मानकर प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत कहानी में जहाँ एक ओर जातीय गौरव, स्वाभिमान, स्वदेश प्रेम, विश्वासपूर्ण बलिदान की भावनाओं को जीवन के आदर्श मूल्यों का रूप दिया है वहीं दूसरी ओर नारी के आत्म गौरव, सेवा भाव तथा चारित्रिक उदात्तता का निर्मल चित्र प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कहानी चरित्र-प्रधान कहानी है, इसमें उदात्त जीवन तथा भारतीय संस्कृति के विविध आदर्श प्रस्तुत किये हैं।

'ममता' कहानी : समीक्षा की कसौटी पर

प्रस्तुत कहानी 'ममता' को समीक्षात्मक दृष्टि से निम्नलिखित कहानी के तत्त्वों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है –

1. कथावस्तु – कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व कथावस्तु ही हे ता है जिसका चयन कथाकार के व्यक्तित्व का परिचायक होता है। कहानी का कथानक अपने आप में मौलिक होना चाहिये जिसमें जीवन की यथार्थ स्थिति का आसानी से बोध हो सके। प्रस्तुत कहानी ममता का कथानक अत्यन्त रोचक और प्रभावपूर्ण है। प्रसादजी ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर उसके कथानक को मौलिकता प्रदान की है। प्रस्तुत कहानी का कथानक रोहिताश्व दुर्ग के शाही और वैभवपूर्ण वातावरण से प्रारम्भ होता है। जहाँ जीवन के सम्पूर्ण सुख समाये हुए हैं किन्तु एक विधवा युवती का पिता मानव मन की स्वाभाविक कमजोरी से युक्त होता है और यह मानवीय अनिवार्यता भी है। रोहिताश्व दुर्गपति के वरिष्ठ मंत्री चुड़ामणि इस कहानी के एक चरित्र प्रधान पात्र हैं जो उच्च पद पर आसीन होने के साथ-साथ एक विधवा पुत्री के पिता हैं, एक ऐसी पुत्री कि जो उसकी इकलौती और आत्मीय प्रेम की सुपात्रा है और यौवन की देहलीज को पार करते समय ही वैधव्य को प्राप्त कर लेती है। उसका यौवन उसके अंग-अंग से शोण नदी के तीव्र उफ़ान की तरह उमड़ता हुआ प्रतीत होता है। ऐसे पिता का क्या दायित्व हो सकता है यह एक विशिष्ट बात है। चूड़ामणि जहाँ एक ओर अपनी पुत्री के यौवन वैधव्य से चिंतित हैं वहीं दूसरी ओर रोहिताश्व दुर्ग पर निकट भविष्य में होने वाले अन्याधिपत्य से परेशान हैं। उन्हें भावी विपत्तियों के आगमन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

का पूर्वाभास है। शायद इसीलिये उन्होंने शत्रु का उत्कोच स्वीकार कर लिया है। वे जानते हैं कि निकट भविष्य में शेरशाह इस दुर्ग पर आक्रमण कर देगा तो उसका मंत्री पद समाप्त हो जायेगा। आजीविका और पुत्री की जिम्मेदारियों की चिन्ता के कारण ही उन्होंने रिश्वत के रूप में विपुल स्वर्णधन स्वीकार कर लिया। ममता यद्यपि अपने दुर्भाग्य से ग्रसित थी किन्तु वह अपना धैर्य और ईमान कायम रखती है, साथ ही नारीधर्म और स्वदेश-प्रेम का पूरा-पूरा ध्यान रखती है। ममता ने अपना सम्पूर्ण जीवन संघर्षों में व्यतीत कर दिया किन्तु ''अतिथि देवो भव:'' की भावना का निर्वाह करते हुए उसने थके-हारे हुमायुं को अपनी झोंपड़ी में आश्रय दिया। इस प्रकार कहानी की सभी घटनाएँ मौलिक और रोचक हैं तथा कथानक में संभाव्यता का गुण भी विद्यमान हैं। कथानक के माध्यम से ममता के समग्र जीवन-चरित्र की ओर संकेत कर भारतीय नारी के आदर्शों का सफल चित्रण प्रस्तुत किया है। अत: हम कह सकते हैं कि कहानी का कथानक अत्यन्त सार्थक है।

2. चरित्र चित्रण – प्रस्तुत कहानी की मूल पात्र ममता है जो दुर्गपति मंत्री चुड़ामणि की इकलौती दुहिता है। मंत्री चूड़ामणि के अतिरिक्त शरणागत हुमायुं, ग्रामीण स्त्रियाँ, मुगल सैनिक आदि का आंशिक चरित्र प्रस्तुत हुआ है। ममता की अपनी व्यक्तिगत चारित्रिक विशेषता है। वह जहाँ एक ओर यौवन शक्ति से परिपूर्ण है वहीं दूसरी ओर वैधव्य का बोझ अपने जीवन पर लादे हुए है। जहाँ एक ओर ममता के लिये समर्पित है और जहाँ वह अभिशप्त जीवन व्यतीत करती है वहीं मानव धर्म को अपनी धरोहर समझती है। जीवन की सम्पूर्ण उदात्त विशेषताएँ ममता के घायल मन में समाहित हैं। लेखक ने ममता के चरित्र का स्वाभाविक विकास दर्शाया है। वह ब्राह्मण कुल के आचार-विचार और हिन्दूत्व की गरिमा से मण्डित है और सेवा भाव को ही जीवन का सर्वस्व मानती है। अत: हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी में आचरण और व्यवहार के आधार पर पात्रों का चारित्रिक विकास बताया है। यह कहानी जयशंकर प्रसाद के कथा-शिल्प का उत्तम उदाहरण है।

3. कथोपकथन – किसी भी कहानी में मौलिकता लाने के लिये तथा कथानक को गति प्रदान करने के लिये अथवा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने के लिये संवाद या कथोपकथन का अत्यधिक महत्त्व है। कथोपकथन संक्षिप्त, सारगर्भित, रोचक और सरस होना चाहिये। इस दृष्टि से प्रस्तुत कहानी ममता की संवाद योजना अत्यंत प्रभावशाली और मौलिक है। इसके संवाद कथानक के स्वाभाविक विकास में अंत तक सहायक रहे हैं –

ममता ने पूछा, ''यह क्या है पिताजी ?''

''तेरे लिये बेटी! उपहार है।''

''इतना स्वर्ण! यह कहाँ से आया ?''

''चुप रहो ममता! यह तुम्हारे लिये है।''

''तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया? पिताजी! यह अनर्थ है, अर्थ नहीं। लौटा दीजिये, पिताजी! हम लोग ब्राह्मण हैं, इतना सोना लेकर क्या करेंगे?''

''इस पतनोन्मुख प्राचीन सामंत का अन्त समीप है, बेटी! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व दुर्ग पर अधिकार कर सकता है, उस दिन मंत्रित्व नहीं रहेगा, तब के लिये बेटी।''

''तुम कौन हो ?'' स्त्री ने पूछा।

''मैं मुगल हूँ। चौसा युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ, इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ।''

''क्या शेरशाह से ?'' स्त्री ने अपने होठ काट लिये।

''हाँ, माता!''

प्रस्तुत कहानी के संवाद पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व को बखूबी से प्रकट करते हैं जिनमें ऐतिहासिकता है, मर्यादा है और मौलिकता है अत: संवाद की कसौटी पर ममता कहानी पूर्णत: खरी उतरती है।

4. देशकाल या वातावरण – मौलिक और आकर्षक कहानी के लिये अनुकूल समय और स्थान का चुनाव भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। लेखक जयशंकर प्रसाद ने प्रस्तुत कहानी 'ममता' को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित समकालीन वातावरण से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अवतरित किया है। रोहिताश्व दुर्ग का वैभव, चक्रधर्म विहार के खण्डहर, ग्रीष्मकालीन चान्दनी रात, हुमायुं की स्थिति, सेना के जवानों का वातावरण आदि का समयानुकूल चित्रण प्रस्तुत किया है। कहानी के दोनों भागों में यद्यपि काफी अन्तराल (समय का) दर्शाया गया है किन्तु दोनों भागों का घटनाक्रम एक दूसरे से पूरी तरह मेल खाता है। देशकाल और वातावरण के निर्धारण में जयशंकर प्रसाद पर्याप्त सक्षम कलाकार रहे हैं। प्रस्तुत कहानी इस दृष्टि से सफल कहानी रही है।

5. भाषा-शैली – भाषा-शैली के माध्यम से कलाकार का रचना कौशल और व्यक्तित्व से साक्षात्कार होता है। भाषा को रोचक और कर्णप्रिय अथवा प्रभावपूर्ण बनाने के लिये रचनाकार अलंकार का प्रयोग करता है। इसके अतिरिक्त सम्प्रेष्य भाषा से भी शैली सशक्त बनती है। चूंकि 'ममता' कहानी का कथानक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है इसलिये शब्दों के तत्सम रूपों का अधिक प्रयोग किया गया है। यह प्रयोग तत्कालीन सुसभ्य वातावरण का परिचय प्रदान करने वाला है। प्रस्तुत कहानी को यदि भाषा कौशल की दृष्टि से देखा जाये तो इसकी शैली अलंकार युक्त, ओजस्विता युक्त और व्यंग्यात्मक तथा संवादात्मक है। प्रसादजी ने भाषा में सौन्दर्य की वृद्धि के लिये मुहावरों का भी प्रयोग किया है। वाक्य रचना चारित्रिक परिवेशानुकूल है। अतः प्रस्तुत कहानी भाषा-शैलीगत दृष्टि से सफल रही है।

6. उद्देश्य – उद्देश्य विहीन कहानी का कोई महत्त्व नहीं होता है और जिस कहानी में उद्देश्यों का अभाव रहता है या बहुद्देश्य युक्त हो तो वह भी प्रभावी गुण से परे मानी जाती है। प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य मानवीय आदर्शों की प्रतिस्थापना व मानवीय संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति है। कहानी की मुख्य-पात्र ममता के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि जीवन में नैतिक मूल्यों की स्थापना होनी चाहिये। यद्यपि ममता वैधव्य भार से त्रसित है किन्तु वह नारी आदर्शों को नहीं भूलती है।

अन्याय की कट्टर विरोधी ममता अपने पिता द्वारा स्वीकार किये गये उत्कोच का खण्डन करती है और उसके बदले में ली जाने वाली स्वर्ण-सम्पत्ति को लौटा देने के लिये अड़ जाती है। वह ब्राह्मण कुल की परम्परा का निर्वाह करने में जरा-सी भी नहीं चूकती है। मानव धर्म और स्वदेश प्रेम की अनन्य अनुरागिनी ममता 'अतिथि देवो भवः' के सूत्र को भी नहीं भूलते हुए हुमायुं को आश्रय देती है। प्रस्तुत कहानी की ममता को त्याग, करुणा, ममत्व तथा करुणा की प्रतिरूपिणी से तुल्य चित्रित किया गया है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों की स्थापना करना है।

निष्कर्ष – अन्त में हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी 'ममता' एक आदर्शात्मक कहानी है जो ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि में निरूपित की गई है। मानवीय संवेदना, संवाद-योजना, भाषा-शैली तथा वातावरण की दृष्टि से यह कहानी अत्यन्त सफल रही है।

प्रश्न- 2. 'ममता' कहानी की नायिका की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित कीजिये।

अथवा

''कहानी नायिका ममता का चरित्र अपने आप में नारी वैशिष्ट्य को समेटे हुए हैं।'' कथन की पुष्टि कीजिये।

उत्तर – यों तो भारतीय नारी अपने आप में मानवीय गुणों का प्रतिरूप मानी गई है। कोमल हृदय में व्याप्त कोमल भावनाएँ स्वतः नारी वैशिष्ट्य का साक्षात्कार कराती हैं। दया, करुणा, सहानुभूति, प्रेम, दुलार, ममता, त्याग, समर्पण आदि गुण नारी का सौन्दर्य माना जाता है और ये गुण नारी के कोमल हृदय में फूट-फूट कर समाहित हैं। प्रस्तुत कहानी 'ममता' जो कि जयशंकर प्रसाद की एक चरित्र प्रधान कहानी है। इसकी नायिका ममता ही है जो इस कहानी में अपना मुख्य किरदार निभाती है और इसी के नाम पर इसका शीर्षक अथवा नामकरण किया गया है। ममता के चरित्र को गुणवत्ता और प्राणवत्ता प्रदान करने में कहानी के पात्र चूड़ामणि और हुमायुं का चरित्र भी सहयोग सिद्ध हुआ है। ममता के पिता चूड़ामणि जो कि रोहिताश्व दुर्गपति के मुख्यमंत्री हैं। वे ममता के सुखी जीवन की कामना से अपने शत्रु राजा का उत्कोच स्वीकार कर लेते हैं। दूसरी ओर शहंशाह हुमायुं चौसा युद्ध में पराजित होकर शत्रु भय से त्रस्त और थकान से व्याकुल ममता की झौंपड़ी में आश्रय प्राप्त करते हैं। कहानी की दोनों ही खण्ड ममता के चारित्रिक गुणों से सराबोर हैं जो कहानी के कथानक को गति प्रदान करने में भी सहायक हैं।

ममता की चारित्रिक विशेषताएँ –

ममता की चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं –

1. नारी हृदय – महिमामय, सौन्दर्य से युक्त मुखमण्डल और शोणनदी के वेग तुल्य यौवन पूरित कोमलांगा ममता रोहिताश्व दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की इकलौती दुहिता है जो पिता के पावन स्नेह की सुपात्रा है। यद्यपि ममता के जीवन में किसी प्रकार का

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आर्थिक अथवा भौतिक सुखों का कोई अभाव नहीं है किन्तु उसके जीवन इतिहास के पृष्ठों में विधाता ने वैवाहिक सुख के रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं की। राजसी ठाठ-बाट में नाजों से पली स्नेह पालिता ममता की बस एक ऐसी विडम्बना है जिसकी वेदना नारी हृदय को रह रहकर त्रसित करती रहती है और वह है उसका सौभाग्य विहीन जीवन। ममता अपने प्रकोष्ठ में शान्त भाव से बैठी हुई शोण के प्रवाह में, उसके कल-कल नाद में, अपना जीवन मिलाने का असफल प्रयास करती रहती है। उसके नारी मन में अपार वेदना, मस्तिष्क में विचारों का तूफान, आँखों में सावन की सी निर्झरिणी यही उसके तनहा जीवन के सगे-साथी बनकर रह जाते हैं। विवाह से पूर्व हर लड़की की आँखों में सुनहरे भविष्य के अनेक सुनहरे ख्वाब होते हैं, मन के मीत की बलवती कामना होती है, रोमान्स होता है किन्तु दुर्भाग्य से क्रूर हाथों ने ममता की जीवन से इन सबको हमेशा-हमेशा के लिये समेट लिया और ममता के पास शेष रह जाती है एक ऐसी विडम्बना जिसके अन्त का कोई निश्चय नहीं रहता है। ममता मन मसोस कर नारी जीवन के इस वैधव्य त्रसित रूप से समझौता करती है।

2. त्रसित जीवन – ममता अपने पिता चूड़ामणि के स्नेह वृक्ष की छाँव में पली बड़ी हुई है। उसे किसी प्रकार का आर्थिक कष्ट या भौतिक सुख सुविधाओं का अभाव नहीं है किन्तु वह नारी मन की अन्तर्वेदना से दुःखी है। राजसी ठाठ-बाट और सुखों के सभी साधन ममता के कष्टों में वृद्धि करने वाले लगते हैं। मखमली सेज उसे काँटों की शैया तुल्य वेदना दायक प्रतीत होती है, जहाँ एक ओर उसके मन में अनेक स्वाभाविक उमंगें तरंगित होती हैं वहीं दूसरी ओर हृदय सागर में उठने वाले दुःखों की तूफानी हिलौरें उन्हें नष्ट करती रहती है जहाँ एक ओर जवानी का बढ़ता आलम उसे रोमांचित करता है वहीं तन्हाई की टीस उसे व्याकुल करती हैं। वैसे तो वैधव्य शब्द अपने आप में नारी जीवन के मस्तक का कलंक है किन्तु हिन्दू नारी के लिए यह शब्द नारकीय त्रास का जीवन भर अहसास दिलाता रहता है। यही ममता के जीवन की एक ऐसी विडम्बना है जिसके कष्टों का कोई अन्त या छोर रहता ही नहीं है।

3. संतोषी मन – ममता को सांसारिक, भौतिक सुखों से किसी प्रकार का लगाव नहीं रहता है, वैसे भी वह ब्राह्मण कुल में जन्मी थी और ब्राह्मण तो सदैव संतोषी स्वभाव का रहा है इसलिये ममता को कुल गुणों के अनुरूप धन संचय में किसी प्रकार का सरोकार नहीं रहता है। जब उसके पिता चूड़ामणि शत्रु का उत्कोच स्वीकार कर विपुल स्वर्ण ममता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं तो उस धन की स्वर्णिम चकाचौंध ममता को अन्धी बनाने लगती है। वह उस धन को स्वीकार ही नहीं करती है, अपितु अपने पिता को खरी-खोटी भी सुनाती है, और उसे वापस कर देने की अनुनय विनय भी करती है। वह पिता को ब्राह्मण धर्म की नियम प्रथा से भी अवगत कराती है। वह कहती है कि रिश्वत रूप में धन प्राप्त करना अन्याय और अधर्म है। इतना ही नहीं, वह ब्राह्मण धर्म के अनुसार भिक्षा माँगकर जीवन यापन करने की परिस्थितियों को भी शिरोधार्य मानकर स्वीकार कर लेती है। जब उसके पिता द्वारा भावी समस्याओं की आशंका व्यक्त की जाती है तो वह उसे भी भाग्य का परिणाम बताती हुई कहती है जो विपत्तियाँ अभी आई ही नहीं उनकी आशंका मात्र से उतना धन और इस रूप में प्राप्त किया जाने वाला धन सर्वथा अधर्म का प्रतीक है। पिता की मृत्यु के बाद ममता उम्र भर उत्तर काशी के खण्डहरों में झोंपड़ी बनाकर रहती है और उसमें भी संतोष का अनुभव करती है।

4. पिता के स्नेह की पात्र – ममता बचपन से ही सरल और शांत स्वभाव की रही है इसीलिये उसके पिता चूड़ामणि उसे विपुल स्नेह प्रदान करते हैं। चूँकि चूड़ामणि रोहिताश्व दुर्गपति के महा आमात्य पद पर आसीन हैं। ऐसी स्थिति में उनके पास सभी प्रकार की शाही सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। ममता को किसी प्रकार के भौतिक दुःख का अनुभव नहीं होता है फिर भी चूड़ामणि अपनी स्नेहपालिता के प्रति उसके भविष्य के प्रति सदैव चिन्तित रहते हैं। यौवनावस्था की देहलीज को पार करते समय वैसे ही पिता की जिम्मेदारियाँ रह-रहकर जवां बेटी की चिन्ताएँ उसे सताती रहती हैं किन्तु विधवा जवान बेटी के पिता की मनःस्थिति क्या होती है उसे मंत्री चूड़ामणि ही जान सकते हैं। वे भावी परिस्थितियों की आशंकाओं से त्रसित रहते हुए अपने शत्रु का उत्कोच स्वीकार करते हैं और अपनी बेटी को वह धन भविष्य के लिए उसकी शक्ति वृद्धि के प्रयोजन से प्रदान करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि ममता अपने पिता की स्नेह पात्र थी।

5. कर्त्तव्य परायण – ममता विचारशील होने के नाते सभी अच्छे-बुरे का चिन्तन करती रहती थी। कर्त्तव्य पालन का बोध उसके चिन्तन स्वभाव का ही परिणाम था। ममता में धर्म के प्रति, देश के प्रति, कुल के प्रति, राज्य के प्रति, समाज के प्रति कर्त्तव्य परायणता का विशेष गुण था। जब उसके पिता ने शेरशाह से उत्कोच रूप में विपुल स्वर्ण स्वीकार कर लिया तो वह उसे घृणा की

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दृष्टि से देखती है और पिता के इस दुश्कर्म को नीति विरूद्ध करार देती है और उसे लौटा देने का आग्रह करती है। वह नहीं चाहती कि उसके पिता रोहिताश्व दुर्गपति के प्रति अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो जायें और राजद्रोही या दरबार के प्रति धोखेबाजी का कलंक उन पर लग जाये। ममता उस धन को ग्रहण करना भी मानवीय कर्त्तव्य के विरूद्ध समझती है। मुगल पथिक ने जब ममता से उसकी झौंपड़ी में आश्रय प्राप्त करने की विनती की तो प्रारम्भ में वह उसे विधर्मी होने के कारण आश्रय नहीं दती है किन्तु जब मानवीय कर्त्तव्यों ने उसके दिल को झँझोड़ा तो उसने अनेक भावी आशंकाओं के होते हुए भी उसे आश्रय देने का निश्चय किया। उसमें मानव धर्म होने के साथ ब्राह्मण धर्म भी था जो अतिथि सत्कार को अपना परम कर्त्तव्य मान था। वह कहती हैं कि ''मैं ब्राह्मण कुमारी हूँ, सब अपना धर्म छोड़ दें तो भी मैं क्यों छोड़ दूँ?'' इस प्रकार एक विधवा को आश्रय देकर ममता अपने कर्त्तव्य का पालन करती है।

6. मननशील – ममता का चरित्र चिन्तनशील होने के साथ-साथ व्यावहारिक समझदार भी है। वह कोई भी कार्य करने से पूर्व उसके भावी परिणामों के प्रति मनन करती है और तभी निर्णय लेती है। वह विधवा थी, वैधव्य की स्थिति ने उसे और भी अधिक मननशील बना दिया था। वह अपनी असहाय अवस्था पर विचार करती थी। पिता की निष्ठा और उनके पद की गरिमा पर ममन करती। अपने जीवन की विडम्बना के चिन्तन के साथ उसे सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय कर्त्तव्यों के प्रति भी सजग रहती थी। पिता द्वारा लाये गये धन को वह अर्थ नहीं अनर्थ मानती है। अपने आपको संतोषी बनाये रखना वह वैधव्य युक्त नारी का धर्म मानती थी। उसके शान्त स्वभाव में सदैव विचारों का मंथन होता रहता था। वैधर्मी पथिक को आश्रय न देने के बाद वह अपने आपको कर्त्तव्य विमुख-सी महसूस करती है और अतिथि की सेवा मानव धर्म की अनिवार्यता मानते हुए पुनः आश्रय देने के लिए तैयार हो जाना ममता के मननशील व्यक्तित्व का परिचायक है। वह सोच-समझकर ही अपने पिता से भिक्षा माँगकर जीवन निर्वाह की बात कहती है। उसके मननशील व्यक्तित्व का यह भी परिचायक है कि वह काशी के उत्तरी भाग में स्थित खण्डहरों में एक झौंपड़ी बनाकर रहती हुई अपना सम्पूर्ण जीवन बसर कर देती है।

7. जुझारू व्यक्तित्व – विपत्तियाँ बड़े से बड़े शक्तिशाली व्यक्ति को भी मिट्टी चटा देती है, विपत्तियों के वर्षा जब तीव्र वेग से मानव जीवन पर होने लगती है तो सारे धर्म, कर्म, ज्ञान, विवेक, कर्त्तव्य, सीमाएँ, भावनाएँ स्वतः प्रवाहित होने लग जाती हैं और व्यक्ति कर्त्तव्य विमूढ़ होकर बहक जाता है। ममता का जीवन भीषण परिस्थितियों की बाढ़ की चपेट में आकर प्रभावित हुआ। यौवनावस्था में वैधव्य ने तो जैसे उसके जीवन पर कहर ही ढा दिया। ऐसे में पिता की मृत्यु और राजविद्रोह के कारण वैधर्मियों का शासन। उन सबके अतिरिक्त ममता का यौवन और तरुणी सौन्दर्य के साथ अकेलापन – उन सभी विषम परिस्थितियों में ममता का कोमल नारी मन किस तरह संयमित रहता है, यह उसके जुझारू व्यक्तित्व का परिणाम है।

ममता उच्च कुल के संस्कारों की विचारशील महिला थी। वह हर परिस्थिति का सोच-समझकर सामना करती थी। पति व पिता के स्वर्गवास हो जाने के बाद वह अकेली रह जाती है। अनेक परेशानियों के पहाड़ टूट पड़े किन्तु उनका डटकर मुकाबला करती रही, उनसे जूझती रही और अपने मन व तन की शुद्धि को बनाये रखा। वह हिम्मत नहीं हारी। राजाशाही ठाठ-बाट में पली और बड़ी हुई ममता ने हर परिस्थितियों के अनुकूल अपने आपको बनाया। भावी आशंकाएँ भी ममता को विचलित नहीं कर सकीं। वह जानती थी कि रोहिताश्व दुर्ग पर आक्रमण होने वाला है और उसके पिता का मंत्री पद समाप्त होने वाला है। वह रिश्वत रूप में प्राप्त धन को स्वीकार नहीं करती है। वह अपनी व्यक्तिगत परेशानियों में भी न तो अपने पिता की सहायता लेती है और न शहंशाह हुमायुँ की। जीवन भर परेशानियों से जूझती रही।

8. नारी आदर्श का प्रतिरूप – प्रस्तुत कहानी में प्रसादजी की कहानी नायिका ममता अपने आप में एक आदर्श प्रस्तुत करती है। ममता विषमतम परिस्थितियों में भी अपना गौरवपूर्ण नारी आदर्श स्थापित करती है। वह हर परिस्थिति से जूझती हुई उनका मुकाबला करती है और हिम्मत नहीं हारती है, किसी की कोई सहायता भी नहीं लेती है। मुगलों के द्वारा उसके पिता की हत्या कर दी गई फिर भी उसने मुगल राही को अपने पास आश्रय दिया। ममता के विचार तुच्छ नहीं रहे। सच्चरित्र की धनी, कर्त्तव्य-परायणता से ओत-प्रोत, मानव कर्त्तव्यों से सजग, नारी धर्म की पोषित जुझारू व्यक्तित्व की मननशील प्रतिमा ममता अपने आप में नारी आदर्श का उद्घोष करती हुई सद्गति को प्राप्त करती है।

5.6 सारांश

अन्त में हम कह सकते हैं कि विपत्तियों में धैर्यशील, संतोषी और आदर्श नारी थी। उदार विचारों से युक्त उच्च आदर्शों से भारतीय परम्परा की प्रतीक नारी ममता थी।

इकाई- 6 : जैनेन्द्र कुमार

संरचना

6.0 प्रस्तावना

6.1 उद्देश्य

6.2 परिचय

6.3 इनाम

6.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

6.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

6.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

6.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

6.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

6.6 सारांश

6.0 प्रस्तावना

कथा साहित्य जगत् में हिन्दी कहानी को मनोरंजन के धरातल से उठाकर गम्भीरता के शिखर पर रखने वाले प्रख्यात कथाशिल्पिकार जैनेन्द्र का जन्म अलीगढ़ जिले के कोड़ियागंज कस्बे में सन् 1905ई. में हुआ। अल्पायु में ही इनके पिता का स्वर्गवास हो गया। इन्हें अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ जीवन के प्रथम सोपान से ही उठाना पड़ा। जैनेन्द्र की शिक्षा-दीक्षा हस्तिनापुर के गुरु कुल और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने इन्टर तक अध्ययन किया और महात्मा गाँधी के आह्वान पर उनके साथ असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े।

6.1 उद्देश्य

यहाँ हम जैनेन्द्र कुमार और उनकी कहानी इनाम के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

6.2 परिचय

हिन्दी कहानी का तृतीय चरण जैनेन्द्र से ही प्रारम्भ होता है। इनकी कहानी युग की नवीन संभावनाओं और भावनाओं से परिचय कराती है। इनका भाषा और कहानी शैली तथा तकनीकी सर्वथा अपनी स्वयं की रही है। इनमें नवीनता, सजीवता के साथ-साथ कहानियों का कथानक सीधा-सीधा और सुस्पष्ट होता है। इनकी प्रथम कहानी 'हत्या' प्रकाशित हुई। इनकी कहानियाँ मनोविश्लेषणात्मक पद्धति की प्रमुख हैं। इनकी कहानियों में पात्रों की संख्या बहुत कम रही है तथा समय व स्थान संकलन का निर्वाह हुआ है। कुछ कहानियों में दार्शनिकता अधिक आ गई जिससे कहानी कला दब गई और वे विचारप्रधान अधिक हो गई। 'अपना-अपना भाग्य', 'मास्टर जी', 'पत्नी', 'जाह्नवी', 'पाजेब', 'एक रात' और 'नई व्यवस्था' उल्लेखनीय कहानियाँ रही हैं।

जैनेन्द्र की प्रमुख रचनाओं में—परख, त्याग-पत्र, कल्याणी, सुखदा, सुनीता, विवर्त, मुक्ति बोध (उपन्यास), समय और हम, पूर्वोदय, प्रस्तुत प्रश्न, साहित्य का क्षेत्र, प्रेम, सोच-विचार, इतस्ततः, जड़ की बात, राष्ट्र और राज्य (निबन्ध संग्रह) आदि।

जैनेन्द्र जी की कहानियाँ 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' नाम से आठ भागों में प्रकाशित हैं। इनकी रचनाओं में मानवीय प्रवृत्तियों और आवेगों का सुन्दर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्राप्त होता है। इन्होंने व्यक्ति मन की आन्तरिक परतों को बहुत ही अच्छी प्रकार से उद्घाटित किया है। वैसे कहानी के सरल रचना विधान में दर्शन और मनोविज्ञान को गूँथ देने में उनको महारथ प्राप्त है। 'नीलम देश की राजकन्या', 'वातायन', 'दो चिड़ियाँ', 'फाँसी', 'स्पर्धा', 'ध्रुव यात्रा', 'जयसंधि' आदि ने कहानी जगत् में अच्छा स्थान प्राप्त किया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

6.3 इनाम

प्रस्तुत कहानी 'इनाम' जैनेन्द्र कुमार की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है, जिसमें नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व को बड़े ही मार्मिक ढंग से उजागर किया गया है। प्रेम-त्रिकोण में फँसी नारी के हृदय की घुटन और ममत्व की स्थिति अत्यंत संवेदना युक्त है। इसमें एक ऐसी भयभीत नारी की मनोदशा का चित्रण है जिसका पति प्रमिला नाम की अन्य स्त्री की ओर आकृष्ट रहता है परिणामत: उसकी पत्नी स्वयं को संतुलित नहीं रख पाती है और अपने होनहार व प्रतिभावान पुत्र के साथ सदैव दुर्व्यवहार करती है तथा ममत्व के वेग को बाँधे रखती है। सरल भाषाशैली में रचित कहानी अत्यन्त रोचक है।

6.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

'धनन्जय के बात समझ में नहीं आई, पर आये रोज यह देखता हे और समझने की चेष्टा छोड़ चुका है। ऐसे अनसमझे ही समझदार होता जा रहा है। माँ की झिड़की पर चुपचाप ही बैठा, और; जो उसके सामने खाने को रख दिया गया, खाने लगा, खाते-खाते हठात् वह अन्यमनस्क हो गया। दर्जे में पहले नम्बर आना और कुल दस वर्ष की अवस्था में आठवें में चढ जाना – इस सब कारगुजारी की बहादुरी और खुशी उसमें लुप्त हो गई।'

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'कथा संचय' के 'इनाम' नामक कहानी से अवतरित है जिसमें लेखक जैनेन्द्र ने स्पष्ट किया है कि धनंजय के माता-पिता के बीच किसी विशेष बात को लेकर मन-मुटाव रहता है। बालक कक्षा सात में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाता है। जब वह अपना परीक्षा परिणाम लेकर घर आता है तो उसकी इस सफलता पर कोई खुशी नहीं होती है और न उसे माँ का लाड़-प्यार ही मिलता है। यहाँ तक कि उसके द्वारा पूछे जाने वाले सवालों का रुखा जवाब मिलता है। प्रस्तुत अंश में बालक धनंजय की मनोदशा का स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

व्याख्या – धनंजय अबोध बालक है। वह नहीं जानता कि घर का वातावरण रसहीन क्यों है और यह भी नहीं जानता कि उसकी माँ का ऐसा ममत्वहीन स्वभाव क्यों है। वह तो अब इस प्रकार के माहौल मेंअपने बाल मन को ढाल चुका है, क्योंकि वह रोजाना ही यह सब देखता आया है, सुनता आया है। वैसे तो जैसे-जैसे धनंजय बड़ा होता जा रहा है, वैसे-वैसे वह स्वयं समझदार बनता जा रहा है। वह अब यह भी समझने लगा है कि उसके माता-पिता के बीच यह तनाव किस कारण से है किन्तु अपनी माँ के हर प्रकार के व्यवहार को वह आरम्भ से सहन करता हुआ चुप रहता है। जब वह अपने स्कूल से परीक्षा परिणाम में अव्वल आने की खुशी को लेकर घर आता है तो उसकी माँ पर किसी प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया नहीं होती है। वह पिताजी के बारे में माँ से पूछता है तो उसे सीधा जवाब नहीं मिलता है फिर भी वह अपनी माँ के इर्द-गिर्द मण्डराता रहता है और उसकी माँ अपने आप को काम में उलझाये रखती है। कुछ समय बाद उसके सामने भोजन रख दिया जाता है और वह चुप-चाप खाते-खाते विचारों में खो जाता है। वह सोचता है कि वह मात्र दस वर्ष की अल्पायु में कक्षा आठ का विद्यार्थी बन गया और इस वर्ष कक्षा सात में वह कक्षा का अव्वल छात्र रहा है। इस बात की उसे शाबाशी मिलनी चाहिये। उसके मन में अपनी सफलता के प्रति उत्साह और प्रसन्नता थी किन्तु अपने परिवार के इस तनावपूर्ण वातावरण में उस खुशी को, उस उमंग को लुप्त होते हुए देखता है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बालक धनंजय की मन:स्थिति का चित्रण किया है।

2. परिवार का वातावरण बाल-मन को भी प्रभावित करता है।

3. भाषा सरल और प्रभावशाली है तथा शैली वर्णनात्मक है।

(2)

'यह लड़का उसकी समझ से बाहर होता जा रहा है, कभी लड़के जैसा रहता नहीं, मानो एक दम बूढ़ा-बुजुर्ग हो। तब वह डर जाती है, जैसे अपने पर पछातावा हो और उस समय बुजुर्ग से बात छेड़ने का उपाय भी नहीं रह जाता। इसमें सहसा मातृ-भावना उमड़ पड़ती है, पर उसके प्रकाशन का कोई कारण नहीं मिल पाता। परिणामत: उठी सहानुभूति रोष बन जाती है।'

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक 'कथा-संचय' के जैनेन्द्र द्वारा रचित कहानी 'इनाम' से अवतरित है जिसमें बाल पात्र धनंजय की माँ के अन्त:करण की स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

व्याख्या – जब धनंजय अपना परीक्षा परिणाम लेकर प्रसन्नता पूर्वक अनेक उमंगों के साथ घर पर आता है तो वह अपनी माँ को सर्वप्रथम यह शुभ-सूचना देता है किन्तु उसकी माँ अपने स्वभावानुरूप कार्य में व्यस्त रहती है और धनंजय को कोई संतोषजनक उत्तर नहीं देती है। वह उसे खाना रख देती है और धनंजय चुपचाप अन्य मनस्क होकर खाना खाता रहता है। इसी दौरान उसकी माँ उस पर खीझती रहती है और धनंजय खुद अपने झूँठे बर्तन उठाकर यथास्थान रख देता है। धनंजय के इस प्रौढ़ व्यवहार से खीझकर उसकी माँ बोलती है कि यह तो मेरी समझ से बाहर होता जा रहा है। मैं इसे नादान बालक समझती हूँ परन्तु यह अपनी उम्र अनुसार नादान नहीं है। यह काफी समझदार बन गया है इसीलिये यह घर के वातावरण के कारण को भी शायद समझने लग गया है। वह डाँटने-डपटने पर भी ऐसा व्यवहार करता है मानो कोई बुजुर्ग या सयाना-समझदार हो। बालक के इस परिवर्तन को देखकर उसकी माँ डर जाती है तथा अपने द्वारा किये गये रूखे व्यवहार के लिये वह पछताती है और सहसा उसके हृदय में ममत्व भाव फूट पड़ते हैं किन्तु वह चाहते हुए भी उन भावों को प्रकट करने में असमर्थ है। वह स्वयं तनावग्रस्त है और सोचती है कि पति-पत्नी के बीच वैमनस्य के कारण बालक मन को भी तनावग्रस्त रहना पड़ता है जो अनुचित है। धनंजय उदास और चुप रहता है। इसलिये वह मातृत्व भाव को रोककर पुन: क्रुद्ध हो जाती है और धनंजय को फटकार लगा देती है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अंश में धनंजय की माँ के मनोभावों का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

2. जहाँ एक ओर मातृत्व भाव को उमड़ते हुए दर्शाया है वहीं दूसरी ओर अपनत्व भाव का शेष रूप में निरूपण किया गया है।

3. भाषा-शैली सरल और विवेचनात्मक है।

(3)

'बालक चुपचाप पैर लटकाये बैठा है। माँ को देख रहा है। बोला नहीं। माँ क्षण भर देखती रही। वह अपने को समझ न पा रही थी। इस लड़के पर उसे गर्व था। यह दुनियाँ में उसी का बेटा है। उसका अपना बेटा अव्वल आया है। आयेगा क्यों नहीं। मेरा बेटा जो है। बोली – 'खबरदार जो हिला। टाँगें तोड़ कर रख दूँगी जो कुछ समझता हो तो।' वह कमरे से बाहर होने को मुड़ी कि डग बढ़ता-बढ़ता रूक गया। एक बिजली सी भीतर कौंध गई।'

प्रसंग – प्रस्तुत अंश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'कथा-संचय' के 'इनाम' कहानी से अवतरित है जिसमें कथाकार जैनेन्द्र ने बालक धनंजय की मनोदशा का वर्णन किया गया है। इस वर्ष वह कक्षा सात से आठवीं में आ गया है। दस वर्ष की अल्पायु में अव्वल दर्जे की यह उपलब्धि उसके लिये अत्यंत प्रसन्नता और उल्लास दायक है किन्तु वह अपनी इस खुशी का इजहार अपनी कठोर स्वभाव वाली माँ के साथ नहीं कर सकता है। वह चाहता है कि इसी समय इस तंग वातावरण से निकल कर अपने साथियों को मिठाई खिलाकर अपने हर्ष को साकार करे।

व्याख्या – खाना खाने के बाद जब धनंजय अपने मित्रों को मिठाई खिलाने के लिये बाहर जाने की बात अपनी माँ से कहता है तो वह झिल्ला कर उसे डाँट देते हैं और चुपचाप कमरे में बैठकर पढ़ने के लिए कहती हैं। अपनी माँ को क्रोध में देखकर धनंजय चुपचाप बैठा रहा और उसे देखता रहा, उसकी माँ भी कुछ देर तक उसे देखती रही। उसे अपने पुत्र पर नाज़ था किन्तु अपने पति के व्यवहार से वह त्रसित थी। वह सशंकित थी कि उसका पति अन्य स्त्री से प्रभावित था और इस शक को वह अपने बच्चे के सामने प्रकट नहीं करना चाहती थी और मन ही मन कुढती रहती थी। यही कुढन क्रोध और झल्लाहट बनकर बच्चे पर बरसती रहती थी। जिस प्रकार पानी सदैव नीच की ओर गतिमान होता है, वैसे ही क्रोध रूपी जल भी अपनों से छोटों पर ही बरसता है। धनंजय की माँ अपने पति की झुँझलाहट को अपने बच्चे पर या घर के काम पर निकालती रहती थी। वह सोचने लगी कि धनंजय संसार में अकेला उसका अपना बेटा है। वह इसीलिये कक्षा में अव्वल आया है कि वह उसी का बेटा है। किन्तु वह अपने सुन्दर मनोभावों को दबाकर धनंजय के साथ रुखा व्यवहार करती है। वह कहती है कि 'खबरदार जो अपनी जगह से हिला, टाँगें तोड़कर रख दूँगी।' उसकी माँ को यह शंका होती है कि शायद धनंजय अपने पति की प्रेमिका प्रमिला के पास तो नहीं जा रहा। इस शंका के समाधान हेतु वह कमरे से बाहर जाते हुए ठिठक कर पुन: सवाल करती है कि.....।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में स्पष्ट किया है कि पति का व्यवहार पत्नी की मन:स्थिति को प्रभावित करता है जिससे सम्पूर्ण वातावरण भी उसके प्रभाव से युक्त हो जाता है।

2. एक माँ अपने होनहार पुत्र पर नाज करती है, उसकी विलक्षण प्रतिभा और सफलता पर हर्षित होती है किन्तु अपनी इन भावनाओं को स्पष्ट करने में असमर्थ रहती है। यह कष्टदायक मन:स्थिति है जो धनंजय की माँ को सहन करनी पड़ती है।

3. अवतरण की भाषा मनोभावों के अनुरूप है।

(4)

'सोचने लगी कि यह उसका भाग्य है। घर में एक वह है और उसका काम। काम ही एक संगी है। एक रोज इसी में मर जाना है। बाकी तो सब बरी हैं। मुझे तो मौत आ जाये तो भला। एक वह है कि सवेरे छाता उठाया और चल दिये और शाम को आये कि सब किया धराया मिले। एक मैं करूँ और मैं ही मरूं। मरने को मैं और मौज करने को चाहे कोई दूसरी.....। और एक यह है कि कम्बख्त। मुझे तो गिनता ही नहीं, बस सदा उनके कहने में। घर क्या जेल है, एक इसने बाँध रखा है।'

प्रसंग – प्रस्तुत अंश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'कथा-संचय' के 'इनाम' कहानी से अवतरित है जिसमें कहानिकार जैनेन्द्र ने स्पष्ट किया है कि जब किसी सुखी परिवार में शक अपना प्रभाव प्रवेश करा जाता है तो उस परिवार की सुख-शांति भी किनारा काट जाती है क्योंकि विश्वास ही सुखी जीवन का आधार होता है। धनंजय की माँ उसके पिता के इस व्यवहार से अत्यंत व्यथित है कि उनका एक अन्य स्त्री प्रमिला से प्रेम सम्बन्ध है। उसकी यह वेदना न केवल परिवार के वातावरण को ही तनावपूर्ण बनाए हुए है अपितु वह अपनी ममता जैसी नैसर्गिक भावना का भी गला घोंट देती है और उसका बाल पुत्र अच्छी सफलता प्राप्त करने पर भी अपनी माँ से अपना हक नहीं ले पाता है।

व्याख्या – धनंजय की माँ अपने भाग्य को कोसने लगती है और कहती है कि यही तो मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे इस संसार में एकमात्र अपने पति का ही सहारा था, वह भी नहीं रहा अर्थात् मेरे पति भी मेरे पक्ष में नहीं हैं और जो एक पुत्र है, वह भी पिता का ही अनुसरण करने लगा है अर्थात् मेरा कहना नहीं मानता है। वह सोचती है कि इस घर में केवल एक मैं ही हूँ जो काम में लगी रहती हूँ। कोई भी घर की चिन्ता रखने वाला नहीं है। सुबह से शाम तक बस काम ही काम से जूझना पड़ता है। वह सोचती है कि ऐसी नीरस जिन्दगी से तो मर जाना ही अच्छा है। वह अपने पति की दिनचर्या और उनके व्यवहार को भी कोसती हुई अपने आपसे बड़बड़ाती रहती है। वह कहती है कि एक वो हैं जिनको न मेरी और न घर की कोई परवाह है, बस सुबह होते ही छाता उठाकर घर से निकल जाते हैं और शाम ढले घर लौटते हैं। तब तक सब कुछ किया हुआ तैयार मिल जाता है। घर के काम को करने में कष्ट तो मैं उठाती हूँ और मौज-मस्ती के लिये कोई दूसरी स्त्री बना रखी है। (यहाँ पर दूसरी स्त्री से अभिप्राय: प्रमिला नाम की कोई अन्य है)। ऐसे में धनंजय की माँ को बहुत कष्ट होता है। उसका यह कष्ट स्वाभाविक भी है, क्योंकि कोई भी स्त्री हर प्रकार के दु:खों से जूझ सकती है, हर परिस्थिति से समझौता कर सकती है परन्तु सौतन की उपस्थिति बर्दाश्त नहीं कर सकती है। वह उसके दिल में शूल की तरह चुभनदायी होती है। वह अपने पति की बेरूखी को देखकर धनंजय के बारे में सोचती है कि यह मेरा बेटा होकर भी मुझे कुछ नहीं समझता है, मेरी कोई बात नहीं मानता है। अपने पिता के नक्शे कदम पर चल रहा है। ऐसी स्थिति पर वह सोचती है कि यह घर मेरे लिये घर नहीं बल्कि जेल है। मैं अब तक तो इस जेल से निकल कर भाग जाती परन्तु इकलौती संतान के मोहपाश में बंधी होने के कारण यहाँ से कहीं जा भी नहीं सकती।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में धनंजय की माँ की मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है।

2. स्पष्ट किया है कि कोई भी स्त्री जीवन की हर परिस्थिति से समझौता कर सकती है परन्तु सौतन किसी भी हालत में बर्दास्त नहीं कर सकती।

3. पारिवारिक परिस्थितियों का सुन्दर चित्रण किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

6.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

6.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. जैनेन्द्र द्वारा रचित कहानी 'इनाम' के नामकरण की सार्थकता स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में धनंजय इस वर्ष अपनी कक्षा में अव्वल श्रेणी में अपना स्थान प्राप्त करता है जिस पर उसकी माँ उसे पाँच रुपये का नगद इनाम प्रदान करती है। पिताजी के द्वारा दस रुपये पुरस्कार स्वरूप प्राप्त होते हैं और बालक अपने पिता से वचन ले लेता है कि वह प्रमिला से कभी न मिलेंगे तथा प्रमिला से इनाम बतौर घर पर कभी न आने के लिये बाध्य कर देता है। बालक धनंजय इस इनाम से अपने परिवार के तनावपूर्ण वातावरण और माता-पिता के वैमनस्य की भावना को समाप्त कर देता है अत: कहानी का शीर्षक 'इनाम' पूर्णत: सार्थक सिद्ध होता है।

प्रश्न- 2. धनंजय को किस उपलक्ष में इनाम दिया जाता है?

उत्तर – धनंजय कक्षा सात के सभी छात्रों में अव्वल श्रेणी की सफलता प्राप्त करता है और मात्र दस वर्ष की आयु में कक्षा आठ का छात्र बन जाता है।

प्रश्न- 3. धनंजय द्वारा उत्तीर्ण होने की खुशी में भी उसकी माँ प्रसन्न क्यों नहीं होती है?

उत्तर – जब धनंजय अव्वल आने की सूचना अपनी माँ को देता है तो वह उस समय गृह कार्यों में व्यस्त होती है और वह अपने पति के दुर्व्यवहार से खिन्न रहने के कारण प्रसन्न नहीं हो पाती है।

प्रश्न- 4. प्रस्तुत कहानी 'इनाम' की मूल संवेदना क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में नारी मन की घुटन और ममत्वपूर्ण हृदय की विवशता ही मूल संवेदना है।

प्रश्न- 5. 'इनाम' कहानी किस प्रवृत्ति की रचना है?

उत्तर – प्रस्तुत रचना नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व और मनोविश्लेषण प्रवृत्ति की कहानी है।

प्रश्न- 6. अपनी माँ के डाँट-फटकारने का धनंजय पर क्या असर होता है?

उत्तर – जब वह अपना परीक्षा परिणाम माँ को सुनाता है तो वह प्राय: निरुत्तर-सी रहती है और धनंजय को डाँटती रहती है। इस पर जहाँ धनंजय के बाल मन को ठेस पहुँचती है वहीं दूसरी ओर वह रोजमर्रा की सामान्य बात समझ कर भूल जाता है और सामान्य रहता है।

प्रश्न- 8. धनंजय ने अपनी सफलता पर अपने पिता व प्रमिला से क्या इनाम माँगा?

उत्तर – धनंजय ने अपने पिता से बतौर इनाम के यह वचन लिया कि वे आज के बाद कभी भी प्रमिला से नहीं मिलेंगे और प्रमिला से कभी भी घर पर न आने का इनाम माँगा।

प्रश्न- 9. धनंजय ने प्रमिला और अपने पिता को न मिलने के पीछे क्या भाव था?

उत्तर – वह जान गया था कि उसके घर का वातावरण प्रमिला और पिताजी का सम्बन्ध है और इसी वजह से उसकी माँ परेशान रहती है। इस वातावरण को पारिवारिक वातावरण बनाने के प्रयोजन से उसने ऐसा किया था।

प्रश्न- 10. धनंजय की माँ अपना सारा समय घर के कामों में क्यों व्यतीत करती है?

उत्तर – क्योंकि वह अपने पति के दुर्व्यवहार से दु:खी थी, उसे खालीपन काटने लगता था। इसी वजह से वह व्यस्त रहना पसन्द करती थी।

6.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. 'नारी हृदय की घुटन और उसके ममत्व की विवशता ही 'इनाम' कहानी की मूल संवेदना है।' कथन की पुष्टि कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'इनाम' जैनेन्द्र की उत्कृष्ट कहानी है जिसमें उन्होंने पात्र-योजनानुसार धनंजय की माँ को एक ऐसी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नारी के रूप में प्रस्तुत किया है, जो अपने पति के व्यवहार से आशंकित और अपमानित रहती है। उसका पति सुबह से शाम तक बिना किसी प्रकार की परवाह किये घर से बाहर रहता है। उसे न घर की चिन्ता, न बच्चे की चिन्ता और न पत्नी की चिन्ता रहती है। सारे दिन उसे ही घर के कामों में जूझना पड़ता है और घर की व्यवस्थाओं में जुटा रहना पड़ता है। इन सबसे ऊपर उठकर उसकी मन:स्थिति के खराब होने का कारण उसके पति का किसी अन्य प्रमिला नामक स्त्री से अनैतिक प्रेम-सम्बन्ध है। वह असंतुलित मनोदशा की मरीज बन जाती है। परिणाम यह होता है कि वह अपनी सारी घुटन और चिढ़न अपने इकलौते होनहार पुत्र पर क्रोध करके उतारती रहती है जिससे उसके नारी हृदय में निहित ममता का गला घुटता है। वह अपने पुत्र को एक माँ का दुलार नहीं दे पाती है। यद्यपि वह अपने पुत्र से सच्चे मन से प्रेम करती है किन्तु दिनभर उसे डाँट कर, फटकार कर, पीट कर अपना क्रोध और चिड़चिड़ाहट शान्त करती है। वह एक ओर तिरस्कृत पत्नी महसूस करती है और दूसरी ओर ममतामयी माँ का अनुभव करती है किन्तु यह उसकी विवशता है कि दोनों ही किरदार निभाने में वह असमर्थ है। न वह अच्छी पत्नी बन पाती है और न अच्छी माँ। वह सौतन प्रमिला के प्रति हमेशा सशंकित और आक्रान्त बनी रहती है। प्रस्तुत कहानी में धनंजय की माँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रश्न-2. इनाम कहानी का बाल पात्र धनंजय 'लड़के जैसा नहीं मानो बूढ़ा-बुजुर्ग जैसा व्यवहार करता है।' के आधार पर उसके चरित्र का उद्घाटन कीजिये।

उत्तर – जैनेन्द्र द्वारा रचित कहानी 'इनाम' का बाल पात्र धनंजय एक महत्त्वपूर्ण पात्र है। वह दस वर्षीय होशियार और होनहार बालक है जो कक्षा सात में अव्वल दर्ज़े की सफलता हासिल करता है। परीक्षा परिणाम की प्रसन्नता को अपने हृदय और मस्तिष्क में संजोये जब वह घर पर आकर अपनी माँ के साथ उसे बाँटना चाहता है तो वह अपनी माँ के रुखे व्यवहार से उदास हो जाता है तथा उसकी डाँट-फ़टकार से दु:खी हो जाता है। उसे लगता है कि कक्षा में अव्वल आना किसी के लिये कोई महत्व नहीं रखता है। धनंजय सहनशील है। वह अपनी माँ के हर व्यवहार को सहन करके भी हमेशा चुप रहता है और उसे परेशान नहीं करता है। वह अपनी माँ के द्वारा खूब पिटने पर भी शान्त रहकर खाट पर लेट जाता है। यद्यपि वह बालक है और नासमझ है किन्तु घर के तनावपूर्ण वातावरण और अपनी माँ की मनोदशा के कारण को वह समझता है किन्तु वह कुछ कर नहीं पाता है। खाना खाने के बाद वह अपने बर्तन यथास्थान पर स्वयं ही रख देता है तो उसकी माँ उसे बूढ़ा-बुज़ुर्ग जैसा व्यवहार करने वाला बताती है। वह अपनी माँ के स्वाभाविक दु:ख से भी दु:खी रहता है किन्तु परीक्षा परिणाम के दिन ही शाम को जब प्रमिला घर पर उसे मिठाई खिलाने और इनाम देने आती है तो बालक अपनी चतुराई से बतौर इनाम के अपने घर की सुख-शांति और तनावपूर्ण वातावरण से हमेशा-हमेशा के लिये मुक्ति पाने की दृष्टि से अपने पिता और प्रमिला से कुछ शर्तें मनवा लेता है। वह अपने पिता से आज के बाद प्रमिला से न मिलने और प्रमिला से कभी घर न आने का वचन माँगता है। अत: धनंजय चतुर और मननशील बालक है। जब उसकी माँ घर से बाहर न जाने की हिदायत देती है तो आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनके आदेश की अक्षरस: अनुपालना करता है। अत: कहानीकार जैनेन्द्र का धनंजय एक चतुर बालक, होशियार व होनहार, मननशील, आज्ञाकारी पुत्र, परिवार का शुभ चिन्तक, स्पष्टवादी और सहनशील बालक है।

6.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. जैनेन्द्र की उत्कृष्ट कहानी 'इनाम' की मुख्य पात्र 'धनंजय की माँ' का चरित्र-चित्रण कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'इनाम' नारी मन के अन्तर्द्वन्द्व एवं मनोविश्लेषण प्रवृत्ति की एक उत्कृष्ट कहानियों में है जिसमें जैनेन्द्र ने एक ऐसे नारी रूप को सफलतापूर्वक दर्शाया है जो अपने पति के व्यवहार से आशंकित व अपमानित रहती है। इस कहानी में पात्र योजना के अनुसार चार पात्र हैं, धनंजय, उसके पिता, उसकी माँ और प्रमिला। इन सभी पात्रों में बाल-पात्र धनंजय और उसकी माँ के चरित्र को विशेष तौर पर उद्घाटित किया गया है। कथानक के प्रारम्भ से अन्त तक धनंजय की माँ को एक ऐसी नारी के रूप में प्रस्तुत किया है जो विकृत मनोदशा से पीड़ित है जिसके हृदय का अन्तर्द्वन्द्व अन्त तक इसे चैन नहीं लेने देता है। वह अपने पति के आचरण से हमेशा चिड़चिड़ी और क्रोधी स्वभाव की रहती है और अपने इस स्वभाव की अग्नि को अपने पुत्र पर क्रोध कर या मारपीट कर शान्त करती है। इसनारी पात्र का चरित्र-चित्रण हम निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं –

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

1. उपेक्षित नारी – धनंजय की माँ अपने आपको उपेक्षित व तिरस्कृत नारी समझती है। उसके पति के रुखे व्यवहार से वह अपने आप में हताश हो चुकी है। उसके पति रोज सुबह छाता लेकर घर से निकल जाते हैं और शाम ढले घर पर लौटते हैं। उन्हें न घर की कोई परवाह रहती है, न बच्चे अथवा पत्नी की। उनका सम्बन्ध किसी अन्य प्रमिला नामक स्त्री से होता है, जिसे वह सहन नहीं कर पाती है। दिन भर उसके मानसिक तनाव रहता है और व्ह अपने पुत्र धनंजय पर क्रोध करती है। वह इतनी मानसिक रूप से असंतुलित हो चुकी है कि पुत्र के परीक्षा में अव्वल आने के महत्त्व का अनुभव भी नहीं कर पाती है और प्यार व दुलार करने या उसे उत्साहित करने की अपेक्षा अनेक खरी-खोटी सुनाती है, उसे डाँटती है, यहाँ तक कि उसे पीट भी देती है। वह अपने जीवन की प्रति पूर्णत: निराश हो जाती है और घर को जेल समझकर अपने आपको दुर्भाग्यशाली समझ लेती है, यहाँ तक कि वह इन सब बातों से तंग आकर अपनी जीवन-लीला समाप्त करने की बात भी सोच लेती है।

2. उत्साह विहीन – नारी के वैवाहिक जीवन में जो उत्साह होना चाहिये, जीवन के प्रति जो उमंग होनी चाहिये वह धनंजय की माँ में नहीं है। वह अपने पति के दुराचार से इतनी खिन्न हो चुकी है कि दिनभर अनमनी रहने लगती है और गृह-कार्यों में इतनी व्यस्त रहती है कि जैसे उसके जीवन में उसके अतिरिक्त कोई अन्य हो ही नहीं। अपने पुत्र के साथ ममत्वविहीन व्यवहार यह स्पष्ट करता है कि इन परेशानियों से उसकी नारी भावना भी समाप्त हो चुकी है। बच्चे की अति प्रशंसनीय सफलता पर तो हर माँ प्रसन्न होती है, उस पर नाज करती है किन्तु उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है। उसकी अपने घर परिवार के प्रति रुचि ही मर जाती है। इसलिये वह धनंजय से भी अपने ही ढंग से व्यवहार करती है।

3. तनावपूर्ण स्वभाव – धनंजय की माँ अपने आपको परित्यक्ता और उपेक्षित नारी की भाँति समझती है। उसके पति तो केवल नाम मात्र के पति हैं। सारे दिन वे पराई स्त्री प्रमिला के साथ मौज-मस्ती करते हैं। उन्हें अपने घर-परिवार की कत्तई परवाह नहीं रहती है। इस कारण धनंजय की माँ हमेशा तनाव-ग्रस्त रहती है। घर का वातावरण भी पूर्णत: अशांत रहता है और उसका स्वभाव अत्यन्त चिड़चिड़ा हो गया है। वह बात-बात पर धनंजय को डाँटती-फटकारती है और उसके व्यवहार को भी वह शंका भरी दृष्टि से देखती है। धनंजय का चुप रहना उसे असहनीय लगता है। उसके द्वारा अपने पिता के बारे में पूछना उसे बुरा लगता है। वह अपने पति के साथ भी अटपटा-सा व्यवहार करती है। उनकी खीझ या तो धनंजय पर उतारती है या अपने आप पर या घर के काम पर। जैनेन्द्र ने इस पात्र की विशेषता का स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया है।

4. गरम मिजाज – धनंजय की माँ के मस्तिष्क का तापमान हमेशा गर्मागरम रहता है। वह किसी से सीधे मुँह बात ही करना पसन्द नहीं करती है। इस गरम मिजाजी में उसके नारी मन की सभी सुकोमल भावनाएँ झुलस कर राख हो गई हैं और शेष रह गई है केवल तप जिसके प्रभाव में बेचारा बालक धनंजय तपता रहता है। वह काम करती रहती है और क्रोध बरसाती रहती है। घर में सर्वत्र क्रोध की ही तपन महसूस होती है। परीक्षा में अव्वल आने पर भी बालक को उसके क्रोध का शिकार होना पड़ता है।

5. अति व्यस्त गृहणी – घर का कार्य हर गृहणी का कर्त्तव्य होता है, वही उसकी पूजा है और वही उसके कुशल व्यक्तित्व का परिचय। किन्तु धनंजय की माँ की कार्यशैली कुछ विचित्र ही है। वह कार्य करते-करते इतनी तल्लीन हो जाती है कि सफाई की जगह अतिरिक्त सफाई, व्यवस्था की जगह अतिरिक्त व्यवस्था होने लग जाती है। वह एक ही कार्य को बार-बार और विस्तार पूर्वक कर बैठती है। जिससे उसे समय ही नहीं मिलता है। वह न तो अपने लख्तेज़िगर धनंजय के पास कभी शांति से बैठती है, न उससे कभी बात करती है और न ही शांति से उसकी बात ही सुन पाती है। बस काम, सिर्फ काम उसकी जिन्दगी है और वह व्यस्ततम महिला बन जाती है।

6. ममत्वपूर्ण हृदय – प्रस्तुत कहानी में जैनेन्द्र ने धनंजय की माँ को दो रूपों में प्रस्तुत किया है। उसका प्रथम रूप तो पति द्वारा तिरस्कृत व अपमानित रूप है, जिसमें वह सौतन के डर से ग्रसित है। उसके पतिदेव अन्य स्त्री के प्रेमजाल में फँसे हुए हैं। और वह उनके इस दुराचार को कतई बर्दाश्त नहीं कर पाती है। परिणामत: अपने विकृत और तुनक मिजाज का मजा अपने पुत्र व पति को हर रोज़ चखाती है। दूसरा यह कि वह धनंजय जैसे होनहार बालक की एक माँ है। माता कभी भी कुमाता नहीं होती के अनुसार वह अपने प्राण-प्रिय पुत्र के साथ क्रोध करती है, उसे डाँटती है और यहाँ तक कि उसे पीटती है किन्तु यह सब आन्तरिक मन से नहीं होता है, यह तो उसकी एक मजबूरी है। स्वाभाविक मजबूरी जिसे वह चाहकर भी दूर नहीं कर पाती है। जब उसका पुत्र कक्षा में अव्वल आने की सूचना अपनी माँ को देता है तो वह निरुत्तर होकर काम में लगी रहती है, किन्तु जब वह अपने पुत्र को पीटती है और

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वह सो जाता है तो सोते हुए देखकर उसके दिल में ममता का सागर उमड़ने लगता है। वह उसे दुलार करती है और सोचती है कि उसका इकलौता पुत्र कितना होशियार है कि कक्षा में अव्वल अया है। वह यह भी सोचती है कि उसका अव्वल आना इसीलिये साबित हुआ है कि वह इस संसार का उसका अपना इकलौता पुत्र है। वह धनंजय को उस सफलता पर खुश होकर इनाम स्वरूप पाँच रुपये भी देती है। यद्यपि वह उसके पति के दुराचार और पुत्र के व्यवहार से खिन्न है और घर छोड़ देना या मर जाना चाहती है किन्तु पुत्र मोह वश वह ऐसा कुछ भी नहीं कर पाती है अत: वह एक ममतामयी माँ है। कथाकार ने इस चारित्रिक गुण को अत्यन्त मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है।

6.6 सारांश

अन्त में हम कह सकते हैं कि धनंजय की माँ का चरित्र नारी स्वभाव के अनुकूल है। परित्यक्ता नारी व ममतामयी माँ के रूप में यह पात्र अत्यंत स्वाभाविक व मनोवैज्ञानिक ढंग का बन गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई-7 : अज्ञेय

संरचना

7.0 प्रस्तावना

7.1 उद्देश्य

7.2 परिचय

7.3 सेव और देव

7.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

7.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

7.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

7.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

7.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

7.6 सारांश

7.0 प्रस्तावना

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कुशल कवि, निबन्धकार, नाटककार और कथाकार अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' है। इनका जन्म 7 मार्च, 1911 को गोरखपुर जिले के कासिया के एक उत्खनन शिविर में हुआ था। इनके पिताश्री पुरातत्त्व विभाग में कार्यरत थे और उनका कार्य-स्थल प्राय: परिवर्तित रहता था। इसी कारण से अज्ञेय की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्होंने लाहौर के फॉरमन कॉलेज से बी.एस-सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। अपने अध्ययन को नियमितता प्रदान करने की दृष्टि से इन्होंने स्नातकोत्तर उपाधि के लिए अंग्रेजी विषय में प्रवेश लिया किन्तु क्रांतिकारी आन्दोलनों में सक्रिय सहभागिता के कारण उनका शैक्षणिक तारतम्य टूट गया। 1930 में क्रांतिकारी आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका करते समय इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। लगभग सात वर्षों तक कारागार में नजरबन्द रहे। अज्ञेय का रचनाक्रम इसी अवधि में प्रारम्भ हो गया था। यहाँ रहकर उन्होंने राजनैतिक, मनोविज्ञान और कानून का गहन अध्ययन किया।

7.1 उद्देश्य

यहाँ हम अत्रेय एवं उनकी कहानी सेव और देव के बारे में जानकारी करेंगे।

7.2 परिचय

1936 में अज्ञेय को 'सैनिक' पत्रिका के सम्पादन मण्डल में नियुक्त कर दिया गया और उसी दौरान ये आकाशवाणी में भी कार्य करते रहे। 1943 ई. में स्वेच्छा से सैन्य सेवा में सम्मिलित होकर बर्मा के मोर्चे पर भी गये। ये अनुभव की दृष्टि से काफी सम्पन्न थे। इसका मूल कारण इनकी भ्रमणशील गतिविधियाँ रहो। ये अपने समय में कई विदेशी यात्राओं में भी गये और वहाँ के महाविद्यालयों में अध्ययन करने का सुअवसर भी इन्हें प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन भी किये, जिनमें 'दिनमान', 'प्रतीक', 'नया प्रतीक' आदि प्रमुख थे। इन्होंने सम्पादन कार्यक्षेत्र में रहकर भारतीय ज्ञान-पीठ और चेकोस्लाविया का गोल्डन रीथ (स्वर्ण-भाल) पुरस्कार प्राप्त किया। अज्ञेय जीवन के अन्तिम समय में काफी सक्रिय हो गये थे। भारतीय ज्ञान-पीठ पुरस्कार से प्राप्त धनराशि से संस्कृति और रचनाकर्म को प्रोत्साहन दिया तथा वत्सलनिधि की स्थापना की। 4 अप्रैल, 1987 को ज्ञेय था देहावसान हो गया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेय न केवल एक कथाकार थे अपितु कुशल कवि, आलोचक, निबन्धकार, नाटककार भी थे जिनसे इनके व्यक्तित्व का संस्पर्श मिलता है। इनकी रचनाओं में इनके विद्रोही व्यक्तित्व

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है। इनकी संरचनाएँ अधिकतम बौद्धिकता से आवेष्टित हैं। साथ ही स्वाधीनता की चेतना अपनी रचनाओं में कूट-कूट कर समाहित की है। इन्हीं कारणों से इनकी रचनाएँ शिल्प की दृष्टि से असाधारण बनती चली गई। अज्ञेय द्वारा अनेक रचनाएँ की गई हैं, जिनमें 'विपथगा', 'परंपरा' और 'कोठारी की बात' इनके प्रमुख कहानी संकलन हैं।

7.3 सेव और देव

प्रस्तुत कहानी 'सेव और देव' अज्ञेय द्वारा रचित उत्कृष्ट कहानियों में से एक रही है। यह तथ्य निर्विवाद है कि मूल्य-चेतना का अपना एक मुक्त रूप होता है जो विवादों से परे सहज और स्वत: स्फूर्त होने वाला है। प्रस्तुत कहानी में इसी यथार्थ को चरितार्थ किया गया है। इस कहानी के कथानायक एक बुद्धिजीवी दर्जे के व्यक्तित्व हैं जिनका नाम प्रो. गजानन्द पण्डित है, जो दिल्ली के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में इतिहास और पुरातत्त्व विभाग में अध्यापन कार्य करते हैं। एक बार पंडित गजानन्द पर्वतीय स्थल का भ्रमण करने के अभिप्राय से कुलू पहुँच जाते हैं जहाँ पर प्राचीनतम अवशेष ढूँढने का प्रयोजन सिद्ध करने का प्रयास करते हैं और वहाँ पहुँचते ही पर्वतीय प्रदेश का भ्रमण करने निकल पड़ते हैं। इनका मन वहाँ के ग्रामीण और पर्वतीय संस्कृति की सरलता में तल्लीन हो जाता है। दूर-दराज चलते-चलते इन्हें सेव के बगीचों का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त होता है। मार्ग के दोनों ओर सेव के बगीचों को देखकर इनका मन बाग-बाग हो उठता है। पंडितजी उस क्षेत्र के फलों के महत्त्व से परिचित थे किन्तु उन फलों से लदे हुए पेड़ों के बागों का आनन्द उन्हें पहली बार प्राप्त होता है। अचानक उन बागों में सेवों की चोरी करते हुए एक लड़के पर उनकी नजर पड़ती है। वह उन्हें बरदाश्त नहीं होता है, इसलिये वे उस लड़के को बुलाकर अनेक प्रकार से खरी-खोटी सुनाते हुए डाँट-फटकार लगाते हैं, यहाँ तक कि उसके गाल पर एक करारा तमाचा भी रसीद कर देते हैं और वे सोचते हैं कि ''सेव का सड़ जाना अच्छा किन्तु चोर को मिलना अच्छा नहीं।'' शनै:-शनै: वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेते-लेते पूछते हुए एक निर्जन स्थल पर देवी के मन्दिर में पहुँचे। उस भग्नावेश प्राचीन मंदिर में उन्होंने कई देव प्रतिमाओं को देखा जिनमें पीतल की गणेश प्रतिमा और संगमरमर के पत्थर से निर्मित शिवलिंग भी था किन्तु काले पत्थर से निर्मित देवी की प्रतिमा ने उन्हें बहुत प्रभावित किया था। देवी की वह प्रतिमा अत्यन्त कीमती और प्राचीनतम थी। उसे देखकर प्रोफेसर साहब ने सोचा कि यहाँ निर्जन स्थल पर इस देव प्रतिमा का कोई महत्त्व नहीं है, क्योंकि इसकी न यहाँ पर पूजा होती है और न कोई यहाँ इसके दर्शन करने ही आता है। काफी सोचने-समझने के बाद उन्होंने कुछ निर्णय लिया और उसे अपने ओवर कोट में छुपाकर लौटने लगते हैं। रास्ते में पुन: वे उसी लड़के को सेवों की चोरी करते हुए पकड़ लेते हैं और इस बार उसे कुछ ज्यादा ही डाँट-फटकार लगाते हैं। अचानक उनके मस्तिष्क में एक अहसास का प्रकाश कौंधता है और सोचते हैं कि इसने तो केवल सेव ही चुराये हैं। उन्होंने तो सारा देव स्थान ही लूट लिया है। वे तुरन्त उसी स्थान पर चले जाते हैं जहाँ से मूर्ति ली गई थी और उसे यथास्थान स्थापित कर देते हैं और बुद्धि की प्रेरणा से पूरी तरह बहरे हो जाते हैं।

7.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

''पहाड़ी रास्ता आगे एकाएक खुल गया था। चीड़ के वृक्ष समाप्त हो गये। रास्ते को पार करता हुआ आगे एक झरना बह रहा था, उसका जितना अंश समतल भूमि में था, उस पर तो छाया थी लेकिन जहाँ वह मार्ग के एक ओर नीचे गिरता था, वहाँ प्रपात के फेन पर सूर्य की किरणें पड़ रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि अन्धकार की कोख से चाँदी का प्रवाह फूट पड़ा हो – या प्रकृति – नायिका की कजरारी आँखों से स्नेह गद-गद आँसुओं की झड़ी....।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है जिसमें कथाकार 'अज्ञेय' ने स्पष्ट किया है कि प्रो. गजानंद पंडित एक बार पुरातत्त्व अवशेषों की खोज में हिमाचल प्रदेश गये। वहाँ उन्होंने कुलू के पहाड़ी क्षेत्र में भ्रमण करने का निश्चय किया और निकल पड़े। वहाँ मार्ग में उन्होंने प्राकृतिक सौन्दर्य का मन-मोहक दृश्य देखा जिस का मनोहारी वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया है।

व्याख्या – कुलू पहाड़ी की ओर जाते समय प्रो. गजानन को रास्ते में दोनों ओर घने चीड़ के पेड़ दिखाई दिये किन्तु मार्ग तय करते-करते वे प्राय: समाप्त हो गये और दूर उस रास्ते के मध्य एक पहाड़ी पर से गिरता हुआ सुन्दर झरना दिखाई दिया। झरने के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गिरने का दृश्य इतना मनोहारी था कि प्रोफेसर उसे देखकर आश्चर्यचकित हो गये। उस झरने के गिरने के स्थान पर नीचे की ओर समतल भूमि पर छाँव थी किन्तु रास्ते में जहाँ पर एक ओर वह जल-प्रपात हो रहा था। वह सूर्य के प्रकाश में अत्यन्त सौन्दर्य युक्त लग रहा था। वह ऐसा लग रहा था मानो अन्धकार की कोख से शुभ्र, चमकीला चाँदी का प्रवाह हो अथवा प्रकृति रूपी नायिका की सुन्दर कजरारी आँखों से प्रेमपूरित अश्रुधार प्रवाहित हो रही हो। कथाकार अज्ञेय ने कुलू की पहाड़ियों के मार्ग के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहा कि वहाँ का वह दृश्य अत्यंत मनोहारी लग रहा थ।

विशेष –

1. प्रस्तुत अवतरण में हिमाचल प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन किया है।
2. पर्वतीय सौन्दर्य का आलंकारिक वर्णन है।
3. जल-प्रापात के निचले हिस्से को नायिका की कजरारी आँखें तथा सूर्य के प्रकाश से शुभ्र जल को चाँदी का प्रवाह बताया है।
4. भाषा-शैली, वर्णनात्मक और सरल है।

(2)

"मंदिर की बुरी हालत थी, भीतर न जाने कब से बलि पशुओं के सींग – बकरे और हिरण के पड़े हुए थे – जो सूखकर धूल के रंग के हो गये। उन पर कीड़े भी चल रहे थे। फर्श के पत्थर के जोड़ों में काई उग आई थी। इन सींगों के ढेर से परे देवी की काले पत्थर की मूर्त्ति एक ओर लुढक गई थी। पास में पड़ी गणेशजी की पीतल की मूर्त्ति जंग से विकृत हो गई थी, केवल दूसरी ओर खड़ा पत्थर का श्वेत शिवलिंग अब भी साफ, चिकना और सधे हुए सिपाही की तरह साफ और शान्त खड़ा हुआ था। आस-पास की जर्जर अवस्था में उसके उस दर्पोन्नत भाव से ऐसा जान पड़ता था मानो क्रुद्ध होकर कह रहा हो "मेरी इस निम्रत्त अन्त:शाला में आकर मेरे कुटुम्ब की शांति भंग करने वाले तुम कौन हो ?"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है जिसमें कथाकार अज्ञेय ने कुलू की पहाड़ी पर अतिप्राचीन शिवालय और देवी के मन्दिर का वर्णन प्रस्तुत किया है।

व्याख्या – प्रो. गजानन पांडेत दिल्ली के एक महाविद्यालय में पुरातत्त्व के प्राध्यापक हैं जो आते पौराणिक अवशेषों की खोज के लिये कुलू के अतिथिगृह में रूकते हैं। वहाँ के लोगों से मन्दिरों की पूछताछ करने के बाद वे देवी के एक अति प्राचीन मंदिर को देखने चल पड़ते हैं जो वहाँ की एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित था।

प्रोफेसर गजानन ने जब मन्दिर को करीब जाकर देखा और पाया कि उसका मुख्य द्वार के कुण्डे की अटकी हुई कील को निकाला और द्वार खोलने का प्रयास किया, परिणाम स्वरूप दरवाजा खुला नहीं बल्कि आगे की ओर गिर पड़ा। नायक ने वह किवाड़ उठाकर एक ओर रख दिया और कुछ समय प्रतीक्षा करने लगे, जिससे कि अन्दर की सीलन भरी बदबू निकल जाये।

मंदिर की स्थिति अत्यन्त खराब थी। उसमें प्राचीन काल में देवी को प्रसन्न करने के प्रयोजन से पशुबलि दी जाती थी। बकरे और हिरण के सींग वहाँ पड़े हुए थे। अधिक पुराने हो जाने के कारण उन पर मिट्टी जम गई थी और वे भूरे रंग के हो गये थे जिन पर कीड़े चल रहे थे तथा फर्श के पत्थरों के बीच-बीच काई जमा हो गई थी। सींगों के ढेर के पास काले पत्थर की देवी की मूर्ति लुढकी हुई पड़ी थी और उसके पास में गणेशजी की सुन्दर पीतल की मूर्ति जंग खाई हुई रखी थी। एक विशेष बात यह थी कि वहाँ का शिवलिंग, जो कि सफेद पत्थरों से निर्मित था, वह आज सैंकड़ों वर्षों के बाद भी सौन्दर्य बिखेर रहा था। वहाँ शिव की मूर्ति एक तने हुए सिपाही की तरह लग रही थी और कथा नायक को ऐसी लग रही थी मानो कह रही हो कि हे बटोही ! तुम कौन हो, जो मेरी इस निभ्रत्तशाला में आकर मेरे परिवार की चिरशांति भंग करने आये हो ?"

विशेष – 1. अति प्राचीन भग्न देवालय की स्थिति का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।
2. गणेश, पार्वती को शिव का परिवार बताया गया है।
3. उस युग में प्रचलित बलि-प्रथा को स्पष्ट किया गया है।
4. भाषा-शैली सरल और वर्णनात्मक है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(3)

"मूर्ति अत्यन्त सुन्दर थी। पाँच सौ वर्ष से पुरानी नहीं थी। इस लम्बी अवधि का उस पर जरा भी प्रभाव नहीं पड़ा था या पड़ा था तो पत्थर को और चिकना करके मूर्त्ति को सुन्दर ही बनाया गया था। मूर्ति कहीं बिकती तो तीन-चार हजार से कम नहीं होती। किसी अच्छे पारखी के पास हो तो दस हजार भी कुछ ज्यादा मूल्य न होता और यह यहाँ ऐसे उपेक्षित हाल में पड़ी है, न जाने कब से इस मंदिर तक कोई आया भी नहीं।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है जिसमें कथाकार ने कथा नायक के माध्यम से अति-प्राचीन देवी प्रतिमा के मूल्य और उसके महत्त्व को बताया है।

व्याख्या – कथाकार अज्ञेय ने स्पष्ट किया है कि प्रो. गजानन पंडित जब कुल्लू की ऊँची पहाड़ी पर पुरातत्त्व के अवशेषों की खोज करते-करते एक अति प्राचीन मन्दिर में पहुँचे तो उन्होंने उस निर्जन स्थान पर एक अति प्राचीन मंदिर को जीर्ण-क्षीण अवस्था में देखा। वहाँ पर एक गणेश प्रतिमा, एक शिवलिंग और एक देवी की काले चिकने पत्थर की बनी हुई मूर्ति को देखा। वह मूर्ति अति प्राचीन थी, लगभग पाँच-सौ वर्षों से कम नहीं लग रही थी किन्तु इस लम्बी अवधि का उस पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा अपितु समय के साथ-साथ उसमें निखार आया। वह चिकनी हो गई थी और सुन्दर लगने लगी थी। प्रो. ने अनुमान लगाया कि उसकी कीमत यदि बाजार में आँकी जाये तो तीन-चार हजार से कम नहीं है और यदि किसी मूर्ति विशेषज्ञ के पास इसे बेचा जाये तो दस हजार से कम इसका मूल्य नहीं होगा। इतनी कीमती मूर्ति यहाँ इस निर्जन स्थान पर महत्त्वहीन-सी पड़ी है। यह एक ऐसा मन्दिर है, जहाँ पर न जाने कितने समय से कोई भी न इसकी पूजा करने आया है और न इसके दर्शन ही।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण के माध्यम से पौराणिक अवशेषों के महत्त्व और उसके मूल्य को स्पष्ट किया गया है।

2. कथा नायक प्रो. गजानन को कला का सच्चा पारखी बताया गया है।

3. भाषा सरल, रोचक और प्रभावशाली है।

(4)

"वे उन थोड़े से लोगों में से हैं जिनका पेशा और मनोरंजन एक ही है। मनोरंजन के लिये भी वे पुरातत्त्व की उपत्यकाओं में भी वे यही सोचते हुए आये हैं कि यहाँ भारत की प्राचीनतम सभ्यता के अवशेष मिलेंगे और हिन्दूकाल की शिल्प-कला के नमूने और धातु या प्रस्तर था। सुधा की मूर्तियों और न जाने क्या-क्या....लेकिन इतना सब होते हुए भी सौन्दर्य के प्रति जीते-जागते स्पन्दन युक्त क्षण-भंगुर सौन्दर्य के प्रति उनकी आँखें अन्धी नहीं हैं।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है, जिसमें अज्ञेय ने पहाड़ी क्षेत्र का वर्णन करते हुए प्रो. गजानन पंडित के प्रवास का स्पष्टीकरण किया है।

व्याख्या – प्रो. गजानन पंडित दिल्ली के पुरातत्त्व विभाग में कार्यरत हैं और इनका पेशा इसी विषय पर विभिन्न प्रकार के रहस्यमयी पौराणिक अवशेषों की जानकारी करना है किन्तु ये इस पेशे को न केवल अपनी आजीविका का माध्यम समझते हैं अपितु इसे मनोरंजन का साधन भी समझते हैं। ऐसे लोग बहुत कम होते हैं जिनका पेशा और मनोरंजन एक ही होता है। प्रो. गजानन उन थोड़े से लोगों में एक थे। वे जहाँ भी जाते हैं वहाँ प्राचीनतम अवशेषों की खोज के साथ-साथ वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य से अपने मनोरंजन का रिक्त स्थान बड़ी रूचि के साथ पूरा करते हैं। वे वहाँ जाने से पूर्व सोचते हैं कि जिस क्षेत्र को मैंने अपना प्रवास चुना है वह हिमाचल प्रदेश का अत्यन्त रमणीय पर्वतीय क्षेत्र है। वहाँ पर न केवल पौराणिक अवशेष ही प्राप्त होंगे अपितु आशातीत प्राकृतिक सौन्दर्य भी देखने को मिलेगा, वहाँ प्राचीन भारत के अवशेष भी मिलेंगे। उन्हें यह आशा भी थी कि उन्हें कुलू पहाड़ पर हिन्दू शिल्पकला के नमूने, धातु, पत्थर या चूने की मूर्तियाँ आदि अनेक दुर्लभ वस्तुएँ देखने को मिलेंगी। जब प्रो. गजानन इस प्रकार की अनेक आशाएँ लेकर कुलू पहाड़ी पर जाते हैं तो वहाँ के रास्ते में से ही प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेना प्रारम्भ कर दिया। चीड़ के पेड़ों से ढँकी हुई सड़कें, झरने, सेब के बाग आदि का आनन्द उनको मिला। इस कारण वहाँ के स्पन्दनयुक्त अर्थात् सचेतन एवं निरंतर परिवर्तनशील प्रकृति का सौन्दर्य देखकर वे अत्यन्त भावुक हो गये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में प्रो. गजानन को प्रकृति के प्रति भावुक हृदय वाला बताया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2. प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण किया गया है।

3. भाषा भावपूर्ण है, शैली संश्लिष्ट और विवेचनात्मक है।

(5)

".....उफ, देवत्व की कितनी उपेक्षा। मानव नश्वर है, यह मर जाये और उसकी अस्थियों पर कीड़े रेंगें, यह समझ में आता है, लेकिन देवता पत्थर जड़ है, उसका महत्त्व कुछ नहीं लेकिन मूर्ति तो देवता की ही है। देवत्व को चिरन्तनता की निशानी तो है। एक भावना है, पर भावना आदरणीय है, क्या मूर्ति यहीं पड़ी रहने के काबिल है। इन कीड़ों के पास, जिनके पास श्रद्धा को दिल नहीं, पूजने को हाथ नहीं, देखने को आँखें नहीं, छूने को त्वचा नहीं, टटोलने को ये हिलती हुई गन्दी मूछें हैं.....यह मूर्ति कहीं ठिकाने से होती।"

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है जिसमें कहानीकार 'अज्ञेय' ने अति प्राचीन ऐतिहासिक देवी की मूर्ति के महत्त्व को और उसकी मौजूदा स्थिति को स्पष्ट किया है।

व्याख्या—प्रो. गजानन पंडित जब कुलू की ऊँची निर्जन पहाड़ी पर एक जीर्ण-क्षीण देवालय में गणेश, शिव और देवी की मूर्तियों को देखते हैं तो उन्हें उनकी उपेक्षित स्थिति पर दुःख होता है। वे सोचते हैं कि देवी की यह कितनी सुन्दर मूर्ति है और इसमें देवत्व का सौन्दर्य कितना समाहित है किन्तु इसकी यहाँ निर्जन जंगल में कितनी उपेक्षा हो रही है। इसकी इतनी उपेक्षा ठीक नहीं है। वे सोचते हैं कि यदि किसी निर्जन स्थान पर मानव की मौत हो जाये तो उसके मृत शरीर पर कीड़े रेंगने लगते हैं और उसे तो एक बार सहन किया जा सकता है क्योंकि मानव जीवन मर्त्य है और यदि उसके मर्त्य शरीर को कोई उपेक्षा करे यह तो समझ में भी आता है किन्तु यह बात समझ से परे है कि देवताओं की इतनी उपेक्षा हो सकती है। यदि कोई ऐसा सोचे कि यह देवता नहीं, यह तो निरा जड़ पाषाण प्रतिमा मात्र है तो यह गलत है। मूर्ति चाहे पत्थर की हो, किन्तु होती तो देवता ही है। आस्थावान हर प्रतिमा देव-तुल्य पूज्य होती है। पत्थर होने पर भी आस्था के आधार पर उसमें देवत्व की प्रतिष्ठा हुई है और यही हमारे भावों की परम निशानी है। प्रो. गजानन यह सोचते हैं कि यह सुन्दर मूर्ति इस निर्जन स्थान पर उपेक्षित भाव से पड़ी रहे, यह सब ठीक नहीं। यहाँ इस मूर्ति के पास बकरा और हिरण के सींग और हड्डियाँ पड़ी हुई हैं। इसके चारों ओर कीड़े रेंग रहे हैं। ये कीड़े ऐसे जीव हैं जिनके पास भावना नहीं है, श्रद्धायुक्त हृदय-विहीन हैं। स्पर्श करने के लिये त्वचा नहीं है। पूजा करने के लिये हाथ नहीं हैं इनके पास तो इन्हें छूने के लिये गन्दी-सी हिलती हुई मूछें हैं, जिनसे ये इन्हें अपवित्र बनाये हुए है। अतः यही अच्छा होगा कि इसको कहीं अन्यत्र स्थापित किया जाये।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में प्रो. गजानन की देवताओं के प्रति आस्था को स्पष्ट किया है।

2. देव मूर्तियों की उपेक्षित स्थिति को देखकर कथा नायक के मन में श्रद्धा भाव दर्शाया है।

3. प्रस्तुत कहानी में कथानायक की मनःस्थिति का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

4. भाषा तत्सम-प्रधान व भावपूर्ण है।

5. शैली भावात्मक और सरल है।

(6)

"दिल इतना क्यों धड़क रहा है? प्रोफेसर साहब को ऐसा लगा जैसे वे डर रहे हैं। फिर उन्हें इस विचार से हँसी आ गई। डर किससे रहा हूँ मैं? मैं भी क्या यहाँ के लोगों की तरह अंधविश्वासी हूँ, जो प्रेतों को मानूँगा? कविता के लिहाज से भले ही मुझे सोचना अच्छा लगे कि यहाँ प्रेत बसते हैं और रात में जब अंधेरा हो जाता है तब इस बंद मन्दिर में देवी के आस-पास नाचते होंगे.....देवी है, गणेश हैं, शिव हैं तो इनके गण भी तो होने ही चाहिये।"

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है जिसके कथाकार 'अज्ञेय' हैं। प्रस्तुत कहानी में बताया गया है कि जब कथानायक ने प्राचीन देवालय में अतिप्राचीन मूर्तियों को देखा तो उसका मन लालची हो गया और वह उस देवी की मूर्ति को चुराने के लक्ष्य से उस मन्दिर में घुसा। जब वह उसे उठाने लगा तो उसका हृदय धड़कने लगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्याख्या – जब कथा नायक ने देवी की मूर्ति को चुराने की दृष्टि से उठाया तो उसका मन कुछ भयभीत-सा हुआ और हृदय धड़कने लगा। उस समय उसे अपने चोरी जैसे अनैतिक कार्य का अपराध बोध होने लगा। फिर अपनी ही कमजोरी पर वह हँसने लगा। वह सोचने लगा कि इस समय निर्जन स्थान पर कोई नहीं देख रहा है। उसे गाँव वालों का कथन याद आ गया कि यहाँ पर भूत-प्रेत निवास करते हैं – इस विचार से उसने सोचा कि डरना गलत है क्योंकि मैं भूत-प्रेतों से नहीं डरता हूँ। यहाँ के लोग तो अंधविश्वासी हैं और मैं अंधविश्वासी नहीं हूँ।

कथा नायक ने सोचा कि कविता लेखन की दृष्टि से यह सोचना भले ही अच्छा लगे कि यहाँ पर भूत-प्रेत निवास करते हैं और जब रात का घना अंधकार होता है तो वे सब यहाँ मूर्ति के आस-पास नृत्य करते हैं। जहाँ शिवजी का निवास हो, गणेशजी विराजमान हों और जहाँ पर देवी का वास हो वहाँ पर उनके गणों का होना तो स्वाभाविक ही है किन्तु यह सब एक मिथ्या या मात्र कल्पना है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथा नायक की लालची प्रवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

2. कथा नायक को डरपोक भी बताया है और अंधविश्वासों में भरोसा नहीं करने वाला बताया है।

3. भाषा-शैली सरल, प्रभावपूर्ण और विवेचनात्मक है।

(7)

"उस समय प्रोफेसर साहब के मन में जो कुलू-प्रेम का ही नहीं, मानव-प्रेम का, संसार भर की शुभेच्छा का रस उमड़ रहा था, उसकी बराबरी कुलू के रस-भरे सेव भी क्या करते। प्रोफेसर साहब की स्नेह उड़ेलती हुई दृष्टि के नीचे वे मानो और पककर, और रस से भर जाते हैं। उनका रंग औरलाल हो जाता था। कितने रस-गद्‌गद् हो रहे थे प्रोफेसर साहब।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है जिसमें कथाकार अज्ञेय ने स्पष्ट किया है कि कथा नायक मूर्ति चुराकर गाँव वालों की नजरों से अपने आपको बचाता हुआ पुन: सेव के बागों के रास्ते पर आ जाता है और वहाँ पर एक लड़के को सेव फल चुराता हुआ देखता है।''

व्याख्या – जिस आशातीत भाव से कथा नायक कुलू की पहाड़ियों में जाता है उसे उसी भावना के अनुरूप एक अति प्राचीन और वेश कीमती सुन्दर मूर्ति पहले ही दिन मिल गई थी। उसे चुराकर बड़ी प्रसन्नता के साथ अपने गन्तव्य की ओर जा रहा था। उस समय उसके मन में कुलू के प्राकृतिक सौन्दर्य का नहीं अपितु सारे संसार के मानवों के प्रति प्रेम उमड़ रहा था। वह मानव की कलाप्रियता और मूर्ति-निर्माण-कला की शुभेच्छा का रस उमड़ रहा था। इस समय इस रस के सम्मुख कुलू के सेवों का रस फीका लगा रहा था। कहानीकार काव्यकारों की तरह भावुक होकर कहता है कि उस समय के आनन्दातिरेक के कारण उसके नेत्र गद्‌गद् मन के कारण रसपूर्ण हो गये थे, उसकी चेतना रसमय हो गई थी। इस कारण कुलू के प्राकृतिक सौन्दर्य की ओर वह अपनी स्नेह दृष्टि से निहार रहा था। मानो उसकी उस स्नेह दृष्टि से कुलू के सेव पककर मीठे रस से भर रहे थे और पक जाने के कारण उनमें लालिमा हो गई थी। उस समय अपनी सफलता पर उसे बहुत प्रसन्नता हो रही थी।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथाकार ने कथानायक की मानसिक स्थिति का स्वाभाविक वर्णन किया है।

2. कथा नायक के हर्षोल्लास का चित्रण किया गया है।

3. भाषा शैली सरल, तत्सम प्रधान और भावात्मक है।

(8)

"तर्क उन्हें सुझाने लगा कि बेवकूफी है, उनकी दलील बिल्कुल गलत है, तुलना आधारहीन है। लेकिन वे न जाने इस सब बुद्धि की प्रेरणा के प्रति बहरे हो गये थे। जैसे कोलाहल बढने लगा, उसे रोके रखने के लिये उसकी गति भी तीव्रतर होती गई। जब वे आँधी की तरह गाँव से गुजरे, तब घर जाता हुआ प्रत्येक व्यक्ति कुछ विस्मय से उनकी ओर देखता और उन्हें लगता कि वे उनकी छाती की ओर ही देख रहे हैं। जैसे उस काले ओवरकोट में छुपी हुई देवमूर्त्ति की ओर, उसके पीछे भी प्रोफेसर साहब के दिल में बसे हुए पाप को अच्छी तरह जानते हैं।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' को 'सेव और देव' पाठ से लिया गया है। प्रस्तुत कहानी में अज्ञेय ने प्रो. गजानन के अन्तर्द्वन्द्व को स्पष्ट किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

व्याख्या – जब कहानी के नायक ने देवी की मूर्ति को चुराकर ले जाने की बात अपने मन में सोची और वे उस मूर्ति को चुराने के लिए पुनः तर्कों के घेरे में अपने आपको महसूस करने लगे। वे पुनः उस मूर्ति को उसी स्थान पर रखने जाते समय सोचने लगे कि इसे वापिस मन्दिर में पहुँचाना व्यर्थ है परन्तु दूसरा विचार यह था कि यह गलत काम नहीं करना चाहिये। जब सेव चुराने वाले लड़के को वह डाँट सकता है तो वह स्वयं तो मूर्ति की चोरी करके लाया है। वह पुनः सोचता है कि सेव चुराने वाले से स्वयं की तुलना नहीं करनी चाहिये। इस प्रकार वह अपने मानसिक द्वन्द्व में उलझा हुआ अपनी लालची प्रवृत्ति की इस प्रेरणा को अनसुना कर जाता है। जैसे-जैसे उसके विचारों की वृद्धि का कोलाहल बढने लगा, वैसे-वैसे उसकी चाल तेज होती जा रही थी और वह आँधी की तरह चलता हुआ उस गाँव से गुजरने लगा जिससे कुछ समय पूर्व मूर्ति को उठाकर लाया था। अपने मन में अपराध बोध के कारण उस समय प्रोफेसर को गाँव का प्रत्येक व्यक्ति ऐसा लगा रहा था मानो वह उसी को घूर रहा हो और घर जाता हुआ प्रत्येक व्यक्ति कुछ विस्मय से प्रोफेसर के ओवरकोट के नीचे देख रहा था तथा उसमें छुपाई हुई मूर्ति के रहस्य को जान रहा था। इस तरह की आशंका से प्रोफेसर सोचने लगा था कि गाँव के सब लोग उसके पाप कर्म को अच्छी तरह जान गये हैं और सबकी नजरें उसे विस्मय और घृणा की दृष्टि से देख रहे हैं।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में स्पष्ट किया गया है कि जो व्यक्ति गलत कार्य करता है वह अनेक आशंकाओं से स्वयं ग्रस्त हो जाता है। चोर की दाढी में तिनका कहावत चरितार्थ होती है।

2. अवतरण की भाषा सरल, रोचक और प्रभावशाली है।

7.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

7.5.1 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. अज्ञेय का पूरा नाम क्या है ?

उत्तर – अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' है।

प्रश्न-2. सेव और देव' कहानी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'सेव और देव' में स्पष्ट व्यंग्य किया है, कि ''मूल्य चेतना तार्किक नहीं होती है परन्तु आत्मिक प्रेरणा से स्वतः स्फूर्त होती है।''

प्रश्न-3. 'इसने तो सेव चुराया है, तुम देवस्थान लूट लाये।'' यह कथन किसका है और इसमें कौन-सा भाव निहित है ?

उत्तर – यह कथन स्वयं कथानायक प्रो. गजानन पंडित का है। इसमें उनके अपराध बोध का भाव निहित है।

प्रश्न-4. 'सेव और देव' कहानी के नायक प्रो. गजानन पंडित की ऐसी कौनसी विशेषता थी जो बहुत कम लोगों में मिलती है ?

उत्तर – प्रोफेसर गजानन पंडित का पेशा और मनोरंजन एक ही है, जो बहुत कम लोगों में मिलता है।

प्रश्न-5. 'सेव और देव' कहानी के नायक का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी के नायक का नाम प्रो. गजानन पंडित है जो दिल्ली के एक महाविद्यालय में प्राचीन इतिहास और पुरातत्त्व विभाग के प्राध्यापक हैं। ये पौराणिक अवशेषों की खोज में लगे रहते हैं। यही इनका पेशा है और यही इनका मनोरंजन।

प्रश्न-6. प्रो. गजानन कहाँ ऐतिहासिक खोज के लिये कहाँ गये ?

उत्तर – प्रो. गजानन हिमाचल प्रदेश में कुलू की पहाड़ियों में ऐतिहासिक अवशेषों की खोज के लिये गये।

प्रश्न-7. कूलू पर्वतीय क्षेत्र में कथा नायक ने क्या देखा?

उत्तर – प्रो. गजानन ने कुलू के पर्वतीय प्रदेश में पहाड़ियों का सौन्दर्य, सरल मानव व्यवहार और ग्राम संस्कृति की सरलता देखी।

प्रश्न-8. भगवान् मनु का प्रसिद्ध मंदिर कहाँ है?

उत्तर – भगवान् मनु का प्रसिद्ध मन्दिर मनाली में स्थित है।

प्रश्न-9. कुलू पहाड़ी के ऊपर प्रोफेसर साहब को क्या मिला?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उत्तर – कुलू की पहाड़ी पर प्रोफेसर साहब पहुँचे तो वहाँ पर उन्होंने एक देवालय देखा जो अति प्राचीन था तथा वह जीर्ण-क्षीण अवस्था में था।

प्रश्न-10. देवी के मन्दिर की आन्तरिक स्थिति कैसी थी?

उत्तर – कुलू पहाड़ी पर स्थित देवालय अत्यन्त प्राचीन था, उसके किवाड़ टूटे हुए थे। अन्दर अंधेरा-सा और सीलन व बदबूयुक्त वातावरण था, वहाँ गणेशजी, शिवजी और देवी की प्रतिमाएँ और बलि चढ़े हुए जानवरों के सींग व हड्डियां थीं। फर्श पर पत्थरों के जोड़ों में काई जमी हुई थी।

प्रश्न-11. गाँव के पुजारी ने पहाड़ की चोटी पर देवी के मन्दिर में लोगों के न जाने का क्या कारण बताया?

उत्तर – गाँव के पुजारी ने कथा नायक को देवी के मन्दिर के बारे में बताया कि वहाँ निर्जन स्थल है, वहाँ पत्थर हैं और भूत-प्रेतों का वास रहता है, इसलिये लोग वहाँ पर दर्शन करने नहीं जाते हैं।

प्रश्न-12. "बदमाश चोरी करता है। अभी मैं डाँट गया था, बेशर्म को शर्म नहीं आती।" – कथन किसने, किससे कहा?

उत्तर – गजानन पंडित ने सेव की चोरी कर रहे एक लड़के से यह बात कही।

प्रश्न-13. देवी की मूर्ति का प्रोफेसर साहब ने क्या मूल्यांकन किया?

उत्तर – देवी की मूर्ति चार-सौ पाँच-सौ वर्ष पुरानी थी जिसकी सामान्य कीमत तीन चार हजार रुपये थी और यदि वही मूर्ति किसी मूर्ति विशेषज्ञ के पास बेच दी जाये तो कम से कम दस हजार रुपये उसका मूल्य मिल जाये।

प्रश्न-14. मूर्ति उठाते समय प्रोफेसर का दिल क्यों धड़कने लगा?

उत्तर – प्रोफेसर गजानन चोरी करने की नियति से वह मूर्ति उठा रहे थे। कोई उन्हें चोरी करते हुए देख न ले इस आशंका से उनका दिल धड़क रहा था।

प्रश्न-15. "उनका पहला ही दिन कितना सफल हुआ था, कितना सौन्दर्य उन्होंने देखा था।" प्रो. गजानन का पहला दिन किस कारण से सफल बताया गया है?

उत्तर – प्रो. गजानन को पहले ही दिन आशातीत सफलता मिली। उन्होंने देवी की अति प्राचीन मूर्ति प्राप्त की। प्राचीन अवशेष का ऐसा कलापूर्ण सौन्दर्य उन्हें हाथ लगा था। इसी प्रसन्नता से उनका पहला दिन काफी सफल रहा।

प्रश्न-16. वापस आते समय प्रो. गजानन गाँव के रास्ते से क्यों नहीं आये?

उत्तर – वापस आते समय प्रोफेसर गाँव के रास्ते से इसलिये नहीं आये क्योंकि उन्हें डर था कि कोई उन्हें चोरी जैसे कुकृत्य की स्थिति में पहचान न लें या उनके पास देवी की मूर्ति देखकर चोरी का आरोप न लगा दे। इसी आशंका से वे गाँव से अलग रास्ते से वापस आये।

प्रश्न-17. प्रोफेसर में देवी के मन्दिर के संदर्भ में भूत-प्रेतों के प्रति क्या धारणा रखी थी?

उत्तर – प्रोफेसर सोचने लगा कि भूत-प्रेतों की बात कविता लिखने की दृष्टि से तो अच्छी लगती है क्योंकि जहाँ शिवशंकर, गणेश जी और देवी विराजमान हो वहाँ भूत-प्रेतों के रूप में उनके गणों का होना तो स्वाभाविक है।

प्रश्न-18. पहाड़ी से गिरने वाले जल-प्रपात का वर्णन कथा नायक ने किन शब्दों में किया?

उत्तर – जहाँ प्रपात के फेन पर सूर्य की किरणें पड़ रही थी वहाँ ऐसा लग रहा था मानो अंधकार की कोख से चाँदी का प्रवाह फूट रहा है। या प्रकृति नायिका की कजरारी आँखों से गद्‌गद् आंसुओं की झड़ी हो.....।

प्रश्न-19. "मेरी इस निभ्रत अन्त:शाला में आकर मेरे कुटुम्ब की शांति भंग करने वाले तुम कौन हो?" वाक्य किसके हैं?

उत्तर – प्रस्तुत वाक्य प्रो. गजानन की कल्पना है। जब वे पुराने मन्दिर में क्षत-विक्षत अवस्था में एकान्त के वातावरण में उन मूर्तियों को देखा तो ऐसा लगा मानो वे कह रही हों कि.....।

प्रश्न-20. मूर्ति रखने के लिये जब प्रोफेसर गाँव के मार्ग से गुजरा तो उसे कैसा लगा?

उत्तर – उस समय ऐसा लगा कि मानो प्रत्येक व्यक्ति उनकी ओर शंका की दृष्टि से देख रहा हो और उसके ओवरकोट के अन्दर छुपी हुई मूर्ति के रहस्य को जानना चाहता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

7.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. 'सेव और देव' कहानी में बौद्धिकता की अपेक्षा आत्म-चेतना का अधिक प्रभाव दिखाई देता है।'' स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय' द्वारा विरचित कहानी 'सेव और देव' एक आत्म-चेतना तथा बौद्धिकता से युक्त कहानी है। प्रस्तुत कहानी का नायक प्रो. गजानन पंडित जो कि पुरातत्त्व विभाग का प्राध्यापक है, वह पहाड़ी पर स्थित मन्दिर की एक अति प्राचीन देवी की प्रतिमा को नियति की कलुषता के कारण उठाकर ले आता है और उसे प्राप्त कर वह अपनी हार्दिक प्रसन्नता को व्यक्त करता है। उसे इच्छित फल की भांति स्वीकार कर लेता है किन्तु वही प्रोफेसर जब बाग में से सेव चुराने वाले लड़के को डाँटता है, फटकारता है तो उसे अपने मन की चेतना का अनुभव होने लगता है। वह सोचता है कि उसने तो केवल दो सेव ही चुराये हैं किन्तु मैं तो देवी की मूर्ति ही देवालय से चुरा कर ले आया हूँ। इसके बाद जब प्रो. गजानन उस मूर्ति को यथास्थान वापस रखने के लिये जाता है तो उसके हृदय में तर्क और आत्म-चेतना के द्वन्द्व उत्पन्न होने लगते हैं। उसका बौद्धिक तर्क तो प्रेरणा यह देने लगा कि उस निर्जन वन में यह बेश कीमती मूर्ति अपने अस्तित्व को खराब किये हुए पड़ी थी। वह वहाँ पर उपेक्षित थी किन्तु दूसरी ओर उसकी आत्मा उसे अच्छा कार्य करने के लिये प्रेरित करती रही। इस अन्तर्द्वन्द्व को स्पष्ट करते हुए कहानीकार अन्य शब्दों में निरूपित करते हुए कहता है कि ''तर्क उन्हें सुझाने लगा कि बेवकूफी है, उनकी दलील बिल्कुल गलत है, तुलना आधारहीन है, किन्तु वे न जाने कैसे इस सब बुद्धि की प्रेरणा के प्रति बहरे हो गये थे।'' जैसे कोलाहल बढने लगा, उसे रोके रखने के लिए उनकी गति भी तीव्रतम हो गई। जब वे आँधी की तरह गाँव में से गुजरे तब घर जाता हुआ प्रत्येक व्यक्ति कुछ विस्मय से उनकी ओर देखता और उन्हें लगता कि वे सब उनके ओवरकोट की ओर ही देख रहे हैं। उस कोट में छुपी हुई मूर्ति के रहस्य को जान गये हों और ऐसा लगता रहा मानो वे सबके सब प्रोफेसर साहब के काले कारनामों से वाकिफ हो गये हों। यह उनकी मन, स्थिति चोर की दाढी में तिनका वाली कहावत को चरितार्थ कर रही थी अत: हम कह सकते हैं कि 'सेव और देव' कहानी में बौद्धिकता की अपेक्षा आत्म-चेतना का प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

प्रश्न-2. अज्ञेय द्वारा रचित कहानी 'सेव और देव' में कुलू की निर्जन पहाड़ी पर स्थित देवी के मन्दिर की स्थिति पर एक टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'सेव और देव' अज्ञेय द्वारा रचित उत्कृष्ट रचनाओं में से एक है। इस कहानी का नायक प्रो. गजानन पण्डित है जो दिल्ली के एक महाविद्यालय में इतिहास और पुरातत्त्व विभाग में व्याख्याता हैं। इन्हें पौराणिक अवशेषों में काफी रुचित है। विशेष बात यह है कि इनका पेशा और मनोरंजन दोनों ही एक हैं। ऐसे लोग बहुत कम होते हैं। जब प्रोफेसर अपने अभीष्ट की प्राप्ति के लिये हिमाचल प्रदेश के कुलू की पहाड़ी का भ्रमण करने व पौराणिक अवशेष प्राप्त करने के लिये जाते हैं तो जाने से पहले वे वहाँ के बारे में और वहाँ के रास्ते के बारे में गाँव वालों से जानकारी हासिल करते हैं तब उन्हें गाँव के पुजारी के द्वारा बताया गया है कि उस मन्दिर में काफी लम्बे समय से कोइं नहीं जाता है और न वहाँ की पूजा ही होती है। वह बताता है कि वहाँ पर भूत-प्रेत निवास करते हैं। इस भूत-प्रेत की बात पर प्रोफेसर हँसते हैं और कहते हैं कि वे अंधविश्वासी नहीं हैं। वे पता पूछकर पहाड़ी की ओर बढ़ गये। ऊँचे निर्जन स्थल पर उन्होंने एक भग्नावशेष मंदिर को देखा। प्रोफेसर उसके मुख्य द्वार को खोलने का प्रयास भी करते हैं तो वह दरवाजा खुलने के स्थान पर आगे की ओर खिसक गया। दरअसल उन किवाड़ों में कब्जे नहीं लगे हुए थे। जब प्रोफेसर ने अन्दर देखा तो वे आश्चर्य में पड़ गये थे क्योंकि वहाँ पर कई सौ वर्ष पहले देवी को प्रसन्न करने के लिये पशुबलि दी जाती होगी। वहाँ पर बकरा और हिरण के सींग और हड्डियाँ पड़ी हुई थी। वहाँ के पत्थरों के बीच काई जम गई थी। मन्दिर में चारों तरफ सीलन थी। एक ओर हड्डियों का ढेर काफी समय से पड़ा हुआ था जिस पर धूल जम गई और पीले पड़ गये थे। उन पर कीड़े भी चल रहे थे। काले पत्थर से निर्मित देवी की मूर्त्ति पीछे की ओर लुढ़क गई थी। वहाँ पर एक पीतल की बनी गणेशजी की मूर्ति थी जो जंग से विकृत हो चुकी थी। दूसरी ओर श्वेत पत्थर का बना शिवलिंग था जो ऐसा लग रहा था मानो कोई शान्त सिपाही खड़ा हुआ हो। आस-पास की जर्जर अवस्था में उसके दस दर्पोन्नत भाव से मानो कह रहा हो कि ''मेरी इस निभृत अन्त:शाला में आकर मेरे कुटुम्ब की शान्ति भंग करने वाले तुम कौन हो।'' उस मन्दिर में पड़ी काले पत्थर से निर्मित देवी की मूर्ति बहुत प्रभावशाली लग रही थी जिसने कथानायक प्रोफेसर की अन्त:दृष्टि तक को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था। वह लगभग चार-पांच सौ वर्ष पुरानी मूर्ति थी जिसकी कीमत सामान्यत: तीन-चार हजार रुपये से कम नहीं और

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यदि किसी मूर्ति-कला विशेषज्ञ से उसकी कीमत लगवाई जाये तो कम से कम दस हजार रुपये थी। प्रोफेसर की नीयत उस पर खराब हो गई और वह उसे अपने ओवर कोट में छुपाकर ले आया।

7.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. 'सेव और देव' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए इसकी शिल्पगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'सेव और देव' सुप्रसिद्ध कहानीकार सच्चिदानन्द हीरानन्द 'अज्ञेय' द्वारा रचित है जो बौद्धिकता की प्रधानता लिये हुए है। यह कहानी इस यथार्थ को चरितार्थ करती है। मूल्य चेतना तार्किक नहीं होती है, यह सहज और स्वत: स्फूर्त होती है।

सेव और देव कहानी का उद्देश्य

उद्देश्य ही रचना का मुख्य तत्त्व माना जाता है। इसीलिये हर कहानी अथवा रचना का कोई-न-कोई निश्चित उद्देश्य होता है। इसी के द्वारा ही रचनाकार रचना में निहित भावों को पात्रों के माध्यम से उभारकर व्यक्त करता है। इन्हीं भावनाओं के द्वारा कहानीकार के व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त होता है अथवा उसके मानसिक स्तर से साक्षात्कार होता है। उद्देश्य ही पाठकों को शिक्षा का एक मात्र माध्यम होता है।

प्रस्तुत कहानी 'सेव और देव' का उद्देश्य मानवीय आचरण की पवित्रता और ईमानदारी की प्रवृत्ति में वृद्धि करना है। प्राय: व्यक्ति अपनी बौद्धिक प्रेरणा से विपरीत अथवा बुरे कार्यों को भी अपने पक्ष में करने लग जाता है। वह अपना मन और विवेक दोनों ही खराब कर लेता है। किन्तु जब वह अपनी पवित्र आत्मा से अपने कार्यों का परीक्षण करता है उसे ये सारे तर्क, कुतर्क लगने लगते हैं और उसकी तार्किक चेतना क्षीण हो जाती है। इसके साथ ही उसकी आत्मशक्ति जागृत हो जाती है और सत्कार्यों के प्रति प्रेरित करने लगती है। प्रस्तुत कहानी में कथा नायक प्रोफेसर गजानन पण्डित के क्रियाकलापों से इसी उद्देश्य की पूर्ति की गई है। प्रोफेसर ने जब मूर्ति की चोरी की और उसके पहले उसने सेव की चोरी करते हुए बालक को चोरी न करने की हिदायत देते हुए उसे डाँट-फटकार लगाई तो उसकी अन्तश्चेतना ने उनको खदेड़ दिया वे अपने दुष्कृत अपने आपको अपराधी महसूस करते हैं और सोचते हैं कि उसने तो केवल सेव ही चुराये हैं किन्तु मैंने तो पूरा देवस्थान ही उजाड़ दिया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आत्मा की शुद्धि आवश्यक है। आत्मशुद्धि ही मनुष्य को नेक कार्यों के लिए प्रेरित करती है और दुष्कार्यों से बचाती है। प्रस्तुत कहानी का तथ्य यह है कि मनुष्य को सदैव आत्मबोध के द्वारा सत्कार्य करने चाहिये और बुरे कार्यों से बचना चाहिये।

कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ –

प्रस्तुत कहानी सेव और देव 'अज्ञेय' द्वारा रचित बौद्धिक प्रधान कहानी है जो उनके व्यक्तित्व का सफल प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है और उनकी मुक्त चेतना का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करवती है।

1. कथानक – रचना के गुणों की दृष्टि से कथानक का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें मौलिकता, सुसंगठितता व रोचकता का गुण अनिवार्य है। किसी भी कहानी का कथानक ऐसा होना चाहिये जिसमें जीवन की वास्तविकता झलक दिखाई देती हो। कथानक आकृति में जितना लघु होगा इतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। प्रस्तुत कहानी का कथानक अत्यंत रोचक और संभाव्यता से युक्त है। इसका कथानक यथार्थ को चित्रित करने वाला है। कहानी का नायक प्रो. गजानन दिल्ली के एक कॉलेज में प्राचीन इतिहास और पुरातत्त्व का अध्यापक है। वह प्राचीन अवशेषों की खोज में पर्वतीय स्थल कुलू जाता है, वहाँ पर वह प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेता है और भ्रमण करते-करते वह सेव के बागों का आनन्दमय अवलोकन करता हुआ आगे बढ़ता है और वहाँ पर एक बालक को सेवों की चोरी करते हुए देखकर उसे डाँटता-फटकारता है तथा इस प्रकार का अपराध न करने की अनेक हिदायतें देता है। तत्पश्चात् वह पहाड़ी पर पहुँचता है और वहाँ अत्यन्त पौराणिक देवालय को क्षत-विक्षत अवस्था में देखता है। वहाँ पर उसे लगभग पाँच-सौ वर्ष पुरानी काले पत्थर की शानदार देवी की बेश कीमती मूर्ति मिलती है जिसे देखकर उसके मन में लालच की भावना जागृत हो जाती है और वह उसे अपने ओवरकोट में छुपाकर चुरा लाता है। आते समय वह पुन: उसी लड़के को सेवों की चोरी करते हुए पकड़ लेता है और उसे फिर से डाँटने लगता है। अचानक उसे स्वयं का अपराध बोध होता है और वह सोचता है कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इसने तो केवल सेव ही चुराये हैं लेकिन मैंने तो पूरा देवालय ही उजाड़ दिया है। ऐसा सोचकर वह उल्टे पाँवों उसी स्थान पर उस मूर्ति को पुन:स्थापित करके आता है। इस तरह इस कहानी में सभी घटनाएँ मौलिक एवं रोचक हैं। इसमें संभाव्यता एवं यथार्थता है। कथानक का स्वाभाविक विकास हुआ है।

2. पात्रों का चयन – अज्ञेय द्वारा रचित प्रस्तुत कहानी का आकार संक्षिप्त है इसलिये उसमें पात्रों की संख्या भी सीमित है और सभी पात्रों के व्यक्तित्व का विकास विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा सहज रूप से विकसित किया है। प्रो. गजानन पण्डित इस कहानी का मुख्य पात्र है। सेवों की चोरी करने वाला लड़का, एक पर्वतीय बाला, गाँव का पुजारी, सहायक पात्र हैं। प्रोफेसर गजानन का चित्रांकन प्रमुख महत्त्व रखता है। वह पर्वतीय प्रदेश के कुलू पहाड़ियों में पौराणिक अवशेषों की खोज में आता है क्योंकि उसे पुरातत्त्व से काफी लगाव रहता है, साथ ही यह उसका पेशा और मनोरंजन का कार्य भी है। इसमें कथानायक को भारतीय संस्कृति व सभ्यता का पक्षधर भी बताया है। जहाँ पर एक ओर वहाँ के लोगों के निश्छल-सरल स्वभाव की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है और दूसरी ओर सेवों की चोरी करने वाले बालक को अनेक प्रकार से प्रताड़ित करता है। जब देवी की मूर्ति को चुराता है तो उसका बौद्धिक चिन्तन उसे इस कुकृत्य के लिये प्रेरित करता है किन्तु जब उसे आत्म-चिन्तन होता है तो उसे स्वयं का अपराध बोध होने लगता है और उस मूर्ति को पुन: यथास्थान स्थापित कर देता है। ऐसी स्थिति में उसे तार्किक और बौद्धिक चेतना के अन्तर्द्वन्द्व का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार कहानी की पात्र-योजना की शिल्पि अत्यन्त प्रभावशाली है।

3. संवाद् शिल्पि – किसी भी कहानी में उसके पात्रों के चरित्रों का उद्घाटन करने के लिये और कहानी में कथानक का विकास करने के लिये कथोपकथन या संवाद का शिल्पगत चयन अनिवार्य होता है। संवाद ही पात्रों के चरित्र का परिचायक होता है और यही गुण पाठकों को भाँति-भाँति के रसों से आस्वादित करता है। कहानी का संवाद जितना संक्षिप्त होगा उतना ही वह प्रभावशाली होगा और सारगर्भित होगा। कहानी में आत्मकथात्मक संवादों को भी स्थान दिया जाना चाहिये जिससे कहानी की उद्देश्याभिव्यक्ति सहज रूप से हो सके। अज्ञेय ने प्रस्तुत कहानी 'सेव और देव' में संवादों में अपने कलात्मक कौशल का परिचय दिया है।

''आसपास कोई और भी मन्दिर है?'' प्रोफेसर साहब ने गद्गद् स्वर में पूछा।

''नहीं बाबूजी, यहाँ कहाँ मन्दिर?'' पास खड़े हुए एक आदमी ने कहा।

''यहाँ मन्दिर नहीं? अरे भले आदमी, यहाँ तो सैंकड़ों मन्दिर होने चाहिये, यहाँ पर.....।''

कौन-सा मन्दिर देखियेगा बाबू? पुजारी ने खाँसते हुए पूछा।

''कोई मन्दिर हो, आसपास सब मन्दिर मूर्तियाँ मैं देखना चाहता हूँ।'' प्रोफेसर बोले।

प्रोफेसर के आत्म कथनात्मक संवादों से उसके बौद्धिक और तार्किक व्यक्तित्व का उद्घाटन होता है – ''इसने तो सेव ही चुराया है, तुम देव स्थान ही लूट लाये।'' अत: अज्ञेय ने अपनी संवाद शिल्पि के कौशल में प्रभावोत्पादकता का गुण समाहित किया है।

4. वातावरण के चयन का कौशल – किसी भी कहानी में विश्वसनीयता लाने के लिये वातावरण अथवा देशकाल का उचित समावेश अनिवार्य होता है। जैसा देश वैसा वेश सफल कहानी के लिये आवश्यक है उसी के अनुरूप भाषा, रहन-सहन, खान पान व अन्य रीति-रिवाजों के गुण होने चाहिये। वातावरण में स्थान विशेष के महत्त्व और परिवेश का ध्यान रखना जरूरी होता है। कहानीकार अज्ञेय ने प्रस्तुत कहानी 'सेव और देव' में इन सभी गुणों का विशेष ध्यान रखा है। प्रो. गजानन का स्वभाव, मनाली गाँव के लोगों की भाषा, पुजारी का वार्ता स्वरूप, पहाड़ी लड़की का संयमित व्यवहार, सेवों की चोरी करने वाले लड़के का सहमा हुआ व्यवहार, निर्जन क्षेत्र में देवालय की स्थिति, झरने का सौन्दर्य, सेव के बागों का फलीभूत होना आदि में कथाकार ने अपने कला-कौशल का साक्षात्कार कराया है।

5. भाषा व शैलीगत शिल्पि-कौशल – कथाकार अज्ञेय एक कवि का विशद् शब्द कोष अपने विवेक में समाहित किये हुए हैं अत: उन्होंने कहानी में भाषा शैली का पूरा-पूरा ध्यान रखा है जिससे पात्रों की मनोदशा का सहज अनुमान हो जाता है। पात्रों के स्तर के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है। सामान्य वर्णन में तत्सम भाषा का प्रयोग किया गया है। मनाली गाँव के लोगों, पुजारी आदि की भाषा उनके स्तर की है। अज्ञेय ने कथानायक के माध्यम से आत्मकथात्मक कथनों और मनोभावों का सरल भाषा में प्रकाशन किया है। बौद्धिक चेतना और तर्क के समय में प्रभावपूर्ण और विवेचनात्मक भाषा-शैली का बड़ी ही कुशलता के साथ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रयोग किया गया है। अज्ञेय ने अपनी इस कहानी में भावात्मक, वर्णनात्मक, संवादात्मक, आत्म कथात्मक एवं मनोभावाभिव्यंजक शैली का प्रयोग किया गया है। अत: कथाकार ने भाषाशैली के प्रयोग में अपनी विशिष्टता का परिचय दिया है।

6. उद्देश्य का निर्धारण – अज्ञेय द्वारा रचित प्रस्तुत कहानी का नायक प्रो. गजानन एक बुद्धिजीवी है। वह अपनी बौद्धिक चेतना का परिचायक है। पौराणिक अवशेषों की खोज में उसे वेश कीमती देवी की प्रतिमा मिलती है और वह लालच के वशीभूत होकर उसे चुरा लेता है जबकि यह दण्डनीय अपराध है। सेव चुराते हुए बालक को देखकर उसके अन्दर से मूल्य-चेतना जागृत हो जाती है। स्वयं को अपराध बोध होने लगता है। इस तरह वह अपने आचरण में सुधार लाता है। कथाकार ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नेक कार्य करने और दुष्कार्यों से बचने की प्रेरणा प्रदान की है। यह प्रेरणा मानवीय मूल्यों की वर्द्धक है।

7. शीर्षक निर्धारण – अज्ञेय ने अपनी कहानी का शीर्षक 'सेव और देव' रोचकता, कर्णप्रियता, संक्षिप्तता आदि के गुणों से समाहित कर निर्धारित किया है। यह शीर्षक घटना प्रधान व व्यंजनापूर्ण है।

7.6 सारांश

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि अज्ञेय ने इस कहानी में अपनी शिल्पिगत निपुणता का परिचय दिया है और इसे बौद्धिकता से युक्त और आत्मिक चेतना से मण्डित बना दिया है। प्रस्तुत कहानी में सभी तत्त्वों को समाहित किया गया है जिसमें शिल्पगत विशेषता है तथा मुख्य पात्रों के आत्मकथनों एवं मनोभावों को प्रधानता देकर उद्देश्य की सशक्त व्यंजना की है और तार्किक चेतना की अपेक्षा आत्मा की स्वत: स्फूर्त चेतना को मानवीय बताया गया है और उद्देश्य की दृष्टि से यह श्रेष्ठ रचना है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 8 : यशपाल

संरचना

8.0 प्रस्तावना

8.1 उद्देश्य

8.2 परिचय

8.3 परदा

8.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

8.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

8.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

8.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

8.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

8.6 सारांश

8.0 प्रस्तावना

यों तो हिन्दी साहित्य जगत में अनेक साहित्यकारों ने अपने विशिष्ट कला व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ी है किन्तु कहानीकार और उत्तम लेखकों में 'यशपाल' का नाम भी प्रसिद्धि व सम्मान के साथ लिया जाता है। पंजाब के फिरोज़पुर छावनी में इनका जन्म सन् 1903 ई. में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गुरुकुल काँगड़ी में हुई तत्पश्चात् लाहौर के नेशनल कॉलेज में यशस्वी छात्र के रूप में अध्ययन किया। छात्र जीवन में ही इनका सम्पर्क प्रसिद्ध ऐतिहासिक क्रांतिवीर भगतसिंह और सुखदेव से हो गया और इनके जीवन में भी क्रांतिकारी विचारों की मोहर लग गई और ये भी क्रांतिकारी बन गये। इन्होंने एक क्रांति पत्रिका 'विप्लव' का प्रकाशन किया कि जेल-यात्राओं का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। वैसे तो इनका लेखन कार्य रुक-रुककर चलता रहा किन्तु सन् 1938 ई. से इन्होंने अपना नियमित रूप से लेखन कार्य प्रारम्भ कर दिया।

8.1 उद्देश्य

यहाँ हम यशपाल एवं उनकी कहानी परदा के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

8.2 परिचय

मध्यवर्गीय जन-जीवन और उनकी समस्याओं को अपनी कलम का मुख्य विषय बनाया और कलम की पैनी नोंक से मध्यवर्गीय जन-जीवन की विषमताओं और विडम्बनाओं पर तीखे प्रहार कर उनकी मार्मिकताओं को व्यक्त किया। यशपाल एक यथार्थवादी दृष्टि से रचनाकार रहे। उन्होंने हमेशा अन्याय और शोषण का कड़ा विरोध किया। इनकी लेखनी का मूल विषय 'रोटी और सेक्स' है। इन्होंने इस विषय से सम्बंधित कई रचनाएँ लिखी।

अभिशप्त, ज्ञानदाता, पिंजड़े की उड़ान, तर्क का तूफान, वो दुनियाँ, अस्मावत चिनगारी, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध, उत्तराधिकार चित्र का शीर्षक (कहानी संग्रह), दादा कामरेड, देश द्रोही, दिव्या, मानुष के रूप, झूठा सच (उपन्यास), न्याय का संघर्ष, चक्कर क्लब, बात बात में बात, देखा-सोचा-समझा, सिंहावलोकन और गाँधीवाद की शब परीक्षा (निबन्ध संग्रह) प्रमुख हैं।

8.3 परदा

प्रस्तुत कहानी 'परदा' यशपाल द्वारा रचित एक सामाजिक कहानी है जिसमें मध्यम वर्गीय मुस्लिम परिवार की अन्तःस्थिति का मार्मिक वर्णन किया गया है। यह कहानी मुस्लिम परिवार के अभावों से युक्त दर्दनाक भावों को व्यक्त करती है। 'परदा' वास्तव में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कहानी के नायक, मुस्लिम परिवार के मुखिया की इज्जत का पर्दा है। इस कहानी का सम्बन्ध एक ऐसे परिवार से है जिसकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है, किन्तु परिवार का स्वामी चौधरी पीरबख्श समाज में अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिये अपने घर के द्वार पर टाट का परदा लटकाये रहता है। यह परदा ही उसके परिवार की आबरू का रखवाला है। एक दिन शेरखान रकम वसूली के चक्कर में उसे भी फाड़ कर फेंक देता है। जो परदा खानदान की इज्जत बचाने का प्रतीक था वह भी शेषनहीं रहता है। प्रस्तुत कहानी में एक मध्यम वर्गीय परिवार के दिखावों, विसंगतियों और विडम्बनाओं को यशपाल ने यथार्थ रूप में उजागर किया है। तथ्य की मार्मिक व्यंजना के लिये यह कहानी उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय है।

8.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

''चौधरी खानदान अपने मकान को हवेली पुकारता था। नाम बड़ा देने पर भी जगह तंग ही रही। दरोगा साहब के जनाने में जनाना भीतर था और बाहर बैठक में वे मोढे पर बैठकर नैचा गुड़गुड़ाया करते थे। जगह की तंगी की वजह से उनके बाद बैठक भी जनाने में शामिल हो गई और घर की ड्योढी पर पर्दा लटक गया। बैठक न रहने पर भी घर की इज्जत का खयाल था, इसलिये पर्दा बोरी के टाट का नहीं, बढिया किस्म का रहता।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'पर्दा' कहानी का अंश है जिसे 'यशपाल' द्वारा लिखा गया है। इस अवतरण में मुस्लिम परिवार के मध्यम वर्गीय स्तर की मानसिकता को और उसके घर की स्थिति को व्यक्त किया गया है।

व्याख्या – चौधरी पीर बख्श के दादा चुंगी विभाग में दरोगा पद पर कार्य करते थे। उनके पास आय भी अच्छी थी। एक छोटा किन्तु पक्का मकान था। दो लड़के थे जो पढ़े-लिखे थे और दोनों ही नौकरी पेशावर थे। समय के साथ चौधरी परिवार के सदस्यों में वृद्धि हुई और सभी सामुहिक रूप से रहते थे। उनका घर यद्यपि छोटा था किन्तु परिवार के सारे लोग उस घर को हवेली के नाम से पुकारते थे जबकि जितना बड़ा परिवार था, वहाँ उतनी जगह नहीं थी और शब्द तो जगह की दृष्टि से तंग हो ही नहीं सकता किन्तु वहाँ जगह की तंगी रहती थी। जब दरोगा साहब थे तब स्त्रियों का आवास कक्ष अन्दर की ओर था क्योंकि बाहर बैठकर दरोगा साहब हुक्का गुड़गुड़ाया करते थे और उस समय पर्दा प्रथा का प्रचलन अधिक था। वैसे भी मुसलमानी प्रथा में स्त्रियों को पुरुषों के सामने आना-जाना मना था। अब उनका परिवार निरन्तर बढ़त गया तो हवेली में तंगी और बढ़ गई। परिणाम स्वरूप बैठक भी महिला कक्ष में शामिल हो गई और घर के मुख्य द्वार पर पर्दा लटका दिया गया था। चूंकि अब पुरुषों की बैठक की जगह परिवार के अन्य लोगों के काम आने लगा। अब चाहे बैठक अलग से नहीं थी किन्तु इज्जत का तो खयाल था ही इसलिये घर के मुख्य द्वार पर अच्छी किस्म का पर्दा लगाया गया था।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में यशपाल ने एक मुस्लिम परिवार की मध्यम वर्गीय मानसिकता को बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है।

2. अपनी स्थिति को भाँपे रखने की प्रवृत्ति आजकल सभी मध्यवर्गीय परिवार की होती है।

3. भाषा सरल और शैली वर्णनात्मक है।

(2)

''मौहल्ले में पीरबख्श की इज्ज़त का आधार था, घर के दरवाजे पर लटका पर्दा। भीतर जो हो, पर्दा सलामत रहता। कभी बच्चों की खींच-खाँच या बेदर्द हवा के झोंकों से उसमें छेद हो जाते तो पर्दे की आड़ में हाथ में सूई-धागा से उसकी मरम्मत कर देते।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'पर्दा' कहानी का अंश है जिसे 'यशपाल' द्वारा लिखा गया है। इसमें कथा नायक ने पीरबख्त की मानसिक स्थिति का चित्रण किया है। वह स्वयं को पढ़ा-लिखा और उच्च खानदान का व्यक्ति मानता था। जबकि ऐसा कुछ भी नहीं था। वह कोरा दिखावा करता था। वह हमेशा अपने घर का स्तर बढ़ाने के लिए घर के मुख्य द्वार पर पर्दा लगाये रखता था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्याख्या – कथा नायक पीरबख्श एक मध्यम परिवार का मुखिया था। उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय थी, किन्तु वह अपने आपको श्वेत पोश और समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति मानता था और अपनी वास्तविक स्थिति को छुपाये रखने के लक्ष्य से अपने घर के मुख्य द्वार पर हमेशा पर्दा लटकाये रखता था। यह पर्दा यद्यपि कोरा दिखावा था किन्तु घर की इज़्ज़त को ढाँपे रखने का केवल एक सहारा यह पर्दा ही था। घर की दयनीय हालत इसी पर्दे के पीछे छुपी हुई थी और उसके मौहल्ले के लोग उसे अदबदार खानदानी व्यक्ति मानते थे। वह अपने आपको हमेशा इज़्ज़तमंद लोगों की तरह ही पेश करता था और उस पर्दे के कारण उसकी आन्तरिक पारिवारिक स्थिति उजागर नहीं हो पा रही थी। यह कारण था कि चौधरी साहब हमेशा पर्दे का खयाल रखते थे। बच्चों की संख्या परिवार में कुछ अधिक तादात में थी तो बच्चे उस पर्दे को खींच-खाँचकर फाड़ देते थे और हवा के तेज झौंकों की वजह से भी वह पर्दा फ ट जाया करता था तो चौधरी साहब स्वयं उसी पर्दे की ओट में सूई-धागा लेकर मरम्मत करने लग जाया करते थे। इस प्रकार घर की इज़्ज़त को पर्दे की ओट में छिपाये रखना चाहता था।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में मध्यमवर्गीय परिवार के मुखिया को मानसिकता और कोरे दिखावे की प्रवृत्ति का वर्णन है।

2. भाषा शैली सरल, मनोभावाभिव्यंजक और चित्रात्मक है।

(3)

''गिरवी रखने के लिए घर में जब कुछ भी न हो, गरीब का एक मात्र सहायक है पंजाबी खान। रहने की जगह भर देख कर वह रुपया उधार दे सकता है। दस महीने पहले गोद के लड़के बरकत के जन्म के समय परवरिश को रुपये की जरूरत आ पड़ी। कहीं और कोई प्रबन्ध न हो सकने के कारण उन्होंने पंजाबी खान बबर अली खाँ से चार रुपये उधार ले लिये।

बबर अली खाँ का रोजगार सितबा के उस कच्चे मोहल्ले में अच्छा खासा चलता था। बीकानेरी मोची, वर्कशॉप के मजदूर और कभी-कभी रमजानी धोबी सभी बबर मियाँ से कर्ज़ लेते रहते थे। कई बार चौधरी पीर बख्श ने बबर अली को कर्ज और सूद की किश्त न मिलने पर अपने हाथ के डण्डे से ऋणी का दरवाजा पीटते देखा था। उन्हें साहुकार और ऋणी के बीच-बचौबल भी करना पड़ा था। खान को शैतान समझते थे लेकिन लाचार हो जाने के कारण उसी की शरण लेनी पड़ी।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक ''कथा संचय'' के 'पर्दा' नामक कहानी से लिया गया है जिसे 'यशपाल' ने लिखा है। इस अवतरण में मध्यम वर्गीय परिवार के मुखिया की मानसिक पीड़ा का चित्रण किया गया है। मोहल्ले के लोगों से उसे कर्ज लेना पड़ता है और घर की जिम्मेदारी पूरी करनी पड़ती है।

व्याख्या – मोहल्ला, गाँव, शहर या कोई भी क्षेत्र हो, गरीबी और अमीरी का वर्ग हर जगह होता है। गरीबों में भी कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी आय भले ही समान हो किन्तु उनमें बचत करने या ब्याज पर पैसा उधार देकर और अधिक कमाने की लालसा रहती है। चौधरी पीर बख्श सितबा के कच्चे मोहल्ले में रहता था। उस मोहल्ले में लगभग सभी लोग अल्प आय वाले थे। उस मौहल्ले में रहने वाला पंजाबी खान बबर अली खाँ का रोजगार इसीलिये परवान चढ रहा था कि वह उधार देकर ब्याज कमाने का कारोबार करता था। उस मोहल्ले के लोग सदैव आर्थिक तंगी में जीवन यापन करते थे और प्राय: सभी लोग बबर अली से कर्ज लेते रहते थे। वह अपना पैसा व उसका ब्याज वसूल करने में हमेशा कठोरता दिखाता रहता था इसलिये उससे सभी डरते थे और वायदे के अनुसार पैसा लौटा देते थे। पीर बख्श ने कई बार बबर अली को अपने कर्ज़दार का दरवाजा पीटते हुए देखा था और कई बार कर्ज़दार और बबर अली के बीच सुलह करते हुए भी आगे आना पड़ा था। वहाँ के लोग बबर अली को शैतान समझते थे और निर्दयी समझते थे, किन्तु एक बार लाचारीवश चौधरी को भी उधार पैसा उसी से लेना पड़ा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बबर अली के चरित्र का सुन्दर चित्रण किया गया है।

2. भाषा-शैली सरल और चित्रात्मक है।

(4)

''मिल से घर लौटते समय वे मण्डी की ओर टहल गये। दो घण्टे बाद जब समझा खान टल गया होगा तो अनाज की गठरी ले कर घर लौटे। खान के भय से दिल डूब रहा था, लेकिन दूसरी ओर चार भूखे बच्चों, उनकी माँ दूध न उतर सकने के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कारण सूख कर काँटा हो रहे गोद के बच्चे और चलने-फिरने से लाचार अपनी जईफ़ माँ की भूख से बिलबिलाती सूरतें आँखों के आगे नाच जाती। घड़कते हुए हृदय से वे कहते हुए जाते – "मौला सब देखता है, खैर करेगा।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'पर्दा' नामक कहानी से लिया गया है जिसमें कथाकार 'यशपाल' ने मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की स्थिति और उसके मालिक चौधरी की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है। चौधरी ने बबर खान से चार आने प्रति सैकड़ा प्रति माह के हिसाब से कर्ज लिया था, जिसे आठ किश्तों में चुकाना तय किया गया। जैसे-तैसे चौधरी ने सात किश्तें तो चुका दीं किन्तु आठवीं किश्त देने में उसकी विकट परिस्थितियाँ थी।

व्याख्या – चौधरी को आज आठवीं किश्त देनी थी, सात तारीख थी। वह पंजाबी खान से भयभीत था इसलिये मिल से सीधे घर न आकर अनाज खरीदने मण्डी चला गया। मंडी से वह दो घण्टे बाद अनाज लेकर घर पहुँचा। वह निश्चित था कि पंजाबी खान तकादा कर के लौट गया होगा फिर भी वह उसके भय के कारण जल्दी घर लौटना नहीं चाहता था। किन्तु जब उसे अपने चार भूखे बच्चों का, अपनी पत्नी का और नवजात शिशु का जो माँ का दूध न उतरने के कारण सूख कर काँटा हो गया था और चलने-फिरने में भूख के कारण जईफ़ की माँ के व्याकुल चेहरे पर बार-बार ख्याल आया तो खान का भय उससे दूर हो गया। भय पर मानवीय सहज भावों ने विजय प्राप्त कर ली और वह इस विश्वास से अपने घर की ओर तेजी से बढ़ने लगा कि खुदा सबकी खैर रखता है वही निर्णय करेगा। कौन नेक और ईमानदार है वह सब कुछ जानता है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में पीर बख्श के माध्यम से गरीब, जिम्मेदार और ईमानदार किन्तु कर्ज़दार की मनोदशा का मौलिक चित्रण किया है।

2. भाषा अरबी और फारसी मिश्रित किन्तु सरल है।

(5)

"इस दृश्य को देखने को ताव चौधरी में न थी, परन्तु द्वार पर खड़ी भीड़ ने देखा। घर की लड़कियाँ और औरतें परदे के दूसरी ओर घटती घटना के आतंक से आंगन के बीचों-बीच इकट्ठी हो खड़ी कॉप रही थी। सहसा पर्दा हट जाने से औरतें ऐसे सिकुड़ गई जैसे उनके शरीर का वस्त्र खिंच गया था। वह पर्दा ही तो घर भर की औरतों के शरीर का वस्त्र था। उनके शरीर पर बचे चिथड़े उनके एक तिहाई अंग ढँकने में भी असमर्थ थे।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'पर्दा' नामक कहानी से लिया गया है जिसे 'यशपाल' ने लिखा है। जिसके कथाकार ने पीर बख्श की आर्थिक अत्यंत दयनीय स्थिति व उसके परिवार की लुटती आबरू का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है।

व्याख्या – पंजाबी खान चौधरी के घर के बाहर जोर-जोर से गालियाँ बक रहा था। खान की गालियों और उसके आतंक से भयभीत पर्दे के पीछे एकत्र होकर कॉप रही थी। खान ने झटके के साथ पर्दा खींच लिया था। चौधरी परिवार की महिलाओं के वस्त्र तार-तार हो रहे थे। उनके शरीर के अंगों से कँगाली और बेबसी झाँक रही थी। पर्दे के हटते ही नारी अस्मिता सिकुड़ती चली गई और बेबस मौन खड़ी रही। उनके घर का पर्दा क्या हटाया गया ऐसा लगा मानो उनके शरीर का वस्त्र हरण ही कर लिया गया हो।

चौधरी परिवार अत्यधिक दरिद्र जीवन जी रहा था। उसको आय इतनी कम थी कि वह अपने बड़े परिवार को दो समय की रोटी मयस्सर नहीं हो पा रही थी। रोटी के अभाव में नवजात शिशु को उसकी माँ दूध भी नहीं पिला सकती थी। काफी समय से भूखे रहने के कारण दूध नहीं उतर रहा था और शिशु निरन्तर सूखता जा रहा था। चौधरी की लड़कियों ने व अन्य महिलाओं ने जो वस्त्र अपने तन पर ढँक रखे थे वे केवल दो-तिहाई शरीर के हिस्से को ही ढँकने में समर्थ थे। पंजाबी खान उनके घर के बाहर खड़ा-खड़ा गालियाँ बक रहा था तो घर की सभी औरतें आँगन में पर्दे के पीछे खड़ी हो गई थी और भय के कारण काँपने लगी। खान ने अपने पैसे न मिलने के कारण क्रोध में आकर वह पर्दा खींच लिया। चौधरी इस अप्रत्याशित घटना से उत्पन्न लज्जा को सहन न कर सकने के कारण बेहोश हो गया। मोहल्ले के लोगों की भीड़ की निगाहें जब उन अर्द्ध-नग्न महिलाओं पर पड़ी तो वे सभी औरतों अचानक काँप उठी और लज्जा के कारण सिकुड़ गई। उनके शरीर ढंके हुए चिथड़े उनकी आबरू को बचाने में बेबस हो रहे थे। उनके लगभग सभी अंग दिखाई दे रहे थे। बस एक वह टाट का पर्दा था जो आज तक इनकी लाज

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

बचाए हुए था, आज वह भी गरीबी के क्रूर प्रहारों से धराशाही हो गया। पर्दे का हटना मानो उन महिलाओं को निर्वसन करता था। क्योंकि उनके शरीर के वस्त्र तो उनकी नग्नता प्रकट कर रहे थे।

विशेष – 1. पीरबख्श की दरिद्रता का प्रस्तुत अवतरण में अत्यधिक हृदय द्रावक वर्णन किया गया है।

2. भाषा सरल और दृश्य को शब्द-चित्रों से अंकन करने का सफल प्रयास किया गया है।

(6)

''जाहिल भीड़ ने घृणा और शर्म से आँखें फेर ली। उस नग्न दृश्य की झलक से खान की कठोरता भी पिघल गई, ग्लानी से थूक कर, पर्दे को वापस आँगन में फेंक क्रुद्ध निराश में उसने ''लाहौल बिला.....।'' कहा और असफल लौट गया।

भय से चीखकर ओट में जो जाने के लिए भागती हुई औरतों पर दया कर भीड़ छंट गई। चौधरी बेसुध पड़े थे। जब उन्हें होश आया तो ड्योढी का पर्दा आंगन के सामने पड़ा था परन्तु उसे उठाकर फिर से लटकाने की सामर्थ्य उनमें शेष न थी। शायद अब इसकी आवश्यकता भी न रही थी। पर्दा जिस भावना का अवलम्ब था वह मर चुकी थी।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'पर्दा' नामक कहानी से लिया गया है जिसमें कथाकार 'यशपाल' ने मध्यवर्गीय नितान्त दरिद्र मुस्लिम परिवार की अति दयनीय स्थिति का कारूणिक वर्णन किया है और बताया है कि जब समय पर ऋण न चुकाने के कारण पंजाबी खान ने चौधरी के घर की आबरू के एक मात्र अवलम्ब द्वार पर लगे टाट के पर्दे को क्रोध में आकर खींच लिया तो चौधरी खानदान की इज्जत सरे आम बे-आबरू होकर कांप गई थी और इधर-उधर छुपने का आसरा खोज रही थी।

व्याख्या – चौधरी पीर बख्श सितवा की कच्ची बस्ती में रहता था। वहाँ पर अधिकतर लोग गरीब थे और कच्चे मकानों में रहते थे। पीर बख्श के बुजुर्ग अच्छी हालत में थे इसलिए उन्होंने अपने समय में एक पक्का मकान बना लिया था। अब जब पीर बख्श का परिवार काफी बड़ा हो गया और आमदनी सीमित रही तो परिवार की आर्थिक विपन्नता दिनों-दिन बढने लगी और स्थिति यह आ गई कि चौधरी को अपने ही क्षेत्र के एक सूदखोर, अमानवीय आचरण करने वाले व्यक्ति से ब्याज पर रुपया उधार लेना पड़ा। उधार ली गई रकम आठ किश्तों में चुकाना तय किया गया। चौधरी ईमानदार था। उसने जैसे-तैसे सात किश्तें चुका दी और अन्तिम आठवीं किश्त देने में वह असमर्थ था। जब पंजाबी खान ने आठवीं किश्त न देने पर उसके घर के आगे गाली-गलौच की और क्रोध में आकर उसके घर के द्वार का पर्दा खींच लिया तो उस समय चौधरी के घर के बाहर अनपढ़ और गँवारों की भीड़ तमाशबीन बनकर खड़ी थी। पर्दे के हटने पर जब भीड़ ने उन नग्न स्त्रियों को देखा तो वे शर्म से भर गये और नजरें जमीन में गड़ गईं। उन्होंने महिलाओं की ओर से निगाहें फेर लीं। यहाँ तक कि पंजाबी खान, जो इतना कठोरता से कर्ज वसूली में पेश आ रहा था वह भी शर्म से जमीन में गड़ गया और उसकी कठोरता चौधरी के परिवार की दरिद्रता को देखकर स्वत: वहाँ से जाती रही और उसके स्थान पर संवेदना, दया और सहानुभूति का रूप अवतरित हो उठा। उसे उस नग्नता को देखकर आत्मग्लानी होने लगी और जिस पर्दे को वह कर्ज वसूली के रूप में ले जाना चाहता था उसे वापस आँगन में फेंक दिया और आवेश में आकर ''लाहौल बिला'' कहता हुआ थूंक कर वहाँ से निराश होकर चलता बना।

कुछ समय बाद वह तमाशबीनों की भीड़ छँट गई तो बेहोश चौधरी को होश आया और जब उसने अपने द्वारा पर टंगे रहने वाले पर्दे को आँगन में पड़े देखा तो उसके मन में उत्पन्न लज्जा और ग्लानि की सीमा न रही। वह आत्मग्लानि की त्रस्तता से इतना कमजोर हो गया कि उसमें इतनी शक्ति भी शेष न रही कि वह उस पर्दे को वापस वहीं लगा दे। जो पर्दा उसके खानदान की आबरू और सम्मान का एक मात्र सहारा था वह भी आज हताश हो कर आंगन में आकर निढ़ाल पड़ा था। आज खान के कठोर आचरण और कंगाली की क्रूरता ने सब पर पानी फेर दिया था। अब उस पर्दे को वहाँ पर लगाने की भी कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी क्योंकि जिस आबरू को वह आज तक बचाये बैठा था वह तार-तार हो कर सरे आम बिखर चुकी थी।

विशेष – 1. अवतरण की सजीव भाषा ने पीर बख्श के घर की दरिद्रता को ज्यों के त्यों प्रस्तुत करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. चौधरी के घर के बाहर खड़ी तमाशबीनों की भीड़ और खान के चरित्र को उजागर करने में कहानीकार की शैल्पिक क्षमता का सफल और सशक्त होना मिलता है।

3. पीर बख्श की मनोदशा और विवशता का सजीव चित्रण किया गया है।

4. भाषा प्रवाहमयी तथा भावों और विचारों को वहन करने में पूर्णतः समर्थ है।

8.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

8.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1 'पर्दा' कहानी किस उद्देश्य को लेकर लिखी गई है ?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'पर्दा' में कहानीकार से स्पष्ट किया है कि कमजोर आर्थिक स्थिति के समय दिखावा रहित जीवन व्यतीत करना चाहिये और ऐसे नाजुक समय में ईमानदारी पूर्ण आचरण करना चाहिये। थोथी इज्जत का प्रदर्शन नहीं करना चाहिये।

प्रश्न- 2. 'पर्दा' कहानी में यशपाल ने किस परिवार की स्थिति का वर्णन किया गया है?

उत्तर – कहानीकार यशपाल ने अपनी रचना 'पर्दा' में एक मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार की दयनीय स्थिति का सुन्दर चित्रण किया है।

प्रश्न- 3. कहानीकार यशपाल ने प्रस्तुत कहानी में 'पर्दा' किस का प्रतीक बताया है?

उत्तर – कहानीकार यशपाल ने प्रस्तुत कहानी का शीर्षक 'परदा' रखा है जो कथानायक के घर के मुख्यद्वार पर लटका रहता है यह उसके खानदार की इज्जत का प्रतीक है।

प्रश्न- 4. 'पर्दा' कहानी में मुख्य पात्र कौन हैं?

उत्तर – 'सितवा' की कच्ची बस्ती में रहने वाला एक मध्यम वर्गीय मुस्लिम व्यक्ति जिसका नाम पीर बख्श है यही कथानायक है।

प्रश्न- 5. चौधरी पीरबख्श का पेशा क्या है, 'पर्दा' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'पर्दा' के अनुसार चौधरी पीरबख्श एक मिल में मुंशीगिरी करता है, उसे अठारह रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता है।

प्रश्न- 6. चौधरी पीरबख्श की सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार क्या था?

उत्तर – 'पर्दा' कहानी का नायक चौधरी पीरबख्श सितवा की कच्ची बस्ती में अपने बुजुर्गों के द्वारा बनाए गये एक पक्के मकान का मालिक है। वह सफेदपोश मिजाज का व्यक्ति है और दिखावे में विश्वास रखने वाला व्यक्ति है, वह अपनी आन्तरिक माली हालत को छुपा कर प्रदर्शन अधिक करता है।

प्रश्न- 7. 'सितवा' की कच्ची बस्ती में आवश्यकता के समय लोग किससे, किस शर्त पर सहायता लेते हैं?

उत्तर – सितवा की कच्ची बस्ती में पंजाबी खान बब्बर अली खाँ से आवश्यकता पड़ने पर कर्ज़ लिया करते थे। वह ब्याज पर उधार दिया करता था।

प्रश्न- 8. चौधरी पीरबख्श ने कितने रुपये, किससे और किस शर्त पर उधार लिये?

उत्तर – चौधरी पीरबख्श ने पंजाबी खान बबर खाँ से चार रुपये का कर्ज चार आने प्रति रुपया प्रतिमाह से उधार लिये जिसे आठ माह में चुकाना तय किया गया था।

प्रश्न- 9. 'पर्दा' कहानी का नायक पीरबख्श मिल से घर लौटते समय अपना समय पास क्यों किया और वह घर पर देरी से क्यों लौटा?

उत्तर – चौधरी पीरबख्श पंजाबी खान के भय से त्रसित था। उसे भय था कि वह घर तक तक़ाजा करने आया होगा। उसने सोचा कि यदि वह देरी से घर लौटेगा तो वह वहाँ से चला जायेगा। इसलिए जान बूझ कर मिल से दो घंटे देरी से पहुँचा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न-10. चौधरी पीर बख्श जब मिल से घर लौटा तो उसने अपने घर पर क्या देखा?

उत्तर—जब चौधरी पीरबख्श मिल से घर लौटा तो उसने देखा कि उसके घर पर पंजाबी खान अपना पैसा वसूलने के लिए गाली-गलौच कर रहा था और लोगों की भीड़ तमाशबीन बनकर खड़े हुए है।

प्रश्न-11. चौधरी पीरबख्श ने रात भर सोच कर खान के लिये कौन-सा बहाना बनाया?

उत्तर—चौधरी ने बहाना बनाया कि मिल के मालिक लाल जी चार दिन के लिये बाहर गये हैं। उनके दस्तखत के बिना किसी को तनख्वाह नहीं मिलेगी। जब पैसे मिलेंगे तो पैसा चुका दिया जायेगा।

प्रश्न-12. ''इस भयंकर आघात से चौधरी का खानदानी रक्त भड़क उठने के बजाय और भी अधिक शान्त और निर्जीव हो गया था।'' क्यों?

उत्तर—जब किसी व्यक्ति को लाचारी का सामना करना पड़ता है तो उसका जोश ख़ुद-ब-ख़ुद कमजोर और लाचार पड़ जाता है। पीरबख्श उस समय पंजाबी खान को कर्ज का पैसा चुकाने में असमर्थ था। इसीलिये उसके खानदानी जोश में उबाल नहीं अपितु वह कमजोर और लाचार पड़ गया था।

प्रश्न-13. चौधरी को जब होश आया तो उसने अपने द्वार पर परदा लटकाना आवश्यक क्यों नहीं समझा?

उत्तर—चौधरी ने होश आने पर देखा कि उसके खानदान की आबरू का एकमात्र प्रतीक पर्दा अब चौक में पड़ा हुआ है तो उसने यह जान लिया था कि अब उसके खानदान की इज्जत बे-आबरू हो चुकी है इसलिये न तो उसमें इतनी समता थी कि वह उसे वापस वहाँ पर लटका दे और न उसे वहाँ पर लटकाने की जरूरत ही महसूस हुई।

प्रश्न-14. पंजाबी खान में 'पर्दा' क्यों हटाया और उसे उसके बदले क्या मिला?

उत्तर—जब पंजाबी खान को कर्ज की रकम नहीं मिली तो उसने उसके बदले वह परदा अपने साथ ले जाने का निश्चय किया और क्रोध में आकर उसने वह परदा खींच लिया किन्तु परदे के पीछे जब उसने चौधरी परिवार की औरतों का गरीबी के कारण अर्द्धनग्न अवस्था में देखा तो वह ''लाहौल बिला.....।'' कहकर थूँकता हुआ निराश होकर लौट गया।

प्रश्न-15. चौधरी परिवार की दशा देखकर पंजाबी खान की मानसिकता में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर—पंजाबी खान ने नग्नता की झलक को जैसे ही देखा उसकी कठोरता भी पिघल गई और वह उस पर्दे को चौक में फेंकता हुआ वहाँ से बिना पैसे लिये चला गया।

8.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. ''पर्दा'' कहानी मध्यम वर्ग में प्रचलित दिखावे की प्रवृत्ति, आर्थिक कमजोरी और सामाजिक विडम्बनाओं की यथार्थ स्थिति का चित्रण करती है।'' स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—'परदा' कहानी सुप्रसिद्ध रचनाकार यशपाल द्वारा विरचित है, जिसमें निम्न मध्यम वर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। इसमें बताया है कि एक मुस्लिम परिवार क मुखिया अपनी आर्थिक खोखली स्थिति को छुपाकर रखता है। अपने आप को श्वेत पोश मिजाज व्यक्तित्व का धनी मानता है और उसी प्रकार का व्यवहार अपने समाज में करता है। चौधरी पीरबख्श के दादा चुंगी विभाग में दरोगा थे। उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल थी क्योंकि उनका परिवार अत्यधिक सीमित था और आय ठीक थी, किन्तु समय के साथ-साथ उनका परिवार बढ़ता गया। उस समय उनके पास अपना स्वयं का मकान था किन्तु अब स्थानाभाव के कारण सितवा की कच्ची बस्ती में किराये का मकान लेकर रहने लगे। इस परिवार के मुखिया का नाम चौधरी पीरबख्श है। वे अपने आपको सफेद पोश बनाए रखने के लिये एक मिल में मुंशी की हैसियत से अठारह रुपये माहवार में नौकरी कर लेते हैं। वे समाज में अपने परिवार की मर्यादा कायम रखने के लिये अपने घर के मुख्यद्वार पर एक परदा लगा लेते हैं। वह परदा उनकी आर्थिक स्थिति को छुपाये रखने का एक माध्यम रहता है। चौधरी देखते ही देखते इतना विपन्न हो जाता है कि उसे घर की भौतिक आवश्यकताएँ पूर्ण करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब उसके घर में पाँचवा शिशु जन्म लेता है तो उसे अपनी ही बस्ती के एक सूदखोर व्यक्ति पंजाबी खान से चार रुपये उधार लेने पड़ते हैं जो चार आना प्रति रुपया प्रतिमाह के हिसाब से चुकाना तय किया गया। उसकी अवधि आठ माह रखी गई। जैसे-तैसे सात माह की किश्त तो वह दे देता है किन्तु आठवीं किश्त देने

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

में असमर्थ रहता है। निर्धारित समय पर पंजाबी खान अपना पैसा वसूलने के लिये चौधरी के घर पहुँचता है। उस समय चौधरी सीधे घर न जाकर मंडी में चला जाता है और जान-बूझकर दो घण्टे देरी से घर पहुँचता है। यह सोचकर कि वह तब तक वहाँ से चला जायेगा किन्तु जब चौधरी अपने घर पर पहुँचता है तब तक पंजाबी खान न केवल उसी के घर चौधरी का इन्तजार करता है बल्कि इतना बखेड़ा खड़ा कर देता है कि आस-पास के बहुत से लोग तमाशबीन बनकर उसके घर के आगे जमा हो जाते हैं। वह वहाँ गाली-गलौच करता है और क्रोध में आकर उसके घर की आबरू को ढाँपे रखने वाले परदे को झटके से खींच लेता है। परदा हटते ही उसके घर की लाज का सारा रहस्य उजागर हो जाता है। उस घर की स्त्रियाँ अर्द्ध-नग्न अवस्था में भयभीत होकर सिकुड़ी हुई खड़ी होती हैं क्योंकि उनकी माली हालत इतनी कमजोर थी कि उनके पास तन ढंकने के लिए कपड़े भी नहीं थे। दो समय की सूखी रोटियाँ भी उनको मयस्सर नहीं हो पाती थी। दूध न उतरने के कारण उनका नवजात शिशु भी सूखकर काँटा हो गया था। मुख्य द्वार पर लगी भीड़ ने जब यह हृदय विदारक दृश्य देखा तो उन सबकी आँखें शर्म से जमीन में गड़ गईं थी। पंजाबी खान भी उस नग्न दृश्य को देखकर ग्लानि से भर गया और उसका क्रोध मानवता में परिवर्तित हो गया। वह थूककर 'लाहौल बिला' कहता हुआ बिना कर्ज वसूल किये ही वहाँ से चला गया। कुछ समय बाद जब चौधरी को होश आया तो उसने अपने घर व खानदान की लाज बचाने वाले एक मात्र सहारे उस पर्दे को चौक में पड़ा हुआ पाया। चौधरी के शरीर में अब इतनी जान नहीं थी कि वह पुनः इस पर्दे को यथास्थान लगा दे, क्योंकि वह पर्दा जिस भावना का अवलम्बन था वह अब बे-आबरू हो चुकी थी। उसके दिखावटी खोखलेपन का सारा आलम अब आम हो चुका था।

कहानीकार यशपाल ने प्रस्तुत कहानी में इसी हृदय विदारक घटनाव मानसिकताओं का सफलता पूर्वक चित्रांकन किया है।

प्रश्न- 2. यशपाल द्वारा रचित कहानी 'पर्दा' के आधार पर पात्र पंजाबी खान की चारित्रिक विशेषताओं पर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'पर्दा' में कहानीकार यशपाल ने कहानी नायक चौधरी को जिन चारित्रिक गुणों के आधार पर एक निम्न-मध्यम वर्ग मुस्लिम परिवार की आर्थिक स्थिति व दिखावे के साथ उतारा है, उसी प्रकार एक पात्र पंजाबी खान को भी उसके चारित्रिक गुणों से युक्त प्रस्तुत किया है, जिसे हम निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं –

1. सूदखोर व्यक्ति – पंजाबी खान कच्ची बस्ती के लोगों को ब्याज पर पैसा उधार देने का काम करता है वह साहूकार की भाँति अपने मूलधन का अच्छा ब्याज वसूलता है।

2. कठोर व क्रूर स्वभाव – पंजाबी खान क्रूर-स्वभाव का व्यक्ति होता है। कच्ची बस्ती के लोग उसे शैतान कहते हैं। वह जब लोगों को कर्ज देता है तो कठोर व्यवहार उनके साथ करता है किन्तु मजबूरीवश उनको इससे पैसा लेना पड़ता है। अब समय पर क़र्ज वापस नहीं आता है तो वह क्रूरता से अपना पैसा वसूल करता है और उसकी इज्जत की भी परवाह नहीं करता है।

3. अत्यन्त लालची व्यक्ति – पंजाबी खान अत्यंत लालची प्रवृत्ति का व्यक्ति होता है, इसीलिये वह ब्याज के आधार पर लोगों को पैसा उधार देता है। उसके ब्याज की दर भी ऊँची रहती है।

4. समय का पाबन्द – एक कुशल आसामी की तरह वह भी समय का पक्का पाबन्द है। जब पैसा उधार देता है तो लौटाने का समय निश्चित कर लेता है और निर्धारित समय पर पैसा वसूलता है। समय चूकने पर वह भद्दा व्यवहार करता है।

5. व्यवहार कुशलता का अभाव – पंजाबी खान कतई व्यवहार कुशल नहीं है। हमेशा उसकी जुबान पर गन्दी व भद्दी गालियाँ रहती हैं। वह पैसा समय पर न मिलने पर सारे सम्बन्धों और मानवीय गुणों को ताक में रख देता है।

6. दयालुता का स्वभाव – जहाँ एक ओर पंजाबी खान कठोर स्वभाव का व्यक्ति है, वहीं दूसरी ओर वह दयालु भी है। जब भी किसी पर विपत्तियाँ आती हैं तो वह उसे उधार दे देता है। चाहे उसके पास गिरवी रखने के लिए कुछ भी न हो। जब किसी को कहीं भी पैसा नहीं मिलता है तो वह उसे दया का पात्र समझकर कर्ज़ा देता है। चौधरी ने जब समय पर अंतिम किश्त जमा नहीं कराई तो उसने उसके घर की लाज़ का पर्दा खींच लिया किन्तु जैसे ही उसने वह वास्तविक दृश्य देखा तो वहाँ से बिना पैसा वसूल किये ही लौट आया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

6. दिखावे का विरोधी – पंजाब खान वास्तविकता पसन्द व्यक्ति है। चौधरी खोखला दिखावा करता है तो वह उसे अनेक प्रकार के ऊँचे-नीचे शब्दों से फटकारता है।

प्रश्न-3. 'परदा' कहानी की मूल संवेदना तथा उद्देश्य व मूल संवेदना क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'परदा' सुप्रसिद्ध कहानीकार यशपाल की सामाजिक यथार्थ पर आधारित कहानी है जिसका मुख्य पात्र चौधरी पीरबख्श स्वयं को खानदानी व्यक्ति मानता है। उसके पूर्वजों की हवेली पर रंग-बिरंगा परदा लटका रहता है जिसे वह अपने परिवार की मर्यादा का प्रतीक मानता है। यद्यपि वह कच्ची बस्ती में दो रुपये महावार के किराये पर रहता है किन्तु उस पर भी परदा लटकाये रखता है ताकि पूर्वजों की तरह उसके परिवार की मर्यादा भी कायम रहे। वह घर की स्त्रियों को घर से बाहर नहीं निकलने देता है। वह बाहर का सारा काम स्वयं ही करता है। स्वयं एक मिल में मुंशी का काम करता है। उसका परिवार पूरी तरह से अभावग्रस्त रहकर अनेक प्रकार की परेशानियाँ झेलता है। यहाँ तक कि परिवार वालों को दो समय का दूध व सूखी रोटियाँ भी मयस्सर नहीं हो पाती हैं। उनके पास पहनने को कपड़े तक नहीं हैं किन्तु चौधरी परिवार की मर्यादा का पालन करना अपना गौरव समझता है। कहानीकार यशपाल ने यह स्पष्ट किया है कि घर की इज्जत तभी रह सकती है जब व्यक्ति उसके अनुरूप प्रयास करे और कोरा प्रदर्शन न करे। साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि निम्न वर्ण के लोग अर्थाभाव के कारण अनेक प्रकार की विवशताओं से घिरे रहते हैं। वे भी अन्य लोगों की तरह सुखी व सम्मानित जीवन जीना चाहते हैं किन्तु सामाजिक विषमताओं के कारण वे ऐसा नहीं कर पाते हैं। इन लोगों की इज्जत का परदा जब एक बार तो वे बे-आबरू होकर समाज का कलंक बन जाते हैं। यह बेशक उनकी मजबूरी है। कहानीकार ने इस उद्देश्य को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

8.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. ''यशपाल की लेखन कला उत्कृष्ट है।'' कथन की सार्थकता 'परदा' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

अथवा

यशपाल द्वारा रचित कहानी 'परदा' की तात्विक समीक्षा कीजिये।

अथवा

कहानी कला के तत्त्वों के आधार पर 'पर्दा' कहानी की सफलता को व्यक्त कीजिये।

उत्तर – उत्कृष्ट रचनाकार, निबन्धकार और उत्तम कहानीकार यशपाल की लेखन कला अपने आपमें विशेषताएँ लिये हुए है। क्रांतिकारी लेखक यशपाल ने अपनी कृतियों में ऐसे यथार्थ प्रस्तुत किये हैं कि जिनके माध्यम से हम समाज और व्यक्ति की वास्तविकताओं से सुगमतापूर्वक साक्षात्कार कर सकते हैं।

'पर्दा' एक मुस्लिम परिवार के अभावों की दुःख भरी कहानी है जिसमें निम्न-मध्यवर्ग के थोथे दिखावों, विसंगतियों और विडम्बनाओं को कथाकार ने यथार्थवादी ढंग से उजागर करने का अत्यन्त सफल प्रयास किया गया है। इस कहानी का सम्बन्ध ऐसे विपन्न परिवार से है, जिसकी विसंगतियों को छुपाये रखने वाला घर का मुखिया अपने आप को समाज में सफेद पोश बनाये रखता है और अपनी झूँठ प्रतिष्ठा को क़ायम रखने तथा घर की आन्तरिक दुर्व्यवस्थाओं को छुपाये रखने की दृष्टि से अपने मुख्य द्वार पर हमेशा 'पर्दा' लटकाये रखता है। वह परदा बेश कीमती नहीं बल्कि साधारण टाट का परदा था, किन्तु वास्तव में वह उसके घर की आबरू को बचाये रखने अथवा ढाँपे रखने का एक मात्र ज़रिया था, इसी की वजह से उस घर का मुखिया और कहानी का मुख्य क़िरदार समाज में अपना अस्तित्व बनाये हुए था। चाहे वह अस्तित्व खोखला ही था। कहानीकार यशपाल ने इसी विडम्बना और विसंगति को प्रस्तुत कहानी 'पर्दा' के माध्यम से प्रकट करने का सफलतम प्रयास किया। तात्त्विक दृष्टि से कहानी की समीक्षा इस प्रकार है –

1. कहानी का नामकरण – प्रस्तुत कहानी का नामकरण अपने आप में संक्षिप्त और रहस्य का प्रतीक है जिसे पढने की जिज्ञासा स्वतः उत्पन्न होने लगती है। चौधरी खानदार की इज्जत को बे-आबरू होने से बचाने वाला उसके घर के मुख्य द्वार पर लटका हुआ यह परदा ही इस कहानी का मुख्य शीर्षक है। यह शीर्षक कहानी के समस्त कथानक को अपने में समाहित किये हुए है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इस पर्दे के लिए वह अनेक कष्ट सहन करता है। इसके फट जाने पर वह स्वयं इसे सिलता है किन्तु अन्ततः, यह परदा हट जाता है और चौधरी की समस्त इज्जत मिट्टी में मिल जाती है।

2. कथावस्तु – प्रस्तुत कहानी परदा का कथावस्तु कौतुहलपूर्ण एवं रूचिकर है। यह संक्षिप्तता का गुण भी लिये हुए है। इस कहानी की विशेषता यह है कि यह प्रारम्भ से अन्त तक पाठक के मन को बांधे रखती है। यह काल्पनिक होते हुए भी संभाव्यता से युक्त है। इस कहानी का कथानक न केवल पीरबख्श को ही पाठकों के सामने चित्रित करने वाला है अपितु कई निम्न-मध्यम परिवारों एवं नौकरी-पेशा लोगों को और उनकी खोखली प्रतिष्ठा को सामने लाने वाला है। कथावस्तु का आरम्भ, विकास, चरमसीमा और अंत चारों ही पूर्णतः सुनियोजित है और समापन तो अत्यन्त हृदय विदारक है –

''भय से चीख कर ओट में हो जाने के लिये भागती हुई औरतों पर दया कर भीड़ छंट गई। चौधरी बेसुध पड़े थे। जब उन्हें होश आया, ड्योढी का परदा आंगन में सामने पड़ा था, परन्तु उसे उठाकर फिर से लगाने की सामर्थ्य उनमें अब शेष नहीं थी। शायद अब इसकी आवश्यकता भी न रही थी। परदा जिस भावना का अवलम्ब था, वह मर चुकी थी।''

पीर बख्श के दादा की आर्थिक स्थिति अच्छी थी, पक्का मकान था, उनकी मृत्यु के बाद उनका सीमित परिवार निरन्तर बढ़ता गया। स्थानाभाव के कारण सितवा की कच्ची बस्ती में किराये पर मकान और मकान के मुख्य द्वार पर कीमती परदा और वहीं परदा अब टाट के परदे का रूप ले लेता है। परदे की ओट में गरीबी और दरिद्रता, किन्तु परदे के बाहर सफेद पोश मिजाज और दिखावा। कथानायक अल्पवेतन भोगी होने के कारण अपने घर की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल रहता है, साहुकार से ब्याज पर कर्ज़ा उधार लेता है किन्तु समय पर उसे न चुका पाता है और अपमान की इन्तिहा सहन करता है। अब पंजाबी खान आवेश में आकर चौधरी खानदान की गरीबी की धज्जियाँ उड़ाते हुए उस पर्दे को खींच लेता है तो न केवल उसकी गरीबी की गोपनीयता ही उजागर होती है अपितु खानदानी महिलाओं की अस्मत भी बे-आबरू होकर आम हो जाती है। पंजाबी खान वहाँ से बिना रकम वसूल किये लौट जाता है और चौधरी के घर की इज्जत का एकमात्र अवलम्ब भी निढाल होकर चौक में टाट के परदे के रूप में बेबस पड़ा रहता है और पुनः वह परदा यथास्थान नहीं पहुँच पाता है क्योंकि जिस इज्जत को वह आज तक ढाँपे हुए था वह अब मर चुकी थी।

3. संवाद या कथोपकथन – यद्यपि प्रस्तुत कहानी 'परदा' में संवादों का अभाव है। सम्पूर्ण कहानी कथा की भांति व्यक्त की गई है किंतु वक्तव्याभिव्यक्ति की कला किसी भी तरह से कमजोर नहीं है।

''हरे भाई! हो तो तीस आने पैसे तो दो – एक रोज के लिये देना – ऐसी ही जरूरत आन पड़ी है।''

''मिया – पैसे कहाँ इस जमाने में, पैसे का मोल कौड़ी नहीं रह गया। हाथ में आने से पहले ही उधार में उठ गया तमाम।'' उत्तर मिला।

खान की तेजी बढ़ गई..... ''पैसा नई देना था, लिया क्यों? तनख्वाह किदर गें जाता? अगारा पैसा गारेगा। अग तुग्हार खाल खींच लेगा। पैसा नई है तो घर पर परदा लटकाये शरीफ जादा कैसे बनता? .....तुम अमको बीबी का गैना दो, बर्तन दो, कुछ भी दो – अम ऐसे नहीं जाएगा।''

बिल्कुल बेबस और लाचारी में दोनों हाथ उठाकर ख़ुदा से खान के लिये दुआ माँग पीर बख्श ने कसम खाई ''एक पैसा भी घर में नहीं, बर्तन भी नहीं, कपड़ा भी नहीं खान चाहे तो बेशक उसकी खाल उतार कर बेच ले।''

इस प्रकार 'परदा' कहानी की संवाद योजना अत्यन्त स्वाभाविक है और पात्रानुकूल है।

4. चरित्र-चित्रण – प्रस्तुत 'परदा' कहानी में मुख्य रूप से दो ही पात्र हैं। प्रथम चौधरी पीरबख्श जो मध्यम वर्गीय मुसलमान परिवार का सफेदपोश मिजाज मुखिया है और दूसरा पंजाबी खान बबर खाँ जो कच्ची बस्ती में रहकर ब्याज पर पैसे देने वाला क्रूर स्वभाव का आसामी है। चौधरी अल्पवेतन भोगी किन्तु एक जिम्मेदार व्यक्ति है। अपने खानदान की मान-प्रतिष्ठा का खयाल रखने वाला है। हमेशा सफेदपोश रहते हैं और घर की ड्योढी पर परदा लटका रहता है। उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है और घर की आन्तरिक स्थिति हृदय-विदारक है। इनका स्वभाव मृदुल और व्यवहार कुशल है, पवित्र हृदय है किन्तु इनकी मजबूरियाँ इनको झूठ बोलने के लिये इन्हें मजबूर करती हैं। जब इनके खानदान की इज्जत सरे आम हो जाती है तो अपने आपको संभाल नहीं पाते हैं और बेहोश हो जाते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कहानी का दूसरा पात्र पैसे वाला, सूदखोर, क्रूर स्वभाव वाला, लालची, कठोर और अव्यवहार कुशल है। जब उसे अपना पैसा समय पर नहीं मिलता है तो वह आवेश में आग-बबूला होकर चौधरी को उसके ही घर के आगे सभी परिवार के लोगों और मोहल्ले वालों के बीच गन्दी गालियाँ देता है। यहाँ तक कि उसके घर के मुख्य द्वार पर लटके हुए इज्जत के रखवाले परदे को भी खींच कर रख देता है और उसके घर की अस्मत को सरेआम बे-आबरू कर देता है।

खान की कठोरता उस समय पिघल जाती है, जब वह चौधरी परिवार की औरतों को कपड़ों के अभाव में अर्द्ध-नग्न अवस्था में देखता है। वह थूँकते हुए केवल ''लाहौल बिला'' कहकर बिना पैसा लिये वहाँ से चला जाता है।

5. वातावरण – उस समय जब अर्थ व्यवस्था में रुपया काफी कीमती था और उस रुपये की क्रमशक्ति पर्याप्त थी तब इस कहानी को वातावरण यशपाल द्वारा दिया गया। प्रस्तुत कहानी 'परदा' में एक परिवार के तीन पीढ़ियों की कहानी है किन्तु चौधरी युगीन परिवार की दास्तां प्रमुख रूप से चित्रित की गई है। चौधरी पीरबख्श के दादा का आर्थिक स्तर ऊँचा था, उनके पास एक पक्का मकान और दो लड़के थे। दोनों ही नौकरी पेशा थे किन्तु समय के साथ परिवार का आकार बढ़ा और आवास स्थान का अभाव हुआ, जिसके कारण कच्ची बस्ती में दो रुपये प्रति माह के हिसाब से मकान किराये पर लेना पड़ता है जिसके मुख्य द्वार पर अपनी आर्थिक विपन्नता को छुपाये रखने के लिये परदा लटका दिया जाता है। घर के आस-पास गरीब लोगों की बस्ती थी, पानी के लिये पूरे मोहल्ले में एक कमेटी का सार्वजनिक नल था जिसके आस-पास काई जम गई थी। नाली पर मच्छरों और मक्खियों के झुण्ड, घर के पास में रमजानी धोबी या जिसमें से गन्दे कपड़े के उबाल की बदबू हमेशा दिमाग पर आक्रमण किये रहती थी। वहीं पर दाई व बीकानेरी मोचियों के घर थे।

दूसरी ओर मकान मालिक का स्वभाव भी कम खतरनाक नहीं था –

''कौन बड़ी रकम अमा देते हो? वो रुपल्ली का किराया और वह भी छ: छ: महिने का बकाया। जानते हो लकड़ी का क्या भाव है? अच्छा, न हो – मकान छोड़ जाओ।'' अत: कहानीकार यशपाल ने देशकाल और वातावरण का प्रस्तुत कहानी में पूरा-पूरा ध्यान रखा है।

6. भाषा-शैली – कहानीकार यशपाल ने 'परदा' कहानी में पात्रों देशकाल व वातावरण के अनुसार भाषा-शैली को काम में लिया है। कहानी एक मुस्लिम परिवार से सम्बन्धा रखती है, इसलिये उन्होंने उर्दू-फारसी-अरबी भाषा का प्रयोग किया गया है, साथ ही हिन्दी के तद्भव शब्दों का प्रयोग कर कहानी को सरल व रोचक बना दिया है।

7. उद्देश्य – प्रस्तुत कहानी के माध्यम से रचनाकार यशपाल ने निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार के सफेद पोश नक़ाब को बेनक़ाब किया है और बताया कि मनुष्य को अपनी हैसियत नहीं छुपानी चाहिए। कथा नायक पीरबख्श मात्र अठारह रुपया प्रतिमाह कमाने वाला अल्पवेतन भोगी परिवार का मुखिया है। उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय और घर की हालत अत्यन्त विपन्न है, किन्तु वह इसका आभास किसी को नहीं होने देता है। सारी बस्ती में केवल चौधरी साहब ही पढ़े-लिखे सफेदपोश थे। उनके घर की ड्योढी पर एक परदा था जो उन्हें इज्जत प्रदान कराता था।

8.6 सारांश

अन्त, में हम यह कह सकते हैं कि 'परदा' कहानी यशपाल की सफलतम कहानी है और कहानी कला की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट कहानी है। इसमें निम्न मध्य मुस्लिम परिवार की विसंगतियों, कमजोरियों और उसकी विडम्बनाओं को व्यक्त करने में सफलता निहित है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इकाई- 9 : फणीश्वरनाथ 'रेणु'

संरचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 उद्देश्य

9.2 परिचय

9.3 पंचलाइट

9.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

9.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

9.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

9.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

9.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

9.6 सारांश

9.0 प्रस्तावना

साहित्य जगत् में रेणु का ख्याति एक असाधारण आंचलित रचनाकार के रूप में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण किये हुए हैं और हिन्दी साहित्य में आंचलित कहानी-उपन्यास के आरम्भ तथा उन्हें लोकप्रियता के चरम उत्कर्ष तक पहुँचाने का श्रेय फणीश्वरनाथ 'रेणु' को ही जाता है।

9.1 उद्देश्य

यहाँ फणीश्वरनाथ 'रेणु' एवं इनकी कहानी पंचलाइट का अध्ययन करेंगे।

9.2 परिचय

इनका जन्म 1921 ई. में बिहार के पूर्णिया जिले में हुआ। जिस पूर्णिया अंचल में इनका जन्म हुआ, वहाँ की लोक-संस्कृति, जीवन-मूल्य, रहन-सहन और खान-पान को रेणु ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवन्त बना दिया। उन्होंने इसी देशकाल और वातावरण का परिवेश देते हुए अनेक रचनाएँ लिखीं, जिनमें 'गाँव की धूल-माटी', 'आँगन की धूप', 'हँसी ठिठोली', 'बैलों की घंटियाँ', 'धान की भुरी हुई बालियाँ', 'गमकता चावल', 'मेला-ठेला' आदि के वर्णन इतने जीवन्त और अवाक् हैं कि पूणियां अंचल की दृष्टि पटल पर खरा-खरा व स्पष्ट चित्रित होत है। इन्होंने प्रशंसनीय उपन्यास भी लिखे जिनमें 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' प्रमुख हैं। ये उपन्यास हिन्दी के उपन्यासों की विकास यात्रा में मील के पत्थर की तरह है। 'तीसरी कसम', 'रसप्रिया', 'तीर्थोदक', 'लालपान की बेगम', 'ठेस' आदि उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। रेणु ने कुछ 'यात्रावृत्त' भी लिखे जो 'ऋणजल-धनजल' शीर्षक से प्रकाशित हुए। साहित्यकर्मी होने के साथ-साथ रेणु अच्छे राजनीतिज्ञ थे। विचारों में वे पूर्णत: समाजवादी थे और वे जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति आन्दोलन में सम्बद्ध रहे।

9.3 पंचलाइट

प्रस्तुत कहानी 'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ रेणु की एक ऐसी लघु कहानी है जो ग्रामीण जीवन की सादगी को स्पष्ट करती है। गांव की एक पंचायत है जो न्याय का काम करती है। अपराधों को रोकने के लिए अपराधियों को दण्ड देती है। अर्थ दण्ड से एकत्रित राशि से महतो टोली के पंच रामनवमी के मेले में एक पेट्रोमेक्स खरीदते हैं। जाजिम और सतरंजी की तरह पेट्रोमेक्स सभी पंचों के द्वारा खरीदकर गाँव में लाया जाता है। उसकी पूजा की जाती है और पूर्ण विधि-विधान से उसे जलाने की तैयारी की जाती है किन्तु

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न यह था कि उसे सबसे पहले जलायेगा कौन? वहाँ पर अलग-अलग पंचायतों का अलग-अलग बोलबाला था। ऐसी स्थिति में दूसरी पंचायत का आदमी अगर इसे जलाये तो यह गलत है। इससे अच्छा तो यह है कि पेट्रोमेक्स हो ही नहीं। परेशानी यह होती है कि महतो पंचायत के लोगों को पेट्रोमेक्स जलाना आता ही नहीं था। इसी पंचायत टोली का एक व्यक्ति गोवर्धन पेट्रोमेक्स जलाना जानता है किन्तु पंचायत ने उसे गुलरी काकी की बेटी मुनरी को देखकर फिल्मी गाने सुनाने के अपराध में उसका हुक्का-पानी दण्ड स्वरूप बन्द कर रखा है। पंचायत की इज्जत के संबंध में सोच कर पंच गोवर्धन को दण्डमुक्त करके उससे वह पेट्रोमेक्स जलाने का आग्रह किया जाता है। वह पेट्रोमेक्स जलाता है। उसी समय उसकी जगमगाती रोशनी में कीर्तन होता है। सारी पंचायत के लोग गोवर्धन से इसलिये प्रसन्न हो जाते हैं कि वह पेट्रोमेक्स जलाना जानता है। यहाँ तक कि वह अपराधी गुलरी काकी व उसकी बेटी मुनरी की दृष्टि में भी आदरणीय हो जाता है और उसे सिनेमा के गाने-गाने की पंचायती अनुमति मिल जाती है।

9.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

"पंचलैट के सिवा और कोई गप नहीं, कोई दूसरी बात नहीं। सरदार ने गुडगुडी पीते हुए कहा–दुकानदार ने पहले सुनाया, पूरे पाँच कोड़ी पाँच रुपया। मैंने कहा कि दुकानदार साहेब, यह मत समझिये कि हम लोग एक दम देहाती है, बहुत-बहुत पंचलैट देखा है। इसके बाद दुकानदार मेरा मुँह देखने लगा। बोला, लगता है, आप जाति के सरदार हैं। ठीक है, जब आप सरदार होकर खुद पंचलैट खरीदने आये हैं तो जाइये पूरे पांच कोड़ी में आपको दे रहे हैं।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक कथा संचय के 'पंच लाइट' नामक कहानी पाठ से लिया गया है जिसे प्रसिद्ध रचनाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने लिखा है। प्रस्तुत कहानी में बिहार के ग्रामीण जीवन की एक घटना का वर्णन किया है। गाँव की महतो टोली के पंच रामनवमी के मेले में अपनी पंचायत के लिये एक पैट्रोमेक्स खरीदते हैं। उसे वे पंचलैट कहते हैं पंचलैट खरीदने की प्रासांगिक स्थिति को कथाकार ने बहुत की स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है।

व्याख्या – बिहार के एक गाँव में सभी जातियों की अलग-अलग पंचायत टोली है और प्रत्येक पंचायत के पास अपनी अलग 'सभा चट्टी' है। उन टोलियों में एक मेहतो टोली है जिसके पंचों ने मिलकर यह निर्णय लिया है कि वे दण्ड-स्वरूप प्राप्त रूपयों को इकट्ठा करके एक पैट्रोमेक्स (लालटेन) खरीद ली जाये। रामनवमी के मेले से एक पैट्रोमेक्स खरीदा गया, जिसे पंचायत का सरदार अपने घर पर ले गया तब से गाँव की महतो जाति के सभी लोगों में सर्वत्र यही चर्चा है कि हमारी पंचायत पैट्रोमेक्स (पंचलैट) खरीद कर ले आई। इस चर्चा का मुख्य कारण यह था कि वे इस पैट्रोमेक्स के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते थे। उनके लिये यह पंचलैट एक अनोखी और इज्जत बढाने वाली चमत्कारी वस्तु लग रही थी। इसीलिये लगभग सभी की जबान पर उसी पंचलैट का ही जिक्र होता रहता है। दिन ढलने के एक घंटे पूर्व पंचायत टोले के सभी लोग सरदार के घर के आगे इकट्ठे हो जाते हैं और प्रतीक्षा करने लगते हैं। अन्य लोगों के आने की। क्योंकि आज पंचलैट के दूधिया प्रकाश में भजन-संध्या का कार्यक्रम तय किया गया था। पंचलैट को खरीदने के प्रसंग को लेकर सरदार अपनी पंचायत के अन्य साथियों को दूकानदार से हुई वार्ता का विवरण देने लगा। वह आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोला कि दूकानदार इस पंचलैट के पाँच सौ रुपये माँग रहा था, मैंने उससे कहा कि आप यह मत समझना कि हम निरा अज्ञान और गँवार हैं। हमने ऐसे कई पंचलैट देखे हैं। इसके बाद दूकानदार ने मेरा चेहरा देखकर कहा कि आप अपनी जाति की पंचायत के सरदार हैं और आप स्वयं यहाँ पंचलैट जैसी महत्त्वपूर्ण वस्तु खरीदने पधारे हैं। मैं आपका लिहाज करता हूँ और उचित कीमत में यह आपको देना चाहता हूँ। इसलिये उस्ने हमसे अधिक पैसे नहीं लिये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार रेणु ने सरदार की आत्म प्रशंसा व गाँव वालों की सरलता का सुन्दर चित्रण किया है।

2. भाषा-शैली सरल, प्रभावपूर्ण व अनुकूल है।

(2)

"यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आई थी। पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा। खरीदने के बाद भी नही। अब, पूजा की सामग्री चौके पर सजी हुई है, कीर्तनिया लोग खोल-ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं और पंचलैट पड़ा हुआ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

है। गाँव वालों ने आज तक कोई ऐसी चीज नहीं खरीदी थी जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। कहावत है न, भाई रे, गाय लूँ! तो दुहे कौन? 'लो मजा! अब इस कल कब्जे वाली को कौन बाले?''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की 'पंचलाइट' नामक कहानी से अवतरित है जिसमें मेहतों की टोली के लोगों की पंचलेट को जलाने की अज्ञान युक्त कशमकश को व्यक्त किया गया है। जब पंचलैट खरीदी गई थी तब किसी ने भी उसे जलाने की विधि के बारे में नहीं सोचा था और अब उसे जलाने वाला कोई भी नहीं है क्योंकि उसे जलाना किसी को नहीं आता है।

व्याख्या—महतो टोली का सरदार आज पंचलैट खरीद कर लाया और अपने घर पर ले गया। उसकी खुशी में पंचायत के सभी लोगों में अच्छी खासी उमंग है और प्रसन्नता भी है इसीलिये उन्होंने आज रात्री में पंचलेट की जगमगाते हुए दूधिया उजाले में भजन कीर्तन का आयोजन तय कर लिया और सूर्य अस्त होने से पहले ही सब लोग एक स्थान पर इकट्ठे हो गये। भजन संध्या के लिये पूजन की सामग्री इकट्ठी की गई और चौके पर सजा दी गई। गाने-बजाने वाले लोग अपनी खोल-ढोल और करताल जैसे संगीत के वाद्य यंत्रों को खोलकर बैठ गये किन्तु पंचलैट अभी उसी हाल में निर्जीव सा पड़ा हुआ है, जिस हाल में वह नया खरीदा गया था। क्योंकि मेहतो टोली का कोई भी व्यक्ति पंचलाइट को जलाना जानता ही नहीं है। आज पहली बार गाँव वालों ने ऐसी कल-पुर्जे वाली चीज खरीदी है जिसके बारे में कुछ जानते ही नहीं हैं। वे तो गाँव के सीधे-साधे लोग हैं जो केवल गोधन पालन में निपुण हैं, उन्होंने आज से पहले कभी ऐसी चीज का प्रयोग किया ही नहीं था। यह बात किसी के भी दिमाग में नहीं आई कि जिस चीज को इतने चाव से खरीदा जा रहा है, कम-से-कम उस चीज के प्रयोग की विधि तो जान लेनी चाहिये थी। बात पंचलैट खरीदने से पहले किसी ने भी नहीं सोची थी और न उसे खरीदते समय भी नहीं। यह बात दिमाग में नहीं आई। लोग एक दूसरे पर फब्तियाँ कसते हुए कहने लगे कि अब सभी इस पंचलेट का मजा लो। इस कलपुर्जे वाली वस्तु का उपयोग कैसे हो और कौन करे? यह तो वह कहावत हो गई कि 'गाय खरीदूं पर दूध कौन दुहे?'

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में कथाकार ने ग्रामवासियों की सादगीपूर्ण व सीधी-सच्ची जिन्दगी के आचरण को बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है।

2. बत्तीदार दीपक जलाने वालों के सामने आधुनिक वस्तुओं का अज्ञानवश कोई महत्त्व नहीं होता है।

3. अवतरण की भाषा ग्रामीण अंचलानुकूल है।

(3)

''यह बात नहीं कि गाँव भर में कोई पंचलैट बालने वाला नहीं। हर एक पंचायत में पंचलैट है, उसके जलाने वाले जानकार हैं। सवाल यह है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ-लाभ करके दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। जिन्दगी-भर ताना कौन सहेगा? बात-बात में दूसरे टोलों के लोग फूट करेंगे। तुम लोगों का पंचलैट पहली बार दूसरे के हाथों से.....। न, न! पंचायत की इज्जत का सवाल है।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की 'पंचलाइट' नामक कहानी से अवतरित है जिसमें कहानीकार रेणु ने बताया है कि रामनवमी के मेले से मेहतों की टोली ने पैसे इकट्ठा करके सरदार के माध्यम से पंचायत के लिये एक पैट्रोमेक्स खरीदा। परचूने की दूकान से तीन लीटर मिट्टी का तेल मंगाया गया उसे जलाने के लिये। समस्या यह उठ खड़ी हाती है कि अब उसे जलायेगा कौन? कोई भी व्यक्ति उसे जलाना नहीं जानता है, क्योंकि उन्होंने तो सादगीपूर्ण जीवन में गौधन-पालन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं सीखा।

व्याख्या—लेखक रेणु स्पष्ट करते हैं कि गाँव में अलग-अलग टोले की अलग-अलग पंचायतें हैं। सभी के पास लगभग पैट्रोमेक्स जैसा उपकरण है और कई लोग गाँव में ऐसे हैं जो उसका उपयोग करना जानते हैं। अगर कोई नहीं जानता है तो केवल मेहतो टोली के लोग इस बारे में अनजान हैं। सबसे बड़ी चिन्ता और इज्जत का प्रश्न तो यह है कि अपने टोले का सदस्य ही विधि-विधान से उसका प्रजन कर श्रीगणेश कर सकता है, दूसरे टोले का आदमी नियम से थोड़े ही इसे जला सकेगा। और यदि दूसरे टोले का आदमी इसे जलायेगा तो इसमें हमारे टोले की क्या इज्जत रह जायेगी। जिन्दगी भर दूसरे टोले के लोगों से ताने सुनने पड़ेंगे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अत: वे सोचते हैं क दूसरे लोग ताने कसेंगे, मज़ाक बनायेंगे इससे तो अच्छा है कि इस पंचलैट को ऐसी हालत में ही बिना काम में लिये पड़ा रहने दें। दूसरे टोले के लोगों की सहायता नहीं लेनी चाहिए।

विशेष – 1. कहानीकार ने ग्रामीण पंचायतों के पारस्परिक स्पर्धा भाव को स्पष्ट किया है।

2. भाषा सरल, प्रवाह पूर्ण और शैली भावाभिव्यंजक है।

(4)

"गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुँह में बार-बार एक बात जाकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले? वह जानती है कि गोधन पंचलैट बालना जानता है। लेकिन गोधन का हुक्का-पानी पंचायत में बन्द है। मुनरी की माँ ने फरियाद की थी कि वह उसकी बेटी को देखकर सनम-सलम वाला सलीमा का गीत गाता है। "हम तुमसे मोहब्बत करके सलम।" पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन। और अब तक पान-सुपारी खाने के लिये टोले के पंचों को कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस पंचों को मौका मिला, दस रुपया जुर्माना। न देने पर हुक्का-पानी बन्द।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" की 'पंचलाइट' नामक कहानी से अवतरित है जिसमें कहानीकार 'रेणु' ने बिहार के ग्रामीण जन-जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। बताया है कि जब पंचलैट खरीद ली जाती है और उसे कोई जलाना नहीं जानता है तो सबके मन में चिन्ता उत्पन्न हो जाती है। उस टोली में केवल एक ही व्यक्ति ऐसा है जो उस उपकरण का उपयोग करना जानता है किन्तु पंचायत ने उसका हुक्का-पानी बन्द का दण्ड सुनाया हुआ है।

व्याख्या – गुलरी काकी की बेटी मुनरी इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि गोवर्धन पंचलैट को जलाना जानता है। यह बात बार-बार उसके मुंह तक आकर मन में ही चली जाती है। वह उसका नाम चाहते हुए भी बताने में असमर्थ रहती है क्योंकि एक दिन उसकी माँ ने गोवर्धन के खिलाफ पंचायत में शिकायत की थी कि वह उसकी जवान लड़की को देखकर फिल्मी गीत "हम तुमसे मोहब्बत करके सनम" गाता है और लड़की को गलत निगाहों से देखता है तथा उसे गलत आचरण सिखाता है। इस बात पर पंचायत के लोगों ने उस पर दस रुपये का अर्थदण्ड घोषित कर दिया था। जब उसने उस दण्ड की भरपाई नहीं की तो उसका हुक्का-पानी बन्द कर दिया था। (हुक्का-पानी बन्द एक ऐसा दण्ड होता है जिसमें अपराधी के साथ में उठने-बैठने, खाने-पीने या व्यवहार जमाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है। यह दण्ड परम्परा आज भी ग्रामीण अंचल की पंचायतों में कायम है।) वैसे उस पंचायत के लोग पहले से ही गोवर्धन से चिढ़े हुए थे, क्योंकि वह बाहर से आकर इस गाँव में बसने वाला पहला शक्स था, जिसने पंचों को पान-सुपारी खाने के लिये कुछ भी न देकर उनके अदब की परंपरा को तोड़ा था और वह पंचों की कतई परवाह नहीं करता है। पंचों ने उसके खिलाफ शिकायत सुनी और हत्थे चढ़ा लिया। आज सब कुछ जानते हुए भी मुनरी अपनी जबान बन्द किये हुए थी और वह गोवर्धन का नाम प्रस्ताव में असमर्थ थी।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथाकार ने ग्रामीण पंचायत के गठन और उसके नियमों का सुन्दर चित्रण किया है।

2. आंचलिक शब्दावली का सुन्दर प्रयोग किया है।

3. भाषा सरल और अनुकूलता से युक्त है।

(5)

"अन्त में पंचलैट की रोशनी से सारी टोली जगमगा उठी तो कीर्तनियाँ लोगों ने एक स्वर में महावीर स्वामी की जय ध्वनि के साथ कीर्तन प्रारम्भ कर दिया। पंचलैट की रोशनी में सभी के चेहरे स्पष्ट हो गये। गोधन ने सबका दिल जीत लिया। मुनरी ने हसरत भरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आँखें चार हुई और आँखों ही आँखों में बातें हुई। कहा सुना माफ करना, मेरा क्या कसूर?"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" की 'पंचलाइट' नामक कहानी से अवतरित है जिसमें कहानीकार ने स्पष्ट किया है कि पंचायत के पंच पैट्रोमेक्स तो ले आते हैं किन्तु उसका उपयोग सिवाय गोधन के अन्य कोई नहीं जानता है जबकि वह पंचायत के द्वारा सजा याफ्ता होता है किन्तु जब उसने पंचलैट को आसानी से जला दिया तो वही गोवर्धन सबकी नजरों में चढ़ जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

व्याख्या – जब ग्राम की पंचायत के लोगों के सामने पंचलैट के न जलने पर इज्जत का प्रश्न खड़ा होता है तो गोधन के द्वारा इस जटिल समस्या का निराकरण आसानी से हो गया। उसने पंचलैट को जला दिया। जब उसका दूधिया प्रकाश शनैः-शनैः वहाँ के वातावरण को आलोकित करने लगा तो वहाँ पर उपस्थित सभी लोगों के चेहरे खिल गये और स्पष्ट हो गये। तत्पश्चात कीर्तनियों की टोली ने एक साथ एक स्वर में महावीर भगवान् की जयघोष के साथ कीर्तन प्रारम्भ कर दिया। पंचायत की इज्जत रह जाने से सभी के चेहरे खिल उठे। अचानक मुनरी ने प्यार भरी नजरों से गोवर्धन की ओर देखा और आँखों-आँखों में अपनी गलती की उससे क्षमा माँग ली।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में 'रेणु' ने ग्रामीण पंचायत की प्रसन्नता व्यक्त की है।

2. अपनी जाति की इज्जत रखने के लिये मेहतो टोली गोधन की आभारी रहती है।

3. भाषा सरल व शैली वर्णनात्मक है।

9.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

9.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. पंच लाइट कहानी किस प्रकार की रचना है?

उत्तर – पंच लाइट आँचलिक शैली की कहानी है।

प्रश्न- 2. ग्रामीण अंचल की पंचायतों की प्रतिष्ठा किन चीजों से बढ़ती हुई आँकी जाती है?

उत्तर – एक सम्पन्न पंचायत के पास अपनी जाजिम और शतरंजी होनी चाहिये और प्रकाश के लिये कम से कम एक पैट्रोमेक्स भी होनी चाहिये जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो।

प्रश्न- 3. कहानी 'पंच लाइट' के कहानीकार का पूरा नाम क्या है?

उत्तर – पंच लाइट कहानीकार का नाम 'फणीश्वरनाथ रेणु' है।

प्रश्न- 4. मेहतो टोली के सरदार ने पंचलैट कब खरीदी थी?

उत्तर– मेहतो टोली के सरदार ने रामनवमी के मेले से पंचायत के वास्ते पंचलैट (पैट्रोमेक्स) खरीदी थी।

प्रश्न- 5. पंचलैट खरीदने के लिये पैसे कहाँ से आये?

उत्तर – पंचायत में अपराधी को दण्ड स्वरूप अर्थदण्ड दिया जाता है। उसी पैसे को इकट्ठा कर पैट्रोमेक्स खरीदा गया।

प्रश्न 6. पंचों ने गोधन का हुक्का पानी बन्द क्यों कर दिया था?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी पंचलाइट का एक पात्र गोधन नया-नया गाँव में आकर बसा है। वह पंचों की तनिक भी परवाह नहीं करता है। उसने पान-सुपारी के लिये उन्हें कुछ भी नहीं दिया था जिससे वे सभी उस पर चिढ़े हुए थे। वह गुलरी काकी की बेटी मुनरी को देखकर फिल्मी गीत गाया करता था। इस अपराध में उसका हुक्का-पानी बन्द कर दिया गया।

प्रश्न- 7. पंचों को किसने बताया कि गोधन पंचलैट जलाना जानता है?

उत्तर – मुनरी ने चुपचाप अपनी सहेली के कान में कहा था कि गोधन को पंचलैट जलाना आता है। उसी के इशारे पर कनैली ने पंचों से यह बात कही थी।

प्रश्न- 8. जब घड़ीदार गोधन के पास से लौटा तो उसने क्या कहा?

उत्तर – घड़ीदार ने लौटकर पंचों से कहा कि गोधन आने को राजी नहीं हो रहा है। उसने यह भी कहा कि पंचों का क्या भरोसा है, कल को कोई पुर्जा बिगड़ गया तो वे मुझे ही दण्डित करेंगे और वह दण्ड मुझको ही भरना पड़ेगा।

प्रश्न- 9. मेहतो टोली के सरदार में पंच लाइट कितने में खरीदा था?

उत्तर – मेहतो टोली के सरदार ने सौ रुपये में वह पैट्रोमेक्स खरीदा था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न-10. पंचलैट के जला देने पर पंचायत के लोगों ने गोधन के प्रति क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर – जब गोधन ने पंचलैट को जला दिया तो पंचायत के लोगों के चेहरे खुशी से खिल गये और गोधन के प्रति जो दुर्भावना थी वह समाप्त हो गई उसके दण्ड की अवधि समाप्त कर दी गई।

9.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. रेणु द्वारा रचित कहानी पंचलाइट की मूल संवेदना को अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'पंचलाइट' सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार 'फणीश्वरनाथ रेणु' द्वारा प्रस्तुत की गई है। इसमें बिहार प्रदेश के एक ग्रामीण अंचल का सुन्दर चित्रांकन किया गया है। प्रस्तुत कहानी की मूल संवेदना ग्रामीण अंचल में व्याप्त सामाजिक जीवन की विसंगतियाँ हैं। आज ग्रामीण समाज की परम्पराएँ अनेक समस्याओं से ग्रस्त हैं। जातिवाद और वर्गवाद पूरी तरह समाज पर हावी हो चुका है। यही कारण है कि आज भी कई गाँवों में अलग-अलग जातियों की अलग-अलग पंचायती टोलियाँ बनी हुई हैं। अलग-अलग सभा-चट्टी बनी हुई है जिससे हमेशा उनमें एक-दूसरे वर्ग के प्रति स्पर्धा बनी रहती है। एक-दूसरे से ईर्ष्या भाव रखते हैं। एक विशेष बात यह है कि ग्रामीण अंचल की पंचायतों में पंचों की मनमर्जी के फैसले किये जाते हैं, इन फैसलों में वे अपनी व्यक्तिगत टसलबाजी का भी रिक्त स्थान पूरा कर लेते हैं। प्रस्तुत कहानी का पात्र गोवर्धन उर्फ गोधन एक ऐसा युवक है जो दूसरी टोली से आकर मेहतो टोली में बस जाता है। वह अपनी मर्जी का मालिक और स्वच्छन्द प्रवृत्ति का युवक है। वह पंचों की बतौर खुश रखने हेतु पान-सुपारी खाने के निमित्त कुछ नहीं देता है और उनकी जरा सी भी परवाह नहीं करता है जिससे पंचायत के सभी सदस्य उससे प्राय: चिढे से रहते हैं, एक दिन मौका मिलते ही उसे अपने हत्थे चढा लिया जाता है और गाँव की एक युवती के साथ गलत आचरण करने और उसे देखकर फिल्मी गीत गाने के आरोप में दस रुपये का अर्थ दण्ड और न चुकाने पर हुक्का-पानी बन्द का दंड दे दिया जाता है। गोधन दस रुपये नहीं देता है तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इस तरह ग्रामीण अंचल में सामाजिक बदलाव पर आने वाली प्रमुख समस्या की ओर भी कहानी का संकेत जाता है। प्रस्तुत कहानी ऐसी संवेदना की ओर भी पाठकों का ध्यान आकर्षित कराती है जिसमें अशिक्षा और अविकसित मानसिकता भी व्याप्त है। आज के वैज्ञानिक युग में पैट्रोमेक्स जैसी साधारण वस्तु के उपयोग के प्रति वहाँ के लोग अनभिज्ञ बने हुए हैं। यह अपने आपमें एक विचित्रता है। जहाँ लोगों की मानसिक स्थिति उत्तरोत्तर प्रगति की ऊँचाइयों को छू रही है वहीं उस गाँव में फिल्मी गीत गाना दण्डनीय अपराध माना जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी की मूल संवेदना ग्रामीण सामाजिक जीवन की विसंगतियाँ हैं।

प्रश्न-2. पंच लाइट कहानी के आंचलिक स्वरूप को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – हिन्दी साहित्य की कहानियों के समीक्षकों की मान्यता है की आंचलिकता अपने आपमें कहानी की एक विशिष्ट शैली है अर्थात् कहानीकार की यह स्वतंत्र अभिव्यक्ति का एक तरीका है। आंचलिक कहानी में किसी क्षेत्र विशेष की सम्पूर्ण परम्पराओं रीति-रिवाजों, मान्यताओं आदि का सहज, सरल व अकृत्रिम चित्रण होता है। आंचलिक कहानी में कथानक प्राय: ग्रामीण क्षेत्र से लिये जाते हैं। पिछड़े क्षेत्रों या सीमावर्ती अथवा पहाड़ी इलाकों से ही आंचलिक कहानी के लिये कथानक लिये जाते हैं और उसी क्षेत्र की बारीकियाँ चित्रित करने का प्रयास किया जाता है। सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि सभी पक्षों की विशेषताओं की अति सूक्ष्मता से लिया जाता है। वहाँ की जीवन चर्या के प्रत्येक पहलू, यथा – रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, वेश-भूषा, भाषा-विचार आदि को कहानी में समेटा जाता है। आंचलिक कहानियों में भाषा-शैली की विशेष छाप छोड़ी जाती है क्योंकि आंचलिक शैली में एक विशेष प्रकार की चित्रात्मकता होती है और कहानीकार रेखाचित्रीय शैली के माध्यम से पात्रों के शब्द-चित्र प्रस्तुत करता है। कविता के क्षेत्र में जो स्थान लोक-काव्य और लोक-गीत का होता है, वही स्थान कहानी साहित्य में आंचलिक कहानी का होता है।

प्रस्तुत कहानी 'पंच लाइट' के रचनाकार 'रेणु' बिहार और उड़ीसा के आंचलिक क्षेत्रों से कथानक लेकर अनेक मर्मस्पर्शी कहानियाँ लिखी हैं जिनमें आंचलिक मिट्टी की सोंधी-सोंधी गन्ध प्रस्फुटित होती है। प्रस्तुत कहानी पंचलाइट में बिहार के एक देहात की जीवनचर्या और पंचायत का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। सामाजिक विसंगति और जनमानस का पिछड़ापन इस कहानी की मूल संवेदना है। जिसे लेखक ने आंचलिक भाषा-शैली में सफलता पूर्वक प्रस्तुत किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रश्न-3. 'पंच लाइट' कहानी की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—सुप्रसिद्ध आंचलिक कहानीकार फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित 'पंच लाइट' बिहार प्रांत के एक गाँव की सामाजिक चेतना परक कहानी है जिसे अत्यंत रोचक ढंग से आंचलिक शैली में चित्रित किया गया है। इस कहानी में आंचलिक तत्त्वों का सफल समावेश किया गया है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. प्रस्तुत कहानी में ग्रामीण अंचल की जातीय और वर्गीय स्थिति को स्पष्ट किया गया है।

2. ग्रामीण अंचल की पंचायती गतिविधियों, क्रिया-कलापों और मनमानी न्याय व्यवस्था को स्पष्ट किया गया है।

3. ग्रामीण पंचायतों में उसकी प्रतिष्ठा उनके पास उपलब्ध वस्तुओं से आँकी जाती है, जैसे—जाजम पट्टी का होना, शतरंगी, पैट्रोमेक्स, संगीत के वाद्य-यंत्र आदि।

4. प्रस्तुत कहानी में पैट्रोमेक्स खरीदने और उसे लाने के बाद उपयोग के प्रति अज्ञानता का रोचक वर्णन किया गया है।

5. गोधन नामक युवक का हुक्का-पानी बन्द करने के दण्ड से वहाँ की रिश्वतखोर न्याय व्यवस्था को भी स्पष्ट किया गया है।

6. प्रस्तुत कहानी में ग्रामीण भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है।

7. रात्रि में सामुहिक रूप से भजनकीर्तन करना, टोले की व्यवस्था करना, विपत्ति में एकजुट होना, पंचायत की इज्जत को अपनी प्रतिष्ठा समझना आदि बातों को स्थानीय रंगत के अनुसार चित्रित किया गया है।

8. प्रस्तुत कहानी का शीर्षक आंचलिक शैली में प्रयुक्त है।

अतः पंच लाइट कहानी उत्कृष्ट आंचलिक कहानी है।

9.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. '' 'पंच लाइट' गाँव के सामाजिक जीवन के बदलाव की कहानी है।'' कथन की समीक्षा कीजिये।

उत्तर—अपनी कहानियों में आंचलिक और ग्रामीण जीवन को एक नूतन भंगिमा प्रदान करने वाले सुप्रसिद्ध आंचलिक कहानीकार फणीश्वरनाथ रेणु कहानी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्रत्येक क्षेत्र या अंचल विशेष की अपनी अलग लोक मान्यताएँ, अपनी अलग परम्पराएँ और अपनी अलग सामाजिक स्थितियाँ-परिस्थितियाँ होती हैं। रेणुजी ने उनके परिवेश के रीति-रिवाजों और उसमें अंगड़ाई ले रही राजनैतिक चेतना को लोक जीवन और संस्कृति में पिरोकर सुरीली वाणी दी है। विशेष कर बिहार के पूर्णिया जिले के आंचलिक को यथावत अपनी रचनाओं में बड़े कौशल से उतारा है। 'पंचलाइट' कहानी इसी प्रकार की उत्कृष्ट रचना है।

'पंच लाइट' : एक सामाजिक चेतनापूर्ण कहानी—

प्रस्तुत कहानी 'पंच लाइट' में बिहार प्रांत के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र की सामाजिक चेतना तथा जीवन की सादगी को चित्रित किया गया है। वहाँ पर यद्यपि आज भी वही स्थिति है जो आजादी से पूर्व अथवा अशिक्षा काल में थी किन्तु कुछ बातों में ग्रामीण जीवन अब बदलाव लाया है। इस कहानी में उसी बदलाव का चित्रण किया गया है। वर्तमान भौतिकवादी वैज्ञानिक युग में गाँवों में नई चेतना का प्रचार-प्रसार होने लगा है और वहां के लोग सामाजिक जीवन में नव आविष्कृत संसाधनों को अपनाने लगे हैं—

1. **आंचलिक क्षेत्र का जातिवाद**—ग्रामीण सामाजिक जीवन में जातिवाद की भावना पनपती जा रही है, जिसका मूल कारण राजनैतिक चेतना है। गाँवों में सभी लोग अपनी-अपनी जातियों के विकास की बात सोचते हुए अन्य जाति के लोगों से स्पर्धा की भावना रखते हैं और इसी वजह से अलग-अलग टोलियाँ बना ली जाती हैं। इसे वे अपनी जातीय गौरव रक्षा का आधार मानते हैं। उनकी अलग पंचायत, अलग सभाचट्टी, अलग कानून व न्याय व्यवस्था, अलग सुविधाएँ होती हैं। अपनी जाति के कार्यक्रमों के लिये अलग जाजमपट्टी, शतरंगी, पैट्रोमेक्स, अलग सांस्कृतिक कार्यक्रम व्यवस्था उनकी प्रतिष्ठा है। प्रस्तुत कहानी में अलग सांस्कृतिक कार्यक्रम व्यवस्था उनकी प्रतिष्ठा है। प्रस्तुत कहानी में मेहतो जाति के लोगों को अपनी पंचायत पर गर्व रहता है। जाति-बिरादरी का सम्मान बढ़ाने वाले पंचों का आदर करना वे अपना कर्त्तव्य मानते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. जातिगत पंचायती न्याय व्यवस्था – प्रस्तुत कहानी में मेहतो टोले की पंचायत का उल्लेख कर कहानीकार में स्पष्ट किया है कि गाँवों में प्रत्येक जातीय टोले की अपनी अलग पंचायत होती है और सभी विवादों का निपटारा उन्हीं जातिगत पंचायतों के द्वारा किया जाता है। जाति विशेष के सभी लोग पंचायत के फैसले को मानने के लिये कृत-संकल्प होते हैं और उनके हर आदेश की अनुपालना के लिये सभी लोग सामुहिक रूप से उत्तरादायी होते हैं। जो व्यक्ति पंचों के आदेश का उल्लंघन करता है वह पंचायत की दृष्टि में दण्ड का भागी होता है। दण्ड स्वरूप अर्थ दण्ड या सामाजिक बहिष्कार किया जाता है, यथा कहानी के पात्र गोधन को दस रुपये का अर्थ दण्ड दिया जाता है और जब वह नहीं चुकाना है तो उसका हुक्का-पानी बन्द कर दिया जाता है। अत: प्रस्तुत कहानी ग्रामीण जातिगत पंचायती न्याय व्यवस्था को स्पष्ट करने वाली चेतना परक कहानी है।

3. जातिगत प्रतिष्ठा की चिन्ता – ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जीवन में भौतिक साधनों के प्रति प्रचुर मात्रा में बदलाव आया है। अब प्रत्येक पंचायत के लोग अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखना चाहते हैं और भौतिक साधनों के प्रति स्पर्धा की भावना आने लगी है। यदि गाँव की किसी पंचायत के पास कोई भौतिक सुविधा है तो दूसरी पंचायत भी उन साधनों को इकट्ठा करने में पीछे नहीं रहती है। मेहतो टोली अपनी पंचायत में जाजम, शतरंजी और पैट्रोमेक्स जैसी वस्तुओं का संग्रह करने में आगे रहती है। जब पैट्रोमेक्स खरीद कर लाया जाता है तो कोई भी उसे काम में लेना नहीं जानता है। जब लोग दूसरी पंचायत के व्यक्ति से उसे जलवाने का प्रस्ताव रखते हैं तो उसे स्वीकार नहीं किया जाता है। दूसरी पंचायत के सामने अपनी इज्जत का खयाल रखना आवश्यक है। कहानीकार में इस बदलाव को बहुत ही अच्छे ढंग से व्यक्त किया है।

4. नारी सम्मान की चेतना – प्रस्तुत कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहाँ शहरी क्षेत्रों में नारी वर्ग के प्रति सम्मान की भावना बलवती हुई है वहीं ग्रामीण अंचल में भी नारी सम्मान की भावना का प्रचार हुआ है। अब तो गाँवों की पंचायतों में नारियों को प्रतिष्ठित पदों के लिये आरक्षित किया गया है। प्रत्येक पंचायत समाज की स्त्रियों के साथ होने वाले अत्याचारों, अश्लील व अभद्रता के आचरणों के प्रति सजग है। विपरीत आचरण करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाती है। उन्हें दण्डित किया जाता है। सरकार ने भी पंचायत राज व्यवस्था के अन्तर्गत ग्राम पंचायतों के अनेक ऐसे अधिकार प्रदान किये हैं जो सर्वोच्च न्यायालय तक मान्य हैं। प्रस्तुत कहानी पंच लाइट में जब गुलरी काकी अपनी बेटी की शिकायत कहानी के पात्र गोधन के खिलाफ पंचायत में करती है तो उसे नारी प्रतिष्ठा का मुद्दा मान लिया जाता है और गोधन का हुक्का-पानी दण्ड स्वरूप बंद कर दिया जाता है अत: ग्रामीण क्षेत्रों में भी नारी सम्मान की भावना का विकास हुआ है।

5. सामाजिक चेतना में परिवर्तन – प्रस्तुत कहानी में मेहतो टोले की पंचायत द्वारा पैट्रोमेक्स खरीदने का वर्णन अत्यंत रोचक ढंग से किया गया है। इस पंच लाइट का खरीदना पंचायत प्रतिष्ठा का बढ़ाना है। पंचायत में एकत्र अर्थ दण्ड स्वरूप राशि से सरदार के माध्यम से सौ रुपये में पंच लाइट खरीदी जाती है जिसकी पूरे समाज में दिन भर चर्चा रहती है और सभी के चेहरे पर इस बात की प्रसन्नता झलकती है अन्त में पैट्रोमेक्स की दूधिया रोशनी में संगीत का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत होता है।

पंचायत के लोगों में प्रतिष्ठा की भावना भी रहने लगी है इसलिये वे पंच लाइट को दूसरी पंचायत के व्यक्ति से जलवाना पसन्द नहीं करते इसीलिये गोधन का हुक्का-पानी पुन: प्रारम्भ कर पंच लाइट उसी से जलवाई जाती है।

9.6 सारांश

प्रस्तुत विवेचना के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि बदलते हुए परिवेश में सामाजिक ग्रामीण चेतना में भी बदलाव आया है। कहानीकार ने इस सामाजिक परिवर्तन का प्रस्तुत कहानी में सांकेतिक वर्णन किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इकाई-10 : मोहन राकेश

संरचना

10.0 प्रस्तावना

10.1 उद्देश्य

10.2 परिचय

10.3 परमात्मा का कुत्ता

10.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

10.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

10.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

10.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

10.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

10.6 सारांश

10.0 प्रस्तावना

आधुनिक संवेदना के प्रख्यात रचनाकार, महानगरीय जीवन के तनाव, टूटन, बिखराव और अलगाव के कुशल चितेरे मोहन राकेश का जन्म 1925ई. में अमृतसर में हुआ। 'नई कहानी' आन्दोलन के तीन सूत्राधारों में मोहन राकेश एक थे। कमलेश्वर और यादव के साथ उन्होंने इस आन्दोलन को गति प्रदान की।

10.1 उद्देश्य

यहाँ हम मोहन राकेश एवं उनकी कहानी परमात्मा का कुत्ता के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

10.2 परिचय

मोहन राकेश एक सफल कहानीकार और नाटककार के रूप में अपनी पहचान रखते हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी कहानी तथा नाटक लेखन के उत्कृष्ट व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ी। शिल्प की दृष्टि से इन्होंने अनेक प्रयोग किये। इनका दृष्टिकोण सदैव आत्मपरक रहा, इसलिये इन्होंने आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति में विशेष सफलता प्राप्त की। मोहन राकेश की कहानियों में प्रतीकों का बड़ा ही सार्थक प्रयोग हुआ है। इनकी प्रमुख रचनाओं में – 'लहरों के राजहंस', 'आषाढ का एक दिन', 'आधे अधूरे' (नाटक), 'अंधेरे बन्द कमरे' (उपन्यास), 'जानवर और जानवर', 'नए बाल', 'राये रेशे', 'इन्सान के खण्डहर' (कहानी संग्रह) प्रमुख रही हैं। 1972 में मोहन राकेश हमेशा-हमेशा के लिये संसार से अलविदा हो गये।

10.3 परमात्मा का कुत्ता

मोहन राकेश द्वारा रचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' आधुनिक सामाजिक जीवन पर आधारित है। यह सर्वाधिक चर्चित समस्यात्मक कहानी है जिसमें वर्तमानकालीन शासन-तंत्र में व्याप्त ज्वलंत विसंगतियों पर प्रकाश डाला गया है और लालफीताशाही व भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया गया है। प्रस्तुत कहानी में नवीन संदर्भों की खोज हुई है और संवेदनाएँ अपने समय से जुड़ कर स्वत: अभिव्यंजित हुई हैं। 'परमात्मा का कुत्ता' निष्क्रियता के विरूद्ध क्रियाशीलता के संकल्प की कहानी है। प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही का जमकर विरोध किया गया है। सरकारी कर्मचारियों को सरकार का कुत्ता कहा गया है, जो सरकार की ओर से भौंकते रहते हैं। जो किसान मजबूर अथवा पीड़ित है उन्हें परमात्मा का कुत्ता कहा गया है। वह न्याय प्राप्त करने के लिये भौंकता रहता है। अत: प्रस्तुत कहानी संवेदनशील होते हुए भी भावुक आक्रोश की कहानी है। मोहन राकेश की यह कहानी कथा-भाषा व शिल्प की दृष्टि से उल्लेखनीय कहानियों में से एक है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

10.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

''पुलिस की फैली हुई टाँगें धीरे-धीरे खुल गई थी और आवाज इतनी ऊँची हो गई थी कि कम्पाउण्ड के बाहर में भी बहुत से लोगों का ध्यान उसकी ओर खिंच गया था। वह बोलता हुआ साथ ही घुटनों पर हाथ मार रहा था, सरकार को अभी और वख्त चाहिये। दस-पांच साल में सरकार फैसला करेगी कि अर्जी मंजूर होनी चाहिये या नहीं, सरकार वख्त ले रही है। काल! यमराज भी तो हमारा वख्त गिन रहा है। उधर वह हमारा वख्त पूरा करेगा और इधर तुम कहना कि तुम्हारी अर्जी पास हो गई।''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मोहन राकेश द्वारा रचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' से अवतरित है जिसमें कहानीकार ने प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार का विरोध प्रकट किया है। साथ ही व्यक्ति की कर्त्तव्यनिष्ठ बनने की प्रेरणात्मक भावना व्यक्त की है। एक ग्रामीण व्यक्ति कमिश्नर साहब के कार्यालय का जम कर विरोध करता है जिसे सुनकर वहाँ तैनात पुलिसकर्मी सावधान हो जाते हैं।

व्याख्या – गाँव का एक अत्यंत परेशान व्यक्ति कमिश्नर के कार्यालय के पास एक पेड़ के नीचे अपनी पगड़ी बिछाकर अपने साथ में आई दो औरतों के साथ बैठ गया और वह सरकार के खिलाफ बोलने लगा। वहीं बरामदे में अपनी ड्यूटी पर तैनात पुलिस का कर्मचारी अपने पैरों को फैलाकर आराम कर रहा था। ग्रामीण परेशान व्यक्ति की विरोधी आवाज इतनी तेज हो गई थी कि वहाँ के पुलिसकर्मी भी सावधान हो गये और उनकी फैली हुई टाँगें भी सावधानी से कठोर हो गई। यहाँ तक कि उसकी आवाज परिसर के बाहर तक पहुँचने लगी, जिससे वहाँ के लोगों का ध्यान भी आकर्षित हो गया।

ग्रामीण व्यक्ति अपने पैरों पर थाप मारते हुए जोर-जोर से कह रहा था कि सरकारी तंत्र में चारों ओर भ्रष्टाचार फैला हुआ है। मेरी अर्जी को स्वीकृत करने के लिये सरकार को समय चाहिये। समय लगाते-लगाते काफी लम्बी अवधि समाप्त हो गई है और मेरी अर्जी को स्वीकृत करने में सरकार को दस-पाँच वर्ष और लग जायेंगे क्योंकि यहाँ लालफीताशाही जो फैली हुई है। सरकार हमारा समय बर्बाद कर रही है। हमारा जीवन काल भी बीतता जा रहा है। इधर सरकार समय लगा रही है और उधर मौत का मालिक यमराज हमारी जिन्दगी के दिन गिन रहा है। यदि इसी तरह से लालफीताशाही चलती रही तो हमारी मौत के साथ ही शायद हमारी अर्जी मंजूर होगी। इस प्रकार प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार और कर्त्तव्यहीनता के कारण हमें कभी भी समय पर न्याय नहीं मिल पायेगा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में देश की शासनतंत्र में व्याप्त विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है।

2. प्रस्तुत अवतरण की भाषा सरल किन्तु व्यंग्यात्मक है।

(2)

'' 'मिस्टर यहाँ से उठ नहीं सकेगा।' वह आदमी बोला 'मिस्टर यहाँ का बादशाह है। पहले मिस्टर देश के बेताज बादशाहों की जय बुलाता था। अब वह किसी की जय नहीं बुलाता। अब वह आप बादशाह हैं – बेताज बादशाह। इसे कोई लाज-शर्म नहीं है। उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता। समझा चपरासी बादशाह।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मोहन राकेश द्वारा रचित 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी से अवतरित है। कहानीकार ने स्पष्ट किया है कि जब ग्रामीण व्यक्ति कमिश्नर साहब के कार्यालय के सामने सरकार के खिलाफ तीव्र आवाज में बोल रहा था तो वहाँ के चपरासी ने उसे चुप होने और वहाँ से हट जाने के लिये कहा, किन्तु वह किसान वहाँ से नहीं हटा और उसने चपरासी को फटकारते हुए उसी टोन व आवेश में उसे जवाब दिया।

व्याख्या – जब कमिश्नर साहब के चपरासी ने सरकार का विरोध करते हुए ग्रामीण किसान को चुप हो जाने व वहाँ से हट जाने के लिए कहा तो वह किसान भी वहाँ से नहीं हटा और उसने कहा कि मैं अब यहाँ से नहीं हटूँगा और मैं यहाँ का बादशाह हूँ। यह मेरा राज्य है। तुम मुझे यहाँ से नहीं हटा सकते। किसान ने कहा कि मैंने आजादी के लिये संघर्ष करने वाले क्रांतिकारियों की बहुत जय बोली है। मैं देश भक्तों को पूरा सम्मान देता था। किन्तु जब मैंने आज देखा कि सरकारी तंत्र पूरी तरह मक्कार और भ्रष्ट हो चुका है तो मुझे नफरत हो गई है इन सब से। मैं अब किसी की जय नहीं बोलूँगा और किसी का भी सम्मान नहीं करूँगा। भारत देश प्रजातांत्रिक देश है और ऐसे देश में जनता ही बेताज बादशाह है क्योंकि देश में जनता का ही राज है और मैं इस जगह इस देश का बेताज बादशाह हूँ अब मैं किसी से डरने वाला नहीं हूँ और न अब मुझ पर किसी का हुक्म चल सकता है। तुम तो सरकार के एक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मामूली से कर्मचारी हो सिर्फ एक चपरासी, बस। तुम लोकतंत्र की इस शासन व्यवस्था को अच्छी तरह समझ लो। अब जनता ही बादशाह है और उसी का हुक्म चलेगा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में सरकारी दफ्तरों की दुर्व्यवस्थाओं पर तीखा व्यंग्य किया है।

2. प्रशासन के प्रति जन-जागरण का संदेश दिया है।

3. भाषा सरल, भावानुकूल और व्यंग्यात्मक है।

(3)

"एक नहीं तुम सबके सब कुत्ते हो', वह कहता रहा – तुम भी कुत्ते हो और मैं भी कुत्ता हूँ। फर्क केवल इतना है कि तुम सरकार के कुत्ते हो, हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो। मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ। उसकी दी हुई हवा खाता हूँ और जीता हूँ और उसकी तरफ से भौंकता हूँ। उसका घर इन्साफ का घर है। मैं उसके घर की रखवाली करता हूँ। तुम सब इसकी इंसाफ की दौलत के लुटेरे हो। तुम पर भौंकना मेरा फ़र्ज़ है।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के मोहन राकेश द्वारा रचित 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी से अवतरित है। इसमें कहानीकार मोहन राकेश ने बताया है कि जब ग्रामीण किसान कमिश्नर के कार्यालय के पास शासनतंत्र की भ्रष्टाचारी और लाल फीताशाही के बारे में जोर-जोर से बोल रहा था तो वहाँ के चपरासी ने उसे वहाँ से हटाना चाहा किन्तु वह वहीं पर अड़ा रहा और दोनों में गर्मा-गर्मी हो गई। चपरासी उसे धक्का मार कर भगाना चाहता है और ठोकर मार देता है परन्तु वहाँ के अन्य बाबू लोग उन दोनों को अलग कर देते हैं तब वह किसान उन लोगों को कुत्ता कहकर सम्बोधित करता है।

व्याख्या – ग्रामीण किसान ने सरकारी कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि तुम कुत्ते हो, सरकार के कुत्ते और मैं भी कुत्ता हूँ परन्तु भगवान का कुत्ता। तुम लोग सरकार के कुत्ते होने के कारण हम जैसे साधारण व गरीब, बेबस लोगों से रिश्वत लेते हो अर्थात् गरीब जनता से रिश्वत रूपी खून से सनी हुई हड्डियों को चूसते रहते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो अर्थात् ऐसे कुत्ते जो इंसान की हड्डियाँ चूसने के बाद भी इंसान की ओर भौंकते हो अर्थात् रिश्वत लेकर भी अपने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं करते हो। किसान कहता है कि कुत्ता तो मैं भी हूँ किन्तु परमात्मा का कुत्ता हूँ जो केवल उसके द्वारा दी जाने वाली हवा का सेवन करता हूँ और उसी से जीवित रहता हूँ तथा उसी की ओर से भौंकता हूँ। अर्थात् मेरा जीवन भगवान् पर आश्रित है। मुझे उसकी ही शक्ति प्राप्त है। मैं सरकारी तंत्र के विरोध स्वरूप जो भी कुछ बोलता हूँ वह सब भगवान् की प्रेरणा से ही बोलता हूँ। ईश्वर के यहाँ न्याय होता है, अन्याय नहीं। मैं उस परमात्मा के घर से मिलने वाले न्याय की रक्षा करने वाला कुत्ता हूँ। तुम सब इंसाफ की दौलत के लुटेरे हो और न्याय दिलाने के नाम पर लोगों को सरे आम लूटते हो और अकर्मण्य रहते हो इसीलिये तुम क्रोध करके भौंकते रहते हो तो मेरा भी क्रोध प्रकट कर भौंकना फर्ज़ है। परमात्मा का कुत्ता जनता के न्याय की रक्षा करने के लिये भौंकता है और तुम जानते हो कि एक कुत्ता दूसरे कुत्ते का दुश्मन होता है इसीलिये मैं भी तुम्हारा दुश्मन हूँ।

विशेष – 1. सरकारी कर्मचारी को और इन्सान को कुत्ता बताकर कहानीकार ने दोनों के प्रतिनिधित्व का अन्तर बताया है।

2. किसान के कथन में सरकारी तंत्र की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य है।

3. भाषा सरल, शैली प्रतीकात्मक, व्यंग्यात्मक व भावानुकूल है।

(4)

"कुत्ते का कुत्ता दुश्मन होता है। तुम मेरे दुश्मन हो और मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ। तुम बहुत से हो, मैं एक हूँ। इसलिये तुम मिलकर मुझे मारो। मुझे यहाँ से निकाल दो। लेकिन मैं फिर भी भौंकता रहूँगा। तुम मेरा भौंकना बन्द नहीं कर सकते। मेरे अन्दर मेरे मालिक का नूर है, मेरे वाहे गुरु का तेज है। मुझे जहाँ बन्द कर दोगे, मैं वहाँ भौंकूँगा और भौंक-भौंक कर मरने वाले कुत्ते, दुम हिला-हिला कर जीने वाले कुत्ते.....।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'परमात्मा का कुत्ता' शीर्षक पाठ से अवतरित है जिसमें ग्रामीण किसान द्वारा सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्ट आचरण पर न केवल करारा व्यंग्य किया है, अपितु उन सबको सरकारी और झूठी हड्डी चूसने वाला कुत्ता कहकर अपने मन की भड़ास निकाली गई है। वह स्वयं को भी परमात्मा का कुत्ता बताकर न्याय और सत्य का पक्ष लेता है।

Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

व्याख्या – ग्रामीण किसान आवेश में आकर जोर-जोर से सरकारी कर्मचारियों को खरी-खोटी सुनाते हुए कहता है कि तुम कुत्ते हो और मैं भी कुत्ता हूँ और एक कुत्ता दूसरे कुत्ते का शत्रु होता है। अब हम एक दूसरे के शत्रु हैं। तुम इस समय बहुत से कुत्ते हो और मैं अकेला हूँ। इसलिये यदि तुम मुझे अकेला देखकर मारना चाहो तो मार सकते हो, मुझे यहाँ से निकाल दो, फिर भी मैं न्याय और सत्य के लिये भौंकता रहूँगा और तुम सब मिलकर भी सत्य व न्याय के लिये मुझे रोक नहीं सकते हो। मेरे अन्दर स्वयं परमात्मा की शक्ति है जिसने अन्याय और भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने की क्षमता दी है। मुझमें वाहे गुरु का तेज है इसलिये तुम इस तेज को नहीं रोक सकते हो। तुम मुझे जहाँ पर भी बन्द कर दोगे मैं वहीं पर इतना तेज भौंकता रहूँगा कि लोगों के कान फाड़ डालूँगा।

तुम सब हराम की खाने वाले कुत्ते हो, इंसान के इशारे पर चलने वाले और रिश्वत रूपी जूँठी हड्डी पर मरने वाले हो। तुम अफसरों और रिश्वत देने वालों के सामने चापलूसी करते दुम हिलाने वाले कुत्ते हो और उसी खून पर जीवित रहने वाले हो।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार ने किसान के माध्यम से सरकारी कर्मचारियों के दोषों को उद्घाटित किया है।

2. प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं उसमें लिप्त कर्मचारियों पर करारा व्यंग्य दिया है।

3. भाषा-शैली सरल, प्रभावपूर्ण व व्यंग्यात्मक है।

(5)

''शायद से निकालो तो तक़रीबन में डाल दो और तक़रीबन से निकालो तो शायद में गर्क कर दो। यही तुम्हारी दफ्तरी तालीम है। ''तक़रीबन तीन-चार महिने में तहकीक़ात होगी। शायद महिने-दो महिने में रिपोर्ट आयेगी।'' मैं आज शायद और तक़रीबन दोनों ही घर पर छोड़ आया हूँ। मैं यहाँ हूँ और मेरा काम अभी होगा। तुम्हारे शायद और तक़रीबन के ग्राहक ये सब खड़े हैं। ये ठगी इनसे करो.....।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की मोहन राकेश द्वारा विरचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' से उद्धृत है जिसमें कहानीकार ने किसान के उस कथन का खुलासा किया है जो कमिश्नर के कार्यालय के बाहर जोर-जोर से बोलता गया। जिसमें वह सरकारी लालफीताशाही का मुक्त कंठ से विरोध करता है। पिछले दो वर्षों से उसकी अर्जी पर किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गई और इसी लिये वह बदतमीज़ी पर उतारु हो गया।

व्याख्या – किसान कहता है कि हमारे देश में सरकारी दफ्तरों में केवल दो ही शब्द कर्मचारियों को सिखाये जाते हैं – शायद और तक़रीबन। यदि किसी कर्मचारी से कुछ पूछा जाता है तो वह इन्हीं प्रशिक्षित शब्दों का शानदार प्रयोग करते हुए यही कहता है कि शायद काम चल रहा है और तक़रीबन काम पूरा हो गया है। इस तरह बात को शायद से निकालो तो तकरीबन में और तकरीबन से निकालो तो शायद के गर्त में चली जाती है। इस प्रकार सारा शासन तंत्र कमजोर पड़ता चला गया और सारा देश अवनति के ग में गिरता जा रहा है। किसान आवेश में कहता है कि किसी भी कर्मचारी से काम होने की बात पूछो हैं तो वह यही कहकर रह जाता है कि तकरीबन तीन-चार महिने में काम की जाँच-पड़ताल पूरी होगी और उसके बाद शायद दो महिने में रिपोर्ट आयेगी। किसान इन दो शब्दों की सान्त्वना से दुःखी हो जाता है और कहता है कि आज मैं ये दोनों ही शब्द अपने घर पर छोड़ आया हूँ और मैं इन शब्दों को सुनना भी नहीं चाहता हूँ। वह दृढ़तापूर्वक कहता है कि मैं आज हर हालत में अपना काम पूरा कराकर ही यहाँ से जाऊँगा। मैं आज यहीं पर बैठा हूँ और तब तक बैठा रहूँगा, जब तक कि मेरा काम पूरा नहीं हो जाता है। वह किसान उस दफ्तर में खड़े हुए अन्य लोगों की ओर संकेत करते हुए कहता है कि तुम्हारे 'शायद' और 'तक़रीबन' के ग्राहक ये सब खड़े हुए हैं और तुम लोग इन शब्दों से इन्हें ठगो, किन्तु मैं अब तुम्हारे ठगने में आने वाला नहीं हूँ।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में प्रशासन की अकर्मण्यता को बहुत ही सुन्दर ढंग से उजागर किया गया है।

2. कर्मचारियों की बहाने बाजी के तरीके को स्पष्ट किया गया है।

3. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और व्यंग्यात्मक है।

(6)

''मुझे जाकर इनसे पूछने दो कि क्या इसलिये हमें महात्मा गाँधी से आज़ादी दिलाई थी कि ये आज़ादी के साथ इस तरह खिलवाड़ करें। उसकी मिट्टी ख़राब करें, उसके पवित्र नाम पर कलंक लगायें? उसे टके-टके की फाइलों में बाँध कर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

ज़लील करें? लोगों के दिलों में उनके लिये नफ़रत पैदा करें? छोड़ दो ! इंसान के तन पर कपड़े। बात इन लोगों के समझ में नहीं आती। इन्हें समझाने का बस एक यही तरीक़ा है। शरम उन्हें होती है, जो इंसान हो। मैं तो आज कहता हूँ कि मैं इंसान नहीं कुत्ता हूँ..... ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की मोहन राकेश द्वारा विरचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' से उद्घृत है जिसमें कहानीकार स्पष्ट करते हैं कि स्वयं को परमात्मा का कुत्ता बताने वाला ग्रामीण किसान सरकारी तंत्र की विकृतियों के ख़िलाफ़ जोर-जोर से बोलता है। वह कमिश्नर के कार्यालय के सामने खड़े होकर वहाँ उपस्थित लोगों की आजादी के महत्त्व को बताता है और वहाँ के कर्मचारियों को बुरी तरह से फटकारता है और जनता को न्याय दिलाने का पक्ष लेता है।

व्याख्या – किसान कहता है कि मैं इन कर्मचारियों से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या हमारे राष्ट्रपिता महात्मागाँधी ने इसीलिये हमें अंग्रेजों से आज़ादी दिलाई थी कि ये लोग अपने कर्त्तव्य का पालन न करें और रिश्वत लेकर लोगों को ठगते रहें। क्या इसलिये आजादी की जंग लड़ी गई थी कि देशभक्तों के नाम को और उनकी क़ुर्बानी को कलंकित करें और टके टके की फाइलों में जनता के कागजों को बाँध-बाँध कर उन्हें जलील करें। वह कहता है कि इस प्रकार का षड्यंत्रकारी दुष्कार्य उचित नहीं है। ऐसे कार्यों से जनता के मन में आजादी दिलाने वाले महापुरुषों के प्रति नफ़रत की भावना बनती है और आम जनता आजादी को अभिशाप मानने लगेगी। वह कहता है कि इन सबके लिये ही भारत के जाबाँज सपूतों ने अनेक क़ुर्बानियाँ देकर देश को आजाद कराया था? वह किसान अपने तन के कपड़े उतारकर बेहयापन दर्शाना चाहता है। वह कहता है कि इंसान के शरीर पर कपड़े देखकर इन लोगों की समझ में कोई बात आसानी से नहीं आती। क्योंकि जो इंसान होते हैं उन्हें ही सीधी-सच्ची बात सीधे-सच्चे तरीके से समझ में आ सकती है, इसलिये इन्हें समझाने का बस एक यही तरीका है। इस प्रकार नंगा हो जाने से इन पर कोई असर नहीं होगा। इस भ्रष्टाचार को देखकर अब मैं इंसान नहीं रह गया हूँ। अब तो मैं कुत्ता हूँ, परमात्मा का कुत्ता जो न्याय के लिये निरंतर भौंक रहा हूँ।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में देश की आजादी दिलाने वाले नेताओं के बलिदान का स्मरण दिलाया है।

2. आजादी के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।

3. सरकारी कर्मचारियों में कर्त्तव्यनिष्ठा के भाव जाग्रत कराने का प्रयास किया गया है।

4. किसान के माध्यम से शासन तंत्र की विसंगतियों पर व्यंग्य दिया गया है।

5. भाषा-शैली सरल, आवेशात्मक और व्यंग्यात्मक है।

(7)

''चपरासी ने चिपक उठा दी और कमिश्नर साहब के साथ अन्दर चला गया। घंटी बजी, फाइल हिली, बाबुओं की बुलाहट हुई और आधा घण्टे बाद बेताज बादशाह वहाँ से मुस्कराता हुआ बाहर निकल आया। उत्सुक आँखों की भीड़ ने उसे देखा तो वह फिर बोलने लगा ''चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होगा। भौंको-भौंको-सबके सब भौंको। अपने आप सालों के कानों के पर्दे फट जायेंगे। भौंको.....कुत्तों, भौंकों..... ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की मोहन राकेश द्वारा विरचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' से अवतरित है। इसमें कथाकार ने स्पष्ट किया है कि परेशान किसान कमिश्नर के कार्यालय के सामने जोर-जोर से सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ उनके भ्रष्ट कारनामों के बारे में बोलने लगा तब स्वयं कमिश्नर साहब उसके पास आये और उसे अपने साथ अन्दर ऑफिस में ले गये।

व्याख्या – स्वयं कमिश्नर साहब उस उत्तेजित और परेशान किसान को अपने साथ अन्दर ऑफिस में ले गये और अन्दर ले जाकर उसकी अर्ज़ी पर कार्यवाही प्रारम्भ की गई। वहाँ साहब ने घण्टी बजाई और सभी बाबुओं को चपरासी के माध्यम से अपने पास बुलाया और उस किसान का काम तुरन्त प्रभाव से पूरा करने के निर्देश दिये गये। आदेशानुसार फाइलें द्रुतगति से आगे बढ़ने लगी और मुश्किल से आधे घण्टे में उसका काम पूरा सम्पन्न हो गया।

जब वह मुस्कुराता हुआ ऑफिस से बाहर निकला। उस समय वह बेताज का बादशाह सभी के लिये प्रमुख आकर्षण का केन्द्र था। ऑफिस के बाहर कई लोग यह जानने के लिये उत्सुक थे कि अन्दर क्या हुआ? जब उन लोगों ने यह जाना कि उसका काम हो गया तो सब को आश्चर्य हुआ। तब उस किसान ने सब लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस तरह से चूहों की तरह देखते रहने

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

से कुछ नहीं होता। यदि तुम्हें भी अपना काम बिना रिश्वत दिये अविलम्ब कराना है तो इन कर्मचारियों के दुष्कार्यों का जमकर विरोध करो और इतना तीव्रतम विरोध करो कि इन कुत्तों के कानों के परदे फट जाये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानी के मुख्य पात्र ग्रामीण किसान को जागृत चेतना से युक्त बताया है।

2. वह पूर्ण विश्वास के साथ जनता को सरकारी तंत्र के खिलाफ भौंकने का सुझाव देता है।

3. नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दापाश किया गया।

4. भाषा-शैली सरल और भावानुकूल है।

5. आवेग और व्यंजना का सुन्दर समावेश किया है।

10.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

10.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. प्रस्तुत कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' की प्रमुख विशेषता क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में नए संदर्भों की खोज हुई है और संवेदना अपने समय से जुड़कर स्वत: अभिव्यंजित हुई है। यह निष्क्रियता के विरूद्ध क्रियाशीलता के संकल्प की कहानी है।

प्रश्न- 2. प्रस्तुत कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' की मूल संवेदना क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी वर्तमान सरकारी तंत्र की विसंगतियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही पर करारा व्यंग्य है। पीड़ित और शोषित किसान की विवशता को चित्रित करने वाली संवेदनशील व भावुक आक्रोश की कहानी है।

प्रश्न- 3. 'परमात्मा का कुत्ता' किसका प्रतीक है?

उत्तर – परमात्मा का कुत्ता निष्क्रियता और भ्रष्टाचार के खिलाफ क्रियाशीलता के संकल्प का प्रतीक है।

प्रश्न- 4. परमात्मा का कुत्ता कहानी के लेखक का क्या नाम है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी के रचनाकार 'मोहन राकेश' है।

प्रश्न- 5. परमात्मा का कुत्ता कहानी का प्रारम्भ किस रूप में हुआ?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी का प्रारम्भ सजीव वातावरण और परिवेश में यथार्थ चित्रण के रूप में हुआ है।

प्रश्न- 6. '' 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी सरकारी कामकाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही पर करारा व्यंग्य है।'' स्पष्ट करें।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में मुख्य पात्र ग्रामीण किसान अपने आपको परमात्मा का कुत्ता बता कर शासन तंत्र की विसंगतियों पर तीखा व करारा प्रहार करता है। वह सरकारी कामकाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही का जमकर विरोध करता है।

प्रश्न- 7. ''मेरा और कोई नाम नहीं है। मेरा नाम याद कर लो।'' कथन के अनुसार किसान अपना परिचय किस तरह कराना चाहता है?

उत्तर – किसान अपना वास्तविक नाम नहीं बताता है और अपने नाम के स्थान पर फाइल का नम्बर बताकर उसे याद रखने के लिये कहता है।

प्रश्न- 8. किसान अपने आपको परमात्मा का कुत्ता क्यों मानता है?

उत्तर – किसान की सबसे बड़ी वेदना शोषण की थी और वह सरकारी कर्मचारियों के व्यवहार से बहुत अधिक परेशान था। उसने पीड़ित शोषित व्यथा को जोर-जोर से प्रकट करने के कारण वह भगवान का कुत्ता मानता है।

प्रश्न- 9. स्वयं को परमात्मा का कुत्ता बताने वाला किसान कमिश्नर साहब के कमरे में किस रूप में जाना चाहता था?

उत्तर – वह किसान अपना विरोध प्रकट करने व कर्मचारियों की लापरवाही का आक्रोश प्रकट करने के लिये निर्वस्त्र होकर कमिश्नर साहब के कमरे में जाना चाहता था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न-10. ग्रामीण किसान के साथ और कौन था?

उत्तर – शोषित ग्रामीण किसान के साथ उसकी एक विधवा भाभी और उसके दो बच्चे थे।

प्रश्न-11. ''यारों! बेहयाई हजार बरकत है।'' कथन किसने, किससे कहा?

उत्तर – यह कथन परमात्मा का कुत्ता कहलाने वाले किसान ने कमिश्नर के कार्यालय के बाहर उपस्थित लोगों से उस समय कहा था जब वह अपनी अर्जी का फैसला करवाकर आया था।

प्रश्न-12. किसान को अपनी अर्जी लगाये कितना समय हो गया?

उत्तर – पूरे दो वर्ष।

प्रश्न-13. ''आधे घण्टे के बाद बेताज बादशाह बाहर निकला'', वह क्यों मुस्कुरा रहा था?

उत्तर – स्वयं को बेताज बादशाह बताने वाला किसान जब अपनी बेहयाई से अर्जी पर उचित फैसला ले चुका था तो उसे अपने आप पर हँसी आ रही थी।

प्रश्न-14. शोषित किसान ने अपने स्वयं में किसकी शक्ति का संचार बताया था?

उत्तर – किसान ने कहा कि उसमें वाहे गुरु का तेज है और वह परमात्मा की शक्ति से ही भ्रष्टाचार व लालफीताशाही का विरोध कर रहा है।

10.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. प्रस्तुत कहानी में सामाजिक जड़ता एवं निष्क्रियता का सुन्दर चित्रण किया है। कथन को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – सुप्रसिद्ध कहानीकार द्वारा रचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' सरकारी कर्मचारियों की निष्क्रियता के विरूद्ध क्रियाशीलता के संकल्प की कहानी है जिसमें स्वतंत्र भारत के प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही पर तीखा और करारा व्यंग्य किया गया है। साथ ही सामाजिक जड़ता को भी हिलाकर रख दिया है और एक शोषित कृषक के माध्यम से स्पष्ट रूप में कहा गया है कि जब तक हम सब नागरिक एकजुट होकर उन बुराइयों का डटकर विरोध नहीं करेंगे तब तक इसी प्रकार गरीब किसानों और मजदूरों व जन-साधारण को सरकारी तंत्र की विषमताओं में फंसा रहना पड़ेगा। सरकारी कर्मचारी मनमाना आचरण करते हैं जिससे जनता को तत्काल न्याय नहीं मिलता है और यदि उसे मिल भी जाता है तो रिश्वत के अभाव में उचित न्याय नहीं मिलता है। हम लोगों में स्वार्थ भावना के कारण कर्त्तव्य-पोलन की चेतना नहीं है। उधर कर्मचारी मनमानी करते हैं। आकर्षक वेतन व आराम दायक सुविधाएँ मिलने के बावजूद भी सही समय पर सही न्याय नहीं मिल रहा है। ऐसा लगता है कि आजादी मिलने के पचपन वर्ष बाद भी हम वैसे ही गुलाम हैं, जैसे 1947 से पहले थे और यह सब हमें स्वीकार है तो आजादी हासिल करने का क्या लाभ हुआ। स्वतंत्र सेनानियों की सभी कुर्बानियाँ व्यर्थ ही गई। आज इस शासन-तंत्र से हर आम आदमी परेशान है किन्तु कोई उफ् तक नहीं करता है। अपने आपको परमात्मा का कुत्ता बताने वाला किसान इस भ्रष्टाचार और कर्त्तव्यहीनता के खिलाफ तीखी आवाज उठाता है। उसे लज्जित होना पड़ता है, प्रताड़नाएँ सहन करनी पडती हैं और जब वह बेहयाई पर उतारू हो जाता है तो उसका काम तत्काल आसानी से सम्पन्न हो जाता है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में सामाजिक जड़ता व निष्क्रियता के विरूद्ध क्रियाशील रहने की व्यंजना है।

प्रश्न-2. ''मैं भी कुत्ता हूँ और तुम भी कुत्ते हो।'' कथन के आधार पर शोषित किसान ने दोनों में क्या बुनियादी अन्तर बताया है? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' में लेखक मोहन राकेश ने स्पष्ट किया है कि जब एक शोषित ग्रामीण किसान कमिश्नर के कार्यालय अहाते में चीख-चीखकर सरकारी तंत्र की बखिया उधेड़ रहा था तो वहाँ के चपरासी ने उसे वहाँ से हट जाने को कहा और वह वहाँ से टस से मस नहीं हुआ। जिस पर दोनों में कहासुनी हो गई और अन्य कर्मचारी दोनों का बीच-बचाव करने लगे तब उस किसान ने ऊँची आवाज में कहा कि एक नहीं बल्कि तुम सब के सब कुत्ते हो। तुम भी कुत्ते हो और मैं भी कुत्ता हूँ। अन्तर केवल इतना है कि तुम सरकार के कुत्ते हो इसलिये जन-साधारण से रिश्वत ही हड्डी चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ और वह जो कुछ मुझे देता है मैं उसी से अपनी पूर्ति करता हूँ। मेरा जीवन पूर्णतया ईश्वर के ही आश्रित है। अत: मैं जो कुछ कहता हूँ उसके पीछे परमात्मा की प्रेरणा होती है। परमात्मा के घर न्याय है, अन्याय नहीं। मैं उस घर की ड्योढी पर बैठकर न्याय की रक्षा करता हूँ। तुम आदमी के कुत्ते हो – रिश्वत लेते हो और जूठी हड्डी पर टूट पड़ते हो। अपने अधिकारियों के आगे पीछे चापलूसी की दुम हिलाते घूमते हो। तुम नीचे कुत्ते हो, तुम निन्दनीय आचरण करने वाले लालची और बेहया कुत्ते हो।

10.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. '' 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में कहानी-शिल्प का सुन्दर निर्वाह हुआ है।'' कथन की समीक्षा कीजिये।

अथवा

कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी की समीक्षात्मक पुष्टि कीजिये।

उत्तर – मोहन राकेश द्वारा विरचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' आधुनिक सामाजिक जीवन पर आधारित है जो अपने आप में एक समस्यात्मक कहानी है। प्रस्तुत रचना में स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र शासन तंत्र की ज्वलन्त विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया गया है। इस कहानी की समीक्षा तात्विक आधार पर निम्नलिखित ढंग से की जा सकती है –

1. कथानक – कहानीकार मोहन राकेश ने प्रस्तुत कहानी को दृश्य-निरूपण विधि से प्रारम्भ कर इसका कथानक प्रस्तुत किया है। स्वतंत्र देश के महत्त्वपूर्ण सरकारी कार्यालय का दृश्य जीवन्त चित्रण प्रस्तुत करता है। कमिश्नर साहब के कार्यालय परिसर में अच्छी-खासी भीड़ है सभी लोग अलग-अलग ढंग से अपने-अपने लक्ष्य की पूर्ति का प्रयास कर रहे हैं। अर्जियाँ टाइप की जा रही हैं और बाबुओं को पेश की जा रही है। कार्यालय के अन्दर बाबू लोग गप्पे मार रहे हैं उनमें काम करने की जरा सी भी रूचि नहीं है। कमिश्नर कार्यालय जो अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण और जिम्मेदार ओहदे वाला कार्यालय है जहाँ टेबिल पर कई अलग-अलग प्रकरण की अर्जियाँ रखी है जो दूसरी टेबिल तक का रास्ता तय करने में महिनों तक का समय ले लेती है। कार्यालय के बाहर पुलिस कर्मचारी आराम फरमाते रहते हैं। एक दिन इस व्यस्त कार्यालय में एक ऐसा बेताज का बादशाह अपनी भावज और उसके दो बच्चों को साथ लेकर आता है जिसकी अर्जी आज पूरे दो साल बाद भी न जाने कितनी फाइलों में दबी पड़ी है। वह जोर-जोर से सरकारी तंत्र में व्याप्त कामचोरी और भ्रष्टाचार जैसी विसंगतियों का पर्दा-फाश करता है और चपरासी से लेकर आला अफसर तक की शाही गतिविधियों की धज्जियाँ उड़ा देता है। अहाते में मौजूद सभी लोग उसकी ओर अपना ध्यान आकर्षित कर लेते हैं। वह सभी कर्मचारियों को घूसखोर, लालची, कमचोर और चापलूस कुत्ता कहकर उनकी बखिया उधेड़ता है। यहाँ तक कि निर्वस्त्र होकर वह बेहयाई पर उतर जाता है। कमिश्नर स्वयं बाहर आता है और उसे अपने साथ अन्दर ले जाता है तथा कुछ समय बाद ही उसकी अर्जी पर अनुकूल फैसला हो जाता है। मुस्कुराता हुआ बाहर आता है और उत्सुकतावश खड़े तमाशबीनों को कहता है कि तुम सब भी कुत्तों की तरह भौंको, बेहायाई दिखाओ तभी शासन तंत्र में कार्य करने की चेतना जाग्रत होगी।

प्रस्तुत कहानी का कथानक प्रारम्भ से अन्त तक अत्यन्त गतिशील व रोचकता लिये हुए है। अपने आपको 'परमात्मा का कुत्ता' और 'बेताज बादशाह' कहलाने वाला शोषित किसान असंभव कार्य को भी आसानी से कुछ ही समय में पूरा करा लेता है। अत: कथानक अत्यंत रोचक, यथार्थ और आकर्षक है।

2. पात्र चयन – प्रस्तुत कहानी का महत्त्वपूर्ण किरदार निभाने वालो एक ग्रामीण किसान है जो अपना वास्तविक नाम नहीं बताता है और पूछने पर बारह सौ छब्बीस बटा सात जो उसकी फाइल का नम्बर है उसी से अपनी पहचान बताता है। वह अपने आपको परमात्मा का कुत्ता और बेताज बादशाह घोषित कर देता है। ये नाम कहानीकार ने प्रतीक के रूप में तय किये हैं। कार्यालय का चपरासी पुलिस कर्मचारी, बाबू लोग, स्वयं कमिश्नर साहब आदि पात्र भी हैं जो कहानी को मूल उद्देश्य तक पहुँचाने में सफल सहयोग प्रदान करते हैं। चपरासी और बाबुओं का चरित्र वर्तमान शासन तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार व लालफीताशाही के अनुसार चित्रित किया है। कमिश्नर साहब का चरित्र आकर्षक और रौबीला दिखाया गया है। परमात्मा का कुत्ता कहलाने वाला व्यक्ति क्रोधी, चिड़चिड़ा, परेशान, बदले की भावना वाला, निडर, नि:संकोची और ग्रामीण क्रिया-कलापों वाला बताया है। इस मुख्य पात्र के चरित्र चित्रण को वर्तमान परिस्थितियों का सशक्त आधार बनाया गया है अत: पात्र या चरित्र-चित्रण की दृष्टि से कहानी अत्यन्त सफल है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

3. कथोपकथन – प्रस्तुत कहानी में कथोपकथन पात्रों के व्यक्तित्व और उनकी मनोदशा के परिचायक हैं। कार्यालय में बाबुओं की बातचीत का तरीका अलग ही प्रकार का है। कार्यालय के बाहर जमा भीड़ घटनाक्रम के अनुरूप बातें करती हैं। कहानी के नायक बेताज बादशाह के कथन आक्रोशपूर्ण और व्यंग्य प्रहार करने बाबू लोगों का वार्तालाप इस प्रकार है –

बाबू लोग अपनी सद्भावना से निराश होकर एक-एक करके लौटने लगे –

''बैठा है, बैठा रहने दो।''

''बकता है, बकने दो।''

''साला! बदमाशी से काम निकालता चाहता है।''

''लैट हिम बार्क हिमसेल्फ टू डेथ।''

बाबुओं के साथ-साथ चपरासी भी बड़बड़ाया और अपने स्टूल पर लौट गया, ''मैं साले के दाँत तोड़ देता। अब बाबू लोग हाकिम हैं और हाकिमों का कहना मानना पड़ता है, वर्ना....।

'अरे बाबा, शांति से काम लो। यहाँ मिन्नतें चलती है, पैसा चलता है, धौंस नहीं चलती।'' भीड़ में से कोई उसे समझाने लगा।

'मगर परमात्मा का हुक्म सब जगह चलता है' वह कमीज उतारता हुआ बोला – ''और परमात्मा के हुक्म से बेताज बादशाह नंगा होकर कमिश्नर साहब के कमरे में जाएगा, आज वह मंत्री पीठ पर साहेब के डण्डे खाएगा, आज वह बूटों की ठोकरें खाकर प्राण देगा मगर वह किसी से मिन्नतें नहीं माँगेगा, किसी को पैसा नहीं चढ़ाएगा, किसी की पूजा नहीं करेगा। जो वाहे गुरु की पूजा करता है, वह किसी की पूजा नहीं करता। अब वाहे गुरु का नाम लेकर.....।''

कमिश्नर साहब उसे अपने साथ ले गये और आधा घण्टे के बाद वह मुस्कुराता हुआ बाहर आया – 'हयादार हो तो सालो मुँह लटकाये खड़े रहो। अर्जियाँ टाइप कराओ और नल का पानी पियो। सरकार बख्त ले रही है। और नहीं तो बेहया बनो। बेहयाई हजार बरकत है।''

वह थोड़ा सा रूका और जोरों से हँसा – 'यारों! बेहयाई हजार बरकत है।''

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले संवादों को व्यंग्यशैली में समाविष्ट किया गया है। संक्षिप्त व्यंजना के स्तर पर प्रस्तुत कहानी के कथोपकथन अत्यन्त आकर्षक हैं और इनमें बहुत कुछ कहने की क्षमता है।

4. देशकाल और वातावरण – वातावरण के निर्वाह में सामाजिक दशा का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। जो पात्र जिस समाज, काल, देश या वातावरण में जीवित रहता है, कहानी के तदनुरूप वातावरण का निर्माण करने से कथानक में स्वाभाविकता आ जाती है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार मोहन राकेश ने इन सब बातों का पूरा ध्यान रखा है। वर्तमान काल में व्याप्त भ्रष्टाचार, लालफीताशाही तथा सरकारी तंत्र में निहित विभिन्न विषमताओं को वातावरण के अनुकूल बनाने का सफल प्रयास किया है।

कहानी का नायक अपना नाम बताना उचित नहीं समझता है और वह अपनी फाइल का नम्बर बताता है और जोर-जोर से चिल्लाकर बाबुओं को फटकारने लगता है। उसकी मनःस्थिति ठीक नहीं होती है, अतः कहानीकार ने उसी वातावरण के अनुरूप सम्पूर्ण गुणों को चित्रित किया है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी में वातावरण और देशकाल के निर्वाह की सुन्दर व्यंजना की गई है।

5. भाषा-शैली – प्रत्येक कहानी में भाषा-शैली का भावों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से काफी महत्त्व होता है। जिस वर्ग या कोटि के पात्रों का चयन किया जाता है। उन्हीं के अनुरूप भाषा व शैली का निर्वाह किया जाता है। प्रस्तुत कहानी में पात्रों के अनुसार भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। बाबुओं व अन्य कर्मचारियों की भाषा में अंग्रेजी का काफी प्रयोग किया गया है। साथ ही उर्दू और तद्भव शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। कथानायक ऐसी भाषा बोलता है जो उसकी मनोदशा का परिचायक होती है। वह कार्यालय की भाषा को व्यंग्य रूप में काम में लेता है, जैसे –वह अपना नान बारह सौ छब्बीस बटा सात बताता है। यह उसकी फाइल का नम्बर होता है। वह आवेश में आकर गंवारू भाषा के शब्दों का भी प्रयोग करता है। प्रस्तुत कहानी की शैली वर्णनात्मक, आवेशात्मक, नाटकीय, मनोविश्लेषणात्मक और भावात्मक प्रयुक्त हुई है। मुहावरों के प्रयोग के साथ व्यंग्य विनोद का भी पुट दिया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

6. उद्देश्य – प्रस्तुत कहानी में समाज की ऐसी स्थिति का वर्णन किया गया है जिसमें जन-साधारण की जीवनगत बेचैनी बढ़ रही है। यद्यपि भारत देश एक लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था वाला देश है किन्तु इसके शासन की बाग-डोर चुनिन्दा लोगों के हाथों में थमी हुई है। वर्तमान शासन-तंत्र में अनेक ऐसी विषमताएँ हैं जिनकी वजह से स्वतंत्र भारत का अस्तित्व नागरिकों की दृष्टि में कमजोर पड़ गया है। शासन-तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, लालफीताशाही, निष्क्रियता, तानाशाही के कारण मजदूर व किसान वर्ग को अनेक प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आम लोगों को समय पर समुचित न्याय नहीं मिल पाता है। उनकी अर्जियां फाइलों में बन्द होकर दम तोड़ने लगती हैं। यहाँ तक कि प्रार्थियों की प्रार्थना उनके मरने के बाद तक फाइलों में बिना कार्यवाही के बन्द रहती है। प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य समाज में पीड़ित मानवत का चित्रण कर उसे पराजित करने वाली दानवता तथा शासनतंत्र की लालफीताशाही और भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया गया है। अत: इस कहानी का उद्देश्य सामाजिक जड़ता व निष्क्रियता पर कठोर प्रहार करना है।

7. शीर्षक – प्रस्तुत कहानी का शीर्षक कथानायक की उक्ति पर आधारित है। वह स्वयं को परमात्मा का कुत्ता बताता है। इसलिये इसका शीर्षक भी यही वाक्यांश बन गया है। यह शीर्षक संक्षिप्त व रोचक है और जिज्ञासा-पूर्ण है। परमात्मा का कुत्ता कैसा होगा, क्या होगा – इसी बात को जानने के लिये पाठक अन्त तक उत्सुकता लिये हुए रहता है। इस शीर्षक में अत्यंत व्यंजना है। सामान्य जनता शासन-तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही को समाप्त नहीं कर सकती है। इसके लिये क्रांतिकारी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। इसी तथ्य को व्यक्त करने के लिये कहानी का शीर्षक 'परमात्मा का कुत्ता' रखा गया है। इस शीर्षक कहानी के कथ्य को प्रारम्भ से अन्त तक व्यंजित करने में सफल रहा है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत कहानी के संदर्भों में हम कह सकते हैं कि इसमें सभी तत्त्वों का सुन्दर निर्वाह हुआ है। इसका कथानक समकालीन सामाजिक जीवन पर आधारित है। इसमें कहानीकार ने चरित्र-चित्रण, देशकाल और उद्देश्य का पूरा-पूरा ख्याल रखा है। इसका शीर्षक प्रतीकात्मक और व्यंग्यपूर्ण है जिसके द्वारा आज के युग की पीड़ित मानवता और उससे उत्पन्न विषमता के साथ सामाजिक जड़ता पर तीखा व्यंग्य किया गया है।

प्रश्न-2. '' 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में वर्तमानकालीन शासन-तंत्र की लालफीताशाही का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।'' कथन की समीक्षा कीजिये।

अथवा

''प्रस्तुत कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' में सरकारी कामकाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही पर करारा व्यंग्य किया गया है।'' स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – मोहन राकेश द्वारा विरचित कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' एक समस्याप्रधान कहानी है जिसमें स्वतंत्र देश के शासन-तंत्र की अव्यवस्था को समस्या के रूप में उभारा है। इस बात को हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि हमारे देश की शासन व्यवस्था अनेक विषमताएँ लिये हुए है और इसकी अनेक कमजोरियाँ हैं। इसमें नीचे से ऊपर तक भ्रष्टाचार व्याप्त है। इसकी वजह से सभी प्रबुद्ध नागरिक परेशान हैं किन्तु इस दुर्व्यवस्था की समस्या का निराकरण करने के लिये कोई भी व्यक्ति अथवा वर्ग आगे नहीं आता है। प्रस्तुत कहानी में कथाकार ने शासन-तंत्र की दुर्दशा और सामाजिक जड़ता पर सशक्त प्रहार किया है।

प्रस्तुत कहानी में यह स्पष्ट किया गया है कि हमारे देश की वर्तमान शासन व्यवस्था जर्जर और खोखली होती जा रही है जिसका मूल कारण नीचे से ऊपर तक व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही और कर्मचारियों की निष्क्रियता व उनकी तानाशाही है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से कथाकार ने इन सब दुर्व्यवस्थाओं को निम्नलिखित ढंग से स्पष्ट किया गया है –

1. बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार – आज सरकारी तंत्र के सभी विभागों में सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सभी कर्मचारी इस मीठे खून से अपने मुँह का स्वाद बनाए हुए हैं। बिना रिश्वत कहीं भी कोई काम नहीं हाता है।

प्रस्तुत कहानी का नायक एक ग्रामीण शोषित व परेशान किसान है। वह अपनी जमीन सम्बंधी समस्या के निराकरण हेतु एक अर्जी कमिश्नर साहब के कार्यालय में लगाता है। वह अर्जी कई दिनों तक एक ही टेबिल पर बिना किसी कार्यवाही के पड़ी रहती है। जब वह प्रार्थी सम्बन्धी बाबू को एक दिन पाँच रूपये का नोट बतौर घूँस के पकड़ाता है तो उस अर्जी की फाइल बनाई जाती है और आगे बढ़ा दी जाती है। कहानी का नायक इसकी तथ्य को उजागर करता है और अपने आप को वह 'परमात्मा का कुत्ता' बताता हुआ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कहता है कि कार्यालय के सभी कर्मचारी कुत्ते हैं जो गरीब लोगों का खून चूसते हैं। जब तक उनको रिश्वत नहीं मिलती है या अफसरों की कोई जान-पहचान नहीं निकलती है तब तक वे फाइल को आगे बढ़ाने का नाम ही नहीं लेते हैं और उस संदर्भ में जब पूछताछ की जाती है तो जवाब मिलता है कि उस फाइल पर तकरीबन-तकरीबन कार्यवाही की जा चुकी है। यह स्थिति आज केवल कमिश्नर ऑफिस की ही नहीं है, बल्कि भारत के सभी सरकारी विभागों के कार्यालयों की है। कार्यालय चाहे छोटा हो या बड़ा अथवा किसी भी विभाग का हो, हर जगह यही हाल है। कोई भी काम समय पर नहीं होता है। दिन भर लोग ऑफिसों के अहातों में परेशान रहते हैं। छोटे से कार्य के लिये सारे-सारे दिन भूखे-प्यासे वही-बाबुओं के आगे-पीछे मंडराते रहते हैं या पेड़ के नीचे पड़े अपने भाग्य की प्रतीक्षा करते रहते हैं। चापलूसी व खुशामद करने पर भी काम ठीक से नहीं हो पाता है। अफसर की टेबिल पर फाइलों का ढेर दिखावे के रूप में लगा होता है। कर्मचारीगण अपनी सीट पर नहीं होते हैं। वे एक-दूसरे से गप्पें लड़ाते रहते हैं। कहानी का नायक कहता है कि 'तुम सभी लोग सरकारी कुत्ते हो, हम लोगों की हड्डियाँ चूसते रहते हो, तुम सबके सब दुम हिला-हिलाकर जीने वाले चापलूस कुत्ते हो।'

2. अनुशासनहीनता – आज शासन-तंत्र में अनुशासन नाम का कोई सूत्र देखने को नहीं मिलता है। बाबू लोगों की कुर्सियाँ दिन भर खाली मिलती हैं और यदि वे वहाँ बैठे भी होते हैं तो या तो टेलीफोन पर अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी के बारे में बतियाते मिलेंगे या किसी अनावश्यक क्रिया-कलाप में व्यस्त मिलेंगे या किसी मुद्दे पर चर्चा करते हुए मिलेंगे। चाहे वह मुद्दा उनकी समझ के स्तर का हो या न हो। गप्पें मारते या अखबार में उलझे हुए या पुस्तकें पढ़ते हुए मिलेंगे। समय से लेट आना आजकल उनकी शान है। लंच या छुट्टी के समय से आधा घण्टे पहले कुर्सी छोड़कर किसी और बाबू के पास चले जाना या बाहर निकल जाना उनकी आदत बन चुकी है।

3. संवेदनाओं का अभाव – कर्मचारियों के रूखे और कठोर व्यवहार से आम जनता आज बहुत परेशान है। सरकारी कार्यालयों में कर्मचारी किसी से सीधे मुँह बात ही नहीं करते हैं। यदि कोई सीधी सच्ची गुहार उनसे करता है तो वे उल्टे उसको गंवार समझकर और अधिक कड़काई अपनी जुबान पर ले आते हैं। प्रस्तुत कहानी का नायक जब न्याय माँगने के लिये जोर-जोर से अपनी सच्चाई व्यक्त करता है तो कमिश्नर का चपरासी उसका मुँह बन्द करने का प्रयास करता है, वह उसे पुलिस के हवाले करने की धमकी देता है। उसे वहाँ से जाने के लिये मजबूर करता है और वह जब नहीं जाता है तो गाली-गलौज पर उतर जाता है। बाबू लोग उल्टे कहानी नायक को ही धमकाते हैं। वे उस किसान की मजबूरी को नहीं समझते हैं, उसकी परेशानी को नहीं समझते हैं। मानवता के नाते उसकी समस्या दूर तो नहीं करते बल्कि उसे और अधिक परेशान करते हैं। ऐसा लगता है कि सरकारी कुर्सी मिलते ही उनकी मानवीय संवेदनाएँ समाप्त हो गई हैं। प्रस्तुत कहानी में इस तथ्य की पुष्टि की गई है।

4. निष्क्रियता व कार्यक्षमता का ढीलापन – आज सभी कार्यालयों में कर्मचारी सारे दिन निष्क्रिय से, निठल्ले से बैठे रहते हैं या इधर-उधर घूमने में समय बर्बाद करते रहते हैं। एक फाइल की कार्यवाही में कई दिन, कई महिने और कई-कई वर्ष लग जाते हैं। फाइल एक टेबिल से आगे बढ़ ही नहीं पाती है। कोई भी बाबू या अफसर फाइल के उत्तरदायित्व को अपने ऊपर लेना ही नहीं चाहता। इनके इस व्यवहार से तो ऐसा लगता है कि शासन-तंत्र पूरी तरह से जड़ हो गया है। जबकि सरकार इन सभी कर्मचारियों को आकर्षित वेतन व अन्य सभी प्रकार की सुविधाएँ, यथा – आवास सुविधा, चिकित्सा सुविधा, केन्टीन सुविधा, मँहगाई भत्ता, यात्रा भत्ता, पर्याप्त छुट्टियों की सुविधा आदि। अपने आपको परमात्मा का कुत्ता बताने वाला किसान इसी तथ्य को उजागर कर इस पर तीखा प्रहार करता हुआ खूब जोर-जोर से भौंकता है और यहाँ तक कि वह अपने कपड़े तक उतार कर बेहयाई पर उतारू होता है। तब कहीं स्वयं कमिश्नर साहब बाहर आते हैं, उसकी समस्या सुनते हैं और उसे अपने साथ अन्दर ले जाकर तुरन्त अनुकूल कार्यवाही करते हैं। तब वह बाहर आकर लोगों से कहता है कि तुम्हें भी यदि अपना काम कराना है तो कुत्ते की तरह जोर-जोर से भौंको, अपने आप सालों के कान फट जाएँगे। इस तरह कहानी के माध्यम से शासन-तंत्र में व्याप्त निष्क्रियता व ढीलेपन पर प्रहार किया गया है।

5. कर्त्तव्यनिष्ठा का अभाव – आज के युग में भारतीय शासन-तंत्र में जो भ्रष्टाचार और लालफीताशाही की स्थिति व्याप्त है इससे भाई-भतीजावाद और स्वार्थ की भावना बढ़ी है। इसलिये सरकारी कार्यालयों में कोई भी कर्मचारी अपने उत्तरदायित्व को नहीं समझता है। कोई भी अपने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं करता है। देश को आजाद कराने में हमारे पूर्वजों को कितनी कुर्बानियाँ देनी पड़ी,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कितने कष्ट उठाए और कितनी मशक्कतों के बाद हमें आजादी मिली है, इस बात को भी कोई कर्मचारी नहीं समझता है। कहानी नायक अपने आपको परमात्मा का कुत्ता बतलाते हुए जोर-जोर से भौंकता है और कहता है कि, ''मुझे जाकर उनसे पूछने दो कि क्या इसीलिये महात्मा गाँधी ने देश को आजादी दिलाई थी कि ये आजादी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। उनके पवित्र नाम पर कलंक लगा रहे हैं, उनकी मिट्टी खराब कर रहे हैं, लोगों के दिलों में उनके लिये नफ़रत पैदा कर रहे हैं। उस आजादी को टके-टके की फाइलों में बन्द कर जलील कर रहे हैं।

प्रस्तुत कहानी में कहानकार मोहन राकेश ने कमिश्नर साहब के कार्यालय का जो दृश्य प्रस्तुत किया है उसमें ये सब बातें स्पष्ट की गई हैं।

10.6 सारांश

अत: हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी यथार्थ पर आधारित समस्यामूलक कहानी है जिसमें भारत देश के वर्तमान शासन-तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार और लालफीताशाही का सुन्दर चित्रण किया गया है और बताया है कि जन-साधारण को कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस कहानी में निष्क्रियता के साथ क्रियाशीलता का संकल्प व्यक्त किया है और न्याय प्राप्त करने के लिये मानवीय संवेदना को व्यक्त करते हुए पूर्ण व्यंजना के साथ सामयिक यथार्थ का उद्घाटन किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 11 : राजेन्द्र यादव

संरचना

11.0 प्रस्तावना

11.1 उद्देश्य

11.2 परिचय

11.3 बिरादरी बाहर

11.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

11.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

- 11.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न
- 11.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न
- 11.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

11.6 सारांश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

11.0 प्रस्तावना

राजेन्द्र यादव नई कहानी-आन्दोलन के जन्मदाता और हिन्दी कहानी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले श्रेष्ठ कहानीकार, कवि, उपन्यासकार और आलोचना विधाओं के लेखक हैं। इनका जन्म 28 अगस्त, 1929 को आगरा शहर में हुआ। इन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा समकालीन परिवेश और समाज में रहने वाले पात्रों की मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण किया है।

11.1 उद्देश्य

यहाँ हम राजेन्द्र यादव एवं उनकी कहानी बिरादरी बाहर के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

11.2 परिचय

इनकी अधिकतर कहानियों में मानव-मन की व्यथाओं का सुन्दर अंकन हुआ है। कुछ कहानियाँ प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक रूप में सामाजिक विद्रूपता का सुन्दर उद्‌घाटन करती हैं। श्री यादव श्रेष्ठ कहानीकार के साथ-साथ प्रसिद्ध उपन्यासकार और समालोचक भी थे तथा साथ ही एक अच्छे कवि के साक्षात हस्ताक्षर भी माने जाते हैं। इन्होंने कई साहित्यिक कविताओं का सम्पादन भी किया। आजकल हिन्दी कथा-मासिकी 'हंस' का सम्पादन करते हुए साहित्यिक पत्रकारिता को समृद्ध बनाने में अपनी लगन, निष्ठा एवं ईमानदारी का परिचय दे रहे हैं। यादव जी की प्रमुख रचनाओं में 'देवताओं की मूर्तियाँ', 'खेल खिलौने', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'अभिमन्यु की आत्महत्या', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक', 'ढोल' आदि। यादव के प्रमुख उपन्यासों में 'सारा आकाश', 'उखड़े हुए लोग', 'शह और मात', 'कुलटा', 'अनदेखे अनजाने पल' आदि। इनका कविता संग्रह 'आवाज तेरी है' शीर्षक से प्रकाशित है। समीक्षा के क्षेत्र में इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं – 'कहानी', 'स्वरूप और संवेदना', 'प्रेमचन्द की विरासत', 'अठारह उपन्यास', 'औरों के बहाने' आदि यादव की व्यक्ति चित्र संग्रह हैं।

11.3 बिरादरी बाहर

समय के परिवर्तन से लोक मान्यताएँ भी बदल जाती हैं। यह परिवर्तन अपनी जगह पर ठहरे हुए लोगों का व्यक्तित्व भी प्रभावित करता है – प्रस्तुत कहानी इसका एक प्रामाणिक दस्तावेज है। प्रस्तुत कहानी के पात्र पारस बाबू की लड़की मालती ने अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध एक विजातीय युवक से प्रेम विवाह कर लिया। कुछ समय के बाद मालती अपने पति के साथ पिता

के घर पर आती है तो पारस बाबू को छोड़कर सारा परिवार उन्हें उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लेता है। बाहर का आदमी घर का सदस्य बन जाता है और पारस बाबू जैसे व्यक्ति को बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है। प्रस्तुत कहानी एक दुविधाग्रस्त व्यक्ति के हृदय के कशमकश की कहानी है जो उसकी मार्मिक भावनाओं का चित्र प्रस्तुत करती है। जो उसकी मार्मिक भावनाओं का चित्र प्रस्तुत करती है। अधिकतर घटनाएँ पारस बाबू के मन में ही घटित होती हैं। उन आन्तरिक तरंगों के साथ ही इस कहानी का घटना-क्रम प्रवाहित होता है। दो भिन्न विचारों से ग्रस्त बेबस व्यक्ति की मनोदशा का चित्रण करने वाली यह कहानी आधुनिक कहानी की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती है।

11.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

"सब के सब वही बहस कर रहे हैं, कोई हिलेगा नहीं। यह चंदा तो एक सिरे की चोर है। उसे ऊपर आकर इतनी जोर से यह कहने की क्या जरूरत थी कि बाबूजी नीचे खाना मँगा रहे हैं? सब विजय की माँ की शह है। इतना बिगाड़ दिया है बच्चों को कि कुछ न पूछो। अब पड़ी-पड़ी सब सुन रही होगी। यह तो नहीं कि उठ कर डाँट दे। आँखों में ही तो दवा पड़ी हुई है, कान तो नहीं फटे.....मुँह में जबान तो बाकी है। कम से कम यह तो सोचना चाहिये कि नए आदमी के सामने तो नाम उजागर न हो घर का.....।"

प्रसंग—प्रस्तुत कहानी अंश हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'बिरादरी बाहर' पाठ से अवतरित है जिसमें पारस बाबू के उन मनोभावों को व्यक्त किया है जो अपनी बेटी के मनमाने व्यवहार और विजातीय विवाह के बाद उत्पन्न हुए हैं।

व्याख्या—पारस बाबू की लड़की मालती उनकी इच्छा के विरुद्ध एक विजातीय लड़के से प्रेम विवाह कर कुछ दिनों के बाद अपने पति को लेकर घर लौटती है तो पारस बाबू उसे स्वीकार नहीं करते हैं जबकि परिवार के अन्य सदस्य उत्साहपूर्वक उन दोनों का स्वागत करते हुए स्वीकार कर लेते हैं। पारस बाबू अपनी नाराजगी छुपाए रहते हैं, इसलिये वे देर रात को घर आते हैं और नीचे बैठक में अकेले बैठे अपनी छोटी बेटी चन्दा का इन्तजार करते रहते हैं। जब चन्दा उनके पास आ जाती है तो वे नीचे ही अपना खाना मँगवाने के लिये उससे कहते हैं किन्तु चन्दा ऊपर जाकर जोर-जोर से इस बात को सबके सामने कह देती है। पारस बाबू कान लगाकर ऊपर चल रही बातों को सुनते हैं। सभी लोग हँसी-खुशी की बातों में इतने मशगूल हैं कि वे इस बात से भी बेखबर रहते हैं कि घर का मुखिया नीचे भोजन के इन्तजार में चुपचाप बैठा हुआ है। इस व्यवहार से पारस बाबू नाराज हो जाते हैं। वे अपना क्रोध चन्दा पर उतारते हैं कि उसने इतनी जोर से भोजन के लिये क्यों कहा? वे सोचते हैं कि आज एक अजनबी बाहर का व्यक्ति घर में बैठा हुआ है। उसके सामने यह बात नहीं कहनी चाहिये थी। पारस बाबू इस बात का सीधा आरोप चन्दा की माँ पर लगा देते हैं। क्योंकि उसके लाड-प्यार व उसकी ही शह से घर के बच्चे इस तरह का उच्छृंखल व्यवहार करने लगे हैं। वे कहते हैं कि विजय की माँ ने बच्चों को इतना बिगाड़ दिया है कि वे किसी की कुछ सुनते ही नहीं हैं। वे अपनी पत्नी को लक्ष्य कर कहते हैं कि विजय की माँ की आँख का ऑपरेशन हुआ है, उसकी आँख में दवा पड़ी है लेकिन उसका मुँह व कान तो सही सलामत हैं। वह सब कुछ सुन रही है, ऐसी स्थिति में उसे चाहिये कि बाहर के व्यक्ति के सामने अपने घर की दुर्व्यवस्थाओं को उजागर न होने दें और बच्चों को डाँटना चाहिये।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में पारस बाबू की मनोदशा का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत हुआ है।
2. सन्तान पक्ष की ओर से किया जाने वाला हर कार्य माता-पिता को दुःखदायी रहता है।
3. भाषा-शैली सुन्दर और भावानुकूल है।

(2)

"फिर तख्त पर दीवार से टिककर आ बैठे तो पेशकार सक्सेना की बातें नए सिरे से याद हो आईं। इतनी देर पुल पर बैठे-बैठे राजनीति की बातों से, मँहगाई की बातों से और बढती हुई आचार हीनता के बारे में बातें कर के मन बहलाते रहे, लेकिन उस बात से गुस्सा और ताजा हो आया। दोपहर भर तो मन्दिर के वाचनालय में बैठकर सारे अखबार पढ़े थे, फिर बैठे-बैठे पीपल के हिलते हुए पत्तों के पार नीले, साफ आसमान को देखते रहते थे।"

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रसंग—प्रस्तुत कहानी अंश हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'बिरादरी बाहर' पाठ से अवतरित है जिसमें कहानीकार ने स्पष्ट किया है कि मालती अपने पति के साथ पीहर आ जाती है तो पारस बाबू क्रोध के कारण दिन भर से अपने घर पर नहीं आते हैं और इधर-उधर समय बिता कर देर रात को घर पर लौटते हैं और मन ही मन परेशान रहते हैं।

व्याख्या—पारस बाबू जान-बूझ कर उस दिन अपने घर पर देरी से आते हैं और वे थके हुए होने के कारण तख्त पर बैठकर पीठ को दीवार का सहारा देकर के बैठ जाते हैं। उस समय वे वहाँ पर अकेले ही बैठे होते हैं जिससे उनका दिमाग इधर-उधर दौड़ने लग जाता है। उस समय उनको अपने मित्र पेशकार सक्सेना की पुरानी सारी बातें याद आने लगती हैं। लकड़ी की टाल पर पारस बाबू से पेशकार ने पूछा कि क्या मालती आ गई? इस बात को सुनकर वे मन ही मन लज्जित हो गये थे और वहाँ से उठकर वे पुल पर काफी देर तक बैठे रहे। वहाँ पर भी वे अनमने से रहते हैं और वे कभी तो राजनीति की बातें करते हैं तो कभी वे मँहगाई के बारे में और कभी आचार-हीनता के संदर्भ में बातें करते रहे। पारस बाबू जान-बूझ कर अपने घर पर नहीं जाना चाहते थे। वे अपनी बेटी मालती के घर पर आने से आक्रोश में भरे हुए थे। क्योंकि मालती ने उनकी इच्छा के विरूद्ध एक विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह कर लिया था, जिसकी वजह से उन्हें काफी लज्जित होना पड़ा था। आज वही अपने पति के साथ पहली बार अपने घर पर आई है। पारस बाबू दिन भर मन्दिर के वाचनालय में पुस्तकें पढ़ते हुए समय व्यतीत करते रहे थे और बाद में बाहर बैठकर आसमान को निहारते रहे। अर्थात् पारस बाबू जिस तरह मालती के विजातीय विवाह की खबर सुनकर के दुःखी हुए थे, आज उतने ही दुःखी उसके अपने पति के साथ घर आने पर हो गये।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में मालती के पिता की मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

2. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और आकर्षक है।

(3)

''एकदम पारस बाबू की समझ में नहीं आया कि क्या जवाब दें। उन्होंने पेशकार साहब की शैतानी भाँपी तो तन-बदन तिलमिला उठा। मन हुआ, सारा लिहाज ताक कर रख कर कोई कड़ी सी बात तड़ाक से कह दे.....तू! टके सा पेशकार मेरे सामने क्या जुबान खोलता है? विलायत में तेरे बेटे ने मेम डाल ली है न सो तू समझा कि.....नकटा चाहेगा ही यही कि सभी की नाक कट जाये। मन-ही-मन ये सारे सवाल करने से उन्हें लगा कि पेशकार का सवाल बेकार गया। उसका जवाब देने की अब जरूर नहीं थी।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'बिरादरी बाहर' नामक कहानी पाठ से अवतरित है। जिसमें पारस बाबू की मनोवेदना का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या—जब संतान की ओर से सामाजिक नियम के विरूद्ध कोई गलत कार्य कर दिया जाता है तो उसका हर्जाना माता-पिता या अन्य बुजुर्गों को भुगतना पड़ता है तथा कदम-कदम पर उन्हें लोक निन्दा का कारण बनना पड़ता है। जिस दिन मालती अपने पति के साथ घर पर आई उस दिन पारस बाबू वैसे ही परेशान थे, जैसे उस दिन परेशान थे, जिस दिन उन्हें यह सूचना मिली की उनकी बेटी ने उनकी इच्छा के विरूद्ध एक विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह कर लिया था। इसलिये वे जान-बूझ कर घर नहीं जाना चाहते हैं और इधर-उधर घूम कर समय बिताते हैं। वे अपने मित्र पेशकार के पास कुछ समय के लिये रहते हैं तो पेशकार जान-बूझ कर पारस बाबू को उनकी बेटी के द्वारा किये जाने वाले कारनामों का स्मरण दिला देता है। वह यह जानना चाहता है कि मालती अकेली आई है या उस लड़के को साथ लेकर आई है जिससे उसने प्रेम विवाह किया है। पारस बाबू उसकी नियति को भाँप गये और वे मन ही मन तिलमिलाने लगे। उनका मन तो यह कर रहा था कि वे भी उसकी औकात का अच्छा खासा जनाजा निकाल दें और कह दें कि तू एक टका-सा आदमी मेरे जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति के सामने क्या जुबान खोलने की हिम्मत रखता है। वे कहना चाहते हैं कि उसके बेटे ने भी तो विलायत में रहकर एक मेम को अपने पास रख लिया था। वे यह बात जानते हैं कि पेशकार बेशर्म है और वह तो यही चाहेगा कि सभी लोगों की इज्जत खराब हो। वे मन-ही-मन उसके बारे में सोचते रहे फिर उन्हें लगा कि अब पेशकार के प्रश्न का उत्तर देने की कोई दरकार नहीं रही।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में पारस बाबू की मनोदशा का सजीव चित्रण किया है।

2. यह भी स्पष्ट किया है कि संतान के दुष्कार्यों का दुःखद परिणाम बुजुर्गों को भुगतना पड़ता है।

3. अवतरण की भाषा सरल व भावपूर्ण है।

(4)

''उन्हें याद है, उस दिन उन्होंने कैसे खाने की थाली टट्टर पर फेंक दी थी। कटोरियाँ, चम्मच सब झन-झन करते नीचे आँगन में जा गिरे थे और कैसे वे पाँव पटक-पटक कर विजय, संजय, उसकी माँ, मालती और उस गैर-जाति के लड़के को घंटों गालियाँ सुनाते रहे थे.....तुम्हारे ही बिगाड़े हुए हैं, लो और देखो स्वर्ग। काँपते हाथों से चिट्ठी को विजय की माँ की आँखों के आगे झटकार-झटकार कर न जाने क्या-क्या बकते रहे। .....फिर पागलों की तरह से तालियाँ बजा-बजा कर हँसते रहे.....अहा रे.....मेरी बेटी.....अहा रे मेरा बेटा.....खूब नाम कमाया है पुरखों का.....। उसी शाम उनको दिल का दौरा पड़ा।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'बिरादरी बाहर' नामक कहानी पाठ से अवतरित है, जिसमें राजेन्द्र यादव ने उस समय की पारस बाबू के परिवार की दुःखी अवस्था का चित्रण किया है जब उन्होंने मालती के विजातीय लड़के के साथ प्रेम विवाह की चिट्ठी द्वारा सूचना सुनी।

व्याख्या – जिस दिन संजय के पत्र द्वारा मालती के एक विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह की सूचना प्राप्त हुई। उस दिन उनके पिता-हृदय में कितनी परेशानी हुई उस दिन का वे पुनः स्मरण करने लगते हैं। उन्हें याद है वह दिन जिस दिन सारे घर का खाना-पीना हराम हो गया था। उन्होंने किस तरह अपने खाने के बर्तन चौक में क्रोध के कारण फैंक दिये थे और अपने दोनों बेटों – संजय और विजय को, मालती को, उसकी माँ को और उस बेशर्म विजातीय गैर-खानदानी लड़के को खरी-खोटी और न जाने क्या-क्या गालियाँ सुना रहे थे। जब उन्होंने पत्र को पढ़ा कि उनकी बेटी ने विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह कर लिया है तो वे क्रोध की सीमा पार कर तिलमिला गये और झट-झटक कर उस चिट्ठी को बार-बार मालती की माँ के सामने पटक रहे थे और कह रहे थे कि तुमने ही अपनी संतान को इतना बिगाड़ दिया है कि इनकी हिम्मत इतना बड़ा जुर्म करने की हो गई है। इसी कारण आज उन्होंने तुम्हारे खानदान की इतनी बड़ी बेइज्जती की है। हमारा धर्म ही बिगाड़ दिया है। अब तुम भी स्वर्ग देख लो। उस समय वे पागलों जैसा आचरण करने लगे। कभी क्रोध करते और कभी वे तालियाँ बजा-बजा कर हँसने लगते और अपने भाग्य को और अपनी संतान के कारनामों के परिणाम को कोसते हुए कहने लगे कि वाह रे संतान ! तुमने खूब खान-दान का नाम रोशन किया। वे आत्मग्लानि से भर आये और व्यथित हो उठे। कहने लगे कि मालती ने पुरखों के नाम को ही कलंकित कर दिया है। जिस संतान पर माँ-बाप को गर्व होना चाहिये उसी संतान ने आज समाज में मुँह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। इसी वेदना के कारण उन्हें उस दिन दिल का दौरा पड़ गया था।''

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में राजेन्द्र यादव ने एक खानदानी प्रतिष्ठित पिता की उस मनोदशा का चित्रण किया है जिसे संतान के द्वारा ही कलंकित और अपमानित किया गया हो।

2. यह भी स्पष्ट किया गया है कि माता-पिता का अत्यधिक प्यार संतान को बिगाड़ भी सकता है।

3. भाषा सरल और भावानुकूल है।

(5)

''.....तब चूड़ियों की हल्की खनखनाहट के साथ में एक दम पास ही उन्हें चौंकता हुआ स्वर सुनाई दिया। बाबूजी, नमस्ते.....। मालती का स्वर सुनकर, उमग कर उसे छाती से लगा लेने के आवेग को रोकते हुए....। वे उसे कैसे रोक सके, यह तो वही जानते हैं। लेकिन उन्होंने जरा-सा अखबार सरकाने का बहाना किया। पढ़ने के चश्मे को काँचों के ऊपर से देखने की कोशिश की और उतने में से मालती का स्वास्थ्य, उसके शरीर के गहने, उसके कपड़े देखने चाहे कि 'नमस्कार, बाबूजी।' नए आदमी का स्वर आया। शायद मालती के पीछे खड़ा था। उन्होंने बिना अखबार से निगाहें हटाए जल्दी से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कहा, 'नमस्ते.....नमस्ते.....।' आ गये तुम लोग.....तकलीफ़ तो नहीं हुई?'' और प्रश्न को यों ही छोड़कर फिर से अखबार में खो गये।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'बिरादरी बाहर' नामक कहानी पाठ से अवतरित है। जिसमें कहानीकार ने पारस बाबू के पितृ-हृदय की कशमकश को बहुत ही सुन्दर और स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है।

व्याख्या—पारस बाबू आज उतने ही दुःखी थे जितने उस दिन थे जब उन्होंने अपनी प्यारी बेटी के विजातीय प्रेम विवाह की खबर सुनी थी। वे देर रात को घर पर आये और घर में प्रसन्नता का वातावरण देख कर और अधिक परेशान हो गये। जैसे-तैसे वे अपने मन को काबू में किये हुए अलग-थलग बैठे अखबार में अपने आप को उलझाए हुए थे कि अचानक चूड़ियों की खनखन उनके कानों के नजदीक आती हुई सुनाई दी और वे अचानक 'नमस्ते, बाबूजी।' शब्द को सुनकर चौंक गये। वह उनकी ही अपनी बेटी मालती का कर्णप्रिय स्वर था। जिसे सुनकर उनके हृदय में पुत्री स्नेह का सागर हिलौरे लेने लगा और काफी समय से बिछुड़ी हुई प्रिया पुत्री को अपनी छाती से लगाने को मन होने लगा, किन्तु उस समय खानदान की मान-मर्यादा का उल्लंघन हो जाने से उत्पन्न क्रोध उन्हें भावुक-कार्य करने से रोक रहा था। उनका मन कशमकश की स्थिति में आ गया। वे उस समय अपने आपको कैसे रोक पाये, इस बात को तो वे स्वयं ही जानते थे। उन्होंने अखबार को सरकाने का बहाना किया और आँखों पर पड़े चश्मे के ऊपर से उसे देखने का प्रयास किया। वे चाहते थे कि अपनी बेटी का स्वास्थ्य, उसके गहने, उसके कपड़े आदि को देख लें किन्तु सहसा ''नमस्ते, बाबूजी।'' अजनबी-सा शब्द सुनाई दिया। ऐसा लगा जैसे वह वहीं पर मालती के पीछे खड़ा था। पारस बाबू ने पुनः अपने आप को रोकने का सफल प्रयास किया और अखबार पर से बिना निगाहें हटाए वे जल्दी से बोले, ''नमस्ते.....नमस्ते.....आ गये तुम लोग.....तकलीफ तो नहीं हुई?'' और प्रश्न को यों ही अधूरा छोड़कर अपने आपको पुनः अखबार में ही उलझा लिया।

विशेष— 1. प्रस्तुत अवतरण में पारस बाबू के पितृ-मन की बेचैन स्थिति व मनोभावनाओं का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है।

2. यह भी स्पष्ट किया है कि संतान चाहे कैसी भी हो, माता-पिता के हृदय में उनका प्यार किसी-न-किसी रूप में सुरक्षित रहता ही है।

3. अवतरण का भाषा सरल, प्रभावपूर्ण व भावानुकूल है।

(6)

''इस समाचार की प्रतिक्रिया की कामना वे उस चेहरे पर करते और गुस्सा नए सिरे से कई गुना होकर उन्हें गरम सलाखें कोचने लगता। उन्होंने कल्पना की कि वे बाजार में जा रहे हैं। लोग एक-दूसरे को कोहनी मारकर पीछे से कहते हैं.....इन्हीं पारस बाबू की लड़की ने गैर जाति के लड़के के साथ लव-मैरिज कर ली है .....। बाजार का एक-एक आदमी उनके सामने आ खड़ा होता है और वे पुराने अभिनेताओं की तरह हाथ-पाँव फटकारते, पागलों की तरह बकते रहे—मेरी लाश पर मालती की शादी होगी.....माँडे से घसीट कर लाऊँगा.....। मुँह से झाग आते रहे, ख्याल आया, वहाँ माँडा कहाँ होगा ? उन्हें फिर दिल का दौरा पड़ गया।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'बिरादरी बाहर' नामक कहानी पाठ से अवतरित है। जिसमें कहानीकार राजेन्द्र यादव पारस बाबू की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि जब **व्याख्या** - उन्होंने अपने पुत्र द्वारा भेजे गये पत्र से यह पता चला कि उनकी पुत्री मालती ने एक विजातीय लड़के से प्रेम-विवाह कर लिया है तो वे आवेश में आकर अपने आपको कोसने लगे। उस समय उन्हें अपने प्रत्येक रिश्तेदार और परिचित व्यक्ति का चेहरा सामने नजर आ रहा था। वे सोच रहे थे कि कैसे वे अपना मुँह समाज में दिखा सकेंगे और कैसे वे अपनी लड़की के कारनामों को छुपा पाएँगे? वे कल्पना करने लगे कि बाजार में जाते समय लोग उनके पीछे से एक-दूसरे के कोहनी मार कर इशारा कर रहे हैं और सभी लोगों की आँखें मुझे देखकर कह रही हैं कि इन्हीं पारस बाबू की बेटी ने इन्टरकास्ट लव-मैरिज की है। तब वे पुराने अभिनेता की तरह अपने हाथ-पैर पीटते हुए पागलों की तरह चिल्लाने लगते हैं कि ''मालती यह शादी नहीं कर सकती। अगर उसने यह शादी की तो वह उसे मंडप में से उठाकर ले आएँगे।'' सहसा ख्याल आता है कि मण्डप तो वहाँ होगा ही नहीं। इस प्रकार वे लोगों के द्वारा किये जाने वाले व्यवहार की कल्पना मात्र से अत्यधिक परेशान हो जाते हैं और उन्हें फिर से दिल का दौरा पड़ जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विशेष – 1. प्रस्तुत उदाहरण में कहानीकार ने कथानायक के मनोभावों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

2. भाषा-शैली सरल, प्रवाहपूर्ण और मनोभावाभिव्यंजक है।

(7)

''उन दिनों एक अजब वैराग्य की भावना उनके मन-मस्तिष्क पर छाने लगी। कोई किसी का नहीं है, सब अपने-अपने पर छाने लगी। कोई किसी का नहीं है, सब अपने-अपने मतलब के हैं.....इन्हीं बच्चों के लिये उन्होंने क्या-क्या मुसीबतें नहीं उठाई? आज कोई भी सोचता तक नहीं कि बु ा मर गया या जिन्दा है। नीचे बैठे-बैठे वे सारे दिन गीता की तरह-तरह के भाष्य और श्रीमद्भागवत पढ़ते रहते और मन ही मन प्रतिज्ञा किया करते हैं कि माँफी माँगते हुए मालती का पत्र आयेगा। मैं बड़ी अभागिन हूँ, मेरे कारण आपको इतना कष्ट हुआ....।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'बिरादरी बाहर' नामक कहानी पाठ से अवतरित है। प्रस्तुत अंश में संतान द्वारा उपेक्षित पारस बाबू के मोह भंग मन की अन्त:स्थिति को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या – जब मालती ने अपने पिता पारस बाबू की मर्जी के खिलाफ गैर जाति के लड़के से प्रेम-विवाह कर लिया तो उसके बाद उनके लड़के ने भी पत्र-व्यवहार बन्द कर दिया था। मालती की माँ के द्वारा कुछ कहने पर पारस बाबू ने फटकार दिया था। इन दिनों पारस बाबू के मन में अपने जीवन के प्रति वैराग्य का भाव जाग्रत हो गया था। उनके मन में संतान के प्रति कोई मोह नहीं था। वे अपने आपको संतान द्वारा उपेक्षित महसूस करने लगे थे। वे सोचने लगे कि इस संसार में कोई किसी का सगा नहीं है। सभी अपने-अपने मतलब के सगे हैं। जिन बच्चों के भविष्य के लिये उन्होंने कितने कष्ट उठाए और आज वे ही उपेक्षा करने लगे।

पारस बाबू दिन भर नीचे बैठे-बैठे गीता के तरह-तरह के भाष्य व टीका पढ़ते रहते हैं और यह सब मानसिक शांति के लिये करते रहते हैं। साथ ही वे मन ही मन इस बात की प्रतिज्ञा भी करते हैं कि मालती का पत्र आयेगा और उसे अपने किये पर पश्चाताप होगा व क्षमा याचना से युक्त पत्र अपने माता-पिता के पास भेजेगी कि मैं कितनी अभागिन हूँ जिसने आप जैसे व्यक्ति को इतना परेशान किया है। पारस बाबू यही सोच कर अपने बच्चों व मालती से पत्र व्यवहार नहीं कर रहे थे और आज इस आशा में बैठे थे कि किसी-न-किसी का पत्र अवश्य ही आयेगा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार ने एक परिवार के मुखिया की अभिलाषाओं का सुन्दर चित्रण किया है।

2. एक पिता की मौलिक मनोभावनाओं का चित्रण प्रस्तुत किया है।

3. संतान के प्रति विरक्ति भावना दर्शाई है।

4. भाषा सरल और प्रभावपूर्ण है।

11.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

11.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. कथाकार राजेन्द्र यादव द्वारा रचित कहानी के अनुसार 'बिरादरी बाहर' शब्द का आशय बताइये।

उत्तर – बिरादरी बाहर से अभिप्राय अपने परिवार, जाति व समाज से अलग होना है।

प्रश्न-2. प्रस्तुत कहानी 'बिरादरी बाहर' में किस प्रकार की मानसिकता का चित्रण किया है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में ज्यादातर घटनाएँ कहानी नायक पारस बाबू के मन में घटित होती हैं जिसमें आन्तरिक कशमकश की स्थिति बनी रही है। पारस बाबू यह तय नहीं कर पाते हैं कि वे अपनी बेटी के प्रति समाज के नियमों को मद्देनज़र रखते हुए कैसा व्यवहार करें।

प्रश्न-3. कौन-सा दुष्कार्य पारस बाबू के मन की आन्तरिक स्थिति को विकृत बना देता है?

उत्तर – पारस बाबू की लाडली बेटी मालती ने उनकी इच्छा के विरूद्ध, उनकी प्रतिष्ठा की परवाह किये बिना एक विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह कर लिया, जिससे उनके मन की आन्तरिक स्थिति बिगड़ गई।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न-4. पारस बाबू ने ऐसा क्यों कहा था कि ''मालती की माँ ने सारा घर सिर पर उठा रखा था। महिनों से नींद हराम कर दी थी।''

उत्तर – पारस बाबू ने बताया कि मालती की माँ की आँखों का ऑपरेशन होना था, किन्तु उससे पहले वह अपने परिवार को एक साथ देखना चाहती थी, जिसमें वह मालती व उसके पति को बुलाना चाहती थी।

प्रश्न-5. मालती का प्रेम-विवाह रोकने के लिये कहानी नायक पारस बाबू ने क्या किया था?

उत्तर – जिस दिन मालती का विवाह होने वाला था, उस दिन पारस बाबू हर एक घंटे के अन्तराल में मालती को तार द्वारा यह सूचना भेजते रहे कि उसकी माँ की हालत चिन्ता जनक है। वह बे-होश है, शादी रोक दो, उसे स्थगित कर दो।

प्रश्न-6. मालती कितने समय के बाद अपने पीहर आई?

उत्तर – मालती प्रेम-विवाह सम्पन्न होने के दो वर्ष बाद अपने पति को साथ में लेकर पीहर आई थी।

प्रश्न-7. ''ऊपर का सारा शोर-गुल एक झटके के साथ रील टूटने के समान खट से बन्द हो गया था।'' क्यों?

उत्तर – पारस बाबू मालती व उसके साथ आने वाले गैर पुरुष के घर पर आ जाने के कारण देर रात को घर पर आये और नीचे ही खाना मँगवा लिया था किन्तु नीचे उनके खाने की समुचित व्यवस्था नहीं हुई और उनकी थाली खाली पड़ी रही। जिस पर आवेश में आकर उन्होंने जोर-से आवाज लगाई जिसे सुनकर ऊपर का सारा शोरगुल एक दम शान्त हो गया था।

प्रश्न-8. मालती के आने के दिन देर रात तक घर में शोरगुल क्यों होता रहा?

उत्तर – आज पूरे दो वर्ष के बाद मालती अपने पीहर आई थी और उसके साथ उसका पति भी आया हुआ था। यद्यपि मालती ने घर की मर्यादाओं के विरूद्ध उस विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह किया था किन्तु परिवार के सभी लोगों ने उसे स्वीकार कर लिया और अच्छे खाने के बाद सामुहिक रूप में सभी ताशपत्ती खेलकर प्रसन्नता जाहिर कर रहे थे जिसकी वजह से देर रात तक ऊपर शोरगुल बना रहा था।

प्रश्न-9. ''खूब लम्बा हाथ तानकर चार पूरियाँ डाली और पीछे हट गई।'' चन्दा ने ऐसा क्यों किया?

उत्तर – चन्दा अपने पिता को गुस्से में देखकर डर रही थी, वह उनके पास जाने में कतरा रही थी, इसलिये उसने लम्बा हाथ तानकर चार पूरियाँ उनकी थाली में दूर से ही डाल दी थी।

प्रश्न-10. प्रस्तुत कहानी 'बिरादरी बाहर' में पारस बाबू को किस प्रकार का पात्र बताया है?

उत्तर – कुछ लोग आज भी ऐसे हैं जो सामाजिक मान्यताओं के बदले जाने के बाद अपनी परम्पराओं से चिपके रहते हैं। प्रस्तुत कहानी के नायक पारस बाबू ऐसी ही विचारधारा वाले व्यक्ति हैं।

प्रश्न-11. राजेन्द्र यादव द्वारा रचित कहानी 'बिरादरी बाहर' में किस मनोदशा का वर्णन किया गया है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में पौराणिक परम्पराओं को मानने वाले व आधुनिक विचारों के परिवेश वाले पात्रों की जुदा-जुदा मनोभावनाओं का वर्णन किया गया है। जिसमें दो अलग-अलग व विपरीत विचारधाराओं के संघर्ष से ग्रस्त व्यक्ति की मनोदशा का चित्रण है।

प्रश्न-12. यदि पारस बाबू भी मालती के विजातीय प्रेम-विवाह को स्वीकार कर लेते तो क्या होता?

उत्तर – यदि पारस बाबू भी परिवार के अन्य लोगों की तरह मालती के प्रेम-विवाह को स्वीकार कर लेते तो उन्हें मानसिक अशांति से ग्रस्त नहीं रहना पड़ता और वे अपने आपको बिरादरी बाहर भी नहीं समझते।

प्रश्न-13. मालती द्वारा किये जाने वाले प्रेम-विवाह की जानकारी पारस बाबू को कैसे मिली?

उत्तर – पारस-बाबू ने अपने पुत्र का पत्र प्राप्त किया, जिसमें मालती के प्रेम-विवाह की सूचना लिखी थी।

प्रश्न-14. मालती के घर लौटने पर पारस बाबू ने क्या किया?

उत्तर – जिस दिन मालती अपने पति के साथ पूरे दो वर्षों के बाद घर लौटी तो उस दिन पारस बाबू सारे दिन घर से बाहर घूम कर समय बिताते रहे और देर रात को घर लौटे तथा बिना किसी से बातचीत किये नीचे ही उन्होंने अपना खाना मंगवा लिया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रश्न- 15. प्रस्तुत कहानी 'बिरादरी बाहर' की क्या विशेषता है?

उत्तर – सुप्रसिद्ध कहानीकार राजेन्द्र यादव की प्रस्तुत कहानी 'बिरादरी बाहर' दो विचारों के संघर्ष के द्वारा ग्रस्त बेबस व्यक्ति की कहानी है जो उसकी मनोदशा का चित्रण करने वाली आधुनिक कहानी की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली है।

11.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. प्रस्तुत कहानी 'बिरादरी बाहर' की मूल संवेदना पर टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – बहुमुखी प्रतिभा के धनी, श्रेष्ठ कहानीकार राजेन्द्र यादव ने प्रस्तुत कहानी 'बिरादरी बाहर' के माध्यम से ऐसे लोगों पर आक्षेप किया है जो बदलते हुए सामाजिक परिवेश में आज भी अपनी पौराणिक मान्यताओं से चिपके हुए हैं। कहानी के मुख्य पात्र पारस बाबू की पुत्री मालती एक विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह कर लेती है। पारस बाबू इसे अपनी शान के खिलाफ समझते हैं और सामाजिक कलंक मानते हैं। उस परिवार के सभी लोग समय आने पर इस सम्बन्ध को सामुहिक रज़ामंदी दे देते हैं किन्तु पारस बाबू इसे स्वीकार नहीं करते हैं। जिस वजह से पौराणिक व नवीन पीढ़ी में वैचारिक संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है। मालती आदि नई पीढ़ी के पात्र पौराणिक विचारों को खोखला मानते हैं और विजातीय मेहमान का मुक्त-हृदय से स्वागत करते हैं, सत्कार करते हैं किन्तु पारस बाबू मानसिक दुविधा से ग्रस्त हैं और पौराणिक परम्पराओं के पक्ष-पाती होने के कारण वे दुविधा में पड़ जाते हैं और परिवार से अलग-अलग हो जाते हैं। वे अपने आपको 'बिरादरी बाहर' महसूस करने लगते हैं। अत: प्रस्तुत कहानी की मूल संवेदना पुरानी मान्यताओं से चिपके हुए व्यक्ति की दुविधाग्रस्त मनोदशा एवं खोखले जीवन मूल्यों की अनुपयोगिता है। प्रस्तुत कहानी में इसी की व्यंजना की गई है।

प्रश्न- 2. राजेन्द्र यादव द्वारा रचित कहानी 'बिरादरी बाहर' के उद्देश्य को संक्षिप्त में स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – राजेन्द्र यादव की 'बिरादरी बाहर' कहानी पुरानी व नवीन मान्यताओं के पारस्परिक सम्बन्ध के संघर्ष की प्रामाणिक कहानी है। कहानी के पात्र पारस बाबू हैं और इनके दोनों लड़के और लड़कियाँ नई पीढ़ी के अनुसार नए विचारधाराओं के समर्थक हैं। मालती कुछ दिनों के लिये अपने भाई संजय के साथ रहती है। वहाँ पर वह एक विजातीय लड़के के साथ प्रेम-विवाह कर लेती है। वह मालती का पूरा सहयोग करता है। सारा परिवार उस विवाह को स्वीकार कर लेता है किन्तु पारसनाथ उसे अपनी प्रतिष्ठा पर एक बदनाम कलंक मानते हैं। वे अपनी बिरादरी और समाज का पूरा-पूरा ख्याल रखते हैं। नई पीढ़ी में जाति और बिरादरी की दकियानुसी धारणाएँ नहीं रहती हैं। इस तरह कहानीकार ने पारसनाथ के मानसिक मंथन को आधार मानकर यह उद्देश्य व्यंजित किया है कि वर्तमान समय में पौराणिक और नवीन पीढ़ी के बीच विचारधाराओं का मतभेद चल रहा है। इस मतभेद का निवारण तभी हो सकता है जब दोनों ओर से समन्वय की चेष्टा की जाये। सभ्य समाज की रचना के लिये इस प्रकार का समन्वय आवश्यक है।

11.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. 'बिरादरी बाहर' कहानी के आधार पर कहानी के प्रमुख पात्र 'पारसनाथ' व 'मालती' का चरित्र-चित्रण कीजिये।

उत्तर – कहानीकार राजेन्द्र यादव ने कहानी की पात्र-योजना के अनुसार पारसनाथ को कहानी का प्रमुख पात्र बनाया है। वह अपने परिवार का मुखिया है तथा अवस्था सम्पन्न व्यक्तित्व का धनी व्यक्ति है। संजय, विजय, मालती, उसका पति, चन्दा और पारसनाथ की पत्नी इस कहानी के सहायक पात्र हैं। संजय, विजय परोक्ष रूप में अपना किरदार अदा करते हैं। चन्दा को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत किया गया है। पात्रों को कहानीकार ने दो भागों में विभाजित किया गया है। मुख्य पात्र पारसनाथ पौराणिक विचारों व परम्पराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं और अन्य सभी पात्र नवीन धारणाओं को समर्थन देने वाले हैं। इस आधार पर हम कहानी के मुख्य पात्र पारसनाथ के चरित्र की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं –

1. स्वाभिमानी व्यक्ति – कहानी का मुख्य पात्र पारसनाथ परिवार का मुखिया है और परिपक्व अवस्था में आते-आते वह समाज के सभी उतार-चढ़ावों को अपने स्वभाव में समाहित कर चुके हैं। वे अपने समय की सम्माननीय परम्पराओं का बखूबी से निर्वाह करते आये हैं जिससे उनमें आत्म-विश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है। चूँकि समाज में उनकी प्रतिष्ठा रही है तो वे आज भी अपने स्वाभिमान को उसी प्रतिष्ठानुसार बनाये रखना चाहते हैं इसीलिये वे अपनी पुत्री मालती को विजातीय युवक से विवाह करने

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पर स्वीकार नहीं करते हैं। वे उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं चाहते हैं। जब दो वर्ष बाद मालती अपने पति के साथ अपने पीहर आती है तो वे सारे दिन बाहर रहकर देर रात को घर पर पहुँचते हैं और नीचे ही अपना भोजन मंगा लेते हैं।

2. क्रोधी स्वभाव – पारसनाथ बाबू गरम मिजाज व्यक्ति हैं। कहानी के प्रारम्भ में ही उनके तुनक मिजाज का पता चल जाता है। जब घर का मुख्य द्वार देरी से खोला जाता है तो वे क्रोध में झिल्लाकर बोलते हैं, ''सब के सब बहरे हो गये क्या.....सुनाई नहीं देता.....।'' देर रात को कुन्दी बन्द करते हुए कहते हैं, ''आधी रात हो गई, तुम लोगों की हा-हा-ही-ही बन्द नहीं हुई अभी तक।'' मालती के आने पर जब अपना खाना नीचे मँगवा लेते हैं तो अपनी थाली में खाना खत्म हो जाने के बाद वे जोर से 'चन्दा' क्रोध में फनफना कर आवाज लगाई। जब चन्दा खाना लेकर आती है तो वे कहते हैं कि ''किसी का ध्यान नहीं है कि कोई और भी यहाँ पर बैठा है।'' पूरा परिवार उनका क्रोध जानता है इसीलिये सब लोग पारस बाबू से डरते हैं। मालती भी दो वर्षों तक उनके क्रोध के कारण नहीं आई।

3. जिद्दी प्रवृत्ति – कहानी के मुख्य पात्र पारसनाथ क्रोधी होने के साथ-साथ जिद्दी स्वभाव के इन्सान हैं। वे चाहते हैं कि उनके घर में वही सब कुछ हो जो वे चाहते हैं। सभी लोग उनका कहना माने, उनकी इच्छानुसार चलें। परिवार के सभी सदस्य उनके स्वभाव से परिचित होते हैं। जब उनकी पुत्री मालती विजातीय लड़के से प्रेम विवाह कर लेती हैं तो उनके दिल को बहुत अधिक ठेस लगती है। पेशकार उनका मित्र होता है। जब वह मालती के आने के बारे में पूछता है तो उन्हें बहुत ठेस पहुँचती है। मालती को वे न चाहते हुए भी अपनी जिद्दी प्रवृत्ति के कारण अपने से अलग कर देते हैं और उससे सम्पर्क नहीं करते हैं। उनके दो बेटों से भी वे जिद के कारण कम संपर्क रखते हैं।

4. लज्जाशील – जहाँ एक ओर पारस बाबू जिद्दी स्वभाव के होते हैं वहीं वे लज्जाशील भी उतने ही होते हैं। जब उनकी पुत्री मालती विजातीय प्रेम विवाह कर लेती है तो उसके उस कुकृत्य से वे स्वयं लज्जित महसूस करते हैं। उन्हें स्वयं को आत्मग्लानी होने लगती है। वे समाज के लोगों के बारे में कल्पना करते हैं कि वे लोग इस मुद्दे पर अनेक प्रकार की टीका-टिप्पणियाँ करेंगे यह सोचकर वे लज्जित हो जाते हैं।

5. पत्नी से प्रभावित – यद्यपि पारस बाबू क्रोधी स्वभाव के होते हैं किन्तु उनका क्रोध उनकी पत्नी के सामने प्रभावहीन हो जाता है। पत्नी की हार के सामने उनकी हठ कमजोर पड़ जाती है। जब पारस बाबू की पत्नी की आँखों का ऑपरेशन होना होता है तो वह यह कहकर ऑपरेशन नहीं कराती है कि वह एक बार अपने परिवार को सामुहिक प से एक साथ देख ले फिर आँखों की ज्योति रहे या न रहे। पारस बाबू ने स्वयं अपनी इस कमजोरी को उनके मित्र पेशकार की पत्नी के सामने प्रकट करते हुए कहा कि ''मैंने तो समझाया था। डाँटा भी, एक साल टाल दिया, लेकिन आप जानो, औरतें तो औरतें ही होती हैं।.....आखिर गौरी, मालती, संजय, विजय सभी को बुला लिया।''

6. पौराणिक परम्पराओं के पक्षधर – प्रस्तुत कहानी के नायक प्राचीन विचारधारा के प्रतिनिधि हैं। आधुनिकता व नवीनता के सख्त विरोधी हैं। वे यह नहीं चाहते हैं कि परिवार में रहकर बहु-बेटियाँ पर्दा-प्रथा से दूर रहें, किसी की लोक-लाज का स्वभाव न रखें, बड़ों से बोलें आदि। वे इसीलिये अपने घर में पर्दा-प्रथा रखते थे। वर्तमान युग में प्रचलित नवीन विचारधाराओं को वे कतई स्वीकार नहीं करते हैं। प्रेम-विवाह, विजातीय विवाह, कोर्ट-मैरिज आदि से उन्हें सख्त नफ़रत है। जब उनकी स्वयं की बेटी विजातीय विवाह कर लेती है तो वे अत्यंत लज्जित और अपमानित अनुभव करते हैं। उनका मानस उद्वेलित हो जाता है, वे पागलों जैसा व्यवहार करने लगते हैं। यहाँ तक कि उन्हें इस बात का सदमा लगता है फलतः उनको दो बार दिल का दौरा भी पड़ जाता है अतः वे पौराणिकता के पक्के प्रतिनिधित्व करने वाले थे।

7. आस्तिक व्यक्ति – कथानायक ईश्वर के प्रति पूरी-पूरी आस्था रखते हैं। आये दिन मन्दिर में दर्शन करने जाते हैं और जब मालती प्रेम-विवाह कर लेती है और उनके द्वारा उसका खण्डन किया जाता है तो इस व्यवहार से उनके दोनों लड़के भी उनसे कटे-कटे रहने लगते हैं, तब पारस बाबू नीचे बैठे-बैठे दिन भर गीता के भाष्य, टीका और अर्थ पढ़ते थे। भागवद्गीता का पाठ किया करते थे और प्रतीक्षा करते रहते थे कि उनकी बेटी अपनी त्रुटि पर शर्मिन्दा होकर क्षमा याचना भरा पत्र लिखकर भेजेगी। अंत में उनके मन में सबके प्रति वैराग्य की भावना जाग्रत हो जाती है और वे मन ही मन सोचते हैं कि आज के युग में सब अपने-अपने स्वार्थ के सगे हैं। कोई किसी का सगा नहीं है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

8. परेशान व्यक्ति – कथानायक पारसनाथ अपने परिवार व बच्चों के व्यवहार से पीड़ित व परेशान रहते हैं। उनकी आधुनिक गतिविधियाँ बिल्कुल पसन्द नहीं आती हैं। मालती के विजातीय प्रेम विवाह में परिवार के सभी सदस्यों की पूर्ण सहमति होती है और वे सब सामुहिक रूप से उस सम्बंध को स्वीकार कर लेते हैं। यह उनके जीवन की विडम्बना नहीं तो और क्या है कि एक विजातीय युवक तो परिवार का अन्तरंग सदस्य बन जाता है और स्वयं उस घर का मुखिया अपने आपमें बिरादरी बाहर का व्यक्ति जैसा बन जाता है। उनकी मानसिकता इतनी बिगड़ जाती है कि वे स्वयं अपने आपको इस संसार में तन्हा-तन्हा से समझने लगते हैं। परिवार में कोई भी व्यक्ति उनसे सद्व्यवहार नहीं करते हैं। कोई उनका कहना नहीं मानता है। जिस दिन वे प्रेम विवाह की सूचना पाते हैं उस दिन पागल जैसा व्यवहार करने लगते हैं, यहाँ तक कि वे उस दिन छत से गिर कर आत्महत्या करने की बात भी सोच लेते हैं। उन्हें इस बात से दो बार दिल का दौरा तक पड़ जाता है।

मालती का चरित्र चित्रण

कहानीकार राजेन्द्र यादव की प्रस्तुत रचना में मुख्य रूप से दो ही प्रमुख पात्र होते हैं – पारसनाथ जो कि एक पौराणिक विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले परिवार के प्रतिष्ठित व अनुभवी मुखिया हैं। मालती पारसनाथ की पुत्री है जो आधुनिकता व नवीन विचारों से मण्डित है। आधुनिकता के रंग में अपने आपको रंग कर पुराने ख्यालों और रीति-रिवाजों को खोखला एवं महत्त्वहीन मानती है। मालती की चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते हैं –

1. आधुनिकता से मण्डित – जहाँ मालती के संस्कारों पर अपने पिता पारसनाथ की पौराणिक विचारधाराओं व संस्कारों का प्रभाव पड़ना चाहिये था, वहीं वह उतनी ही आधुनिक और नूतन विचारधाराओं से परिपूर्ण है। मालती के पिता पारसनाथ धार्मिक आस्थावान व्यक्ति हैं। मालती पूजा-पाठ को खोखला प्रदर्शन मानती है। वह आधुनिक संस्कारों के रंग में इस क़दर रंग चुकी है कि वह पुराने ख्यालो को रूढ़ीवादी बताकर उनसे नफ़रत करती है। उसने विजातीय प्रेम विवाह सम्पन्न कर अपने अत्याधुनिक होने का परिचय दे दिया।

2. स्वच्छंद व निडर – मालती स्वच्छन्द ख्यालों वाली लड़की है। इसे विचारों का बन्धन कतई पसन्द नहीं है। उसका अपना जीने का अन्दाज है, उसके अपने विचार हैं और उन्हें पूरा करने का उसका अपना तरीका है। उसे अपनी सोच और विचारों में जरा भी शंका महसूस नहीं होती है। जब वह कुछ समय के लिये अपने भाई के पास रहने के लिये जाती है तो स्वयं अपनी पसंद का वर चुन लेती है और उसके साथ विवाह कर लेती है, यह जानते हुए भी कि वह विजातीय है। विवाह करते समय उसे किसी का भी किसी प्रकार का डर नहीं रहता है, न समाज का, न परिवार का और न अपने पिता व उनकी प्रतिष्ठा का।

3. अन्तर्जातीय विवाह की समर्थक – मालती स्वजातीयता के बन्धन में बन्धकर, अयोग्य जीवनसाथी के साथ जीवन व्यतीत करना नारकीय समझती है। उसका मानना है कि यदि योग्य व्यक्ति विजातीय भी हो तो अच्छा है। यदि वह समान विचारों वाला और संतुष्टि प्रदान करने वाला हो तो। यही कारण है कि वह अपनी दृष्टि में योग्य समझे जाने वाले विजातीय युवक से प्रेम-विवाह करने में जरा भी नहीं चुकती है। उसे सहर्ष स्वीकार कर लेती है।

4. नारी स्वातन्त्र्य की समर्थक – मालती नहीं चाहती कि वह अपने विवाह के लिये जीवन साथी चुनने में किसी के अधीन रहे। माता-पिता के पौराणिक व रूढ़ीवादी विचारों के अनुसार व्यक्ति से विवाह कर अपने जीवन को नारकीय नहीं बनाना चाहती। वह सोचती है कि समाज में नारी का अपना महत्त्व है उसे हर क्षेत्र में स्वतंत्रता मिलनी ही चाहिये। इसी कारण से वह अपने विवाह में नारी स्वतंत्रता के अधिकार को कानूनन प्राप्त कर लेती है।

5. पिता की नजरों में गिरा हुआ व्यक्तित्व – मालती चाहे अपने आपको कितनी ही आधुनिक समझे, कितनी ही स्वतंत्र समझे, कितनी ही समझदार समझे, कितनी ही पढ़ी-लिखी या मॉर्डन समझे किन्तु वह अपने ही पिता की नज़रों में गिरी हुई रहती है। उसके वैवाहिक जीवन में उसे सब कुछ मिलता है। किन्तु पिता के आशीर्वाद से वह नितांत पंचित रहती है। बचपन में पिता की दुलार शीतल छाँव तले पल कर बड़ी होने वाली मालती आज अपने इस स्वतंत्र निर्णय की क्रियान्विति से पिता के प्यार की मोहताज हो जाती है। उसके पिता उसके विजातीय प्रेम-विवाह से सख्त नाराज रहते हैं, व्यथित रहते हैं, अपमानित रहते हैं, लज्जित रहते हैं और अन्त तक मालती उनकी नज़रों से गिरी हुई रहती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

6. जिद्दी स्वभाव – कथाकार ने प्रस्तुत कहानी में मालती को जिद्दी पात्र के रूप में ही चित्रित किया है। वह बचपन से ही अड़ियल स्वभाव की होती है और अपनी बात को मनवाने के लिये अपने माता-पिता-भाई-बहन सभी से जिद करती है और अन्त में उसे मनवा लेती है। बात-बात पर कठोरता दर्शाने वाली मालती अन्त में अपनी इच्छानुसार विवाह करने में भी किसी प्रकार की शंका नहीं करती है। पारस बाबू उसके बारे में कहते हैं कि ''मालती से उन्हें ऐसी उम्मीद नहीं थी.....यों जवान-दराज और अव्वल नम्बर की जिद्दी तो वह जन्म से ही थी, किन्तु यहाँ तक बढ़ जायेगी, यह कल्पना से बाहर था।

11.6 सारांश

संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी में पारसनाथ और मालती का चरित्र-चित्रण पुरानी व नई पीढ़ी के प्रतिनिधियों के रूप में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया गया है। दोनों के विरोधी विचारों में कहानी के प्रारम्भ से अन्त तक विरोध चला रहता है। अत: राजेन्द्र यादव ने दोनों पात्रों के चरित्र-चिन्तन में पूरी-पूरी सावधानी रखी है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 1 2 : मन्नू भण्डारी

संरचना

1 2.0 प्रस्तावना

1 2.1 उद्देश्य

1 2.2 परिचय

1 2.3 अकेली

1 2.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

1 2.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1 2.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1 2.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

1 2.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

1 2.6 सारांश

1 2.0 प्रस्तावना

हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोष के आदिनिर्माता श्री सुखसम्पति राय भण्डारी की सबसे छोटी पुत्री, नई कहानी आन्दोलन के समय की बहुचर्चित कहानीकार मन्नू भण्डारी का जन्म 1 9 3 1 में मध्यप्रदेश के भानपुरा कस्बे में हुआ। लेखन संस्कार इन्हें पैतृक दाय के रूप में प्राप्त हुए। इन्होंने मध्यवर्गीय परिवार और विशेष रूप से इस संक्रमणकालीन परिवेश में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही स्त्री को चित्रित करने में विशेष सफलता प्राप्त की है। ईश्वर कभी-कभी कुछ संस्कारों को मानव जीवन में भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बनाकर उसकी पूर्ति कर देता है। इनका विवाह सुप्रसिद्ध कहानीकार, नाटककार, निबन्धकार और अच्छे कवि के रूप में विख्यात राजेन्द्र यादव के साथ हुआ। उन्होंने कहा है कि 'रूढ़ीविद्रोह' कथानकों, भाव धरातलों का चयन, स्वानुभूति की प्रामाणिकता, भाषा की सहज प्रवाहमयता मन्नू की शक्ति भी है और सीमा भी है।

1 2.1 उद्देश्य

यहाँ हम मन्नू भण्टारी एवं उनकी कहानी अकेली के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

1 2.2 परिचय

मन्नू जी की प्रमुख रचनाएँ– 'मैं हार गई', 'एक फ्लेट सैलाब', 'यही सच है', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'त्रिशंकु', 'आपका बंटी', 'महाभोज' (उपन्यास) और 'बिना दीवारों के घर' इनका प्रमुख नाटक है।

1 2.3 अकेली

प्रस्तुत कहानी 'अकेली' मन्नूजी की एक संकलित कहानी है। जो अपने आप में प्रसिद्ध और सफल कहानियों में से एक है। कहानी की नायिका सोमा बुआ बीते दिनों की आत्मीयता से हररोज और हर एक ही सहायता करने के लिये तत्पर महिला है। लोग इसकी इस विशेषता का भरपूर लाभ उठाते हैं। जब भी, जिस किसी को, किसी भी काम में मदद की आवश्यकता होती है, वह मीठी-मीठी बातें बनाकर बुआ को बुला लेते हैं और बुआ भी खुशी-खुशी सभी काम में आती रहती है। जहाँ तक कि बुआ को किसी के यहाँ काम करके खुशी होती है। ऐसा ही एक अवसर इस कहानी का एक केन्द्र है।

सोमा बुआ की मनोभावनाओं के संताप का अत्यंत मार्मिक अंकन लेखिका मन्नू भण्डारी ने प्रस्तुत कहानी में किया है। यह कहानी सोमा बुआ तथा इस प्रकार के चरित्र निभाने वाले लोगों के प्रति सहानुभूति जगाने में पूर्णत: सफल कहानी है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

12.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

''पिछले बीस वर्षों से उसके जीवन की एक रसता में किसी प्रकार का कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ, कोई परिवर्तन नहीं आया। यों हर साल एक महिने के लिये उनके पति उनके पास आकर रहते थे, पर कभी भी उन्होंने अपने पति की प्रतीक्षा नहीं की, उनकी राह में आँखें नहीं बिछाईं। जब तक पति रहते हैं तब तक उनका मन और भी मुरझाया हुआ रहता है क्योंकि पति से स्नेहहीन व्यवहार कर अंकुश उनके रोज-मर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छन्द धारा को कुण्ठित कर देता है।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'अकेली' से अवतरित है जिसमें लेखिका ने सोमा बुआ नामक बुढ़िया के एकाकी जीवन का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है।

व्याख्या—सोमा बुआ का जवान बेटा जाता रहा। जवान पुत्र के वियोग में सदमे को उसके पति भी बर्दाश्त नहीं कर पाये और वे भी सोमा को अकेली छोड़कर तीर्थ-प्रवासी हो गये। जवान पुत्र की मौत और पति के वैराग्य की घटना को आज पूरे बीस वर्ष हो गये तब से सोमा बुआ के जीवन में सदा ही एकाकीपन और एकरसता बनी हुई है। सोमा बुआ का जीवन हमेशा से एक ही गति से चलता रहा है। उसने किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं आया है। वह बिना किसी सहारे के अपना जीवन व्यतीत करती रही है। वैसे उसके पतिदेव वर्ष में एक बार घर पर आते हैं और वे सोमा बुआ के पास ही रहते थे किन्तु अब सोमा बुआ को अपने पति से किसी प्रकार का कोई लगाव नहीं रह गया था। जवानी ढल जाने के कारण और प्राय: अकेली रहने के कारण अब उसे न तो पति के आगमन की प्रतीक्षा रहती थी और न उनके आगमन पर उनके स्वागत के लिये सज-धज कर तैयार रहती थी। वह अपने पति के अपने पास होते हुए भी अनासक्त भाव से रहती थी। पति के न रहने के कारण उस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं रहता है और जब वे आ जाते हैं तो उसका मन मुरझाया सा रहता है क्योंकि सोमा बुआ के प्रति उनके पति में प्रेम व्यवहार नहीं था और वे उनके रोजमर्रा के काम में अड़चन डालते रहते थे। एक प्रकार से सोमा बुआ के अबाध गति से बहती स्वच्छन्द धारा उसके पति के आगमन से अवरूद्ध हो जाती थी। पति देव के रहते सोमा बुआ का स्वतंत्र जीवन एकदम पराधीनता में बदल जाता था।

विशेष—1. प्रस्तुत अवतरण में सोमा बुआ के एकाकी जीवन की स्वतंत्रता और उसके पति की नीरस भावना का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है।

2. अवतरण की भाषा सरल और प्रभावशाली है।

3. शैली विवेचनात्मक और वाक्य योजना भावानुकूल है।

(2)

''अरे मैं तो कहूँ कि घर वालों को कैसा बुलावा? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्ठी और भण्डार घर सौंप दे? पर इन्हें अब कौन समझाये कहने लगे 'तू जबरदस्ती दूसरों के घर में टाँग अड़ाती फिरती है।' और एकाएक उन्हें क्रोध भरी वाणी और कटु वचनों का स्मरण हो आया, जिनकी बौछार कुछ देर पहले ही उनके ऊपर हो चुकी थी। याद आते ही फिर उनके आँसू बह चले।''

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'अकेली' से लिया गया है, जिसमें बताया है कि कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ राधा से वार्तालाप करती है और बताती है कि चौक वाले किशोरीलाल के बेटे का मुण्डन था, पूरी बिरादरी को न्यौता था। उन्होंने मुझे बुलावा नहीं दिया लेकिन मैं वहाँ पर बिना बुलाये चली गई, जिस समय मैं वहाँ से लौटी तो मेरे पति मुझ पर बिगड़ गये। इसी प्रसंग को प्रस्तुत व्याख्या में व्यंजित किया है।

व्याख्या—सोमा बुआ राधा को सम्बोधित करती हुई कहती है कि जब कभी मैं अपनी मर्जी से कहीं पर आती-जाती हूँ तो मेरे पति सन्यासी महाराज मुझ पर बिगड़ जाते हैं। कल जब चौक वाले किशोरीलाल के लड़के मुण्डन था तो सारे पड़ोस को भोजन का न्यौता दिया गया था। मुझे उन्होंने बुलावा नहीं भेजा लेकिन मैं स्वयं बिना बुलाये कार्यक्रम में सम्मिलित होने चली गई। इस बात पर मेरे पति मुझ पर बिगड़ गये। मैं तो किशोरीलाल को अपने बेटा जैसा मानती हूँ। वह भी मुझे अपने घर जैसा ही मानता है तो घर वालों को बुलाने या न्यौता देने की क्या आवश्यकता है? बस यही सोचकर मैं बिना बुलाये वहाँ पर चली गई। यदि वह मुझे अपनी माँ जैसा नहीं समझता तो क्या वह मुझे भट्ठी व भण्डार घर का ताला-चाबी सौंप देता? नहीं। इससे यह पता चलता है कि उसके घर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

में मेरी पूरी इज्जत है। किन्तु मेरे पति देव को कौन समझाए। कल जब में वहाँ से लौटी तो वे कहने लगे कि ''तू तो जबरदस्ती दूसरों के घर जाकर उनके काम में टाँग अड़ाती रहती है।'' सोमा बुआ को अपने पिछले दिनों का ख्याल आया, उस समय उनके पति ने सोमा बुआ को कटु शब्दों से खरा-खोटा काफी सुनाया। बुआ की आँखों में आंसू आ गये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ की व्यथा को स्पष्ट किया है।

2. सोमा बुआ के सरल स्वभाव व मिलनसार आचरण को व्यक्त किया गया है।

3. भाषा-शैली सरल व भावानुकूल है।

(3)

''सुनने को तो सुनती हूँ, पर मन तो दुखता ही है कि एक महिने को आते हैं तो भी कभी मीठे बोल नहीं बोलते। मेरा आना-जाना इन्हें सुहाता नहीं, सो तू ही बता राधा। ये तो साल में ग्यारह महिने हरिद्वार रहते हैं, इन्हें तो नाते-रिश्ते वालों से कोई लेना-देना नहीं, पर मुझे तो सबसे निभाना पड़ता है। मैं भी सबसे तोड़-तुड़ाकर बैठ जाऊँ तो कैसे चले। मैं तो इनसे कहती हूँ कि जब पल्ला पकड़ा है तो अन्त समय में भी साथ ही रखो, सो तो इनसे होता नहीं है। सारा धर्म-कर्म ये ही लूटेंगे, सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं अकेली पड़ी-पड़ी यहाँ इनके नाम को रोया करूँ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'अकेली' से अवतरित है, जिसमें लेखिका की एकाकी व परेशान जिन्दगी का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या – लेखिका मन्नू भण्डारी ने सोमा बुआ की तन्हा जिन्दगी की परेशानियों का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि सोभा बुआ का पति हमेशा सन्यास रूप में बाहर रहता है। सोमा राधा को अपनी व्यथा व्यक्त करती हुई कहती है कि मेरे पति मुझे हमेशा कटु शब्दों में खरी-खोटी सुनाकर डाँटते रहते हैं और मैं उनकी पत्नी होने के नाते सब कुछ सुनती रहती हूँ किन्तु मेरा मन इन सब बातों से बहुत दुःखी व खिन्न-सा रहता है। मेरी वेदना यह है कि मेरे पति साल में एक बार एक महिने के लिये यहाँ अपने घर पर आते हैं। इस कम समय में भी वे मुझसे कभी मधुर नहीं बोलते हैं। मेरा कहीं पर आना-जाना भी इनको अच्छा नहीं लगता है। अब राधा, तू ही बता! मेरे पति साल में ग्यारह माह बाहर हरिद्वार में रहते हैं। ये समाज से बिल्कुल अलग-थलग रहते हैं। इन्हें नाते-रिश्ते वालों या समाज से कोई लेना-देना नहीं है। इनकी अनुपस्थिति में सब कुछ मुझको ही देखना पड़ता है। अगर में भी इनकी तरह सबसे सम्बन्ध तोड़कर बैठ जाऊँ व जिन्दगी कैसे चले। यदि इनको मेरा सामाजिक सम्बन्ध पसन्द नहीं है तो मैंने तो इनसे यहाँ तक कह दिया है कि यदि ''पल्ला पकड़ा है तो जीवन के अन्त समय तक साथ रखो आप। वहाँ हरिद्वार में या जहाँ कहीं पर भी जाओ, मुझे भी अपने साथ में रखो। लेकिन ये मुझे अपने साथ रखते ही नहीं हैं, जैसे जीवन का सारा धर्म-कर्म ये ही लूटेंगे। सारा जस ये ही बटोरेंगे और मैं यहाँ पर अकेली इनके नाम का स्मरण करती रहूँ, परेशान होती रहूँ और रोती रहूँ।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में सोमा बुआ की संवेदना को सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

2. सोमा बुआ के पति की एकाकी व आराम तलब प्रवृत्ति का उद्‌घाटन किया है।

3. सोमा बुआ की मिलनसार व अपनेपन की प्रवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

4. भाषा सरल व भावानुकूल है।

(4)

''बेचारे इतने हँगामे में बुलाना भूल गये तो मैं भी मान करके बैठ जाती? फिर घर वालों को कैसा बुलावा? मैं तो अपनेपन की बात जानती हूँ। कोई प्रेम नहीं रखे तो दस बुलावे पर भी नहीं जाऊँ और प्रेम रखे तो न बुलाने पर भी सिर के बल चली जाऊँ। मेरा हरखू होता और उसके घर पर काम होता तो क्या उसके बुलाने की प्रतीक्षा में बैठी रहती। मेरे लिये जैसा हरखू वैसा किशोरी। आज हरखू नहीं है इसीलिये दूसरों को देख-देख कर मन भरमाती रहती हूँ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'अकेली' से अवतरित है, जिसमें लेखिका ने सोमा बुआ के व्यवहार कुशल व्यक्तित्व का सुन्दर चित्रण किया है और बताया है कि वह अपने पति के दुर्व्यवहार से तो दुःखी है ही साथ ही उसे अपने पुत्र की मृत्यु का भी कष्ट है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्याख्या – सोमा बुआ अपनी व्यवहार कुशलता से युक्त स्वभाव के अनुसार कहती है कि यदि किशोरीलाल ने बुलावा नहीं भेजा तो इसमें कौन-सी बुरी बात है। आखिर उसने पुरे मौहल्ले भर को न्यौता दिया है। कई लोगों का झमेला है। अगर वह इतने हँगामे में भूल गये तो क्या मैं भी यही मानकर बैठ जाती कि वह बुलाए तब ही वहाँ जाऊँ? घर वालों को कैसा बुलावा? मैं बुलावे आदि में विश्वास नहीं करती हूँ केवल अपनेपन की भावना के महत्त्व को समझती हूँ। प्रेम के खातिर तो मैं बिना बुलाए सिर के बल कहीं भी जा सकती हूँ और यदि कोई प्रेम न रखे तो मैं दस बुलावों पर भी नहीं जा सकती हूँ। सोमा बुआ किशोरीलाल के अपनेपन की सराहना करती हुई कहती है कि अपने सगे पुत्र हरखू और किशोरीलाल में कोई अन्तर नहीं है। वह कहती है कि यदि हरखू के घर में कोई काम पड़ता तो मैं क्या उसके बुलावे का इन्तज़ार करती? शायद नहीं। वह अपने दुर्भाग्य को कोसती है और कहती है कि मैं आज अपने पुत्र हरखू के अभाव में दूसरों को देख-देख कर अपने आपको भरमाती रहती हूँ। उस समय सोमा बुआ को अपने बेटे की याद आने लगती है और वह भावुक हृदय में दुःख का अनुभव करती हुई रोने लग जाती है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अंश में सोमा बुआ की व्यवहार कुशल चारित्रिक विशेषता का सुन्दर चित्रण किया है।

2. सोमा बुआ को उनका बेटा हरखू भी बहुत याद आता है, वह दूसरों के अपनेपन में अपने पुत्र की पूर्ति करने का प्रयास करती है।

3. सोमा बुआ प्रेम को अधिक महत्त्व देती है।

4. भाषा सरल व भावानुकूल है।

(5)

"बड़े-बड़े आर्थिक संकटों के समय में भी वह उस अंगूठी का मोह नहीं छोड़ सकी। आज भी उसे उठाते समय उनका दिल धड़क गया, फिर भी उन्होंने पाँच रुपये व वह अंगूठी आँचल में बाँध ली। बक्स को बन्द किया और ऊपर को चली पर उनके मन का उत्साह कुछ ठण्डा पड़ गया था और पैरों की गति शिथिल।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'अकेली' से अवतरित है, जिसमें लेखिका मन्नू भण्डारी ने सोमा बुआ की आर्थिक दयनीय स्थिति और व्यवहार कुशलता से युक्त व्यक्तित्व का वर्णन किया है।

व्याख्या – जब सोमा बुआ को इस बात का पता चला कि उसके समधी यहीं पर आकर अपनी लड़की का सम्बन्ध भागीरथ जी के लड़के के साथ कर रहे हैं तो वह बहुत प्रसन्न हुई। चूँकि सोना बुआ समाज के सभी सार्वजनिक कामों की रीति-रिवाजों और रिश्तों की नज़ाकत को भली प्रकार समझती हैं। वह इस कार्यक्रम में भी उसी परम्परा का निर्वाह करने की इच्छा से कुछ उपहार देने की सोचती है और राधा से वह उपहार लाने को कहती है। जब वह उपहार खरीदने के लिये पैसे लेने अपने घर पर जाती है तो दो-तीन कपड़े की पोटली हटाकर अपने बक्स को खोल कर एक डिबिया निकालती है। उसमें उसे अपनी उम्मीद से कम मात्र सात रुपये और कुछ खेरीज मिलती है। जिसका उसे अफ़सोस होता है। वह इस रकम को कम समझती है, क्योंकि अचानक उसकी निगाह अंगूठी पर पड़ी। यह अंगूठी उसके पुत्र की आखिरी निशानी थी जिसे बुआ ने बड़े-बड़े आर्थिक संकट में भी अपनी जान से लगाकर रखा। उसका दिल बैठ गया फिर भी उसने अपना साहस बटोरते हुए वह अंगूठी और पाँच रूपये अपनी साड़ी के पल्लू में बाँध लिये। जिस उत्साह से वह पैसे लेने के लिये आई थी वह उत्साह अब उस के मन में नहीं रहा और उसके पैरों की गति धीमी पड़ गई।" रुपये तो नहीं मिले बहु! आये भी कहां से, मेरे पास कौन कमाने वाला बैठा है। उस कोठरी का किराया आता है, उसमें तो दो समय की रोटी निकल जाती है। जैसे-तैसे.....।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में लेखिका मन्नू भण्डारी ने सोमा बुआ का आर्थिक दयनीयता का सुन्दर चित्रण किया है।

2. सामाजिक रीति-रिवाजों को महत्त्व देने वाली सोमा बुआ के व्यवहार कुशल भावों की सुन्दर अभिव्यंजना की है।

3. यहाँ सरल, प्रभावपूर्ण व भावानुकूल है।

(6)

"बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग जायेंगे, और मैं समधिन होकर नहीं जाऊँगी तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो सम्बन्ध भी तोड़ लिया। 'नहीं-नहीं' तू यह अंगूठी बेच ही दे।' और उन्होंने आँचल की गाँठ खोलकर एक पुराने जमाने की

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अंगूठी राधा के हाथ में रख दी। फिर बड़ी भिन्नता के स्वर से बोली, 'तू तो बाजार जाती है, राधा, इसे बेच देना और जो कुछ ठीक समझे, खरीद लेना। बस शोभा रह जावे इतना ख्याल रखना।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'अकेली' से अवतरित है, जिसमें कहानी की पात्र सोमा बुआ की सामाजिक व्यवहार कुशलता और उत्साह का अत्यन्त रोचक वर्णन किया है।

व्याख्या – सोमा बुआ के देवर के ससुराल वालों के यहाँ पर आज विवाह कार्यक्रम है। सोमा बुआ उसकी पूरी-पूरी तैयारी करने की ऐसी योजना बनाती है कि समधी के परिवार में उसके घर की प्रतिष्ठा बनी रहे। वह उस कार्यक्रम में उपहार स्वरूप वस्तु देने के लिये अपने बेटे की अँगूठी और पाँच रुपये लेकर आती है और राधा से कुछ अच्छी वस्तु खरीद कर लाने को कहती है। जब राधा उस अँगूठी को न बेचने की सलाह देती है तो सोमा बुआ अपनी भावना को व्यक्त करती हुई उससे कहती है कि ''सारे शहर के लोग वहाँ जायेंगे और मैं यदि वहाँ नहीं गई तो वे लोग बुरा मानेंगे और सोचेंगे कि देवर की मृत्यु के बाद रिश्ता ही समाप्त कर लिया।'' वह दृढ़ निश्चय करके राधा से अँगूठी बेचने और उपहार खरीद लाने की मिन्नत करती है और उसे अच्छी वस्तु लाने के लिये भी आगाह करती है जिससे उसकी अपनी समधी समाज में शान रह सके।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में सोमा बुआ की सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति चेतना को व्यक्त किया है।

2. सामाजिक जीवन के मूल्यों के प्रति सजगता व्यक्त की है।

3. पात्र के उत्साह और उमंग का सुन्दर चित्रण किया है।

4. भाषा सरल और भावपूर्ण है।

(7)

''पर सात कैसे बज सकते हैं, महुरत तो पाँच बजे का था।' और फिर एकाएक ही सारी स्थिति को समझते हुए स्वर की भरसक संयत बनाकर बोली, 'अरे खाने का क्या है, अभी बना लूँगी। दो जनों का तो खाना है। क्या खाना, क्या पकाना।

फिर उन्होंने सूखी साड़ी को उतारा। नीचे जाकर अच्छी तरह उसकी तह की, धीरे-धीरे हाथों से चूड़ियाँ खोली, थाली में सजाया हुआ सारा सामान उठाया और सारी चीजें बड़े जतन से अपने एक मात्र संदूक में रख दी। और फिर बड़े ही बुझे हुए दिल से अंगीठी जलाने लगी।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के मन्नू भण्डारी द्वारा रचित कहानी 'अकेली' से अवतरित है, जिसमें लेखिका ने सामाजिक रीति-रिवाजों को मानने में दक्ष कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ की उस मनोदशा का सुन्दर चित्रण किया है जब वह अपने समधी के घर पर होने वाले वैवाहिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिये पूर्ण लगन और उत्साह से तैयारी करती है। यहाँ तक कि वहाँ की रस्म को निभाने के लिये वह अपने इकलौते पुत्र हरखू की एक मात्र निशानी अँगूठी को भी बेच देती है। किन्तु अन्त में उसको अपने समधी के यहाँ से बुलावा नहीं आता है तो हताश होकर बैठ जाती है।

व्याख्या – सोमा बुआ सारी तैयारी कर लेने के बाद बुलावे के इन्तजार में थोड़ी देर लैट जाती है तो उसकी आँख लग जाती है और जब उसकी नींद खुलती है तो वह समय पूछती है। उस समय पूरे सात बज रहे थे। तब उसे इस बात पर भरोसा नहीं हुआ और वह आश्चर्य कर पुनः पूछती है कि कितना समय हो गया? जब उत्तर में वही सात बजे का शब्द सुनाई दिया, उसने आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि सात कैसे बज सकते हैं, महुरत तो पाँच बजे का था। देवर के ससुराल वालों को बुलावा भेजना चाहिये था लेकिन उन्होंने बुआ को बुलाया ही नहीं। अपने उत्साह और अपनी उम्मीदों को उसने परास्त पाया। अपने स्वर को संयत करती हुई वह बोली 'अरे खाने का क्या है, अभी बना लूँगी, दो जनों का खाना है, क्या खाना और क्या पकाना।''

बड़े अरमान और उत्साह से अपने समधी के घर जाने के लिये बुआ ने अपनी साड़ी को एक दिन पूर्व ही पीले रंग में अपने हाथों से रंगी थी। उसे धीरे से उतारा, नीचे आकर उसकी अच्छी तरह से तह की। धीरे-धीरे अपने हाथों की चूड़ियाँ उतारी तथा थाली में जमाया गया सारा सामान उठाया और सारी चीजें बड़े जतन से अपने एक मात्र बक्स में जमा दी और बुझे हुए मन से अंगीठी जलाने लगी और खाने की तैयारी करने लगी।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में मन्नू भण्डारी ने सोमा बुआ को आत्मीयता से परिपूर्ण बताया है।

2. पात्र की मनोभावनाओं और मानसिक संताप का सुन्दर चित्रण किया है।

3. भाषा प्रभावशाली, सरल और भावानुकूल है।

12.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

12.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. मन्नू भण्डारी द्वारा रचित 'अकेली' कहानी किस प्रकार की रचना है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'अकेली' मानसिक संताप से ग्रस्त नारी की मनोभावाभिव्यंजक कहानी है।

प्रश्न- 2. प्रस्तुत कहानी की मुख्य पात्र को 'अकेली' क्यों कहा गया है?

उत्तर – सोमा बुआ के इकलौते बेटे की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण उसे अपने पति का वैराग्य भाव उसे अकेला बना देता है। सोमा बुआ के पति वर्ष में केवल एक बार एक महिने के लिये घर पर आते हैं।

प्रश्न- 3. सोमा बुआ की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

उत्तर – कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ सभी लोगों के प्रति आत्मीय भाव रखती है। वह सबके काम-काज में हाथ बँटाकर प्रसन्नता अनुभव करती है।

प्रश्न- 4. ''अम्मा! आज तुम न होती तो भद्द उड़ जाती। अम्मा, तुमने लाज रख ली।'' वाक्य किसने, किससे कहा?

उत्तर – उपर्युक्त वाक्य किशोरीलाल ने सोमा बुआ से कहे।

प्रश्न- 5. सोमा बुआ बिना बुलाये किसके घर मुण्डन कार्यक्रम में चली जाती है?

उत्तर – सोमा बुआ चौक वाले किशोरीलाल के बेटे के मुण्डन में बिना बुलाए चली जाती है।

प्रश्न- 6. सोमा बुआ के पति साल में एक बार अपने घर पर क्यों आते थे?

उत्तर – उन्हें अपने इकलौते पुत्र की असामयिक मृत्यु के कारण वैराग्य भाव जाग्रत हो गया था तो वे हरिद्वार में जाकर रहने लगे, केवल एक साल मे एक माह के लिये ही घर पर आते थे। घर की खैर-खबर लेने के लिए।

प्रश्न- 7. 'अकेली' कहानी में सोमा बुआ को किसका इन्तजार रहता है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'अकेली' में सोमा बुआ को अपने देवर के श्वसुराल वालों के घर से वैवाहिक कार्यक्रम में बुलावे का इन्तजार होता है।

प्रश्न- 8. प्रस्तुत कहानी 'अकेली' की मुख्य पात्र का परिचय दीजिये।

उत्तर – 'अकेली' कहानी की मुख्य पात्र बुआ का नाम सोमा है, वह अपने पुत्र की असामयिक मृत्यु और पति के संन्यासी हो जाने के कारण 'अकेली' के नाम से जानी जाती है।

प्रश्न- 9. ''मैं तो मरद वाली होकर भी बे-मरद की हूँ।'' सोमा बुआ के इस कथन में कौन-सा भाव निहित है?

उत्तर – सोमा बुआ के उक्त कथन में नारी वेदना, निराशा और संताप का भाव निहित है।

प्रश्न- 10. ''हैं बुआ! नाम है। मैं तो सारी लिस्ट देखकर आई हूँ।'' उक्त कथन किसने, किस समय कहा?

उत्तर – उपर्युक्त कथन विधवा ननद ने उस समय कहा था, जब सोमा बुआ को अपने स्वर्गीय देवर के श्वसुराल वालों के घर से निमंत्रण आने-न आने की आशंका होने लगी।

प्रश्न- 11. सोमा बुआ ने अपने इकलौते पुत्र की एक मात्र निशानी के बदले क्या लाने की पेशकश की थी?

उत्तर – सोमा बुआ ने अँगूठी के बदले में विवाह कार्यक्रम में देने के लिये उपहार लाने की पेशकश की गई थी।

प्रश्न- 12. राधा भाभी ने सोमा बुआ को बाजार से लाकर क्या दिया?

उत्तर – राधा भाभी ने सोमा बुआ को उपहार स्वरूप देने के लिये चाँदी की सिन्दूरदानी, एक साड़ी और एक ब्लाउज का कपड़ा लाकर दिया था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न-13. सोमा बुआ के पति संन्यासी दवे ने अनेक बार अपनी पत्नी को क्या चेतावनी दी थी?

उत्तर – संन्यासी दवे ने अपनी पत्नी को चेतावनी देते हुए कहा कि कोई बुलाने नहीं आये तो चली मत जाना वरना ठीक नहीं होगा।

प्रश्न-14. ''पर सात कैसे बज सकते हैं, महूरत तो पाँच बजे का था।'' किस भाव से यह कथन, किसके द्वारा कहा गया?

उत्तर – सोमा बुआ ने बुलावा आने की उत्सुकता वश उक्त कथन चौंककर कहा था।

प्रश्न-15. सोमा बुआ कैसे व्यक्तित्व वाली महिला थी?

उत्तर – 'अकेली' कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ सभी पर सहज विश्वास करने वाली, अभाव ग्रस्त, एकाकीपन से अभिशप्त, निराशा से ग्रस्त, लोकाचार का ज्ञान रखने वाली सरल स्वभाव की महिला थी।

12.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. 'सोमा बुआ को किन-किन चारित्रिक विशेषताओं से युक्त महिला बताकर कहानीकार मन्नू भण्डारी ने अपनी उत्कृष्ट कहानी में मुख्य पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'अकेली' मन्नू भण्डारी द्वारा रचित एक उत्कृष्ट कहानी है। पात्र योजना की दृष्टि से कहानी की मुख्य-पात्र सोमा बुआ को अनेक चारित्रिक विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया गया है –

1. एकाकी जीवन – सोमा बुआ का जीवन एकाकी है। उसका इकलौता पुत्र हरखू असामयिक मृत्यु का शिकार हो जाता है जिसके कारण उनके पति देव तीर्थवासी संन्यासी बन जाते हैं। वे वर्ष में एक बार केवल एक माह के लिये घर आते हैं। सोमा बुआ अकेली ही जीवन की यात्रा का सफर तय करती है।

2. आत्मीयता से युक्त – सोमा बुआ सबके साथ आत्मीयता की भावना रखती है। पास-पड़ोस में सबसे स्नेह-पूर्ण व्यवहार रखती है।

3. सहयोग की भावना – सहयोग की भावना को सोमा बुआ अपना सामाजिक व मानवीय धर्म समझती है। आस-पड़ौस में आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रमों में वह मुक्त हृदय से सहयोग करती है।

4. प्रसन्न चित्त – यद्यपि सोमा बुआ नारी वेदना व संताप से ग्रसित रहती है किन्तु वह प्रसन्न भाव से अपनी जीवन-चर्या का निर्वाह करती है, उनके इस व्यवहार से सभी खुश रहते हैं।

5. मानसिक संताप – सोमा बुआ का इकलौता पुत्र हरखू असामयिक मृत्यु की भेंट चढ़ जाता है। पुत्र शोक से संतप्त एक माँ जीवन भर मानसिक संताप की तपिश को सहने करती है।

6. सहज स्वभाव – 'अकेली' कहानी की पात्र सहज व सरल स्वभाव वाली सोमा बुआ है, वह हर किसी पर आसानी से विश्वास कर लेती है।

7. मान-अपमान की भावना से रहित – सोमा बुआ के मन में किसी प्रकार के मान-अपमान की भावना नहीं रहती है। हर किसी के काम-काज में बिना बुलाए पहुँच जाने को वह अपनापन समझती है।

8. लोकाचार का ज्ञान रखने वाली – सोमा बुआ जीवन भर समाज में सभी ऊँच-नीच व मान-मर्यादा को देखती आई हैं। वे लोकाचार के महत्त्व को भली प्रकार समझने वाली अच्छी सामाजिक महिला हैं।

अतः मन्नू भण्डारी की अकेली सोमा बुआ का चरित्र मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण है।

प्रश्न-2. ''सोमा बुआ के जीवन की अबाध गति से बहती स्वच्छन्द धारा उसके पति के आगमन से अवरुद्ध हो जाती थी।'' कथन के आधार पर सोमा बुआ के जीवन की विडम्बना को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – सोमा बुआ का अपना एक इकलौता पुत्र अचानक असामयिक मौत मारा गया जिससे उसकी ममत्व युक्त गोद हमेशा-हमेशा के लिये सूनी हो गई। इस पुत्र शोक को सोमा बुआ के पति देव भी सहन नहीं कर पाये ओर वे भी तीर्थवासी संन्यासी बन गये और हरिद्वार में रहने लगे। पुत्र वियोग और पति की दूरी दोनों ने सोमा बुआ को 'अकेली' नाम दे दिया। सन्यासी पति वर्ष में एक बार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सोमा की ख़ैर-ख़बर लेने अपने घर पर आते हैं। जवानी ढल जाने और निरन्तर अकेली रहने के कारण सोमा बुआ का अपने पति से कोई दैहिक लगाव नहीं रहता है। इसलिये उसे उनके आगमन की कोई प्रतीक्षा व उमंग नहीं रहती है। वह पति के आ जाने पर भी निःसंग भाव से अपना जीवन व्यतीत करती है। किन्तु सोमा बुआ संन्यासी देव के आगमन पर एक गृहस्थ नारी का जीवन व्यतीत करने लगती है। पति के न रहने पर वह स्वच्छन्द रहती है और उनके आगमन पर आजादी समाप्त हो जाती है। सोमा बुआ के जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि वह एकाकी, संतप्त और अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करती है और जब उसके पति एक महिने के लिये घर आते हैं तब जहाँ उसे प्रसन्नता और पूर्णता से जीवनचर्या पूर्ण करनी चाहिये वहीं उसका मन उनके आ जाने से मुरझा जाता है क्योंकि उसके पति का व्यवहार स्नेहपूर्ण नहीं था। वे उसके रोज़मर्रा के काम में विघ्न डालते थे और उसे कटु शब्दों में उलटा-सीधा सुनाते थे। एक प्रकार से सोमा बुआ के जीवन की अबाध गति से बहने वाली स्वच्छन्द धारा उसके पति के आगमन से अवरूद्ध हो जाती है। इस प्रकार पति के रहते उसका घूमना-फिरना और लोगों से मिलना-जुलना एक दम बन्द हो जाता है।

12.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. "मन्नू भण्डारी की 'अकेली' कहानी में कहानी के सभी तत्त्वों का पूरा निर्वाह हुआ है।" विवेचना कीजिये।

अथवा

कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'अकेली' कहानी की समालोचना कीजिये।

उत्तर—नारी जगत की व्यथाओं का कथात्मक चित्रण करने वाली कुशल चितेरी मन्नू भण्डारी आधुनिक कहानीकारों व उपन्यासकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इनकी कहानियों में मनोविश्लेषण के साथ-साथ भावात्मक आवेग का भी प्रखर चित्रण किया गया है। इनकी कहानियों में स्त्री-पुरुषों के प्रेम सम्बन्धों, विषादपूर्ण स्थितियों तथा जटिल गुत्थियों का विवेचन दिखाई देता है।

अकेली—प्रस्तुत कहानी 'अकेली' इनकी अत्यन्त उत्कृष्ट, पूर्णतः सफल एवं सुप्रसिद्ध रचना है। यह कहानी एक ऐसी महिला की मर्मस्पर्शी कहानी है, जो मानसिक संताप से ग्रस्त है। तनहा जीवन व्यतीत करने वाली वृद्धा अनेक प्रकार के अभावों से युक्त है जो अत्यन्त सरल स्वभाव और सहज विश्वास कर लेने वाली सामाजिक प्राणी है। मन्नू भण्डारी ने 'अकेली' की मुख्य पात्र के समग्र जीवन की वास्तविक स्थिति का अत्यंत रोचक व मार्मिक ढंग से चित्रण किया है।

'अकेली' की समालोचना

समालोचना किसी भी कृति का वह दर्पण है जिसमें उसके वास्तविक रूप का वास्तविक प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। किसी भी कहानी की समालोचना उसके तत्त्वों के आधार पर की जाती है। तत्त्व कहानी को आकार प्रदान करते हैं। प्रस्तुत कहानी 'अकेली' की समालोचना कहानी के निम्नलिखित तत्त्वों के आधार पर की जा सकती है—

1. कथानक—यदि किसी कहानी के कथानक में मौलिकता न हो, आकर्षण न हो, रोचकता न हो अथवा संभाव्यता का गुण न हो तो वह कथानक कहानी को सौन्दर्ययुक्त आकार देने में असमर्थ रहता है। प्रस्तुत कहानी 'अकेली' में एक ऐसी सरल, सात्विक महिला का जीवन चित्रित किया है जो एक नारी संवेदनाओं से युक्त तन्हाई, मजबूरी और मिलनसार स्वभाव की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। इस कहानी का प्रारम्भ अत्यन्त मार्मिक व जिज्ञासावर्धक है। कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ का अपना एक इकलौता पुत्र हरखू जवान उम्र में ही मौत के क्रूर हाथों से छीन लिया गया। उसके पति तीर्थवासी सन्यासी बन गये जो वर्ष में ग्यारह महिने हरिद्वार रहते हैं और जब कभी आते भी हैं तो अपनी पत्नी से प्रेम-पूर्वक बात भी नहीं कर पाते हैं बल्कि कटु भाषा में हमेशा डाँटते रहते हैं। सोमा बुआ के मन में वैवाहिक जीवन की कोई उमंग नहीं रह जाती है। पुत्र वियोग में वह अपने जीवन का बीस वर्ष का रास्ता तन्हा-तन्हा तय कर जाती है। वह अपने एकाकी पन को दूर करने के लिये आस-पड़ोस के सभी लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण और सहयोग भाव का सम्बन्ध बनाये रखती है। उसके मन में किसी प्रकार का मान-अपमान का भाव नहीं होता है। वह बिना बुलाये ही पड़ोसियों के सार्वजनिक आयोजनों में भाग लेती है और प्रसन्नतापूर्वक अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करती है। पतिदेव के प्रवास से लौटने पर सोमा बुआ की स्वच्छन्दता समाप्त हो जाती है। कहानी के मध्य में सोमा बुआ को जब यह पता चलता है कि उसके स्वर्गीय देवर के श्वसुराल वाले उसी के गाँव में आकर विवाह कार्यक्रम सम्पन्न कर रहे हैं तो उसे पूरा विश्वास होता है कि वे सोमा बुआ को उस आयोजन में अवश्य बुलाया जायेगा। इस भरोसे में वह दो-दिन पहले से ही तैयारी करने लग जाती है। सफेद साड़ी को स्वयं रंग से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

रंगती है, चूड़ियाँ पहनती हैं और पैसा न होने के बावजूद भी वह अपने इकलौते पुत्र की एकमात्र निशानी अँगूठी को बेचकर के उपहार मंगाती है। सारे दिन बेसब्री से न्यौता आने की प्रतीक्षा करती है। पाँच बजे का मुहूर्त होता है किन्तु जब सात बजे तक भी बुलावा नहीं आता है तो उसका सारा उत्साह समाप्त हो जाता है। सारी उमंग रवाँ-रवाँ होकर नीरसता के वातावरण में बिखर जाती है। वह अपने आपको बड़ी मुश्किल से समझाती है। इस घटना से वह अत्यंत मायूस हो जाती है। उसकी सारी खुशी मार्मिक निराशा में बदल जाती है। अत: इस कहानी का कथानक अत्यंत रोचक और सार्थक है।

2. पात्र योजना – प्रस्तुत कहानी में कहानीकार मन्नू भण्डारी ने पात्र-योजना कथानक के अनुकूल तैयार की है। इस कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ है। और इसके एकाकी जीवन की इस कहानी का शीर्षक निर्धारित किया गया है। अन्य पात्रों में उसका तीर्थ प्रवासी पति, राधा और विधवा ननद है। कहानीकार ने सोमा बुआ के चरित्र को ही सर्वाधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वह पति के होते हुए भी अकेली जिन्दगी बसर करती है। सोमा बुआ अत्यन्त मिलनसार व सहयोगी प्रवृत्ति की है। वह दूसरों की बातों का सहज विश्वास करने लगती है। अपने पति की प्रताड़ना से व्यथित रहती है, वह रोती रहती है। वह अपने एकाकी जीवन से व्यथित स्थिति से मुक्ति पाने के लिये सदैव सामाजिक परिवेश में जुड़कर रहना चाहती है इसलिये वह सार्वजनिक आयोजनों में बिना बुलाये प्रेम पूर्वक शामिल होती है। यद्यपि उसका पति इस व्यवहार का खण्डन करते हैं फिर भी वह उनके चले जाने पर स्वतंत्रता पूर्वक आयोजन-प्रयोजनों में भाग लेती रहती है और वहाँ पर घर की तरह से प्रसन्नता पूर्वक काम करती रहती है। स्वर्गीय देवर की श्वसुराल वालों के घर शादी का समाचार सुनकर वह बहुत प्रसन्न होती है और वहाँ जाने के लिये पूरी तैयारी करती है किन्तु अन्त में जब उसे नहीं बुलाया जाता है तो वह निराश और दु:खी हो जाती है। अत: इस कहानी में पात्र के रूप में अकेली (सोमा बुआ) का चरित्र-चित्रण अत्यंत रोचक ढ़ंग से किया गया है। अन्य पात्रों का चारित्रिक विकास भी उसी के स्वभाव के अनुसार दर्शाया गया है।

3. कथोपकथन – यदि किसी कहानी का संवाद या कथोपकथन कथानक को गति प्रदान करने या नाटकीयता लाने या पात्रों के चरित्र की विशेषताओं को उद्घाटित करने में सक्षम नहीं है तो वह कहानी भी सफल कहानी नहीं कही जा सकेगी। अच्छे संवादों के द्वारा ही कथानक की शीघ्रता में विकास संभव है। प्रस्तुत कहानी इस दृष्टि से काफी प्रभावशाली रही है। इसमें नाटकों की तरह लम्बे संवाद हैं, किन्तु उनमें पात्र की मनोदशा का सहज उद्घाटन हुआ है। कुछ संवाद छोटे भी हैं, यथा –

''नहीं रे राधा ! समधियों का मामला ठहरा। पच्चीस बरस हो गये तो वे नहीं भूले और मैं खाली हाथ जाऊँ? नहीं-नहीं, इससे तो न जाऊँ सो अच्छा।''

''तो जाओ ही मत। चलो छुट्टी हुई, इतने लोगों में किसे पता चलेगा कि आई या नहीं।'' राधा ने सीधा-सा हल बताते हुए कहा।''

''बड़ा बुरा मानेंगे। सारे शहर के लोग आएँगे और मैं समधिन होकर न जाऊँ तो यही समझेंगे कि देवरजी मरे तो सम्बन्ध ही तोड़ दिया। नहीं-नहीं तू यह अंगूठी बेच दे।''

प्रस्तुत कहानी में सोमा बुआ के संवाद उसके अन्तर्द्वन्द्व को व्यक्त करते हैं।

'क्या जाने हमारे घर को बुलावा आयेगा कि नहीं? देवर जी को मरे पच्चीस बरस बीत गये। इसके बाद से तो कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा। रखे भी कौन? यह काम तो मरदों का है। मैं तो मरद वाली होकर भी बे-मरद जैसी हूँ।'' और ठंडी साँस उसके दिल से निकल गई।

''अरे वाह बुआ ! तुम्हारा नाम कैसे नहीं हो सकता, तुम तो समधिन ठहरी। सम्बन्ध में व्यक्ति न रहे तो कोई रिश्ता थोड़े ही टूट जाता है।'' दाल पीसती हुई घर की बड़ी बहु बोली।

''है बुआ ! नाम है। मैं तो सारी लिस्ट देखकर आई हूँ।'' विधवा ननद बोली।

अपने पति के साथ हुए संवाद उसकी मानसिक विवशता को बताते हैं।

4. देशकाल तथा वातावरण – कहानी के गुणों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह भी होती है कि उसमें स्थान या काल का समुचित समावेश होना चाहिये और उस परिवेश का पूरा ध्यान रखना जाना चाहिये। प्रस्तुत कहानी 'अकेली' में लेखिका ने समकालीन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वातावरण का विशेष ध्यान रखा है। ऐसे व्यक्ति और ऐसी घटनाएँ हमारे समाज में अक्सर मिल जाया करती हैं। प्रमुख चरित्र सोमा बुआ के जीवन की समुचित घटनाओं की ओर कहानीकार ने हमारा ध्यान आकर्षित कराया है और देशकाल या वातावरण का उचित निर्वाह किया है। पर्याप्त रोचकता और स्वाभाविकता का समावेश करते हुए निम्न-मध्यवर्गीय समाज के वास्तविक रूप को स्पष्ट किया गया है।

5. भाषा-शैली – भाषा-शैली के प्रयोग से ही कथानक के उद्देश्य की अभिव्यक्ति होती है और इसी से पात्रों का चारित्रिक विकास होता है। प्रस्तुत कहानी 'अकेली' में कहानीकार मन्नू भण्डारी ने कथानक और देशकाल के अनुरूप ही भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है। पात्रों के स्तर की शब्द-शैली का प्रयोग किया गया है। पात्रों के स्तर की शब्द-शैली प्रयुक्त की गई है। इस कहानी की भाषा सरल, रोचक और भावानुकूल है तथा शैली वर्णनात्मक, भावात्मक और मनोविश्लेषणात्मक है। पात्रों के मनोभावों और उनके परिवेश के अनुरूप वाक्य-रचना की गई है। लोक प्रचलित सूक्त कथन जैसे वाक्य भी इस कहानी में प्रयुक्त किये गये हैं। अत: भाषा-शैली की दृष्टि से कहानी प्रचुर सफल रही है।

5. शीर्षक या नामकरण – शीर्षक जितना संक्षिप्त व सार गर्भित होगा कहानी का आकर्षण उतना ही अधिक होगा। केन्द्रीय भावों की अभिव्यक्ति का एक महत्त्वपूर्ण गुण रचना का नामकरण या शीर्षक ही होता है। प्रस्तुत कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ यद्यपि एक सुहागिन है, उसका पति है किन्तु वह पुत्र शोक की असहनीय परिस्थितिवश संन्यास ग्रहण कर तीर्थ प्रवासी हो जाता है और वह वर्ष भर में मात्र एक माह के लिये ही अपनी पत्नी के पास आता है, किन्तु सोमा बुआ के मन में पति के प्रवास से आगमन की न तो कोई प्रसन्नता होती है और न किसी प्रकार की उमंग रहती है। उम्र ढल जाने के कारण सोमा के मन में वैवाहिक दैहिक कामना भी समाप्त हो जाती है। यहाँ तक कि वह अपने पति के आगमन से परेशान और हो जाती है। क्योंकि वह जब आता है तो सोमा की सारी स्वच्छन्दता परवशता में बदल जाती है। उसका एक पुत्र हरखू था जो असमय ही काल के क्रूर हाथों द्वारा हमेशा-हमेशा के लिये अपनी माँ की गोद को सूना कर ईश्वर के पास चला गया। अब वह बीस वर्षों से 'अकेली' इस समाज में अपना सादगी और असहयोग से युक्त जीवन व्यतीत कर रही है। इसी व्यथा के इस मर्म को ही लेखिका ने इस कहानी का शीर्षक बनाया है जो पाठक के मन को आकर्षित करने में पूर्णत: सफल रहा है। कहानी का यह शीर्षक रोचक और संक्षिप्त भी है। साथ ही एक अजीब-सा कौतुहल पैदा करने वाला भी है।

7. उद्देश्य – प्रत्येक कहानी का अपना अलग और स्वतंत्र उद्देश्य होता है, उद्देश्य विहीन कहानी का अपना कोई वजूद नहीं होता है। उद्देश्य को ही कहानी की मूल संवेदना कहते हैं। प्रस्तुत कहानी एक ऐसी असहाय और तनहा स्त्री की मार्मिक व्यथा है जो पति के होते हुए भी एकाकी और अभावग्रस्त जीवन बिताने के लिये मजबूर है। वह अपने इस एकाकीपन को दूर करने के लिये मोहल्ले की प्रत्येक सामाजिक गतिविधियों में प्रसन्नता पूर्वक भाग लेती है। सभी से समान आत्मीयता व प्रेम का सहयोगी भाव रखती है। अन्य लोग उसके इस स्वभाव का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं और जब घर में कोई काम पड़ता है तो उसे काम करने के लिये बुला लेते हैं। कई जगह तो वह बिना बुलाए चली जाती है और अपनापन दिखाती हुई प्रसन्नता व्यक्त करती है। वह मानसिक संताप से बहुत ज्यादा त्रस्त है। जवान बेटे की असामयिक मौत और पति का संन्यासी बन जाना दोनों ही नारी मन की एक मार्मिक संवेदना है। प्रस्तुत कहानी में सोमा बुआ के इसी व्यक्तित्व का समुचित चित्रण किया गया है। यही इस कहानी की मूल संवेदना या उद्देश्य या प्रतिपाद्य है।

12.6 सारांश

प्रस्तुत समालोचनात्मक विवेचना से हम यह कह सकते हैं कि नारी संवेदनाओं की प्रतिनिधि लेखिका मन्नू भण्डारी ने प्रस्तुत कहानी 'अकेली' में कहानी के सम्पूर्ण तत्त्वों का बड़ी कुशलता से निर्वाह किया है। उपर्युक्त सभी विशेषताओं के आधार पर यह रचना श्रेष्ठ सिद्ध होती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई-13 : भीष्म साहनी

संरचना

13.0 प्रस्तावना

13.1 उद्देश्य

13.2 परिचय

13.3 झुटपुटा

13.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

13.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

13.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

13.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

13.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

13.6 सारांश

13.0 प्रस्तावना

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता बलराज साहनी के अनुज, मध्यवर्गीय कथा-सृष्टि के चतुर चितेरे, साम्यवादी विचारक और समकालीन हिन्दी कथाकारों में शीर्षस्थ डॉ. भीष्म साहनी का जन्म 1915ई. में रावलपिण्डी में हुआ। देश विभाजन से पूर्व इन्होंने कुछ समय व्यापार किया और साथ ही मानद अध्यापन भी किया। विभाजन के पश्चात् पत्रकारिता 'इप्टा' नामक मण्डली में काम करते हुए अम्बाला और अमृतसर में अध्यापन सेवा में निरत रहे। लाहौर के राजकीय महाविद्यालय में इन्होंने अंग्रेजी विद्यालय से अपने पी-एच.डी. के सम्मान को प्राप्त किया। आप लगभग सात साल तक मास्को में भी रहे, जहाँ रूसी रचनाओं का हिन्दी अनुवाद किया तथा ढाई वर्ष तक 'नई कहानियाँ' का सौजन्य सम्पादन भी किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली कॉलेज में एक लम्बे सोपान को अध्यापन कार्य में लगाया। सेवानिवृत्ति के पश्चात् डॉ. साहनी प्रगतिशील लेखक संघ और अफ्रो एशियाई लेखक संघ से घनिष्ट ताल्लुक रखते हैं। आस्था की दृष्टि में ये साम्यवादी विचारक हैं किन्तु यह धारणा इनकी रचनाओं में संवेदना के स्तर पर उभर कर प्रभावी रूप से सामने आती है। आपकी कथा सृष्टि का मुख्य केन्द्र मध्य वर्ग रहा है। छोटे छोटे पारिवारिक संदर्भ, मध्य वर्ग का दोहरापन, सामाजिक बदलाव की प्रतिक्रियाएँ इनकी कहानी को अत्यन्त आत्मीय बनाती हैं। सहजता ही इनकी कहानी की सबसे बड़ी कला है।

13.1 उद्देश्य

यहाँ हम भीष्म साहनी एवं उनकी कहानी झुटपुटा के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

13.2 परिचय

डॉ. साहनी की प्रमुख रचनाओं में 'शोभायात्रा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख', 'भाग्य रेखा', 'निशाचर', 'पाली', पटरियाँ आदि प्रमुख कहानी संग्रह हैं। 'तमस', 'बसंती', 'भैया दास की नाड़ी', 'झरोखे', 'कड़ियाँ' प्रसिद्ध उपन्यास रहे हैं। कबिरा खड़ा बाजार में माधवी, हानुश इनके प्रमुख नाटक हैं। बालोपयोगी कहानी संग्रह में 'गुलेल का खेल' प्रमुख है। भारत विभाजन की त्रासदी पर रचित उपन्यास 'तमस' पर डॉ. साहनी को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ है।

माता-विमाता, अपने-अपने बच्चे, कुछ और साल, 'चीफ की दावत आदि कहानियाँ कहानी जगत की उत्कृष्ट मानी जाती हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

13.3 झुटपुटा

संवेदना के स्तर पर हिन्दू और सिख समुदाय के बीच हमारे समय में बने नवीन सम्बन्धों को रेखांकित करने वाली कहानी 'झुटपुटा' डॉ. भीष्म साहनी की नवीनतम कहानियों में से एक है। सम्बन्धों की दृष्टि में हिन्दू और सिख बहुत घनिष्ट हैं। इनका विस्तृत फैलाव काफी पीछे तक जाता है, इस बात का इतिहास चश्मदीद गवाह है। नवीन वस्तुस्थितियों से ऊपरी तौर पर इन सम्बन्धों में प्रचलन तो दिखाई देता है कि आन्तरिक घनिष्टता आज भी कायम है। प्रस्तुत कहानी में डॉ. साहनी का यही अभिप्राय है।

प्रस्तुत कहानी में यह बात खुलकर कही गई है कि हिन्दू और सिख दोनों समुदाय एक दूसरे से इतने घनिष्ट हैं कि इनमें अन्तर कर पाना अत्यंत कठिन है किन्तु वर्तमान में कुछ परिस्थितियाँ ऐसी उभरती जा रही हैं कि इन दोनों समुदायों में कुछ तनाव रहने लगा है। उपद्रव जैसे मौके पर स्वार्थी लोग इस तनाव को और अधिक बढ़ा देते हैं। प्रस्तुत कहानी का मुख्य नायक प्रो. कन्हैयालाल दिल्ली के एक दूध के बूथ पर लाइन में खड़ा हुआ दूध आने की प्रतीक्षा कर रहा है। अचानक उपद्रव और आगजनी के कारण दो दिन बाद दूध मिलने की संभावना बनी है। कुछ घटनाएँ तो कल घटित हुई थीं वे प्रो. कन्हैयालाल को याद हैं और कुछ बूथ के बाहर घट रही हैं। इन सबका संयोजन कहानीकार के द्वारा इस ढंग से किया जाता है कि उनका अहसास मजबूत हो जाता है कि कुछ निहित स्वार्थी दंगाइयों की कोशिशों के बावजूद हिन्दू और सिख समुदाय के सम्बन्ध इतने पुराने हैं कि उन्हें कमजोर कर तोड़ना असंभव लगता है। प्रस्तुत कहानी का अंत इन सम्बंधों की घनिष्टता को जैसे एकाएक प्रकाशवृत्त में लाकर खड़ा कर देता है। कुछ लोग बातचीत में यह संकेत देते हैं कि दूध लाने वाली सभी लारियों के ड्राइवर सिख हैं और खतरे के कारण उनको दूध लेकर भेजना संभव नहीं है। किन्तु अचानक एक ड्राइवर तमाम खतरों को झेलकर एक लारी बूथ के बाहर लाकर खड़ी कर देता है। जब उस ड्राइवर से यह पूछा गया कि ''सरदार जी, आप कैसे.....?'' तो मुझकराकर वह जवाब देता है कि ''आए! बीबी बच्चों ने दूध तो पीना है ना! मैंने कहा, चल मना, देखा जायेगा जो होगा। दूध तो पहुँचा आये।'' इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दू व सिख समुदाय की घनिष्टता इन छुट-पुट घटनाओं से कभी कम नहीं होगी।

13.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

''कल की तो बात ही दूसरी थी। कल तो लूट-पाट और आगजनी की घटनाएँ घटती रही थी। इस समय प्रभात का झुटपुटा था और कल की घटनाओं के अवशेष साफ़-साफ दिखाई नहीं पड़ रहे थे। बूथ से थोड़ा हट कर एन चौराहे के बिल्कुल बीचों-बीच एक जली हुई मोटर का काला-सा कंकाल पड़ा हुआ था। जलाने वाले उसे आग लगाते समय दाँये बाजू उल्टा कर गये थे, जिससे वह और भी अधिक कुरूप व भयावह नज़र आ रहा था। सड़क के पार दवाइयों की दूकान के भी अस्थि-पंजर नजर आ रहे थे। इस समय वह दूकान काली खोह जैसी नज़र आ रही थी। साइन बोर्ड का एक सिरा टूटकर नीचे की ओर लटक रहा था, अन्दर टूटी-फूटी अलमारियाँ मलबे का ढेर जैसी लग रही थीं। बड़ा अटपटा लग रहा था। भला कोई दवाइयों को भी लूटता है।''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के डॉ. भीष्म साहनी द्वारा रचित कहानी 'झुटपुटा' पाठ से अवतरित है जिसमें हिन्दू-सिख समुदाय के ऐतिहासिक सम्बन्धों के साथ ही वर्तमान नवीन सम्बन्धों को रेखांकित किया गया है। दिल्ली में उपद्रव हो जाने पर कई सिखों की दुकानें लूट ली गई, कई आगजनी में भस्मसात हो गई। एक दिन बाद सुबह के झुटपुटे में अधिकतर लोग दूध की बूथ पर कतारबद्ध खड़े हुए दिखाई दिये।

व्याख्या – कहानीकार भीष्म साहनी दंगे-फसाद के समय के दूसरे दिन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उस समय झुटपुटा समय था अर्थात् भोर का हल्का अंधकार था, उत्तरोत्तर दिन के प्रकाश में वृद्धि हो रही यद्यपि उस झुटपुटे समय में बीते दिन हुई घटना के अवशेष सस्पष्ट दिखाई नहीं दे रहे थे, किन्तु वातावरण की नीरवता इस तथ्य को स्पष्ट कर रही थी कि यहाँ पर कुछ-न-कुछ अनहोनी अवश्य हुई है। दूध के बूथ के सामने चौराहे के ठीक बीचों-बीच एक मोटर का जला हुआ अवशेष काले कंकाल की तरह लग रहा था। जिन लोगों ने उसे जलाया था, उस मोटर के दाहिने हिस्से को उल्टा कर उसमें आग लगाई थी इसलिये उस मोटर का काला कंकाल आड़ा-तिरछा पड़ा हुआ था जो कि कुछ ज्यादा ही भयानक सा लग रहा था। उपद्रवियों ने सड़क के पास

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वाली दवाइयों की दूकान को भी जला दिया था। उसके अधजले भाग साफ दिखाई दे रहे थे। आग लगने के कारण सारी दूकान काली पड़ गई थी जो भयानक लग रही थी। इस दूकान का साइन-बोर्ड का एक सिरा टूट कर नीचे की ओर लटक रहा था और दूकान के अन्दर की ओर टूटी-फूटी अलमारियाँ मलबे के ढेर की तरह दिखाई दे रही थीं। दस दवाई की दुकान को दंगाइयों ने जमकर लूटा था और अन्त में आग लगा दी थी। कहानीकार डॉ. साहनी कहानी नायक के शब्दों में कहते हैं लूट-पाट व आगजनी के बाद का दृश्य झुटे-पुटे समय में बड़ा अजीब लग रहा था।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में उपद्रवियों के द्वारा किये जाने वाले नुकसान का वर्णन किया गया है।

2. झुटपुटे समय में आगजनी के बाद के दृश्य का अटपटापन चित्रित किया है।

3. भाषा-शैली सरल, प्रतीकात्मक व अलंकृत है तथा प्रतीकात्मक एवं वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

(2)

''और फिर उसके मस्तिष्क में जैसे जड़ता-सी आ गई थी। इससे अधिक उसकी प्रतिक्रिया नहीं हुई। उसे भी लगा जैसे वह यन्त्रवत्-सा उस दृश्य को देखे जा रहा था। प्रो. कन्हैयालाल ने पहले भी आग के उठते हुए शोले देखे थे, यहाँ तक कि ऐसे शोले, जिनसे आधा आसमान लाल हो उठे। बाद में वह उनको याद करके आंतकित भी महसूस किया करता था, पर इस वक्त तो उसके जड़ मस्तिष्क में एक ही बात बार-बार उठ रही थी कि दिन को लगाई गई आग में दहशत नहीं होती, जबकि रात के वक्त लगाई गई आग बड़ी भयानक नज़र आती है। दिन की आग व रात की आग में बड़ा अन्तर होता है।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की भीष्म साहनी द्वारा विरचित कहानी 'झुटपुटा' से अवतरित है जिसमें बताया है कि यत्र-तत्र आगजनी की हृदय विदारक घटनाओं के दृश्यों को देखकर कहानी नायक प्रो. कन्हैयालाल की मानसिकता स्तब्ध हो गई थी।

व्याख्या – जब कहानी नायक प्रो. कन्हैयालाल ने आगजनी से उत्पन्न धुँआ को देखा तो उनका दिल धड़क रहा था और उनके सोचने-समझने की स्थिति स्थिर सी हो गई थी और उनके मस्तिष्क में किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह तो एकटक उस ज्वलन्त दृश्य को देखता रहा। वैसे तो प्रोफेसर साहब ने इससे पहले भी कई बार आगजनी के ऐसे-ऐसे दृश्य देखे हैं कि जिसकी ज्वाला से आसमान का रंग ही लाल हो उठता था जिसकी कल्पना कर के वह आतंकित भी हो उठे थे। प्रो. साहब के मस्तिष्क में तो उस समय एक ही बात बार-बार उठ रही थी दिन में लगने वाली आग और रात में लगने वाली आग में बहुत अन्तर होता है। दिन में लगाई जाने वाली आग में दहशत नहीं होती है और रात में लगाई जाने वाली आग में कुछ ज्यादा ही दहशत होती है। वह अधिक भयानक दिखाई देती है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दिल्ली शहर में हुए अग्निकाण्ड के दृश्य की व्यंजना करते हुए उसकी दहशत को स्पष्ट किया गया है।

2. उपद्रवियों द्वारा की गई आगजनी की भयानकता की व्यंजना की गई है।

3. भाषा सरल व अभिव्यंजक तथा विवेचनात्मक है।

(3)

''उसे लगने लगा था जैसे कुछ है, जो पकड़ में नहीं आ रहा है, जो हाथों से छूटता जा रहा है, कहीं कुछ फूट पड़ा है जो काबू में नहीं आ रहा है। तभी वह चुपचाप और लोगों के तर्क सुनने लगा था, सभी पक्षों के, सभी मतों को सुनता रहता और केवल सिर हिला कर रह जाता। उसकी अवधारणा कहीं जमने भी लगती तो तर्क-कुतर्क के एक ही थपेड़े में वह बालू के रेत की भीत की तरह ढह जाती थी।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'झुटपुटा' शीर्षक कहानी से अवतरित है जिसके कहानीकार भीष्म साहनी हैं। प्रस्तुत अंश में कहानी नायक प्रो. कन्हैयालाल की मन:स्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या – कहानी नायक ने इस विप्लव को आज से पहले भी मानव समाज में कई बार नृत्य करते हुए देख लिया था किन्तु इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह अपने विचारों में कई बार यह सोचता था कि इन सब के जिम्मेदार कौन हैं और कौन सही व कौन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

गलत है? वह प्रयास भी करता था। किन्तु धीरे-धीरे उसके मन में कुछ रिक्तता सी आने लगी थी और उसे लगने लगा था कि जैसे कुछ-न-कुछ कारण तो है जो सोच की गिरफ्त से छूटता जा रहा है। हम उसे चाहते हुए भी नहीं पकड़ पा रहे हैं। कोई-न-कोई विकार या भावनाओं अथवा इच्छाओं का आवेग है जो मानव मन में फूट रहा है और अब उसकी तीव्रता काबू में नहीं आ रही है। इन्हीं अन्तर्द्वन्द्वों में वह अपने को उलझाए हुए था। उसी समय इस आगजनी व लूट-पाट की जघन्य वारदात पर उठने वाली लोक चर्चाओं को सुनने लगा, बिना कुछ बोले हुए लोगों के सम्बंधित तर्कों को जो विभिन्न विचार और मत लिये हुए था सुनता रहा। अब उसका मस्तिष्क कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं कर रहा था। वह केवल सिर हिला कर मात्र सुनता रहा। अब जब उसकी सोच स्थिरता लेने लगती है तो अलग-अलग तर्कों और विचारों के कारण वह स्थिर सोच बालू की भीत की तरह नेस्तनाबूत हो जाती और वह कोई निर्णय नहीं ले पा रहा था।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार ने विध्वंशकारी दंगे की स्थिति का चित्रण किया है।

2. प्रो. कन्हैयालाल के अन्तर्विचारों की अस्थिरता को स्पष्ट करते हुए उसकी मन:स्थिति को स्पष्ट किया है।

3. भाषा-शैली सरल व विवेचनात्मक है।

(4)

"लाइन में खड़े कन्हैयालाल को लगा, जैसे हम किसी कगार पर खड़े हुए हैं और एक झीनी, काँच की दीवार हमें गिरने से बचाये हुए है। यह काँच की दीवार चटक गई तो बचाव का कोई भी साधन नहीं रहेगा और हम सीधे किसी अथाह गर्त में जा गिरेंगे।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'झुटपुटा' शीर्षक कहानी पाठ से उद्धृत है जिसमें कहानीकार भीष्म साहनी ने लोगों के तर्क-वितर्क व दंगा-फसाद की घटना सम्बंधित अन्य सूचनाओं के बाद कहानी नायक प्रो. कन्हैयालाल की मन:स्थिति को चित्रित किया गया है।

व्याख्या – पिछले दिनों से दिल्ली शहर में चल रहे उपद्रव और सामुदायिक वैमनस्य से ऐसा लगा रहा है, मानो कि हम किसी ऐसे स्थान पर खड़े हुए हैं जहाँ पर जरा सी असावधानी हम सबके लिये घातक या विनाशकारी साबित हो सकती है। जहाँ कोई सहारा नहीं है और अगर सहारा भी है तो वह एक भावनाओं रूपी काँच की कच्ची दीवार के समान है। थोड़ा-सा भी कठोर प्रहार सहन करने में वह दीवार सक्षम नहीं है। आज हमारा समाज भावनाओं के हल्के या कमजोर सहारे से टिका हुआ है। हिन्दू और सिख समाज के इस वैमनस्य के बावजूद भी हमारा समाज इस सामुदायिक विप्लव की आग से अभी बचा हुआ है। इसका कोई-न-कोई भावनात्मक कारण अवश्य है कि एक-दूसरे में भाईचारे की भावन बनी हुई है। इस भावना की कच्ची दीवार के जरा-सी टूट जाने पर हमारे सामने ऐसा कोई साधन नहीं रह जायेगा कि हम अपने समाज के विनाश को रोक पाएँ।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में पात्र की चिन्तनशील प्रवृत्ति को स्पष्ट किया है।

2. हिन्दू-सिख समुदाय के बीच भाईचारे की भावना को बलवती बनाए रखने पर बल दिया गया है।

3. भाषा-शैली विवेचनात्मक और भावानुकूल है।

(5)

"जब आतंकवादियों द्वारा हत्याएँ हो रही थी, तब भी वह यही कहता था, जब स्वर्ण मन्दिर में फौजी कारवाई हुई तो भी उसने यही कहा था, जब इन्दिरा जी की नृशंस हत्या हुई तो भी वह यही कहता रहा और अब जब उसे राष्ट्र कगार पर खड़ा लग रहा है तो भी उसके मुँह से यही शब्द निकल रहे हैं।"

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के भीष्म साहनी द्वारा रचित कहानी 'झुटपुटा' से अवतरित है जिसमें कहानीकार ने स्पष्ट किया है कि जब दिल्ली में हिन्दू व सिक्ख समुदाय में वैमनस्य प्रारम्भ हुआ तब से कहानी नायक का मस्तिष्क चिन्तनशील हो गया है और उसे अपने आपको चेतना शून्य होने का भी आभास सा होने लगा है। कहानीकार द्वारा इस मनोदशा का वर्णन किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

व्याख्या – हिन्दू और सिख समुदाय में वैमनस्य हो जाने के कारण दिल्ली शहर में कुछ उपद्रवियों ने लूट-पाट व आगजनी जैसी घटनाओं से सामान्य जन-जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया था। इन घटनाओं को घटित होते हुए देखकर कथा नायक को ऐसा लगा कि जैसे उसे इन सबका विरोध करना चाहिये। किन्तु वह ऐसा करने में असमर्थ रहा। यद्यपि उसे इन सब वारदातों की सूचना मिलती रही लेकिन वह चाहते हुए भी किसी प्रकार की प्रतिक्रिया जाहिर नहीं कर पाया। जब दिल्ली में आतंकवादियों द्वारा देश के विभागों में अनेक निरपराधों को सरेआम मौत के घाट उतार दिया गया तब भी वह इसी बात को कहता था और जब भारत-सरकार ने स्वर्ण-मन्दिर में आतंकवादियों को नियंत्रित करने के लिये फौजी कार्यवाही की तब भी प्रो. कन्हैयालाल इसी बात को दोहराते रहे कि ''बहुत बुरा हो रहा है, बहुत बुरा.....।'' और जब आतंकवादियों की शह पर प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी की नृशंस हत्या कर दी गई तब भी कहानीकार इसी बात को दुहराता रहा। आज जब दिल्ली में लगातार कई घंटों से लूटपाट और आगजनी जैसी घटनाएँ घटित हो रही हैं। वह बस एक यही बात कह पा रहा है कि ''बहुत बुरा हो रहा है बहुत बुरा.....।'' इस प्रकार की विद्वेषपूर्ण स्थिति को देखकर कथानायक अत्यन्त चिन्ता जनक स्थिति में आ जाता है और वह अपनी मन:भावना को सही ढ़ंग से व्यक्त नहीं कर पा रहा है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानीनायक की प्रबुद्ध चेतना की निष्क्रियता पर प्रकाश डाला गया है।

2. शैली मनोविश्लेषणात्मक है।

3. भाषा सरल व प्रवाहपूर्ण है।

(6)

''शायद पिछली सड़क पर रहते हैं। सरदार केसरसिंह इनका नाम है। मोटर पार्ट्स की दूकान करते हैं और वह पिछली सड़क की ओर घूम गया।

उसे जाते देखकर कन्हैयालाल को लगा जैसे हम लोग इतिहास के झुटपुटे में रह रहे हैं। आपसी रिश्तों के इतिहास का पन्ना पलटा जा रहा है। दूसरा खुल रहा है। इस अगले पन्ने पर हमारे लिये जाने क्या लिखा होगा?''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के भीष्म साहनी द्वारा रचित कहानी 'झुटपुटा' से अवतरित है। इसमें कहानी नायक के चिन्तनशील विवेक की स्थिति का विवेचन किया गया है।

व्याख्या – कहानीकार ने स्पष्ट किया है कि जब प्रोफेसर कन्हैयालाल ने देखा कि आपसी वैमनस्य के कारण उपद्रवियों ने दिल्ली शहर में हिन्दू और सिख समुदाय की दुकानें व मकान जला दिये गये हैं और जमकर लूटपाट की गई है तो उसे अन्दरूनी झटका लगा और वह सोचने लगा कि हिन्दू और सिखों में जो भाईचारा अति प्राचीन समय से चला आ रहा है वह सम्बंध अन्य किसी भी समुदाय में दिखाई नहीं दे सकता है और इस बात का इतिहास भी गवाह है किन्तु इस उपद्रव ने कुछ समय के लिये इस ऐतिहासिक सत्य को कमज़ोर बना दिया है। अचानक उसे बूथ पर खड़े-खड़े एक परिचित आता हुआ दिखाई दिया। उसका नाम बलराम था। जब कहानीकार ने पूछा कि ऐसे अशान्त वातावरण में कहाँ जा रहे हो तो उसने कहा कि केसरसिंह सरदार के पिताजी की पुरानी मित्रता है। इस उपद्रव में उनका कोई नुकसान न हुआ हो, इसलिये मैं उनके समाचार जानने के लिये आया हूँ। हिन्दू जाति का व्यक्ति बलराम सरदार केशरसिंह से वही पुरानी मित्रता का भाव रखकर इस तनावपूर्ण माहौल में भी उनकी खैर खबर पूछने के लिये यहाँ आया है। वह कहानी नायक से बातें करके पिछली सड़क की ओर बढ़ जाता है, जहाँ पर सरदार जी की मोटर पार्ट्स की दूकान है। प्रो. कन्हैयालाल इस प्रकार की स्थिति को देखकर सोचता है कि अब हम लोग इतिहास के धुँधले वातावरण में जी रहे हैं। जहाँ एक ओर हिन्दूओं व सिक्खों के आपसी सम्बन्धों का इतिहास काफी पुराने समय से अपनी एकता की गवाही दे रहा है और दूसरी ओर आज हम देख रहे हैं कि ये दोनों वर्ग आपस में लूट-पाट व आगजनी आदि में एक-दूसरे को तबाह करने में जुटे हुए हैं। यही तो जीवन की एक विडम्बना है। इतिहास का पिछला पन्ना मैत्री और सहयोग से भरा पड़ा है और अब वर्तमान पन्ना वैमनस्य और मैत्री के सम्मिश्रण से लिखा जा रहा है, किन्तु भावी पन्ना क्या और कैसा लिखा जाएगा, यह अब कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में दिल्ली की घटना स्थिति को देखकर भावी समय की सशंकित कल्पना की गई है।

2. भाषा-शैली सरल व प्रवाहपूर्ण है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

13.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

13.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. 'झुटपुटा' कहानी में कहानीकार ने किन सामयिक सम्बन्धों की ओर संकेत किया है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में डॉ. साहनी ने हिन्दू व सिख समुदाय के वर्तमान नए सम्बंधों को स्पष्ट करने का संकेत किया है।

प्रश्न-2. डॉ. साहनी द्वारा रचित कहानी 'झुटपुटा' का केन्द्रीय भाव क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में डॉ. साहनी ने स्पष्ट किया है कि हिन्दुओं व सिखों में यह मनमुटाव व विघटन अल्प समय का दिखाई दे रहा है। यह केवल ऊपरी मन का है किन्तु आन्तरिक भाव सम्बन्धों की घनिष्टता से ओत-प्रोत है।

प्रश्न-3. 'झुटपुटा' कहानी के संदेश को अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'झुटपुटा' में कहानी के रचयिता डॉ. साहनी ने सामुदायिक सहयोग, भाईचारे व संगठित रहने का संदेश दिया है और कहा है कि हिन्दुओं व सिखों को हार्दिक मेल-मिलाप रखते हुए अच्छे भविष्य का निर्माण करना चाहिये।

प्रश्न-4. प्रस्तुत कहानी 'झुटपुटा' में किस घटना विशेष का वर्णन किया गया है?

उत्तर – 'झुटपुटा' कहानी में दिल्ली में घटित उपद्रवों, लूट-पाट व आगजनी जैसी घटनाओं का वर्णन है। यह वारदात 1984 में सामुदायिक वैमनस्य के कारण घटित हुई थी।

प्रश्न-5. प्रो. कन्हैयालाल शहर व देश में घटने वाली घटनाओं के बारे में सोचकर व देखकर क्या कहता है?

उत्तर – कन्हैयालाल इन घटनाओं को देखकर बस यही कहता है, ''च-च-च, बहुत बुरा हुआ, बहुत बुरा।

प्रश्न-6. कहानी का शीर्षक 'झुटपुटा' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर – वैसे 'झुटपुटा' शब्द से अभिप्राय उस प्रातःकालीन अथवा सायंकालीन बेला से है जब प्रकाश व अन्धकार का मिलाजुला रूप होता है किन्तु यहाँ हिन्दू व सिख समुदाय के सम्बन्धों के नवीन स्वरूप के प्रकाशावृत्त से है।

प्रश्न-7. उस समय झुटपुटा कहानी के नायक ने क्या सोचा जब उसने एक लड़की के हाथ में तीन डोलचियाँ देखी?

उत्तर – प्रो. कन्हैयालाल ने सोचा कि यदि सभी लोग इस तरह दूध की इतनी अधिक मात्रा ले लेंगे तो सभी को दूध नहीं मिल पायेगा।

प्रश्न-8. जब कहानी नायक ने लड़की से तीन-तीन डोलचियों के बारे में पूछा तो उसने क्या जवाब दिया?

उत्तर – लड़की ने कहानी नायक से कहा कि इन डोलचियो में एक हमारी है, दूसरी ऊपर वालों की व तीसरी सरदार अंकल की है।

प्रश्न-9. प्रस्तुत कहानी का पात्र बलराम राजेन्द्र नगर से यहाँ पर क्यों आया था?

उत्तर – उस मौहल्ले में बलराम के पिताजी के एक घनिष्ट दोस्त बुजुर्ग सरदारजी रहते थे। दंगे में उनकी खेर-खबर लेने के लक्ष्य से वह वहाँ पर आया था।

प्रश्न-10. दूध की लोरी लाने वाले ड्राइवर से आने का कारण पूछने पर उसने क्या जवाब दिया?

उत्तर – सिख ड्राइवर ने जवाब दिया कि, ''बाबा, बच्चों ने दूध तो पीना है ना। मैंने कहा चल मना, देखा जायेगा जो होगा, दूध तो पहुँचा आयें।''

प्रश्न-11. भीष्म साहनी द्वारा रचित 'झुटपुटा' कहानी का उद्देश्य बताइये।

उत्तर – 'झुटपुटा' कहानी के उद्देश्य में हम कह सकते हैं 'के ''हिन्दू व सिख समुदाय में वैमनस्य की भावना आने पर भी इनका मैत्री सम्बन्ध कायम रहे और आगामी समय में अतीत की भाँति नवीन आशा फलित हो।'' यही तथ्य व्यंजित किया गया है।

प्रश्न-12. ''बाबा दूध तो पीना है ना। मैंने कहा चल मना, देखा जायेगा जो होगा। दूध तो पहुँचा आयें।'' प्रस्तुत कथन में सिख ड्राइवर की कौन-सी भावना व्यक्त की है?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उत्तर – प्रस्तुत कथन में सिख ड्राइवर की बिना किसी वैमनस्य भाव के कर्त्तव्य पालन व दोनों समुदायों की आन्तरिक मैत्रीपूर्ण भावना स्पष्ट होती है।

प्रश्न-13. दूध की लॉरी में सिख ड्राइवर को देखकर सभी लोगों को आश्चर्य क्यों हुआ?

उत्तर – दिल्ली में हुए दंगों में सिखों के घरों व दूकानों में काफी नुकसान पहुँचाया गया था और सम्पूर्ण वातावरण अत्यंत संवेदनशील बना हुआ था फिर भी सिख ड्राइवर दूध की लॉरी के साथ अपनी जान बचाकर अपना मानवीय कर्त्तव्य निभाने हेतु आया था, जिसे देखकर सभी लोगों को आश्चर्य हुआ।

प्रश्न-14. 'झुटपुटा' कहानी के मुख्य पात्र की चेतना शून्य हो जाने के पीछे क्या कारण था?

उत्तर – दो दिन से हो रही आगजनी व लूट-पाट जैसी घटनाओं को देखकर वह भयभीत हो गया था और वह इन घटनाओं के भविष्य के प्रति सशंकित हो रहा था इसलिये वह चेतना शून्य हो गया था और चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाने की स्थिति में था।

प्रश्न-15. 'झुटपुटा' कहानी के रचयिता का नाम क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'झुटपुटा' के रचयिता डॉ. भीष्म साहनी हैं।

13.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. डॉ. भीष्म सहानी का सामान्य जीवन-परिचय देते हुए इनकी कहानी शिल्प पर टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – डॉ. भीष्म साहनी का जन्म सन् 1915ई. में रावलपिण्डी में हुआ था। उनकी शिक्षा में एम.ए. अंग्रेजी लाहौर से और पंजाब विश्वविद्यालय से डाक्टरेट (पी-एच.डी.) की उपाधि प्राप्त की। डॉ. साहनी ने कुछ समय 'नई कहानियाँ' में सम्पादन का कार्य किया और दिल्ली कॉलेज दिल्ली में अध्यापन कार्य करते रहे। आपने अनेक कहानियों की उत्कृष्ट रचनाएँ की जो कहानी संग्रह के रूप में प्रकाशित हुईं। आपकी कहानियों में मुख्य रूप से 'भटकती राख', 'भाग्यरेखा', 'पहला पाठ', 'शोभायात्रा', 'निशाचर' और 'पटरियाँ' प्रमुख हैं।

कहानी शिल्प – डॉ. साहनी द्वारा विरचित कहानियों में यद्यपि प्रतीकात्मक या कलात्मक सूक्ष्मता परिलक्षित नहीं होती है तथापि सीधे-सरल शिल्प के माध्यम से कहानी के अन्त को आकर्षक व रोचक बनाने में सिद्धहस्त हैं। इनकी कहानियों में मुख्य रूप से निम्न मध्यवर्गीय आर्थिक विपन्नता व चरित्र सम्बन्धी अन्तर्विरोध का सुन्दर चित्रण मिलता है। 'माता-विमाता', 'चीफ की दावत', 'अपने-अपने बच्चे', 'कुछ और साल' आदि कहानियाँ प्रमुख रही हैं। इन्होने मानवीय संवेदना के पृष्ठ पर बदलते हुए सामाजिक परिवेश को बहुत ही अच्छे ढंग से अपनी कहानियों में चित्रित किया है। इनकी कहानियों की भाषा सरल एवं पात्रानुकूल है। इनकी कहानियों में हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, उर्दू, अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग भी स्वतंत्र रूप से किया गया है। चरित्र-चित्रण, देशकाल, वातावरण एवं कथोपकथन की दृष्टि से इनकी कहानियाँ काफी सफल रही हैं। अतः डॉ. साहनी कहानी शिल्प की दृष्टि से एक प्रतिभा सम्पन्न व प्रगतिशील कहानीकार हैं।

प्रश्न-2. 'झुटपुटा' कहानी की मूल संवेदना को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'झुटपुटा' में डॉ. भीष्म साहनी ने 1984 में दिल्ली में हुए सामुदायिक वैमनस्य के कारण हुए उपद्रव तथा उससे पड़ने वाले जन-जीवन पर प्रभाव को चित्रांकित किया है। यद्यपि ये सिख-विरोधी उपद्रव प्रमुख रूप से दिल्ली में ही हुए किन्तु इसका दुष्प्रभाव देश के हिन्दू व सिख समुदायों के मानस पटल पर वैमनस्य की काली रेखा के रूप में उभर कर सामने आया। परिणाम स्वरूप लूट-पाट, मारपीट, आगजनी जैसी अमानवीय घटनाएँ घटित हुईं। दिल्ली शहर के लोग एक दूसरे मौहल्ले में जाकर दंगाइयों के रूप में ऐसी वारदातें करने लगे। कहानी का संकेत है कि ऐसे निहित स्वार्थी लोगों के प्रति हमें सावधान रहना चाहिये और बिना किसी वर्ग या जाति भेद के इनका सामुहिक रूप से विरोध करना चाहिये। कुछ असामाजिक तत्व अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए देश की विरोधी शक्तियों के प्रलोभन में आकर भी इस प्रकार के विध्वंसक कार्य करने के लिये प्रेरित होते हैं। प्रस्तुत कहानी में हिन्दू-सिख समुदायों के पारस्परिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध को ऐतिहासिकता के साथ निरूपित कर लेखक ने इस बात की व्यंजना की है कि आज के संकट कालीन समय में ऐतिहासिक एकता के सम्बन्धों की आवश्यकता को हमें एक-दूसरे के आन्तरिक घनिष्ट सम्बन्धों की मूल्यवता बढानी चाहिये।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य उपद्रवों व दुष्परिणामों की ओर जन-मानस का ध्यान आकर्षित कर संगठित रहने की प्रेरणा देना है। हिन्दू और सिख समुदायों में घनिष्टता का सम्बन्ध अटूट रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है। आपसी वैमनस्य के कारण जन-जीवन में अशांति फैलती है, जन-धन की हानि होती है और आपसी रंजिश बढ़ती है। परिणाम यह होता है कि देश के शत्रु इस वैमनस्य का खुलकर लाभ उठाते हैं। आज के इस संवेदनशील दौर में एकता और अखण्डता, भाईचारे व सहयोग की भावना आवश्यक है। हमें झुटपुटे की अपेक्षा मानवीय सम्बन्धों के आलोक में जीना चाहिये। यही इस कहानी का उद्देश्य व निहित संवेदना है।

प्रश्न-3. भीष्म साहनी द्वारा प्रस्तुत कहानी 'झुटपुटा' के मुख्य पात्र प्रो. कन्हैयालाल की चेतना-शून्य मनोदशा का संक्षिप्त विवेचनात्मक चित्रण कीजिये।

उत्तर – कहानी के मुख्य पात्र प्रो. कन्हैयालाल की चेतना शून्य-प्राय: हो जाती है जबकि वह मानवीय मूल्यों का पूरा हिमायती होता है। 1984 में घटित दिल्ली की उपद्रवी घटनाएँ कथानायक के अन्त:करण को हिला देती हैं। यद्यपि नायक इन दु:खान्त घटनाओं का विरोध करना चाहता है किन्तु चाहते हुए भी वह नहीं कर पाता है। शहर में उपद्रव के कारण प्रत्येक संकट पूर्ण घटना की सूचना मिलने पर भी वह अपनी प्रतिक्रिया सही ढंग से व्यक्त नहीं कर पाता है। वह पिछले तीन दिन से मानसिक जड़ता अथवा चेतनाशून्य स्थिति में है। वह केवल एक ही बात कहता है – ''च-च-च, बहुत बुरा हुआ, बहुत बुरा.....।'' आतंकवादियों के द्वारा दिल्ली व भारत देश के अन्य शहरों में निर्दोष नागरिकों की हत्या की तब भी कथा नायक यही बात कहकर रह जाता है, पिछले दिनों अमृतसर के स्वर्णमंदिर में सरकार ने आतंकवादियों का सैन्य विरोध किया और जो जन-धन की हानि हुई उस पर भी नायक की केवल यही प्रतिक्रिया हुई और जब देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की आतंकवादियों ने नृशंस हत्या कर दी तब भी वह बस यही कुछ बोलकर रह गया। आज जब तीन दिन से दिल्ली शहर विप्लव की आग में झुलसता हुआ देखकर भी कहानी नायक किसी प्रकार की प्रतिक्रिया से हीन है तो हम कह सकते हैं कि इस प्रकार के सामाजिक विद्वेष को निरन्तर बढ़ते हुए वातावरण को देखकर कहानी नायक अन्तत: चिन्ताग्रस्त है और वह अपने मनोभावों को सही ढंग से व्यक्त नहीं कर पाता है।

प्रश्न-4. डॉ. साहनी द्वारा रचित कहानी 'झुटपुटा' के प्रमुख नायक प्रो. कन्हैयालाल की चारित्रिक विशेषताओं को संक्षिप्त में स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'झुटपुटा' के मुख्य पात्र प्रो. कन्हैयालाल को कहानीकार द्वारा 1984 में घटित सामुदायिक विद्वेष के कारण हुई आतंकवादी दुर्घटना के बाद बूथ के सामने दूध की लाइन में खड़ा हुआ बताया है। पिछले दो दिनों से दूध का समुचित वितरण नहीं हुआ किन्तु आज उसे दूध मिलने की आशातीत किरण भोर के झुटपुटे समय में दिखाई देने लगी। इस दौरान वह वहाँ पर खड़े हुए लोगों द्वारा उपद्रव की कई रंग-बिरंगी विचारधाराएँ सुनता है और देश के भविष्य के प्रति चिन्तित होने लगा है। प्रो. कन्हैयालाल की इस आधार पर चारित्रिक विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता है –

1. चिन्तनशील व्यक्तित्व – कहानी नायक पहले भी कई बार आगजनी व लूटपाट जैसी मानव-विरोधी घटनाएँ देख चुका है। उनके बारे में सुन चुका है और आज भी वह इन वेदनायुक्त वारदातों को अपनी आँखों से देखकर देश के भविष्य के प्रति अनेक बातें सोचता है और उसका चिन्तन उसे चेतनाशून्य तक बना देता है।

2. मानसिक तनाव से ग्रसित – आये दिन घटित होने वाली असामाजिक घटनाओं से कहानी नायक मानसिक तनाव-सा महसूस करने लगता है। उसे देश की एकता व अखंडता कमजोर पड़ती महसूस होती है। वह उद्वेलित महसूस करता है।

3. कमजोर दिल वाला – जब दिल्ली में आतंकवादियों द्वारा निरपराधों की हत्याएँ की जाने लगी, स्वर्ण मन्दिर में फौजी कार्यवाही की गई और श्रीमती गाँधी की नृशंस हत्या की गई और आज तीन दिन से उसके अपने शहर दिल्ली में साम्प्रदायिक दंगा हो रहा है तो वह भयभीत है। आने वाले कल के प्रति और देश की विनाशक वैमनस्यता के प्रकोप के प्रति। उसमें किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं होती है और वह मात्र अफसोस व्यक्त कर रह जाता है।

4. सरल स्वभाव – जब एक अजनबी दंगा-फसाद के संवेदनशील माहौल में किसी सरदार का पता पूछता है तो कहानी नायक उसे पहचान जाता है और अपने पास बुलाकर वहाँ आने व सरदारजी का पता पूछने का कारण पूछता है। बता देने के बाद वह मानवता व सम्बन्धों की घनिष्टता के बारे में सोचता है। अत: वह सरल स्वभाव का व्यक्ति है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

5. आत्मग्लानि से ग्रसित – दंगाइयों द्वारा की जाने वाली तोड़-फोड़ व आगजनी को देखकर उसे अत्यंत वेदना होती है और लोगों को तमाशबीन बने रहने का भी उसे बहुत दुःख है। उसे उन सबके प्रति क्षोभ और स्वयं की भीरु प्रवृत्ति होने के कारण आत्मग्लानि होने लगती है।

6. अच्छे-बुरे की समझ – कहानीकार को सामाजिक जीवन का काफी अनुभव है। वह हर अच्छे-बुरे की बात को समझता है। वह इन घटनाओं के कारण को और उपद्रवियों की निहित स्वार्थ भावना को एवं इन सबके परिणामों को अच्छी तरह से जानता है।

7. संवेदना युक्त – वह मानव मात्र के प्रति संवेदना व सहानुभूति से मण्डित मन वाला व्यक्ति है। जन-धन की हानि से, दो दिन से दूध व्यवस्था न होने से वह लोगों की तकलीफ का अहसास करता है और स्वयं परेशान होता है।

8. सुशिक्षित व्यक्तित्व – वह पढ़ा-लिखा व अनुभवी व्यक्ति है। इनके अतिरिक्त इस घटना का प्रत्यक्ष दृष्टा, प्रत्यक्ष रूप से अनेक विचारों का श्रोता, हिन्दू व सिख समुदायों की एकता का पक्का हिमायती है।

13.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. ''हम लोग इतिहास के झुटपुटे में जी रहे हैं।'' इस कथन की विवेचना कीजिये।

अथवा

'झुटपुटा' कहानी की मूल संवेदना की समीक्षा कीजिये।

अथवा

संवेदना के स्तर पर हिन्दू और सिख समुदाय के बीच हमारे समय में बने सम्बन्धों को रेखांकित करने वाली कहानी का नाम 'झुटपुटा' है, स्पष्ट कीजिये।

अथवा

झुटपुटा कहानी की मूल संवेदना व इसमें निहित संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता परीक्षित साहनी के अनुज सन् 1915 में रावल पिण्डी में जन्में आधुनिक कहानीकार डॉ. भीष्म साहनी एक शिक्षाविद् रहे इन्होंने शिक्षा जगत् में अपने उत्तरदायित्वों का बखूबी से निर्वाह करते हुए 'नई कहानी' का सम्पादन कार्य भी किया और आधुनिक कहानी जगत में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इन्होंने कई कहानी संग्रह संग्रहित किये जिनमें भटकती राख, भाग्यरेखा, पहला पाठ, शोभा यात्रा, पटरियाँ, निशाचर आदि प्रमुख हैं।

आपकी कहानियों में ज्यादातर निम्न-मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक विपन्नता का सुन्दर व्यंजनात्मक रूप उभर कर सामने आया है। साथ ही चरित्र सम्बंधित निर्विरोध का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत हुआ है। उनकी कहानियों में प्रतीकात्मकता व कलात्मक सूक्ष्मता कम दिखाई देती है, फिर भी उन्होंने सीधे सरल माध्यम से अपनी कहानियाँ प्रस्तुत की है। इनकी कहानियों का अन्त काफी प्रभावशाली व आकर्षित होता है। मानवीय संवेदना का भूमि पर बदलते हुए सामाजिक परिवेश को चित्रित करने में ये सिद्ध-हस्त कहानीकार माने गये हैं। इनकी रचनाओं में हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी व उर्दू भाषा के शब्दों का पूर्ण स्वतंत्र प्रयोग हुआ है जिससे रचना काफी रोचक बन गई हैं। आप द्वारा विरचित कहानियों में माता-विमाता, अपने-अपने बच्चे, चीफ की दावत, कुछ और साल आदि उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। डॉ. साहनी एक प्रतिभा सम्पन्न व प्रगतिशील कहानीकार है।

'झुटपुटा'

प्रस्तुत कहानी डॉ. साहनी द्वारा विरचित एक नूतन कहानी है जिसमें 1984 के साम्प्रदायिक विप्लव की मार्मिक घटनाओं को सजीव रूप से चित्रित करते हुए स्पष्ट किया है कि जो हिन्दू और सिख सम्प्रदाय अति प्राचीन काल से आपकी सौहार्द व भाईचारे की एक जीती-जागती मिसाल के रूप में इतिहास के पृष्ठों में अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। आज वही दो निकटस्थ सम्बन्धी वर्ग कुछ निहित स्वार्थी लोगों की विकृत व संकीर्ण भावना की बली चढ़ते जा रहे हैं। आपसी वैमनस्य भाव के कारण वे लोग अपने ही सुन्दर आशियाने को तहस-नहस करने में पीछे नहीं हैं। इतिहास गवाह है कि ये दोनों समुदाय एक-दूसरे से इतने निकट सम्बन्ध रखते आये हैं कि उनको पृथक् करना अपने आपमें एक अपच आश्चर्य है। परन्तु वर्तमान काल में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बना दी गई

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

हैं कि दोनों समुदायों में आपसी तनाव उत्पन्न हो गया है। इस नाजुक दौर का लाभ उठाकर स्वार्थी तत्त्व अनेक प्रकार से अपने स्वार्थ की सिद्धि कर जाते हैं और दुश्मन मुल्क हमारी कमजोरी का नाजायज फायदा उठाते हैं।

इस बात को लेकर कहानी नायक प्रो. कन्हैयालाल काफी चिन्तन करता है। जब नायक घटना के दूसरे दिन समय पर दूध वितरण न होने के कारण डेयरी बूथ पर लगी लम्बी कतार में काफी देर तक खड़ा रहता है तो लोगों से अनेक प्रकार की वैचारिक प्रतिक्रियाएँ सुनता है परन्तु वह चुपचाप सबके रंग-बिरंगे विचारों को सुनता रहता है। उस समय यह अफवाह थी कि दूध की लॉरियों के चालक अधिकतर सिख सरदार हैं। वे अब काम पर नहीं आ रहे हैं, इस कारण अब दूध वितरण संभव नहीं होगा। सहसा एक दूध की लॉरी सामने से आती हुई दिखाई दी। उसका ड्राइवर भी सिख सरदार था। वह अपनी जान की परवाह किये बिना दूध की गाड़ी यह सोचकर ले आया कि बाल-बच्चों को दूध मिलना चाहिये। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में यह स्पष्ट किया गया है कि हिन्दू व सिख समुदाय की घनिष्ट मित्रता की कड़ी इन छोटी-मोटी वारदातों से कमजोर नहीं हो सकती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि ये सम्प्रदाय एक-दूसरे की शक्ति हैं और रहेंगे।

संवेदना की दृष्टि से 'झुटपुटा' कहानी –

प्रस्तुत कहानी का कथानक इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि कुछ दशकों पूर्व सन् 1984 में दिल्ली के कुछ स्वार्थी तत्वों ने साम्प्रदायिकता को मोहरा बनाकर दंगा फसाद किया, आगजनी की,लूटमार की और घरों तथा दुकानों में जमकर तोड़-फोड़ की गई। इस प्रकार की हृदय स्पर्शी दुःखान्त घटनाओं का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत कर जो मूल संवेदना व्यक्त की गईहै उसे हम निम्नलिखित ढंग से स्पष्ट कर सकते हैं –

सामुदायिक एकता की पुष्टि –

डॉ. साहनी द्वारा प्रस्तुतकहानी में स्पष्ट किया गया है कि दिल्ली में किये जाने वाले उपद्रवों के लिये साम्प्रदायिकता को मुख्य रूप से मोहरा बनाया गया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की दर्दनाक हत्या उनके ही सुरक्षाकर्मी द्वारा की गई थी जो सिख सरदार था, जिसके कारण हिन्दुओं में सिखों के प्रति द्वेष भाव जागृत हुआ और उस भाव ने एक अति ज्वलंत आक्रोश का रूप ले लिया और इसके भड़काव ने चुन-चुन कर सिखों की दुकानों, घरों और अन्य मुख्य प्रतिष्ठानों को लूटना, उनमें आग लगाना, तोड़-फोड़ करना प्रारम्भ कर दिया। सिख परिवार को नुकसान देने का हर संभव प्रयास किया गया। मकानों में पथराव किया गया, अश्लील हरकतें की गईं, गाड़ियाँ जला दी, सामान से भरे ट्रक व लारियाँ उलट दी गई, दुकानों व प्रतिष्ठानों को, यहाँ तक कि दवाई की दूकानों को भी लूट लिया गया। अधिकतर उपद्रवी बाहर के लोग थे। पड़ौसी तो मूक दर्शक बने या तो देखते रहे या अपने आप को सुरक्षित करने में लगे हुए थे। कुछ लोग उपद्रवियों में ऐसे भी थे जो अपने जान-पहचान के लोगों की सुरक्षा भी करने लगे। कथानायक का परिचित संवेदनशील वातावरण में भी अपने पिताजी के एक मित्र सिख सरदार से मिलने व उनकी कुशल-क्षेम पूछने के लिये दूसरे मौहल्ले में जाता है। डेयरी बूथ पर दूध की सप्लाई करने वाली लॉरी का ड्राइवर भी सिख सरदार है जो अपनी जान की परवाह किये बिना बच्चों को दूध पहुँचाने की अपनी जिम्मेदारी पूरी करता है। अब कहानी नायक ने डेयरी बूथ के सामने लगी लाइन में खड़ी एक लड़की के पास तीन डोलचियाँ देखकर पूछने पर उसने जवाब दिया कि इनमें एक हमारी, एक पड़ौसी की और एक सरदार अंकल के लिये दूध लेने वास्ते है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि चाहे दोनों समुदाय कुछ समय के लिये तनाव ग्रस्त होते हैं किन्तु आन्तरिक घनिष्टता फिर भी कायम रहती है। एक-दूसरे समुदाय के प्रति नेक नियति और आदर भाव हैं और वैसे भी इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दू और सिख एक-दूसरे के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखते आये हैं और ये सम्बन्ध कभी भी कमजोर नहीं होंगे।

असामाजिक तत्त्वों में निहित स्वार्थ –

आज तक के इतिहास में जितनी भी साम्प्रदायिक विकृतियाँ उत्पन्न हुई हैं उनमें काफी हद तक या तो विदेशी मुल्क के विध्वंशकारी षड्यंत्र रहे हैं और या देशी स्वार्थी लोगों का भाव रहा है। 1984 में हुए दिल्ली के दंगे-फसाद के कारण को भी कहानीकार ने इसी रूप में उभार कर प्रस्तुत कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है। ऐसी घटनाएँ मौहल्ले वालों की ओर से कभी भी नहीं की जाती हैं बल्कि या तो अन्य दूर के मौहल्ले के लोग होते हैं और या अनजान नकाबपोश लोग ही ऐसा दुश्कार्य करते हैं। इससे ज़ाहिर है कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कुछ निहित स्वार्थी लोग ही अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिये ऐसा करते हैं या ऐसा कराने की प्रेरणा देते हैं। बेरोजगार युवकों या आर्थिक विपन्न लोगों को अथवा असामाजिक तत्त्वों को प्रलोभन देकर इस प्रकार की वारदातें करवाते हैं। कहानी की मूल संवेदना ऐसे स्वार्थी तत्त्वों से सदैव एलर्ट रहने की संदेशात्मक स्थिति है। ऐसे कार्यों से जन-साधारण का शान्त मन उद्वेलित हो उठता है और एक-दूसरे समुदाय के प्रति वैमनस्य भाव उत्पन्न होता है। परिणाम स्वरूप देश की आन्तरिक शांति व्यवस्था भंग होती है और राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का सूत्र कमजोर पड़ जाता है।

दुष्परिणामों का उद्घाटन –

आतंकवाद या उपद्रव विनाश का अपर नाम है जिसके नाम की कल्पना मात्र से दिल दहल जाता है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से यह बताया गया है कि साम्प्रदायिक दंगे-फसाद से करोड़ों रुपयों का नुकसान होता है। कई निर्दोष लोग बेवजह ही मारे जाते हैं। सामान्य जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

इस विप्लव के दौरान सारा प्रशासन तंत्र भी प्रभावित हो जाता है। जिससे सरकार को भारी कीमत चुकानी पड़ जाती है। सीधे सच्चे लोगों को मानसिक तनाव और दहशत ग्रस्त जीवन बिताने के लिये मजबूर होना पड़ता है। इस प्रकार की घटनाओं से न केवल किसी वर्ग या समुदाय विशेष को हानि होती है अपितु समूचा समाज इससे विनाश का पात्र बनता है। विनाश कभी भी गरीबी-अमीरी, ऊँच-नीच या अन्य भेदभाव नहीं देखता है। वह तो एक ऐसा सैलाब है जिसमें सभी लोग एक साथ प्रवाहित होते हैं और लाभ होता है। उन लोगों का जो अपने तुच्छ स्वार्थों के कारण ऐसा करते हैं या ऐसा करवाते हैं। विदेशी दुश्मन की आँखें गिद्ध की तरह हमारे देश पर टिकी रहती हैं और मौका पाकर हमारी इन कमजोरियों का लाभ उठाती हैं या तत्पर रहती हैं। आज हमारे समाज को झुटपुटे वातावरण में जीवन जीना पड़ रहा है। हम सबकी आँखों के आगे अज्ञान का घना अँधकार छाया हुआ है।

सम्बन्धों का नया आयाम –

अगर हम भारतीय जातिगत या साम्प्रदायिक विशेषकर हिन्दू व सिख सम्प्रदाय एक दूसरे के लिये सदैव समर्पित और सहयोगी रहे हैं। ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जिनसे इनके भाईचारे की अनोखी मिसाल दिखाई देती है। दिल्ली में हुए साम्प्रदायिक दंगों में भले ही सिखों व हिन्दुओं को काफी जन-धन की हानि उठानी पड़ी परन्तु यह कहने में जरा-सी भी हिचक नहीं होगी कि इन सबके जिम्मेदार वे स्वार्थी तत्त्व हैं जो राष्ट्रीयता की परवाह किये बिना, अपने ईमान, अपने धर्म की परवाह किये बिना राष्ट्र का चैन-अमन छीन लेना चाहते हैं। जहाँ सिखों को नुकसान पहुँचाने वाले उपद्रवी हिन्दू लोग थे, वहीं कई स्थानों पर अपने परिचितों की रक्षा करने वाले लोग भी हिन्दू ही थे। बलराम अपने पिताजी के घनिष्ट मित्र सिख पंजाबी के परिवार की खैर-खबर लेने के लिये संवेदनशील समय में ही जाता है। एक लड़की अपने सरदार अंकल को दूध लेने के लिये घंटों लाइन में खड़ी रहती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में भाईचारे व मित्रता की भावना समाहित की गई है। आज के दौर में तो सिखों व हिन्दुओं की घनिष्टता और अधिक बढ़ गई है और यह दिन-प्रतिदिन इसी प्रकार से निरन्तर बढ़ती चली जायेगी और रिश्तों का नया आयाम शुरु होगा।

कहानी का संदेश –

प्रस्तुत कहानी का कथानक सन् 1984 में दिल्ली में हुए उपद्रव पर आधारित है जिसका प्रभाव सारे उत्तरी भारत में पड़ा और सिख-हिन्दू समुदाय में वैमनस्य उत्पन्न हो गया। हिन्दुओं ने सिखों की जीवनचर्या को अपना मूल निशाना बनाया। उनके घर, दुकानें, व्यापारिक प्रतिष्ठान, वाहन तथा अन्य साधनों को लूट लिया गया, तोड़-फोड़ की गई और आग लगा दी गई जिससे करोड़ों रुपयों का नुकसान हुआ। कई लोग घायल हो गये, कई लोग मारे गये। वैसे इस विनाश ने हिन्दुजनों को भी अछूता नहीं छोड़ा। दिल्ली के एक डेयरी बूथ पर लगी भीड़ में अनेक प्रकार से इस उपद्रव के कारणों, उपद्रवियों, परिणामों पर टीका-टिप्पणी की जाती है जिनमें ज्ञात होता है कि भले ही कुछ असामाजिक तत्त्व अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लालच में आकर इस प्रकार का तनावयुक्त वातावरण पैदा करें किन्तु इन दोनों समुदायों की घनिष्टता को किसी भी हालत में कमजोर नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि ये सम्बन्ध ऐतिहासिक सम्बन्ध हैं जो कभी भी कमजोर बुनियाद पर खड़ी नहीं होती है। हिन्दू पात्र बलराम का एक पंजाबी सिख के घर पर जाकर हालचाल पूछना, लड़की के द्वारा सरदारजी को दूध की व्यवस्था के लिये घंटों लाइन में खड़े रहना और स्वयं एक सरदार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ड्राइवर के द्वारा जान जोखिम में डालकर सर्वत्र दूध मुहैया कराना इस बात का प्रतीक है कि हिन्दू व सिख दोनों समुदाय एक थे, एक हैं और एक रहेंगे।

प्रस्तुत कहानी में यह संदेश दिया है कि हमें कभी भी अपने ऐतिहासिक भाईचारे को नहीं भूलना चाहिये और अपने परम्परागत घनिष्ट सम्बन्धों का तहेदिल से निर्वाह करना चाहिये और उन स्वार्थी तत्त्वों से सदैव सावधान रहना चाहिये जो इन दोनों समुदायों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में दरार डालने का प्रयास कर रहे हैं।

13.6 निष्कर्ष

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी में उपद्रवों से होने वाली हानि का उल्लेख कर यह स्पष्ट किया गया है कि इन सबसे सामाजिक तनाव, अशांति बढ़ती है और जन-धन की अपार हानि होती है । दिल्ली में हुए साम्प्रदायिक तनाव के बाद दोनों समुदायों की मैत्री में किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा है बल्कि दोनों के आपसी सम्बन्ध अधिक घनिष्ट हुए हैं, भाईचारा बढ़ा है, सहयोग की भावना बढ़ी है और इन गुणों में ऐतिहासिक वृद्धि निरंतर होती जा रही है। अत्यंत प्रेरणादायी मूल संवेदना के कारण प्रस्तुत कहानी अत्यन्त आकर्षक प्रभावपूर्ण व मार्मिक है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 14 : ज्ञानरंजन

संरचना

14.0 प्रस्तावना

14.1 उद्देश्य

14.2 फेन्स के इधर और उधर

14.3 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

14.4 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

14.4.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

14.4.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

14.4.3 निबंधात्मक प्रश्न

14.5 सारांश

14.0 प्रस्तावना

समकालीन हिन्दी-कथा परिदृश्य के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य अंग ज्ञानरंजन की कहानियों में बदलते हुए परिवेश की विसंगत स्थितियों का चित्रण किया गया है। ज्ञानरंजन की दृष्टि में नई कहानी सर्वथा भिन्न जीवन के स्वस्थ जिन्दगी का चित्रण प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं है और आज की वे कहानियाँ जो पहली बार लिखी जा रही हैं उनकी दृष्टि में भी यह संभव नहीं है क्योंकि आज जीवन कहानियों के स्वस्थ कथानक के अनुकूल है ही नहीं। मूल्य विघटन एवं असंतोष जनक वर्तमान स्थिति के विरूद्ध संघर्ष की प्रतिबद्धता उनकी कहानियों में प्रकट होती है। यह प्रतिबद्धता वैयक्तिक स्तर पर नहीं अपितु सामाजिक संकल्प का भी अंश है। ज्ञानरंजन ने अपने रचनाकर्म को बहुत गम्भीरता से लिया है और उनका यह मानना है कि रचना दर्द की आवृत्ति-पुनरावृत्ति या निर्माण के लिये दी जाने वाली आहुति है। कलात्मक स्तर पर ज्ञानरंजन की कहानियों से न तो कहानी बनाने का आग्रह मिलता है और न प्रतीकात्मक का मोह या भावुकता का संयोजन। यथार्थ परकता, कलाकारोचित तटस्थता उनकी रचनाशीलता की सबसे बड़ी ताकत है। फेन्स के इधर-उधर उनका बहु प्रशंसनीय कथा संकलन है। ज्ञानरंजन की ख्याति 'पहल' के सम्पादक के रूप में अधिक है।

14.1 उद्देश्य

यहाँ हम ज्ञानरंजन एवं उनकी कहानी फेन्स के इधर और उधर के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

14.2 फेन्स के इधर और उधर

प्रस्तुत कहानी के कथाकार ज्ञानरंजन ने इस कहानी को एक महान् कहानी और हिन्दी कहानी में एक बड़े मोड़ के रूप में रेखांकित किया है। ऊपर से शांत और ठण्डी दिखाई देने वाली यह कहानी पाठक के मन को काफी गहराई तक उद्वेलित करने में पूर्णत: सफल रही है। इसमें फेन्स के आर-पार लगावहीन दो परिवारों की जिन्दगियों के तुलनात्मक चित्र हैं जिनके माध्यम से आधुनिक जीवन के अन्दर सामन्ती सरहदों की छटपटाहट व्यक्त हुई है। फेन्स शब्द जेल की अनुभूति कराने वाला शब्द है और इसमें भी उसे न लाँघ पाने की कसक का बोध है। शिल्प के स्तर पर कहानी में कलागत पच्चीकारी व औपचारिकता नहीं है परन्तु कथ्यानुरूप संश्लिष्टता पूरी तरह समाहित है। कहानी का शीर्षक इसमें निहित मूल संवेदना को अच्छी प्रकार से उभारने में सक्षम है।

प्रस्तुत कहानी आधुनिक जीवन में निरन्तर बढ़ती हुई अलगाव की समस्या को यथार्थ के क़ोठा से उभार कर रखती है। इस कहानी में महानगरीय परिवेश के संदर्भ में परम्परागत जीवन दृष्टि और नवीन मूल्यवत्ता के बीच निरन्तर बढ़ती जा रही दूरी को यथार्थ शैली में प्रस्तुत किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

14.3 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

''हमारे मकान के एक तरफ सरकारी दफ्तर है और ऊँची ईंटो की दीवार भी। पीछे दो मंजिली इमारत के फ्लेट्स का पिछवाड़ा है और सामने मुख्य सड़क। इस प्रकार हमारे परिवार को किसी दूसरे परिवार की प्रतिक्षण निकटता अब उपलब्ध नहीं है। बड़े शहरों में एक दूसरे से ताल्लुक न रख, अपने में ही जीने की जो विशेषता देखने को मिलती है, कुछ उन्हीं विशेषताओं और संस्कारों के लोग हमारे नए पड़ौसी लगते हैं। यह शहर और मौहल्ला दोनों शान्त हैं। लोग मन्थर गति से आते-जाते हैं और अपेक्षाकृत बेतक़ल्लुफी से चहल कदमी करते हैं क्योंकि जीवन में तीव्रता नहीं है इसलिये हमें ये अपने पड़ौसी विचित्र लगते हैं।''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी पाठ 'फेन्स के इधर और उधर' से उद्धृत है जिसमें शहरी वातावरण में आत्मनिष्ठ और लगाव रहित जीवन का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया गया है। आज महानगरों में फेन्स के आर-पार दृष्टि तो जाती है किन्तु परस्पर व्यवहार का आदान-प्रदान नहीं हो पाता है।

व्याख्या – प्रस्तुत कहानी का कथानायक कहता है कि हमारे मकान के एक ओर सरकारी दफ्तर है और मकान के पिछवाड़े में दो मंजिली इमारत का हिस्सा है और बीच में ईंटों की ऊँची दीवार है तथा बिल्कुल सामने की ओर सड़क जाती है। इसलिये उसके परिवार को किसी अन्य परिवार या किसी पड़ौसी से परस्पर सम्बन्ध बनाने का अवसर ही नहीं मिलता है। नायक कहता है कि घर के एक ओर नए पड़ौसी आये हैं। वे किसी से कोई ताल्लुक नहीं रखते हैं अत: बीच में केवल फेन्स होने पर भी उस परिवार से अभी तक अपरिचय बना हुआ है। महानगरों के लोग आत्मनिष्ठ स्वार्थी और रूखे स्वभाव के होते हैं। उनका किसी पड़ौसी विशेष से कोई भी सम्बन्ध नहीं होता है। उनमें एकाकीपन में जीने की कला होती है। कहानी नायक के अनुसार उसके पड़ौसी भी कुछ इसी प्रकार के संस्कारों से युक्त हैं। उसका कहना है कि हमारा शहर और मौहल्ला दोनों ही अत्यन्त शांत हैं। यहाँ के लोग बिना किसी शोर-शराबे के धीमी गति से आते-जाते हैं क्योंकि उनकी जिन्दगी में तीव्रता, बेचैनी या अति व्यस्तता की स्थिति नहीं है। इसलिये कथानायक को अपने पड़ौसी बड़े विचित्र से लगते हैं।

विशेष– 1. प्रस्तुत अवतरण में महानगरों की अलगावपूर्ण और आत्मनिष्ठ जिन्दगी का निरूपण किया गया है।
2. शहरों में पारस्परिक व्यवहार और आपसी बातचीत का अभाव रहता है।
3. भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण व संवेदनानुरूप है।
4. शैली वर्णनात्मक है।

(2)

''मैं देखता हूँ कि वह अक्सर खूब हँसती है। उसके माँ-बाप भी हँसते हैं, वे सब हमेशा खुश ही नजर आते हैं। उनके पास कैसी बातें हैं और वे क्यों हमेशा हँसते हैं? क्या उनके जीवन में हँसते रहने के लिए ढेर सारी परिस्थितियाँ हैं? क्या वे जिन्दगी की कठिन और वास्तविक परिस्थितियों से गाफिल हैं। मुझे आश्चर्य होता है, मैं अपने घर और पड़ौसी परिवार से तुलना करने लगता हूँ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' पाठ से ली गई है जिसमें कहानी नायक की अपने पड़ौसी परिवार की जीवन-चर्या के प्रति विचारधारा को व्यक्त किया है।

व्याख्या – प्रस्तुत कहानी का नायक अपने पड़ौसी के विषय में अनेक प्रकार की बातें सोचता है। उनकी दिनचर्या के प्रति उसे आश्चर्य होता है और मन में एक अजीब-सा कौतुहल उत्पन्न होता है। वह कहता है कि हमारे पड़ौसी परिवार में एक लड़की है। वह हमेशा खूब हँसती रहती है और उसके साथ में उसके माता-पिता भी जी भर कर हँसते हैं। कथानायक के मन में उनकी इस प्रसन्नता और ठहाकों से युक्त हँसी के रहस्य के प्रति अनेक प्रकार के जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों की उथल-पुथल होने लगती है और वह सोचता है कि ''क्या इनकी इस हँसी के पीछे इनके जीवन की प्रसन्नतायुक्त परिस्थितियाँ हैं या वे लोग जीवन की विपत्तियों व कठिन एवं वास्तविक परिस्थितियों से आज तक अनजान हैं।'' उन्होंने सदैव ही सुखमय जीवन का आनन्द भोगा है और शायद इसी वजह से ये लोग सदैव हँसते रहते हैं। वह अपने परिवार और पड़ौसी परिवार की तुलना पर आश्चर्यचकित रहता है। वह सोचता है कि हमारा परिवार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

आज तक भी परम्परावादी ढ़ाँचे में कैद है और वे इससे पूरी तरह आजाद हैं। उस परिवार में सदैव सुख और प्रसन्नता का संचार रहता है, उनकी अपनी जिन्दगी नवीन जीवन दृष्टि की वाहिका है और शायद यही इनकी जीवनशैली की एक कला है। क्योंकि इस प्रकार की जिन्दगी यापन करना हर सामान्य व्यक्ति के वश में नहीं है। कथा नायक यह भी सोचता है कि खुशी का सम्बन्ध मन की गहराइयों से है, उसकी अनुभूतियों से है, न कि इसका कोई बाहरी कारण होता है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में पारिवारिक जीवन की हँसी-खुशी और आन्तरिक प्रसन्नता के महत्त्व को स्पष्ट किया गया है।

2. प्रस्तुत अवतरण का कथानक आत्मकथात्मक रूप को लिये हुए है।

3. अवतरण की भाषा-शैली सरल और प्रवाहपूर्ण है।

(3)

''वह लड़की क्यों नहीं मेरी बहन को अपनी सहेली बना लेती? उसके माता-पिता मेरे माता-पिता से क्यों नहीं घुल-मिल जाते? वे हमें अपने प्यालों से अधिक सुन्दर प्यालों में चाय पीते हुए क्यों नहीं देखते? उनको चाहिये कि वे हमें अपने सम्पर्कों की सूची में जोड़ लें। उन्हें हमारी तमाम चीजों से ताल्लुक रखना चाहिये। फेन्स पर ही, हमारी तरफ घना ऊँचा इमली का पेड़ है। उसमें छह-छह इंच लम्बी फलियाँ लटकती हैं। लड़कियों को इमली देखकर उन्माद हो आता है, परन्तु पड़ौस की वह लड़की फलियाँ देखकर कभी नहीं ललचाती। उसने कभी हमारे पेड़ से इमलियाँ तोड़कर मुझे खुश नहीं किया।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' शीर्षक पाठ से अवतरित है जिसमें कहानी नायक अपने पड़ौसी परिवार की दिनचर्या व जीवनशैली से प्रभावित रहता है और अपने परिवार की परंपरागत स्थिति से उनकी तुलना करता है और उस परिवार के साथ सम्पर्क व व्यवहार बन जाने की आवश्यकता का अनुभव करता है।

व्याख्या – कथानायक प्रतिदिन लालायित नजरों से अपने पड़ौसियों की जीवनचर्या को देखकर अपने परिवार की अनेक प्रकार से तुलनाएँ करता रहता है। जहाँ उनके जीवन की खुशियाँ और उनकी स्वतंत्र जीवनशैली उनके जीवन की वह कला है जो उनके एकाकीपन की सम्पूर्ण रिक्तियों की पूर्ति करने में सक्षम है। वहीं दूसरी ओर कथानायक के घर की बनावट व कुछ कृत्रिम साज-सज्जा भी कम नहीं है। वह पड़ौसी परिवार से अपने परिवार के सम्बन्धों की सुखद कल्पना करता है। उसके मन में उनके प्रति अनेक निराशात्मक भावनाएँ हैं जो यह सब सोचने के लिये विवश करती रहती हैं और उसकी बेचैनी को निरंतर बढ़ाती हैं। वह इस पड़ौसिन लड़की के प्रति भी आकर्षित रहता है और उसकी नज़दीकियों की चाहत में वह सोचता है कि उसके माता-पिता मेरे माता-पिता से व्यावहारिक सम्बन्ध बनाकर क्यों नहीं घुल-मिल जाते जिससे ये दो परिवारों की दूरियाँ समाप्त हो जायें, वह अपने परिवार की तुलना करते हुए सोचता है कि जिन प्यालों में वे चाय पीते हैं वे हमारे घर के प्यालों से अधिक सुन्दर नहीं हैं फिर भी वे हमें चाय पीते हुए क्यों नहीं देखते हैं? अर्थात् उनका ध्यान कभी भी हमारी अच्छाइयों की ओर नहीं जाता है। वे सदैव अपने में सिमटे हुए ही जीते रहते हैं। उनका इस मौहल्ले में किसी से कोई सम्पर्क नहीं है तो वे क्यों नहीं हमारे परिवार से सम्पर्क रखते हैं। उन्हें हमसे आपसी ताल्लुक अवश्य ही रखना चाहिये। यह तो निकटतम पड़ौसी का एक कर्त्तव्य होता है कि वे हमारी तमाम चीजों से ताल्लुक रखें और हम उनकी चीजों से। फेन्स पर ही हमारी तरफ एक घटना-ऊँचा इमली का पेड़ है जिसमें लम्बी-लम्बी फलियाँ हमेशा लटकती रहती हैं। ऐसा कहा जाता है कि लड़कियाँ तो इमली को देखते ही उन्माद से युक्त हो जाती हैं किन्तु यह लड़की तो इन सुन्दर इमलियों से भी प्रभावित नहीं होती है और न उनकी ओर ललचाई नजरों से ही देखती है। यदि वह कभी भरमार फलियाँ तोड़ लेती या प्रयास करती या प्रस्ताव रखती अथवा दूर से ही उनकी ओर इशारा करके इनकी प्रशंसा करती तो मुझे इसी में खुशी होती किन्तु इसने ऐसा कुछ करके भी मुझे कभी प्रसन्न नहीं किया। अर्थात् ये लोग अपने आप में सबसे अलग-थलग और एकाकी जीवन चर्या में निपुण लोग हैं। इनका समाज या पड़ौस से कोई ताल्लुक नहीं है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथा नायक की पड़ौसी परिवार के प्रति जिज्ञासात्मक भावना को व्यक्त किया है।

2. व्यावहारिक सम्बन्धों के महत्त्व को स्पष्ट किया है।

3. भाषा-शैली सरल, रोचक व भावनात्मक है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(4)

''दिन तो बीतते ही हैं। अब हमारे यहाँ जबरन पड़ौसी के प्रति रूचि लेकर अरूचि गली जाने लगी, जबकि हमारे लिये उनका होना बिल्कुल न होने के बराबर है। धीरे-धीरे हमारे घर में पड़ौसी को दुनियाँ की तमाम बुराइयों का संदर्भ बना लिया गया है। हम लोगों की आँखें हजारों बार फेन्स के पास जाती हैं। जरूरी, गैर-जरूरी रोजमर्रा के सभी कार्यों के बीच यह भी एक क्रम बन गया है। बहुत-सी दूसरी चिन्ताओं का साथ मन में एक गहरी उद्विग्नता समाने लगी है। मैं खुद भी अपना बहुत-सा समय जाया करता हूँ।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' से अवतरित है जिसमें कथानायक अपनी ओर से अपने पड़ौसी को स्थिति पर प्रकाश डालता है।

व्याख्या – प्रस्तुत कहानी का नायक कहता है कि मेरे परिवार के सभी लोग नए पड़ौसी के प्रति पर्याप्त रूचि लेने लगते हैं। रूचि भी लेनी चाहिये किन्तु एक सीमा विशेष तक किन्तु यदि बिना किसी वजह से किसी के प्रति घृणा के भाव रखें या व्यक्त करें तो वह गलत है। और जिन लोगों से किसी प्रकार का कोई परिचय नहीं, कोई ताल्लुक नहीं, उनके प्रति रूचि या अरूचि रखने से कोई फायदा नहीं है, बल्कि यह अनुचित है। समय गुजरता गया, पड़ौसी आज तक भी हमारे लिये वैसे ही नए व अपरिचित ही हैं किन्तु हमारे घर में पड़ौसी व उसकी जीवन चर्या दोनों ही आलोचना का केन्द्र बने हुए हैं। उन लोगों में अनेक बुराइयाँ खोजी जाने लगी। चाहे-अनचाहे पड़ौसी की दिनचर्या और उनके क्रिया-कलापों को देखने के लिये हमारे पूरे परिवार की नजरें अब फेन्स को लाँघने लग गई थी। ऐसा वह कथा नायक स्वयं भी करता था। इधर-उधर का कार्य करते हुए, आते व जाते हुए अनायास ही घर परिवार के लोग पड़ौस के मकान की ओर देख ही लेते थे। कथा नायक की सोच का विषय पड़ौसियों के द्वारा हमारे घर की ओर न देखना है। अर्थात् कथा नायक का परिवार तो पड़ौस की हर गतिविधियों की ओर ध्यान देता है किन्तु पड़ौसी जरा-सा भी अपना ध्यान या दृष्टि इस परिवार की ओर नहीं डालता है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार ने आज की नगरीय जीवन की आत्म सीमित स्थिति का यथार्थ रूप चित्रित किया है।

2. इस प्रकार की आत्म केन्द्रित और संकीर्ण भावना का मुख्य कारण आधुनिक संसार है।

3. शैली आत्मकथात्मक और विवेचनात्मक है।

4. भाषा सरल व भावपूर्ण है।

(5)

''मेरे कानों को ऐसा कुछ सुनने में रूचि नहीं है। मैं यह देख रहा हूँ कि अम्मा को धूप अच्छी लग रही है। धूप का टुकड़ा जिधर खिसकता है, उसी तरफ माँ भी हट जाती है। तभी पिताजी एक प्रशस्ति उपस्थित करते हैं। ''पहले जमाने में लड़कियाँ गाँव की सीमा तक रोती थी, उन्हें मार कर रुलाया जाता था, नहीं तो उनका जीवन श्वसुराल में कभी सुखी नहीं रह सकता था।'' पिताजी को बड़ा दर्द हुआ कि आज वैसा नहीं रह गया है। पुराना जमाना जा रहा है और ''आदमी का दिल मशीन हो गया है, मशीन।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी 'फेन्स केइधर और उधर' से अवतरित है जिसमें लेखक ने आधुनिक व पौराणिक परिवारों की विचारधारा के अन्तर को स्पष्ट किया है।

व्याख्या – जब पड़ौसी के घर पर लड़की का विवाह होता है तो वहाँ अर्थात् फेन्स के उधर काफी कुछ नई-नई बातें सामने आती हैं। ये पड़ौसी परिवार वाले नई विचारधारा वाले लोग हैं और कथा नायक का परिवार परम्परावादी है अतः नई जीवन शैली की नई बातों को देखकर सबको आश्चर्य होता है। वे उनके बारे में तरह-तरह की बातें बनाते हैं, किन्तु कथा नायक इन सब बातों को सुनना कतई पसन्द नहीं करता है। वह तो केवल यह देख रहा था कि अम्मा को धूप अच्छी लग रही है और जब धूप खिसक जाती है तो वह भी उसी जगह पर सरक जाती है। अचानक कथा नायक के पिता बोल पड़ते हैं कि देखते ही देखते जमाना कितना बदल गया है। एक समय था जब लड़की अपने पीहर से पहली बार विदा होती है तो वह गाँव की सीमा समाप्त होने तक रोती ही चली जाती थी और अगर उसको रोना न आता तो उसे मार-मार कर रुलाया जाता था। ऐसा माना जाता है कि यदि लड़की न रोये तो उसे उसके श्वसुराल में सुख नहीं मिलता है। किन्तु आज कल तो लड़कियाँ बिना रोये प्रसन्नता पूर्वक विदा होकर श्वसुराल चली जाती हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

वर्तमान परिवर्तित युग को देखकर कथा नायक के पिता को दुःख होता है और वे सोचते हैं कि ऐसा क्यों हुआ? पुराना जमाना देखते ही देखते बीत गया और नया जमाना आ गया जिसमें मानव अब इंसान नहीं रह गया। वह तो मशीन बन गया है जिसमें संवेदनशीलता होती ही नहीं है केवल काम ही होता है उसके पास।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में पौराणिक और नवीन युग की विचारधाराओं में तुलनात्मक अन्तर को अभिव्यंजित किया गया है।

2. दोनों प्रकार की पीढ़ियों के बीच वैचारिक अन्तर को भी स्पष्ट किया गया है।

3. शैली भावानुकूल है और भाषा सरल है।

(6)

"एक गहरी कभी से उत्पन्न उदासी के अलावा मुझे कुछ और अनुभव नहीं होता। अजीब-सा खालीपन, पीछे हटे रहने का खालीपन। अथवा उस लड़की के सम्बन्ध में राधू की लापरवाह धारणाओं के सम्बन्ध में खालीपन। बिल्कुल अज्ञात। लड़की के बदचलन होने की बात कभी-कभी एक पतित इतमीनान भी देने लगती है। शायद मैं भी मन के किसी कोने में अपने घर वालों की ही तरह पड़ौसी को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा हूँ।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' की ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' से अवतरित है जिसमें बताया है कि कथानायक के पड़ौसी बिल्कुल अपरिचित बने रहते हैं। उनकी लड़की का विवाह भी एकदम सादगी पूर्वक ढंग से सम्पन्न हो गया। पड़ोसियों को इस बात का पता तब चला जब वह विदा होने लग जाती है।

व्याख्या – कथा नायक एक परम्परावादी परिवार का सदस्य है और उसके पड़ौसी बिल्कुल आधुनिक। कथा नायक सोचता है कि जब किसी लड़की की शादी होती है तो वह विदा होते समय बहुत रोती है और साथ में उसके घर वाले भी। विवाह के समय एक अच्छा खासा धूम-धड़ाका होता है किन्तु जब पड़ौस की लड़की का विवाह हुआ तो किसी प्रकार का शोरगुल या धूम-धड़ाका नहीं हुआ। इतना सादगीपूर्ण हुआ कि पड़ौसियों तक को पता नहीं चला। एक विशेष बात यह थी कि विदाई के समय पता चला कि यहाँ पर कोई शादी-विवाह का कार्यक्रम था जो सम्पन्न हो गया। लड़की की आँखों में एक भी आँसू नहीं था बल्कि वह प्रसन्नतापूर्वक अपने श्वसुराल के लिये विदा हो गई थी। उसके आचरण को देखकर कथानायक का मित्र राधू कहता है कि यह लड़की तो दुनियादारी के सभी अनुभव लिये हुए है। इसने तो दुनिया देखी है। यह इसी लड़के से इश्क करती थी, जिससे इसने शादी की है तभी तो यह खुशी-खुशी आँखों से एक भी आँसू बहाये बिना विदा होकर चली गई। कथा नायक कहता है कि पड़ौस की लड़की के चले जाने से उसे काफी कमी महसूस हुई। उसे अजीब सा खालीपन लगने लगा था। उसे उदासी सी महसूस होने लगी। कथा नायक उससे आज तक परिचय प्राप्त करने की पहल नहीं कर पाया। इस दब्बूपन के कारण आज उसे सब कुछ खाली खाली सा लगने लगा।

राधू की धारणा उस लड़की के प्रति गलत बनी हुई थी। वह अपने प्रमाद या असावधानी के कारण उसके चाल-चलन पर आरोप लगा रहा था। इस धारणा के कारण भी उसके मन में खालीपन का अनुभव हो रहा था। कथा नायक कहता है कि उसी लड़की को कभी-कभी अज्ञानवश या मन गड़न्त धारणा के कारण बदचलन कहा जाये तो इसमें कहने वाले की दुर्भावनाएँ उद्घाटित होती हैं और इन बातों पर विश्वास करना भी अपवित्र होता है। जब व्यक्ति किसी दूसरे के आचरण से असहनीय हो जाता है तब वह उसके अच्छे आचरण को भी अपवित्र बताता है। ऐसा कहने पर वह स्वयं अपवित्र बन जाता है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में पड़ौसी लड़की के प्रति कथा नायक के मनोभाव व्यक्त किये गये हैं।

2. भाषा सरल व मनोभावानुकूल है।

3. शैली मनोविश्लेषणात्मक है।

14.4 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

14.4.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. प्रस्तुत कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' में कहानीकार ने किसका तुलनात्मक चित्रण किया है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में फेन्स के आर-पार लगावहीन दो परिवारों की जीवन-शैलियों का तुलनात्मक चित्रण किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रश्न-2. फेन्स के इधर और उधर 'फेन्स' किसका प्रतीक है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में फेन्स महानगरीय परिवारों में लगावहीनता तथा व्यक्तिवादी चेतना का प्रतीक है।

प्रश्न-3. 'फेन्स के इधर और उधर' में फेन्स किसकी अनुभूति कराता है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में 'फेन्स' शब्द 'जेल' की अनुभूति कराता है जिसमें दो पड़ौसियों के बीच खड़ी छोटी-सी मर्यादा की दीवार को न लाँघ पाने की व्यंजना होती है।

प्रश्न-4. प्रस्तुत कहानी में कथा नायक के पड़ौस में जो नया परिवार आया है वह किस प्रकार का है?

उत्तर – नए पड़ौसी का परिवार महानगरीय अलगाव वादी भावना रखने वाला और एकाकी जीवन यापन करने वाला था।

प्रश्न-5. कथानायक का परिवार किस प्रकार की भावना रखने वाला परिवार था?

उत्तर – कथा नायक का परिवार परम्परावादी विचारधारा रखने वाला था।

प्रश्न-6. 'फेन्स के इधर और उधर' कहानी का नायक किस बात के लिये मजबूर हो जाता था?

उत्तर – कथानायक के मन में अपने नए पड़ौसियों के प्रति आकर्षण रहता है जो हमेशा उनकी ओर देखने के लिये मजबूर करता रहता है।

प्रश्न-7. कथानायक के परिवार में प्रतिदिन नए पड़ौसियों के प्रति क्या आक्षेप किया जाने लगा?

उत्तर – कथानायक के परिवार वाले नए पड़ौसियों के प्रति दिनोंदिन यह आक्षेप लगाने लगे कि ये लोग मानवीय सम्बन्धों से रहित और एकाकी जीवन व्यतीत करने वाले लोग हैं।

प्रश्न-8. प्रस्तुत कहानी के अनुसार पुराने जमाने में श्वसुराल जाते समय लड़की को क्यों रुलाया जाता था?

उत्तर – एक ऐसी किंवदन्ती है कि जब लड़की शादी के बाद पहली बार श्वसुराल जाती है तो उसे गाँव की सीमा तक रोना शुभ माना जाता था क्योंकि रो-रो कर विदा होने वाली लड़की को उसके श्वसुराल में पर्याप्त सुख मिलता है। यदि लड़की रोती नहीं थी तो उसे मार-मार कर रोने के लिये मजबूर किया जाता था।

प्रश्न-9. ''आदमी का दिल मशीन हो गया है, मशीन'' प्रस्तुत कथन से क्या अभिप्राय है?

उत्तर – आज का मानव दिल केवल काम करने की मशीनी ममता रखता है, उसमें मानवीय ''संवेदनाएँ जरा-सी भी नहीं रह गई हैं। व्यक्ति हमेशा अलगाववादी प्रकृति रखते हुए एकाकी जीवनशैली को अपनाये हुए है अत: मानवीय मन मशीन की तरह संवेदना रहित है।

प्रश्न-10. विदाई के समय न पड़ौसी लड़की के रोने पर अम्मा ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?

उत्तर – नई पड़ौसी लड़की शादी के बाद विदाई के समय बिना रोये खुशी-खुशी श्वसुराल जाने लगी तो अम्मा ने कहा कि अधिक पढ़-लिख जाने के कारण लड़की का मन कठोर हो जाता है, उसमें अपने घर व माँ-बाप के प्रति मोह नहीं रहता है।

प्रश्न-11. पड़ौस की लड़की की शादी से कथानायक की दादी को सबसे अधिक बेचैनी क्यों हुई?

उत्तर – जब कथानायक की दादी ने यह सुना कि पड़ौसी की लड़की की शादी भी हो गई और किसी को पता भी नहीं चला तो उसे बेचैनी हो उठी उसने कहा कि, ''न रोशन चौकी न धूम-धड़ाका न तर पकवान। ऐसी कंजूसी किस काम की। और फिर ऐसे मौके पर अपने पड़ौसी को भी न पूछना, वाह रे इन्सानियत।''

प्रश्न-12. कथानायक का मित्र राधू पड़ौसी लड़की के सम्बन्ध में क्या धारणा रखने लगा?

उत्तर – कथानायक के मित्र राधू की धारणा थी कि पड़ौसी की लड़की सच्चरित्र नहीं थी वह दुनियाँ देखी हुई लड़की थी इसलिये वह शादी के बाद विदाई के समय नहीं रोई।

प्रश्न-13. कथानायक को उस समय अजीब सा खालीपन क्यों अनुभव हुआ जब उसके पड़ौसी लड़की की शादी हो गई थी?

उत्तर – समय रहते हुए कथानायक उस लड़की से कभी वार्तालाप नहीं कर सका और न उससे अपना परिचय बढ़ा सका इस बात से उसे अजीब-सा खालीपन अनुभव होने लगा था।

प्रश्न-14. कहानी का नायक अपने पड़ौसियों के प्रति क्या अभिलाषा रखता था?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

उत्तर – कथानायक सोचता था कि पड़ौसी लोग हमारे परिवार से घुल-मिल जाये, मेल-जोल रखें, आना-जाना बनाएँ और हम लोगों की तरह वे लोग भी हमारी दिनचर्या को अक्सर रुचि लेकर देखें।

प्रश्न-15. प्रस्तुत कहानी फेन्स के इधर और उधर' की क्या मौलिक विशेषता है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी 'ज्ञानरंजन द्वारा रचित प्रभावशाली कहानी है। शिल्प के स्तर पर कहानी में कलागत पच्चीकारी व औपचारिकता नहीं है परन्तु कथ्यानुरूप संश्लिष्टता पूरी तरह विद्यमान है।

14.4.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. '' 'फेन्स के इधर और उधर' कहानी की मूल संवेदना अलगाव से सम्बंधित है।'' स्पष्ट कीजिये।

अथवा

ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में स्पष्ट किया गया है कि आज आधुनिक और परम्परागत परिवारों के दृष्टिकोण पूरी तरह से भिन्न हैं। महानगरीय जीवन में मानव सम्बन्ध अत्यन्त सीमित दायरे में सिमट कर रह गया है। कहानीकार ने ऐसे ही दो परिवारों के दृष्टिकोण, उनकी जीवनशैली का सुन्दर चित्रण किया है।

फेन्स ही दोनों पड़ौसियों को एक दूसरे से अलग करता है। यद्यपि यह फेन्स इन दोनों पड़ौसियों के बीच नाम मात्र का निषेध है क्योंकि यह तो मिट्टी की एक फुट ऊँची दीवार है जो एक मेड़ मात्र है किन्तु इस मेड़ के इधर और उधर दो जीवन दो प्रकार की जीवनशैलियाँ एक-दूसरे से कटी हुई और अपरिचित रहती हैं और अपना जीवन बिताती हैं। फेन्स के एक ओर कथानायक का परिवार जो परम्परागत रूढ़िवादी और पौराणिक रीति-रिवाजों और मान्यताओं को सहेज कर चलता है। इनकी हर सांस रूढ़िवादी संस्कारों में बाँधी हुई है। इन्हें फेन्स के उस पार का जीवन कतई रास नहीं आता है क्योंकि उधर का जीवन आधुनिक सभ्यता का प्रतीक है, जिसमें नयापन है और पौराणिकता से पूरी तरह फट चुका है। परिणामत: दोनों परिवार एक दूसरे के निकटतम पड़ौसी हैं किन्तु एक दूसरे से अपरिचित, अनजान और बेखबर रहकर जीवन बिताते हैं। दोनों ही जीवन अलगाव की समस्या से जूझ रहे हैं। यही इस कहानी की मूल संवेदना और केन्द्रीय भाव है।

प्रश्न-2. आत्म कथात्मक शैली में लिखी गई कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' के नायक के चरित्र पर एक टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी में स्पष्ट रूप से कथानायक का कोई नाम नहीं दिया गया है उसे केवल 'मैं' से ही जाना जाता है। यह कहानी आत्मकथात्मक शैली में ज्ञानरंजन द्वारा प्रस्तुत की गई है, जिसमें दो अलग-अलग परिवारों की जीवनशैली, दृष्टिकोण व रीति-रिवाजों का चित्रण किया गया है। कथा नायक का चित्रण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है –

1. कथानायक चिन्तनशील व्यक्ति है। यद्यपि उसका अपना परिवार पौराणिक परम्परावादी और प्राचीन विचारधारा वाला है, फिर भी वह अपने पड़ौसी परिवार की जीवनशैली के बारे में सोचता रहता है।

2. दूसरों के प्रति आकर्षित रहने वाला व्यक्ति है वह अपने पड़ौसियों की प्रत्येक गतिविधि एवं दिनचर्या का ध्यान रखता है।

3. वह पड़ौसी की लड़की के प्रति काफी रूचि रखता है। हमेशा वह इधर की ओर देखता है। उस लड़की का हँसना व प्रसन्न रहना कथानायक को काफी अच्छा लगता है।

4. तुलनात्मक दृष्टिकोण कथा नायक के मन पर हमेशा हावी रहना है। वह दोनों परिवारों के तौर-तरीकों, विचार धाराओं व रहन-सहन, खान-पान आदि की तुलना करता रहता है।

5. कथा नायक अपने पड़ौस के प्रति सदैव सद्भावना रखने वाला व्यक्ति है। वह अपने पड़ौसियों के प्रति कोई भी बात खिलाफ रूप में सुनना पसन्द नहीं करता है। अपने मित्र राधू द्वारा पड़ौस की लड़की के संदर्भ में दी जाने वाली धारणा को घृणात्मक मानता है।

6. कथानायक दब्बू किस्म का व्यक्ति है जो अपनी पड़ौसी लड़की से काफी दिनों तक बात नहीं कर पाता है। वह समय रहते उससे परिचय भी प्राप्त नहीं कर पाता है और कुछ समय बाद उसकी शादी हो जाती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

7. आधुनिकता का हिमायती बनकर अपने पड़ौस की जीवनशैली को आज के युग की अनिवार्यता मानता है। उनके जीवन कार्यों के विरूद्ध कुछ भी सुनना उसे पसन्द नहीं है।

8. कथानायक 'मैं' परम्परावादी जीवन के अनुरूप होता है।

14.4.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. सिद्ध कीजिये कि 'फेन्स के इधर और उधर' कहानी आधुनिक कृत्रिम असम्पृक्त कहानी की यथार्थवादी कहानी है।

अथवा

सिद्ध कीजिये कि महानगर के बदले हुए परिवेश के परम्परागत जीवन मूल्यों व दृष्टिकोण के बीच एक दुर्लभ खाई 'फेन्स के इधर और उधर' में व्यंजित हुई है।

अथवा

'फेन्स के इधर और उधर' कहानी की मूल भावना अलगाव से सम्बंधित है, स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानी 'फेन्स के इधर और उधर' एक सुप्रसिद्ध कहानी है जिसमें आधुनिक जीवन में निरन्तर बढ़ती हुई अलगाव की समस्या को यथार्थ के कोण से उभारा गया है। महानगरीय परिवेश के संदर्भ से परम्परागत जीवन दृष्टि और नवीन मूल्यवत्ता के बीच निरन्तर बढ़ती जा रही खाई को यथार्थ शैली में व्यक्त किया गया है।

कहानी की मूल भावना—प्रस्तुत कहानी में दो परिवारों के बहाने, दो जिन्दगियाँ, दो जीवन दृष्टिकोणों व जीवन की दो विचारधाराओं को स्पष्ट किया गया है। फेन्स ही दो परिवारों के बीच में एक ऐसा संकेत है जो बताता है कि इस पार कथानायक का वह परिवार है जो परम्परावादी एवं पौराणिक विचारधाराओं को अपने में सहेज कर चलने वाला परिवार है, इस परिवार के लोग हमेशा रूढ़ीवादी संस्कारों में साँस लेने वाले लोग हैं। फेन्स के उस पार रहने वाला परिवार आधुनिक व नवीन सभ्यता या जीवन शैली का प्रतीक है। उस जीवन में नयापन है, खुलापन है, आजादी है और मनमर्जी है। फेन्स एक सामान्य एक फुट ऊँची मिट्टी की मेड मात्र ही है किन्तु इस मेड के इधर और उधर दो जीवन और दो प्रकार की जीवन दृष्टियाँ एक-दूसरे से कटी हुई और अपरिचित रहती हैं और अपना जीवन यापन करती हैं। दोनों परिवार अलगाव की समस्या से जूझ रहे हैं। यही इस कहानी की मूल संवेदना है।

अपरिचित और असम्पर्कित जीवन—"हमारे पड़ौस में अब मुखर्जी नहीं रहता है, अब उसका तबादला हो गया है। अब जो लोग आये हैं, उनसे हमें कोई वास्ता नहीं। वे लोग पंजाबी लगते हैं शायद पंजाबी न हों। कुछ समझ में नहीं आता है उन लोगों के बारे में। जब से वे आये हैं तब से उनके बारे में जानने की एक अजीब-सी झुंझलाहट हो रही है, पता नहीं क्यों मुझसे अनासक्त नहीं रहा जाता है .....मैं उन्हें सपरिवार अपने घर बुलाना चाहता हूँ, पर उन लोगों को मेरी भावनाओं की संभावना भी महसूस नहीं होती शायद।" बिना किसी भूमिका के कहे गये इस कथ्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रस्तुत कहानी इसी अलगाव की समस्या का मूल भाव व्यक्त करती है। आज के इस युग में महानगरीय जीवन का बस यही दृष्टिकोण है। किसी को किसी से किसी भी प्रकार का लेना-देना नहीं है। कोई सम्पर्क नहीं है, कोई परिचय नहीं है, कोई दिलचस्पी नहीं है। नई सभ्यता के द्वारा दिया जाने वाला यह एकाकीपन का तोहफा पौराणिक भावनाओं वाले व्यक्तियों को कतई रास नहीं आया है। वे सोचते हैं कि इतने नजदीक रहकर भी एक-दूसरे से अपरिचित जीवन कैसे जिया जा सकता है। कहानी नायक स्वयं पुराने और रूढ़िवादी विचारों वाले परिवार के सदस्य हैं। उसके पड़ौस में आकर रहने वाला परिवार आत्मकेन्द्रित और अपने में सिमटा हुआ प्रतीत होता है जिसके बारे में उसका परिवार अनेक प्रकार की आक्षेप युक्त बातें बनाता है। उसकी जीवनचर्या को तीखी नजर से देखा जाता है। उस नए दृष्टिकोण के समर्थक और नए जीवन मूल्यों के विश्वासी परिवार में एक युवती भी है, जिसे कहानी का नायक लगातार देखता रहता है। वह उनकी खुशहाल जिन्दगी के बारे में आश्चर्यजनक भाव रखता है और सोचता है कि ये लोग कितना हँसते हैं कि बेसुध हो जाते हैं। दोनों परिवार एक दूसरे के नजदीक हैं किन्तु बहुत दूर भी।

परम्परावादी जीवन मूल्य—फेन्स के इधर का जो कथानायक का परिवार है, वह परम्परावादी जीवन मूल्यों का पोषक है। वह अपने पड़ौसी परिवार की हर प्रकार की गतिविधियों पर नजरें रखता है। उस परिवार को केवल कथानायक ही नहीं देखता है बल्कि उसका पूरा परिवार प्रश्निल नजरों से देखता रहता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

''मैं प्रतिदिन किंचित् मजबूर हो जाता हूँ, मुझे अपने नए पड़ौसी के प्रति एक खिचाव महसूस होता है। मैं ही क्यों, पप्पी भी अक्सर कौतुहल भरी उस लड़की के कुर्ते की तारीफ करती रहती हैं। भाभी भी रसोई घर में से जब-तब उस घर की ओर झाँकती रहती हैं। दादी को तो यहाँ तक पता है कि कब पड़ौसी के यहाँ सिंघाड़ा और लौकी खरीदी गई और कब उसके यहाँ चूल्हा सिलगा है। इसके बावजूद वे लोग हम लोगों में रुचि नहीं लेते हैं। वह लड़की हमारी तरफ कभी नहीं देखती है, उसके माँ-बाप भी नहीं देखते हैं।''

प्रस्तुत कथ्य के माध्यम से कहानीकार ने इस बात को स्पष्ट किया है कि ये दोनों परिवार न केवल विपरीत हैं अपितु पूर्णतः भिन्न और विरोधी विचारधारा व जीवनशैली वाले हैं।

आज हम देख रहे हैं कि नई पीढ़ी के लोग अपनी जीवन दृष्टि इतनी बदल चुके हैं कि उन्हें परम्परागत रीतियों की कोई सरोकार नहीं है। वे लोग पौराणिकता से कट चुके हैं। उसकी उपेक्षा भी करने लगे हैं। यह महानगरीय जीवन की एक विचित्र विडम्बना है कि फेन्स के उस पार विवाह जैसा मांगलिक कार्य सम्पन्न हो जाये और इस पार उसे दूसरे दिन सूचना मिले और वह भी किसी दूध वाले के द्वारा। फेन्स के इधर का जीवन उन परम्परावादी मूल्यों का जीवन है जो आज के इस बदलते हुए दौर में निरर्थक हो गया है।

जीवन का नया दृष्टिकोण – प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने फेन्स की आड़ में दोनों ओर बसे परिवारों के विपरीत दृष्टिकोण और विपरीत जीवनशैली की एक ऐसी व्यथा को चित्रित किया गया है जो आज के युग का एक विचारणीय तथ्य है। महानगरों के जीवन का दूसरों के जीवन से कोई ताल्लुक नहीं होता है। वे लोग अपने में ही सिमट कर जीने में विश्वास रखते हैं। फेन्स के उधर का जीवन प्रसन्नचित्त, स्वतंत्र, कुण्ठारहित और अलग-थलग है तथा फेन्स के इधर का जीवन संकोची, संस्कारशील व प्राचीनरस्म एवं रिवाजों से युक्त है। यही कारण है कि उधर के परिवार में विवाह जैसा कार्य सम्पन्न हो जाता है तो इधर के लोगों को आभास तक नहीं होता है। उस परिवार की लड़की विदाई के समय नहीं रोती है तो उसे बेशर्म माना जाता है। कहानी नायक का मन उस परिवार की ओर अधिक आसक्त है और उधर नए संस्कारों की अर्गला उसको बाँधे हुए है। कथा नायक उधर झाँक-झाँक कर थक जाता है किन्तु उधर की नायिका जरा-सा भी इधर देखती नहीं है। कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई रूचि नहीं है। इधर का लड़का सहृदय है और उधर की लड़की कठोर और निर्मम। उधर विवाह हो गया, न कोई रोशन चौकी, न तर माल, न धूम धड़ाका और न लड़की की आँखों में आँसू की दो बूँद। यह इधर के परिवार की आलोचना है।

ज्ञान रंजन ने आधुनिक समाज में निरन्तर बढ़ती जा रही अलगाव की समस्या को अजनबीपन के रंग में रंगकर प्रस्तुत किया है जिसके लिये दो भिन्न परिवार की व्यंजना को आधार बनाया गया है। भिन्न जीवन-मूल्यों के विश्वासी पड़ौसी परिवारों के बीच अलगाव और असंपर्क को व्यंजित करने के लिये फेन्स को माध्यम बनाया गया है। 'फेन्स' एक फुट ऊँची मिट्टी की मेड़ भर है जिसमें सब्जी वाला, अखबार वाला, दूध वाला, पोस्टमैन, सफाई वाला आदि तो आ जा सकते हैं किन्तु उस पार के परिवार की दृष्टि तक इस पार आने में असमर्थ है। यही कारण है कि यह फेन्स अपने पड़ौसी के लिये कभी न लाँघने वाला आभास कराती रहती है।

डॉ. मदान ने फेन्स के इस महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए ठीक ही कहा है कि ''बीच की फेन्स ने एक दूसरे को अलगाव दिया है। इसके अन्तर के दृष्टिकोण ने अन्तराल को गहरा दिया है। इस तरह दो पड़ौसियों को लेकर इनमें अजनबीपन की अनुभूति की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है। फेन्स के उधर समाज का भय नहीं है और इधर डर ही डर है। उधर पड़ौसी के लिये उदासीपन है और इधर पड़ौसी की निंदा का बाजार गर्म है। इस तरह असंगति के स्वर पर कहानी का सृजन हुआ है।''

निष्कर्ष – महानगरीय आधुनिक जीवन की निरंतर बढ़ती हुई अलगाव की समस्या का अत्यन्त सटीक व यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया गया है। इसकी संवेदना नई व पुरानी मान्यताओं के समर्थक दो पड़ौसी परिवारों की असम्पृक्तता का चित्रण करना है।

प्रश्न- 2. ''उन दोनों परिवारों के मध्य 'फेन्स' दुर्लध्य खाई की तरह प्रतीत होती है।'' कथन की पुष्टि करते हुए 'फेन्स के इधर और उधर' कहानी के नामकरण और उद्देश्य पर प्रकाश डालिये।

अथवा

''परम्परागत जीवन-मूल्यों और नये जीवन-मूल्यों के मध्य खाई को दो परिवारों के माध्यम से स्पष्ट करना ही 'फेन्स के इधर और उधर' कहानी का उद्देश्य है।'' कथन की समीक्षा करते हुए कहानी के नामकरण का सार अपने शब्दों में व्यक्त कीजिये।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उत्तर – प्रस्तुत कहानी ज्ञानरंजन द्वारा रचित कहानियों में सर्वाधिक उत्कृष्ट कहानी है जिसका कथानक मानव जीवन के दो अलग-अलग दृष्टिकोणों के दायरे पर संजोया गया है। महानगरीय परिवेश के संदर्भ में मानव सम्बन्ध कितने सीमित हो गये हैं इस तथ्य को प्रस्तुत कहानी के कथानक के रूप में स्पष्ट किया गया है। इसमें यह दर्शाया गया है कि मौहल्ले में निकटतम दो पड़ौसी परिवार फेन्स को एक दुर्लध्य खाई मानकर भिन्न-भिन्न तरीके से अपरिचित और तटस्थ जीवन व्यतीत करते हैं। एक-दूसरे से अलगाव की भावना रखते हैं, असंपृक्त का भाव रखते हैं।

फेन्स के इधर और उधर

''पहले हमारे पड़ौस में मुखर्जी रहते थे परन्तु अब उनका तबादला हो गया है, उनके स्थान पर कोई पंजाबी जैसे लोग आकर रहने लगे हैं।'' आत्म कथात्मक शैली में कथानायक कहता है। कथानायक जो कि पड़ौस का युवक है वह अपने पड़ौसी के बारे में अनेक प्रकार की जिज्ञासाएँ रखता है। उनकी जीवनशैली को देखकर हैरान रहता है और उसकी उत्सुकता निरन्तर तीव्रता लिये हुए है। वह हमेशा फेन्स के उधर की हर गतिविधि को देखता है। नायक अपने मन में यह भी इच्छा महसूस करता है कि वह परिवार हमारे परिवार से सम्पर्क बनाए। हममें रूचि ले, हमारी तरफ देखे। वह उन लोगों को अपने घर पर बुलाना चाहता है किन्तु उधर से इस प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई रुचि नहीं और कोई वास्ता नहीं। वह परेशान रहता है। आधुनिक शहरी सभ्यता के अनुसार लोग एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं रखते हैं और मात्र दिखावटी व अव्यावहारिकता से युक्त जीवन जीते हैं। नायक प्रतिदिन उधर की ओर दृष्टि लगाये रहता है। हर रोज कुछ-न-कुछ नयापन अवश्य ही दिखाई देता है, जिसे देखकर उसकी जिज्ञासा निरन्तर बढ़ती जाती है। उस परिवार में एक युवती है जिसकी गतिविधियाँ कथा नायक व उसके परिवार के अन्य सभी लोगों को आकर्षित करती हैं। वह खुलकर हँसती है और हँसने में अपनी सुध-बुध भी खो देती है। हँसते-हँसते उसके सीने पर से दुपट्टा भी अलग हो जाता है, जिससे उसकी जवानी, अपनी हरकतें करती हुई स्पष्ट दिखाई देती है। कथा नायक के माता-पिता उस लड़की के आचरण को लेकर आशंकित रहते हैं। धीरे-धीरे उसके बारे में बातें करते हैं जिससे उनका जीवन कुण्ठायुक्त दिखाई देता है। कथा नायक के परिवार को उस परिवार के सदस्यों का आपसी व्यवहार अजीब-सा लगता है। दोनों परिवारों के बीच 'फेन्स' एक फुट की मिट्टी की जर्जर मेड है जिससे फल वाले, सब्जी वाले, दूध वाले, अखबार वाले, सफाई वाले, टेलीफोन वाले तो आ-जा सकते हैं, किन्तु उस पार की नजरें तक भी इस पार नहीं आ पाती हैं। कथा नायक चाहते हुए भी उधर नहीं जा पाता है क्योंकि पड़ौसियों की अलगाववादी प्रवृत्तियों से वह संकोच ग्रस्त रहता है। नायक की नजरें तो कई बार फेन्स को लाँघ कर वहाँ पहुँच चुकी हैं किन्तु उधर की दृष्टि एक बार भी इधर नहीं आ सकी है। वह अपने पड़ौसी परिवार की जवान लड़की की मस्त चाल, मचलती जवानी, खुला परिधान और मुक्त चाल को देखकर परेशान हो जाता है। आश्चर्य तो उस समय होता है कि जब वह हँसती हुई अपनी सुध खो देती है और उसका दुपट्टा इसकी उन्नत छाती से अलग होकर हरकत भरी जवानी को बे-नकाब कर देता है तब भी उसके माँ-बाप निश्चिंत रहते हैं।

इस परिवार की लड़की पूर्णतः अपनी परम्पराओं की चहार-दीवारी में लोक-लाज के नियमों से कैद रहती है और जब भी बाहर जाती है तो अपनी भाभी के साथ नजरें जमीन में गड़ाये, दुनियाँ की समस्त हरकतों से बेखबर सिमटी हुई जाती हैं। उस पार के नयेपन को देखकर कथानायक के परिवार में निन्दा का बाजार गर्म रहता है।

कथानायक का परिवार परम्परागत, मध्ययुगीन संस्कारों से युक्त है जिसके लिये वर्तमान की सभी बातें अजीब-सी लगती हैं। फेन्स के उस पार का परिवार अपने जीवन को अपने नये अंदाज में जीता है। उसकी अपनी जीवनशैली, अपना दृष्टिकोण, अपना ही विधान है जिसमें आजादी है, निरंकुशता है, नयापन है, खुशी है, खुलापन है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी का कथानक अत्यंत संक्षिप्त है, जिसमें रोचकता व नाटकीयता, जिज्ञासा व सम्भाव्यता का अच्छा समायोजन किया गया है। इसका कथ्य नगण्य है किन्तु इसमें महानगरीय जीवन की कृत्रिमता और असपृक्तता का सुन्दर चित्रण किया गया है।

कहानी का नामकरण

प्रस्तुत कहानी का नामकरण शहरी जीवन की आत्मनिष्ट प्रवृत्ति और अलगाव की स्थिति को प्रकट करने वाले फेन्स के प्रतीक रूप में हुआ है जो ऐसी अलगाव व विभाजन की सूचक है जिससे दो पड़ौसी एक-दूसरे परिवार से जरा-सा भी मेल-जोल नहीं

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University)

रख पाते हैं। भौतिक रूप में यह फेन्स मिट्टी की छोटी-सी मेड है परन्तु वैचारिक दृष्टि से यह उन दोनों परिवारों के चिन्तन का प्रतीक है। कथानायक का परिवार परम्परावादी व रूढ़िग्रस्त है वे सभी मध्यकालीन रूढ़ संस्कारों से आक्रान्त हैं। यद्यपि वे पड़ौसी से मेल-मिलाप बनाना चाहते हैं किन्तु उनके रहन-सहन और चिन्तन का दृष्टिकोण परम्परागत है जो आधुनिक जीवनशैली की दृष्टि में उपेक्षित है। दूसरी ओर वह परिवार है जो पूर्णत: आत्मनिष्ठ है, कृत्रिम आधुनिकता से युक्त और अलगाववादी दृष्टिकोण रखने वाला है। इसमें सामाजिक चेतना की भावना का प्रसार नहीं है और असम्पृक्त जीवन को ही अपना आदर्श मानता है। अत: फेन्स के दोनों ओर के परिवारों के चित्रण को प्रस्तुत करने वाली यह कहानी है। अत: इस दृष्टि से कहानी का यह नामकरण उचित और सार्थक है।

कहानी का शीर्षक रोचक, आकर्षक और कथानक को व्यंजित करने वाला है, साथ ही इसमें एक अजीब-सा कौतूहल है।

मूल संवेदना व संदेश

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से कहानीकार ज्ञानरंजन ने दो ऐसे परिवारों की जुदा-जुदा दृष्टिकोणों को अभिव्यंजित किया है जो एक-दूसरे के अत्यन्त निकट के पड़ौसी हैं, दोनों की गतिविधियाँ काफी करीब हैं किन्तु उन दोनों परिवारों के बीच 'फेन्स' जो बालू की एक फुट ऊँची, कच्ची व क्षत-विक्षत मेड मात्र है वह दोनों परिवार की भिन्नता की प्रतीक है। कहानीकार ने परम्परागत जीवन-मूल्यों और नवीन जीवन-मूल्यों के मध्य उत्पन्न खाई को इन्हीं दो परिवारों के माध्यम से स्पष्ट किया है। इस उद्देश्य को संप्रेषित करने में कहानीकार को पर्याप्त रूप में सफलता प्राप्त हुई है। महानगरों के समकालीन बदलते हुए परिवेश और संदर्भ में परम्परागत जीवन-मूल्यों और नवीन जीवन-मूल्यों के अन्तर को समझाने में कहानीकार ने पर्याप्त संजीदगी एवं चिन्तन को काम में लिया है। दो पड़ौसियों को एक-दूसरे से असम्बद्ध करने वाला यही एक फेन्स है। इस फेन्स की एक ओर परम्परागत जीवन दृष्टि से जुड़ा परिवार है और दूसरी ओर नई जीवन दृष्टि से युक्त आधुनिक बोध का प्रतीक परिवार है। प्रस्तुत कहानी में कथाकार ने दो जीवनशैलियों के अन्तर की अभिव्यंजना की है। यह भी संदेश दिया है कि जब दोनों परिवारों के विचार ही अलग-अलग हैं तो आपसी सम्बंधों का कहीं प्रश्न ही नहीं उठता है। इस कहानी में यह भी व्यंजित किया है कि परम्परागत जीवन-दृष्टि रखने वाले परिवारों में भले ही संस्कारों की रूढ़ि ग्रस्तता रहती है, किन्तु उनमें दूसरों के साथ सम्बन्ध बनाए रखने की सामाजिक चेतना भी दिखाई देती है, जबकि नई जीवन-दृष्टि वाले लोग आत्मनिष्ठ बने रहते हैं वे स्वयं को ही विशिष्ट कोटि का मानते हैं और इसी अहंकार के कारण वे अन्य सुसंस्कारों से नफरत करते हैं। उनकी उपेक्षा करते हैं, उन्हें हीन मानते हैं। ऐसे लोग कृत्रिम जीवन जीते हैं और अन्त:करण की संवेदनाओं से खोखले होते हैं। प्रस्तुत कहानी का एक उद्देश्य वर्तमान महानगरीय जीवनचर्या पर व्यंग्य करना है।

14.5 सारांश

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि प्रस्तुत कहानी में ज्ञानरंजन ने हमारे सामाजिक जीवन में व्याप्त आधुनिकी व परम्परागत जीवन के निरन्तर बढ़ते हुए अन्तर के अन्तराल को बड़ी ही चतुराई से दो परिवारों के माध्यम से चित्रित किया है। इसमें कहानी के सभी तत्त्वों व उनकी विशेषताओं का निर्वाह हुआ है। इसका शीर्षक भी रोचक व हलचल उत्पन्न करने वाला है, संक्षिप्त है। कहानीकार इसके उद्देश्य को सम्प्रेषित करने में पूर्ण रूप से सफल रहा है। यद्यपि इसमें शिल्पगत पच्चीकारी का अभाव है किन्तु इसमें कथ्य की संश्लिष्टता पूरी तरह से विद्यमान है। यह कहानी पाठक को अन्त:करण की गहराई तक उद्वेलित करती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इकाई- 15 : हेतु भारद्वाज

संरचना

15.0 प्रस्तावना

15.1 उद्देश्य

15.2 परिचय

15.3 जमीन से हट कर

15.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

15.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

15.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

15.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

15.6 सारांश

15.0 प्रस्तावना

डॉ. हेतु भारद्वाज राजस्थान साहित्य अकादमी की अध्यक्षा हैं। राजस्थान की हिन्दी युवा कहानी को एक नई और सम्माननीय इमेज देने वाली अग्रणी कथाकार डॉ. हेतु भारद्वाज का जन्म 15 जनवरी, 1937 में उत्तरप्रदेश के रामनेर नामक गाँव में हुआ। डॉ. भारद्वाज ने कहानियों, कविताओं, एकांकियों, आलोचनाओं तथा विविध विषयों पर टिप्पणियों का नियमित लेखन किया है। 'तटस्थ' मासिक का सम्पादन 'आज की कविता' आन्दोलन का सम्पादन व प्रस्तावना सन् 1965 से प्रतिवर्ष की श्रेष्ठ कहानियों का प्रतिनिधि संकलन सम्पादित करने के अतिरिक्त राजस्थान साहित्य अकादमी की मासिकी 'मधुमती' का सम्पादन कार्य भी बखूबी निभा रहे हैं। आपने अपनी कहानियों में जीवन-मूल्यों के संक्रमण के दर्द को बड़ी शिद्दत से उभारा है।

15.1 उद्देश्य

यहाँ हम हेतु भारद्वाज एवं उनकी कहानी जमीन से हटकर के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

15.2 परिचय

इनके प्रमुख कहानी संकलनों में 'तीन कमरों का मकान', 'जमीन से हट कर', 'चीफ साहब जा रहे हैं', 'तीर्थयात्रा', 'सुबह-सुबह', 'बनती-बिगड़ती लकीरें' आदि प्रमुख हैं। व्यंग्य लेखों का संकलन 'छिपाने को छिपा जाता' है। आलोच्य पुस्तक 'परिवेश की चुनौतियाँ और साहित्य' प्रमुख हैं। आपके द्वारा रचित कहानी 'जमीन से हट कर' पर राजस्थान साहित्य अकादमी का पुरस्कार आपको प्रदान किया गया है।

15.3 जमीन से हटकर

प्रस्तुत कहानी एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो न केवल अपने परिवार और वर्ग से कट चुका है, बल्कि अपनी भूमि से भी अपने आपको पृथक् कर चुका है। गाँव से निकल कर शहर में अफ़सर बन चुका कथानायक गंगाधर अब अपनी मातृभूमि की जड़ों से पूरी तरह कट गया है। उसके नव-अंगीकृत वर्ग की आर्थिक आवश्यकताओं ने उसे अब इस योग्य भी नहीं रहने दिया कि अपनी माँ के लिये भी कुछ पैसे बचा कर रख सके। यदि इस बिन्दु पर हम विचार करें और अपनी आँखें खोलकर देखें तो हमारे इर्द-गिर्द न जाने ऐसे लोग आसानी से मिल सकते हैं जो इसी प्रकार से गंगाधर का अच्छा खासा किरदार निभा रहे हैं। प्रस्तुत कहानी में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

भावुकता को स्थान नहीं दिया गया है और इसकी भाषा ग्रामीण शब्दावली से युक्त है जिसकी वजह से इसे प्रमुख रूप से प्रामाणिकता प्राप्त हुई है। कथाकार की लेखन-शैली का प्रतिनिधित्व करने वाली यह कहानी अपने आपमें अत्यंत रोचकता लिये हुए है।

15.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(1)

''दसवीं पास विद्याधर ने कितना गहरा, तीखा व्यंग्य उसके प्रति किया है। वह जानता है कि इन शब्दों को लिखने में विद्याधर का ज्यादा वक्त नहीं लगा होगा। उसने गंगाधर से रुपये भेजने की प्रार्थना नहीं की, प्रत्युत उसे कठघरे में खड़ा कर दिया है। उसे लगा वह वाकई अपराधी है और विद्याधर के समक्ष बहुत-बहुत छोटा हो गया है। क्या वाकई उसने अपने फ़र्ज की ओर कभी ध्यान नहीं दिया?''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'जमीन से हटकर' पाठ से उद्धृत है। इसमें कथाकार हेतु भारद्वाज ने ऐसे तथाकथित सभ्य लोगों के आचरण का यथार्थचित्रण किया है जो उच्च पद पर पहुँचकर शहरी जीवन की चकाचौंध और भौतिक आवश्यकताओं के मोह जाल में फँसकर अपने परम कर्त्तव्य से विमुख हो जाते हैं।

व्याख्या – कहानी का मुख्य पात्र गंगाधर एक निहायत गँव का पढ़ा-लिखा व्यक्ति है जो अफसर बनकर शहर मे रहने लग जाता है और अपने ग्रामीण सम्बन्धों से अपने आपको दूर कर लेता है। वह शहरी चमक दमक में अपने छोटे भाई और अपनी बीमार वृद्धा माँ के प्रति कर्त्तव्यों को भूल जाता है। उसको उसके छोटे भाई के द्वारा एक पत्र लिखा जाता है जिसमें अपनी माँ का इलाज कराने के लिये कुछ पैसों की पेशकश की जाती है। नायक का अनुज कम पढ़ा-लिखा, मात्र दसवीं कक्षा उत्तीर्ण है, जो गाँव में रहकर अपनी पुश्तैनी ज़मीन को और अपनी बुजुर्ग माँ को संभालता है।

विद्याधर ने पत्र में लिखा कि यदि कुछ पैसे भेज दो तो माँ का इलाज कराने के लिये उसे जयपुर ले जायें। यह हमारा फ़र्ज भी है। विद्याधर के पत्र का एक-एक शब्द अत्यंत तीखे व्यंग्यों से युक्त था। गंगाधर एक आला अफसर बन गया था और जब उसने अपने भाई के पत्र को बार-बार पढ़ा तो उसके अफसर मन में अपनी माँ और भाई के प्रति कर्त्तव्य का भाव उमड़ने लगा और अपने आपकी बेचारी हालत पर उसे लज्जित व आत्मग्लानि से युक्त तरस का भी सामना करना पड़ रहा था।

यद्यपि पत्र का आकार काफी छोटा था परन्तु उसके एक-एक शब्द में मन के अन्त:करण तक चोट पहुँचाने की क्षमता थी। यद्यपि विद्याधर अभी छोटा था किन्तु उसने पत्र में अपनी जमीन से जुड़ने का जो भाव व्यक्त किया था वह अत्यन्त सशक्त था। गंगाधर जानता था कि इन शब्दों को लिखने में उसे अधिक समय नहीं लगा था किन्तु उसमें निहित व्यंग्य का तीखापन काफी मारक क्षमता वाला था। उस पत्र में केवल पैसे भेजने की प्रार्थना ही नहीं थी बल्कि उसे ऐसा लग रहा था मानो फर्ज की अदालत में उसे इन्सानियत के कठघरे में लाकर खड़ा कर दिया हो जहाँ पर उसे अनेक प्रश्नों के प्रति निरूत्तर भाव से खड़े रहने की शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ रहा हो। चूँकि गंगाधर एक पढ़ा-लिखा और काबिल अफसर था। उसकी अच्छी खासी आय थी और उसे अपने कर्त्तव्यों का भी अहसास था किन्तु वह समय रहते अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह न कर पाने के कारण अपने आपको अपने भाई व अपनी माँ का अपराधी मानकर कठघरे में खड़ा हुआ अनुभव कर रहा था। उसे इस समय ऐसा भी लग रहा था कि मानों कर्त्तव्य की कसौटी पर खरा न उतर पाने के कारण वह विद्याधर से बहुत अधिक छोटा हो गया हो। आज तक गंगाधर ने अपनी माँ की दयनीय और चिन्ताजनक हालत पर कभी विचार नहीं किया था।

विशेष – 1. प्रस्तुत अंश में स्पष्ट किया है कि शहरी जीवन की व्यस्तता और आर्थिक आवश्यकताएं व्यक्ति को कर्त्तव्य से विमुख कर देती है।, 2. अपने बुजुर्गों के प्रति हर संतान का क्या कर्त्तव्य होता है इसकी भी व्यंजना की गई है।, 3. भाषा सरल और भावपूर्ण है।

(2)

''अफसर बनने पर उसने अनुभव किया कि बिना 'स्टेण्डर्ड मैन्टेन' किये वह अपना 'स्टेटस' कायम नहीं कर सकता। जब वह ओ.टी.एस. के प्रशिक्षण में आबू गया था तब उसके पास न तो ढ़ंग का सूटकेस था और न बिस्तर ही। कपड़े भी बस

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जैसे-तैसे थे। यद्यपि इस प्रतियोगिता में योग्यता सूची में उसका प्रथम स्थान रहा था, मगर उसके रहन-सहन के साधनों ने उसे सबसे नीचे धकेल दिया।''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'जमीन से हटकर' कहानी पाठ से अवतरित है जिसमें कहानीकार डॉ. भारद्वाज ने कथानायक की इन्टेलीजेन्स और आर्थिक कमजोर स्थिति का चित्रण किया है।

व्याख्या – कहानी का नायक गंगाधर गांव के एक अत्यंत निर्धन मजदूर किसान का लड़का है जिसके पास आय के पर्याप्त साधन नहीं हैं और घर में कोई अनुकूल सुविधा नहीं है। उसके पिता अपनी अल्प आय में समुचित व्यवस्था बनाए रखते हैं। अपने पुत्र को अनेक महत्त्वाकांक्षाओं के साथ पढ़ाते हैं। सौभाग्य से गंगाधर का आर.ए.एस. में चयन हो गया। जब वह प्रशिक्षण में गया तो उस समय उसकी आर्थिक दशा अत्यन्त दयनीय थी। उसके पास उस समय न तो ढ़ंग का सूटकेस था, न ढ़ंग के बिस्तर थे और न ढ़ंग के कपड़े ही थे। वहाँ जाने के बाद उसे इस बात का अनुभव हुआ कि केवल अफसर बन जाने से कुछ भी नहीं होता है। जब तक वह समाज में अपने रहन-सहन, खान-पान आदि का 'स्टेण्डर्ड मेन्टेन' नहीं करेगा तब तक उसका 'सोसियल स्टेटस' नहीं बन सकता है और जब तक स्टेटस नहीं बनेगा तब तक समाज में उसे कोई कुछ भी नहीं पूछेगा।

यद्यपि इस प्रतियोगिता में उसका प्रथम स्थान रहा है किन्तु उसके रहन-सहन के साधनों के अभाव ने उसे उतना ही नीचे धकेल दिया था और वह अपने सभी प्रशिक्षणार्थी साथियों में अपनी गरीबी और सादगी के कारण परिहास का कारण बन गया था और सभी लोग उसे उपेक्षित भाव से देखने लग गये थे।

विशेष – 1. प्रस्तुत अंश में स्पष्ट किया है कि जो लोग भौतिक सुख-सुविधाओं को जीवन में प्राथमिकता देते हैं। उन्हें भविष्य में परेशानियाँ उठानी पड़ सकती हैं।

2. भाषा-शैली सरल, भावपूर्ण व वर्णनात्मक है।

(3)

''मगर आज इन बातों का गहरा अर्थ उसकी समझ में आने लगा। उसे आश्चर्य होता है कि गाँव के सीधे-सादे पोस्टमैन में तीखा व्यंग्य करने का कितना भद्दा था। उसकी शादी के कुछ दिन बाद ही उसके पिता गुजर गए थे। शादी के सारे माहौल के दौरान वह बहुत उदास थे। आज वह स्वीकार करता है कि उसके व्यवहार और जिन्दगी के प्रति उसके खोखले रवैये ने पिता को भीतर से आहत कर दिया था। इसलिये वह असमय ही चल बसे थे। उसने दो जिन्दगी के एक अलग ही दृष्टिकोण से देखने की कोशिश की जहाँ 'स्टेटस', 'स्टेन्डर्ड', 'कर्टिसी' जैसे कुछ शब्दों की भीड़ में जीवन बँध जाता है। इन्हीं में बन्ध कर वह अपनी जमीन छोड़ चुका।''

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'जमीन से हटकर' कहानी का अंश है जिसमें कथाकार डॉ. हेतु भारद्वाज ने स्पष्ट किया है कि जहाँ शिक्षा मानव को सभ्य बनाती हैं, जीवन का नया दृष्टिकोण देती है वहीं शिक्षित हो जाने पर तथाकथित लोग अपनी गगनचुम्बी उच्च आकांक्षाओं के वशीभूत होकर अपने कर्त्तव्यों को भूल जाते हैं, अपने अतीत को भूल जाते हैं किन्तु जब उन्हें अपने जीवन के यथार्थ से साक्षात्कार होता है तो वे इतने आगे निकल चुके होते हैं कि जहाँ से लौटना उनके वश में नहीं होता है।

व्याख्या – कथानायक गंगाधर जब गहराई से अपने अतीत पर दृष्टि डालता है तो उसे आत्मानुभूति होने लगती है और वर्तमान जीवनशैली पर उसके मन में अनेक प्रश्निल चिह्न उभरने लगते हैं जिनका उत्तर देने में वह असमर्थ होता है। उसे यह जीवन मात्र सामाजिक औपचारिकता लगती है। व्यक्ति अपने जोश में होश खो बैठता है। कल तक जब कथानायक ने अपने पिता के शब्दों से अपने आपको दरकिनार कर दिया था तो उन्हें काफी कष्ट हुआ और उनके दिल में अपनी संतान के प्रति अनास्था का अनुभव हुआ। मगर आज अपने पिता के द्वारा कही गई बातों का गहरा भाव समझ में आने लगा। कथाकार आज एक उच्चाधिकारी हैं और उसकी सोच भी काफी ऊँची है किन्तु उसे यह सोच-सोच कर आश्चर्य होता है कि गाँव के सीधे-सादे सामान्य पद पर कार्य करने वाले एक कम पढ़े-लिखे व्यक्ति अर्थात् उसके पिता की बातों में तीखा व्यंग्य करने का कितना माद्दा था कि वे अपनी बात को अत्यंत सरल व स्पष्ट शब्दों में कहते थे कि किसी को बुरा न लगे किन्तु वे सभी सामान्य सी तथ्यपूर्ण बातें, करारा व तीखा व्यंग्य करने में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

काफी सशक्त थीं। गंगाधर ने अपनी मरजी से विवाह कर लिया था। यद्यपि विवाह कार्यक्रम में उसके परिवार के सभी लोग शामिल थे किन्तु उनमें वह उत्साह व उमंग नहीं थी जो एक ग्रामीण अंचल के लम्बे वैवाहिक कार्यक्रम के अनुकूल होती है। शादी के सारे माहौल के दौरान गंगाधर के पिता काफी उदास थे क्योंकि अपने बड़े पुत्र का विवाह वे काफी उत्साहपूर्वक समूचे समाज की आँखों के आगे करना चाहते थे। शादी के कुछ समय बाद ही वे भगवान् को प्यारे हो गये। आज कथानायक को इस बात का अहसास होता है कि उसका व्यवहार व जीवन का खोखला दृष्टिकोण अपने ही पिता को कितना आहत करता रहा। शायद उनकी असामयिक मृत्यु का भी यही कारण था। गंगाधर सोचता है कि मैंने अपनी इस टीम-टाम की जिन्दगी को एक अलग ही दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया था। ऐसा प्रयास कि जिसमें केवल 'स्टेटस', 'स्टेण्डर्ड' और 'कर्टिसी' जैसे शब्दों की भीड़-भाड़ है और इन्हीं शब्दों से बँधकर जिन्दगी रह जाती है। वह सोचता है कि मेरा जीवन भी कुछ ऐसे ही शब्दों के माहौल में सिमट कर रह गया है।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथाकार ने माता-पिता की भावनाओं की कद्र न करने वालों और मात्र अपनी सुख-सुविधाओं पर जीने वालों पर तीखा व्यंग्य किया है।, 2. वर्तमान कालीन भौतिक-संस्कृति के मोह के कारण व्यक्ति अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो जाता है।, 3. भाषा सरल व भावानुकूल है।

(4)

"क्योंकि उसके पैरों में तो विशिष्ट वर्ग के पंख लग गये थे। विवाह के बाद उड़ने वाले हो गये थे और दोनों ने ही पीछे की ओर व नीचे की ओर देखना छोड़ दिया था। उनके लिये तो बस क्लब था, पार्टियाँ थी, पिकनिक पार्टियाँ थी, शिष्टाचार के नए तौर-तरीके थे और ब्रिज तथा हाउजी खेल थे। इसी उड़ान में उनके घर नई क्राकरी, रेडियो ग्राम, कुकर, सोफा, कूलर जैसी चीजें बढ़ती जा रही थी।"

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के हेतु भारद्वाज द्वारा रचित कहानी 'जमीन से हटकर' पाठ से अवतरित है, जिसमें कथानायक गंगाधर की उच्चमहत्त्वाकांक्षाओं से युक्त मानसिकता एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के जुनून का सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या – प्रस्तुत कहानी का मुख्य पात्र गंगाधर ग्रामीण परिवेश में पल-बढ़ कर शिक्षित होता है और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह आर.ए.एस. में चयनित होकर आला अफसर बन जाता है तथा अपनी मनपसंद लड़की से शादी कर लेता है। उसके पिता बीमा विभाग से क़र्ज लेकर उसी को दे देते हैं जिससे वह अपने 'स्टेटस' और 'स्टेण्डर्ड' के अनुसार वैवाहिक कार्यक्रम स्वयं ही सम्पन्न कर लेता है। उसके माँ-बाप-भाई आदि तो मात्र औपचारिकता निभाते हैं। शादी के बाद जब नायक अपने परिवार, अपने सगे-सम्बंधियों व अपनी जमीन से कटने लगता है तो उसके पोस्टमैन पिता अनेक प्रकार की हिदायतें और सीख देते हैं किन्तु गंगाधर के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती है। गाँव वालों को भी इस बात की प्रसन्नता होती है कि गंगाधर के अफसर बन जाने पर गाँव की सारी समस्या दूर हो जाएगी। ऐसा सोचकर वे अफसर गंगाधर का भव्य स्वागत करते हैं किन्तु गंगाधर अपनी अफसरी के गुरुर में उनसे ढ़ंग का व्यवहार नहीं करता है। वह गाँव वालों को अपने स्टेण्डर्ड का न समझकर उनसे नफरत करता था। क्योंकि उसके पैरों में एक 'विशिष्ट वर्ग' के पंख लगे हुए थे। एक तो आला अफसर और दूसरे मनपसन्द की शहरी पढ़ी-लिखी उसकी पत्नी। बस फिर क्या था, अब तो महत्त्वाकांक्षा के विशाल गगन में ऊँची उड़ान भरने वाले दो आजादी पंछी हो गये थे। दोनों में ही पीछे और नीचे की ओर देखना मुनासिब नहीं समझा। वे जीवन को अलग ही दृष्टिकोण से देख रहे थे। अपनी जिन्दगी में उन्हें क्लब, पार्टियों, पिकनिक पार्टियों, शिष्टाचार के तौर-तरीकों आदि के सिवाय कुछ भी नहीं सूझता था। ब्रिज व हाउजी जैसे विदेशी कीमती खेल उनका मौज-शौक बन गया था। उसी उड़ान में अपने स्टेटस व स्टेन्डट को मेन्टेन करने के लिए घर में कीमती क्रॉकरी, रेडियोग्राम, सोफासेट, कूलर, कूकर जैसी लग्जरी फैसेलिटीज खरीद ली गई और कर्टिसी जैसे शब्दों की मनुहार करने में लीन हो गये।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में गंगाधर जैसे तथाकथित लोगों पर व्यंग्य किया गया है।, 2. भाषा-शैली सरल प्रवाहपूर्ण व भावानुकूल है।

(5)

"गंगाधर की आँखों के सामने अंधेरा छा गया था। पत्नी ने दरवाजा खोला। उसके हाथ से शॉल व उपहार के पैकेट नीचे गिर पड़े। उसने तार पत्नी की ओर बढ़ा दिया। उसे लगा, उसके पैरों के नीचे जमीन नहीं है, वह हवा में झूल रहा है।"

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के हेतु भारद्वाज द्वारा रचित कहानी 'जमीन से हटकर' पाठ से अवतरित है, जिसमें हेतु भारद्वाज ने गंगाधर जैसे तथाकथित लोगों की कर्त्तव्यहीन एवं खोखली शहरी जिन्दगी जीने वालों की स्थिति का परिणामोद्घाटन किया है।

व्याख्या – भले ही गंगाधर एक बड़ा अफसर था, भले ही उसे अपनी पसंद की शहरी व पढ़ी-लिखी जीवन संगिनी मिली। भले ही वह शहर में रहकर अपना स्टेटस मेन्टेन कर रहा था किन्तु वह अपने स्टेटस से, अपने शहरी जीवन के नए दृष्टिकोण से, अपने मनपसंदीदा जीवन साथी से और अपने पढ़े-लिखे सर्किल से कितनी सुखी है यह तो स्वयं गंगाधर आर.ए.एस. ही बता सकते हैं। उनकी आय कम नहीं थी मगर उनके खर्चे भी किसी आर.ए.एस. से कम नहीं थे। उनकी पत्नी मुक्त मन से अपने स्टेटस को बनाए रखने के लिये पानी की तरह पैसा बहाती थी। आज जब विद्याधर का गाँव से पत्र आया तो उसमें अपनी बीमार माँ का इलाज कराने के लिये पैसे मँगवाने की गुहार लिखी हुई थी। उसकी चिन्ता न पत्नी को थी और न स्वयं गंगाधर को। गंगाधर की पत्नी उस पत्र के महत्त्व को दर किनार कर अतिरिक्त जिलाधीश के लड़के के जन्म दिवस पर उपहार व पिकनिक पर जाने के लिये स्वयं का शॉल मँगवाने की जिद कर उसे बाजार भेज देती है। जब गंगाधर बाजार से लौटता है तो घर के मुख्य द्वार पर ही इत्तफ़ाक से डाकिया मिल गया। उसके हाथ में तार था। हस्ताक्षर कर तार ले लिया गया और खोलकर पढ़ा ''मदर एक्सपायर्ड, विद्याधर।''

गंगाधर की आँखों में अँधेरा छा गया। उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला। उसके हाथ से शॉल व उपहार के पैकेट गिर गये। तार पत्नी के हाथ में थमा दिया। उसे लगा कि उसके पैरों तले जमीन ही नहीं है और वह हवा में झूल रहा है। गंगाधर की मानसिकता जैसे शून्य में गुम होती चली गई।

विशेष – 1. समय रहते व्यक्ति को अपने मौलिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करना चाहिये अन्यथा सिवाय प्रायश्चित के कुछ भी शेष नहीं रहता है।, 2. उच्च महत्त्वाकांक्षाएँ कभी-कभी अत्यंत घातक होती हैं।, 3. भाषा सरल व प्रवाहपूर्ण है।

15.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

15.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. ''जमीन से हटकर'' कहानी की मूल संवेदना क्या है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण करना है जो भौतिकवादी दौड़ में तथा बड़े अफ़सर का स्टेटस बनाए रखने की लालसा में अपनी जमीन से, अपने परिवार से और अपने परिवेश से कट जाता है।

प्रश्न-2. 'जमीन से हटकर' कहानी के नायक का छोटा भाई विद्याधर अपने पत्र में क्या लिखता है?

उत्तर – प्रस्तुत कहानी का नायक गंगाधर अब बड़ा अफसर बनकर शहर में रहने लग जाता है तो उसे अपने गाँव, अपनी वृद्धा माँ व भाई की जरा-सी भी चिन्ता नहीं रहती है। उसकी माँ मरणासन्न है और घर में पैसे का अभाव है तो उसका भाई पत्र में लिखता है कि ''यदि उचित समझो तो कुछ पैसे भेज दो ताकि माँ को जयपुर दिखा आऊँ। मरना तो उसे है ही, मगर अपना कुछ फर्ज है, इसलिये आपको लिख रहा हूँ।''

प्रश्न-3. गंगाधर को अपने अपराधी होने का अहसास क्यों होने लगा?

उत्तर – क्योंकि गंगाधर ने अपनी बूढ़ी माँ और अपने छोटे भाई के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं किया था।

प्रश्न-4. गंगाधर का छोटा भाई कितना पढ़ा-लिखा था और वह क्या करता था?

उत्तर – गंगाधर का छोटा भाई मात्र दसवीं कक्षा का विद्यार्थी रहा था और अब वह पुश्तैनी खेतीबाड़ी सम्भालता है और अपनी बूढ़ी माँ की सेवा करता है।

प्रश्न-5. गंगाधर के पिता को पहला दुःख कब हुआ?

उत्तर – जब गंगाधर ने नियुक्ति के बाद अपनी मर्जी से अपने पिता की आज्ञा के बिना पसंद की लड़की से शादी करने का निर्णय किया तब उसके पिता को पहला दुःख हुआ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)

प्रश्न-6. गंगाधर के पिता की असामयिक मृत्यु का कारण किसे बताया है?

उत्तर—गंगाधर के पिता की असामयिक मृत्यु का कारण स्वयं गंगाधर है। क्योंकि उसका खोखला जीवन उसके पिता को काफी आहत करता रहा। शादी के दिन भी वे काफी परेशान और उदास रहे।

प्रश्न-7. प्रशिक्षण के समय गंगाधर किस बात से दुःखी था?

उत्तर—गंगाधर के पास प्रशिक्षण के दौरान न तो ढ़ंग का सूटकेस था, न बिस्तर थे और न कपड़े ही ढ़ंग के थे जिससे वह दुःखी रहता था।

प्रश्न-8. गाँव वालों ने गंगाधर को सम्मान नहीं दिया, क्यों?

उत्तर—गंगाधर के होली पर्व पर गाँव में रहते हुए उसके साथियों ने गुलाल से होली खेलनी चाही जिस पर गंगाधर ने उन सबको डाँट-फटकार कर भगा दिया इसलिये गाँव वालों ने उसे सम्मान नहीं दिया।

प्रश्न-9. प्रस्तुत कहानी जमीन से हटकर के अनुसार गंगाधर की गलती क्या थी?

उत्तर—गंगाधर ने अपने दिमाग में जीवन का अलग नक्शा बना लिया था, जीवन शैली बदल ली थी और उसकी पूर्ति के लिये वह अपनी जमीन से कट गया था।

प्रश्न-10. गंगाधर को मिले तार में क्या लिखा हुआ था?

उत्तर—तार में लिखा था ''मदर एक्सपायर्ड, विद्याधर''।

प्रश्न-11. गंगाधर का जिन्दगी के प्रति क्या दृष्टिकोण था?

उत्तर—गंगाधर के अनुसार व्यक्ति को अपने 'स्टेटस', 'स्टेण्डर्ड' और 'क्रडिसी' के अनुसार ही जिन्दगी का निर्माण करना चाहिये तभी जीवन सार्थक होगा।

प्रश्न-12. ''सम्बन्ध? वो तो बनाने से बनते हैं? आने-जाने से बनते हैं। थोड़ा-बहुत तो खर्च करना ही पड़ता है।'' किसने, किससे कहा था?

उत्तर—उक्त कथन गंगाधर से उसकी पत्नी ने कहा था।

प्रश्न-13. प्रशिक्षण के समय उसके साथियों ने गंगाधर का क्या नाम रखा था?

उत्तर—उसका नाम 'कूड़ीधर' रख दिया था।

प्रश्न-14. गंगाधर के पिता का क्या व्यवसाय था तथा उन्होंने शादी के लिये पैसे कहां से लिये थे?

उत्तर—गंगाधर के पिता साधारण असिस्टेन्ट पोस्टमास्टर थे। शादी के लिये बीमा विभाग से लोन पर पैसा लेना पड़ा।

प्रश्न-15. गंगाधर की किस धारणा का उसके साथी अफ़सरों ने मजाक उड़ाया था?

उत्तर—जब गंगाधर ने सौन्दर्य प्रसाधनों को भी जीवन की अत्यावश्यक वस्तु बताया तो उन्होंने उसका मजाक उड़ाना शुरु कर दिया था।

15.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. 'जमीन से हटकर' कहानी का मूल उद्देश्य अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर—प्रस्तुत कहानी पढ़े-लिखे तथाकथित व्यक्तियों के जीवन दृष्टिकोण के परिवर्तित रूप को प्रस्तुत करती है। कुछलोग पढ़-लिखकर अच्छा ओहदा प्राप्त कर शहरी जीवन की खोखली औपचारिकताओं की भूल-भुलैया में अपने आप को भटका लेते हैं और भौतिक सुखों में रत रहकर अपने मौलिक कर्त्तव्यों से विमुख हो जाते हैं। परिणामत: उनका सम्पर्क सूत्र अपने परिवार, अपने समाज और अपने गाँव से धीरे-धीरे करके टूटता चला जाता है। जब बच्चा छोटा होता है तो परिवार के सभी लोग विशेषकर माता-पिता व अन्य बुजुर्ग उसके उज्ज्वल भविष्य के प्रति अनेक स्वप्न देखते हैं और उससे अनेक प्रकार की अपेक्षाएँ करते हैं। अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च कर उसे पढ़ाते-लिखाते हैं, किन्तु जब वह युवक उच्च शिक्षा प्राप्त कर किसी अच्छे पद पर पहुँच जाता है तो उसका जीवन गगन चुम्बी महत्त्वाकांक्षाओं की ऊँचाइयों को तय करने की गति पकड़ने लगता है और अपनी प्रतिष्ठा अपने सम्मान या यों कहें कि अपने सोशियल स्टेटस को मेन्टेन करने के चक्रव्यूह में फँसकर अपने अतीत को अपने जीवन के वास्तविक वजूद को

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

और पीछे छोड़ी गई अधूरी जिम्मेदारियों को भुला देता है। प्रस्तुत कहानी का नायक गंगाधर अत्यन्त गरीब और ग्रामीण अंचल का होनहार युवक होता है किन्तु आर.ए.एस. अधिकारी बन जाने के बाद वह अपनी पसंदीदा लड़की से विवाह कर शहरी टीम-टाम व खोखली जीवनशैली को अपना लेता है। उसके पिता एक सामान्य सहायक पोस्ट मास्टर के पद पर रहते हुए असामयिक मौत मारे जाते हैं जिससे उनके परिवार का आर्थिक चक्र अपनी और भी अधिक गति कम कर देता है। कथानायक का छोटा भाई विद्याधर एक सुसंस्कारित जिम्मेदार व्यक्ति होता है जो अपनी जमीन व वृद्धा माँ की सेवा-सुश्रुषा के कर्त्तव्य से बँधा रहता है किन्तु उसकी सबसे बड़ी कमजोरी पैसे की कमी होती है। वह चाहते हुए भी अपनी माँ का इलाज नहीं करवा पाता है, अन्त में वह अपने अफसर भाई को पत्र के माध्यम से उसके कर्त्तव्य का अहसास कराता हुआ पैसे भेजने की प्रार्थना करता है किन्तु बड़ा भाई उसे मदद नहीं भेजता है। परिणामस्वरूप उसकी वृद्धा माँ का देहान्त हो जाता है और उसके पास शेष रह जाता है मात्र प्रायश्चित और बेचारगी। अतः हमें कभी भी अपनी औकात नहीं भूलनी चाहिये और समय रहते अपने कर्त्तव्य का निर्वाह कर अपने जीवन व शिक्षा को सार्थक बनाना चाहिये। यही इस कहानी का मूल उद्देश्य है।

प्रश्न- 2. 'जमीन से हटकर' कहानी के कथानक की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – प्रस्तुत कहानी का कथानक हमारे उस सामाजिक जीवन पर आधारित है जिसमें निम्न वर्ग से अपना सम्बन्ध तोड़कर विशिष्ट वर्ग से सम्बन्ध जोड़ लिया जाता है। इस कहानी का नायक गंगाधर ऐसा ही पात्र है, जो अपने गाँव, माता-पिता, भाई-बहन, इष्ट-मित्र, जमीन-जायदाद आदि से दरकिनार होकर शहरी जीवनशैली अपनाने का प्रयास करता है। इस प्रकार की सामाजिक चेतना के कारण कहानी का कथानक अत्यन्त रोचक व आकर्षक है जिसमें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक कौतुहल बना रहता है। गंगाधर गरीब पिता का सीधा-सादा गरीब किन्तु होनहार पुत्र है। पढ़-लिख जाने के बाद शहरी लड़की से प्रेम-विवाह कर लेता है। जिसकी वजह से उसके पिता असामयिक मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। वृद्धा माँ इसी गम में आहत रहती है। आय के कोई साधन नहीं हैं। छोटा भाई कम पढ़ा-लिखा है। जमीन से कुछ पैदावार नहीं मिल पाती है। माँ का इलाज कराने को पैसा नहीं है। छोटा भाई गंगाधर से पत्र के माध्यम से पैसा भेजने की गुहार करता है, किन्तु वह कोई सहायता नहीं करता है, उसकी माँ का देहान्त हो जाता है। इस प्रकार कहानी का अंत अत्यंत संवेदनशील है। इस कथानक में संभाव्यता व नाटकीयता भी पर्याप्त रूप से है जिससे पात्रों का चारित्रिक विकास स्वाभाविक रूप से होता है। कथानक संक्षिप्त है, उसका आरम्भ, मध्यम और अन्त सुन्दर समायोजन लिये हुए है जिसमें निहित मूल संवेदना को व्यंजित करने और कार्य की एकता का प्रतिपादन करने की पूर्ण कामना है अतः प्रस्तुत कहानी का कथानक सर्वगुण सम्पन्न है।

15.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न- 1. 'जमीन से हटकर' कहानी के आधार पर कथा नायक गंगाधर की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – हेतु भारद्वाज द्वारा रचित कहानी 'जमीन से हटकर' प्राचीन और नवीन परिवेश के मध्य अलगाव की स्थिति की व्यंजना करती है। पात्र-योजना के अनुसार इस कहानी में मुख्य रूप से गंगाधर मुख्य पात्र है। इसके अतिरिक्त विद्याधर, गंगाधर की माँ व उसकी पत्नी आदि अन्य सहायक पात्र हैं। गंगाधर अपने मौलिक कर्त्तव्यों का समय पर निर्वाह नहीं करता है बल्कि ग्रामीण परिवेश में जन्म लेकर बाहरी दिखावे तथा उच्च वर्ग की आर्थिक आकांक्षाओं के अनुसार स्वयं को ढालने का प्रयास करता है अतः वह कैरेक्टर ल्यूज है। गंगाधर की चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्नलिखित ढंग से स्पष्ट कर सकते हैं –

1. प्रतिभावान व्यक्तित्व – गंगाधर ग्रामीण अंचल के सामान्य परिवार में जन्मा था, जहाँ गाँव की ढिबरी की रोशनी में पढ़कर, टपरे में रहकर अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाया। आर.ए.एस. की परीक्षा में योग्यता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त कर उसने अपने गरीब परिवार का गौरव बढ़ाया, जिसकी वजह से उसे एक अच्छी नौकरी मिल गई। वह पढ़ने-लिखने में बचपन से ही होनहार लगता था, साथ ही उसमें कार्य करने की योग्यता भी थी।

2. भौतिकवादी प्रवृत्ति की ओर आकर्षित – गंगाधर जहाँ एक ओर प्रतिभावान और होनहार व्यक्तित्व का धनी था वहीं दूसरी ओर उसका मन भौतिकवादी प्रवृत्ति की ओर आकृष्ट भी था। जिस समय वह ओ.टी.एस. की परीक्षा देने के लिये पूना गया तो उस के पास न ढ़ंग का सूटकेस था, न बिस्तर थे और न सलीकेदर कपड़े ही। उसके साथी प्रशिक्षण के दौरान उसकी उपेक्षा करते

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

थे, उसका मजाक बनाते थे। यहाँ तक कि उसका नाम 'कूड़ीघर' रख दिया था। वह हमेशा सहमा-सहमा सा रहता था। तभी से उसने यह सोच लिया था कि आज के युग में बाहरी टीम-टाम की ही कद्र होती है। दिखावे के बिना व्यक्ति की सारी योग्यताएँ व्यर्थ हैं। आर.ए.एस. का प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने के बाद वह अपना स्टेण्डर्ड मेन्टेन कर अपना स्टेटस बनाने में जुट गया। शहरी फैशन परस्त युवती से विवाह कर नई जीवनशैली में अपने आप को ढालने में लग गया। भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त घर का स्टेण्डर्ड मेन्टेन किया। नई क्राकरी, सोफा सेट, कूलर, कूकर, फर्नीचर, स्कूटर आदि की व्यवस्था की। इन सब बातों से कहानीकार ने यह व्यंजना की कि वह इस खोखली जीवनशैली के चक्कर में अपने माँ-बाप, भाई-बहन, नाते-रिश्तेदार, इष्ट-मित्र, जमीन-जायदाद आदि से पूरी तरह कट गया।

3. माता-पिता की नजरों में गिरा हुआ – गंगाधर के पिता एक साधारण पोस्टमैन थे। गाँव में ही उसका जन्म हुआ। बचपन में उस पर ''होनहार विरवान के होत चीकने पात'' कहावत चरितार्थ होती थी। इस प्रतिभा को देखकर उसके पिता ने अपनी सामर्थ्य से अधिक खर्च कर उसे उच्च शिक्षा दिलाई और अपने बुढ़ापे के सहारे के रूप में उससे अनेक उम्मीदें लगाई थी किन्तु उनकी सारी उम्मीदों के ताश के पत्तों का सुन्दर महल उस समय नेस्तनाबूत हो गया जब उसने शहर की एक फैशन परस्त लड़की से बिना माता-पिता की मर्जी से प्रेम-विवाह कर लिया था। यद्यपि उसके परिवार वाले उस शादी में शामिल हुए थे किन्तु वह स्वाभाविक खुशी और उमंग नहीं थी जो पढ़े-लिखे आर.ए.एस. अधिकारी पुत्र की शादी में होनी चाहिये थी। उसके पिता तो सारे कार्यक्रम के दौरान उदास रहे। अर्थाभाव के कारण बीमा विभाग से लॉन पर पैसा लिया। वह सारा का सारा उसे ही दे दिया। इसी वजह से उसके पिता का असामयिक देहान्त हो गया था।

विवाह के बाद उसने एक बार भी घर पर पैसा नहीं भेजा और न वह कभी गाँव में ही गया। उसकी माँ वृद्धावस्था में बीमार रही किन्तु उसने इसका इलाज कराना तो दूर बल्कि खैर-खबर भी नहीं ली। छोटे भाई के द्वारा पत्र के माध्यम से की जाने वाली पैसों की प्रार्थना को भी उसने नहीं सुना अतः वह अपने माता-पिता व परिजनों की नजरों से गिरा हुआ व्यक्ति था।

4. जोरू का गुलाम – गंगाधर के चरित्र की यह एक सबसे बड़ी कमजोरी थी कि वह अपनी बीबी का गुलाम था। यद्यपि वह पढ़ी-लिखी और शहरी महिला थी किन्तु वह हमेशा अपने आदमी को दबाए रखती थी। जब कभी वह अपने परिवार के लिये खर्चा भेजने की बात सोचता तो अपनी पत्नी से आक्रान्त होकर अपने आप को रोक लेता था। और यदि वह कभी कभार अपने घर पहुँचाये जाने वाली सहायता के लिये फैसला भी कर लेता तो उसकी पत्नी उस फैसले को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की दुहाई देती हुई, उसे बदल डालने की सफलता प्राप्त कर लेती थी। उसकी पत्नी पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करने वाली थी, फैशन परस्त थी। वह अधिक से अधिक कपड़े, सौन्दर्य प्रसाधन व अन्य भाँति के सुख देने वाली वस्तुओं की नुमाइश के द्वारा लोगों को प्रभावित करने में लगी रहती थी। गंगाधर को सारी कमाई उसी के मौज-शोक के सामान, पिकनिक पार्टी, किटीपार्टी, बर्थडे-पार्टी के उपहारों आदि में ही समाप्त हो जाती थी और सही मायने में गंगाधर के पास माँ का इलाज कराने के लिये भी पैसे नहीं थे। इसी कमजोरी की वजह से उसकी माँ उसे 'जोरू रो गुलाम' कहती थी।

5. आत्मग्लानी व व्यथायुक्त – गंगाधर एक ऐसा पात्र हे जो गाँव के वातावरण से निकल कर शहरी जीवन बिताता है। बड़ा अफसर है किन्तु वह अपनी मौलिक जिम्मेदारियों से विमुख रहता है। जब उसकी माँ बीमार होती है तो उसका छोटा भाई विद्याधर ही गाँव में रहकर उसकी सेवा करता है। जब वह अपने बड़े भाई को पत्र लिखकर उनसे पैसे मँगवाता है तो वह पैसा भेजने में असमर्थ रहता है क्योंकि एक तो सारा पैसा उन दोनों के सौशियल स्टेटस के मेन्टीनेन्स में ही खर्च हो गया और यदि व्यवस्था करके भी भेजता तो उसकी पत्नी के भय के कारण नहीं भेज सका। विद्याधर ने व्यंग्यपूर्वक पत्र लिखा था जिसे पढ़कर अपनी मजबूरी पर स्वयं गंगाधर को तरस आने लगा। उसे अपराध बोध होने लगा और अपने आपसे उसे ग्लानि होने लगी।

6. दिखावटी व्यवहार – गंगाधर का सम्पूर्ण जीवन खोखलेपन से युक्त था। वह बाहर से कुछ और अन्दर से कुछ था। वह गाँव वालों को उपेक्षा की दृष्टि से देखता था, उनकी हँसी उड़ाता था। वह हमेशा अपनी पत्नी के प्रेम जाल में फँसा रहता। पिकनिक, पार्टियाँ, क्लब, विदेशी खेल बस यही सब कुछ उसकी जिन्दगी का मकसद था। इसी व्यवहार और इस प्रकार की जिन्दगी से आहत होकर उसके पिता की असामयिक मृत्यु हो गई। इस बात को स्वयं गंगाधर मानता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

7. परिवार व गाँव से कटा हुआ—जब से गंगाधर को नियुक्ति से दूर शहर में हुई है तब से अपने परिवार या गाँव की कभी भी सही ढंग से सुधि नहीं ली। वह पूरी तरह से परिवार व गाँव से कन्नी काट चुका था। यहाँ तक कि वह गाँव की जिन्दगी के संदर्भ में उलटे विचार रखता था, उनसे नफरत करता था, उन्हें गँवार बताता था। एक बार होली के अवसर पर गाँव वाले कुछ साथी अबीर-गुलाल लेकर उसके घर पर पहुँचे तो उन्हें फटकारकर भगा दिया था।

8. मूर्खताओं का शिकार—गंगाधर न केवल अपने परिवार व गाँव वालों से कट जाने या अपनी जोरू की गुलामी करते रहने से अपने चरित्र से गिर गया था बल्कि वह अपने मस्तिष्क में अलग ही दुनियाँ बसाने से और उसमें अपने मन के रंग भरने से उस परिवेश से कट गया था, जिससे उसका सनातन सम्बन्ध थ। अपनी इस नई दुनियाँ की कल्पनाओं में अनेक बार वह मूर्खता का शिकार हुआ। अपने मूर्खतापूर्ण कृत्यों का अनुभव कर उसे आत्मग्लानि होने लगती है। एक दिन क्लब में वह अपने साथी अफसरों के बीच बैठा हुआ था। उसी समय वहाँ सौन्दर्य प्रसाधनों पर बातें चली तो उसके मुँह से निकल गया—

''टेल्कम पाउडर जैसी जरूरी आवश्यकता की चीज भी कितनी मँहगी हो गई है?''

''तो क्या आप पाउडर को भी निसेसिटी मानते हैं मिस्टर गंगाधर?

''और नहीं तो क्या?'' उसने दृढ़ता से कह दिया। इस कारण लोगों ने उसका खूब मजाक उड़ाया। बात बहुत छोटी थी किन्तु मूर्खताओं को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त थी।

15.6 सारांश

इस प्रकार कहा जा सकता है क गंगाधर एक ऐसा पात्र है, जिसके चरित्र में अनेक कमियाँ दिखाई देती हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई- 16 : स्वयं प्रकाश

संरचना

16.0 प्रस्तावना

16.1 उद्देश्य

16.2 परिचय

16.3 बर्डे

16.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

16.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

16.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

16.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

16.5.3 निबंधात्मक प्रश्न

16.6 सारांश

16.0 प्रस्तावना

अपने समय के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कथाकार स्वयं प्रकाश का जन्म 20 जनवरी 1947 को इन्दौर में हुआ था। डॉ. नामवरसिंह ने इनकी प्रशंसा करते हुए अपनी साफ-सुथरी और प्रखर चेतना के साथ लिखा कि ''स्वयं प्रकाश सोद्देश्य रचना कर्म के पक्षधर हैं और प्रखर वर्ग दृष्टि इनके लेख का खास गुण है।'' स्वयंप्रकाश मध्यवर्ग की सामाजिक प्रकृति को न केवल पहचानते हैं बल्कि उसकी खुली आलोचना करने से कतराते भी नहीं हैं। भाषा की निजी पहचान उनकी खासियत है।

16.1 उद्देश्य

यहाँ हम स्वयं प्रकाश एवं उनकी कहानी बर्डे के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

16.2 परिचय

स्वयं प्रकाश की कहानियाँ – 'मात्रा और भार', 'सूरज कब निकलेगा', 'आसमाँ कैसे-कैसे' तथा 'अगली किताब' में संकलित हैं। 'जलते जहाज पर' तथा 'ज्योति रथ के सारथी' उनके उपन्यास हैं और 'परमाणु भाई की दुनिया में', 'वैज्ञानिक बाल उपन्यास 'फीनिक्स' उनका प्रकाशित नाटक है। स्वयं प्रकाश द्वारा रचित अन्य नाटक मंचित व चर्चित है किन्तु अभी अप्रकाशित है। 'सूरज कब निकलेगा' को राजस्थान साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत भी किया है। स्वयं प्रकाश ने विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर लेखन कार्य किया है। 'स्वान्त: सुखाय' शीर्षक से उनके व्यंग्य लेखों का एक संकलन भी उन्होंने प्रकाशित किया है।

16.3 बर्डे

नवीनतम संकलन 'अगली किताब' में सम्मिलित यह कहानी मध्यम वर्ग के खोखलेपन पर जोरदार प्रहार करती है। श्रीमती बैजल के बेटे स्वीटू के बर्थ डे के आयोजन में क्या-क्या संकट आते हैं, इनका सिलसिलेवार बयान कथाकार की सूक्ष्म व पैनी दृष्टि का परिचय देता है। हर स्थिति उस वर्ग की परिस्थिति को परत दर-परत उधेड़ती चली जाती है जिसकी सदस्या श्रीमती बैजल है। लेखन के वर्णनों की भाषा इस उद्घाटन में विशेष सहायक बनती है। कहानी का अंत तो जैसे इस वर्ग के सारे खोखलेपन को ध्वस्त करके रख देता है।

कहानी अत्यन्त रोचक है और उद्देश्य में सफल है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

16.4 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

''देह कुछ स्थूल हो चली है। पहले उस पर कसे वस्त्रों को वस्त्रों की शक्ति की सीमा तक कसेगी बार-बार। बाल झड़ रहे हैं। पर उन्हें सुलझाकर फिर सैटकर के फिक्स कर देने से चल जाता है। नहीं तो स्विच लगा देती है। चेहरा-मोहरा सुन्दर है। ईयरिंग चेंज करने पड़ेंगे। कौन-से पहनेगी, अभी तय नहीं हुआ। यह साड़ी तय होने के बाद तय होगा और यह आइने के सामने ही तय होगा। मेक्स-फेक्टर भी क्या रद्दी चीजें बनाने लगे हैं आजकल। पहले कस्टम वाले गुप्ताजी कितनी अच्छी इम्पोर्टेड कास्मेटिक्स ला देते थे।''

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के स्वयं प्रकाश द्वारा रचित 'बर्डे' शीर्षक कहानी से अवतरित है जिसमें मध्यम वर्गीय वेतनभोगी वर्ग के खोखलेपन पर करारा प्रहार किया है और बताया है कि श्रीमती बैजल अपने बेटे स्वीटू का जन्मदिन मनाने का आयोजन कर रही है जिसकी वजह से वह अधिक व्यस्त है। मेहमानों के आने से पहले वह सज-धज कर तैयार होना चाहती है।

व्याख्या – आज स्वीटू का जन्मदिन है, सुबह से इस आयोजन की तैयारी जोर-शोर से चलती है। श्रीमती बैजल आइने के सामने बैठकर अपना मेकअप करने लगती हैं। यद्यपि उनकी अवस्था अब काफी हो चुकी है, शरीर भी अब बुढ़ापे का परिचय देने में नहीं चूक रहा है और शरीर भी अब भारी हो गया है। वह अपने शरीर पर कसे हुए कपड़ों को बार-बार और अधिक कसने का प्रयास करती है क्योंकि जैसे-जैसे शरीर मोटा होता जा रहा है, उनके कपड़े भी छोटे होते जा रहे हैं। उनके बाल भी काफी झड़ने लगे हैं इसलिये उन्हें बार-बार कंघी से सुलझा कर उचित ढंग से स्थिर कर लेती हैं। जहाँ पर आवश्यक है वहाँ पर पिन या स्विच का भी बालों में प्रयोग किया जाता है। श्रीमती बैजल सुन्दर चेहरे की मालकिन हैं, उसपर चमक है, गोरापन है अत: और अधिक सौन्दर्य वृद्धि के लिये अब कानो के आभूषण भी उनको बदलने हैं किन्तु वे अभी तक यह तय नहीं कर पाई कि उन्हें कौन से रंग के इयरिंग पहनने हैं? यह तो उनकी साड़ी पर निर्भर करता है क्यों कि जिस रंग की साड़ी पहनी जायेगी उसी रंग की इयरिंग कानों में डाली जायेगी। वे साड़ी पहनकर आइने के सामने बैठ जाती हैं फिर काफी देर तक सौन्दर्य प्रसाधन का मैचिंग सैट करती हुई धारण करती हैं। उस समय उन्हें भारत देश के बने प्रसाधन कतई भी पसन्द नहीं आते हैं क्योंकि वे विदेशी प्रसाधनों को अच्छा मानती हैं इसलिये मेक्स-फेक्टर की चीजों को वे रद्दी बताने लगती हैं और मन ही मन कहती हैं कि कस्टम वाले गुप्ताजी कितनी अच्छी इम्पोर्टेड सौन्दर्य प्रसाधन का सामान लाकर दे देते थे, अब तो वैसी सामग्री मिलती ही नहीं है।

विशेष – प्रस्तुत अवतरण में श्रीमती बैजल को फैशन परस्त और पाश्चात्य सभ्यता के प्रति आकर्षित रहने वाली युवती के रूप में प्रस्तुत किया है।

2. फैशन परस्त महिलाओं मनोभावों को स्पष्ट किया गया है।

3. भाषा-शैली सरल, प्रभावपूर्ण एवं भावाभिव्यंजनात्मक है।

(2)

''यही बात है जो हर साल महिलाओं को हर साल बच्चों की वर्षागाँठ मनाने के लिये उत्साहित कर देती है। थकेंगी, खटेंगी, झुँझला लेंगी, सब कर लेंगी, लेकिन जब अपने व्यंजन दूसरों को खिलाएँगी और दूसरे वाह-वाह कर उठेंगे.....कैसा सुख मिलता है। और खास कर जब वे मँहगे-मँहगे उपहार भी दे जा रहे हो। वैसे भी जेवर, कपड़े, डिनर सैट, क्राकरी और घर की सजावट दिखाने का मौका कब मिलता है।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक ''कथा-संचय'' के 'बर्डे' नामक कहानी पाठ से अवतरित है जिसमें कहानीकार स्वयं प्रकाश ने श्रीमती बैजल की मनोभावना स्पष्ट करते हुए बताया है कि जन्मदिन पर मेहमानों को बुलाना और उन्हें खाना-खिलाना यह दो वाह-वाही लूटने और सामाजिक प्रतिष्ठा पाने का एक जरिया होता है। सारा खर्चा मेहमानों द्वारा ही उपहारों के रूप में दे दिया जाता है।

व्याख्या – आजकल के समाज में अपने बच्चों का जन्म दिन मनाना एक फैशन सा हो गया है। ऐसा फैशन जो मानसिकता को सामाजिक और व्यवहार कुशल बनाता है। बच्चों की बर्थ-डे पार्टी में तरह-तरह के उपहार मिलते हैं और आयोजन में होने वाले

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

खर्चे से चौगुना वसूल हो जाता है। इसी लाभ वाली स्थिति को देखकर प्राय: शिक्षित मध्य वर्गीय परिवार उत्साह के साथ इस प्रकार के आयोजन करते हैं। परिवार की महिलाएँ मुख्य रूप से इस दिन की तैयारी के लिये अपने आप को कुछ दिन पहले से ही व्यवस्थाओं में व्यस्त बना लेती हैं और पूरे जोश-उल्लास के साथ बच्चों का जन्म-दिन मनाती हैं। सारे दिन काम करना पड़ता है और आने वाले मेहमानों के स्वागत व खाने-पीने की समुचित व्यवस्था करनी पड़ती है। जिसकी वजह से घर की महिलाएँ दिन भर परिश्रम करती हैं। काम में जूझती हैं तथा थक कर चूर हो जाने के कारण झुँझलाती हैं फिर भी सारा काम कर लेती हैं क्योंकि इस काम में उनको खुशी मिलती है। इन्हें इस बात की उत्सुकता रहती है कि अपने द्वारा की जाने वाली भोजन की तैयारी सभी खाने वालों से वाह-वाही दिलाएगी, प्रशंसा दिलाएगी। विशेष बात यह है कि खाने वालों के द्वारा की जाने वाली तारीफ औरतों को संतोष प्रदान करने वाली होती है। इसके साथ ही पार्टी में शरीक होने वाले लोग तरह-तरह के कीमती उपहार और नगद रुपयों के लिफाफे भेंट करते हैं तो औरतों को उसमें भी अवर्णनीय सुख प्राप्त होता है। कथाकार के अनुसार वेतन भोगी मध्यमवर्गीय महिलाएँ दूसरों पर अपने घर की सजावट का रौब डालना चाहती हैं। वे अपने जेवर, कपड़े, डिनरसेट, नई क्राकरी आदि भी दिखाकर अपना प्रभाव जमाने में काफी रूचि रखती हैं। जन्मदिन की पार्टी को इसके लिये सबसे अच्छा अवसर मानती हैं। इसलिये भी महिलाएँ दिन भर परिश्रम कर अन्त में पार्टी के समय काफी संतोष व आनन्द का अनुभव करती हैं।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में कथाकार ने स्पष्ट किया है कि मध्यम वर्गीय महिलाओं को दिखावे की प्रवृत्ति और खोखलेपन में भी काफी संतोष मिलता है।

2. प्रस्तुत अवतरण में जन्मदिन मनाने के पीछे निहित भाव पर व्यंग्य किया गया है।

3. भाषा-शैली सरल, रोचक और व्यंजनापूर्ण है।

(3)

"लेकिन श्रीमती बैजल के दु:खों का यही अन्त नहीं था। पति एकदम एन वक्त पर कॉलेज से लौटे और स्वीटू तो मेहमानों का आना शुरु हो गया तब आया। वह सुबह से चिड़चिड़ा हो रहा था। उसने कपड़े बदलने से इन्कार कर दिया और स्कूल ड्रेस ही पहने रहने की जिद कर रहा था। बड़ी मुश्किल से उसे अच्छे कपड़े पहनने के लिये फुसलाया गया। मेहमान बहुत कम आये। निश्चित समय से एक घंटे बाद भी ड्राइंग रूम में सिर्फ कुछ बच्चे, एक-दो अल्प परिचित पड़ोसनें ही नजर आ रही थी।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'बर्डे' नामक कहानी पाठ से अवतरित है जिसमें कथाकार स्वयं प्रकाश ने श्रीमती बैजल के पुत्र के जन्म दिवस पर दी जाने वाली पार्टी और उसमें आने वाली परेशानियों का चित्रण किया है।

व्याख्या – श्रीमती बैजल एक वेतन भोगी मध्यम वर्गीय परिवार की आधुनिक फैशन परस्त मिजाज महिला है जो अपने पुत्र का जन्मदिन एक समारोह के रूप में मनाने की समुचित व्यवस्था यह सोचकर करती है कि हमेशा की तरह इस बार भी जन्मदिन विशिष्ट लोगों के बीच पूर्ण हर्षोल्लास से भोजन की तारीफों के साथ मनाया जायेगा और ढेर सारे कीमती उपहार आयेंगे, सभी लोग उनके घर के ठाट-बाट की प्रशंसा करेंगे। किन्तु इस बार पहले की तरह उसे शहरी परिवारों के बीच इस आयोजन का मजा नहीं आया था क्योंकि उनके पति का स्थानान्तरण एक छोटे से कस्बे में लेक्चरार के पद पर हो गया था। यहाँ की मानसिकता शहरी नहीं है, फिर भी वह उसी भाव से पूरी तैयारी करती है। किन्तु उस दिन का सारा कार्यक्रम अनेक परेशानियों को लेकर प्रारम्भ होता है। सुबह से ही श्रीमती बैजल तैयारी में लगी रहती है। भोजन की तैयारी, घर की साज-सज्जा, स्वयं का मेकअप आदि में सारा दिन अकेले जूझ कर कार्य पूर्ण करती है। उसके पति ने उस दिन न तो स्वयं ने कॉलेज से छुट्टी ली और न स्वीटू को ही छुट्टी दिलाई। वे एन वक्त पर कॉलेज से लौटे और स्वीटू भी तब स्कूल से आया था जब सारे मेहमान आने शुरु हो गये थे। स्वीटु स्कूल यूनिफार्म में ही रहना चाहता था, बड़ी मुश्किल से उसे कपड़े बदलने के लिये तैयार किया गया था। उधर आने वाले मेहमानों में कोई चार्म नहीं था। निर्धारित समय के काफी देर बाद तक वहाँ कोई नहीं आया। बस कुछ अल्प परिचित महिलाएँ वहाँ आकर बैठ गई। एक घंटे बाद तक भी ड्राइंग रूप में कुछएक बच्चों को देखा जा सकता था जिसकी वजह से श्रीमती बैजल का उत्साह काफी ठण्डा प्रतीत होने लगा।

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में मध्यवर्गीय महिलाओं की 'बर्डे' पर होने वाली मानसिकता का चित्रण किया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. गाँवों में जन्मदिन को विशेष अवसर आज भी नहीं माना जाता है।

3. भाषा सरल और भावानुकूल है।

(4)

"उनकी बाँह पर रक्तचाप मापक लगा होता तो वह हर पैकेट के अनावरण के बाद नीचे-नीचे खिसक रहा होता। अधिकांश लोगों ने गोली-चाकलेट या सस्ते प्लास्टिक के खिलौनों से बला टाल दी। कुछ ने हेण्डलूम या पॉलिस्टर के सस्ते फुटपाथिया कटपीस भेज दिये थे और कुछ गधों ने तो दो-दो ग्लूकोज बिस्कुटों के पैकेट पतंग के कागज में बाँधकर बच्चों के हाथ भिजवा दिये थे। हाय! कैसे असभ्य, टुच्चे, जाहिल लोगों में आ फँसी श्रीमती बैजल।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'बर्डे' नामक कहानी पाठ से अवतरित है जिसमें कहानीकार स्वयं प्रकाश ने श्रीमती बैजल की उस मानसिक स्थिति का वर्णन किया है जो मेहमानों व आमंत्रित लोगों के द्वारा भेजे गये उपहारों द्वारा खराब कर दी गई थी।

व्याख्या – श्रीमती बैजल ने यह सोच कर बड़े उत्साह के साथ अपने पुत्र स्वीटू का जन्म-दिवस का आयोजन किया था कि सभ्य लोगों के बीच उसके द्वारा बनाए गये पकवानों की मीठी-मीठी तारीफ होगी। उसके घर के स्तर और जीवनशैली को देखकर समाज में उसकी धाक जमेगी, साथ ही उनके द्वारा स्वीटू को जन्मदिवस की बधाइयों के साथ कीमती व सुन्दर उपहार प्राप्त होंगे किन्तु श्रीमती बैजल के सारे अरमानों पर उस समय पानी फिर गया जब गाँव के जाहिल लोग बिना किसी तारीफ के अच्छा-खासा खा-पीकर चले गये और स्वीटू को बिना 'हेप्पी बर्थ-डे' बोले ही घटिया किस्म के सामान उपहार स्वरूप देकर चले गये। कथाकार ने श्रीमती बैजल की मन:स्थिति का अत्यंत सुन्दर चित्रण करते हुए बताया कि उस समय यदि रक्तचाप मापक यंत्र उनकी बाँह पर लगा होता तो हर एक पैकेट को खोलने पर पता चल जाता कि उनका रक्तचाप निरंतर कम होता चला जा रहा है। लोगों ने बिल्कुल घटिया किस्म के उपहार देकर खाना-पूर्ति कर दी कुछ लोग तो गोली-चाकलेट व सस्ते प्लास्टिक के खिलौने ले आये, कुछ लोग पतंग के कागज में दो-दो बिस्कुट लपेट कर दे गये और कुछ लोगों ने फुटपाथी सस्ते पालिस्टर के कटपीस देकर खा-पीकर चले गये। श्रीमती बैजल ने अपने आप को काफी कोसा और कहा कि हाय! मैं कैसे गँवार टुच्चे और जाहिल लोगों के बीच में आकर फँस गई हूँ। जहाँ पर कोई न तो 'बर्थ-डे' का मतलब ही समझता है और न लेन-देन का महत्त्व। इस बात का श्रीमती बैजल को काफी दु:ख हुआ।

विशेष – 1. वेतन भोगी मध्यमवर्गीय चेतन एवं खोखलेपन पर तीखा व्यंग्य किया है।

2. भाषा शैली सरल, भावपूर्ण और व्यंग्यात्मक है।

(5)

"घंटे भर के बाद स्वीटू घर में इधर-उधर धमाचौकड़ी कर रहा था। आज चौथी बार बता रहा था कि उसने सुबह ही बन्ने भाय से कह दिया था कि "शाम को जरूर-जरूर आना, आज शाम को हमारी बर्डे होगी।" और उसकी गर्दन में अब भी गेंदे के फूलों का बड़ा हार पड़ा था जो बन्ने भाय इसके लिये लाया था और जिसे पहने वक्त दोनों ने तालियाँ बजाई थी, जैसे पखावज और संतूर की बिगुलबंदी।"

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य-पुस्तक "कथा-संचय" के 'बर्डे' नामक कहानी पाठ से अवतरित है जिसमें बताया है कि श्रीमती बैजल ने अपने पाँच वर्षीय पुत्र स्वीटू की 'बर्डे' का आयोजन किया जिसमें आमंत्रित सभी मेहमान शामिल हुए। जब पार्टी समाप्त हो गई और सारे मेहमान चले गये तो श्रीमती बैजल हार-थक कर निढाल हो गई और सोफे पर पड़ी रही। वह उस समय काफी निराश और गुस्से में थी कि अचानक स्वीटू का ताँगे वाला बन्ने वहाँ आ गया। बन्ने के आने से स्वीटू प्रसन्न हुआ और उसकी माँ के तेवर चढ़ गये।

व्याख्या – अपने ताँगे वाले बन्ने भाय को अपने जन्म दिवस की पार्टी में शामिल होने पर स्वीटू बहुत खुश हुआ था क्योंकि स्वीटू ने अपने इस खास दोस्त को आज सुबह ही आमंत्रित कर दिया था। उसने कह दिया था कि आज शाम को मेरा जन्मदिन मनाया जाएगा और तुम्हें जरूर-जरूर आना है। बन्ने के चले जाने के एक घंटे बाद तक स्वीटू अपने घर में प्रसन्नतापूर्वक धमाचौकड़ी

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

मचाता रहा। बन्ने भी स्वीटू के लिये एक सुन्दर फूलों का हार लेकर आया था जिसे उसने अपने गले में पहन रखा था। जब ताँगे वाला बन्ने भाई घर पर आया तो स्वीटू को फूलों का हार पहनाते समय दोनों ने तालियाँ बजा-बजाकर एक-दूसरे को खुशियों का अहसास कराया। उन दोनों की तालियों की आवाज ऐसी लग रही थी संतूर और पखाबज की जुगलबन्दी हो।''

विशेष – 1. प्रस्तुत अवतरण में बाल मन के उल्लास का सुन्दर चित्रण किया है।

2. बाल मन की निष्कपट सरलता की व्यंजना की गई है।

3. भाषा-शैली सरल, प्रवाहपूर्ण और वर्णनात्मक है।

16.5 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

16.5.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. प्रस्तुत कहानी 'बर्डे' कहानीकार स्वयं प्रकाश की कौन-सी संकलन पुस्तक से ली गई है?

उत्तर – नवीनतम संकलन 'अगली किताब' से प्रस्तुत कहानी 'बर्डे' से ली गई है जिसे स्वयंप्रकाश ने लिखा है।

प्रश्न-2. प्रस्तुत कहानी 'बर्डे' में कहानीकार ने क्या स्पष्ट किया है?

उत्तर – 'बर्डे' कहानी में कहानीकार स्वयं प्रकाश ने मध्यवर्गीय परिवार के खोखलेपन पर व्यंग्य किया है।

प्रश्न-3. 'बर्डे' कहानी की नायिका का क्या नाम है?

उत्तर – बर्डे कहानी की नायिका का नाम श्रीमती बैंजल है।

प्रश्न-4. श्रीमती बैजल के पति का नाम क्या है और उनका व्यवसाय क्या है?

उत्तर – श्रीमती बैजल के पति का नाम सुधीर है। वे पहले इन्फोर्समेन्ट विभाग में इन्स्पेक्टर थे और अब कॉलेज में लेक्चरार पद पर अध्यापन कार्य करते हैं।

प्रश्न-5. श्रीमती बैजल के पति ने पहले वाली नौकरी क्यों छोड़ दी थी?

उत्तर – उस नौकरी के दौरान सुधीर चिरंजीलाल बद्रीप्रसाद वाले केस में फँस गया था। इसलिये उसने त्याग-पत्र दे दिया था।

प्रश्न-6. 'बर्डे' कहानी के लेखक का क्या नाम है?

उत्तर – 'बर्डे' कहानी प्रसिद्ध लेखक स्वयंप्रकाश की रचना है।

प्रश्न-7. श्रीमती बैजल 'बर्डे' पार्टी पर की जाने वाली मेहनत को कब सकारक व सफल मानती है?

उत्तर – श्रीमती बैजल के अनुसार पार्टी में उपस्थित लोग उनके द्वारा बनाए गए भोजन की तहेदिल से खूब तारीफ करे तभी वह अपनी मेहनत को सफल मानती है।

प्रश्न-8. श्रीमती बैजल के अनुसार बर्डे पार्टी से क्या लाभ है?

उत्तर – 'बर्डे' पार्टी का आयोजन एक ऐसा अवसर है कि जिसमें लोगों की अच्छी-खासी तारीफ बटोरी जा सकती है, अपने घर की कीमती वस्तुओं से लोगों में धाक जमाई जा सकती है। सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाया जा सकता है और उस आयोजन पर किये जाने वाले खर्चे से कई गुना अधिक कीमती सामान उपहार के रूप में इकट्ठा किया जा सकता है। ऐसा श्रीमती बैजल मानती है।

प्रश्न-9. पिछले 'बर्डे' पर श्रीमती बैजल को कैसे उपहार प्राप्त हुए थे?

उत्तर – श्रीमती बैजल ने पिछले 'बर्डे' पर लोगों से विदेशी (इम्पोर्टेड) सामान उपहार स्वरूप प्राप्त किये।

प्रश्न-10. ''हाय! कैसे असभ्य, टुच्चे, जाहिल लोगों में आ फँसी है श्रीमती बैजल।'' किस कारण कथा नायिका ने अपने सम्बन्ध में ऐसा कहा था?

उत्तर – जब श्रीमती बैजल ने पार्टी समाप्त होने के बाद उपहारों के पैकेट खोले तो उनमें रखी हुई वस्तुओं के स्तर को देखकर श्रीमती बैजल ने अपने आपको ये शब्द कहे थे।

प्रश्न-11. पार्टी के अन्त में किसने स्वीटू को प्रसन्न किया?

उत्तर – पार्टी के अन्त में स्वीटू के स्कूल का ताँगे वाला आया था जिसके आने की स्वीटू का बहुत प्रसन्नता हुई।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रश्न-12. स्कूल के ताँगे वाले का क्या नाम था?

उत्तर – स्कूल के ताँगे वाले का नाम बन्ने भाई था।

प्रश्न-13. बन्ने भाई को किसने बर्डे पार्टी में आमंत्रित किया था?

उत्तर – स्वयं स्वीटू ने अपने बर्डे पार्टी में बन्ने भाई को आनंत्रित किया था।

प्रश्न-14. यह स्वीटू का कौन-सा जन्म दिवस था?

उत्तर – इस बार मनाये जाने वाला यह पाचवाँ जन्म दिवस था।

प्रशन-15. बन्ने भाई स्वीटू के लिए क्या उपहार लाया था?

उत्तर – स्वीटू के जन्म दिन पर बन्ने एक गेंदा के फूलों का सुन्दर हार लेकर आया था।

प्रश्न-16. श्रीमती बैजल सोफे पर क्यों गिर गई थी?

उत्तर – श्रीमती बैजल ने एक जूँठा गुलाब जामुन जानबूझ कर बन्ने भाइ की प्लेट में रख दिया था और वही गुलाब जामुन बन्ने ने स्वीटू को खिला दिया था जिससे श्रीमती बैजल दुःखी हुई और वह सोफे पर गिर गई।

प्रश्न-17. कस्टम वाले गुप्ताजी श्रीमती बैजल को क्या लाकर देते थे?

उत्तर – श्रीमती बैजल को कस्टम वाले गुप्ताजी इम्पोर्टेड सौन्दर्य प्रसाधन का सामान लेकर आते थे।

प्रश्न-18. 'बर्डे' पार्टी के अन्त में श्रीमती बैजल क्या सोचती है?

उत्तर – पार्टी समाप्त हो जाने के बाद श्रीमती बैजल बर्तनों के ढेर को देखकर सोचती है कि उसकी तो किस्मत ही फूट गई।

प्रश्न-19. स्वीटू अपने पापा से बार-बार क्या कहता है?

उत्तर – स्वीटू अपने पापा से बार-बार अपने द्वारा स्कूल के ताँगे वाले को अपनी बर्डे पर बुलाने की बात कहता रहता है।

प्रश्न-20. श्रीमती बैजल किस प्रकार की महिला है?

उत्तर – श्रीमती बैजल वेतन भोगी मध्यम वर्गीय फैशन परस्त और दिखावा पसंद स्वार्थी महिला है।

16.5.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. स्वयं प्रकाश द्वारा विरचित कहानी 'बर्डे' का कथानक-सार पर एक टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – सुप्रसिद्ध रचनाकार स्वयं प्रकाश द्वारा रचित 'बर्डे' कहानी मध्यमवर्गीय वेतनभोगी परिवारों की महिलाओं की दिखावटीपन व खोखलेपन को व्यक्त करने वाली ऐसी कहानी है जो उनकी इस मानसिकता पर करारा व्यंग्य करती है। श्रीमती बैजल एक महाविद्यालय के व्याख्याता की पत्नी है जो अपने पाँच वर्षीय पुत्र स्वीटू का पाचवाँ जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ आयोजन के रूप में मनाना चाहती है। वह सुबह से ही काम में जुट जाती है। अनेकप्रकार के व्यंजन तैयार करती है। खाना बनाने के बाद जब वह अपना मेकअप करने लगती है तो इसे अपने सौन्दर्य प्रसाधन के सामान से संतुष्टि नहीं हो पाती है तो वह दुःखी मन से सोचती है कि जब उसके पतिदेव सुधीर कुमार इम्फोर्समेन विभाग में इन्सपेक्टर थे तो उनके मित्र गुप्ताजी कस्टम से अनेक प्रकार के इम्पोर्टेड कास्मेटिक्स लाकर दे दिया करते थे और अब तो उन अच्छी वस्तुओं का अकाल ही पड़ गया है। उस समय उसके पास कई नौकर थे। अनेक लोग लिफ्ट देने के लिये सदैव तैयार रहते थे। वह शहर था और नौकरी भी अच्छी थी किन्तु अब उसने वह नौकरी छोड़ दी और एक छोटे से कस्बे में आकर अध्यापन का कार्य करने लगा है जहाँ पर किसी प्रकार की सुविधा नहीं है और न वहाँ पर ऐसे लोग ही रहते हैं। मेकअप करते समय वह यह भी सोचती है कि वहाँ पर मनाए जाने वाले 'बर्डे' पर लोगों के द्वारा अनेक प्रकार की कीमती व सुन्दर गिफ्ट्स भी दी जाती थी जिसमें न केवल खर्च किया जाने वाला पैसा ही वसूल होता था बल्कि कई गुनी कीमती वस्तुएँ भी आ जाती थी। साथ ही खाने वाले लोग जी भर के उसके खाने की व बनाने की कला की तारीफ करते थे। वह मेचिंग के कपड़े और गहने पहनकर एन वक्त पर तैयार होकर पूरी साज-सज्जा के साथ मेहमानों का इन्तजार करती है। यह उसके पुत्र का पाँचवा 'बर्डे' है। उस दिन सुधीर अपने कॉलेज से बिल्कुल पार्टी के समय पर आता है और स्वीटू भी मेहमानों के आगमन के समय ही स्कूल से आता है। इस बार स्वीटू के मन में न जाने क्यों वह उमंग नहीं थी जो हर बार होती है। वह मुश्किल से नए कपड़े पहनने के लिए तैयार होता है। केक काटा जाता है लेकिन मेहमान लोग केक का मतलब और वास्तविक महत्त्व नहीं समझते हैं अतः अकेली

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

स्वीटू की माँ ही ''हैप्पी बर्थ डे टू यू'' बोलकर रह जाती है। शेष लोग केवल तालियाँ बजाकर उनका सहयोग देते हैं। खाना खाते समय कोई भी मेहमान उसके खाने की तारीफ नहीं करता है तो वह स्वयं ही अपनी तारीफ बटोरने का उपक्रम करने लगती हैं। जब सभी लोग खाना खाकर चले जाते हैं तो वह उपहारों के पैकेट खोलती है तो दुःखी हो जाती है। उनमें बिस्कुट व चाकलेट, प्लास्टिक के सस्ते खिलौने और पालिस्टर के फुटपाथी सस्ते कटपीस देखकर उनका रक्तचाप गिर जाता है। अन्त में स्वीटू के द्वारा आमंत्रित ताँगे वाले को वह एक जूँठा गुलाबजामुन रख देती है किन्तु वह मेहमान उस गुलाबजामुन को स्वीटू के मुँह में रख देता है जिससे श्रीमती बैजल को और भी अधिक दुःख होता है। अन्त में बर्तनों का ढेर देखकर वह अपने आप को यह कहकर कोसने लगती है कि कैसे-कैसे गँवार, जाहिल और टुच्चे लोगों के पाले पड़ गई हैं श्रीमती बैजल। इस प्रकार कहानी का कथानक मध्यमवर्गीय लोगों की मानसिकता को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में काफी सक्षम है।

प्रश्न-2. प्रस्तुत कहानी 'बर्डे' के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर – हर कहानी में अपना एक उद्देश्य निहित होता है जो कि इस विधा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण महत्व होता है। 'बर्डे' कहानी में कथाकार स्वयंप्रकाश ने मध्यमवर्गीय परिवारों के दिखावटीपन व खोखलेपन का अत्यन्त सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। आजकल लगभग सभी नौकरी पेशा लोग जन्मदिन को एक आयोजन के रूप में मनाने हेतु तत्पर रहते हैं। इसे वे अपने परिवार व अपने स्टेटस की अनिवार्यता मानते हैं और सामाजिक प्रतिष्ठा का जरिया मानते हैं। उच्च वर्ग के लोग अपना स्टेण्डर्ड मेन्टेन करते हुए अपने स्टेटस को बनाये रखने के लिए काफी पैसा खर्च करते हैं। अब उन्हीं की होड़ में लोग हर वर्ष अपने बच्चों को जन्म दिन मनाने लगे हैं। उनकी यह धारणा रहती है कि इस आयोजन पर खर्च किया जाने वाला सारा पैसा उपहार स्वरूप वसूल हो जाता है और मुफ्त में सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ जाती है। ऐसे परिवारों की महिलाएँ अपने घर में संचित वस्तुओं का दिखावा करने मे भी नहीं चूकती हैं। औरतों को अन्य लोगों के द्वारा की जाने वाली तारीफ को सुनकर भी काफी राहत और प्रसन्नता मिलती है। सारे-सारे दिन काम में जूझ कर, झुँझला कर भी इस आयोजन की पूरी तैयारी करती हैं और अन्त में अपनी तारीफ सुनकर और उपहारों को देखकर प्रसन्न हो जाती है। जब श्रीमती बैजेल ने इस बार न तो तारीफ सुनी और न कीमती उपहार प्राप्त किये तो वह अत्यन्त दुःखी हो जाती है। पार्टी खत्म होने के काफी देर बाद जब स्वीटू के स्कूल का ताँगे वाला बच्चे वहाँ आता है तो वह झुँझलाकर उसे नाश्ते की प्लेट परोसती है और एक जूँठा गुलाब जामुन उसकी प्लेट में रख देती है। और जब वह ताँगे वाला उसी गुलाब जामुन को स्वीटू के मुँह में मिठाई खिलाने के लक्ष्य से रख देता है तो श्रीमती बैजल को और अधिक दुःख होता है। वह एकदम सौफे पर गिर जाती है। अस्तु, इस कहानी का उद्देश्य मध्यमवर्गीय वेतन भोगी परिवारों की विसंगतियों और नकल की प्रवृत्तियों पर करारा व्यंग्य करना है। कहानीकार स्वयं प्रकाश ने ऐसे परिवारों के खोखलेपन व दिखावटीपन को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है तथा उनकी कमजोरियों को उद्घाटित किया है। यह कहानी अपने इस उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्णतः सफल हुई है।

16.5.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न-1. '' 'बर्डे' कहानी वेतन भोगी मध्यम वर्गीय लोगों के खोखले व्यवहार पर एक तीखा व्यंग्य है।'' कथन को स्पष्ट करते हुए श्रीमती बैजल की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

अथवा

'बर्डे' कहानी में अभिजात्य वर्ग के खोखलेपन पर तीव्र व्यंग्य किया है, स्पष्ट करते हुए कथानायिका का चरित्र उद्घाटित कीजिये।

उत्तर – स्वयं प्रकाश वर्तमान समय के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा चर्चित कहानीकारों में से एक हैं। इनकी कहानियों में साफ-सुथरी और प्रखर चेतना दिखाई देती है। ये सोद्देश्य रचना-कर्म के पक्षधर हैं और प्रखर वर्ग-दृष्टि इनके लेखन का खास गुण है। स्वयंप्रकाश की कहानियों में मध्यम वर्ग की सामाजिक चेतना का सुन्दर चित्रण हुआ है तथा इन्होंने उसके खोखलेपन पर तीखा व्यंग्य भी किया है। इनकी कहानियों में व्यंग्य का तीखापन, आलोचना की स्पष्टता और भाषा की निजी पहचान अलग से दिखाई देती है। इनके कहानी संग्रह हैं – 'मावा और भार', 'सूरज कब निकलेगा', 'आसमाँ कैसे-कैसे' तथा 'अगली किताब' आदि। 'सूरज कब निकलेगा' संकलन पर इन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रस्तुत कहानी – स्वयं प्रकाश की 'अगली किताब' कहानी-संग्रह से संकलित प्रस्तुत कहानी वेतनभोगी मध्यम वर्ग के खोखलेपन पर प्रहार करने वाली रचना है। इसमें मध्यम वर्ग की महिला श्रीमती बैजल अपने बेटे स्वीटू के जन्म-दिवस का आयोजन करती है। वह उच्च वर्ग के द्वारा मनाये जाने वाली 'बर्थ डे-पार्टी' की नकल करती है। परन्तु इसमें उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह चाहती है कि उस पार्टी में बड़े-बड़े लोग सम्मिलित हों और वे कीमती उपहार दें, परन्तु उस पार्टी में सब साधारण वर्ग के लोग सम्मिलित होते हैं और वे उपहार भी अत्यन्त साधारण मूल्य का देते हैं। इससे श्रीमती बैजल को अत्यधिक दु:ख होता है। कहानी के अन्त में स्वीटू का ताँगेवाला पहलवान आता है। उसे देखकर श्रीमती बैजल घृणा करने लगती है, परन्तु स्वीटू उसके साथ खूब खेलता है। इस तरह 'बर्डे' कहानी में लेखक ने अनेक विसंगतियों का समावेश कर मध्यम वर्ग के खोखलेपन को उजागर किया है।

'बर्डे' कहानी में निहित व्यंग्य

प्रस्तुत कहानी में श्रीमती बैजल को मध्यवर्ग की महिला बतलाया गया है। वह अपने बेटे स्वीटू के पाँचवें जन्म-दिवस पर पार्टी का आयोजन करती है। पिछली बार इसी तरह की पार्टी में उसके घर में महँगे-महँगे उपहार आये थे और कई लोग विदेशी सामान भी दे गये थे, क्योंकि उस समय तक सुधीर एन्फोर्समेण्ट इंस्पेक्टर की बढ़िया नौकरी पर था। अब उसने वह नौकरी छोड़कर लेक्चरशिप की नौकरी कर ली थी। इस कारण इस साल स्थानान्तरण हो जाने से वे ऐसी जगह पर आये, जहाँ न तो कीमती भेंट देने वाले लोग रहते थे और न मध्यम वर्ग का दिखावा करने वाले लोग ही थे। श्रीमती बैजल को पार्टी के आयोजन के कारण दिन भर काम करना पड़ा था और काफी पैसा व्यय करके खाने-पीने की चीजें तैयार की थीं, परन्तु पार्टी जैसी जोरदार होनी चाहिए थी, वैसी नहीं रही। पार्टी में उपहार भी कीमती नहीं आये थे। इस बात से श्रीमती बैजल को अत्यधिक दु:ख हुआ था। पार्टी के अन्त में स्वीटू के ताँगे वाले का आगमन और उसे जूठा गुलाबजामुन देने में श्रीमती बैजल ने अपना जो खोखलापन दिखाया, उससे भी अधिक बुरी स्थिति तब हुई जब तांगेवाले ने वही गुलाबजामुन स्वीटू के मुँह में रख दिया। इस प्रकार श्रीमती बैजल के कारण ही उसके बेटे को अपनी बर्थ डे पर जूठन खानी पड़ी। इन सब घटनाओं का उल्लेख कर कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी में मध्यम वर्ग के सामाजिक जीवन में व्याप्त खोखलेपन को दिखावे की प्रवृत्ति पर तीखा व्यंग्य किया है। साथ ही उनके विसंगतिपूर्ण आचरण को सूक्ष्म दृष्टि से उभारकर उनकी कमियों का उल्लेख किया है। इस तरह के व्यंग्य के पैनेपन के कारण प्रस्तुत कहानी सफल हुई है।

श्रीमती बैजल का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत कहानी में श्रीमती बैजल के पति सुधीर, नौकरानी सीता, भँवरसिंह, स्वीटू और उसका ताँगे वाला बच्चे आदि पात्र रखे गये हैं। इन सब पात्रों में श्रीमती बैजल को ही प्रमुखता दी गई है। कहानी के आरम्भ से अन्त तक वही समस्त कथानक में उपस्थित रहती है। एक प्रकार से कहानीकार ने उसके चरित्र को ही आधार बनाकर वेतनभोगी मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन के खोखलेपन का चित्रण किया है। अत: उसके चरित्र की जिन विशेषताओं का प्रस्तुत कहानी में उद्घाटन हुआ है, उन्हें अग्र शीर्षकों में समझा जा सकता है –

1. पाश्चात्य फैशनपरस्त – श्रीमती बैजल पाश्चात्य संस्कारों की फैशनपरस्त महिला है। वह फुर्सत निकालकर मेकअप के लिये ड्रेसिंग टेबिल के सामने बैठी रहती थी। वह अपने प्रसाधन में काफी समय लगाती थी। यद्यपि उसका शरीर कुछ मोटा हो गया था फिर भी वह चुस्त और कसे हुए वस्त्र पहनती थी। उसके बाल झड़ने लग गये थे, इसलिए वह उन्हें स्विच लगाकर फिक्स कर लेती थी। स्वीटू के जन्मदिन की पार्टी पर वह अच्छी तरह से सज-धजकर तैयार हुई थी। उस समय वह सोचने लगी थी कि यदि इस कस्बे में ब्यूटी पार्लर होता तो कितना अच्छा रहता? इस प्रकार फैशनपरस्ती में श्रीमती बैजल पूर्णतया नये रंग-ढ़ंग की थी।

2. दिखावापसन्द – मध्यम वर्ग के लोगों में दिखावे की प्रवृत्ति अधिक होती है। इस वर्ग के लोग हर बात में दूसरों पर दोष निकालना जानते हैं। यही प्रवृत्ति श्रीमती बैजल की भी थी। इसी कारण जब वह बर्थ-डे पार्टी के लिये सजने लगी तो अपने मेकअप में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रखना चाहती थी। कहानीकार ने उसकी दिखावा-पसन्द प्रवृत्ति की ओर संकेत करत हुए लिखा है कि ''अगर प्योर सिल्क की साड़ी ही पहननी है तो नेलपॉलिश तो उसी शेड की लगा हीलें। उठायी.....खोली.....फिर सोचा.....सर्व कौन करेगा? और इतनी चिल्लर-पिल्लर सम्हालेगा कौन? सुधीर तो कुछ करेंगे नहीं, उन्हें ही करना पड़ेगा। कोई इधर से खींचेगा, कोई उधर से, साड़ी का सत्यानाश हो जाएगा.....चाशनी के हाथ तो जरूर लगेंगे। चलो, ऑरगंडी की ही

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पहन लेते हैं.....जो बम्बई से लाये थे.....बस, झंझट खत्म। सैंट.....सेण्डल.....लिपस्टिक.....चूड़ियाँ.....सब हैं उसके साथ की। लेकिन ब्लाउज! क्या वह छोटा तो नहीं हो गया होगा? क्या अब उसे खोलकर ठीक करने का वक्त है?''

3. पति से अप्रसन्न रहने वाली – श्रीमती बैजल अपने पति के व्यवहार से पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं थी। उसका पति सुधीर पहले इन्फोर्समेण्ट में इंस्पेक्टर था। वहाँ ऊपर की आमदनी थी, रहने को ठाटदार मकान था, नौकर-चाकर थे, लिफ्ट देने वालों की लाइन लगी रहती थी। सुधीर ऐसी अच्छी नौकरी छोड़कर लेक्चरर बनकर एक कस्बे में आ गया था। यद्यपि श्रीमती बैजल मानती थी कि चिरंजीलाल बद्रीप्रसाद वाले केस में उसका पति फँस गया था और इसी कारण उसने इतनी अच्छी नौकरी छोड़ दी थी, परन्तु सुधीर अपने बच्चे के जन्म-दिन पर छुट्टी लेकर घर पर नहीं रहा था। वह इन्विजिलेशन ड्यूटी पर चला गया था। इस कारण वह सोचती थी कि बच्चे का जन्मदिन साल में दस-बीस बार नहीं आता है। आज तो सुधीर को घर पर रहना चाहिए था तथा स्वीटू को भी घर पर रखना चाहिए था। इस कारण वह अपने पति से अप्रसन्न थी।

4. भाग्यवादी – श्रीमती बैजल बात-बात पर अपने भाग्य को कोसती रहती थी। साड़ी के मैच का ब्लाउज छोटा हो जाने पर वह अपनी किस्मत को खराब मानने लगी। इसी प्रकार अपने पति सुधीर के द्वारा एन्फोर्समेण्ट की नौकरी छोड़ देने पर अपने भाग्य को कोसने लगी। नौकरों के द्वारा ढंग से काम न करने पर और पार्टी में कीमती उपहार न आने पर भी वह अपने भाग्य को कोसने लगी। अन्त में स्वीटू के ताँगे वाले द्वारा जूठा गुलाबजामुन स्वयं न खाकर स्वीटू को ही खिला देने से श्रीमती बैजल अपने बुरे भाग्य को कोसती हुई धम्म से सोफे पर गिर गई। इस तरह के विभिन्न प्रसंगों से उसकी भाग्यवादी प्रवृत्ति व्यक्त की गई है।

5. नौकरों से परेशान – अपने बेटे स्वीटू के जन्म-दिन पर श्रीमती बैजल ने पार्टी का आयोजन किया। उसके लिए घर पर ही भोजन समाग्री तैयार की गई। इस काम में उसे दिन भर लगा रहना पड़ा, क्योंकि उसके पास कोई भी काम का नौकर नहीं था। उसकी नौकरानी सीता अत्यधिक नासमझ थी। उसे जरा-सा कुछ कह दो तो वह मुँह फुलाकर चल देती थी। वह ऐसी थी कि ''कहो खेत की सुने खलियान की। कहो हरिद्वार सुने फर्रुखाबाद। कोई काम उसके भरोसे छोड़ा नहीं जा सकता। एक दिन सब्जी बनवा लो, इतनी मिर्च झोंक देगी कि उसे खाओ या रो लो।'' इसी प्रकार सीता का पति भँवरसिंह भी कामचोर नौकर था। वह इनका पार्ट-टाइम नौकर था। वह जिस काम के लिये भेजा जाता था, वहाँ से जल्दी लौटकर नहीं आता था और कोई भी काम ढ़ंग से नहीं करता था। इस कारण श्रीमती बैजल अपने दोनों नौकरों से परेशान रहती थी।

6. प्रशंसा सुनने की इच्छुक – प्रत्येक मध्यमवर्गीय महिला का यह स्वभाव होता है कि वह बात-बात पर लोगों से अपनी प्रशंसा सुनना चाहती है। श्रीमती बैजल की भी यही विशेषता थी। वह प्रति वर्ष अपने बेटे स्वीटू की बर्थ-डे पार्टी के लिये पकवान बनाती थी और पार्टी में सम्मिलित लोगों से अपनी प्रशंसा सुनना चाहती थी। उसकी इस प्रवृत्ति का संकेत इस वर्णन से मिलता है –

''खूब थकीं श्रीमती बैजल उस दिन, और थकने के बाद झुँझलाहट भी स्वाभाविक है। पर मजाल है कोई नुक्स निकाल सका हो। कितने बड़े-बड़े घरों के लोग आये थे। सबकी जबान पर एक ही बात थी – कमाल कर दिया मिसेज बैजल! कितनी राहत मिलती है काम सफल होने पर। सारी मेहनत सकारथ हो जाती है।''

7. लालची स्वभाव – नौकरीपेशा मध्यमवर्गीय परिवारों में प्राय: फैशन के रूप में तथा कीमती उपहार पाने के लालच में वर्षगाँठ का आयोजन किया जाता है। श्रीमती बैजल का भी यही स्वभाव था। वह दिन भर काम में लगी रही, तरह-तरह के व्यंजन बनाती रही और लोगों को पार्टी में आग्रह के साथ खिलाती रही, क्योंकि पिछली बार की बर्थ-डे पार्टी में जितना खर्च हुआ था, उससे चार गुना अधिक उपहार के रूप में वसूल हो गया था। कोई कीमती सूट-पीस लाया था, कोई जापानी स्लाइड प्रोजेक्टर, कोई खूबसूरत एम्पोर्टेड एलबम और कोई बैट्री वाली ट्रेन लाया था। इसी लालच से इस बार भी पार्टी समाप्त होने के बाद श्रीमती बैजल ने अपने पति सुधीर के साथ उपहारों के पैकेट खोलकर देखने प्रारम्भ किये। परन्तु इस बार कई मेहमान खाली हाथ हिलाते हुए आ गये थे, कुछ ने स्वीटू के हाथ में पाँच का नोट थमा दिया था और कुछ ऐसे पैकेट लाये थे, जिनमें बिस्कुट, गोली-चॉकलेट या सस्ते प्लास्टिक के खिलौने ही थे। इस प्रकार के उपहारों को देखकर श्रीमती बैजल अत्यधिक दु:खी हो गई और उन लोगों को भला-बुरा भी कहने लगी। इस तरह के आचरण से उसके लालची स्वभाव का सुन्दर चित्रण हुआ है।

8. महत्त्वाकाँक्षा वाली – श्रीमती बैजल महत्त्वाकाँक्षा रखने वाली महिला थी। वह लोगों के सामने अपना बड़प्पन दिखाना चाहती थी। इसीलिए वह फैशन के हिसाब से घर को सजाकर रखती थी। स्वयं भी उसी तरह के प्रसाधन से सुसज्जित रहती

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

थी। वह कस्बे के लोगों में अपना प्रभाव जमाना चाहती थी और भौतिक स्तर पर अपने परिवार को उच्च वर्ग की तरह सम्पन्न देखना चाहती थी।

9. ग्लानि-वेदना से ग्रस्त—जब श्रीमती बैजल को आशा के अनुरूप उपहार नहीं दिखाई दिये, तो वह दिन भर की मेहनत और खर्चे को लक्ष्यकर ग्लानि से भर गई। अन्त में स्वीटू का ताँगे वाला पहलवान आया और श्रीमती बैजल मन ही मन उसके प्रति तिरस्कार भाव अपनाकर तथा एक प्लेट में किसी बच्चे द्वारा जूठा छोड़ा गया साबुत गुलाबजामुन रखकर उसके सामने ले आयी। ताँगेवाले के आने से स्वीटू बहुत खुश हो रहा था, तभी ताँगेवाले ने स्वीटू के खुले मुँह में अनायास ही वह गुलाबजामुन रख दिया। इससे श्रीमती बैजल स्वयं को कोसती हुई वेदना से ग्रस्त हो गई और कहने लगी कि ''आज जूठन भी खानी थी हमारे स्वीटू को।'' अन्त में जूठे बर्तनों के पहाड़ को देखकर उन्हें साफ करने की चिन्ता से उसे और भी दुःख हो रहा था।

10. भेदभाव बरतने वाली—कहानी के अन्त में स्वीटू का ताँगेवाला पहलवान आया। उसके साथ श्रीमती बैजल ने जो व्यवहार किया, वह उसके भेदभावपूर्ण आचरण का श्रेष्ठ उदाहरण है। वह ताँगेवाले को छोटा व्यक्ति मानकर अन्दर से जूठन की प्लेट उठाकर लायी थी, परन्तु स्वीटू अपने ताँगेवाले को देखकर बहुत ही खुश था और उसकी गोद में फुदक रहा था। इस कारण ताँगेवाले ने वह जूठा गुलाबजामुन उसे खिला दिया। इस तरह भेदभाव का आचरण करने का फल श्रीमती बैजल को ही मिला। यह उसके चरित्र की कमजोरी मानी जा सकती है।

16.6 सारांश

इस विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि 'बर्डे' कहानी में मध्य-वर्गीय सामाजिक दृष्टिकोण और उनके खोखलेपन का उद्घाटन हुआ है। इसमें मध्यम-वर्ग के विसंगतिपूर्ण आचरण पर तीखा व्यंग्य किया गया है। इसमें श्रीमती बैजल मध्यम-वर्गीय महिलाओं की प्रतिनिधि पात्र है। उसके चरित्र में अनेक विशेषताओं का समावेश दिखाया गया है। कहानीकार उसके चरित्रांकन में पूर्णतया सफल रहा है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इकाई-17 : उपन्यास एवं कहानी साहित्य

संरचना

17.0 प्रस्तावना

17.1 उद्देश्य

17.2 हिन्दी कहानी के भेद

17.3 हिन्दी कहानी की शैली

17.4 कहानी-उपन्यास में अन्तर

17.5 सारांश

17.0 प्रस्तावना

कहानी आधुनिक युग की प्रमुख गद्य विधा है, जो कि कथा से बिल्कुल भिन्न है। अनेक विद्वानों ने कहानी की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने भी कहानी की विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत कीं, परन्तु किसी ने अपने दृष्टिकोण द्वारा किसी एक पक्ष को उद्घाटित किया तो किसी ने दूसरे दृष्टिकोण से किसी और पक्ष को। इस प्रकार कहानी की अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं –

डॉ. गुलाब राय ने कहानी की परिभाषा देते हुए लिखा कि ''कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफिल शुरु होते ही अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक ही क्षण में चित्र को इतने माधुर्य से परिपूरित कर देता है जितना रात भर गाना सुनने में भी नहीं होता है।''

इसी संदर्भ में मुंशी प्रेमचन्द ने कहा कि ''सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जो किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित हो।''

हिन्दी कहानी के संदर्भ में जैनेन्द्र कुमार अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि ''कहानी तो एक भूख है, जो निरन्तर समाधान पाने की कोशिश करती रहती है। हमारे अपने सवाल होते हैं, शंकाएँ होती हैं, चिन्ताएँ होती हैं और सभी उनका उत्तर, उनका समाधान खोजने का, पाने का सतत प्रयत्न करते रहते हैं। कहानी उस खोज के प्रयत्न का एक उदाहरण है।''

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अच्छी कहानी की परिभाषा देते हुए लिखा कि ''नये युग ने जिन गुण-दोषों को उत्पन्न किया है, उन सबको लेकर उपन्यास और कहानियाँ अवतीर्ण हुई हैं। छापे की कल ने ही इनकी माँग बढ़ा दी है और छापे की कल ने ही इनकी पूर्ति का साधन बनाया है। यह गलत धारणा है कि उपन्यास और कहानियाँ संस्कृत की कथाओं और आख्यायिकाओं की सीधी सन्तान हैं।''

इसी सन्दर्भ में श्री कृष्णलाल बताते हैं कि ''आधुनिक कहानी साहित्य का एक विकसित कलात्मक रूप है, जिसमें एक कल्पना शक्ति के सहारे कम से कम पात्रों और चरित्रों के द्वारा कम से कम घटनाओं और प्रसंगों की सहायता से मनोवांछित कथानक, चरित्र, वातावरण, दृश्य अपने प्रभाव की सृष्टि करता है।''

17.1 उद्देश्य

यहाँ हम हिन्दी कहानी के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

17.2 हिन्दी कहानी के भेद

विषय एवं वस्तु की दृष्टि से कहानी को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है –

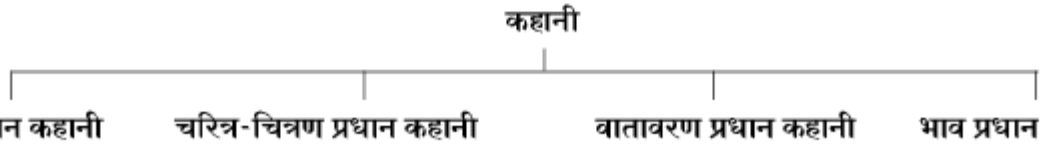

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कहानी के प्रकार की यह परम्परा उस समय विद्यमान थी जबकि प्रारम्भिक अवस्था में थी, परन्तु वर्तमान समय में काल-क्रम, विकास-क्रम, कहानीकार और तत्त्वों की विशेषताओं के आधार पर कहानियों के अनेक भेद किये जा सकते हैं।

वर्तमान समय में कहानियों के वर्गीकरण के आधारभूत सिद्धान्तों में प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं –

1. विषय-वस्तु के आधार पर – विषय-वस्तु के आधार पर कहानियों के निम्नलिखित भेद किये जा सकते हैं –

(i) घटनाप्रधान कहानी – इस प्रकार की कहानियों में घटना का प्राधान्य रहता है। सम्पूर्ण कहानी किसी घटना पर आधारित होती है। जैसे – दुलाई वाली (बंग महिला)। स्थूल आदर्शवादी एवं जासूसी-तिलस्मी कहानियाँ प्राय: इसी वर्ग में आती हैं।

(ii) पात्रप्रधान कहानी – इस प्रकार की कहानियों में चरित्र-विश्लेषण पर अधिक जोर दिया गया है। 'बूढ़ी काकी' व 'सयानी बुआ' इसी प्रकार की कहानियाँ हैं। इस वर्ग के कहानीकारों में सर्वश्री प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, मोहन राकेश तथा राजेन्द्र यादव के नाम उल्लेखनीय हैं।

(iii) विचारप्रधान कहानी – इस प्रकार की कहानियों में किसी एक भाव या विचार के आधार पर कथानक का विकास किया जाता है। ये कहानियाँ सामान्यत: किसी चिन्तन या सामयिक सत्य की व्यंजना के लिए लिखी जाती हैं। इन कहानियों का मुख्य लक्ष्य प्रभाव की सृष्टि करना होता है। इस वर्ग के कहानीकारों में जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, जैनेन्द्रकुमार, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अज्ञेय द्वारा विरचित 'कोठारी की बात' नामक कहानी इसी प्रकार की है।

(iv) नीतिप्रधान कहानी – इस प्रकार की कहानियों में किसी नीति अथवा उदात्त विचारधारा के आधार पर कहानी का कथानक विकसित होता है। प्रेमचन्द द्वारा विरचित 'नमक का दरोगा' कहानी इसी प्रकार की है।

(v) शिकार सम्बन्धी कहानियाँ – पं. श्रीराम शर्मा विरचित अनेक कहानियाँ इस श्रेणी में आती हैं।

(vi) कल्पना प्रधान कहानी – इस प्रकार की कहानियों में कल्पना का प्राधान्य होता है। मोहन लाल मेहता 'वियोगी' द्वारा लिखित 'खोपड़ी' नामक कहानी इसी प्रकार की है।

(vii) प्रतीकात्मक कहानी – इस प्रकार की कहानियों में पात्र प्रतीक के रूप में होते हैं। कथानक में भी प्रतीकात्मकता रहती है। श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी द्वारा लिखित 'खाली बोतल' कहानी इसी प्रकार की कहानी है।

(viii) साहसिक कहानियाँ – जैसे वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा विरचित 'दबे पाँव' कहानी इस कोटि की है।

2. प्रतिपादित शैली के आधार पर – इस शैली के आधार पर कहानियों के निम्नलिखित भेद किये जा सकते हैं –

(i) आत्मकथा रूप में लिखी हुई कहानियाँ – इसमें पात्र या लेखक स्वयं अपने जीवन की घटनाओं को कहानी के रूप में लिखता है। प्रेमचन्द द्वारा विरचित 'बड़े भाई साहब' कहानी इसी श्रेणी की है।

(ii) वर्णनात्मक पद्धति में लिखी हुई कहानियाँ – इस प्रकार की कहानियों में वर्णन की प्रधानता होती है। प्रेमचन्द द्वारा विरचित 'पंच-परमेश्वर' कहानी वर्णनात्मक कहानियो में श्रेष्ठ स्थान रखती है।

(iii) पत्र-पद्धति में लिखी हुई कहानियाँ – इसमें लेखक पत्रों के रूप में अपनी कहानी लिखता है। इस विधा की कहानियाँ अधिक नहीं लिखी गईं। चन्द्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा लिखित 'एक सप्ताह' कहानी इसी श्रेणी की है।

(iv) वार्तालाप पद्धति में लिखी हुई कहानियाँ – इस प्रकार की कहानियों में यद्यपि संवाद अधिक रखे जाते हैं, परन्तु कहानी को आकर्षक बनाने के लिए वातावरण, दृश्य-चित्रण आदि के सेंत के लिए संवादों के बाद स्वयं कहानीकार निर्देश करता चलता है – 'सोहन ने कहा.....मोहन ने उत्तर दिया' आदि।

(v) डायरी पद्धति में लिखी हुई कहानियाँ – जब डायरी के पन्नों द्वारा कहानी की सम्पूर्ण घटनाओं का वर्णन होता है, तो वह कहानी डायरी पद्धति पर लिखित कहानी कहलाती है। इस प्रकार की कहानी में अतीत की घटनाओं का भावुकतापूर्ण उल्लेख किया जाता है। सुदर्शन द्वारा विरचित 'एक स्त्री की डायरी' तथा आलमशाह खान द्वारा रचित 'कागज के पुल' नामक कहानी इसी श्रेणी की है।

3. विषय के आधार पर – कहानी का विषय अथवा प्रतिपाद्य किस प्रकार का है, इसको आधार मानकर भी कहानियों के निम्नलिखित वर्गीकरण किये जा सकते हैं –

(i) धार्मिक, नैतिक तथा दार्शनिक कहानियाँ, जैसे – शम्बूक (यशपाल)।

(ii) राजनीतिक कहानियाँ – अज्ञेय द्वारा विरचित 'विपथगा'।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iii) ऐतिहासिक कहानियाँ – प्रसाद द्वारा विरचित 'ममता'।

(iv) वैज्ञानिक कहानियाँ – यमुनादत्त वैष्णव विरचित – 'दो रेखायें'।

(v) सामाजिक कहानियाँ – हिन्दी की अधिकांश कहानियाँ सामाजिक कहानियों के अन्तर्गत आती हैं।

4. रचना के लक्ष्य एवं उद्देश्य के आधार पर – कोई भी कार्य निष्प्रयोजन नहीं किया जाता। कहानी लिखने में भीलेखक का कुछ-न-कुछ उद्देश्य निहित होता है। उद्देश्य के आधार पर कहानियों को निम्नांकित भागों में विभाजित किया जा सकता है –

1. आदर्शवादी,
2. यथार्थवादी,
3. आदर्शोन्मुख यथार्थवादी,
4. प्रगतिवादी,
5. गांधीवादी।

5. स्वरूप विकास के आधार पर – कहानी के स्वरूप एवं उसके विकास को ध्यान में रखते हुए कहानियों के निम्नलिखित भेद किये जा सकते हैं –

1. निर्माण काल की कहानियाँ	(ई. सन् 1800 से 1900 तक की कहानियाँ)
2. प्रयोग-काल की कहानियाँ	(ई. सन् 1900 से 1916 तक की कहानियाँ)
3. विकास-काल की कहानियाँ	(ई. सन् 1916 से 1936 तक की कहानियाँ)
4. उत्कर्ष-काल की कहानियाँ	(ई. सन् 1936 से 1955 तक की कहानियाँ)
5. आधुनिक-काल की कहानियाँ	(ई. सन् 1955 के बाद की कहानियाँ)

इस प्रकार हम देखते हैं कि वर्तमान युग में कहानी के अनेक प्रकार व शैलियाँ दिखाई देती हैं। वर्तमान युग में हिन्दी कहानी विधा का पूर्ण विकसित रूप देखने को मिलता है।

17.3 हिन्दी कहानी की शैली

जिस प्रकार कहानी की भाषा के कई रूप हो सकते हैं, उसी प्रकार कहानी की शैली के भी कई रूप हो सकते हैं। वर्तमान आलोच्य युग में अनेक प्रकार की कहानी शैलियाँ प्रचलित हैं – वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, संवादात्मक शैली, नाटक शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, काव्यात्मक शैली, लोक कथात्मक शैली, स्मृतिपरक शैली, स्वप्न शैली तथा मनोविश्लेषणात्मक शैली इत्यादि। यहाँ कहानी कला की प्रमुख शैलियों का परिचय दिया जा रहा है –

1. मनोविश्लेषणात्मक शैली – ऐसी कहानियों का आधार फ्रायड का मनोविज्ञान है। इसमें अवचेतन मन को प्रधान मानकर चला जाता है। कहानीकार पात्रों का अन्तर्विश्लेषण करके व्यक्ति की मन:स्थिति को स्पष्ट करता है। स्थूल घटनाओं की इसमें कमी होती है। अज्ञेय के 'विपथगा' नामक कहानी-संग्रह की सभी कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। हिन्दी में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, कमलेश्वर, मोहन राकेश आदि की कहानियों में मनोविश्लेषण शैली में विवरण अधिक मिलता है। जैनेन्द्र की 'पत्नी' श्रेष्ठ मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। इसमें व्यक्तित्व के दोहरेपन के, यौवन सम्बन्धी ग्रंथियें के तथा प्रणयन सम्बन्धी कॉम्पेलक्स के सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। जैनेन्द्र की कहानियों में जीवन की असाधारण परिस्थितियों के बीच मानव का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। उनकी 'चलितचित्र' ऐसी ही कहानी है। अज्ञेय कृत 'अकलंक' व 'शत्रु' नामक कहानियाँ भी मनोविश्लेषणात्मक हैं। 'शत्रु' नामक कहानी मं लेखक ने मानव प्रवृत्ति का विश्लेषण करते हुए बतलाया है कि वह सरलता की तरफ आसानी से झुक जाता है। कुछ कहानियाँ अपराध मनोविज्ञान पर लिखी गई हैं, यथा – 'शिवानी की कहानियाँ'।

2. पत्र-शैली – पत्र के रूप में कहानी लिख दी जाये, तो उसे पत्र-शैली में रचित कहानी कहते हैं। नायक-नायिका के परस्पर पत्रों के माध्यम से ही लेखक कहानी का ताना-बाना तैयार कर देता है। इस शैली में भी हिन्दी की गिनी-चुनी कहानियाँ लिखी गई थीं, जैसे – 'कवि की स्त्री'। कमलेश्वर की 'मानसरोवर के हंस' कहानी भी पत्र-शैली में लिखी गई है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

इसमें कथा का विकास पात्रों के उत्तर-प्रत्युत्तरों के माध्यम से होता है, किन्तु इसमें जरूरी है कि लेखक तर्कवादिता का आश्रय न ले। इस शैली का प्रचलन प्रेमचन्दजी के जमाने में होता था। प्रेमचन्द की 'दो सखियाँ' तथा प्रसाद कृत 'देवदासी' भी इसी शैली में लिखी गई कहानियाँ हैं। इस शैली में लेखक अधिक स्वतंत्र नहीं रहता है। प्रत्यक्ष घटनाओं का अभाव रहता है। वर्णनात्मकता अधिक आ जाती है। पात्र अपनी बातों का तथा अपने साथ घटी घटनाओ का ही वर्णन करते हैं। इसमें संवादों को भी सम्यक् स्थान नहीं मिलता है। मूलत: ऐसी कहानियाँ चरित्र प्रधान हुआ करती हैं।

3. आत्मकथात्मक शैली – प्रथम पुरुष में कहानी लिखने का तरीका आत्मकथात्मक शैली में आता है। इसमें लेखक ही नायक लगता है, 'मैं' का प्रयोग होता है। आधुनिक कथा साहित्य में इस शैली का अधिक प्रयोग हुआ है। मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, अमरकांत, निर्मल वर्मा आदि ने इस शैली में कहानियाँ लिखी हैं।

प्राय: इसमें एक ही पात्र कथा कहता है। यदि पात्र अधिक हों तो सभी अपनी-अपनी बात कहते हैं। सभी की बात प्रथम पुरुष में पृथक्-पृथक् परिच्छेदों में कही गई होती है, किन्तु सब एक ही भाव संवेदना या कथा की ही पुष्टि करते हैं। यह शैली चरित्र प्रधान कहानियों के लिए विशेष रूप से अनुकूल पड़ती है।

इस शैली में लिखना थोड़ा सुविधाजनक भी है। कथा-सूत्र मिलाने में लेखक को सावधानी बरतनी पड़ती है, किन्तु ऐसी कहानियों में नाटकीयता व सक्रियता का प्राय: अभाव-सा रहता है। 'चित्र वाले पत्थर', 'एक घटना', 'तस्वीर', 'वह प्रतिमा', 'खूनी' व 'सपत्नीक' ऐसी ही शैली में लिखी मुख्य कहानियाँ हैं।

4. भावात्मक शैली – ऐसी कहानियों में कथा के स्थान पर भावों की उमड़-घुमड़ अधिक होती है। भावुक पात्र व संवेदनशीलता से डबाडब भरी कथा ही इस शैली की विशेषता होती है। कवि का हृदय, मधूलिका, आकाशदीप आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। इन कहानियों में कथा के तत्त्वों को विशेष स्थान नहीं मिलता। वस्तुत:, इस शैली में प्रेम, करुणा, दया आदि भाव ही प्रमुख रहते हैं। राष्ट्रीय प्रेम का उद्वेलन करने वाली कहानियाँ भी इसी श्रेणी में आती हैं।

भावात्मक कहानियाँ भी वातावरण व चरित्र-प्रधान होती हैं। इनकी भाषा में भावनात्मकता से अधिक उदाहरण मिलते हैं। प्रसाद की 'बिसाती' नामक कहानी भी भावात्मक शैली का श्रेष्ठ उदाहरण है। सुदर्शनजी ने भी कुछ भावात्मक शैली की कहानियाँ लिखी हैं। 'आशीर्वाद', 'हार की जीत' आदि कहानियों में इस शैली के उदाहरण मिलते हैं। अमरकान्त कृत 'एक काली लड़की' को भावात्मक शैली का सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। अमरकान्त कृत 'एक काली लड़की' को भावात्मक शैली का सुन्दर उदाहरण माना जा सकता है। ये कहानियाँ कुछ-कुछ गद्य-काव्य जैसी होती हैं। आज तो यह शैली भी अपना महत्त्व खो चुकी है, प्रेमचन्द युग के बाद इस प्रकार की कहानियाँ नहीं लिखी गई हैं।

5. प्रतीकात्मक शैली – ऐसी कहानियों में शीर्षक सांकेतिक होते हैं। उनकी कथा में भी प्रतीकों का प्रयोग होता है। ये कहानियाँ प्रभावशाली होती हैं। 'परिन्दे', 'बिल और दाना' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। प्रतीकात्मक शैली में अर्थ सौजन्य अधिक होता है। 'फेंस के इधर और उधर' भी ऐसी ही कहानी है।

इस शैली के दो रूप होते हैं – कलात्मक तथा भावात्मक। कलात्मक रूप में कला सम्बन्धी प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। वहाँ पर प्रतीक भी प्रेम, घृणा, क्रोध आदि विविध भावों को व्यक्त करने वाले होते हैं। कामैषणाओं की अभिव्यंजना में प्रतीकों का अधिक प्रयोग होता है। फ्रॉयड ने सैकड़ों काम-प्रतीकों का उल्लेख किया था, जिनका प्रयोग कहानियों में भी किया गया है।

ये प्रतीक मूर्त भी होते हैं, अमूर्त भी। 'बिल और दाना' तथा 'फेन्स के इधर और उधर' में मूर्त प्रतीक हैं। भावात्मक प्रतीकों का प्रयोग 'बिसाती' नामक कहानी में हुआ है।

प्रतीकों के माध्यम से कई बार मनुष्य की सूक्ष्म प्रवृत्तियों का भी चित्रण किया जाता है। इससे अभिव्यक्ति में सुन्दरता व प्रभावात्मकता आती है। मानसिक संघर्ष को व्यक्त करने में भी प्रतीक शैली से काफी सहायता मिलती है। संघर्ष की विविध स्थितियों को प्रतीक सरलतापूर्वक व्यक्त कर देते हैं। जैनेन्द्र कृत 'तत्सत्' एवं कमलकांत त्रिपाठी कृत 'पगडण्डी' ऐसी ही कहानियाँ हैं।

6. स्वप्न-शैली – इस शैली की कहानियाँ केवल भारतेन्दु युग में ही लिखी गईं। इसमें सम्पूर्ण कहानी एक स्वप्न के माध्यम से चलती है। इसके भी दो प्रकार हैं – या तो सारी कहानी एक स्वप्न में पूर्ण हो जाये अथवा छोटे-छोटे खण्ड या स्वप्न के जरिये एक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

पूर्ण कथा का संगठन किया जाये। इस प्रकार की कहानियों में भावात्मकता व व्यंग्यात्मकता का प्राधान्य होता है। 'राजा भोज का सपना' ऐसी ही कहानी है।

भारतेन्दु युग के बाद स्वप्न शैली का लोप हो गया। वैसे मनोविश्लेषण के लिए भी इस शैली को अपनाया जा सकता है, किन्तु कथा-शैली के विकास में आज यह अपना स्थान खो चुकी है। स्वप्न-शैली में रोमानियत की अधिकता रहती है। हाँ, खण्ड स्वप्न-शैली को कभी भी अपनाया जा रहा है।

7. आदर्शवादी कहानी – जिस कहानी में कोई आदर्श प्रस्तुत कया जाता है उसे आदर्शवादी कहानी कहते हैं। हिन्दी में प्रेमचन्द व उनके पूर्व अनेक कहानीकारों ने आदर्शवादी कथाएँ लिखीं। 1936 से पूर्व तथा बाद में भी 1955 तक ऐसी कहानियाँ लिखी जाती रहीं।

आदर्शवादी कहानीकारों में प्रेमचन्द, प्रसाद, सुदर्शन, गुलेरी, रायकृष्णदास, चतुरसेन, विष्णु प्रभाकर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में प्रेम, त्याग, न्याय, ईमानदारी, राष्ट्रप्रेम आदि के अनेक आदर्श प्रस्तुत किये हैं। प्रसाद कृत 'आकाशदीप' व 'पुरस्कार' में प्रेम व कर्त्तव्य का आदर्श व्यक्त है। गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी प्रेम व उत्सर्ग का शाश्वत उदाहरण प्रस्तुत करती है। प्रेमचन्द कृत 'पंच परमेश्वर' न्याय के आदर्श का ज्वलन्त उदाहरण है। सुदर्शन की 'हार की जीत' नामक कहानी में सरलता व ईमानदारी का आदर्श प्रस्तुत किया गया है।

आदर्शवादी कहानी का उद्देश्य सामाजिक सुधार होता है। इसमें समाज की बुराइयों को रोकने, कम करने व दूर करने के लिएविशिष्ट आदर्श प्रस्तुत किये जाते हैं। आदर्शवादी कहानी यथार्थ से दूर रहती है। उनमें समाज की वस्तुस्थिति का चित्रण प्रायः कम होता है। इसीलिये धीरे-धीरे कोरी आदर्शवादी कहानी की परम्परा का लोप होता गया। प्रेमचन्द ने इसी क्रम में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को सामने रखा। जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री व वृन्दावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक कथानकों के माध्यम से उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किये। विष्णु प्रभाकर ने सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए अनेक पारिवारिक आदर्श प्रस्तुत करने वाली कहानियाँ लिखीं।

8. यथार्थवादी कहानी – आदर्शवाद के समानान्तर यथार्थवाद का विकास हुआ। समाज की वास्तविकता का चित्रण यथार्थवादी कहानियों में किया जाने लगा। सामाजिक रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, पूँजीपतियों के शोषण, भ्रष्टाचार, राजनीति के खोखलेपन आदि को कहानी में चित्रित किया जाने लगा। प्रेमचन्द ने ग्रामीण व शहरी समाज की अनेक विषमताओं और ज्वलन्त समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया। उनका यथार्थवाद आदर्श की तरफ झुका हुआ था।

सियारामशरण गुप्त, भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा आदि ने भी अनेक यथार्थवादी कहानियाँ लिखीं। यथार्थवादी कहानी लिखने वालों में यशपाल, राहुल सांस्कृत्यायन, चन्द्रकिरण सोनरिक्सा, प्रभाकर माचवे, अमृतलाल नागर आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। समाज की आर्थिक व राजनीतिक विषमताओं का यथार्थ एवं प्रभावकारी चित्रण यशपाल की कहानियों में सर्वाधिक मिलता है। रांगेय राघव ने मध्यम व निम्नवर्गीय स्थितियों का वास्तविक चित्रण किया। चन्द्रकिरण सोनरिक्सा की कहानियाँ मजदूर वर्ग का आइना हैं।

इन यथार्थवादी कहानियों की मूल संवेदना प्रगतिवादी है। इनमें भाषा भी सरल है, सहज और अकृत्रिम है। आगे चलकर यथार्थवादी कहानी सेक्स तक ही सीमित हो गई। इधर कुछ कहानोकारों ने इस दिशा में कमाल कर दिखलाया है। हरिशंकर परसाई कृत 'भोलाराम का जीव', मोहन राकेश कृत 'परमात्मा का कुत्ता' व कमलेश्वर कृत 'खोई हुई दिशायें' भी यथार्थवादी कहानियां मानी जा सकती हैं। यथार्थवादी कहानियों का युग समाप्त नहीं हुआ है। वे आज भी लिखी जा रही हैं।

17.4 कहानी-उपन्यास में अन्तर

संरचना की दृष्टि से उपन्यास और कहानी में यह अन्तर है कि उपन्यास घटना-प्रधान होता है और कहानी व्यंजना-प्रधान। कहानी के तथ्यों का वर्णन उपन्यास की भांति विस्तृत नहीं होता, कथन नहीं होता अपितु व्यंग्य होता है। कथा के द्वारा उपन्यास पाठक की जिज्ञासा और उत्सुकता को शान्त करता जाता है और न्याय-प्रधान होने के नाते अपनी प्रत्येक पंक्ति के द्वारा कहानी पाठक की जिज्ञासा तथा उत्सुकता को जगाती चली जाती है। वास्तव में इसका कारण उपन्यास कहानी का शिल्पगत भेद ही है। एक कथा-प्रधान तथा दूसरी सुझाव-प्रधान है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अब उपन्यास और कहानी के एक-एक तत्त्व को लेकर उसमें साम्य और अन्तर देखते हैं।

1. उद्देश्य – वास्तव में यह कहानी की सर्वप्रथम विशेषता है जो उसे उपन्यास से भिन्न साहित्यिक कोटि में रख देती है। कहानी किसी समस्या का हल नहीं करती, केवल मार्गदर्शन करती है। केवल उचित दिशा की ओर इंगित भर करती है। यह वास्तव में सुझाव प्रधान होती है। श्री जैनेन्द्र कुमार जैन के विचार इस विषय में उद्धरणीय हैं – "हमारे अपने सवाल होते हैं और हम भी उनका उत्तर, उनका समाधान खोजने का सतत प्रयत्न करते हैं। कहानी एक खोज के प्रयत्न का उदाहरण है, उदाहरणों और मिसालों की खोज होती रहती है। वह एक उत्तर ही नहीं देती अपितु कहती है कि उत्तर शायद इस दिशा में मिले। यह सूचक होती है, कुछ सुझाव देती है।"

उपन्यास का आकार बड़ा होता है, उपन्यासकार कितने ही उद्देश्यों को अपने उपन्यास में स्थान दे सकता है। कहानी में लेखक का एक निश्चित उद्देश्य होता है। अत: निष्कर्ष यही निकला कि उपन्यास कथा-प्रधान और कहानी उद्देश्य-प्रधान होती है।

2. कथावस्तु – कथावस्तु के अभाव में उपन्यास की रचना सम्भव नहीं। यद्यपि पाश्चात्य देशों में ऐसे प्रयोग हुए हैं कि बिना कथा के भी उपन्यास लिखा जा सके, किन्तु वे असफल रहे हैं और आज तक विश्व के उपन्यास साहित्य में कथा अपने पूर्व महत्त्व को ही धारण किये बैठी है, परन्तु कहानी बिना घटना के भी लिखी जा सकती है।

उपन्यास में कथावस्तु के विस्तार का बहुत अवकाश रहता है, उसमें प्रासंगिक कथाएँ जोड़ी जा सकती हैं, प्राकृतिक वर्णन किये जा सकते हैं और धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक समस्याओं के विश्लेषण भी उपन्यास में विस्तार के साथ किये जा सकते हैं। कहानी में इतना स्थान और अवकाश नहीं होता है। कहानी की कथा का प्रत्येक शब्द, प्रत्येक वाक्य बिना विराम किये, बिना शिथिलता दिखाये, अबाध लक्ष्य की ओर दौड़ता है। उपन्यास में एक मुख्य कथा होती है तथा उससे सम्बद्ध अन्य प्रासंगिक कथाएँ भी रहती हैं, किन्तु कहानी में प्रासंगिक कथा नहीं होती है, क्योंकि यदि कहानी में प्रासंगिक कथा होगी तो वह मुख्य कथा को आक्रान्त कर कहानी के उद्देश्यों को ही समाप्त कर देगी।

उपन्यास की कथा के विकास की भाँति कहानी में भी कथा का विकास दिखाया जा सकता है, उदाहरणार्थ – प्रारम्भ, 2. संघर्ष, 3. चरमसीमा तथा 4. उपसंहार।

उपन्यास के प्रणयन के मूल में मुख्यत: निम्नांकित बातें रहती हैं – 1. घटना, 2. समस्या तथा 3. चरित्र। उपन्यास या तो किसी घटना को लेकर लिखा जायेगा, फिर उसका आधार कोई समस्या होगी या विचित्र व्यक्तित्व के लिए लिखा जायेगा। उपर्युक्त तीनों बातें कहानी के मूल में भी हैं –

1. या तो किसी कथानक को लेकर पात्रों की कल्पना की जाये।, 2. किसी समस्या को लेकर पात्र कल्पित किये जायें।, 3. या किसी व्यक्ति विशेष की घटना की कल्पना की जाये।

पहले प्रकार की कहानी घटना-प्रधान, दूसरे प्रकार की समस्या-प्रधान और तीसरे प्रकार की चरित्र-चित्रण-प्रधान कही जायेगी।

कथावस्तु स्थूल रूप से दो प्रकार की हो सकती है – 1. ऐतिहासिक और 2. काल्पनिक। दोनों प्रकार की कथावस्तु का उपन्यास और कहानी में उपयोग समान रूप से किया जा सकता है।

3. पात्र – उपन्यासों में पात्रों की संख्या चाहे जितनी रखी जा सकती है, क्योंकि उसमें सभी के चरित्र पर प्रकाश डालने के लिए पर्याप्त स्थान रहता है। कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होती है। कभी-कभी तो कहानी में दो या तीन पात्र ही होते हैं। उपन्यास में मुख्य कथा का एक नायक होता है और प्रासंगिक कथाओं के कई नायक हो सकते हैं। कहानी में प्रासंगिक कथा का प्रश्न ही नहीं उठता। उपन्यास में पात्र स्वतंत्र भी हो सकते हैं। कहानी के पात्रों पर कहानीकार का अंकुश रहता है और वे लक्ष्य की ओर सदैव उन्मुख रहते हैं। उपन्यास में किसी भी श्रेणी के पात्र लिये जा सकते हैं।

4. चरित्र-चित्रण – चरित्र-चित्रण प्रधान उपन्यास भी हो सकते हैं और कहानी भी, किन्तु विविध घटनाओं के द्वारा पात्र के चरित्र-चित्रण का जितना अवकाश उपन्यास में रहता है उतना कहानी में नहीं।

पात्रों का चरित्र-चित्रण उपन्यास और कहानी दोनों में प्राय: दो रूपों में किया जाता है – 1. परोक्ष रूप से, 2. प्रत्यक्ष रूप से।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जहाँ कथोपकथन के द्वारा पात्रों के चरित्र पर प्रकाश पड़ रहा हो, वह चरित्र-चित्रण की परोक्ष या अभिनयात्मक प्रणाली है और जहाँ स्वयं लेखक ही पात्र के चरित्र के विषय में निर्णयात्मक भाषा का प्रयोग कर रहा हो, वहाँ प्रत्यक्ष प्रणाली द्वारा चरित्र-चित्रण माना जाता है।

चूँकि कहानी में घटनाओं का अधिक आयोजन नहीं किया जा सकता, इसलिए प्राय: प्रत्यक्ष प्रणाली से ही चरित्र-चित्रण किया जाता है।

5. कथोपकथन – कहानी और उपन्यास दोनों में जिस तत्त्व के कारण नाटकीयता का आनन्द आने लगता है, वह कथोपकथन का ही तत्त्व है। यों कहानी केवल वर्णनात्मक भी हो सकती है जिसमें कथोपकथन ही न हो, किन्तु कथोपकथन के अभाव में कहानी का आकर्षण, सौन्दर्य, स्वाभाविकता मारी जाती है। कथोपकथन के द्वारा अधिक बातें संक्षेप में कही जा सकती हैं। उपन्यास में लेखक स्वयं बहुत-कुछ विश्लेषण कर सकता है और कह सकता है। चरित्र-चित्रण के लिए तो कथोपकथन सबसे अधिक सुन्दर साधन है। कहानी में यदि कथोपकथन संक्षिप्त, व्यंजनापूर्ण, सार्थक और मार्मिक न होंगे तो लेखक अपनी कहानी में सफल नहीं हो सकता। उपन्यासकार के लिए तो पर्याप्त स्थान रहता है इसलिए उनका कथोपकथन चाहे जितना विस्तृत हो सकता है।

6. देशकाल – देशकाल से परे न तो उपन्यास हो सकता है और न कहानी। साहित्य युग से तटस्थ नहीं रह सकता। साहित्य तो युग की पुकार को और भी स्पष्ट रूप में व्यक्त करता है। इसलिए उपन्यास और कहानी दोनों अपने युग से प्रभावित रहते हैं और उसे अपना आधार बनाते हैं।

अतीत पर कहानी और उपन्यास दोनों लिखे जा सकते हैं, लेकिन यह बड़ा कठिन काम है। जिस युग को कहानीकार या उपन्यासकार अपने वर्णन का विषय बनाता है उसका उसे गम्भीर अध्ययन होना चाहिए। उदाहरण के लिए, बंकिमचन्द्र के ऐतिहासिक उपन्यास, द्विजेन्द्रलाल राय के ऐतिहासिक नाटक, वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास और प्रसादजी की ऐतिहासिक कहानियाँ ली जाती हैं। ये लेखक प्राचीन वातावरण को अपने साहित्य में यथावत् उपस्थित करने में सफल हुए हैं। अन्तर केवल इतना ही है क उपन्यास तो किसी युग का विस्तृत चित्रण उपस्थित कर सकता है, किन्तु कहानी झांकी मात्र दिखा सकती है।

7. शैली – जब कहानी और उपन्यास के वर्ण्य-विषय एक हो सकते हैं तो उन विषयों की अभिव्यक्ति प्रणालियो में भी दोनों में समानता स्वाभाविक है। वर्ण्य-विषय को सामान्यतया वर्णन करने के लिए लेखक अपनी इच्छानुसार किसी भी शैली का अनुसरण कर सकता है। शैली का निर्धारण विषय के अनुसार तथा लेखक की रुचि के अनुसार होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उपन्यास और कहानी में साम्य होते हुए भी तात्त्विक दृष्टि से इन दोनों में पर्याप्त अन्तर है। ये दोनों गद्य की पूर्णत: भिन्न विधाएँ हैं।

17.5 सारांश

अस्तु कहानी एक रोचक विधा है और कहानी तथा उपन्यास में विशेष अन्तर है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जैन विश्वभारती संस्थान

(मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूँ–341306 (राजस्थान)

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

बी.ए. प्रथम वर्ष

विषय–हिन्दी साहित्य

द्वितीय–पत्र

कहानी एवं उपन्यास

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

संवर्ग

संवर्ग–1	:	उपन्यास 'महाभोज'
संवर्ग–2	:	कथा संचय

विशेषज्ञ समिति

1. **प्रो. नन्दलाल कल्ला**
   पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग
   जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

2. **प्रो. वेदप्रकाश शर्मा**
   पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग
   महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राज)

3. **प्रो. जगमालसिंह**
   पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग
   मेघालय विश्वविद्यालय, मेघालय (आसाम)

4. **डॉ. ममता खाण्डल**
   सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग,
   राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, किशनगढ, (राज.)

5. **प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी**
   निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
   जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (राज.)

6. **प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा**
   विभागाध्यक्ष एवं आचार्या, जैन विश्वभारती संस्थान,
   लाडनूँ (राज.)

लेखक

कैलाश भट्ट 'आकाश'

संपादक

प्रोफेसर नन्दलाल कल्ला

कापीराइट
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

नवीन संस्करण : 2017

मुद्रित प्रतियां : 2000

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं 341 306 (राज.)

Printed at
M/s Nalanda Offsets, Jaipur

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	संदर्भ/लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	**भूमिका** (हिन्दी गद्य का उद्‌भव और विकास)	1-7
2.	**उपन्यास – 'महाभोज'** (लेखिका मन्नू भण्डारी एवं महाभोज : सामान्य परिचय)	8-9
3.	**महाभोज उपन्यास संक्षिप्त रूप में**	9-20
4.	**महाभोज उपन्यास की महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ**	21-45
5.	**महाभोज उपन्यास से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर** (अति लघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक, निबन्धात्मक प्रश्न)	45-77
6.	**हिन्दी कहानी** (हिन्दी कहानी का इतिहास)	78-83
7.	**गुल्ली-डंडा (मुंशी प्रेमचन्द)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	84-100
8.	**ममता (जयशंकर प्रसाद)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	101-111
9.	**इनाम (जैनेन्द्र कुमार)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	112-119
10.	**सेव और देव (अज्ञेय)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	120-131
11.	**परदा (यशपाल)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	132-142
12.	**पंच लाइट (फणीश्वरनाथ रेणु)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	143-150
13.	**परमात्मा का कुत्ता (मोहन राकेश)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	151-162
14.	**बिरादरी बाहर (राजेन्द्र यादव)**	163-173

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

क्र.सं.	संदर्भ/लेखक	पृष्ठ संख्या
	(महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	
15.	**अकेली (मन्नू भण्डारी)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	**174-183**
16.	**झुटपुटा (भीष्म साहनी)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	**184-195**
17.	**फेन्स के इधर और उधर (ज्ञान रंजन)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	**196-206**
18.	**जमीन से हट कर (हेतु भारद्वाज)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	**207-215**
19.	**बर्डे (स्वयं प्रकाश)** (महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ एवं प्रश्नोत्तर)	**216-225**
20.	**कहानी** (परिभाषा, कहानी के प्रकार, तत्त्व व शैली, प्रश्नोत्तर)	**226-232**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun